92
खुतबात का
हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

रज़वी किताब घर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

92

खुतबात का हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

जिल्द अव्वल (1)

तालीफ़

नमूनए अस्लाफ़, अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी

साहब क़िब्ला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया

बानी व सरबराहे आला : अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़

खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

नाशिर

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6 फोन : 011-23264524

सिलसिला –ए– इशाअत (64)

किताब : अनवारुल बयान (जिल्द 1)

तालीफ़ : अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी साहब क़िब्ला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया बानी व सरबराहे आला अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

प्रुफ़ रीडिंग : हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी बरकाती (एडीटर– माहनामा पैग़ामे रसूल, इन्दौर)

ऑप्रेटर : नज़ाफ़त हुसैन रज़वी (सोहेल)

कम्पोजिंग : रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर (म.प्र.) (मोबा : 9827014799)

सने इशाअत (हिन्दी)– 1437 हिजरी मुताबिक़ 2016 ईसवी (बारे अव्वल)

तादाद : (1100) ग्यारह सौ

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

तक़सीमकार

बरकाती कुतुबख़ाना

14/1, बज़रिया, बड़वाली चौकी मेनरोड, इन्दौर-452 002 (म.प्र.)

फ़ोन : 0731-2453528, मोबा : 9300921994, 9827083720

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

इन्तिसाब

महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ)

और

आपके चारों ख़ुलफ़ाए राशेदीन

और

आपकी ज़ौजा सय्यद ख़दीजा और सय्यदा आएशा

और

आपकी प्यारी बेटी सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा

और

आपके नूरे ऐन इमाम हसन और इमाम हुसैन

और

आपकी आल मेरे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म व
हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

और

आपके आशिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
व मुर्शिदे आज़म मुस्तफ़ा रज़ा

और

आपकी उम्मत के वली मेरे पीरो मुर्शिद मौलाना शाह
मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी

व

मेरे करीम, मजज़ूब बुज़ुर्ग हुज़ूर दरिया शाह बाबा
(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन)

के नाम

जिनकी दुआओं का अबरे करम मुझ पर बरस रहा है।

और

क़ियामत तक बरसता रहेगा.........इंशाअल्लाहु तआला

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

कलिमाते दुआ

शहज़ादए आला हज़रत, पेशवाए अहले सुन्नत, वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आज़म, जानशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात, ताजुश्शरीआ, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती, मुहद्दिस, फ़क़ीह, अल्हाज अश्शाह मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया, बरैली शरीफ़ (यू.पी.)

۷۸۶
۹۲

میں نے عزیز القدر مولانا انوار احمد قادری رضوی سلمہ کی تالیف کردہ کتاب مسمی بہ

"انوار البیان"

کے کچھ ابواب پڑھوا کر سنے خوب سے خوب تر پائے۔ مولیٰ تعالیٰ انکی یہ کوشش اپنی بارگاہ میں مقبول فرماکر مفید انام فرمائے آمین بجاہ النبی الامین علیہ وعلی آلہ وصحبہ افضل الصلوٰۃ واکمل التسلیم

[illegible]
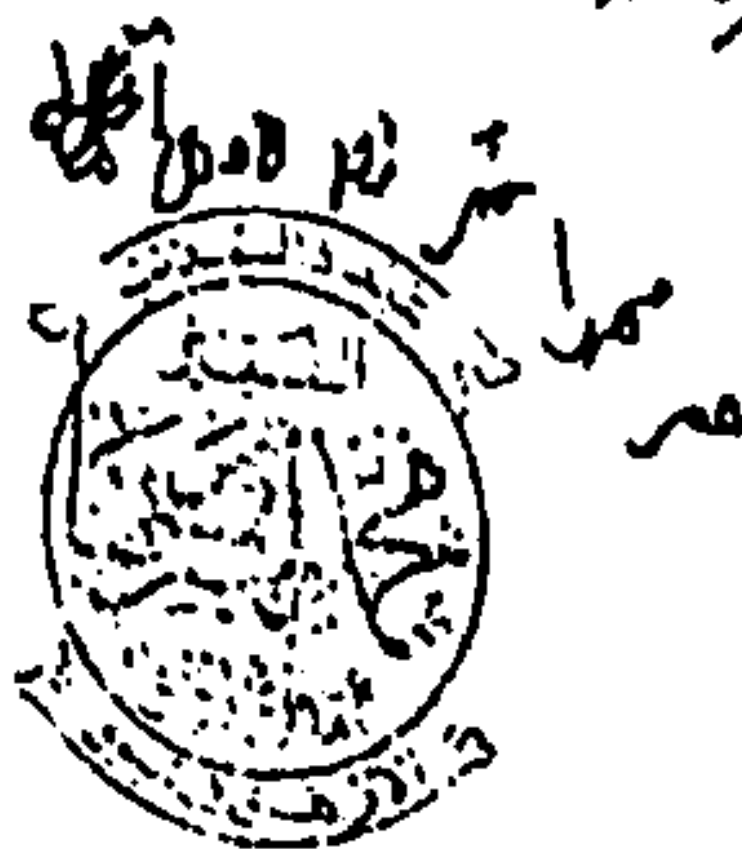
मैंने अज़ीज़ुल क़द्र मौलाना अनवार अहमद क़ादरी रज़वी सल्लम्हु की तालीफ़ कर्दा किताब मुसम्मा बह ''अनवारुल बयान'' के कुछ अबवाब पढ़वाकर सुने, ख़ूब से ख़ूब तर पाए। मौला तआला इनकी यह कोशिश अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमाकर मुफ़ीदे अनाम फ़रमाए । आमीन । बिजाहिन्नबिय्यिल अमीन अलैहि व अला आलिही व सहबिही अफ़ज़लुस्सलातु व अक्मलुत्तसलीम 0

फ़क़ीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी ग़ुफ़िरा लहू
26 मुहर्रमुल हराम 1434 हि. मुताबिक़
11 दिसम्बर 2012 ई. बरोज़ शंबा

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(1) मुहर्रमुल हराम

(2) सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

(3) रबीउल अव्वल शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(4) रबीउल आखिर शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (2)

(5) जुमादल ऊला

(6) जुमादल उख़रा

इज्माली फ़ेहरिस्त जिल्द दोम (2)

(7) रजब शरीफ़

(8) शाबानुल मुअज्ज़म

इज्माली फ़ेहरिस्त जिल्द दोम (3)

(9) रमज़ानुल मुबारक

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (3)

(10) शव्वालुल मुकर्रम

(11) ज़िल क़अ़्दह

(12) ज़िल हिज्जह

मुहर्रमुल हराम

पहला जुमा .... पहला बयान

पहला जुमा ....दूसरा बयान

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

चौथा जुमा .... पहला बयान

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

पहला जुमा .... दूसरा बयान

दूसरा जुमा .... पहला बयान

तीसरा जुमा .... पहला बयान

रबीउल अव्वल शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

रबीउल आख़िर शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

अर्ज़े हाल

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ اما بعد!

एक मुद्दत दराज़ से मेरी ख़्वाहिश थी और अहबाब का भी तक़ाज़ा था कि वअ़ज़ व नसीहत और तक़रीर व ख़िताबत के लिये एक ऐसी किताब तरतीब दूँ जो आयाते करीमा और अहादीसे तैय्यिबा और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत पर मुश्तमिल हो और दीनी मालूमात का बेश बहा ख़ज़ाना भी हो और ज़बान व बयान के लिहाज़ से आम फ़हम और आसान हो, ताकि उलमा व तलबा व अवाम और ख़ासकर अइम्मए मसाजिद सभी उससे मुस्तफ़ीद हो सकें। लेकिन यह काम आसान न था मगर अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम और मेरे बुज़ुर्गों की इनायतों व ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा और मुर्शिद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की दुआओं ने आसान कर दिया कि साल के 48 जुमों के लिये 92 तक़रीरों का हसीनो जमील मजमुआ तरतीब पाया जिसके लिये वक़्त तक़रीबन पाँच साल लगा और इस तरतीब का नाम हुज़ूर बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अश्शाह अब्दुल मन्नान साहेब क़िब्ला साबिक़ शैख़ुल हदीस जामिआ अशरफ़िया, मुबारकपूर रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अनवारुल बयान मुन्तख़ब फ़रमाया।

हुज़ूर बहरुल उलूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस सफ़र में हमारे ख़ास रहनुमा और मुशीर थे। सब कुछ करके, किताब की इशाअत से क़ब्ल 14 मुहर्रम शरीफ़ सन् 1434 हि. मुताबिक़ 29 नवम्बर जुमा मुबारका की शब में 9 बजकर 20 मिनट पर दाग़े मुफ़ारिक़त देकर विसाल फ़रमा गए।

मुद्दत के बाद होते हैं पैदा कहीं वह लोग
मिटते नहीं हैं दहर से जिनके निशां कभी

ख़ुदा रहमत कुनद.......ईं पाक तीनत रा। आमीन।

(1) इस किताब की ख़ुसूसियत यह है कि मैंने फ़ज़ाइले हज के बयान की कुछ हदीसें कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा के सामने मस्जिदे हराम में मक़ामे उम्मे हानी (मेअ़राज शरीफ़ की जगह) पर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। और फ़ज़ाइले मदीना तैय्यिबा की कुछ हदीसें मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चूबतरे पर लिखा।

फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन और इस किताब यानी अनवारुल बयान के कुछ हिस्से अजमेर शरीफ़ में हुजूर ख्वाजा ग़रीब नवाज रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में जन्नती दरवाज़ा के अन्दुरुनी हिस्से में बैठकर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। इन मुबारक निस्बतों के फ़ैज़ान पर मुकम्मल यकीन है कि किताब मक़बूले खुदा और मक़बूले अनाम होगी।

(2) मुहक्क़िके मसाइले जदीदा, फ़कीहुल अस्र, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहेब क़िब्ला रज़वी मिस्बाही दामा ज़िल्लुहुल आली, सदर शोअबए इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया मुबारकपूर का ममनून हूँ जिन्होंने चार दिन का अपना क़ीमती वक़्त सर्फ़ फ़रमाया और इन्दौर तशरीफ़ लाए और उलमाए जामिआ के साथ हर महीने के हिसाब से उनवान मुन्तख़ब फरमाए। और उन तमाम हज़रात का शुक्रिया जिन्होंने हमारे साथ मोहब्बत की और थोड़ा भी साथ दिया है जैसे फ़कीहुन्नफ़्स हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अफ़ज़ाल अहमद साहेब क़िब्ला रज़वी दाम ज़िल्लुहुल आली (मुफ़्ती मरकज़ी दारुल इफ़्ता बरेली शरीफ़) खास कर हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब क़ादरी बरकाती जिन्होंने किताब की तस्हीह करने में न रात देखी न दिन, शुरू से आखिर तक जिद्दो जहद करते रहे। अल्लाह तआला मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब को दोनों जहांन में ख़ुश रखे और ख़ैरे कसीर अता करे और अज़ीज़ी हज़रत मौलाना मोहम्मद आरिफ़ साहेब बरकाती सदरुल मुदर्रेसीन जामिआ और अज़ीज़म हज़रत मौलाना अमीन अहमद क़ादरी और हज़रत मौलाना मुफ्ती रफ़ीकुल इस्लाम साहेब और जामिआ के जुमला वह उलमाए किराम और हुफ़्फ़ाज़े इज़ाम जिनकी ख़िदमत व मोहब्बत हमारे साथ रही और मोहतरम हाजी मोहम्मद सिद्दीक़ बिन मोहम्मद जमील साहेब ठेकेदार और मेरे भाई मोहतरम हाजी मोहम्मद मक़सूद साहब ग़ोरी रज़वी और मोहतरम हाजी मोहम्मद इक़बाल साहब ग़ोरी रज़वी जिनकी मोहब्बत हमेशा हमारे साथ रही।

दुआ है कि अल्लाह तआला रहमानो रहीम मौला हमको, हमारे मां बाप को, हमारे बच्चों को, हमारे साथियों और तमाम क़ादरी, चिश्ती, बरकाती, रज़वी, सुन्नी भाइयों को ईमान पर ख़ातिमा अता फ़रमाए और इस किताब अनवारुल बयान को हम सबके लिये निजात व बख़्शिश का ज़रीआ बनाए। आमीन। सुम्मा आमीन। बिजाहि सय्येदुल मुरसलीन अलैहि व आलिही व अस्हाबिही अजमईन। फ़क़त गदाए गोसो ख्वाजा व रज़ा

अनवार अहमद क़ादरी

21 मुहर्रमुल हराम 1434 हि.

6 दिसम्बर 2012 ई.

तक़रीज़े जलील

यादगारे अस्लाफ़, बुरहाने अख़्लाफ़, पैकरे इल्मो अमल, बहरुल उलूम,
हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज अश्शाह मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब क़िब्ला आज़मी
रहमतुल्लाहि तआला अलैह साबिक़ शैख़ुल हदीस जामिआ अशरफ़िया,
मुबारकपूर आज़मगढ़ (यू.पी.)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم

अम्मा बअ़द ! हफ़्ता में एक बार नमाज़े जुमा से क़ब्ल दो मुख़्तसर ख़ुतबे अरबी ज़बान में पढ़ना, हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माने से मनक़ूल और मशहूर हैं, इस के अलावा और किसी ज़बान में यह ख़ुतबे पढ़ना सुन्नते मुतवारिसा के ख़िलाफ़ हैं। इस लिये हुक्म यही है कि दोनों ख़ुत्बे अरबी ज़बान में ही होना चाहिये। जिस तरह पन्जवक़्ता नमाज़ें उर्दू या किसी मक़ामी ज़बान में नहीं पढ़ी जा सकतीं बल्कि उसे अरबी ज़बान और क़ुरआनी आयात के रूप में ही पढ़ा जाता है, इसी तरह ख़ुतबए जुमा को भी अरबी ज़बान में ही अदा किया जाएगा। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अगर हर जुमा के हफ़्ता वारी इज्तिमाअ़ को मुक़्तदियों की मक़ामी ज़बान में वअ़्ज़ व नसीहत की जाए और इस से उम्मत की तालीम व तरबियत की जाए और हिदायत व रहनुमाई फ़रमाई जाए तो एक बड़ा काम होगा। लिहाज़ा इस में क्या हरज है कि ख़ुतबए जुमा से कुछ देर पहले लोगों को उन की मक़ामी ज़बान में ख़िताब किया जाए जिस में साल के बारह महीनों के फ़ज़ाइल व फ़राइज़, उन औक़ात के शरई अहकाम व मसाइल व दीगर वक़्ती ज़रूरतों के तअ़ल्लुक़ से शरई नुक़तए नज़र को सामेईन के सामने रखा जाए, जिस से हर वक़्त और हर क़िस्म के मुआमलात के सिलसिले में दीनी व इस्लामी मालूमात फ़राहम हो सकें।

इसी मक़सद के पेशे नज़र अज़ीज़ी हज़रत मौलाना अनवार अहमद क़ादरी साहब सल्लमहू जो एक ख़ुश रू, ख़ुश अन्दाम, नर्म ख़ू, व नेक किरदार और शीरीं

कलाम, आलिमे बा अमल, हक़ीक़त आगाह मुक़र्रिर अल्लाम हैं और अपने सरापा की ही तरह ईमान व अक़ीदा, और मशरबे अमल में सच्चे खरे सुन्नी सहीहुल अक़ीदा, क़ादरी, रज़वी, मौलाना, मुफ़्ती, मुक़्तदा व मुअल्लिम, रहनुमा व इमाम हैं।

यह तो यू.पी. के मशहूर ज़िला बस्ती (हाल सिद्धार्थ नगर) के (रहने वाले) बाशिन्दा और आलिमे रब्बानी फ़ख़्रे क़ौमो मिल्लत हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद साहब क़ादरी मुसन्निफ़े सवानेह आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह के अज़ीम रूहानी फ़रज़न्द और उन के ख़लफ़ुस्सिदक़ और ख़लीफ़ा हैं लेकिन बर सहा बरस से मध्य प्रदेश के अज़ीमुश्शान शहर इन्दौर के निवासी और मशहूरे ख़वासो अवाम हैं। जो एक क़ादिरुल कलाम ख़तीब और बर जस्ता बयान, वाइज़ हैं और अपनी बात सामेईन के दिल में उतारने के फ़न में इम्तियाज़ी ख़ुसूसियात के मालिक हैं। अज़ीज़ी मौलाना मौसूफ़ ने इस ज़रूरत की तरफ़ ख़ास तवज्जोह फ़रमाई और साल के 48 जुमओं के लिये 92 ख़ुतबे तस्नीफ़ फ़रमाए, जिन में ख़ास तौर से ईमान व अक़ाइद, अहकाम व फ़राइज़, हर हफ़्ता और हर महीने के फ़ज़ाइल और मनाक़िब और हर मौक़े के ख़ास मामूलात अज़ क़िस्म औरादो वज़ाइफ़ का तफ़सीली बयान है और अपनी हर बात क़ुरआन व हदीस और बुज़ुर्गाने दीन के मुस्तनद हवालों से पेश किया है और मैं ने इस किताब का नाम अनवारुल बयान रखा है।

मौला तआला अज़ीज़े मोहतरम की इस काविश को क़ुबूल फ़रमाए और किताब को मक़बूले ख़वासो अवाम बनाए। आमीन। या रब्बल आलमीन।

अब्दुल मन्नान आज़मी
शमसुल उलूम, घोसी, ज़िला मऊ, (यू.पी.)
25 जुमादल उख़रा 1432 हि.

कलमए तहसीन

पीरे तरीक़त शहज़ादए शुऐबुल औलिया मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह
गुलाम अब्दुल क़ादिर अलवी साहब क़िब्ला मद्दज़िल्लुहुन्नूरानी
सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे फ़ैज़ुर्रसूल व नाज़िमे आला दारुल उलूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊँ शरीफ़ (यू.पी.)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

और हुज़ूर नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे पाक है :

بلغوا عنی ولو آیة इस से वअ़ज़ व नसीहत की अहमियत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। मज़कूरा आयते कुरआनी और हदीसे नबवी के अलावा मुतअद्दिद अहादीस व आयाते कुरआनिया से मवाइज़ व नसाएह की क़द्रो क़ीमत मालूम होती है।

आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ुतबए हुज्जतुल वदाअ़ तारीख़े आलम का वह शाहकार ख़ुतबा है जिस ने सारी दुनिया से अपनी इफ़ादियत व जामेइयत का लोहा मनवा लिया। यही वजह है कि दौरे सहाबा से ले कर आज तक अला हस्बुल मरातिब ख़ुतबा व वाएज़ीन ने अपने अपने मवाइज़े हसना से क़ौम को मुस्तफ़ीद फ़रमाया।

अलग़रज़ सालेह ख़िताबत व वअ़ज़ ने हर दौर में लोगों को मुतास्सिर किया है बशर्ते कि ख़तीब उम्दा और दिल नशीं पेराए में अपनी बातें सामेईन के कुलूब में उतारने का हुनर जानता हो। यह अम्र बिल्कुल बदीही है कि अगर ख़तीब ज़ी शुऊर, बालिग़ नज़र और तजरबे कार हो, बातें अहम होने के साथ नादिर भी हों, अलफ़ाज़ उम्दा हों ज़ुमले सलीक़े से तरतीब दिये गए हों और उन बातों को ना क़ाबिले तरदीद हवालाजात और मोअ़तबर दलाइल की पुश्त पनाही हो तो वह बातें अवाम व ख़वास को मुतास्सिर किये बग़ैर नहीं रह सकतीं।

जो लोग तारीख़े ख़िताबत से वाक़िफ़ हैं उन से यह अम्र मख़्फ़ी नहीं कि इस्लाम का अव्वलीन ज़रीए तब्लीग़ मसाजिद रही हैं और इस सिलसिले में मसाजिद के अइम्मा का ख़ुसूसी रोल रहा है और यह बात भी देखने में आई है कि इल्मो अमल से आरास्ता अइम्मए मसाजिद के ख़ुतबात व निस्बत उन ख़िताबात के जो बाज़ जल्सों में कम इल्म व बे अमल मुक़र्रेरीन के ज़रीए नश्र होते हैं ज़्यादा मोअस्सिर वाक़ेअ होते हैं। क्यों कि मसाजिद में ज़िम्मेदार अइम्मा क़ौमो मिल्लत की इस्लाह के लिये, उन के अक़ाइद व आमाल की तज़ईन के लिये अगर ख़िताबात करते हैं तो क़ौम भी उन के ख़िताबात को बा अदब व बा सलीक़ा, बा वुज़ू होकर न यह कि सिर्फ़ सुनती बल्कि पूरी मतानत व सन्जीदगी के साथ ब नियते अमल उसे सुन कर अपने शबो रोज़ की अमली ज़िन्दगी में उतारने की मुकम्मल कोशिश भी करती है।

लेकिन अलमिया तो यह है कि आज तालीमी इनहितात और अमली बे राहरवी के इस दौर में जहाँ एक जानिब बा सलाहियत असातिज़ा व मुदर्रेसीन का फ़ुक़दान है वहीं दूसरी जानिब तब्लीग़ी ख़िदमात की अन्जाम दही के लिये सालेह ख़ुतबात की शरह भी तशवीशनाक हद तक कमी होती जा रही है। यह हैं वह अवामिल व अस्बाब जिन के पेशे नज़र ज़रूरत थी एक ऐसी जामेअ ख़ुतबात किताब की जिस से कम इल्म या मुतवस्सित इल्म रखने वाले अइम्मए मसाजिद फ़ायदा उठा कर अपनी बातें मुअस्सर पैराए में हर हफ़्ता लोगों तक पहुँचा सकें। और हफ़्ता वार सिलसिलए ख़िताबत जारी रखने में उन्हें मदद मिल सके।

अब यह मालूम करके बे पनाह मसर्रत हुई कि यह सआदत फ़ैज़ुर्रसूल के होनहार फ़रज़न्द, मेअमारे क़ौम, ख़तीबे हर दिल अज़ीज़, बानिये जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़ इन्दौर, अकाबिर के नज़र करदा, फ़ाज़िले अज़ीज़, हज़रत मौलाना अलहाज अनवार अहमद साहब क़ादरी सल्लमहुल मौलल क़दीर के हिस्से में आई। इन्होंने 92 ख़ुतबात को जिस सलीक़े से जमा किया है उन्हीं का हिस्सा है। ज़ाहिर है कि मुरत्तिब मौसूफ़ बा सलाहियत व बा सलीक़ा होने के साथ, एक बा अमल और मक़बूले अवाम व ख़वास ख़तीब हैं। इस लिये उन के काविशे फ़िक्र के नतीजे में इस तरह की किताब का तरतीब पा जाना और फिर मुअस्सिर हो कर यकायक मक़बूल अवाम व ख़वास बन जाना चन्दां तअज्जुब ख़ेज़ अम्र न होगा, किताब को जस्ता जस्ता देखने से यह अन्दाज़ा हुआ कि फ़ाज़िले मुरत्तिब ने इस मजमुअए ख़ुतबात की तरतीब में काफ़ी अर्क़ रेज़ी की है, अलफ़ाज़ की ख़ूबसूरती

को मलहूज़ रख कर हर बात निहायत उम्दा और मुअस्सर पैराए में कहने की कोशिश की गई है। हवालाजात ने ख़ुतबात को बेहद वक़ीअ़ बना दिया है, दलाइल के अंबार मुख़ालिफ़ीन को ख़ामोश करने के लिये काफ़ी हैं।

मेरी दुआ है कि मौलाए क़दीर मौसूफ़ की इस किताब को नज़रे हासिदीन से महफ़ूज़ फ़रमा कर अवाम व ख़वास के लिये मुफ़ीद और ख़ुद मुरत्तिब मौसूफ़ के लिये ज़ख़ीरए आख़िरत व ज़रीअए नजात बनाए।

امین بجاہ حبیبہ سید المرسلین علیہ وعلی الہ افضل الصلوٰۃ واکرم التسلیم

गुलाम अब्दुल क़ादिर अलवी
22 मुहर्रमुल हराम 1434 हि.
7 दिसम्बर 2012 ई.

नज़रे सानी

जामेअ मअकूल व मनकूल हजरत अल्लामा, मौलाना, अलहाज,
मुफ्ती मोहम्मद कुदरतुल्लाह साहब क़िब्ला रजवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह,
शैखुल हदीस दारुल उलूम तनवीरुल इस्लाम, अमर ढोभा, जिला संत कबीर नगर, (यू.पी.)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نحمدہ ونستعینہ ونستغفرہ ونصلی ونسلم علی حبیبہ الکریم وعلی آلہ واصحابہ واولیاء امتہ
وعلماء ملتہ وشہداء محبتہ لاسیما الغوث الاعظم محی الدین الجیلانی وسلطان الہند
معین الدین الاجمیری رضی اللہ تعالیٰ عنہما۔ امابعد!

इस वक़्त मेरे पेशे नज़र हज़रत मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी, रज़वी, बानी इदारह जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, इन्दौर की इश्क़ व महब्बत में डूबी हुई किताब अनवारुल बयान है जो 92 उनवानात पर मुश्तमिल तक़रीरों का हसीन मजमुआ है। जिस में हर महीने की मुनासिबत से तक़रीर का उन्वान मुन्तख़ब किया गया है जो बहुत ही लाइके तहसीन है।

जैसे मुहर्रम शरीफ़ में अहले बैते अतहार की नेकी व बुज़ुर्गी, और उन के फ़ज़ाइल व मनाक़िब, और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बे मिसाल कुरबानी और आपकी शहादत का बयान अहादीसे तैय्यिबा और बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयान से साबित किया है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जन्नती जवानों के सरदार और नेक व पाक हैं, और यज़ीद, जहन्नमी और बद व नापाक है।

और इसी तरह रबीउल अव्वल शरीफ़ में मीलाद शरीफ़ के फ़ैज़ान व एहसान का ज़िक्र और मीलाद शरीफ़ मनाने का सुबूत कुरआन व सुन्नत और (असलाफ़ व अख़्लाफ़) से इस के मुस्तहसन होने का सुबूत मुस्तनद हवालों से पेश किया गया है

और जुमादल उख़रा में ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और ज़िल हिज्जा में ख़लीफ़ए दौम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और ख़लीफ़ए सौम हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और रमज़ान शरीफ़ में ख़लीफ़ए चहारुम हज़रत

मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और शअ़बानुल मुअज़्ज़म में हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और रबीउल आख़िर में सय्यदना ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, और रजब शरीफ़ में सय्यदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, और सफ़रुल मुज़फ़्फ़र में सय्यदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म शाह मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी बरकाती, रज़वी नूरी, रज़ियल्लाहो तआला अन्हो व अरदाहो अन्ना की हयात व ख़िदमात और तसर्रुफ़ात व करामात का बड़े ही वालिहाना अन्दाज़ में तज़किरा किया गया है। और इस किताब की एक बड़ी ख़ूबी यह है कि तक़रीबन तमाम अहादीसे तैय्यिबा और जुमला रिवायात व वाक़िआत मुस्तनद हवाला जात से मुज़य्यन हैं। ग़रज़ यह कि पूरी किताब अल्लाह के नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम व अहले बैते अतहार और बुज़ुरगाने दीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन के इश्क़ व महब्बत और उन की हयाते तैय्यिबा के हर हर गोशे पर मुश्तमिल मालूमात का एक ख़ज़ाना है, और ख़ुतबाए अहले सुन्नत, उलमाए अहले सुन्नत, उलमाए किराम, ख़ास कर अइम्मए मसाजिद के लिये बहुत ही आसान और मुफ़ीद है।

ख़ुलूसे क़ल्ब से दुआ है कि रब्बे करीम, ब तुफ़ैले नबी रऊफ़ो रहीम, अलैहिस्सलातो वत्तस्लीम हमें अपनी और अपने मेहबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सच्ची मोहब्बत अता फ़रमाए, और मस्लके हक़, मस्लके आला हज़रत पर क़ाइम व दाइम रखे, और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए, और हज़रत मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी, रज़वी की इस किताब को शरफ़े क़ुबूलियत से नवाज़े, और मक़बूले अनाम बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

फ़क़त

मोहम्मद क़ुदरतुल्लाह रज़वी ग़ुफ़िरालहु
शैखुल हदीस, दारुल उलूम अहले सुन्नत तनवीरुल इस्लाम,
अमर ढोभा, जिला संत कबीर नगर (यू.पी.)
यकुम शअ़बान 1432 हि.

तक़दीम

सिराजुल फुक़हा मुहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा हज़रत अल्लामा, मौलाना, अलहाज
मुफ़्ती मोहम्मद निज़ामुद्दीन साहब क़िब्ला रज़वी दाम ज़िल्लुहुन्नूरानी
सदर शोअ़बए इफ़्ता अल जामिअतुल अशरफ़िया मुबारक पूर, आज़मगढ़ (यू.पी.)

الحمدلله، والصلوٰۃ والسلام علیٰ رسول اللہ وعلیٰ اٰلہٖ وصحبہٖ ومن والاہ:

ख़ुदाए करीम क़ुरआने मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाता है :

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ:

तर्जमा : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से।

(सूरह अन्नहल, आयत 125)

एक दूसरे मक़ाम पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

وَلْتَکُنْ مِّنْکُمْ اُمَّۃٌ یَّدْعُوْنَ اِلَی الْخَیْرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْھَوْنَ عَنِ الْمُنْکَرِ وَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

तर्जमा : और तुम में एक ऐसा गिरोह होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी बात से मना करें और यही लोग मुराद को पहुँचे।

(सूरह आले इमरान, आयत 104)

रब की राह की तरफ़ बुलाने और अम्र बिल मअ़रूफ़ व नही अनिल मुनकर का पैग़ाम सुनाने का एक बेहतर और मोअस्सर तरीक़ा ख़िताबत (वअ़ज़ व नसीहत) है, दीने इस्लाम के फ़रोग़ व इशाअत में ख़िताबत का बहुत बड़ा दख़ल है। यह अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम का शिआर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत और सहाबए किराम व सलफ़े सालेहीन का तरीक़ा है।

ख़िताबत अवाम व ख़वास तक अपनी बात पहुँचा ने का बहुत ही अहम ज़रीआ है हर क़र्न और हर अहद में उलमाए किराम, औलिया अल्लाह और सूफ़ियाए इज़ाम ने इस के ज़रीए एलाए कलमए हक़ का फ़रीज़ा अन्जाम दिया, जिस की बदौलत बे शुमार कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने कलमए ला इलाहा इल्लल्लाह से अपने दिलों को रोशन व मुनव्वर किया। उन के ख़िताब قال اللہ وقال الرسول के नग़मों से पुर नूर और ख़ुलूस व लिल्लाहियत से मुरस्साअ होते थे जिस के असर से लोगों के दिलों में जज़बए ईमानी बेदार हो जाया करता, सेकड़ों सख़्त दिल मोम, और न जाने कितने बे दीन, दीने हक़ क़ुबूल कर के मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो जाया करते थे। यह ख़िताब अज़ दिल ख़ेज़द, बर दिल रेज़द का नमूना हुआ करते थे यानी :

दिल से जो बात निकलती असर रखती है
पर नहीं ताक़त परवाज़ मगर रखती है

इसी सुन्नते नबवी को ज़िन्दा रखने के लिये अस्रे हाज़िर में भी खुतबा की एक अज़ीम जमाअत दावत व इरशाद से वाबस्ता है इन में बाज़ तो खुलूस व लिल्लाहियत के साथ दावत व इरशाद के मिशन में मुनहमिक हैं मगर बाज़ ने माल व जाह के लिये इसे पेशा बना लिया है। जो अपनी तक़रीरों में जिद्दत पैदा करने के लिये मोज़ू रिवायतें शौक़ से बयान करते हैं जिस से अवामे अहले सुन्नत में रुश्दो हिदायत नहीं बल्कि इन्तिशार और व वहशत का दरवाज़ा खुल जाता है। और कभी इन्तिशार में इस हद तक इज़ाफ़ा हो जाता है कि ग्रुप बन्दी तक की नौबत आ जाती है। इस से ख़िताबत के ज़रीए तब्लीग़ व इरशाद का मक़सद फ़ौत होता जा रहा है। ऐसे मुक़र्रीन के तअल्लुक़ से कसरत से फ़ोन आते हैं कि फ़लां ने यह बयान किया, यह किस हदीस से साबित है? फ़लां ने यह कहा, क्या किताब व सुन्नत में ऐसा है?

ऐसे मुक़र्रीन को फ़िक़ह इस्लामी के दर्ज ज़ेल मस्अला को ख़ूब अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लेना चाहिये। सदरुश्शरीआ बदरुत्तरीक़ा अल्लामा अमजद अली आज़मी फ़िक़ह हन्फ़ी की मोअतबर व मुस्तनद किताब अद्दुर्रुल मुख़्तार के हवाले से रक़म तराज़ हैं।

मिम्बर पर चढ़ कर वअ़्ज़ व नसीहत करना अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की सुन्नत है और अगर तक़रीर व वअ़्ज़ से माल व जाह मक़सूद हो तो यह यहूदो नसारा का तरीक़ा है। (बहारे शरीअत, हिस्सा 16, स. 626, मकतबतुल मदीना, अद्दुर्रुल मुख़्तार, किताबुल हज़र वल इबाहत फ़स्ल फ़िल बैअ, जि. 9 स. 695)

नीज़ इरक़ाम फ़रमाते हैं:

वअ़्ज़ कहने में बे अस्ल बातें बयान कर देना, मसलन अहादीस में अपनी तरफ़ से कुछ जुमले मिला देना या उन में कुछ ऐसी कमी कर देना जिस से हदीस के मअ़्नी बिगड़ जाएं, जैसा कि इस ज़माने के अकसर मुक़र्रीन की तक़रीरों में ऐसी बातें बकसरत पाई जाती हैं कि मजमे पर असर डालने के लिये ऐसी हरकतें कर डालते हैं, ऐसी वअ़्ज़ गोई ममनूअ़ है।

इसी तरह यह भी ममनूअ़ है कि दूसरों को नसीहत करे और ख़ुद उन्हीं बातों में आलूदा रहे, उस को सब से पहले अपनी ज़ात को नसीहत करनी चाहिये और अगर वाइज़ ग़लत बातें बयान नहीं करता और न इस क़िस्म की कमी बेशी करता है, बल्कि अलफ़ाज़ व तक़रीर में लताफ़त और शुस्तगी का ख़याल रखता है ताकि असर अच्छा पड़े, लोगों पर रिक़्क़त तारी हो और क़ुरआन व हदीस के फ़वाइद और निकात को शरह व बसत के साथ बयान करता है तो यह अच्छी चीज़ है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 16, स. 626, 627, दुर्रे मुख़्तार, जि. 9, स. 697)

हम यहाँ ख़िताब की शरई हैसियत, इस के आदाब, फिर ख़तीब के औसाफ़ पर इख़्तिसार के साथ क़द्रे तफ़सीली गुफ़्तुगू करते हैं:

फ़तावा रज़विया में है:

(1) आलिमे दीन का अम्र बिल मअ़रूफ़ व नही अनिल मुनकर करना, बन्दगाने ख़ुदा को दीनी नसीहतें देना, जिसे वअ़्ज़ कहते हैं ज़रूर आला फ़राइज़े दीन से है। अल्लाह अज़्ज़ व

जल्ला फ़रमाता है : كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

तर्जमा : तुम सब उम्मतों से बेहतर हो जो लोगों में ज़ाहिर हुई तुम हुक्म देते हो भलाई का और मना करते हो बुराई से और ईमान लाते हो अल्लाह पर। (पारा 4, आले इमरान, आयत 110)

और फ़रमाता है : وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जमा : वअ़ज कहता रह कि मुसलमानों को फ़ायदा देता है।

(2) हाज़िरीन का अदब व ख़ामोशी व रुजूए क़ल्ब के साथ वअ़ज़ को सुनते रहना भी मज़हबी इबादत और दीनी फ़र्ज़ है।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला फ़रमाता है : فَبَشِّرْ عِبَادِ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ

तर्जमा : ख़ुश ख़बरी दे मेरे उन बन्दों को जो मुतवज्जह हो कर बात सुनते फिर उस के बेहतर पर अमल करते हैं।

(3) वअ़ज तो ब नस्से कुरआने मजीद फ़र्ज़े मज़हबी है कुतुबे दीनिया में तसरीह है कि हर खुतबे हत्ता कि खुतबए निकाह व खुतबए ख़त्मे कुरआन सुनना भी फ़र्ज़ है और उन में गुल करना हराम, हालांकि खुतबए निकाह सिर्फ़ सुन्नत है और खुतबए ख़त्मे निरा मुस्तहब है। दुर्रे मुख़्तार में आया है : كذا يجب الاستماع لسائر الخطب كخطبة نكاح وعيد وختم على المعتمد

दुर्रे मुख़्तार में है : (قوله: وختم) اى ختم القرآن كقولهم الحمد لله رب العلمين حمد الصابرين

तर्जमा : यूँ ही मज़हबे मोअ़तमद पर दूसरे खुतबात को बग़ौर सुनना भी वाजिब है जैसे खुतबए निकाह, खुतबए ईद, खुतबए ख़त्म कुरआन, जैसे : الحمد لله رب العلمين حمد الصابرين

(4) जो मजलिसे वअ़ज़ में बैठा हो उसे भी बात करना गुनाह है अगरचे आहिस्ता ही हो, इसी तरह सिर्फ़ बे ज़रूरत इधर उधर देखना, या कोई हरकत व जुम्बिश करना और खड़ा हो जाना भी........बल्कि लाज़िम यही है कि उसी की तरफ़ तवज्जोह किये ख़ामोश, कान लगाए सुनते रहें, यहाँ तक कि उस का कलाम ख़त्म हो उस वक़्त तक न इधर उधर देखें न कोई जुम्बिश, न अस्लन कुछ बात करें। तरीक़ा मोहम्मदिया व हदीक़ा नदया में है :

قطع كلام الغير من غير ضرورة خصوصا اذا كان فى مذاكرة العلم الشرعى اثم وكذا التكلم
من هو جالس فى مجلس عظة اى وعظ وتذكير ولو مع اخفاء اه ملتقطا۔

(फ़तावा रज़विया, जि.9, स. 207, किताबुल हज़र वल इबाहत, रज़ा अकेडमी)

(5) मेरे एक फ़तवे में है :

वअ़ज़ व तक़रीर का हक़ आलिमे दीन को है जो दीनी अक़ाइद व मसाइल व अहकाम पर अच्छी नज़र रखता हो। नासिख़ मन्सूख़, राजिह मरजूह, मुजमल मुबीन, मुतलक़ मुक़ीद, शिआर व तआमुल और ज़रूरियाते दीन व ज़रूरियाते अहले सुन्नत, मुहकम, मुतशाबा, हराम, मकरूह फ़र्ज़ वाजिब, सुन्नत वग़ैरह के फ़र्क़ से अच्छी तरह आगाह हो। दीनी उमूर और माफ़िज़्ज़मीर की सही ताबीर पर क़ादिर हो, ताकि वह उम्मत को सही पैग़ाम, सही ताबीर के साथ पहुँचा सके।

इस मेअ्यार पर जांचा जाए तो मिंबर व मेहराब में तक़रीर करने वाले बहुत थोड़े उलमा खिताबत व वअ्ज़ के अहल मिलेंगे और कम से कम नव्वे फ़ीसद गुनाहगार और वअ्ज़ व खिताबत से ममनूअ ठहरेंगे मगर उलमा की दावत पर या इजाज़त से या उन के सामने उन के मवाइज़ व खुतबात होते हैं फिर गुनाह का दायरा ऐसे सारे उलमा को भी लपेट में लेगा जो उन्हें मदऊ करे और उन के वअ्ज़ में शरीक होते हैं।

वाक़िआ यह है कि बहुत से वाइज़ीन व खुतबा ज़िम्मेदार उलमाए अहले सुन्नत की किताबों से खुतबात और मज़ामीन याद करके अपने अन्दाज़ में सुनाते हैं फिर उमूमन उन के उनवानात भी वह होते हैं जो अहले सुन्नत के यहाँ मुसल्लमात से हैं। मसलन सरकारे दो आलम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के हाज़िर व नाज़िर होने का मस्अला, इल्मे ग़ैब का मस्अला, हयातुन्नबी का मस्अला, इख्तियार व तसर्रुफ़ का मस्अला, रद्दे वहाबिया, नमाज़े पन्जगाना की तब्लीग़, तिलावते कुरआने हकीम की तरग़ीब, मुख्तलिफ़ उमूर में सुन्नत की पैरवी की तरग़ीब वग़ैरह। ऐसे उमूर पर अहले सुन्नत का अमल है। इस लिये यहाँ मुतशाबा, मन्सूख, मरजूह वग़ैरह का बयान उमूमन नहीं पाया जाता। लिहाज़ा मौजूदा हालात में अहकाम व मसाइल का वाक़िफ़ कार, सही उर्दू ख्वां अगर ज़िम्मेदार उलमाए हले सुन्नत की किताबें पढ़ कर सुनाए या अच्छी तरह याद करके सुनाए और इस में अपनी तरफ़ से किसी मज़मून का इज़ाफ़ा न करे तो इस तौर पर वअ्ज़ कहना जाइज़ है और मौज़ूआत (गढ़ी हुई हदीसें) बयान करे, अपनी तरफ़ से खिलाफ़ शरअ उमूर बयान करे और जुरअत का मुज़ाहिरा करते हुए कुछ भी बोले इस के लिये हराम है।

खुतबात से मुतअल्लिक़ उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत ने कसीर तादाद में किताबें तालीफ़ की हैं जैसे ईमानी तक़रीरें इरफ़ानी तक़रीरें, नूरानी तक़रीरें, हक़्क़ानी तक़रीरें, खुतबाते बहरुल उलूम, खुतबाते मुफ़क्किरे इस्लाम, खुतबाते मुहद्दिसे कबीर, खुतबाते मुहर्रम, खुतबाते बरतानिया, वग़ैरह ज़ेरे नज़र किताब अनवारुल बयान इसी सिलसिले की एक अहम कड़ी है, इस के मुअल्लिफ़ मुहिब्बे गिरामी हज़रत मौलाना अनवार अहमद क़ादरी साहब दाम मजदुहुम हैं। अनवार की मुनासिबत साहबे किताब से है और वअ्ज़ व तक़रीर पर बयान का इतलाक़ होता है।

चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है : ان من البيان لسحر बे शक कुछ बयान (वअ्ज़) जादू की सी तासीर रखते हैं। (सही मुस्लिम शरीफ़, स. 286, किताबुल जुमुअह)

इसी लिये रूहुल बयान के वज़न पर हजरत बहरुल उलूम मुफ़्ती अब्दुल मन्नान आज़मी नव्वरल्लाहो मुरक़दुहु ने इस का नाम अनवारुल बयान तजवीज़ किया।

अनवारुल बयान तीन जिल्दों पर मुश्तमिल 92 खुतबात का मजमुआ है। 92 की मुनासिबत मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के इस्मे पाक मुहम्मद के मजमूअए अअ्दाद से है। इन्शाअल्लाह इसकी बरकत से खुदाए करीम इन

खुतबात के मजमूआ को मकबूले अनाम बनाएगा।

मौलाना मौसूफ ने उत्तर प्रदेश के मअरूफ जिला बस्ती (मौजूदा सिद्धार्थ नगर) के एक खुश हाल घराने में 1962 ई. में आँख खोली। इब्तिदाई तालीम मदरसा गौसिया फैजुल उलूम बढ़या जिला सिद्धार्थ नगर में हासिल की। आला तालीम के लिये दारुल उलूम फ़ैजुर्रसूल ब्राउं शरीफ में दाखला लिया और वहाँ के असातिजा किराम से दर्से निजामी की मुन्तही किताबें पढ़ीं। जिन में हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन अहमद कादरी रज़वी गिरवाही अलैहिर्रहमा, हजरत मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आजमी अलैहिर्रहमा जैसे जलीलुल क़द्र उलमाए दीन शामिल हैं, अव्वलुज़्ज़िक्र शख्सियत से बैअत व इरादत और इजाजत व खिलाफ़त हासिल है।

फ़रागत के साल मुफ़्तिये मालवा हजरत मौलाना रिज़वानुर्रहमान फारूकी अलैहिर्रहमा के साथ इन्दौर चले आए और वहाँ के मशहूर दारुल उलूम दारुल उलूम नूरी के जश्ने फ़जीलत में जुब्बा व दस्तार से नवाज़े गए। मौलाना को इस शहर का माहौल बहुत रास आया और इन्दौर ही के एक एहम इलाका खजराना में एक वसीअ़ व अरीज खित्तए आराजी पर जामिआ गौसिया ग़रीब नवाज़ के नाम से 1416 हि. में एक दारुल उलूम क़ाइम किया जिस का शुमार बस्ते हिन्द के काबिले ज़िक्र मदारिस में होता है। मौलाना तबअन इल्म दौस्त वाकेअ़ हुए हैं और वह मुस्लिम बच्चों में दीनी तालीम की रूह फूंक देने का जज्बा रखते हैं इस लिये इन्होंने अपने दारुल उलूम के लिये बा ज़ौक, बा सलाहियत मुदर्रसीन की एक अच्छी टीम मुहय्या कर ली है और अब तालीम को फ़रोग़ दे कर माशा अल्लाह दर्जा फ़ज़ीलत तक पहुँचा दिया है।

वस्ते हिन्द में मौलाना मौसूफ़ खिताब के ज़रीए दावत व तब्लीग का ज़बरदस्त काम कर रहे हैं। अनवारुल बयान उन के उन्हीं खुतबात का मजमुआ है जो जा बजा किताबों के हवाला जात से मुजय्यन और तक़रीर के वालिहाना लब व लहजा पर मुश्तमिल है। मेरी दानिस्त में 92 खुतबात पर मुश्तमिल इतनी जखीम किताब बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में मतबूअ नहीं है। इस तरह दावत व तब्लीग़ का काम हर खतीब इलाकाई सतह पर करने लगे और खिताब में अस्ल रिवायतों पर ही इक्तिफ़ा करे, मुस्तनद किताबों में मजकूरा वाक़िआत को बयान करे तो दावत व तब्लीग के जरीए मालूमात का एक अजीम जखीरा लोगों तक पहुँच जाएगा।

मौलाना से मेरी मुलाकात सब से पहले (ऐ पी) हैदर आबाद के एक दीनी जल्से में हुई, मौलाना खन्दा रोई के साथ मिले और कल्बी मोहब्बत व हुस्ने अखलाक का मुजाहरा किया, और ऐसे कितने लोग हैं जो मौलाना के हुस्ने अखलाक के असीर हैं, बहरुल उलूम हज़रत मौलाना मुफ्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से उन्हें कल्बी अकीदत रही है और हजरत भी उन्हें दिल से चाहते हैं, मौलाना को इत्तिलाअ़ मिली कि हजरत बहरुल उलूम अलील चल रहे हैं तो इयादतो ज़ियारत के लिये मुबारकपूर का अज़्म कर लिया। मैं उन्हीं की दावत पर 2 ता 4 अक्तूबर 2012 जामिआ गौसिया गरीब नवाज़ में मुकीम था, हम

दोनों 5 अक्तूबर 2012 को बज़रीए तय्यारा इन्दौर से देहली होते हुए बनारस और बनारस से बज़रीए कार मुबारक पूर आए और बाद नमाज़े अस्र हज़रत की इयादत के लिये हाज़िर हो हज़रत बे पनाह मसरूर हुए, मौलाना ने रात का खाना हज़रत बहरुल उलूम अलैहिर्रहमा के यहाँ खाया फिर इजाज़त ले कर कोई दस बजे शब में बस्ती के लिये रवाना हुए। उस के बाद सिर्फ़ एक माह चौबीस रोज़ हज़रत बहरुल उलूम हयात रहे और 29 नवम्बर को बादे इशा 9:20 बजे रहलत फ़रमा गए।

अनवारुल बयान के बयानात किस क़द्र मसहूर कुन हैं इस का अन्दाज़ा तो क़ारेईन की क़ल्बी कैफ़ियत से ही हो सकता है लेकिन हमें इतना मालूम है कि उन्हीं मज़ामीन को मौलाना जब अपने वालिहाना अन्दाज़ में बयान करते हैं और मेरे रज़ा, प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, कह कर इश्क़ व मोहब्बत की बातें नक़्ल करते हैं तो पूरे मजमे पर एक कैफ़ सा तारी हो जाता है और सामेईन झूम झूम जाते हैं फिर नअरहाए तकबीर व रिसालत की गूंज से एक समां बन्ध जाता है, मैं नहीं समझता कि यह सिर्फ़ मौलाना के तर्ज़े बयान और ज़ोरे ख़िताब का जादू है बल्कि इस में कुछ न कुछ दख़ल मज़ामीन की तासीर का भी ज़रूर है।

किताब ख़ासी ज़ख़ीम होने के बाइस मेरे लिये इस का बिल इस्तीआब मुतालआ दुश्वार था इस लिये इस के उनावीन पर एक नज़र डाली और बहुत से मक़ामात से मुख़्तलिफ़ इक़्तिबासात भी पढ़े, फिर मौलाना को कुछ मशवरे दिये जिसे उन्हों ने ब तैय्यिब ख़ातिर क़ुबूल किया। इन्सान सहव व निसयान से महफ़ूज़ नहीं इस लिये हम इस से बराअत का ऐलान तो नहीं कर सकते लेकिन इतना ज़रूर है कि मौलाना ने इस के जमा व तालीफ़ और तरतीब व तहज़ीब में पूरी मेहनत सर्फ़ की है और तक़रीबन पाँच साल के तवील अर्से तक शब बेदारी कर के बयानात का यह गुलदस्ता तैय्यार किया है इस लिये हमें तवक़्क़ोअ है कि यह किताब इस्मे बा मुसम्मा साबित होगी और इस से ख़ल्के ख़ुदा को नफ़ा कसीर हासिल होगा।

दुआ है कि ख़ुदाए करीम अनवारुल बयान को मज़ीद ताबिशें अता फ़रमाए और उन के ज़रीए एक आलम ज़ियाबार हो।

मोहम्मद निज़ामुद्दीन रज़वी
ख़ादिमे दर्स व इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया, मुबारक पूर
शब दो शंबा, 25 मुहर्रमुल हराम 1434 हि.
9 दिसम्बर 2012 ई.

तक़रीज़

हबीबुल उलमा शैखुल असातिज़ा, हज़रत अल्लामा, मौलाना, मुफ्ती अलहाज
मोहम्मद हबीब यार खान साहब क़िब्ला मद्दज़िल्लुहुल आली मुफ्तिये मालवा
सदर व मोहतमिम दारुल उलूम नूरी, इन्दौर

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله و كفى و الصلوٰة و السلام على حبيبه المجتبى و على آله و صحبه نجوم الاهتداء۔ و على التابعين و تبعهم و المجتهدين و مقلديهم و المجددين و محبيهم الى يوم الجزاء۔ لا سيما الشهيد الاعظم و الامام الاعظم و المجدد الاعظم الامام احمد رضا و على ابنيه الكريمين حجة الاسلام حامد رضا و مجدد المأة الحاضرة محمد مصطفى رضا جزاهم الله تعالىٰ عنا و عن جميع اهل السنة و الجماعة خير الجزاء۔ امابعد!

बहुत अच्छे ख़तीब को सहरुल बयान कहते हैं कि वह अपने ख़िताब से सामेईन को मसहूर व मुसख्ख़र और मुतास्सिर कर लेता है। यह दर अस्ल उस के अन्दाज़े ख़िताब का कमाल है।

और अगर उस का मज़मून भी ख़ूब से ख़ूब तर हो तो फिर उस की सेहर आफ़रीनी का क्या कहना। जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम रतबुल लिसान हैं : ان من البيان سحراً

पता चला कि यह सेहर, सेहरे हलाल है।

और सेहर बयानी हर ख़तीब को हासिल नहीं होती, अलबत्ता यह इनआमे ख़ुदा और अतियए रसूले ख़ुदा है। जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो सिर्फ़ सआदत मन्दों क़ो ही हासिल होती है।

फिर किसी बयान को बेहतरीन अलफ़ाज़ का जामा पहना कर ऐसे उमदा पैराए में पेश करना कि पढ़ने वाला जब पढ़े तो न सिर्फ़ पढ़ता चला जाए बल्कि उस तहरीर के असर को भी क़ुबूल करता जाए और उस की दिल चस्पी भी मुसलसल परवान चढ़ती रहे। बजा तौर पर ऐसी तहरीर को सेहर कलामी कहा जा सकता है।

पस तक़रीर व तहरीर यानी ख़िताबत व तस्नीफ़ दो अलैहदा अलैहदा फ़न हैं और दोनों की इफ़ादियत मुसल्लम है।

दुनिया का कोई इन्क़िलाब हो, ख़यालात व नज़रियात का इन्क़िलाब हो या ज़हन व फ़िक्र का इन्क़िलाब, लिसानी इन्क़िलाब, हो कि तहज़ीबी इन्क़िलाब, क़ौमों का इन्क़िलाब हो कि मुल्कों का इन्क़िलाब, ख़ुदा परस्ती का इन्क़िलाब हो कि किरदार व अमल का इन्क़िलाब, इस्लामी इन्क़िलाब हो कि जमहूरी इन्क़िलाब बहर हाल हक़ व

बातिल का कोई इन्क़िलाब हो तक़रीर व तहरीर की हुक्मरानी हर जगह मौजूद और कार फ़रमा नज़र आती है।

फिर यह और भी मुसल्लम है कि तक़रीर व तहरीर के यह दोनों वस्फ़ शाज़ व नादिर ही शख़्से वाहिद में जमा नज़र आते हैं। माज़ी क़रीब में यह दोनों वस्फ़ ख़तीबे मश्रिक़ हज़रत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिर्रहमा में बदरजए अतम मौजूद थे।

आमदम बरसरे मतलब हम यह देखते हैं कि हज़रत मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी जहाँ मैदाने ख़िताबत के शहसवार हैं वहीं उन का तस्नीफ़ व तालीफ़ में भी काफ़ी दख़ल है।

ज़ेरे नज़र ख़ुतबात बनाम अनवारुल बयान मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर मुश्तमिल, हवालाजात से मुज़य्यन एक बेहतरीन दस्तावेज़ है जिसमें मौलाना मोहतरम ने क़ुरआनो हदीस और सहाबए किराम व अइम्मए दीन के इरशादात की रोशनी में अक़ाइद व मामूलाते अहले सुन्नत व जमाअत को ऐसे दिल नशीं अन्दाज़ में पेश किया है कि जो अवामे अहले सुन्नत के लिये ईमान अफ़रोज़ है तो दरमियानी तबक़ा के लिये क़ाबिले क़ुबूल है तो दूसरी तरफ़ मुख़ालिफ़ व मुआनिद के लिये ना क़ाबिले इनकार है और यही मौलाना मोहतरम की तहरीर का बहतरीन पहलू है।

इस पर तुर्रा, इश्क़ो महब्बत में डूबे हुए इमामे इश्क़ो महब्बत के वह अशआर हैं जो क़ुरआनो हदीस के आईना दार हैं। मौक़ा व मौका उन्हें इस तरह पेश किया गया है कि मज़मून का लुत्फ़ दो बाला हो जाता है और बात भी पढ़ने वाले के दिल में फ़ौरन उतर जाती है नीज़ आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शख़्सियत भी निखर कर सामने आ जाती है और वह भी दिल में उतरते चले जाते हैं। इस से साबित होता है कि इहक़ाक़े हक़ और इब्ताले बातिल का दूसरा नाम इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी है। रज़ियल्लाहो तआला अन्ह, ।

दुआ है कि मौला तआला मौलाना मोहतरम की इस काविश को शर्फ़े क़ुबूल अता फ़रमाकर मक़बूले हर ख़ासो आम फ़रमा दे और गुम गश्तगाने राहे हक़ के लिये इसे मिशअले राह बनाए। आमीन बिजाहिन्नबिय्यिल करीम अलैहि व अला आलिहि व अस्हाबिहि अफ़ज़लुस्सलाति वत्तस्लीम। फ़क़त

खुलूस केश
मोहम्मद हबीब यार ख़ाँ क़ादरी ग़ुफ़िरालहु
दारुल इफ़्ता मरकज़े अहले सुन्नत जामा मस्जिद, शहर इन्दौर
2 मुहर्रमुल हराम 1434 हि., 5 दिसम्बर सन् 2012 ई.

कलेमाते तहसीन

शहज़ादए हुज़ूर ग़रीब नवाज़, हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज अश्शाह
सय्यद मुहम्मद मेहदी मियां चिश्ती ख़ादिम ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो,
अजमेरे मुक़द्दस (राजस्थान)

अज़ीज़े मिल्लत अज़ीज़ुल क़द्र अल्लामा मुहम्मद अनवार अहमद रज़वी, नूरी, बरकाती, सल्लमहुल मौला अल क़वी, अहले सुन्नत के ऐसे मुनफ़रिद जवाने सालेह व मुमताज़ आलिमे दीन हैं कि मेरे सामने मौलाना अनवार अहमद रज़वी सल्लमहू का दौरे तालिबे इल्मी भी है। जब कि मैं ख़ुद हज़रतुल अल्लाम उस्ताज़ुल असातिज़ा क़ातेए नजदियत क़िब्ला उस्ताज़ी हज़रत अल्लामा मौलाना बदरुद्दीन अहमद रज़वी अल क़ादरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की सोहबत में रहकर शरफ़े तलम्मुज़ हासिल किया सन् 1977 ई. में बढ़या ज़िला बस्ती गया था, मौलाना अनवार अहमद साहब ज़मानाए तालिबे इल्मी में दरसी किताबों से शग़फ़ ख़ूब रखते थे। और उस्ताज़े मुअज़्ज़म का यह ख़ुसूसी तुर्रए इम्तियाज़ था कि तलबा अमली ज़िन्दगी से आरास्ता हों। मौलाना अनवार अहमद साहब मदरसा ग़ौसिया बढया में जब ज़ेरे तालीम थे उसी वक़्त से अमली ज़िन्दगी बेहतर और अच्छी गुज़ारने में लगे रहते थे। देर रात तक मुतालआ और नमाज़ों की अदाएगी, पाबन्दिये जमाअत करते थे। दर्से निज़ामी की तकमील बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा की ज़ेरे निगरानी की। दीन व सुन्नियत की तरवीज व इशाअत के लिये अपने वतने अज़ीज़ ज़िला बस्ती यू.पी. को ख़ैर बाद कह कर सर ज़मीने इन्दौर में क़याम पज़ीर हुए और दावत व तब्लीग़ का सिलसिला उस वक़्त से ता हुनूज़ ख़ूब से ख़ूब तर जारी है। इसी दौरान उस्ताज़े मुअज़्ज़म के ईमा पर मौलाना ने अपनी ज़ाती रक़म से जो ज़मीन ख़रीदी थी उसी ज़मीन पर ग़ौसो ख़्वाजा के नाम से इदारा की बुनियाद रख दी। उस की क़ीमत करोड़ों रुपये की है फ़ारिग़ुत्तहसील हो कर दीन व सुन्नियत की तब्लीग़ व इशाअत में सर गर्म हैं। दारुल उलूम की तामीरी सिलसिले के दौरान ही मौलाना अनवार अहम साहब क़ादरी ने अपनी तवज्जोह तस्नीफ़ व तालीफ़ की तरफ़ की। जिस के नतीजे में माशा अल्लाह कई किताबें तस्नीफ़ कर चुके। ज़ेरे नज़र किताब अनवारुल बयान में मौलाना अनवार अहमद

क़ादरी ने एक अछूते अन्दाज़ को अपनाया जो अवाम व ख़वास अहले सुन्नत के लिये एक अज़ीम तोहफ़ा है। जिस में आयाते कुरआनी, हदीसे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व इरशादाते औलियाए किराम को यकजा जमा कर के साल के बारह महीनों में आक़ाए दो जहाँ अरवाहुना फ़िदाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरते तैय्यिबा से ले कर ख़ुलफ़ाए राशेदीन, अहले बैते अतहार, इमामैन करीमैन, औलियाए कामेलीन व सालेहीन के अज़कार व फ़ज़ाइल मुस्तनद माख़ज़ से जमा कर दिये हैं।

बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में यह गदाए चिश्ती ब तुफ़ैले सरकारे ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दस्ते ब दुआ है कि मौला तआला मौसूफ़ की इस काविश को क़ुबूले आम व ख़ास फ़रमाए और आइन्दा भी इसी तरह की तस्नीफ़ व तालीफ़ की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन, बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

इस किताब को गदाए चिश्ती ने कहीं कहीं से देखा। माशा अल्लाह ख़ूब लिखा। अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा हो।

दुआगो

सय्यद मोहम्मद मेहदी मियां चिश्ती

आस्तानए हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1434 हि.

मुताबिक़ 19 दिसम्बर 2012 ई.

तक़रीज़

नूरुल उलमा उस्ताज़ुल असातिज़ा, हज़रत अल्लामा, मौलाना अलहाज
मुफ़्ती मोहम्मद नूरुल हक़ साहेब क़िब्ला, रज़वी, नूरी
शेखुल हदीस दारुल उलूम नूरी, इन्दौर (म.प्र.)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ

दारुल उलूम नूरी के फ़ारेग़ीन में एक ऐसा चमकता और दमकता नाम अताए ख्वाजा हज़रत अल्लामा मौलाना अनवार अहमद क़ादरी रज़वी ज़ादा इल्मुहु व क़द्‌रुहु का है कि जिन पर दारुल उलूम नूरी को नाज़ व फ़ख़्र है, जिन्होंने कम उमरी में जो शोहरत व मक्बूलियत हासिल की है वह बहुत कम लोगों को मयस्सर आती है। उन की दीनी व मिल्ली ख़िदमात मोहताजे तआरुफ़ नहीं। दारुल उलूम ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, इन्दौर उन की जीती जागती तस्वीर है। दीन व सुन्नियत की तरवीज व इशाअत में शबो रोज़ कोशां रहते हैं। गोनां गूँ खुसूसियात के हामिल हैं मगर ख़िताबत की मक्बूलियत का यह आलम कि ख्वाजा की नगरी में मुसलसल चौदह साल तक अय्यामे उर्स में अपनी ख़िताबत के जोहर दिखाते रहे और ख्वाजा के मस्तों को इश्क़ का जाम पिलाते रहे और ख़ुद फ़ैज़ाने ख्वाजा से मालामाल होते रहे। यह ख्वाजए हिन्द का फ़ैज़ान ही तो है कि इहातए नूर का कमसिन खतीब आज दुनियाए सुन्नियत का बा कमाल खतीब नज़र आ रहा है।

हर मुकर्रिर का एक मखसूस अन्दाज़ होता है मौसूफ़ का रंग भी सब से जुदा गाना है इस्लाहे अकाइद और रद्दे वहाबियत इन का महबूब मशग़ला है। आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शेदाई हैं, मस्लके आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तर्जमानी इस अन्दाज़ में करते हैं कि सामेईन के दिलों में इश्क़े रसूल की लौ तेज़ हो जाती है और वह झूम झूम उठते हैं, जब इमामे इश्क़ो महब्बत की बात आती है तो मौसूफ़ की ज़बान से मेरे रज़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा के बोल बड़े अच्छे लगते हैं। हाँ ! गुस्ताख़ाने रसूल का ज़िक्र आता है तो तेवर बदल जाता है, आवाज़ में शिद्दत पैदा हो जाती है और बादलों की तरह गरजने लगते हैं।

तहरीर में भी तक़रीर का रंग मौजूद है, बद मज़हबों को ललकारना उन्हें ख़ूब आता है लेकिन अपनों की भी इस्लाह करने से नहीं चूकते। पीरी मुरीदी के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं:

ऐ ईमान वालो ! पीरी मुरीदी, जाह व माल और दुनिया कमाने का ज़रीआ नहीं है, यह मुबारक व मस्ऊद अमल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व

सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा व ख़ुश्नोदी के हुसूल का ज़रीआ है। ख़िलाफ़त व इजाज़त हर किसी को देने की चीज़ नहीं है। हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जो पैदाइशी वली हैं बीस साल तक पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में गुज़ार और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी से सरफ़राज़ हुए फिर पीरो मुर्शिद ने आप को ख़िलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा मगर आज इल्म व मअ़रिफ़त और तक़वा व तहारत नहीं बल्कि चापलूसी और लम्बे नज़रानों की बुनियाद पर पीरो मुर्शिद बनने वाले, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, बे अमल व बे इल्म और बे नमाज़ी लोगों को भी ख़िलाफ़त व इजाज़त देते नज़र आ रहे हैं। अल इयाज़ बिल्लाहि तआला।

पुर ख़ुलूस गुज़ारिश : पीरो मुर्शिद साहब और मुरीद साहब दोनों की ख़िदमत में पुर ख़ुलूस गुज़ारिश है कि कभी तन्हाई में ठन्डे दिल से अपने गिरेबान में बार बार झांक कर देखिये और ग़ौरो फ़िक्र कीजिये कि क्या हमारे इस तर्ज़े अमल से हमारे मशाइख़ और पीराने किराम के नूरानी व रूहानी सिलसिले की बे अदबी व गुस्ताख़ी नहीं है अगर है तो तौबह कर लीजिये और सच्चे पीर व मुरीद बन जाइये।

मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर कई किताबें आप की मन्ज़रे आम पर आ गई हैं लेकिन तक़रीरों का यह हसीन मजमुआ अपनी मिसाल आप है। हक़ीक़त तो यह है कि इश्क़े रसूल में डूबी हुई यह तक़रीरें अइम्मए मसाजिद के लिये ख़ूब सूरत तोहफ़ा हैं उन को लिखने, हवाला जात से मुज़य्यन करने, संवारने और सजाने में बड़ी मेहनत की है यह कोई आसान काम नहीं था, मुसलसल जिद्दो जहद और शब बेदारी के बाद यह हसीन मजमुआ आप के हाथों में है, वह काम करना भी जानते हैं और लेना भी। मैं जब भी दीनी निसाब की इशाअत के सिलसिले में रज़वी कम्प्यूटर गया अकसर वहाँ हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन साहब क़ादरी बरकाती को मौजूद पाया, घन्टों इस काम में लगे रहते। जब किताबत व तबाअत का यह हाल है तो तालीफ़ व तरतीब में कितना वक़्त लगा होगा। मैं मौसूफ़ को इस मुबारक जिद्दो जहद पर मुबारक बाद पेश करता हूँ और दुआ करता हूँ कि मौला तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल इस गुलदस्ता को तैय्यार करने, संवारने और सजाने में जितनी मेहनत की गई है इस को उतना ही मुफ़ीद व मक़बूल बनाए और और मुअल्लिफ़ को सआदते दारैन से सरफ़राज़ फ़रमाए। आमीन।

मोहम्मद नूरुल हक़ नूरी ग़ुफ़िरालहू
ख़ादिम, दारुल उलूम नूरी, इन्दौर (म.प्र.)
27 मुहर्रमुल हराम, 1434 हि.

तअस्सुरे गिरामी

उमदतुल मुदर्रेसीन, अदीबे शहीर, हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज
मोहम्मद आरिफ़ साहब क़िब्ला, बरकाती
सदरुल मुदर्रेसीन, अल जामिअतुल गौसिया गरीब नवाज़, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

अल्लाह रब्बे पाक ने इन्सानी हिदायत के लिये अम्बियाए किराम, अलैहिमुस्सलाम के मुकद्दस गिरोह की तखलीक फरमाई, और उन्हें वही की ताईद के साथ मबऊस फरमाया, यहाँ तक कि नबिये आखिरुज्जमां सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ ले आए। आप के मकसदे बेअसत की तरफ कुरआने पाक ने इन अलफ़ाज में इशारा फ़रमाया : يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ

मकसद की अहमियत और इफादियत के पेशे नज़र हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह ज़िम्मेदारी अपने नाएबीन उलमाए किराम को भी अता फरमाई। यह उसी ज़िम्मेदारी का एहसास है कि जमाअते उलमा आज तक दीन की खिदमत के लिये कोशां है। हज़ारों रुकावटों के बावजूद ज़माना उन्हें उन के फ़र्ज़े मन्सबी से दूर न कर सका।

उलमाए किराम मैलाने तबअ या उनके अन्दर पाए जाने वाले इल्मी जवाहर पारों के लिहाज से खिदमते दीन के लिये मैदाने अमल का इन्तिखाब करते रहे। लिहाज़ा तदरीस, तहरीर, तकरीर, इमामत, इदारों का क़याम, मसाजिद की तामीरी और तन्ज़ीम कारी व ग़ैरह में से बाज ने किसी एक को और फ़ौलादी इरादे के मालिक हज़रात ने एक से ज़ाइद को अपनी फ़िक्र व अमल की जोलान गाह मुन्तखब फ़रमाया। पेशे नज़र किताब अनवारुल बयान के मुसन्निफ़ नमूनए अस्लाफ़, अनवारुल उलमा, पीरे तरीकत हज़रत अल्लामा अनवार अहमद साहेब क़िब्ला कादरी का शुमार सुनुफ़े सानी से है। एक ज़माना तक तदरीस से मुनसलिक रहे दर्जन भर से ज़ाइद मसाजिद की तामीर उन्हीं की कोशिशों से वुजूद में आई। कई तन्ज़ीमों के रुक्न और ज़िम्मेदार की हैसियत से भी अपनी पहचान बनाई। इमामत की ज़िम्मेदारियाँ ता हुनूज़ निभा रहे हैं।

अल जामिअतुल गौसिया गरीब नवाज़ जैसा अज़ीमुश्शान इदारा काइम फरमा कर अहले नज़र से अपने हुसने इन्तिज़ाम का खिराज हासिल कर रहे हैं। और सिलके खिताबत के ऐसे ताबदार मोती कि जहोंने खिताब उस के अनवार से जगमगा रहा है।

इस हमा जहत मसरूफ़ियत के बावजूद जब मैदाने तहरीर में उतरे तो एक के बाद एक किताब सुन्नियत के फ़रोग़ के लिये क़ौम को अता फ़रमाते रहे और अब अनवारुल बयान की सूरत में तक़रीबन 1800 सफ़हात पर फैली हुई यह अज़ीम किताब जिन के अनावीन की गिनती 92 पर मुन्तही होती है। आप के हाथों में है। यक़ीनन यह इस्मे मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही की करम फ़रमाइयाँ हैं कि बग़ैर किसी इरादे के अनावीन को यह अददे मुबारक हासिल हो गया।

इतने मसरूफ़ शख़्स के लिये इतना बड़ा काम आसान न था मगर मौसूफ़ की हुस्ने तलब ने इसे आसान कर दिया।

दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता
जो मांगने का तरीक़ा है उस तरह मांगो

सन् 2009 ई. में हज के दौरान राक़िमुल हुरूफ़ का सफ़र हज़रत के साथ था। मैं ने देखा हरमे पाक में कअ़बा शरीफ़ के नज़दीक ही मकाम मेअराज पर किताब के कुछ औराक़ ले कर हाज़िर हैं। जो हरम शरीफ़ ही में लिखे गए हैं। ख़ुद भी दुआ कर रहे हैं और उलमाए किराम से भी दुआ के तालिब हैं और कअ़बा की छांव में सब की दुआओं में सब की दुआओं से उसे आसान और मक़बूल बनाने की कोशिश कर रहे हैं। और फिर मज़ीद दुआओं के लिये कअ़बा के कअ़बा रोज़ए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर भी हाज़िर हुए (राक़िम उस वक़्त साथ न था) बग़दादे मुअ़ल्ला हो या अजमेरे मुक़द्दस, या इश्क़ो मुहब्बत की सर ज़मीन बरैली शरीफ़, हर जगह मुसन्निफ़ का किताब के साथ यही मअमूल रहा। यह मुआमला तो अक़ीदत से मुतअ़ल्लिक़ था। रहा किताब से मुतअ़ल्लिक़ एहतिमाम और इस पर की गई मेहनत का सवाल तो इस का जवाब मेरे मेहसूसात व मुशाहिदात में इजमालन यह है कि इस में भी मुसन्निफ़ ने कोई कसर उठा न रखी। हज़रत बहरुल उलूम को अपना सर परस्ते कार मुन्तख़ब फ़रमाया, और बहरुल उलूम ने भी हक़्क़े सरपरस्ती अदा करते हुए किताब को अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ा बल्कि ख़ासा वक़्त भी इनायत फ़रमाया। जितना उन के लिये आसान था मुसलसल कई रात तक पढ़ कर देखा फिर जलीलुल क़द्र तक़रीज़ अता फ़रमाई।

मुहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद निज़ामुद्दीन साहेब क़िब्ला दाम ज़िल्लुहु अपनी गोना गों मसरूफ़ियात के बावजूद मुसन्निफ़ के मुशीरे ख़ास रहे यहाँ तक कि तीन दिन तक जामिआ में रहकर जामिआ के असातिज़ा के साथ मिल कर किताब की तहज़ीब करते रहे और किताब को गिरां क़द्र तक़दीम से नवाज़ा। मेहनतो शाक़्क़ह का यह आलम रहा कि हज़रत ने पाँच साल की रातों की स्याही को दिन का उजाला बना डाला। किताब को बा वज़न बनाने के लिये हवालों का इल्तिज़ाम किया

गया है। कभी कभी किसी हवाला की तलाश में कई कई दिन भी लगे हैं। जामिआ के असातिज़ा ने भी इस सिलसिले में अर्क़ रेज़ी की है। बिल ख़ुसूस हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन साहब खास मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं। वह इस मुबारक सफ़र में मुसन्निफ़ के साए की तरह साथ रहे। किताब की ज़बान सादा सलीस उमदा और शाइस्ता है जो ख़िताब के लिये मौज़ूं तर है।

तस्नीफ़ व तालीफ़ की मशक़्क़तें जो किताबों में पढ़ी या लोगों से सुन रखी थी। किताब की तालीफ़ के दौरान उन्हें बड़े क़रीब से देखा। बहर हाल अल्लाह के करम उस के हबीब की रहमत और बुज़ुर्गों की इनायतों, ख़ुसूसन ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की हिमायतों, के सदक़े वह दिन भी आया जब किताब पूरी हुई और मुसन्निफ़ किताब को ले कर हज़रत ताजुश्शरीआ की बारगाह में बरैली शरीफ़ हाज़िर हुए मैं ख़ुद शरीके सफ़र था। हज़रत ताजुश्शरीआ ने फ़ेहरिस्ते किताब का कुछ हिस्सा समाअत करने के बाद फ़रमाया पढ़ कर सुनाइये। हुक्म के मुताबिक़ एक जगह से काफ़ी हिस्सा पढ़ कर सुनाया गया। हज़रत ने समाअत फ़रमा कर ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया और किताब की उमदगी का सर्टिफ़िकिट अपनी मुबारक तक़रीज़ की शक्ल में इनायत फ़रमाया। मुसाफ़हा करते वक़्त जब मौलाना अनवार अहमद क़ादरी साहब ने उन्हें कुछ नज़्र पेश करना चाही तो हज़रत ताजुश्शरीआ दामत बरकातहुमुल कुदसिया ने फ़रमाया मौलाना नज़राना तो हमें आप को देना चाहिये इस जुमला में हज़रत ताजुश्शरीआ की ख़ुशियों का समन्दर मोजज़न है।

रब्बे जलील किताब के मुसन्निफ़ को जज़ाए जज़ील अता फ़रमाए और किताब को कुबूल फ़रमा कर उसे मक़बूल व मुफ़ीदे अनाम बनाए। आमीन। बिजाहि सय्येदिल मुरसलीन व आलिही व अस्हाबिहि अजमईन।

फ़क़त

मोहम्मद आरिफ़ बरकाती
ख़ादिम, जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़. खजराना, इन्दौर
28 मुहर्रमुल हराम सन् 1434 हि.
13 दिम्बर 2012 ई.

सदाए दिल

हज़रत मौलाना कारी
रज़ियुद्दीन अहमद साहब कादरी बरकाती
उस्ताज़, अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

अता ऐसा बयां तुझ को हुआ रंगीं बयानों में
कि बामे अर्श के ताइर हैं तेरे हम ज़बानों में

अल्लाह जल्ला मजदुहु के चुनिन्दा दीन मज़हबे इस्लाम का पैग़ाम उस के बन्दों तक पहुँचाने और आम करने के लिये अस्लाफ़े किराम और मुबल्लेग़ीने अअ़लाम ने कुछ क़ाबिले तक़लीद तरीक़े अपनाए हैं जो हमारे लिये रहनुमा उसूल की हैसियत रखते हैं हमारी ख़ानक़ाहों के शुयूख़ के शुयूख़ ने पन्दो मौइज़त से, मदारिसे इस्लामिया के असातिज़ा व मुअल्लेमीन ने दर्सो तदरीस से, बोरिया नशीन उलमा व मुहक़्क़ेक़ीन ने तस्नीफ़ व तहरीर से और खुतबा व मुक़र्रेरीन ने खुद अवाम के बीच पहुँच कर अपने मस्हूर कुन बयानात के ज़रीए खुदा का पैग़ाम बन्दगाने खुदा तक पहुँचाने का ग़ैर मामूली फ़रीज़ा अन्जाम दिया है।

अहले इल्म व दानिश पर मज़कूरा तरीक़े और उन के दुश्वार कुन मराहिल मख़्फ़ी नहीं। इन में सब से मुश्किल तस्नीफ़ व तालीफ़, फिर दर्सो तदरीस और सब से आसान व सहल पहलू खुतबात व तक़रीर का है। हज़ार हा हज़ार दुरूदो सलाम, ब तुफ़ैले शारेअ़ इस्लाम, उन गुलामाने मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना पर जिन्हें क़ादिर व क़य्यूम मौला ने हर नहज से ख़िदमते इस्लाम का कामिल व अकमल दाई व मुबल्लिग़ बनाया। फिर उन्होंने पूरी तवानाई सर्फ़ करके बानिये इस्लाम के शजरे इस्लाम की जड़ों की आबयारी फ़रमाई और शजरहाए समर बार की शक्ल में लहलहाते हुए चमने इस्लाम की बाग़बानी उम्मते मरहूमा को तफ़वीज़ फ़रमाई।

इस उमूम में बड़ी नुमायाँ और क़ाबिले तक़दील व तबरीक शख़्सियत है नमूनए अस्लाफ़ पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अलहाज अनवार अहमद साहेब क़िब्ला दामत बरकाताहुमुल क़ुदसिया की जिन्होंने दर्स व तदरीस, तस्नीफ़ व तालीफ़

खुतबात व तक़रीर और तरक़्क़ी व तामीर हर मैदान में पुर तासीर तरीक़े से मज़हबे इस्लाम की ऐसी अदीमुल मिसाल ख़िदमात का फ़रीज़ा अन्जाम दिया है कि कम उमरी के बावजूद इतनी क़लील मुद्दत में ऐसी कसीर ख़िदमाते जलीला अल्लाह तआला के बर गुज़ीदा और पारसा बन्दों का ही सिहामे मफ़रूज़ा क़रार पा सकती हैं

अल्लामा ममदूह की तमाम ख़िदमाते दीनिया और कारहाए नुमायाँ का तज़किरा बर वक़्त ग़ैर मुमकिन और ना मुनासिब है। फ़िलहाल आप की गिरां क़द्र और ताज़ा तरीन तस्नीफ़े लतीफ़ अनवारुल बयान हमारी निगारिश का मरकज़ व मेहवर है। आप ने इस किताब की तरतीब व तालीफ़ का आग़ाज़ हरमैन शरीफ़ैन ज़ादल्लाह शरफ़हुमा से फ़रमाया और शैख़े तरीकत मुर्शिदे कामिल हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सीरते तैय्यिबा का कुछ हिस्सा आप के आस्तानए आलिया पर जन्नती दरवाज़ा के अन्दुरूनी क़ितअए अर्ज़ी में तहरीर फ़रमाया। इन दो अज़ीम निस्बतों के बाइस अनवारुल बयान के मक़बूले अनाम होने में किसी शक व शुबह की क़तअन गुन्जाइश बाक़ी न रही। मज़ीद बरआं ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरैलवी साहेब क़िब्ला दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया के कलेमाते दुआइय्या और बक़ीयतुस्सलफ़ बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब क़िब्ला अलैहिर्रहमा की तक़रीज़े मदहिय्या ने किताब की इफ़ादियत व मक़बूलियत पर मोहरे तस्दीक़ सब्त फ़रमा दी है।

मुअल्लिफ़ ममदूह का पेशे लफ़्ज़ पढ़ने के बाद मुईन और साथी की हैसियत से एक नाम आपके हाशियए ज़हन पर गरदिश कर रहा होगा, यह मेरे ममदूह की ज़र्रा नवाज़ी और उनके अख़्लाक़े करीमाना का अदना सा तिलिस्माती करिश्मा है कि उन्हों ने हमें अपनी हम रिकाबी में क़ुबूल फ़रमाकर इस अज़ीम दीनी ख़िदमत में शरीके कार बना लिया और मुझ जैसे इल्मो अमल के कोरे इन्सान से इतना अज़ीम और बरतर काम ले लिया। मैं तो इस रिश्तए महब्बत और एहसान गुज़ारी पर सिर्फ़ इतना कहकर गुज़रना चाहता हूँ:

منت منہ کہ خدمت سلطاں ہمی کنی
منت شناس او کہ بہ خدمت بداشتت

किताब अनवारुल बयान साल के बारह महीनों में वाक़ेअ होने वाले तक़रीबन पचास जुमओं के बयानात पर मुश्तमिल 92 ख़ुतबात का बड़ा ही दक़ीअ मजमुआ

और इल्मी दुनिया का अज़ीम सरमाया है। उम्मीद है कि ख्वान्दा, कम ख्वान्दा हर तबके में यकसां पसन्द की जाएगी और हर एक से ख़राजे दाद व तहसीन ज़रूर हासिल कर लेगी। बिल खुसूस अइम्मए मसाजिद के लिये इन्शाअल मौला तआला मालूमात का अज़ीम ज़खीरा और इस्लामी जहाँ का अनमोल तोहफ़ा तसव्वुर की जाएगी।

अनवारुल बयान, तर्जे तहरीर और अन्दाज़े तरतीब के एतिबार से भी खुतबात की दीगर किताबों में मुनफ़रिद और अदीमुन्नज़ीर हैसियत की हामिल है जिसका सही अन्दाज़ा कारेईने किराम बादे मुतालआ ही लगा सकते हैं। किताब के तमाम मुश्तमेलात ख्वाह आयाते करीमा हों या अहादीसे तैय्यिबा का हसीन गुलदस्ता, या अमसालो हिकायात का पुर कैफ़ इज्तिमाअ, सबके सब मोअ़तबर व मोअ़तमद हवाला जात से आरास्ता व पेरास्ता हैं।

रहमानो रहीम मौला की बारगाह में इल्तिजा है कि अल्लामा ममदूह की इस ख़िदमते दीनिया को कुबूल फ़रमाए नीज हम सब और सबके वालिदैन के लिये अर्सए मेहशर में नजातो मग़फ़िरत का पेश खेमा बनाए। आमीन। बिजाहिन नबिय्यिल करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम।

रज़ियुद्दीन अहमद क़ादरी बरकाती
मक़ाम सरसया, सिद्धार्थ नगर (यू.पी.)
27 मुहर्रमुल हराम सन् 1434 हि.
12 दिसम्बर सन् 2012

(1)

मुहर्रमुल हराम

पहला जुमा .... पहला बयान

फ़ज़ाइले अहले बैत

रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन ०

اَلحمدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِهِ الْکَرِیْمِ وَ عَلٰی اٰلِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُکَرَّمِیْنَ وَابْنِهِ الْکَرِیْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِیْلَانِی الْبَغْدَادِی وَابْنِهِ الْکَرِیْمِ خَوَاجَه غَرِیْب نَوَاز الْاَجْمِیْرِی اَجْمَعِیْنَ ۝

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْکُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَیُطَهِّرَکُمْ تَطْهِیْرًا ۝

तर्जमा : अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुम से हर नापाकी दूर फरमा दे और तुम्हें पाक कर के खूब सुथरा कर दे। (पारा 22, रुकूअ 1, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ

आशिके मुस्तफा, आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं।

उन के मौला के उन पर करोड़ों दुरूद
उनके असहाबो इतरत पे लाखों सलाम

पारहाए गुलचहाए कुदस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! खूब गौर से सुनो और समझो कि अहले बैते नुबुव्वत के फजाइल व कमालात का जिक्र खुद अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुरआने करीम में किया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बार बार अपने सहाबा के दरमियान बयान फरमाया है।

इस से मालूम हुआ कि अहले बैत की शान व खूबी बयान करना सुन्नते खुदा है और सुन्नते मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी है। आशिके रसूल इमाम

अहमद रजा फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के छोटे भाई उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं :

किस ज़बां से हो बयान मदह शाने अहले बैत
मदह गोए मुस्तफ़ा है मदह ख्वाने अहले बैत
उन के घर में बे इजाज़त जिब्रईल आते नहीं
कद्र वाले जानते हैं इज़्ज़ो शाने अहले बैत
किस शक़ी की है हुकूमत हाए क्या अन्धेर है
दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत
फ़ातिमा के लाडले का आख़री दीदार है
हश्र का हंगामा बरपा है म्याने अहले बैत
घर लुटाना, सर कटाना कोई तुझ से सीख ले
जाने आलम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख फिर्क़ा को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

दुरूद शरीफ़ :

ऐ अहले बैते नुबुव्वत के दीवानो ! आज की मेहफिल में ज़िक्र है उन का जो हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहले बैत हैं, घर वाले हैं।

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है :

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰہُ لِیُذْھِبَ عَنْکُمُ الرِّجْسَ اَھْلَ الْبَیْتِ وَیُطَھِّرَکُمْ تَطْھِیْرًا ۰

तर्जमा : अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुमसे हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके खूब सुथरा कर दे। (पारा 22, रुकूअ् 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

इस आयते करीमा में खास तौर पर दो बातें क़ाबिले ग़ौर हैं :

पहली बात यह कि अहले बैत से यहाँ कौन लोग मुराद हैं। दूसरी बात रिज्स (नापाकी) से क्या मुराद है।

एक रिवायत के मुताबिक़ रिज्स से मुराद शैतान है और बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ रिज्स का इतलाक़ गुनाह, अज़ाब और निजासतों पर होता है और बाज़ ने रिज्स का मअ़ना शक लिया। और इमाम जोहरी ने फरमाया ना पसन्दीदा चीज़ को रिज्स कहते हैं ख़्वाह वह अमल हो या ग़ैर अमल। (बरकाते आले रसूल, स 32)

अहले बैत से मुराद कौन लोग हैं ?

इस आयते करीमा में अहले बैत से मुराद कौन हैं ? इस सिलसिले में मुफ़स्सिरीने किराम के अक़्वाल मुख्तलिफ़ हैं। सहाबा ताबेईन और मुफ़स्सेरीन की एक जमाअत का कहना है कि अहले बैते नुबुव्वत से मुराद हज़रत मौला अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत इमाम हसन,

हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हुम हैं और मुफ़स्सिरीन की दूसरी जमाअत का कहना है कि अहले बैते नुबुव्वत से मुराद अज़वाजे मुतह्हारत हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 32)

मुतअद्दिद सही तरीकों से साबित है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए, आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हजरत अली, हजरत फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन, हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन भी थे, उनमें से हर एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे, हमारे हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम काशानए मुबारक में तशरीफ लाए, हजरत मौला अली और हजरत फ़ातिमा को अपने करीब सामने बिठाया और हज़रत इमाम हसन और हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को एक रान में बिठाया फिर उन पर चादरे मुबारक लपेटी और यह आयते मुबारका तिलावत की।

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ٥

तर्जमा : अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुमसे हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके खूब सुथरा कर दे। (पारा 22, रुकूअ 1, तर्जमा कन्जुल ईमान)

और एक रिवायत में है कि यूँ फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِيْ فَاَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا ٥

तर्जमा : या अल्लाह तआला यह मेरे अहले बैत हैं इनसे हर क़िस्म की नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें खूब पाक कर दे।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने चादर उठाई ताकि मैं भी उनके साथ दाखिल हो जाऊँ तो हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनके हाथ से चादर खींच ली मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं भी आपके साथ हूँ तो आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तुम नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अजवाज में से हो खैर पर हो।

(मुस्लिम शरीफ, बरकाते आले रसूल, स. 34)

और जो हज़रात अहले बैत से पन्जतने पाक मुराद लेते हैं उनकी दलील यह है कि हसन और सही तरीक़ों से मरवी है कि हजरत अनस रजियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस आयते करीमा के नाजिल होने के बाद जब फज्र की नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते हुए हजरत फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के घर के पास से गुज़रते तो फ़रमाते : اَلصَّلٰوةُ اَهْلَ الْبَيْتِ यानी अहले बैत ! नमाज पढ़ो। फिर यह आयते करीमा اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ तिलावत फ़रमाते।

सहाबिये रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हजरत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम इस आयत के नाज़िल होने के बाद चालीस रोज़ सुबह के वक़्त हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते और फ़रमाते :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ الصَّلٰوةُ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ O

यानी ऐ अहले बैत तुम पर अल्लाह की सलामती, रहमत और बरकत हो। नमाज़ पढ़ो। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाएगा फिर यह आयते करीमा : اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ الخ तिलावत फ़रमाते।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि सात माह तक यह मामूल जारी रहा। एक रिवायत में आठ माह है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ से तसरीह है कि इस आयत में पन्जतने पाक से मुराद अहले बैत हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 25)

फ़िदाए शहनशाहे बतहा हज़रत अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि जमहूर उलमा कहते हैं कि आयते मुबारका में अहले बैत से दोनों गिरोह (यानी उम्महातुल मोमिनीन और औलादे अतहार) मुराद हैं ताकि तमाम दलाइल पर अमल हो जाए। (बरकाते आले रसूल, स. 35)

तफ़सीली मालूमात के लिये किताब बरकाते आले रसूल का मुतालआ फ़रमाएं।

इब्ने अबी शबीह इमाम अहमद, इब्ने जरीर इब्ने मुन्ज़िर, इब्ने अबी हातिम, तबरानी, हाकिम (इन हज़रात ने इस हदीस को सही क़रार दिया है। और बेहक़ी ने अपनी सुनन में हज़रत वासिला बिन अस्क़अ (जो अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से हैं) रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के मकान पर तशरीफ़ लाए, आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को अपने सामने क़रीब में बिठाया और हज़रात हस्नैन करीमैन को अपनी आग़ोश में बिठा लिया फिर उन सब को दामने रहमत में लेकर आयते ततहीर पढ़ी: اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ الاية और दुआ की :

ऐ अल्लाह तआला ! यह मेरे अहले बैत हैं इनसे नापाकी दूर रख और इन्हें ख़ूब पाक फ़रमा दे।

हज़रत वायला रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं : मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ! मैं भी आपके अहले बैत में से हूँ, तो हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हाँ, तुम भी मेरे अहले बैत में से हो।

और एक रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ यानी सलमान (फ़ारसी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) हम अहले बैत में से हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 39, 42)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत में है :

أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا إِنْ أَخَذْتُمْ بِهِ لَنْ تَضِلُّوا كِتَابَ اللّٰهِ وَعِتْرَتِي أَهْلَ بَيْتِي

ऐ लोगो ! मैंने तुम में वह चीज़ छोड़ी है कि अगर तुम उसे अपनाओगे तो हरगिज़ गुमराह न होगे। क़ुरआने पाक और मेरी इतरत अहले बैत।

दूसरी हदीस में है : إِنِّي تَارِكٌ فِيكُمُ الثَّقَلَيْنِ كِتَابَ اللّٰهِ وَعِتْرَتِي

बे शक मैं तुम्हारे बीच छोड़ रहा हूँ दो भारी वज़न दार चीज़ें। क़ुरआने करीम और मेरी औलाद जब तक तुम इन दोनों को पकड़े रहोगे कभी गुमराह न होगे।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं : मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हज के मौक़े पर अरफ़ा के दिन देखा, हमारे प्यारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी ऊँटनी क़ुस्वा पर सवार हैं और ख़ुतबा दे रहे हैं। मैंने आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो ! मैं तुम में वह चीज़ छोड़े जा रहा हूँ कि जब तक तुम इसे अपनाए रहोगे हरगिज़ गुमराह न होगे क़ुरआने पाक और मेरी इतरत अहले बैत।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसेद ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं : जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज्जतुल वदाअ़ से फ़ारिग़ हुए तो ख़ुतबा दिया और फ़रमाया :

ऐ लोगो ! मुझे अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यानी मेरी उम्र पहले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की उम्र के निस्फ़ की मिस्ल होती है, मुझे गुमान है कि अन क़रीब मुझे बुलाया जाएगा तो मैं तामील करूँगा, मैं हौज़ पर तुम्हारा पेश रो हूँगा और जब तुम मेरे पास आओगे तो तुम से दो ग्रां क़द्र (क़ीमती) चीज़ों के बारे में पूछूँगा, तुम देखो मेरे बाद उनसे क्या मुआमला करोगे ? बड़ी और अहम चीज़ क़ुरआने पाक है। यह एक ऐसा वसीला है कि इसका एक सिरा अल्लाह तआला के दस्ते क़ुदरत में है और दूसरा सिरा तुम्हारे हाथ में है, तुम इसे मज़बूती से थामे रखो गुमराह नहीं होगे और इसमें तब्दीली नहीं करोगे। दूसरी अहम चीज़ मेरी इतरत और अहले बैत है। मुझे अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि दोनों जुदा नहीं होंगे यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मुझसे मुलाक़ात करेंगे। (बरकाते आले रसूल, स. 54,55)

ऐ ईमान वालो ! अहले बैते नुबुव्वत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वह फ़ज़ीलतें और शराफ़तें जो अल्लाह तआला ने सिर्फ़ उन्हीं को अता फ़रमाई हैं और हमारे आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उम्मत को आगाह कर दिया है कि हमारे अहले बैत से मोहब्बत करना अज़ीम सवाब है और उनसे बुग़्ज़ व अदावत करना उसका ख़ौफ़नाक अज़ाब व वबाल है।

और सहाबए किराम की मोहब्बत व फ़ज़ीलत और उसका इज़हार भी लाज़िम व ज़रूरी है अगर किसी सहाबी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की दुश्मनी दिल में हो तो अहले बैत की

मोहव्यत कुछ फ़ायदा न देगी। (बरकाते आले रसूल, स. 30)

हज़रत इब्ने अब्बास रजियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक मरतबा नजरान के ईसाइयों का एक वफ़्द हमारे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुनाज़रा करने के लिये मदीना मुनव्वरा आया और हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा कि आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में क्या कहते हैं ?

तो हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : बे शक वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं और उसके कलमा हैं जो कुंवारी बतूल मरयम की तरफ़ इलक़ा किये गए थे। यह सुनकर ईसाई बहुत गुस्से में आ गए और कहने लगे ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क्या आपने कभी किसी इन्सान को बे बाप के देखा ? उनके कहने का साफ़ मतलब यह था कि गोया हजरत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के बेटे हैं (मआज़ल्लाहे तआला)

हमारे प्यारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो सिर्फ़ बग़ैर बाप के पैदा किये गए और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तो मां, बाप दोनों के बग़ैर पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह तआला का बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बन्दा मानने में तुमको तअज्जुब क्यों है ?

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दलाइले नुबुव्वत से उन पर आफ़ताब की रोशनी से ज़्यादा हक़ को ज़ाहिर फ़रमा दिया मगर फिर भी वह लोग अपनी मुआनदाना रविश से बराबर झगड़ते रहे तो अल्लाह तआला ने मुबाहला की आयत नाज़िल फरमाई और हुक्म फ़रमाया कि ऐ मेरे महबूब (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :)

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ۝

यानी ऐ मेरे हबीब (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) जो लोग तुमसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में झगड़ा करें जब कि तुम्हारे पास इसका इल्म आ चुका है तो ऐ मेरे हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उनसे फरमा दो कि आओ ! हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को, फिर हम मुबाहला करें यानी गिड़गिड़ाकर दुआ मांगें और झूटों पर अल्लाह तआला की लअनत डालें। (पारा 3, रुकूअ 14, आयत 61)

ऐ ईमान वालो ! जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नजरान के ईसाइयों को मैदान में निकलकर मुबाहला करने की दावत दी।

चुनाँचे सुबह को या तीन दिन के बाद ईसाइयों का गिरोह अपने बड़े बड़े पादरियों के साथ हाज़िर हुआ तो देखा कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं और दस्ते मुबारक में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का दस्ते मुबारक है और हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पीछे हैं और हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूँ तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सबसे बड़े पादरी अब्दुल मसीह ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा ऐ जमाअते नसारा! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर यह लोग अल्लाह तआला से किसी पहाड़ को हटाने की दुआ करें तो अल्लाह तआला इन की दुआ से पहाड़ को हटा देगा। लिहाज़ा हरगिज़ इनसे मुबाहला न करो वर्ना तुम सब हलाक हो जाओगे और रूए ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी नहीं रहेगा। चुनाँचे नजरान के नसरानियों ने जुज़या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहला के लिये तैय्यार नहीं हुए। उसी के बाद हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ा व क़ुदरत में मेरी जान है कि नजरान वालों पर अज़ाब बहुत क़रीब आ चुका था, अगर वह लोग मुझसे मुबाहला करते तो बन्दरों और सुव्वरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये जाते और क़हरे इलाही की आग से जंगल जल जाते और वहाँ के चरिन्द व परिन्द तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अन्दर तमाम रूए ज़मीन के नसारा हलाक व बरबाद हो जाते।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 2, स. 488, व ख़ाज़िन व मदारिक, जि. 1, स. 242)

ऐ ईमान वालो! अच्छी तरह से वाज़ेह हो गया कि हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर वाले कौन लोग हैं।

यानी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने बेटों को ले कर आओ मैं अपने बेटों को लेकर आता हूँ, तुम अपनी औरतों को लेकर आओ मैं अपनी औरतों को लेकर आता हूँ तुम आओ और मैं आता हूँ।

तो हमारे सरकार अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिन पाक हस्तियों को अपने साथ लिया वह पाक ज़ात हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम हैं।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के बारे में इरशाद फ़रमाया : هٰذَانِ ابْنَایَ यानी यह दोनों मेरे बेटे हैं (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 570)

मैदाने मुबाहला में जब अपने बेटों को लेकर निकलना हुआ तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम

हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को लेकर निकले। यही वजह है कि हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहे जाते हैं।

हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास जन्नती सहाबी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम को हमराह लेकर घर से बाहर निकले तो यह फ़रमाया कि : اللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِیْ۔

यानी ऐ अल्लाह तआला यह सब मेरे अहले बैत हैं। (मुस्लिम शरीफ, मिश्कात शरीफ स. 568)

तौज़ीह : अगर कोई गुस्ताखे सहाबा यह कहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुबाहला के लिये अपने साथ इन हज़रात के अलावा किसी सहाबी को नहीं लिया तो हम किसी और सहाबी को क्यों मानें। हम तो सिर्फ़ पन्जतने पाक को ही मानेंगे। ऐसा अक़ीदा रखना सरासर ज़लालत व गुमराही है। हज़रात सहाबए किराम ने जो क़ुरबानियाँ इस्लाम के लिये पेश कीं, बद्र व उहद और तमाम ग़ज़वात व जंगें इसकी शाहिद व आदिल हैं जिनका इनकार नहीं करेगा मगर मुनाफ़िक़। रहा मुबाहला के लिये किसी और सहाबी को साथ न लेने में एक बड़ी हिकमत थी जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेहतर जानते हैं। लेकिन बाज़ रिवायतों से साबित है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन अपने बेटों के साथ मुबाहला में तशरीफ़ लाए।

चुनाँचे अहले बैते नुबुव्वत के एक अज़ीम फ़र्द सय्येदुस्सादात हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इसी आयते मुबाहला के बारे में फ़रमाते हैं।

فَجَاءَ بِاَبِیْ بَکْرٍ وَّوَلَدِهٖ وَبِعُمَرَ وَوَلَدِهٖ وَبِعُثْمَانَ وَوَلَدِهٖ وَبِعَلِیٍّ وَّوَلَدِهٖ

पस हज़रत अबू बक्र व उमर उस्मान व अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अपने अपने बेटों के साथ तशरीफ़ लाए।

उनके मौला की उन पर करोड़ों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जुमला अहले बैत चाहे अहले बैते नसब हों या अहले बैते सकना या अहले बैते विलादत या और किसी का अहले बैत में शामिल कर लिया गया हो तमाम के तमाम हम अहले सुन्नत के नज़दीक इज़्ज़त व अज़मत वाले हैं लेकिन हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिन नुफ़ूसे क़ुदसिया को ख़ास ख़ास मौक़े पर मेरी अहले बैत फ़रमाया है वह यही चार नुफ़ूसे क़ुदसिया हज़रत मौला अली, हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम हैं।

इसी लिये अहले बैत का लफ़्ज़ इन्हीं चार हज़रात के लिये शाए व मशहूर है।

(अशअतुल लमआत, जि. 4, स. 681)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हस्नैन करीमैन बीमार हुए तो अल्लाह तआला के हबीब हम बीमारों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम बीमार पुरसी के लिये गए तो सहाबए किराम अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को मशवरा दिया कि आपके फ़रज़न्द बीमार हैं तो आप अल्लाह तआला के लिये कोई नज़्र मानें तो हज़रत मौला अली और हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम और आपकी कनीज़ फ़िज़्ज़ा ने तीन रोज़े रखने की मन्नत मानी।

अल्लाह तआला ने हस्नैन करीमैन को शिफ़ा अता फ़रमाई। अब नज़्र पूरी करने का वक़्त आ गया सबने रोज़े रखे मगर घर में कोई चीज़ नहीं जिससे रोज़ा खोला जाए। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने शमऊन यहूदी से चन्द सेर जौ बतौरे क़र्ज़ लाए, जौ का एक तिहाई हिस्सा पीसा गया और उससे चन्द रोटियाँ तैय्यार की गईं। जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियाँ खाने के लिये सामने रखी गईं तो दरवाज़े पर एक साइल ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मैं मिस्कीन हूँ, भूका हूँ, कुछ अल्लाह तआला के नाम दीजिये। तो हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत फ़िज़्ज़ा तीनों ने सब रोटियाँ उस मिस्कीन साइल को दे दीं। और तीनों हज़रात ने सिर्फ़ पानी पीकर रोज़ा इफ़्तार किया। फिर दूसरे रोज़ एक तिहाई जौ की रोटियाँ तैय्यार की गईं और जब अहले बैते इज़ाम इफ़्तार के लिये बैठे तो दरवाज़े पर एक फ़क़ीर मोहताज ने आवाज़ दी। ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर वालो ! मैं भूका हूँ, यतीम हूँ तो दूसरे रोज़ भी इन हज़रात ने सब रोटियाँ साइल को दे दीं और सिर्फ़ पानी से रोज़ा इफ़्तार किया। तीसरे दिन फिर रोज़ा रखा और एक तिहाई जौ जो बचा था उसकी रोटियाँ बनाई गईं और जब रोज़ा इफ़्तार के लिये तीनों नुफ़ूसे क़ुदसिया बैठे तो फिर एक साइल ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं असीर हूँ भूका हूँ तो तीसरे दिन भी तमाम रोटियाँ साइल को अता फ़रमा दीं और सिर्फ़ पानी पीकर रोज़ा इफ़्तार किया तो अहले बैते रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में यह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا۝

यानी और वह लोग खाना खिलाते हैं उसकी मोहब्बत पर मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को और उनसे कहते हैं कि हम तुम्हें अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुश्नोदी के लिये खिलाते हैं, न हम तुमसे कोई बदला चाहते हैं और न शुक्रिया। (तफ़सीरे कबीर, जि. 8, स. 276, ख़ाज़िन व मदारिक, जि. 4, स. 340, तफ़सीरे रूहुल बयान, जि. 6, स. 546)

ऐ ईमान वालो ! अच्छी तरह वाज़ेह हो गया कि अहले बैते रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिन नुफ़ूसे क़ुदसिया के लिये बोला जाता है वह हज़रात कौन लोग हैं और अहले बैत की सख़ावत का भी पता मालूम हो गया कि ख़ुद तो भूके रहते हैं मगर अपने दरवाज़े के साइल, भिकारी को खिलाते हैं।

और आज भी अहले बैते नुबुव्वत की सख़ावत की वही शान व शौकत है जो चौदह सौ बरस पहले थी। इस बात का सुबूत चाहिये और अगर देखना है तो जाकर देख लो। मारेहरा मुतह्हरा जो मेरे आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का पीर ख़ाना है। शाहे बरकात की बरकत का बाड़ा बटता है, बेहराइच शरीफ़ जहाँ फ़ैज़ सय्यद सालार मस्ऊद ग़ाज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से अन्धे, कोढ़ी, जुज़ामी और हर क़िस्म के बीमार शिफ़ायाब हो रहे हैं। अजमेरे मुक़द्दस हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नूरानी चौखट पर हर साइल की दुआ मक़बूल होती है। बग़दादे मुअल्ला में फ़रदुल अफ़राद, क़ुतुबुल अक़्ताब पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दरबारे गोहरबार से मुर्दे को ज़िन्दगी, चोर को क़ुतबियत, मुरीद को जन्नत की बशारत के साथ रोज़ी की नेअमत व दौलत हर आन, हर वक़्त बटती है।

यह हज़रात कौन लोग हैं ? जो सारे ज़माने की झोलियाँ भर रहे हैं, यह सब अहले बैते नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल औलाद हैं।

जब इनकी आल व औलाद की सख़ावत का यह आलम तो सरकार इमाम हसन और इमाम हुसैन और मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन और फिर मुख़्तारे दो आलम मेहबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जूदो अता और सख़ावत का आलम क्या होगा।

जब उनके गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

दुरूद शरीफ़ :

अहले बैत का मक़ाम व मरतबा क्या है

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

لَايُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهٖ وَتَكُوْنَ عِتْرَتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهٖ وَاَهْلِىْ
اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ اَهْلِهٖ وَذَاتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهٖ۔

यानी कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपनी जान से मेरी औलाद (यानी इमाम हसन, इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा) को अपनी औलाद से, मेरे अहल को अपने अहल से और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न रखे।

(तबरानी व हवाला अशरफ़ुल मूयद, स. 85)

हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के हाथ को अपने हाथ में लिया और फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّنِیْ وَاَحَبَّ هٰذَیْنِ وَاُمَّهُمَا وَاَبَاهُمَا کَانَ مَعِیَ فِیْ دَرَجَتِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ 0

यानी जिसने मुझसे महब्बत की और इन दोनों (इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा) से महब्बत की तो वह शख़्स क़ियामत के रोज़ मेरे साथ मेरे दर्जे में होगा। (यानी जन्नत के जिस आला मकान में मैं रहूँगा उसी आला मकान में वह रहेगा।)
(इमाम अहमद, ब हवाला अशरफ़ुल मूयद, स. 86)

ऐ ईमान वालो ! पन्जतने पाक से महब्बत करने वाला जन्नत का हक़दार तो है ही मगर अल्लाह तआला उस शख़्स को वह जन्नत अता फ़रमाएगा जिसको ख़ास अपने मेहबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये बनाया है यानी जन्नतुल फ़िरदौस।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने काबा शरीफ़ का दरवाज़ा पकड़कर फ़रमाया मैंने अपने प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है :

اَلَا اِنَّ مَثَلَ اَهْلِ بَیْتِیْ فِیْکُمْ مَثَلُ سَفِیْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَکِبَهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَکَ

यानी आगाह हो जाओ कि मेरे अहले बैत की मिसाल तुम लोगों के लिये नूह (अलैहिस्सलाम) की कश्ती की तरह है। जो शख़्स उसमें सवार हुआ उसने नजात पाई और जो शख़्स उसमें सवार न हुआ वह हलाक हुआ। (मिश्कात शरीफ़, स. 573)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَصْحَابِیْ کَالنُّجُوْمِ بِاَیِّهِمْ اِقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ 0

यानी मेरे तमाम सहाबा सितारों के मानिन्द हैं उनमें से तुम जिसकी इक़्तिदा करोगे हिदायत पाओगे। (मिश्कात शरीफ़, स. 554)

इमामुल मुफ़स्सेरीन हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का एहसान है कि हम अहले सुन्नत व जमाअत महब्बते अहले बैत की कश्ती पर सवार हैं और हिदायत के रोशन सितारे हज़रात सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम से हिदायत हासिल किये। लिहाज़ा हम लोग क़ियामत की होलनाकियों से और जहन्नम के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहेंगे। (मिरक़ात, जि. 5, स. 610)

ऐ ईमान वालो ! हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अहले बैत की मिसाल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती से दी। मतलब यह है कि तूफ़ाने नूह अलैहिस्सलाम आया और जो शख़्स कश्तिये नूह अलैहिस्सलाम में सवार हो गया वह शख़्स तूफ़ान में बरबाद व हलाक होने से बच गया।

इसी तरह तूफ़ाने क़ियामत आने वाला है तो जो शख़्स इस दुनिया में महब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार हो जाएगा वह शख़्स कल क़ियामत के दिन तूफ़ाने क़ियामत की

तबाहकारियों और बरबादियों से हलाक व बरबाद होने से मेहफ़ूज़ हो जाएगा।

याद रखो और जान लो ! कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी कश्ती में उस शख़्स को बिठाया जो मोमिन था। ला कलाम, बेशक व शुबह महब्बते अहले बैत की कश्ती में वही शख़्स सवार हो सकता है जो मोमिन सुन्नी मुसलमान होगा और सुन्नी मुसलमान वह शख़्स है जो महब्बते अहले बैत के साथ साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ हज़रत फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत उम्मुल मोमिनीन आएशा सिद्दीक़ा और तमाम सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन से भी महब्बत व उल्फ़त रखता हो। इस लिये राफ़ज़ी, ख़ारजी व जुमला दुश्मनाने सहाबए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ियामत के रोज़ महब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार ही नहीं हो सकते तो तूफ़ाने क़ियामत उन गुस्ताख़ों को हलाक व बरबाद कर देगा और वह लोग जहन्नम के मुस्तहिक़ क़रार पाऐंगे।

ख़ूब फ़रमाया : आशिक़े रसूल, फ़िदाए सहाबा व अहले बैत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

आज ले उनकी पनाह आज मदद मांग उनसे
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

दुरूद शरीफ़ :

अहले बैत का दुश्मन काबा में मरे तो भी जहन्नमी है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَوْ اَنَّ رَجُلًا صَفَنَ بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ فَصَلّٰى وَصَامَ ثُمَّ مَاتَ وَهُوَ مُبْغِضٌ لِاَهْلِ بَيْتِ
مُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) دَخَلَ النَّارَ ـ

यानी अगर कोई शख़्स काबा के एक गोशे में और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे फिर वह शख़्स मर जाए इस हाल में कि वह शख़्स अहले बैत से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखता है तो वह शख़्स जहन्नम में जाएगा।

(तबरानी, हाकिम ब हवाला अशरफ़ुल मूयद, स. 92)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे अहले बैत से एक दिन की महब्बत पूरे साल की इबादत से बेहतर है और जो शख़्स इसी महब्बत पर मर गया वह शख़्स जन्नत में दाख़िल हो गया। (देलमी फी मुस्नदुल फिरदौस, जि. 2, स. 192)

ऐ ईमान वालो ! अहले बैत से महब्बत जन्नत में दाख़ले का सबब है और अहले बैत की दुश्मनी और बुग़्ज़ व इनाद से अल्लाह तआला की पनाह अगर कोई शख़्स ख़ानए काबा के

साए में मक़ामे इब्राहीम जैसी बरकत वाली जगह पर नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे, ऐसा नमाज़ी और रोज़े दार अगर अहले बैते नुबुव्वत से बुग़्ज़ व अदावत रखता है तो वह शख़्स जहन्नमी है और उसका कोई भी नेक अमल उसे दोज़ख के अज़ाब से नहीं बचा सकेगा।

आशिक़े अहले बैत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

उन के मौला की उन पर करोड़ों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

पा रहाए सुहफ़ ग़ुन्चहाए क़ुद्स
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

बुज़ुर्गों के अक़वाल

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की महब्बत अहले बैत के साथ

1) अफ़ज़लुल बशर बअ़दल अम्बियाए बित्तहक़ीक़ अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ यारे ग़ार व मज़ार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

صِلَةُ قَرَابَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ صِلَةِ قَرَابَتِيْ۔

यानी हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्ते दारों के साथ अच्छा सुलूक करना, मुझे अपने रिश्ते दारों के साथ अच्छा बरताव करने से ज़्यादा पसन्द है।

2) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَقَرَابَةُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اَحَبُّ اِلَيَّ اَنْ اَصِلَ مِنْ قَرَابَتِيْ

ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, मुझको अपने अक़रबा से हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अक़रबा ज़्यादा पसन्द हैं।

3) एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मिम्बर पर खुतबा दे रहे थे कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो अभी कम उम्र बच्चे हैं तशरीफ़ लाए और फ़रमाया यह मिम्बर मेरे नाना का है इस पर से उतर जाओ।

فَقَالَ صَدَقْتَ وَاللّٰهِ اَنَّهُ لَمِنْبَرُ اَبِيْكَ ثُمَّ اَخَذَهٗ وَاَجْلَسَهٗ فِيْ حِجْرِهٖ وَبَكٰى

तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया (ऐ इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) आपने सच कहा ख़ुदा की क़सम बेशक यह मिम्बर आपके नाना जान का ही है। फिर आपने उनको प्यार से उठाकर गोद में बिठा लिया और रो पड़े।

(अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 175)

इसी तरह उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का वाक़िआ भी मनक़ूल है। (अर्रियाज़ुन्नज़रह, जि. 2, स. 29)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म की ख़िदमत व उल्फ़त अहले बैत के साथ

4) हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो अन्हुमा फरमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फ़ारूके आजम रजियल्लाहो अन्हो के ज़मानए खिलाफत में मदाइन फतह हुआ। मस्जिदे नबवी शरीफ़ में माले ग़नीमत जमा हुआ तो हजरत इमाम हसन रजियल्लाहो अन्हो तशरीफ लाए और फरमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन मेरा हक़ जो अल्लाह तआला ने मुकर्रर किया मुझे दिया जाए। आपने फ़रमाया : بالبر كة والكرامة और एक हजार दिरहम नज्र किये। इनके बाद हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तशरीफ लाए तो उनको भी एक हजार दिरहम दिये फिर उनके बाद आप (हजरत उमर) के साहबज़ादे हजरत अब्दुल्लाह तशरीफ लाए तो आपने उनको पाँच सौ दिरहम दिये हजरत अब्दुल्लाह रजियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक दौर में जवान था और आपके साथ जाकर जिहाद करता था और इमाम हसन व इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा उस वक़्त बच्चे थे और मदीना मुनव्वरा की गलियों में खेला करते थे, आपने उनको हजार, हज़ार दिरहम दिये और मुझे सिर्फ़ पाँच सौ दिरहम ? तो हज़रत उमर फ़ारूके आजम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया बेटा ! पहले वह मकाम हासिल करो जो इमाम हसन और इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हुमा का है, फिर हजार दिरहम का मुतालबा करना। उनके नाना जान रसूले खुदा, उनके बाप हज़रत अली शेरे खुदा, उनकी मां फ़ातिमा ज़ेहरा, उनकी नानी खदीजतुल कुबरा, चचा जअफर तैय्यार, फूफी उम्मेहानी, मामूँ इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह, खाला रुकय्या, उम्मे कुलसूम, जैनब रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम हैं।

यह सुनकर आपके साहिबजादे हजरत अब्दुल्लाह रजियल्लाहो तआला अन्हो खामोश हो गए। (अर्रियाजुन्नजरा, जि. 2, स. 28)

हज़रत अली का क़ौल कि हज़रत उमर जन्नत के चिराग़ हैं

इस वाक़िआ की खबर हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रजियल्लाहो तआला अन्हो को हुई तो आपने फ़रमाया : मैंने अपने प्यारे रसूल महबूबे खुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फरमाते सुना है कि हजरत उमर, अहले जन्नत के चिराग़ हैं। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इस फरमान की खबर जब हजरत उमर फारूके आजम रजियल्लाहो तआला अन्हो को हुई तो आप मुसलमानों के एक गिरोह के साथ हजरत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास तशरीफ लाए और आपने फरमाया ऐ अली ! आपने बयान किया है कि मैं ने सुना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझको चिराग़े अहले जन्नत फ़रमाया है ? तो हज़रत मौला अली

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया, हाँ मैंने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि उमर चिराग़े अहले जन्नत हैं। तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि ऐ अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हु यह हदीस आप अपने हाथ से लिखकर मुझे दे दीजिये तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने दस्ते मुबारक से बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बाद लिखा कि :

هٰذَا مَا ضَمِنَ عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ

عَنْ جِبْرِيْلَ عَنِ اللهِ تَعَالٰى اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ سِرَاجُ اَهْلِ الْجَنَّةِ

यानी यह वह बात है जिसकी ज़मानत अली बिन अबी तालिब ने दी है वास्ते उमर बिन ख़त्ताब के लिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : उनसे जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उनसे अल्लाह तआला ने कि उमर बिन ख़त्ताब अहले जन्नत के चिराग़ हैं।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का लिखा हुआ फ़रमान हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ले लिया और अपनी औलाद को वसियत फ़रमाई कि जब मेरा विसाल हो गुस्ल व कफ़न के बाद यह काग़ज़ मेरे कफ़न में रख देना। जब आप शहीद हुए तो वह काग़ज़ वसियत के मुताबिक़ आपके कफ़न में रख दिया गया।

(अर्रियाज़ुन्नज़रह, जि. 1, स. 282)

हज़रत उमर का क़ौल कि
हज़रत अली की ग़ीबत से नबी नाराज़ होते हैं

5) हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने एक शख़्स को देखा कि वह शख़्स हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ग़ीबत व बुराई कर रहा है तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस शख़्स से फ़रमाया : अफ़सोस तुझ पर, क्या तू हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को नहीं जानता, पहचानता कि वह हमारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के चचा ज़ाद भाई हैं और प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की जानिब इशारा करके फ़रमाया कि क़सम ख़ुदाए तआला की, तूने हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ग़ीबत व बुराई करके उनको ईज़ा पहुँचाई है जो इस क़ब्रे मुबारक में आराम फ़रमा हैं। (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 175, ज़ुरक़ानी, जि. 7, स. 14)

6) एक मरतबा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ज़मानए ख़िलाफ़त में आपके दरवाज़े पर तशरीफ़ ले गए तो देखा कि आपके साहेबज़ादे, हज़रत अब्दुल्लाह दरवाज़े पर खड़े हैं। हाज़िर होने की इजाज़त तलब कर रहे हैं मगर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को इजाज़त न

मिली। हजरत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को खयाल आया कि जब अपने बेटे को अन्दर आने की इजाज़त नहीं दी तो मुझे कब देंगे ? वापस आ गए।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को मालूम हुआ कि इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इस खयाल से वापस चले गए हैं तो आप हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, मुझे आपके तशरीफ लाने की खबर नहीं थी। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि मैं इस ख़याल से वापस आ गया कि जब आपने अपने साहबज़ादे को इजाज़त नहीं दी तो मुझे इजाज़त कैसे मिलेगी तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : أَنْتَ أَحَقُّ بِالْإِذْنِ مِنْهُ यानी आप मेरे बेटे से ज़्यादा इजाज़त के हकदार हैं मेरे सर पर बाल अल्लाह तआला ने आपकी बदौलत उगाए हैं यानी मेरा जो कुछ मकाम व मरतबा है वह सब आप और आपके घर की बरकत से है और एक रिवायत में है कि आप जब चाहें तशरीफ़ लाएं आपको इजाजत की हाजत नहीं। (अस्सवाएकुल मुहरिका, स. 177)

ऐ ईमान वालो ! इन वाक़िआत में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक और हज़रत फ़ारूके आजम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा का अहले बैत से अकीदत व महब्बत का इज़हार होता है और हमारे लिये सबक है कि हम भी अहले बैत से दिल व जान से महब्बत व उल्फ़त करें और अल्लाह तआला की बारगाह से बे शुमार रहमत व बरकत हासिल करें।

उनके मौला की उन पर करोड़ों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

पारहाए सुहफ़ गुन्चहाए कुद्स
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

7) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के दोनों पांव मुबारक की खाक को झाड़ा और साफ़ किया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

ऐ अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आप क्या कर रहे हो ? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज किया कि हुज़ूर मुझे मुआफ़ कीजिये। बल्लाह जितने आपके मरातिब हैं मैं जानता हूँ। अगर लोगों को मालूम हो जाएं तो आपको कन्धों पर उठाएं फिरे। (इज़हारुस्सआदत)

8) हज़रत अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रहमतुल्लाहे तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह महज़ बिन हसन मुसन्ना बिन हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की हिमायत की और फ़तवा दिया कि लोग लाज़मी तौर पर उन के साथ रहें। अल्लामा कहते हैं कि इमामे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को जो कैद व बन्द की सज़ा

दी गई उस की अस्ल वजह यही थी कि हज़रत इमाम साहब ने एक आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिमायत की और उन के हक़ की ख़ातिर फ़तवा दिया, अगरचेह ज़ाहिर यह किया गाय कि इमाम साहब ने भी ख़लीफ़ा का हुक्म नहीं माना और क़ाज़ी का मन्सब कुबूल करने से इनकार कर दिया था। (अश्शरफुल मूयद, स. 88)

9) हज़रत अल्लामा नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अकीदत व महब्बत के सबब उन के पैरों में बेड़ियाँ डाल कर क़ैदी बना कर बग़दाद शरीफ लाया गया।

हज़रत इमामे शाफ़ई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत व उल्फ़त इस क़दर ज़्यादा थी कि कुछ लोगों ने आप को राफ़ज़ी कह दिया तो आप ने फ़रमाया :

لَوْ كَانَ رِفْضًا حُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ
فَلْيَشْهَدِ الثَّقَلَانِ اَنِّیْ رَافِضٗا

यानी अगर आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करना राफ़ज़ी होना है तो जिन व इन्स गवाह हो जाएं कि अगर इस वजह से है तो वे शक मैं राफ़ज़ी हूँ। (अश्शरफुल मूयद, स. 88)

हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अहले बैत के मनाक़िब बयान फ़रमाते हैं

يَكْفِيْكُمْ مِنْ عَظِيْمِ الْفَخْرِ اَنَّكُمْ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْكُمْ لَا صَلٰوةَ لَهٗ

यानी ऐ आले रसूल आप लोगों के लिये यह अज़ीम फ़ख़्र काफ़ी है कि जो शख़्स आप पर दुरूद न भेजे उस की नमाज़ नहीं होती।

अल्लामा हब्बान ने फ़रमाया इस का मतलब यह है कि आले रसूल पर दुरूद न पढ़ने वाले की नमाज़ कामिल नहीं होती और इमाम शाफ़ई के राजेह क़ौल के मुताबिक़ नमाज़ सही नहीं होती। (अश्शरफुल मूयद, स. 88)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की महब्बत अहले बैत के साथ

10) हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़रत हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के पास किसी ज़रूरत की वजह से गया तो उन्होंने मुझ से फ़रमाया) ऐ शहज़ादए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप को जब कोई हाजत हो तो किसी को भेज दिया करें या लिख दिया करें मुझे अल्लाह तआला से शर्म आती है कि आप किसी ज़रूरत के वास्ते मेरे दरवाज़े पर आया करें) । (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 78, शिफ़ा शरीफ़, स. 20)

11) हज़रत शैख़ इब्ने हजर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो तआला अन्हुमा हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हो की सवारी के रिकाब पकड़े हुए थे, लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो तआला अन्हुमा से कहा आप उम्र में हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हो से बड़े हैं और उनकी रिकाब पकड़े हुए हैं?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो तआला अन्हुमा ने फरमाया, हजरत इमाम हुसैन, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बेटे हैं तो य या इनकी रिकाब पकड़ना मेरे लिये सआदत नहीं है। (तरवीदुल क़ौस)

12) अरब का मशहूर शाइर अबू फरास फिरज़ोक हजरत इमाम जैनुल आबेदीन बिन हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हुमा की शान में क़सीदा कहता है:

عَمَّ الْبَرِيَّةَ بِالْاِحْسَانِ فَانْقَشَعَتْ
عَنْهُ الْغِيَابَةُ وَالْاِمْلَاقُ وَالظُّلَمُ

यानी यह उनमें से एक हैं जिनका सारी मखलूक पर एहसाने अज़ीम है और इन्हीं के सबब रन्ज व गम अफ़लास और ज़ुल्म दूर हुआ है।

كِلْتَا يَدَيْهِ غِيَاثٌ عَمَّ نَفْعُهُمَا
تَسْتَوْكِفَانِ وَلَا يَعْرُوهُمَا الْعَدَمُ

यानी इनके दोनों हाथ सख़ावत की बारिश के मानिन्द हैं, मोहताज के मददगार हैं जिनका फ़ैज आम है, हमेशा बरसते रहते हैं और ना होना कभी इनके पेश ही नहीं आया:

مُشْتَقَّةٌ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ شُعْبَةٌ
طَابَتْ عَنَاصِرُهُ وَالْخِيَمُ وَالشِّيَمُ

यानी इनकी ज़ात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ात से मुश्तक है इस लिये इनकी अस्ल इनकी आदतें और खसलतें निहायत पाकीज़ा और उम्दा हैं

اَیُّ الْخَلَائِقِ لَيْسَتْ فِيْ رِقَابِهِمْ
لِاَوَّلِيَّةِ هٰذَا اَوْ لَهُ نِعَمٌ

यानी मखलूक़ात में से कौन लोग हैं जिनकी गरदन में उनके और उनके बुजुर्गों के एहसानात व इनआमात के हार न हों।

(हिलयतुल औलिया, अबू नुऐम, जि. 3, स. 139, अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 198)

13) अबू सईद मादरी के इमाम ने हजरत इमामे आजम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मनाकिब में लिखा है कि आप अदब व ताज़ीम और एहतिरामे सादात में निहायत मुबालगा फ़रमाते थे।

एक दिन का वाकिआ है कि हजरत इमामे आज़म रजिल्लाहो तआला अन्हो मजलिस में तशरीफ फ़रमा हैं चन्द बार ताजीमन खड़े हो जाते और कुछ वक़्फ़ा के बाद बैठ जाते। ताज़ीम का सबब ज़ाहिर न हुआ तो मजलिस में से कुछ लोगों ने अर्ज किया कि आप बड़े अदब व एहतिराम से खड़े हो जाते हैं और फिर बैठ जाते हैं इसका सबब क्या था ? तो फ़रमाया सामने

जो बच्चे खेल रहे हैं उनमें एक बच्चा सय्यद है, जब उस सय्यद बच्चे को मैं देखता हूँ तो ताज़ीमन खड़ा हो जाता हूँ। (तोहफ़ा अस्ना अशरया)

14) हज़रत अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि जो सोहबत व तिलमिज़ की बरकत हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हज़रात अइम्मए अहले बैत, इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़र सादिक़ और ज़ैद बिन अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम से हासिल है वह बयान से मुस्तग़नी है और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के वालिद हज़रत साबित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अपने बाप के साथ बचपन में अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उनके हक़ में औलाद के लिये दुआ फ़रमाई थी, उसी दुआ की बरकत से हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पैदा हुए थे। (अस्ना अशरया)

15) शैख़ अकबर मोहयुद्दीन इब्ने अरबी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मनाक़िबे अहले बैत के बारे में फ़रमाते हैं :

※ अहले बैत के साथ तुम किसी मख़लूक़ को बराबर न करो क्यों कि अहले बैत ही अहले स्यादत हैं।

※ और उनकी दुश्मनी इन्सान के लिये हक़ीक़ी घाटा है और उनकी महब्बत व उल्फ़त इबादत है। (नूरुल अबसार, स. 128)

16) हज़रत इमामे रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़े सानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अहले बैत की शान में फ़रमाते हैं :

※ अहले सुन्नत के नज़दीक अहले बैत की महब्बत जुज़्वे ईमान है।

※ और ख़ातमा की सलामती अहले बैत की महब्बत पर मौक़ूफ़ है।

※ अहले बैत की महब्बत तो अहले सुन्नत का सरमाया है। (मकतूब शरीफ़, मकतूब 2, स. 36)

और आशिक़े रसूल मुहिब्बे अहले बैत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

उनके मौला के उन पर करोड़ों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

पारहाए सुहफ़ ग़ुन्चहाए क़ुदस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

(17) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और फ़ज़ाइले सादाते किराम

(1) एक सवाल के जवाब में आशिक़े रसूल मुहिब्बे सहाबा व अहले बैत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं रोज़े क़ियामत में सब से पहले अपने अहले बैत की शफ़ाअत करूँगा फिर दरजा बदरजा जो ज़्यादा नज़दीक हैं और मैं जिस की शफ़ाअत पहले करूँगा वह अफ़ज़ल है। (मुलख्ख़सन)

(2) एक रिवायत में यूँ है कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हर इलाक़ा और रिश्ता रोज़े क़ियामत क़तअ हो जाएगा (यानी ख़त्म हो जाएगा) मगर मेरा इलाक़ा और रिश्ता (यानी मेरा रिश्ता क़ियामत के दिन भी बाक़ी रहेगा)

(3) हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने लोगों को जमा किया और मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया क्या हाल है उन लोगों का कि ज़ुअम करते हैं कि मेरी क़राबत (यानी मेरा रिश्ता) नफ़ा न देगी, हर इलाक़ा और रिश्ता क़ियामत में मुनक़तअ होजाएगा मगर मेरा रिश्ता व इलाक़ा कि दुनिया व आख़िरत में जुड़ा हुआ है।

(4) हमारे प्यार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया : क्या ख़्याल है उन लोगों का जो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़राबत (यानी रिश्ता) रोज़े क़ियामत उनकी क़ौम को नफ़ा न देगी ख़ुदा की क़सम मेरी क़राबत (यानी मेरा रिश्ता) दुनिया व आख़िरत में पैवस्ता है (यानी दुनिया व आख़िरत दोनों जगह नफ़ा देगी व काम करेगी)।

(5) फ़िदाए रसूल मुहिब्बे अहले बैत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि जब मक़बूलाने ख़ुदा से इतना इलाक़ा (यानी थोड़ा सा तअल्लुक़) कि कभी उनको पानी पिला दिया और वुज़ू के लिये पानी दे दिया या उम्र में उस (नेक शख़्स) का कोई काम कर दिया तो आख़िरत में ऐसा नफ़ा देगा (यानी क़ियामत में बहुत ज़्यादा नफ़ा पाएगा) तो ख़ुद उनका जुज़ होना किस दर्जा नाफ़ेअ होना चाहिया (यानी उस नेक शख़्स का बेटा या बेटी होना दुनिया व आख़िरत में किस क़द्र फ़ायदे मन्द होना चाहिये) बल्कि दुनिया व आख़िरत में सालेहीन यानी नेक लोगों से इलाक़ा नसब यानी रिश्तेदारी का नाफ़ेअ होना क़ुरआने अज़ीम से साबित है।

यह ज़ुर्रियते मोमिन का हाल है : (यानी मर्दे मोमिन की औलाद का मुआमला यह है) जो इस्लाम पर मरे अगर उनके बाप दादा के दर्जे इन मंज़िलों से बलन्द तर हुए तो यह (लोग) अपने बाप, दादा से मिला दिये जाएँगे और उनके आमाल में कमी न होगी। जब यह आम सालेहीन की सलाह (यानी आम नेक लोगों की निस्बत) उनकी नस्ल औलाद को दीन व दुनिया व आख़िरत में नफ़ा देती है तो सिद्दीक़ी, फ़ारूक़ी, उस्मानी, अली व जअफ़र व

अब्बास व अंसारे किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की सलाहे अज़ीम (यानी निस्बते अज़ीम) का क्या कहना जिनकी औलाद में शेख सिद्दीक़ी व फ़ारुक़ी व उस्मानी व अल्वी व जअफ़री व अब्बासी व अंसारी हैं, यह क्यों न अपने नसबे करीम से दुनिया व आखिरत में नफ़ा पाऐंगे। फिर अल्लाहुअकबर ! हज़राते आलिया सादाते कराम की औलादे अमजाद हज़रत खातून बतुल ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा को खुद हुज़ूर पुरनूर सैयदुस्सलोहीन सैयदुल आलमीन, सैयदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेटी हैं कि उनकी शान तो अरफ़अ व अअ़ला व बलन्दो बाला है।

हमारे हुज़ूर अल्लाह तआला के नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुआ फ़रमाई वह तेरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल हैं तो उनके बदकार, उनके निकोकारों को दे डाल और उन सब को मुझे हिबा फ़रमा दे (यानी मेरी औलाद में अच्छे, बुरे सब मेरे हैं और उन सब को मेरे हवाले फ़रमा दे) फिर फ़रमाया : मौला तआला ने ऐसा ही किया (यानी मेरी औलाद के अच्छे और बुरे सब को मेरे हवाले फ़रमा दिया) अमीरुल मोमिनीन अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने अर्ज़ किया, मा फ़अ़ला (यानी अल्लाह तआला ने क्या किया ! फ़रमाया यह तुम्हारे साथ किया (यानी तुम को हमारे हवाले फ़रमा दिया) और जो तुम्हारे बाद (यानी तुम्हारी औलाद) आने वाले हैं उनके साथ भी ऐसा ही करेगा (यानी तुम्हारी आने वाली औलाद को भी अल्लाह तआला मेरे हवाले फ़रमा देगा)

(6) आशिक़े रसूल मुहिब्बे सहाबा-ए-किराम अहले बैते इज़ाम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हु फ़रमाते हैं -

सादाते किराम की हिमायत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

हाँ नसब पर फ़ख्र जाइज़ नहीं नसब के सबब अपने आपको बड़ा जानना तकब्बुर करना जाइज़ नहीं, दूसरों के नसब पर तअन जाइज़ नहीं। उन्हें कम नसबी के सबब हक़ीर जानना जाइज़ नहीं। इसके सबब किसी मुसलमान का दिल दुखाना जाइज़ नहीं। अहादीस जो इस बाब में आईं इन्हीं मआनी की तरफ़ नाज़िर हैं। व बिल्लाहित्तौफ़िक़ ख़िदमतगारी अहले बैते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये यह बयान रिसाला हो गया। मुलख्खसन (इज़ाक़तुल अदब लि फ़ाज़िलिन नसब)

(7) आशिक़े रसूल फ़िदाए सहाबा व अहले बैत रज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो अन्हु फ़रमाते हैं।

सादाते किराम जो वाक़ेई इल्मे इलाही में सादात हों उनके बारे में रब अज़्ज़वजल्ला से उम्मीदे वासिक़ यही है कि आख़िरत में उनको किसी गुनाह का अज़ाब न दिया जाएगा। हदीस में है, उनका फ़ातिमा इसी लिये नाम हुआ कि अल्लाह तआला ने उनको और उनकी तमाम ज़ुर्रियत (यानी औलाद को) नार पर (यानी दोज़ख पर) हराम फ़रमा दिया है। दूसरी

हदीस में है कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत बतुल जेहरा रजियल्लाहो तआला अन्हा से फरमाया ऐ फातिमा (रजियल्लाहु तआला अन्हा) न तुझे (अल्लाह तआला) अजाब करेगा न तेरी औलाद में किसी को।

(8) अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहु की औलादे अमजाद और भी हैं कुरैशी, हाश्मी, अलवी होने से उनका दामाने फ़जाइल मालमाल है मगर यह शरफ़ आजम कि हजरात सादाते किराम को है उनके लिये नहीं, यह शरफ़ बतुल ज़हरा रजियल्लाहु तअला अन्हा की तरफ से है कि फातिमा (रजियल्लाहो तआला अन्हा) मेरा टुकड़ा है। सब की औलादें अपने बाप की तरफ निस्बत की जाती हैं। सवाल औलादे फ़ातिमा (रजियल्लाहु तआला अन्हा) के कि मैं उनका बाप हूँ। मुलख्खसन (फतावा रज़विया जि.9)

(9) आशिके रसूल मद्दाहे सहाबा व अहले बैत रजियल्लाहु तआला अन्हुन आला हज़रत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी रजियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं:

सादाते किराम का ताजीम फर्ज है और उनकी तौहीन हराम है बल्कि उलमाए किराम ने इरशाद फ़रमाया जो किसी आलिम को मोलू या किसी सैयद को मीरवा बर वजहे तहकीर कहे काफिर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फरमाते हैं जो मेरी औलाद और अंसार और अरब का हक न पहचाने वह तीन बातों से खाली नहीं या तो मुनाफिक है या हरामी, या हेजी बचा, बल्कि उलमा व अंसार व अरब से तो वह मुराद हैं जो गुमराह व बद दीन न हो और सादाते किराम की ताजीम जब तक उनकी मज़हबी हद्दे कुफ्र को न पहुँचे कि उसके बाद वह सैयद ही नहीं सब मुनकतअ है जैसे नेचरी, कादयानी, वहाबी, गैर मुक़ल्लिद, देव बन्दी, अगरचेह सैयद मशहूर हों, न सैयद हैं न उनकी ताज़ीम हलाल बल्कि तौहीन व तकफ़ीर फ़र्ज़। मुलख्खसन (फतावा रज़विया, जि.9)

(10) सैयद सुन्नियुल मज़हब की ताज़ीम लाजिम है अगरचे उसके आमाल कैसे ही हों उन आमाल के सबब उनसे तनफ़्फ़ुर न किया जाए। (मुलख्खसन) (फतावा रज़विया जि. 9)

(11) जो शख्स सैयद (सुन्नियुल मजहब) की तहक़ीर बे वजहे सियादत करे वह मुतलक़न काफ़िर है, उसके पीछे नमाज महज़ बातिल वरना मकरूह और जो सैयद मशहूर हो अगरचेह वाकफियत न मालूम हो उसे बिला दलीले शरई कह देना कि यह सहीहुन्नसब नहीं तो साफ (गुनाह) कबीरा है। मुलख्खसन। (फ़तावा रज़विया, जि.9)

ऐ ईमान वालो ! यह तमाम तफ्सील उस शख्स के बारे में है जिसकी सियादत यक़ीनी है और जिस शख्स की सियादत मशकूक हो और अगर शरअन उसका नसब साबित नहीं है लेकिन वह शख्स नसब यानी सैयद होने का दावेदार है और उसका झूट मालूम नहीं है तो उसकी तकजीब में तवक्कुफ किया जाएगा, क्योंकि लोग अपने अंसाब के अमीन हैं लिहाज़ा उसका हाल उसके सुपुर्द कर देना चाहिये, जो इंसान बच सकता है उसे ज़हर नहीं पीना चाहिये। (बरकाते आले रसूल, स.106)

और अगर शरअन उसका नसब साबित नहीं है और उस पर दलील भी हो जैसे बाप कहता

है कि मैं पिंजारा ख़ानदान से हूँ या शाह यानी फ़कीर हूँ तो मेरा बेटा सैयद कैसे हो सकता है तो बाप का कौल हुज्जत है लिहाज़ा ऐसे झूटे सैयद की तकजीब लाज़िम है।

बे अस्ल झूटे सैयद बनने से बचो

हदीस शरीफ़ : सैयदुस्सादात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنِ ادَّعٰى اِلٰى غَيْرِ اَبِيْهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَ الْمَلٰئِكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّ لَا عَدْلًا ـ

यानी जो अपने बाप के अलावा दूसरे की तरफ़ अपने आपको मंसूब करे उस पर अल्लाह तआला और सब फ़रिश्तों और इंसानों की लानत है। अल्लाह क़ियामत के दिन उसका न फ़र्ज़ क़ुबूल करेगा और न नफ़्ल। (बुख़ारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, व हवाला फतावा रज़विया, जि.5 स. 67)

ऐ मुसलमानो ! अपना नसब बदलने से बचो, झूटे सैयद कहलवाने से परहेज़ करना, वरना तुम ने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिही वसल्लम की बेटी पर तोहमत लगाई आम मोमिन पर तोहमत लगाना सख़्त तरीन गुनाह है तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत और उनकी बेटी पर तोहमत लगाना कैसे रवा हो सकता है। बचो ख़ुदारा बचो ! और अल्लाह तआला ने जो भी हसब व नसब अता फरमाया है उस पर शुक्र अदा करो। बे अस्ल सैयद और झूटे आले रसूल अपने आपको मशहूर न करो कि लोग सैयद जान कर आले रसूल समझ कर ख़ूब इज़्ज़त करेंगे और नज़राना ज़्यादा से ज़्यादा मिलेगा।

क़ुरआने करीम फ़रमाता है : اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ

तर्जमा : बे शक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है। (कंज़ुल ईमान)

ऐ भाई ! क़ियामत आने वाली है, मौत तुम्हारा इन्तिज़ार कर रही है, क़ब्र की तारीकी और अज़ाब को याद करो, हश्र की शर्मिन्दगी और मुसीबत से बचने की अभी से तैयारी करो, क़ब्र व हश्र में कौन काम आने वाले हैं वही न जिनके नसब पर तुम ने तोहमत लगाई है और अपने आपको उनके ख़ानदान में शामिल कर दिया और झूटे सैयद बन बैठे। यह दुनिया है जो चाहे कर लो, जो चाहे बन जाओ मगर बरोज़े क़ियामत कुछ नहीं चलेगा, झूटे सैयद होने का पुलिन्दा खुल जाएगा, इस लिय तौबह कर लो और सच्चे सादाते किराम का सदका मांग लो। अल्लाह तआला सादाते किराम के गुलामों में क़ुबूल फरमाए। आमीन... सुम्मा आमीन

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करॉं के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

पहला जुमा .... दूसरा बयान

फ़ज़ाइले आले रसूल

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ O اَمَّا بَعْد!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ O

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ O

قُلْ لَّاۤ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ ! मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत। (पारा 25, रुकूअ् 4, तर्जमा कंजुल ईमान)

अल्लाह तआला अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिह वसल्लम से इरशाद फ़रमाता है : ऐ हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम फ़रमाओ कि मैं इस पर यानी तब्लीग़े रिसालत और इरशादो हिदायत पर तुम से कुछ अज्र नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत। यानी मैं तुम से अपने रिश्तेदारों की महब्बत का मुतालबा करता हूँ। (पारा 25, रुकू 4)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! जिन नुफ़ूसे कुदसिया की तारीफ़ व तौसीफ़ अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलिही वसल्लम खुद बयान करें। कुरआन व हदीस में जिनके बे शुमार फ़ज़ाइल व मनाक़िब का ज़िक्र मौजूद हैं, फ़र्श से अर्श तक पूरा आलम मिल कर उनके महामिद और फ़ज़ाइल का ज़िक्र बयान करना चाहें तो तारीफ व तौसीफ़ का हक़ अदा नहीं हो सकता। मैं तो आले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलिही वसल्लम और सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़्वान के आस्ताने का गदा हूँ, अपने बुज़ुर्गों की दुआ के हुसूल के लिये थोड़ी बहुत कोशिश करता रहता हूँ, हाथ पाँव मारता रहता हूँ ताकि हमारे आक़ायाने नेअ़मतो दौलत रहम खा कर कुछ करम की भीक हमारे दामन में डाल दें ताकि दीन व दुनिया का भला हो जाए और उनकी तवज्जोह से नजात व बख़्शिश का सामान भी हो जाए। यही वह हज़रात हैं जिनकी महब्बत से परवानाए नजात मिलता है। यही वह लोग

हैं जिनकी महब्बत वाजिब क़रार दी गई है, यही वह लोग हैं जिनकी पाकीज़गी और तहारत पर कुरआने करीम ने मोहर लगा दी है।

यही वह लोग हैं जो आसमाने रुश्दो हिदायत के चाँद तारे और सफ़ीनए नजात हैं। इनसे महब्बत करोगे तो बेड़ा पार है और अगर इनका साथ छाड़ दोगे तो डूब जाओगे, हलाक व बरबाद हो जाओगे।

आक़ाए नेअ़मत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा आशिक़े अहले बैत फ़रमाते हैं

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर ।
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की ॥

आले रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिही वसल्लम का मक़ाम व मर्तबा बड़ा है।

हज़रात ! इनके हक़ को पहचानो, आले रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अलिही वसल्लम एहतिराम करो, उनकी इज़्ज़त करो, आले रसूल के फ़ज़ाइल व मनाक़िब को कुरआनो हदीस की रौशनी में बग़ौर सुनो।

आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

तेरी नस्ले पाक में है बचा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ط

यानी ऐ प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व अलिही वसल्लम तुम फ़रमा दो मैं तुम से तब्लीग़ का कोई मुआओज़ा बदला नहीं मांगता, हाँ तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम मेरे रिश्तेदारों से महब्बत करो। (बरकाते आले रसूल स. 219)

हज़रत अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी रहमतुल्लाहे अलैहि अपनी तसनीफ़ अश्शरफ़ुल मूयद में तहरीर फ़रमाते हैं : इमाम सयूती ने दुर्रे मंसूर में और बहुत से मुफ़स्सेरीन ने इस आयते करीमा की तफ़्सीर करते हुए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से नक़्ल किया है।

सहाबाए किराम (रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैका व आलिका वसल्लम आपके वह कौन से रिश्तेदार हैं जिनकी महब्बत हम पर वाजिब है ? फ़रमाया अली, फातिमा और उन की औलाद यानी हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम। (बरकाते आले रसूल, स. 219)

(2) शाने नुज़ूल : दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हु से रिवायत है। अन्सारी सहाबा फ़रमाते हैं कि अहले बैत ने हमारे क़ौल से फ़ख़्र मेहसूस किया हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हु ने फ़रमाया हमें तुम पर फ़ज़ीलत है यह बात

नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहुँची तो आप की मजलिस में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ऐ गिरोहे अन्सार ! क्या तुम बे इज़्ज़त नहीं थे तो अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरे ज़रीए इज़्ज़त अता फ़रमाई ? उन्होंने अर्ज़ किया हां या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या तुम मुझे जवाब नहीं देते। अर्ज़ किया हुज़ूर ! आप क्या फ़रमाना चाहते हैं ? फ़रमाया क्या तुम यह नहीं कहते कि आप को आप की क़ौम ने निकाल दिया था तो हम ने आप को पनाह दी, क्या उन्हों ने आप की तकज़ीब नहीं की थी तो हम ने आप की तस्दीक़ की ? क्या उन्होंने आप को कमज़ोर न जाना तो हम ने आप की इमदाद की ? आप इसी तरह फ़रमाते रहे यहाँ तक कि अन्सार घुटनों के बल खड़े हो गए और अर्ज़ किया हमारे तमाम अमवाल व इमलाक ख़ुदाए तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये हैं तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई : قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ط (बरकाते आले रसूल, स. 220)

(3) हज़रत ताऊस फ़रमाते हैं इसी आयते करीमा के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया आयते करीमा में क़ुरबा से मुराद नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्तेदार हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 220)

(4) मुक़रेज़ी ने फ़रमाया : मुफ़स्सेरीन की एक जमाअत ने इस आयते करीमा की तफ़सीर में फ़रमाया :

ऐ हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने पेरोकार मोमिनों को फ़रमा दो कि मैं तब्लीग़े दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता। सिवाए उसके कि तुम मेरे रिश्तेदारों से महब्बत रखो। (बरकाते आले रसूल, स. 220)

(5) हज़रत अबुल आलिया हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत करते हैं : اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ط यह नबिये करीम के रिश्तेदार हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 220)

शाने नुज़ूल : मुफ़स्सिरे क़ुरआन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए आर अन्सार सहाबा ने देखा कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तब्लीग़े इस्लाम के लिये और हमारी रुश्दो हिदायत के लिये हमा वक़्त मसरूफ़ रहते हैं। इख़राजात बहुत हैं और बज़ाहिर इख़राजात के लिये आमदनी कुछ भी नहीं है तो अन्सार सहाबा ने आपस में मशवरा किया और अपने प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के एहसानात को याद करके आप की ख़िदमत के लिये बहुत सा माल जमा किया और उस को लेकर ख़िदमते अक़दस में पेश करने के लिये हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप ही की बदौलत हमें हिदायत मिली

और हम ने गुमराही से नजात पाई हम देखते हैं कि हमारे आका करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इख़राजात बहुत ज़्यादा है इस लिये हम लोग यह माल बारगाहे करीम में नज़राना के तौर पर लाए हैं क़ुबूल फ़रमा कर इज़्ज़त बख़्शें। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह माल वापस फ़रमा दिये। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ऐ ईमान वालो ! आप हज़रात को मालूम हो गया कि आयते करीमा का शाने नुज़ूल किया है और इस आयते मुबारका के नाज़िल होने का मक़सद किया है और यह भी मालूम हो गया है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने अन्सार सहाबा के माल को वापस फ़रमा कर उन से अपनी अहले बैत की महब्बत का मुतालबा फ़रमाया और आप को यह भी मालूम हो गया कि इस आयते करीमा إلا المودة في القربى से आप सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्तेदार कौन लोग हैं ?

1) हदीस शरीफ : सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने जब अल्लाह तआला का यह हुक्म सुना तो दरबारे नुबुव्वत में अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम :

مَنْ قَرَابَتُکَ هٰؤُلَاءِ الَّذِیْنَ وَجَبَتْ عَلَیْنَا مَوَدَّتُهُمْ قَالَ عَلِیٌّ وَّفَاطِمَةُ
وَالْحَسَنُ وَالْحُسَیْنُ وَابْنَاهُمَا

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमें बताया जाए कि आप के वह रिश्तेदार कौन लोग हैं जिन की महब्बत व उल्फ़त हम पर वाजिब की गई है ? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया अली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन और उन के बेटे हैं (यानी हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के नस्ले पाक से क़ियामत तक जितनी औलाद होंगे सब इस फरमान में शामिल हैं)। (तफ़सीर इब्ने अरबी, जि. 2, स. 212)

2) हदीस शरीफ : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि जब यह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व अला आलिका वसल्लम !

مَنْ قَرَابَتُکَ وَالَّذِیْنَ نَزَلَتْ فِیْهِمُ الْاٰیَةُ۔

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप के रिश्तेदार कौन लोग हैं जिन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल हुई : قَالَ عَلِیٌّ وَّفَاطِمَةُ وَابْنَاهُمَا तो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अली व फ़ातिमा और हसन और हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन।

(अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 118, जलालैन मिसरी, जि. 2, स. 32, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 3, स. 7)

इमाम सदी बयान करते हैं कि जब हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम को क़ैद करके दमिश्क़ लाया गया और रास्ते में एक जगह खड़ा किया गया तो एक

शामी ज़ालिम ने आप से कहा। ख़ुदा का शुक्र है जिस ने तुम्हें क़त्ल किया और तुम्हारी जड़ों को काटा और फ़ितना गरी को मिटाया (मआज़ल्लाह) तो आप ने उस शामी ज़ालिम से फ़रमाया क्या तूने कुरआन में यह आयत नहीं पढ़ी। قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى -

तो उस शख़्स ने कहा किया वह लोग तुम हो ? आप ने फ़रमाया हाँ बिला शक व शुबा वह लोग हम हैं। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, जि. 6, स. 122, अस्सवाइकुल मुहर्रिका, स.68)

हज़रत अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इस वाक़िआ को बयान फ़रमाने के बाद लिखते हैं कि मैं उस शख़्स को ईमान वाला नहीं समझता उस शख़्स के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो अहले बैत के शहीद किये जाने पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे, मैं अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का उस मुलहिद से ज़्यादा दुश्मन अबू जहल को नहीं समझता।

(बरकाते आले रसूल, स. 222)

ऐ ईमान वालो ! जो हज़रात आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यानी सय्यद हैं उन की ताज़ीम करो उन से महब्बत मोमिन पर वाजिब है इस जहन्नमी फ़िर्क़ा से दूर रहो जो सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बाग़ी और हुकूमत व दौलत का लालची कहते हैं। और यज़ीद पलीद जैसे शराबी को अमीरुल मोमिनीन और जन्नती कहते हैं। उस से सिर्फ़ इतना कह दो कि आप हज़रात के नज़दीक यज़ीद पलीद अगर जन्नती है तो क़ियामत के दिन जो हश्र यज़ीद पलीद का होगा वही हश्र यज़ीद पलीद के साथ आप हज़रात का हो और उस का जो ठिकाना हो वही ठिकाना आप हज़रात का हो।

और हम सुन्नी मुसलमानों का हश्र क़ियामत के दिन प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहज़ादे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के साथ हो और जहाँ इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रहें हम सुन्नियों का ठीकाना भी वहीं रहे। अपना अपना मुक़द्दर है तुम्हारे नसीबे में अहले बैत से बुग़्ज़ व इनाद है और हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के नसीबे में महब्बते आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

दुरूद शरीफ़ :

फ़ज़ाइल आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अहादीस में

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तब्लीगे रिसालत व हिदायत पर कोई मुआवज़ा व बदला तलब नहीं किया सिवाए अहले क़राबत यानी रिश्तेदारों की महब्बत के।

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया लोगो ! अल्लाह तआला से महब्बत रखो इस लिये कि वह तुम्हारा रब है और वह तुम्हें नेअ़मत व दौलत अता फ़रमाता है।

وَ أَحِبُّوْنِي لِحُبِّ اللّٰهِ وَ أَحِبُّوا أَهْلَ بَيْتِي لِحُبِّي

और मुझ से महब्बत रखो अल्लाह की महब्बत की वजह से, और मेरे अहले बैत से महब्बत करो मेरी महब्बत की वजह से। (तिर्मिज़ी व मिश्कात, स. 573)

(2) हदीस शरीफ़ : مَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ شَهِيْدًا जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया उस ने शहादत की मौत पाई।

(3) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مَغْفُوْرًا لَّهٗ

आगाह हो जाओ ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर मरा उस शख़्स के तमाम गुनाह बख़्श दिये गए।

(4) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ تَائِبًا होशियार हो जाओ ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया वह तौबह करके मरा।

(5) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مُؤْمِنًا مُسْتَكْمِلَ الْاِيْمَانِ

आगाह हो जाओ जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया वह कामिल ईमान के साथ फ़ौत हुआ।

(6) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ بَشَّرَهٗ مَلَكُ الْمَوْتِ بِالْجَنَّةِ ثُمَّ مُنْكَرٌ وَّنَكِيْرٌ

ग़ौर से सुन लो ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया उसे मलकुल मौत अलैहिस्सलाम और फिर क़ब्र के फ़रिश्ते जन्नत की बशारत देते हैं।

(7) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ يُزَفُّ اِلَى الْجَنَّةِ كَمَا تُزَفُّ الْعَرُوْسُ اِلٰى بَيْتِ زَوْجِهَا

हाँ सुन लो ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिकाल किया वह शख़्स ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा जैसे दुल्हन को दूल्हा के घर भेजा जाता है।

(8) اَلَا وَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ فُتِحَ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ بَابَانِ اِلَى الْجَنَّةِ

यक़ीन जान लो ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया उस की क़ब्र में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।

(9) اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰی حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ جَعَلَ اللّٰهُ قَبْرَهٗ مَزَارَ مَلَائِكَةِ الرَّحْمَةِ

अच्छी तरह जान लो ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया अल्लाह तआला उस की क़ब्र को रहमत के फ़रिश्तों के लिये ज़ियारत गाह बना देता है।

(10) اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰی حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ عَلَى السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ

आगाह हो जाओ ! जो शख़्स अहले बैत की महब्बत पर इन्तिक़ाल किया वह शख़्स मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत पर फ़ौत हुआ।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 7, स. 390, बरकाते आले रसूल, स. 223)

ऐ ईमान वालो ! यह इन्आम व इकराम सुन्नी मुसलमानों के लिये है जो अहले बैत व आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्तेदारों से महब्बत व उल्फ़त करते हैं और वह लोग जो अहले बैत व सादाते किराम से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखते हैं वह बड़े बद नसीब और जहन्नम के हक़दार हैं।

किस ज़बाँ से हो बयाँ मदह ख़्वाने अहले बैत
मदह गोए मुस्तफ़ा मदह ख़्वाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़ा को सुना दे ऐ हसन
यूँ कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

जो शख़्स आले रसूल की दुश्मनी में मरा वह रहमत से महरूम होगा

हदीस शरीफ़ : ख़ूब ग़ौर से सुन लो ! जो शख़्स आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बुग़्ज़ पर मरा वह क़ियामत के रोज़ इस हाल में आएगा कि उस की आँखों के दरमियान लिखा होगा अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद।

(2) ख़बरदार ! जो शख़्स आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बुग़्ज़ यानी दुश्मनी पर मरा वह शख़्स काफ़िर मरा।

(3) कान खोल कर सुन लो ! जो शख़्स आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बुग़्ज़ व अदावत पर मरा वह जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम होगा।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 7, स. 390, बरकाते आले रसूल, स. 224)

हज़रत सय्यदा फ़ातिमा, हज़रत मौला अली, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन अहले बैत हैं और अहले बैत ही आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और यह नक़्ले तवातुर से साबित है।

बाज़ हज़रात ने कहा वह क़रीबी रिश्ते दार हैं और बाज़ ने कहा कि वह आप की उम्मत हैं जिस ने आप की दावत व तब्लीग़ को क़ुबूल किया अगर हम आल को क़रीबी रिश्तेदारों पर महमूल करें तो अहले बैत ही आले रसूल हैं और अगर इस उम्मत पर महमूल करें जिस ने आप की दावत व तब्लीग़ को क़ुबूल किया तो भी अहले बैत आले रसूल में दाख़िल है। साबित हुआ

कि वह हर सूरत पर आले रसूल हैं और दूसरों का आल में दाख़िल होना इख़्तिलाफ़ी है।
(तफ़सीरे कबीर, जि. 7, स. 390, बरकाते आले रसूल, स. 224)

ताज़ीमे आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

ऐ ईमान वालो ! सादाते किराम की ताज़ीम करने वाला और आले रसूल की ख़िदमत करने वाला बड़ा ख़ुश बख़्त और साहिबे नसीब होता है। दुनिया में भी बेहतर सिला पाता है और क़ियामत के दिन प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों बड़े बड़े इनआम व इकराम से नवाज़ा जाएगा। चन्द वाक़िआत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

फ़तावा रज़विया शरीफ़ में आशिके रसूल इमाम अहमद रज़ा हुज़ूर आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं :

(1) हदीस शरीफ़ : इब्ने असाकिर अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मेरे अहले बैत में किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं रोज़े क़ियामत उस का सिला उसे अता फ़रमाउँगा।

(2) हदीस शरीफ़ : ख़तीबे बग़दादी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स औलादे अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो में किसी के साथ दुनिया में नेकी करे उस का सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वह शख़्स रोज़े क़ियामत मुझ से मिले।

हदीस शरीफ़ को बयान फ़रमा कर मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआा अन्हो आगे तहरीर फ़रमाते हैं।

अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर !! क़ियामत का दिन, वह क़ियामत का दिन, जो सख़्त ज़रूरत और सख़्त हाजत का दिन और हम जैसे मोहताज और सिला अता फ़रमाने को हमारे प्यारे रसूल, प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम साहिबुत्ताज, ख़ुदा जाने किया कुछ दें और कैसा निहाल फ़रमा दें, एक निगाहे लुत्फ़ उन की जुमला मोहिम्माते दो जहाँ को बस हैं बल्कि ख़ुद यही सिला करोरों से आला व अनफ़स है जिस की तरफ़ कलमा करीमा इज़ा। यक़ीनी इशारा फ़रमाता है, व लफ़्ज़ इज़ा ताबीर फ़रमाना बि हम्दिल्लाहे तआला रोज़े क़ियामत वादए विसाल व दीदारे महबूबे ज़ुल जलाल का मुज़्दा सुनाता है।

मुसलमानो ! और क्या दरकार है दौड़ो ! और इस दौलत व सआदत को हासिल कर लो। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़। (फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 4, स. 489)

अरब के मशहूर आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं।

(3) हाफ़िज़ बिन हजर अस्क़लानी ने फ़रमाया यहया बिन सईद अन्सारी उबैद बिन हुनैन से रिवायत करते हैं कि मुझसे शहज़ादए रसूल हज़रत इमाम हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बयान फ़रमाया कि मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास गया वह मिम्बर पर ख़ुतबा दे रहे थे, मैं मिम्बर पर चढ़ गया और उनसे कहा : اِنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِ اَبِیْ وَاذْهَبْ اِلٰی مِنْبَرِ اَبِیْک

यानी मेरे बाप के मिम्बर से उतर जाओ और अपने बाप के मिम्बर पर जाओ। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : لَمْ یَکُنْ لِاَبِیْ مِنْبَر यानी मेरे बाप का मिम्बर नहीं था और मुझे उठाकर अपने पास बिठा लिया और मैं अपने पास पड़ी हुई कंकरों से खेलता रहा। जब आप ख़ुतबा देकर मिम्बर से उतरे तो मुझे अपने साथ घर ले गए और मुझसे फ़रमाया कितना अच्छा होता, अगर आप कभी कभी मेरे घर तशरीफ़ लाते रहे। (अशरफुल मूयद, स. 93)

(4) सय्यद की ख़िदमत से हज़रत फ़ातिमा की ख़ुशी मिलती है

अबूल फ़राह अस्फ़हानी मुतअद्दिद लोगों से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन बिन हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास गए वह नो उम्र थे उनकी बड़ी बड़ी ज़ुल्फ़ें थीं, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उन्हें ऊँची जगह बिठाया, उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए, और उनकी ज़रूरतें पूरी कीं, फिर उनके जिस्म के एक हिस्से को दबाया (यानी आपने उनकी ख़िदमत की) और अर्ज़ किया शफाअत करने के लिये इसे याद रखना, जब वह तशरीफ़ ले गए तो उनकी कौम ने उन्हें मलामत किया और कहा आपने एक नो उम्र बच्चे के साथ ऐसा सुलूक किया, तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : मुझसे मोअ़तबर आदमी ने बयान किया गोया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने अक़्दस से सुन रहा हूँ आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया।

फ़ातिमा (रज़ियल्लाहो तआला अन्हा मेरी लख़्ते जिगर है उनकी ख़ुशी का सबब मेरी ख़ुशी का बाइस है और मैं जानता हूँ कि अगर हज़रत फ़ातिमतुज्ज़हरा तशरीफ़ फ़रमा होतीं तो मैंने जो कुछ उनके बेटे के साथ किया है उससे ख़ुश होतीं। लोगों ने पूछा कि आपने उनके जिस्म को दबाया है और जो कुछ उनसे कहा है उसका क्या मतलब है ? तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया (ऐ लोगो सुनो !) बनू हाशिम का हर फ़र्द (यानी हर सय्यद) क़ियामत के दिन शफ़ाअत करेगा, मुझे तवक़्क़ोअ़ है कि मुझे उनकी शफ़ाअत हासिल होगी। (बरकाते आले रसूल, स. 260, 261)

(5) आले रसूल की ख़िदमत से हर साल हज का सवाब

शैख़ अकबर सय्यिदी मोहियुद्दीन इब्ने अरबी अपनी तस्नीफ़ मुसामरातुल अख़यार में अपनी सनद मुत्तसिल से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि बाज़ मुतक़द्देमीन को हज की बड़ी आरज़ू थी उन्होंने फ़रमाया :

मुझे एक साल बताया गया कि हुज्जाज का एक क़ाफ़ला बग़दाद शरीफ़ में आया है, मैंने उनके साथ हज के लिये जाने का इरादा किया, अपनी आस्तीन में पाँच सौ दीनार डाले और बाज़ार की तरफ़ निकला ताकि हज की ज़रूरियात के सामान ख़रीद लाऊँ, मैं एक रास्ते पर जा रहा था कि एक औरत मेरे सामने आई, उस औरत ने कहा अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाए मैं सय्यद ज़ादी हूँ, मेरी बच्चियों के तन ढांपने के लिये कपड़ा नहीं है और आज चौथा दिन है कि हमने कुछ खाया नहीं है, उसकी गुफ़्तुगू मेरे दिल में उतर गई मैंने वह पाँच सौ दीनार उसके दामन में डाल दिये और उन्हें कहा आप अपने घर जाएं और इन दीनारों से अपनी ज़रूरियात पूरी कर लें। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और वापस आ गया। अल्लाह तआला ने इस बार हज पर जाने का इरादा और शौक मेरे दिल से निकाल दिया, दूसरे लोग चले गए, हज किया और वापस लौट आए। मैं ने सोचा कि दोस्तों से मुलाक़ात कर आऊँ और उन्हें सलाम कर आऊँ, चुनाँचे मैं गया जिस दोस्त से मिलता उसे सलाम कहता और कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा हज क़ुबूल फ़रमाए और तुम्हारी कोशिश को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। तो वह शख़्स मुझे कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा हज भी क़ुबूल फ़रमाए। कई दोस्तों ने इसी तरह कहा, रात को सोया तो हमारे प्यारे रसूल नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई। आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया लोग तुम्हें हज की मुबारकबाद दे रहे हैं इस पर तअज्जुब न कर, तुमने एक कमज़ोर और ज़रूरत मन्द (मेरी बेटी सय्यिद ज़ादी) की इमदाद की तो मैंने अल्लाह तआला से दुआ की, अल्लाह तआला ने हू बहू तुझ जैसा यानी तुम्हारे शक्ल का फ़रिश्ता पैदा फ़रमाया जो हर साल तुम्हारी तरफ़ से हज करेगा। अब अगर चाहो तो हज करो और अगर चाहो तो हज न करो। (मगर तुम्हें हर साल हज का सवाब मिलता रहेगा) यह है एक सय्यिद ज़ादी की ख़िदमत का सवाब व सिला। (बरकाते आले रसूल, स. 262)

(6) अज़ाब से महफ़ूज़

शैख़ ज़ैनुद्दीन अब्दुर्रहमान ख़ला बग़दादी फ़रमाते हैं कि मुझे तैमूर लंग के एक अमीर ने बताया कि जब तैमूर लंग मरज़े मौत में मुब्तला हुआ तो एक दिन उस पर सख़्त इज़्तिराब तारी हुई और उसका मुंह स्याह हो गया और रंग बदल गया। जब इफ़ाक़ा हुआ तो लोगों ने उससे सूरत बयान की तो उसने कहा मेरे पास अज़ाब के फ़रिश्ते आए थे, इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया इसे छोड़ दो क्यों कि यह शख़्स मेरी औलाद से महब्बत रखता था और उनकी ख़िदमत करता था। चुनाँचे वह फ़रिश्ते चले गए। (बरकाते आले रसूल, स. 263)

(7) आलिम व इमाम पर भी सादात की ताज़ीम लाज़िम है

अल्लामा इब्ने हजर मक्की तक़ीयुद्दीन फ़ारसी से रिवायत करते हैं, इन्होंने बाज़ अइम्मा से रिवायत की कि वह सादाते किराम की बहुत ताज़ीम किया करते थे, उनसे इसका सबब पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया सादात में एक शख्स था जिसे मुतीर कहा जाता था वह अकसर लह्‌व व लअ़ब में मसरूफ़ रहता था, जब वह फ़ौत हो गया तो उस वक़्त के आलिम ने उसका जनाज़ा पढ़ने में तवक्कुफ़ किया तो उन्होंने ख्वाब में नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत की और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह हजरत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा थीं, उन्होंने इस आलिम से ऐराज़ किया, जब उस शख्स ने दरख्वास्त की कि मुझ पर नज़रे रहमत फ़रमाएं तो हजरत खातूने जन्नत रज़ियल्लाहो तआला अन्हा उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुई और उस पर इताब फ़रमाया यानी नाराज़गी ज़ाहिर फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया :

क्या हमारा मक़ाम (यानी हमारी निस्बत हमारे बेटे) मुतीर के लिये किफ़ायत नहीं कर सकता ? (बरकाते आले रसूल, स. 264)

(8) आले रसूल की ख़िदमत का सिला ईमान और जन्नती महल मिला

शैख अदी ने अपनी किताब मशारिक़ुल अनवार में इब्ने जौज़ी की तस्नीफ़ मुल्तक़त से नक़्ल किया कि बल्ख में एक अल्वी क़याम पज़ीर था उसकी एक ज़ौजा और चन्द बेटियाँ थीं। क़ज़ाए ईलाही से वह शख्स फ़ौत हो गया, उनकी बीवी कहती हैं कि मैं दुश्मनों के खौफ़ से समरक़न्द चली गई, मैं वहाँ सख्त सर्दी में पहुँची, मैंने अपनी बेटियों को मस्जिद में दाख़िल किया और खुद खुराक की तलाश में चल दी, मैंने देखा कि लोग एक शख़्स के गिर्द जमा हैं, मैंने उस शख़्स के बारे में दरयाफ़्त किया तो लोगों ने कहा यह रईसे शहर हैं। मैं उसके पास पहुँची और अपना हाले ज़ार बयान किया उसने कहा अपने अल्वी होने पर गवाह पेश करो, उसने मेरी तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं दी, मैं वापस मस्जिद की तरफ़ चल दी। मैंने रास्ते में एक बूढ़े शख्स को देखा जो बलन्द जगह पर बैठा हुआ था, जिसके इर्द गिर्द कुछ लोग जमा थे, मैंने पूछा यह कौन हैं ? लोगों ने कहा यह मुहाफ़िज़े शहर है और मजूसी हैं। मैंने सोचा मुमकिन है इससे कुछ फ़ायदा हासिल हो जाए। चुनाँचे मैं उसके पास पहुँची, अपनी सर गुज़श्त बयान की और रईसे शहर के साथ जो वाक़िआ पेश आया था बयान किया और उसे यह भी बताया कि मेरी बच्चियाँ मस्जिद में हैं और उनके खाने पीने के लिये कोई चीज़ नहीं है। उस शख्स ने अपनी खादिमा को बुलाया और कहा अपनी आक़ा (यानी मेरी बीवी) को कह कि वह कपड़े पहनकर और तैय्यार होकर आए। चुनाँचे वह आई और उसके साथ चन्द कनीज़ें भी थीं, बूढ़े शख्स ने उससे कहा इस औरत के साथ फ़लां मस्जिद में जा और इसकी बेटियों को अपने

घर ले आ। वह मेरे साथ गई और बच्चियों को अपने घर ले आई। शैख़ ने अपने घर में हमारे लिये अलग रिहाइश गाह का (रहने का) इन्तिज़ाम किया, हमें बेहतरीन कपड़े पहनाए, हमारे गुस्ल का इन्तिज़ाम किया और हमें तरह तरह के खाने खिलाए।

आधी रात के वक़्त रईसे शहर ने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम हो गई है और लिवाउल हम्द झण्डा नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरे अनवर पर लहरा रहा है, आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस रईसे शहर से ऐराज़ फ़रमाया (यानी उसकी तरफ़ से चेहरए मुबारक फेर लिया)

उसने (यानी रईसे शहर ने) अर्ज़ किया हुज़ूर (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) आप मुझ से ऐराज फ़रमा (मुंह फेर) रहे हैं हालांकि मैं मुसलमान हूँ। नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अपने मुसलमान होने पर गवाह पेश करो। वह शख़्स हैरत ज़दा रह गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तूने उस अल्वी औरत को जो कुछ कहा था उसे भूल गया ! यह महल उस शैख़ का है जिसके घर में इस वक़्त वह (अल्वी सय्यद) औरत है। रईस बेदार हुआ तो रो रहा था और अपने मुंह पर तमांचे मार रहा था, उसने अपने गुलामों को उस औरत की तलाश में भेजा और ख़ुद भी तलाश में निकला। उसे बताया गया कि वह औरत मजूसी के घर में क़याम पज़ीर है। यह रईस उस मजूसी के पास गया और कहा वह अल्वी औरत कहाँ है ? उसने कहा मेरे घर में है। रईस ने कहा उसे मेरे यहाँ भेज दो। शैख़ ने कहा यह नहीं हो सकता। रईस ने कहा मुझसे यह हज़ार दिरहम व दीनार ले लो और उसे मेरे यहाँ भेज दो। शैख़ ने कहा ब ख़ुदा ऐसा नहीं हो सकता अगरचेह तुम लाख दीनार भी दो। जब रईस ने ज़्यादा इसरार किया तो शैख़ ने उससे कहा जो ख़्वाब तुमने देखा है मैंने भी देखा और जो महल तुमने देखा है वह वाक़ई मेरा है, तुम इस लिये मुझ पर फ़ख़्र कर रहे हो कि तुम मुसलमान हो। ब ख़ुदा वह अल्वी ख़ातून जैसे ही हमारे घर में तशरीफ़ लाईं तो हम सब उनके हाथ पर मुसलमान हो चुके हैं और उनकी बरकतें हमें हासिल हो चुकी हैं। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की तो आपने मुझे फ़रमाया : चूँकि तुमने उस अल्वी ख़ातून की ताज़ीम व तकरीम की है इस लिये यह महल तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये है और तुम जन्नती हो। (बरकाते आले रसूल, स. 266, 267)

ऐ ईमान वालो ! आले रसूल एक सय्यद ज़ादी की ख़िदमत व ताज़ीम करने का सिला व बदला कितना अज़ीम है कि उस शख़्स को दुनिया ही में उसका जन्नती महल दिखा दिया गया और उस शख़्स को जन्नती होने की बशारत भी दे दी गई और ख़ुद सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दीदार भी करा दिया। यह है आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत व ताज़ीम का अज़ीमुश्शान सिला व बदला।

(9) सय्यद की बे अदबी का नुक़सान

सय्यिदी अब्दुल वहाब शअ़रानी फ़रमाते हैं : सय्यद शरीफ़ ने हज़रत ख़त्ताब रहमतुल्लाहे अलैह की ख़ानक़ाह में बयान किया कि काशिफ़ुल बुहिरा ने एक सय्यद साहब को मारा तो उसे उसी रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इस हाल में ज़ियारत हुई कि आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उससे ऐराज फरमा रहे हैं, उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरा क्या गुनाह है ? तो आपने फ़रमाया : तू मुझे मारता है हालांकि मैं क़ियामत के दिन तेरा शफ़ी हूँ। उस शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुझे याद नहीं कि मैंने आपको मारा हो। आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तूने मेरी औलाद को नहीं मारा ? उस शख़्स ने अर्ज किया हाँ, फ़रमाया : तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर लगी है, फिर आपने अपनी कलाई निकाल कर दिखाई जिस पर वर्म था जैसे कि शहद की मक्खी ने डंक मारा हो। हम अल्लाह तआला से आफ़ियत का सवाल करते हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 668)

(10) सय्यद से बलन्द मक़ाम पर बैठना मना है

क़ाज़ी जमालुद्दीन मेहमूद अजमी जो क़ाहिरा के गवर्नर थे। एक दिन सय्यद अब्दुर्रहमान की मजलिस में आए और सय्यद साहब से कहा कि हज़रत मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये उन्होंने कहा जनाब क्या चीज मुआफ़ करूँ ? उन्हों ने कहा कि कल रात मैं क़िला पर गया और बादशाह के सामने बैठा, फिर आप तशरीफ़ लाए और मुझ से बलन्द जगह पर बैठ गए। मैंने अपने दिल में कहा यह बादशाह की मजलिस में मुझ से ऊँचे मक़ाम पर क्यों बैठे हैं ? बस रात को मैं सोया तो मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत हुई तो आप ने मुझ से फ़रमाया ऐ मेहमूद तू उस बात से आर मेहसूस करता है कि मेरी औलाद से नीचे बैठे। यह सुन कर हज़रत सय्यद अब्दुर्रहमान रो पड़े और कहा, जनाब मैं ऐसा कहाँ हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे याद फ़रमाएं यह सुनना था कि तमाम हाज़िरीन भी रो पड़े और सब की आँखें अश्कबार हो गईं। सब ने सय्यद साहब से दुआ की दरख़्वास्त की और वापस आ गए।

(11) बे अमल सय्यद भी वाजिबुत्ताज़ीम हैं

सय्यद मोहम्मद फ़ासी फ़रमाते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा के बाज़ हसनी सादात को ना पसन्द रखता था क्यों कि ब ज़ाहिर उन के अफ़आल सुन्नत के मुख़ालिफ़ थे ख़्वाब में नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया ए फ़लां ! क्या बात है मैं देखता हूँ कि तुम मेरी औलाद से बुग़्ज़ रखते हो, मैं ने अर्ज़ किया ख़ुदा की पनाह या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं तो उन के ख़िलाफ़ सुन्नत अफ़आल को ना पसन्द रखता हूँ, फ़रमाया किया यह फ़िक़ही मस्अला नहीं

है कि ना फ़रमान औलाद नसब से मुलहिक़ होती है ? मैं ने अर्ज किया हाँ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! फ़रमाया यह ना फरमान औलाद है, जब मैं बेदार हुआ तो उन तमाम सादात से जिस से भी मिलता उन की बे हद ताजीम करता।

(बरकाते आले रसूल, स 269)

(12) ताज़ीमे आले रसूल का एक अजीबो ग़रीब वाक़िआ

जुनैद नामी खलीफ़ए बग़दाद का दरबारी पहलवान ममलिकत की नाक का बाल था, वक्त के बड़े बडे सूरमा उस की ताक़त और फ़न का लोहा मानते थे, सारी ममलिकत में जुनैद का कोई मुकाबिल व हरीफ़ नहीं था। खलीफ़ए बग़दाद का दरबार लगा हुआ था, अराकीने सल्तनत अपनी अपनी कुर्सियों पर फ़रोकश थे। जुनैद भी अपने मखसूस लिबास में ज़ीनते दरबार थे कि एक चौबदार ने आकर इत्तिलाअ़ दी।

सेहन के दरवाज़े पर एक ला ग़िर व नीम जां शख्स खड़ा है। शक्ल की परागन्दगी और लिबास की शिकस्तगी से वह एक फ़कीर मालूम होता है। जोअफ़ो नकाहत से क़दम डगमगाते हैं। आज वह शख्स सुबह से बराबर इसरार कर रहा है कि मेरा चेलेन्ज जुनैद तक पहुँचा दो, मैं उस से कुश्ती लडना चाहता हूँ, किला के पास्बान हर चन्द उसे समझाते हैं कि छोटा मुंह बडी बात मत करो, जिस की एक फूंक से तुम उड़ सकते हो, उस से कुश्ती लड़ने का ख्वाब पागल पन है, लेकिन वह बज़िद है कि उस का पैगाम बादशाह तक पहुँचा दिया जाए। खलीफ़ा ने हुक्म दिया उसे हाज़िर किया जाए थोड़ी देर के बाद चोबदार उसे अपने हमराह लिये हुए हाज़िर हुआ, उस के क़दम डगमगा रहे थे चेहरे पर हवाई उड रही थी बड़ी मुश्किल से दरबार में आकर खड़ा हुआ। तुम किया कहना चाहते हो ? वज़ीर ने दरयाफ़्त किया।

जुनैद से कुश्ती लड़ना चाहता हूँ इस अजनबी शख्स ने जवाब दिया।

किया तुम्हें मालूम नहीं है कि जुनैद का नाम सुन कर बड़े बड़े बहादुरों के माथे पर पसीना आ जाता है। सारी रियासत में अब उन का कोई मद्दे मकाबिल नहीं रह गया है। ऐसी मुज़हका खैज बात के लिये इसरार मत करो। उस शख्स ने जवाब में कहा कि जुनैद की शोहरत ही मुझे यहाँ तक खींच कर लाई है। मुझे तो इस्बात व नफ़ी (हां या न) में जवाब चाहिये।

मस्अला बहुत पेचीदा बन गया था, इस लिये ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन के इशारे पर वज़ीर ने अहले दरबार की राए दरयाफ्त की।

सारा नशेबो फ़राज़ समझाने के बाद भी अगर यह बज़िद है तो इस का चेलेन्ज मन्ज़ूर कर लिया जाए। बिल आखिर यह बात हुई कि इस का चेलेन्ज क़ुबूल कर लिया जाए। कुश्ती के मुकाबले के लिये दरबारे शाही से तारीख़ और जगह मुतअय्यन कर दी गई और सारी ममलिकत में उस का ऐलान कर दिया जाए। इत्मीनान रखा जाए, मैं वक़्ते मुकर्ररा पर दंगल में हाज़िर हो जाऊँगा यह कहते हुए अजनबी शख्स दरबार से रुखसत हो गया। सारी ममलिकत

में होने वाले दंगल का तहलका मचा हुआ था। अकसर लोगों की राए थी कि वह ज़रूर आएगा। उसे शातिर और पागल समझना ग़लत है। बहर हाल हवा कुछ ऐसी चल गई थी कि जितने मुंह इतनी बातें, तारीख़ जैसे जैसे क़रीब आती जा रही थी इन्तिज़ारे शौक़ की आंच तेज़ होती जाती थी। अब वह शाम आ गई थी जिस की सुबह को तारीख़ का एक अहम फ़ैसला होने वाला था। आफ़ताब डूबते डूबते कई लाख आदमियों का हुजूम बग़दाद में मन्डला रहा था। जुनेद के लिये आज की रात बहुत पुर असरार हो गई थी, सारी रात बे चेनी में करवटें बदलते गुज़र रही थी।

बग़दाद का सब से वसीअ़ मैदान लाखों तमाशाइयों से खचा खच भर गया था। थोड़ी देर के बाद शाहाना तुज़्को एहतिशाम के साथ बादशाह की सवारी आ रही थी, ख़ुद्दाम व हशम के साथ हज़रत जुनैद भी बादशाह के हमराह तशरीफ़ लाए सब आ चुके थे। अब उस अजनबी शख़्स का इन्तिज़ार था जिस ने चेलेन्ज दे कर सारे इलाक़े में तहलका मचा दिया था।

वक़्ते मुक़र्ररा में अब चन्द ही लम्हे बाक़ी रह गए थे कि वज़ीर ऐलान करने खड़ा हुआ। सारा मजमा गोश बर आवाज़ हो गया। मुंह से पहला लफ़्ज़ ही निकला था कि मजमा के किनारे से एक शख़्स ने आवाज़ दी। ज़रा ठहर जाइये! वह देखिये सामने गर्द उड़ रही है हो सकता है वही अजनबी शख़्स आ रहा हो। चन्द ही लम्हे बाद जब गर्द साफ़ हुई तो देखा गया कि एक नहीफ़ वलाग़र इन्सान पसीने में शराबोर हांपते चला आ रहा है सारा मजमा उस अजनबी शख़्स को देखने के लिये टूट पड़ा। बड़ी मुश्किल से उसे मैदान तक पहुँचाया गया। ज़ाहिरी शक्ल व सूरत देख कर लोगों को सख़्त हैरत थी कि ज़ोअ़फ़ व ना तवानी से ज़मीन पर जिस के क़दम सीधे नहीं पड़ते वह जुनैद जैसे कोह पैकर पहलवान से किया मुक़ाबला कर सकता है।

दंगल का वक़्त हो चुका था, ऐलान होते ही हज़रत जुनैद तैय्यार हो कर अखाड़े में उतर गए। वह अजनबी शख़्स भी कमर कस कर अखाड़े में खड़ा हो गया, लाखों तमाशाइयों के लिये बड़ा ही हैरत अंगेज मन्ज़र था। हज़रत जुनैद ने ख़म ठोंक कर ज़ोर आज़माई के लिये पन्जा बढ़ाया। उस अजनबी शख़्स ने दबी ज़बान से कहा।

ऐ जुनैद! कान क़रीब लाइये मुझे आपसे कुछ कहना है, न जाने इस आवाज़ में क्या सहर था कि सुनते ही हज़रत जुनैद पर एक सक्ता तारी हो गया अचानक फेले हुए हाथ सिमट गए कान क़रीब करते हुए कहा फ़रमाइये।

अजनबी शख़्स की आवाज़ ग्लोगीर हो गई। बड़ी मुश्किल से इतनी बात मुंह से निकल सकी जुनैद में क़ोई पहलवान नहीं हूँ, ज़माने का सताया हुआ एक आले रसूल (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) हूँ सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा का एक छोटा सा कुंबा कई हफ़्तों से जंगल में पड़ा हुआ फ़ाक़ों से नीम जां है। सय्यदानियों के बदन पर कपड़े भी सलामत नहीं हैं कि वह घनी झाड़ियों से बाहर निकल सकें। छोटे बचे भूक

की शिद्दत से बे हाल हो गए हैं हर रोज़ सुबह को यह कह कर शहर आता हूँ कि शाम तक कोई इन्तिज़ाम करके वापस लौटूँगा लेकिन ख़ानदानी ग़ैरत किसी के सामने मुंह नहीं खोलने देती, गिरते पड़ते बड़ी मुश्किल से आज यहाँ पहुँचा हूँ। फ़ातेहे ख़ैबर का ख़ून हाशमी रगों में सूखता जा रहा है। चलने की सकत बाक़ी नहीं है। शर्म से भीक मांगने के लिये हाथ नहीं उठते मैं ने तुम्हें सिर्फ़ इसी उम्मीद पर चेलेन्ज दिया था कि आले रसूल की जो अक़ीदत तुम्हारे दिल में है आज उस की आबरू रख लो।

वादा करता हूँकि कल मैदाने क़ियामत में नाना जान सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कह कर तुम्हारे सर पर फ़तह की दस्तार बन्धवाऊँगा। फ़ातमी चमन की मुरझाई कलियों की उदासी अब देखी नहीं जाती। जुनैद ! आलमगीर शोहरत व एज़ाज़ की सिर्फ़ एक कुरबानी सूखे चेहरों की शादाबी के लिये काफ़ी है। यक़ीन रखो आले रसूल की ख़ाना बदोश क़ाफ़ला की हुरमत व आसूदगी के लिये तुम्हारी इज़्ज़त व नामूस का ईसार कभी राएगां नहीं जाएगा। हमारे ख़ानदान की यह रीत तुम्हें मालूम है कि किसी के एहसान का बदला हम ज़्यादा देर तक क़र्ज़ नहीं रखते।

अजनबी शख़्स यानी एक सय्यद के यह चन्द जुमले नश्तर की तरह हज़रत जुनैद के जिगर में पेवस्त हो गए। पलकें आंसुओं के तूफ़ान से बोझल हो गई। इश्क़ व ईमान का साग़र मौजों के तलातुम से ज़ेरोज़बर होने लगा, आज कौनैन का सरमदी एज़ाज़ सर पर चढ़ कर जुनैद को आवाज़ दे रहा था। आलमगीर शोहरत व नामूस की पामाली के लिये दिल की पेशकश में एक लम्हे की भी ताख़ीर नहीं होती। बड़ी मुश्किल से हज़रत जुनैद ने जज़्बात की तुग़यानी पर क़ाबू हासिल करते हुए कहा।

किशवरे अक़ीदत के ताजदार ! मेरी इज़्ज़त और नामूस का इस से बेहतरीन मसरफ़ और किया हो सकता है कि उसे तुम्हारे क़दमों की उड़ती हुई ख़ाक पर निसार कर दूँ। चमनिस्ताने कुद्स की पज़मुरदा कलियों की शादाबी के लिये अगर मेरे जिगर का ख़ून काम आ सके तो उस का आख़री क़तरह भी तुम्हारे नक़्शे पा में जज़्ब करने के लिये तैय्यार हूँ।

ऐ ख़ुश नसीब कि कल मैदाने हश्र में सरकार अपने नवासों के ज़र ख़रीद ग़ुलामों की क़तार में खड़े होने की इजाज़त मुझे मरहमत फ़रमाएं।

इतना कहने के बाद हज़रत जनैद ख़म ठोंक कर ललकारते हुए आगे बढ़े और अजनबी शख़्स से पन्जा मिला कर गुथ गए। सच मुच कुश्ती लड़ने के अन्दाज़ में थोड़ी देर पेंतरा बदलते रहे। सारा मजमा नतीजे के इन्तिज़ार में साकित ख़ामोश नज़र जमाए देखता रहा। [illegible] बाद हज़रत जुनैद ने बिजली की तेज़ी के साथ एक दाओ चलाया। ऑंखें [illegible] हामियों के नअरहाए तहसीन से मैदान गूंज उठा। हैबत से देखने वालों की [illegible] लेकिन दूसरे ही लम्हे में हज़रत जुनैद चारों शाने चित थे सीने पर सय्यदा

फ़ातिमा का एक नहीफ़ व ना तवां शहज़ादा फ़तह का परचम लहरा रहा था। हज़रत जुनैद की फ़ातिहाना ज़िन्दी का नक़्शा देखने वाली आँखें इस हैरत अंगेज़ नज़ारे की ताब न ला सकीं एक लम्हे के लिये सारे मजमे पर सकते की सी कैफ़ियत तारी हो गई। आँखें फ़टी की फटी रह गईं, हैरत का तिलिस्म टूटते ही मजमे ने नहीफ़ व ना तवां सय्यद को गोद में उठा लिया। मैदान का फ़ातेह अब सरों से गुज़र रहा था और हर तरफ़ से इनआम व इकराम की बरिश हो रही थी। रात होने से पहले पहले एक गुमनाम सय्यद ख़िलअत जोड़े व इनआमात का बेश बहा ज़ख़ीरा (क़ीमती ख़ज़ाना) ले कर जंगल में अपने क़ाफ़ला की तरफ़ लौट चुका था।

हज़रत जुनैद अखाड़े में उसी शान से चित लेटे हुए थे अब किसी को कोई हमदर्दी उन की ज़ात से नहीं रह गई थी। हर शख़्स उन्हें पाए हिक़ारत से ठुकराता और मलामत करता हुआ गुज़र रहा था। उम्र भर मदह व सताइश तारीफ़ का ख़िराज वसूल करने वाला आज ज़हर में बुझे हुए तानों और तौहीन आमेज़ कलेमात से मसरूर व शाद काम (ख़ुश) हो रहा था। हुजूम ख़त्म हो जाने के बाद ख़ुद ही उठे और अपने दौलत ख़ाना (मकान) पर तशरीफ़ ले गए।

रात की ज़ुलफ़ स्याह कमर के नीचे ढल चुकी थी बग़दाद का सारा शहर तारों की ठन्डी छाओं में महवे ख़्वाब सो रहा था। इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हज़रत जुनैद जब अपने बिस्तर पर लेटे तो बार बार कान में यह अल्फ़ाज़ गूंज रहे थे

वादा करता हूँ कि कल मैदाने क़ियामत में नाना जान से कह कर तुम्हारे सर पर फ़तह की दस्तार बन्धाउँगा।

हज़रत जुनैद सोचते हैं क्या सच मुच ऐसा हो सकता है ? क्या मेरी क़िस्मत का सितारा यक बयक इतनी बलन्दी पर पहुँच जाएगा कि सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूरानी हाथों की बरकतें मेरी पेशानी को छू लें। अपनी तरफ़ देखता हूँ तो किसी तरह अपने आपको इस एज़ाज़ (मरतबे व इज़्ज़त) के क़ाबिल नहीं पाता। लेकिन लाडलों की ज़िद भी तो कोई चीज़ है। अगर मैदाने हश्र में शहज़ादे मचल गए तो रहमते आलम को क्यों कर गवारा हो सकेगा कि उन के दिल के नाज़ुक आब गीने पर कोई आंच आ जाए सारे ज़माने में आले रसूल की ज़बान का भरम मशहूर है। गर्दन कट सकती है, दी हुई ज़बान नहीं कट सकती। आख़िर करबला के लालाज़ार की सुर्ख़ी ज़बान ही के भरम से तो आज तक क़ाइम है। नबी ज़ादों का वादा ग़लत नहीं हो सकता। क़ियामत के दिन वह ज़रूर अपने नाना जान तक मेरी बात पहुँचाएंगे ऐ काश आज ही क़ियामत आ जाती, आज ही मेहशर का वह रूह परवर नज़ारा निगाहों के सामने होता।

आह ! अब जब तक ज़िन्दा रहूँगा क़ियामत के लिये एक एक दिन गिनना पड़ेगा। हिसाब व शुमार की गिरफ़्त में न आने वाली यह तवील मुद्दत कैसे कटेगी ?

यह सोचते सोचते हज़रत जुनैद की पुरनम आँखों पर नीन्द का एक हलका सा झोंका

आया और वह ख़ाकदाने गीती से वहुत दूर एक दूसरी दुनिया में पहुँच गए।

अब वग़दाद से गुम्बदे खज़रा का कलस साफ़ दिखाई दे रहा था। वग़दाद की ज़मीन झूमने लगी। वहारों ने फूल बरसाए, सबा ने ख़ुश्बू उड़ाई। सहर ने उजाला किया। रहमतों ने फ़र्श बिछाए और दरख़्शां किरणों से हज़रत जुनैद के सेहन का चप्पा चप्पा मामूर हो गया।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللہ के नग़मों से फ़िज़ा गूंज उठी।

आलमे बे ख़ुदी में हज़रत जुनैद सुल्ताने कौनैन सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमों से लिपट गए। सरकार ने रहमतों के हुजूम में मुस्कुराते हुए फ़रमाया।

जुनैद उठो! क़ियामत से पहले अपने नसीबे की सर फ़राज़ियों का नज़ारा कर लो। नबी ज़ादों के नामूस के लिये शिकस्त की ज़िल्लतों का इनआम क़ियामत तक क़र्ज़ नहीं रखा जाएगा।

सर उठाओ! तुम्हारे लिये फ़तह व करामत की दस्तार ले कर आया हूँ। आज से तुम्हें इरफ़ान व तकर्रुब की सब से ऊंची बिसात पर फ़ाइज़ किया गया। तजल्लियात की बारिश में अपनी नंगी पीठ पर लगे गुबार और चहरे की गर्द का निशान धो डालो। अब तुम्हारे रुख़े ताबा में ख़ाकदाने गीती ही के नहीं आलमे क़ुद्स के रहने वाले भी अपना मुंह देखेंगे। बारगाहे यज़दां (अल्लाह की बारगाह) से गिरोहे औलिया की सरवरी तुम्हें मुबारक हो।

इन कलेमात से सर फ़राज़ फ़रमाने के बाद सरकार मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत जुनैद को सीने से लगा लिया इस आलमे कैफ़ बार में अपने शहज़ादों के जां निसार परवाने को किया क्या अता फ़रमाया। किस को मालूम, जानने वाले बस इतना ही जान सके कि सुबह को जब हज़रत जुनैद की आँख खुली तो पेशानी की मोजों में नूर की किरण लहरा रही थी। आँखों से इश्क़ व इरफ़ान की शराब के पैमाने झलक रहे थे।

कल की शाम जो पाए हिक़ारत से ठुकरा दिया गया था, आज सुबह को उस की राहे गुज़र में पलकें बिछी जा रही थीं, कल की शिकस्त की ज़िल्लतों से बोझल हो कर जो अकेला अपने घर तक आया था आज उस की जुलू में कौनैन की उम्मीदों के कारवां चल रहे थे। एक ही रात में सारा आलम ज़ेरो ज़बर हो गया था।

ख़्वाब की बात बादे सबा ने घर घर पहुँचा दी थी। तुलूए सहर से पहले ही हज़रत जुनैद के दरवाज़े पर दुरवेशों की भीड़ जमा हो गई थी। जूंही बाहर तशरीफ़ लाए ख़िराजे अक़ीदत के लिये हज़ारों गर्दनें झुक गईं ख़लीफ़ा बग़दाद ने अपने सर का ताज उतार कर क़दमों में डाल दिया। सारा शहर हैरत व पशेमानी के आलम में सर झुकाए खड़ा था। मुस्कुराते हुए एक जलवा बार नज़र उठी और हैबत से लरज़ते हुए दिलों को सुकून बख़्श दिया। इतने में आवाज़ आई कि गिरोहे औलिया की सरवरी का एज़ाज़ मुबारक हो। मुंह फेर कर देखा तो वही नहीफ़ व ना तवां आले रसूल फ़र्ते मसर्रत से मुस्कुरा रहा था। सारी फ़ज़ा, सय्यदुत्ताइफ़ा की मुबारकबाद से गूंज उठी थी। रज़ियल्लाहो तआला अन्हो व अरदाहुम अन्ना। मुलख़्ख़सन। (लालाज़ार, स. 197)

ऐ ईमान वालो ! होश संभालो ! और समझो कि किसी सय्यद और आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ातिर चन्द साअत की बे इज़्ज़ती और शर्मिन्दगी को अगर आप ने गवारा कर लिया और आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व ख़िदमत आप बजा लाए तो उस का सिला और बदला दुनिया व आख़िरत में बेहतरीन सर फ़राज़ी और शानदार कामयाबी है कि हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो बादशाह के दरबारी पहलवान थे मगर आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम का सिला था कि सय्येदुत्ताइफ़ा और इमामे औलिया बना दिये गए।

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे ससते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दुरूद शरीफ़ :

(13) इश्क़े आले रसूल से लबरेज़ इमाम अहमद रज़ा का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

इमामे अहले सुन्नत की सवारी के लिये पालिकी दरवाज़े पर लगा दी गई थी। सेकड़ों मुश्ताक़ाने दीद इन्तिज़ार में खड़े थे। वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर अमामा बाँधा और आलिमाना वक़ार के साथ बाहर तशरीफ़ लाए चेहरए अनवर से फ़ज़्लो तक़वा की किरण फूट रही थी। शब बेदारी आँखों से फ़रिश्तों का तक़द्दुस बरस रहा था तिलअते जमाल की दिल कशी से मजमे पर एक रिक़्क़त अंगेज़ बे ख़ुदी का आलम तारी था। गोया परवानों के हुजूम में एक शमा फ़रोज़ां मुस्कुरा रही थी और इन्दलीबाने शौक़ की अन्जुमन में एक गुले रअ़ना खिला हुआ था बड़ी मुश्किल से सवारी तक पहुँचने का मौक़ा मिला।

पाबोसी का सिलसिला ख़त्म होने के बाद कहारों ने पालकी उठाई, आगे पीछे दाहिने बाएं याज़ मन्दों की भीड़ हमराह चल रही थी। कहार पालकी ले कर थोड़ी ही दूर चले थे कि मे अहले सुन्नत ने आवाज़ दी, पालिकी रोक दो।

ुक्म के मुताबिक़ पालकी रख दी गई, हमराह चलने वाला मजमा भी वहीं रुक गया।

ज़्तिराब (परेशानी) की हालत में बाहर तशरीफ़ लाए, कहारों को अपने क़रीब बुलाया और ई हुई आवाज़ में दरयाफ़्त किया आप लोगों में कोई आले रसूले तो नहीं?

अपने जद्दे अअला का वास्ता सच बताइये, मेरे ईमान का ज़ौक़े लतीफ़ तने जानां की ख़ुश्बू सूस कर रहा है। इस सवाल पर अचानक उन में से एक शख़्स के चेहरे का रंग फ़क़ हो गया। नी पर ग़ैरत व पशेमानी की लकीरें उभर आईं। बे नवाई आशुफ़्ता हाली और गर्दिशे याम के हाथों एक पामाल ज़िन्दगी के आसार उस के अंग अंग से आशकार (ज़ाहिर) थे। काफ़ी देर तक ख़ामोश रहने के बाद नज़रें झुकाए दबी ज़बान से कहा।

मज़दूर से काम लिया जाता है ज़ात पात नहीं पूछी जाती।

आह ! आप ने मेरे जद्दे आला का वास्ता दे कर मेरी ज़िन्दी का एक सर बस्ता राज़ फ़ाश कर दिया समझ लीजिये कि मैं उसी चमन का एक मुरझाया हुआ फूल हूँ जिस की ख़ुश्बू से आप की मुशामे जान मुअत्तर है। रगों का ख़ून नहीं बदल सकता।

इस लिये आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम होने से इनकार नहीं है लेकिन अपनी ख़्वाह मुख़्वाह बरबाद ज़िन्दगी को देख कर यह कहते हुए शर्म आती है।

चन्द महीने से आप के इस शहर में आया हूँ कोई हुनर नहीं जानता कि उसे अपना ज़रीए मआश बनाऊँ पालकी उठाने वालों से राबता क़ाइम कर लिया है। हर रोज़ सवेरे उन के झुन्ड में आकर बैठ जाता हूँ और शाम को अपने हिस्से की मज़दूरी ले कर अपने बाल बच्चों में लौट जाता हूँ।

अभी उस की बात तमाम भी न हो पाई थी कि लोगों ने पहली बार तारीख़ का यह हैरत अंगेज़ मन्ज़र देखा कि आलमे इस्लाम के एक मुक़तदर इमाम की दस्तार उस के क़दमों पर रखी हुई थी और वह बरसते हुए आंसुओं के साथ फूट, फूट कर इल्तिजा कर रहा था।

मुअज़्ज़ज़ शहज़ादे ! मेरी गुस्ताख़ी मुआफ़ कर दो, ला इल्मी में यह ख़ता सर ज़द हो गई है हाए ग़ज़ब हो गया जिन के कफ़्शे पा मुबारक पाऊँ की जूतियों का ताज मेरे सरका सब से बड़ा एज़ाज़ है उनके कान्धे पर मैं ने सवारी की।

क़ियामत के दिन अगर कहीं सरकार (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने पूछ लिया कि अहमद रज़ा ! किया मेरे फ़रज़न्दों का दोशे नाज़नीन इसी लिये था कि वह तेरी सवारी का बोझ उठाएं तो मैं क्या जवाब दूँगा। उस वक़्त भरे मैदाने हश्र में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी बड़ी रुसवाई होगी ?

आह ! इस होलनाक तसव्वुर से कलेजा शक़ हुआ जा रहा है देखने वालों का बयान है कि जिस तरह एक आशिक़े दिलगीर रोए हुए महबूब को मनाता है। बिल्कुल उसी अन्दाज़ में वक़्त का एक अज़ीमुल मरतबत इमाम उस की मिन्नत व समाजत करता रहा और लोग फटी आँखों से इश्क़ की नाज़ बरदारियों का यह रिक़्क़त अंगेज़ तमाशा देखते रहे। यहाँ तक कि कई बार ज़बान से मुआफ़ कर देने का इक़रार करा लेने के बाद इमामे अहले सुन्नत ने फिर अपनी एक आख़री इल्तिजाए शौक़ पेश की।

चूँकि राहे इश्क़ में ख़ूने जिगर से ज़्यादा वजाहत व नामूस (मरतबे व इज़्ज़त) की क़ुरबानी अज़ीज़ है। इस लिये ला शऊरी की इस (थपेड़ों) का कफ़्फ़ारा जब ही अदा होगा कि अब तुम पालिकी में बैठो और मैं उसे अपने कान्धे पर उठाऊँ। इस इल्तिजा पर जज़्बात के तलातुम (थपेड़ों) से लोगों के दिल दहल गए। वुफ़ूरे असर से फ़िज़ा में चीख़ें बलन्द हो गईं।

हज़ार इनकार के बावजूद आख़िर सय्यद ज़ादा को इश्क़े जुनूं ख़ैज़ की ज़िद पूरी करनी पड़ी।

आह ! वह मन्ज़र कितना रिक़्क़त अंगेज़ और दिल गुदाज़ था जब अहले सुन्नत का जलीलुल क़द्र इमाम कहारों की क़तार से लग कर अपने इल्मो फ़ज़्ल जुब्बा व दस्तार और

अपनी आलमगीर शोहरत का सारा एज़ाज़ ख़ुश्नोदिये हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये एक गुमनाम मज़दूर के क़दमों पर निसार कर रहा था।

शौकते इश्क़ का यह ईमान अफ़रोज़ नज़ारा देख कर पत्थरों के दिल पिघल गए कदूरतों का ग़ुबार छट गया। ग़फ़लतों की आँख खुल गई और दुश्मनों को भी मान लेना पड़ा कि आले रसूल के साथ जिस के दिल की अक़ीदत व इख़्लास का यह हाल है, ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ उस की वारुफ़तगी का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है। अहले इन्साफ़ को इस हक़ीक़त के ऐतिराफ़ में अब कोई ताम्मुल (ग़ोर व फ़िक्र) नहीं हो सकता कि नज्द से ले कर सहारनपूर तक रसूल के गुस्ताख़ों के ख़िलाफ़ अहमद रज़ा की बिरहमी क़तअ़न (नाराज़गी) हक़ ब जानिब है।

सेहराए इश्क़ के इस रूठे हुए दीवाने को अब कोई नहीं मना सकता वफ़ा पेशा दिल का यह ग़ैज़, (गुस्सा) ईमान का बख़्शा हुआ है। नफ़सानी हेजान की पैदावार नहीं।

(लालाज़ार, स. 150)

है उन के इत्रे बूए गिरेबां से मस्त गुल
गुल से चमन, चमन से सबा, और सबा से हम

इसी लिये तो इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बेकरां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

दूसरा जुमा .... पहला बयान

मौला अली शेरे ख़ुदा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत। (पारा 25, आयत 23, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब यह आयते करीमा नज़िल हुई तो सहाबाए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम

مَنْ قَرَابَتُكَ هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ وَجَبَتْ عَلَيْنَا مَوَدَّتُهُمْ قَالَ عَلِيٌّ وَفَاطِمَةُ وَوَلَدَاهُمَا۔

(ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 7, स. 40, अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, 168)

तर्जमा : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप के क़राबत दार कौन लोग हैं जिन की महब्बत हम पर वाजिब की गई है ? तो फ़रमाया अली व फ़ातिमा और उनके दोनों बेटे। यानी हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन।

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो। हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़राबत दारों में हैं और उन की महब्बत तमाम मोमिनों पर फ़र्ज़ है।

आशिक़े रसूल व फ़िदाए अहले बैते अतहार इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

मुर्तजा शेरे हक़ अशजउल अशजईन
साक़ी साक़िये शीरो शरबत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

और फ़रमाते हैं:

सिदक़ो अदलो करम व हिम्मत में
चारसू शोहरे हैं उन चारों के
बहरे तस्लीम अली मैदां में
सर झुके रहते हैं तलवारों के
कैसे आक़ाओं का बन्दा हूँ रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

ऐ ईमान वालो! हम लोग अहले सुन्नत व जमाअत हैं हम तमाम सहाबए किराम और अहले बैते अतहार की महब्बत व उल्तफ़त को ऐन ईमान और उन की इत्तिबाअ को रज़ाए ख़ुदाए तआला और ख़ुश्नोदिये मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़रीआ जानते हैं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फ़ज़ाइल व महामिद बे शुमार हैं जो इस वक़्त बयान करना मुमकिन नहीं मगर कुछ फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान करता हूँ।

बच्चों में सब से पहले इस्लाम लाए और आप अशरए मुबश्शरह में से हैं जिन के लिये जन्नत का वादा किया गया है।

सय्येदह निसाउल आलमीन ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के शोहर और हस्नैन करीमैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के वालिदे बुज़ुर्गवार हैं।

सादाते किराम और औलादे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सिलसिला अल्लाह तआला ने आप से जारी फ़रमाया। सिलसिलए विलायत व ख़िलाफ़त के मअ़दन व मख़ज़न भी आप ही हैं। जुमला औलिया, अग़वास, अक़्ताब, अब्दाल, आप के फ़्यूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हैं।

ज़मीन से आसमानों तक, अरब व अजम, बहरो बर में आप के फ़ज़्लो कमाल और आप की शुजाअत व बहादुरी का शोहरा आम है।

शाहे मरदां शेरे यज़दां क़ुव्वते परवरदिगार
ला फ़ता इल्ला अली ला सैफ़ इल्ला ज़ुल फ़िक़ार

विलादत: हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ऐलाने नुबुव्वत से दस ग्यारह साल क़ब्ल ख़ानए कअ़बा में पैदा हुए और एक रिवायत में है कि एलाने नुबुव्वत से सात आठ साल पहले पैदा हुए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 112)

नाम व नसब : आप का इस्मे गिरामी अली बिन अबी तालिब, और कुन्नियत अबुल हसन अबू तुराब है। और लक़ब हैदर व मुर्तज़ा है। आप के वालिद अबू तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं। जो हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हक़ीक़ी चचा हैं, इस तरह हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा ज़ाद भाई होते हैं। आप की मां का नाम फ़ातिमा बिन्ते असद है और यह पहली हाशमी ख़ातून हैं जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया और हिजरत फ़रमाई। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 113)

परवरिश : हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ख़ुश नसीबी का बाब इस तरह खुला कि क़हत साली की वजह से कुरैश बहुत परेशान हाल थे। उन्हीं में मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के वालिद अबू तालिब भी थे जो अपनी किब्रसिनी (बुढ़ापा) और कसीरुल अयाली (औलाद ज़्यादा होने) की वजह से सख़्त मआशी दुश्वारियों से दो चार थे। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मशवरा किया और दोनों ने अबू तालिब का बोझ हलका करने के लिये यह तदबीर अपनाई कि जअफ़र बिन अबी तालिब को हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी किफ़ालत में ले लिया और फ़ीरोज़ बख़्त हज़रत अली बिन अबी तालिब-रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सायए आतिफ़त में आ गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की किफ़ालत नबिये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाई। आप ही के सायए करम में परवान चढ़े। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने होश की आँखें खोलीं तो अपने आप को आग़ोशे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में पाया।

यह इज़्ज़ो शरफ़ मशिय्यते रब्बानी ने मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के लिये मुक़द्दर कर दिया था। (इब्ने हश्शाम, जि. 1, स. 81)

कुबूले इस्लाम : आशिक़े अहले बैत हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

असदुल्लाहुल ग़ालिब बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब इस्लाम लाए उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ आठ, दस साल की थी। (तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया)

बड़ों में सब से पहले हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ईमान लाए, औरतों में सब से पहले हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ईमान लाईं। गुलामों में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ईमान लाए। और बच्चों में हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ईमान लाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 114)

मोहम्मद बिन इस्हाक़ बयान करते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आग़ोशे रिसालत में परवरिश पाई थी इस लिये उन की निगाहें इस्लाम की नूरानियत से

मुनव्वर थीं। बेअ़सत के इब्तिदाई अय्याम में आप ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को मसरूफ़े इबादत नमाज़ पढ़ते देखा तो हैरत से दरयाफ्त किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप दोनों क्या कर रहे थे ? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया यह अल्लाह तआला का दीन है जिस को अल्लाह तआला ने अपने लिये पसन्द फ़रमाया है और इसी के लिये अम्बिया को मबऊस फ़रमाया, मैं तुम को भी अल्लाह वाहिद की तरफ़ बुलाता हूँ जो तन्हा मअ़बूद है और उसका कोई शरीक नहीं।

मुसाहिबते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़ितरते सलीम को निखार दिया था एक शब तवक्कुफ़ के बाद बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और दौलते इस्लाम से बहरा मन्द हो गए। इस्लाम से क़ब्ल आप का दामन अरब की जाहिली रुसूम और औसान परस्ती से कभी भी दाग़दार न हुआ।

क़राबते रसूल, सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

(1) हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे आक़ा रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से फ़रमाया :

اَنْتَ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْكَ तुम मुझसे हो और मैं तुम से हूँ। (बुखारी शरीफ़, जि. 1, स. 525)

(2) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلنَّاسُ عَنْ شَجَرٍ شَتّٰی وَاَنَا وَعَلِیٌّ مِنْ شَجَرَةٍ وَّاحِدَةٍ

यानी लोग अलग अलग दरख़्तों से हैं मगर मैं और अली एक ही दरख़्त से हैं।

(अल मोअजमुल औसत लित्तबरानी, जि. 5, स. 89)

(3) हदीस शरीफ़ : اِنَّ عَلِیًّا مِنِّیْ وَاَنَا مِنْهُ وَهُوَ وَلِیُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ

बे शक अली मुझ से हैं और मैं अली से हूँ और अली हर मोमिन के वली हैं। (यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हर मोमिन के मददगार हैं) (तिर्मिज़ी शरीफ़)

(4) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : خَیْرُ اِخْوَتِیْ عَلِیٌّ وَخَیْرُ اَعْمَامِیْ حَمْزَةُ

मेरे बेहतरीन भाई अली हैं और बेहतरीन चचा हमज़ा हैं।

मैं जिस का मौला हूँ अली (रज़ियल्लाहो अन्हो) उस के मौला हैं

(1) عَنْ زَیْدِ بْنِ اَرْقَمَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِیٌّ مَوْلَاهُ

हज़रत ज़ैद बिन अरक़ुम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं जिसका मौला हूँ उस के अली मौला हैं। (तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 564)

(2) हज़रत रिबाह बिन हरस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि एक जमाअत हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास रहबत के मक़ाम पर आई तो उन लोगों ने कहा ऐ हमारे मौला आप पर सलाम हो। तो हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया मैं कैसे तुम्हारा मौला हूँ जब कि तुम लोग अरब क़ौम हो उन्होंने कहा कि हम ने ग़दीरे ख़ुम के मक़ाम पर आक़ाए काएनात सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से सुना है कि: مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَإِنَّ هٰذَا مَوْلَاهُ जिसका मौला मैं हूँ यह यानी अली उस के मौला हैं। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 5, स. 419)

(1) उख़ुव्वते रसूल : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब मदीना मुनव्वरा में अक़्दे मुवाख़ात यानी भाई चारा क़ायम फ़रमाया कि दो, दो सहाबा को भाई भाई बना दिया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रोते हुए आक़ाए कायनात सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम आपने तमाम सहाबा के दरमियान भाई चारा क़ायम किया, एक सहाबी को दूसरे सहाबी का भाई बनाया मगर मुझको किसी का भाई नहीं बनाया, मैं अकेला रह गया हूँ तो आक़ाए कायनात रसूले आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: أَنْتَ أَخِيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ यानी ऐ अली तुम दुनिया व आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो। (तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 564)

(2) ऐ ईमान वालो ! हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा ज़ाद भाई हैं और मदीना मुनव्वरा में अक़्दे मुवाख़ात के वक़्त भी आक़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को फ़रमाया कि अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दुनिया व आख़िरत में मेरा भाई है। लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कभी भी हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम को अपना भाई न कहा बल्कि जब भी प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को याद किया तो भाई कहकर याद न किया बल्कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहकर याद किया मगर आज कल के वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी, प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बड़ा भाई, अपने जैसा बशर कहते भी हैं और लिखते भी हैं। अल्लाह तआला ऐसे गुमराह बे दीन फ़िर्क़ों से महफ़ूज़ रखे और हम जब भी अपने आक़ा रहमत वाले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को याद करें तो या रसूलल्लाह, या नबियल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कह कर याद करें। यही तरीक़ा हज़रते अली और तमाम सहाबए किराम और औलियाए किराम अलैहिमुर्रिज़वान का है। याद रखना अल्लाह तआला के प्यारे अज़मत वाले नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने जैसा

बशर और भाई कहने वाला मोमिन नहीं रह सकता काफ़िर व मुनाफ़िक़ के ज़ुमरे में शुमार होगा। अल्लाह तआला हज़रत मौला अली और तमाम सहाबए किराम अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान के तरीक़े पर चलाए और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह का बा अदब बना कर मौत नसीब फ़रमाए।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मदीना प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अली शिर्क से पाक थे : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में होश संभाला। आँख खुलते ही आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार किया। आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बातें सुनीं और आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आदतें सीखीं। इस लिये बुतों की नजासत और शिर्क की गन्दगी से आपका दामन हमेशा पाक व साफ़ रहा आपने कभी बुत परस्ती नहीं की इस लिये आप का लक़ब कर्रमल्लाहु तआला वजहहु है।

(तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया)

हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद : हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मां फ़ातिमा बिन्ते असद मुअज़्ज़ज़ व शरीफ़ ख़ातून थीं हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की परवरिश व तरबियत में आप ने बड़ी दिल चस्पी ली। हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहो तआला अन्हा हमारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी औलाद पर तरजीह देतीं। हक़ीक़ी मां की तरह सुलूक फ़रमातीं। आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मेरी हक़ीक़ी मां हज़रत आमिना रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के इन्तिक़ाल के बाद यही यानी फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहो तआला अन्हा मेरी मां थीं। (मुस्तदरिक, स. 51)

हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद का इन्तिक़ाल : हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मां हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहो तआला अन्हा का इन्तिक़ाल मदीना तैय्यिबा में हुआ। आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप के कफ़न के लिये अपना पैराहने मुबारक अता फ़रमाया और वह उसी में मलबूस की गई। हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहो तआला अन्हा की क़ब्र खोद कर तैय्यार की गई तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ब्र में उतरे और लेट गए। इस तरह आपकी क़ब्र को मुतबर्रक फ़रमाया और फिर आप को क़ब्र में

दफ़्न किया गया। यह सब कुछ हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद की ख़िदमात के एतिराफ़ में था।

(सियरे आलामुन नबला, जि. 2, स. 87)

हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मक़ाम

(1) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बे शक अल्लाह तआला ने हर नबी की ज़ुर्रियत (यानी नस्ल) उस की सुल्ब (यानी औलाद) से जारी फ़रमाई और मेरी ज़ुर्रियत यानी नस्ल हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सुल्ब (यानी औलाद) से चलेगी। (अल मोअ़जमुल कबीर लित्तबरानी, जि. 3, स. 144, कन्ज़ुल उम्माल, स. 400)

ऐ ईमान वालो ! आज जो पूरी दुनिया में आले नबी मौजूद हैं वह औलादे अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं यानी हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की औलाद की औलाद हैं जिन्हें आले नबी कहा जाता है।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

दुरूद शरीफ़ :

(2) हदीस शरीफ़ : हज़रत ज़ेद बिन अरक़म से रिवायत है कि अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में से बाज़ के घरों के दरवाज़े मस्जिदे नबवी (के सेहन) की तरफ़ खुलते थे। एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उन तमाम दरवाज़ों को बन्द कर दो सिवाए बाबे अली के। रावी कहते हैं कि बाज़ लोगों ने चेह मी गोइयां कीं इस पर सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया, हम्दो सना के बाद फ़रमाया मुझे बाबे अली के सिवा उन तमाम दरवाज़ों को बन्द करने का हुक्म दिया गया है पस तुम में से किसी ने इस बात पर ऐतिराज़ किया है। ख़ुदा की क़सम न मैं किसी चीज़ को खोलता हूँ और न बन्द करता हूँ मगर यह कि मुझे उस चीज़ के करने का हुक्म दिया जाता है पस मैं उस (हुक्मे ख़ुदावन्दी) की इत्तिबाअ़ करता हूँ। (अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 125)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीसे पाक का मतलब यह है कि जब किसी पर ग़ुस्ल वाजिब हो जाए और वह ग़ुस्ल के लिये घर से निकलेगा तो मस्जिदे नबवी में क़दम रखेगा जिस से मस्जिद का अदब बाक़ी नहीं रह पाएगा। ग़ुस्ल वाजिब हो तो सिर्फ़ दो ज़ात ही हैं जो मस्जिद में क़दम रख सकती हैं एक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और दूसरे मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

हदीस शरीफ़ : عن ابي سعيد قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم
لعلي يا علي لا يحل لاحد ان يجنب في هذا المسجد غيري و غيرك

तर्जमा : हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रते अली रज़ियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया : ऐ अली मेरे और तुम्हारे अलावा किसी के लिये जाइज़ नहीं कि इस मस्जिद (नबवी) में हालते जनाबत में जाए। (तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 564, मुसनद अबी मअली, जि. 2, स. 311)

(3) हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को ग़ज़वए तबूक में अपना ख़लीफ़ा बनाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम आपने मुझे औरतों और बच्चों में ख़लीफ़ा बनाया है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि आप उस चीज़ पर राज़ी नहीं कि आप मेरे लिये इस तरह बन जाएं जिस तरह कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़ाइम मुक़ाम थे मगर यह कि मेरे बाद कोई नबी न होगा। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 135, मुस्लिम शरीफ़, स. 187)

(4) हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के चेहरे को देखना इबादत है

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से रिवायत है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बड़ी कसरत से हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के चेहरे को देखते रहते थे। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने उन से इस बारे में पूछा तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लो तआला अन्हो ने फ़रमाया : मैं ने अपने आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के चेहरे को देखना इबादत है
(अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 177)

(5) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के चेहरे की तरफ देखना इबादत है।
(अल मुस्तदरिक हाकिम, स 140, अर्रियाज़ुन्नज़रह, स. 191, कन्ज़ुल उम्माल, स. 158)

ऐ ईमान वालो ! हमारे सरकार उम्मत के ग़म ख़्वार रसूले करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि जो शख़्स अपने मां बाप के चेहरे को महब्बत से देखे तो अल्लाह तआला उस शख़्स को हज्जे मबरूर का सवाब अता फरमाता है। मां बाप के ज़रीए व वसीले से हम इस दुनिया में आए तो अल्लाह तआला ने मां बाप को

औलाद के हक़ में अज़ीम मक़ाम अता फ़रमाया और उन के चेहरे को देखना हज्जे मबरूर का दरजा दिया और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ऐसे मक़बूल व मेहबूब बारगाहे ख़ुदाए तआला व दरबारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जिन के घर से हमें नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिले हैं और ख़ुदाए तआला मिला है यक़ीनन मां बाप से बे शुमार दरजा फ़ज़ीलत हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को हासिल है तो उन के चेहरे को देखना बे शक सवाब है। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की फ़ज़ीलत में एक और हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये जिस से आप हज़रात को मालूम हो जाएगा कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कौन हैं और उन की शान कितनी बलन्द व बाला है।

(6) हदीस शरीफ़ : عَنْ عَائِشَةَ اَنَّهُ قَالَ ذِكْرُ عَلِيٍّ عِبَادَةٌ

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 6, स. 156)

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (हज़रत) अली का ज़िक्र करना इबादत है। अल्लाहु अकबर!

ऐ ईमान वालो! आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने सुना और जितना सुना उस में कमो बेश किये बग़ैर सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान के सामने बयान कर दिया। अगर उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के दिल में हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के खिलाफ़ कोई बुग़्ज़ व इनाद की बात होती तो वह हरगिज़ ऐसा न करतीं, रही बात जंगे जुमल की तो इस के अस्बाब व इलल कुछ और थे, उम्मत को इस में पड़ने की हाजत नहीं वर्ना गुमराही का अन्देशा है, हम अहले सुन्नत हैं तमाम सहाबए किराम व जुमला अज़्वाजे मुतह्हरात से महब्बत, मुअद्दत फ़र्ज़ है और उन की ताज़ीम व तौक़ीर ईमान के लिये लाज़िम व ज़रूरी है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, फ़िदाए अहले बैत इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

उन के मौला की उन पर करोड़ों दुरूद
उन के अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

जिन के दुश्मन पे लअनत है अल्लाह की
उन सब अहले महब्बत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अली बाबे इल्मो हिक्मत हैं

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं :

وَضَعَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ عَلٰى صَدْرِهِ فَقَالَ اَنَا الْمُنْذِرُ ثُمَّ اَوْمَا
اِلٰى مَنْكِبِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ وَقَالَ اَنْتَ الْهَادِيْ الْمُهْتَدِيْنَ مِنْ بَعْدِيْ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सीने पर दस्ते मुबारक रखा और फ़रमाया कि मैं मुन्ज़िर हूँ और फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो के कन्धे पर हाथ रख कर फ़रमाया ऐ अली तू हादी है और मेरे बाद राह पाने वाले तुझ से राह पाएँगे।

यानी विलायत के सिलसिले तुझ से जारी होंगे और उम्मत के औलिया व उलमा तुझ से फ़ैज हासिल करेंगे और क़ियामत तक फ़ैज पहुँचाते रहेंगे।

(2) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ اَنَّهُ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ
وَعَلِيٌّ بَابُهَا فَمَنْ اَرَادَ الْعِلْمَ فَلْيَاْتِ الْبَابَ.

(अल अजमुल कबीर तबरानी, अल मुस्तदिरक लिल हाकिम, जि. 3, स. 126)

तर्जमा : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़म ख्वार नबिये रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैं इल्म का शहर हूँ और अली उस का दरवाज़ा हैं पस जो कोई इल्म का इरादा करे, वह दरवाज़े के पास आए यानी अली के पास आए।

ऐ ईमान वालो ! खूब गौर से सुनो कि हदीस शरीफ का दूसरा हिस्सा जो कोई इल्म का इरादा करे वह दरवाज़े के पास आए यानी जिस शख्स को मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इल्म चाहिये वह अली के दरवाज़े पर आए यानी हज़रत अली के पास आए और जो शख्स हज़रत अली को छोड़ कर इल्म हासिल करना चाहे तो वह शख़्स न इल्म की दौलत पा सकता है और न ही नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलामी की नेअमत से सरफ़राज़ हो सकता है।

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

(3) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَا دَارُ الْحِكْمَةِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا

(तिर्मिज़ी, जि. 5, स. 637, कन्ज़ुल उम्माल, स. 153)

तर्जमा : हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मैं हिक्मत का घर हूँ और अली उसका दरवाज़ा हैं।

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूले आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मेरे इल्म (भेद) का ख़ज़ाना हैं। (कन्ज़ुल उम्माल, स. 153)

(5) हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर सरापा

नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे काजी बनाकर यमन की तरफ़ भेजा, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं कम उम्र, ना तजरबा कार और क़ज़ा जानता नहीं हूँ तो फ़ैसले कैसे करुँगा ?

तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरे सीने पर अपने दस्ते मुबारक मार कर फ़रमाया : या अल्लाह तआला तू अली के दिल को हिदायत के नूर से रौशन कर और अली की ज़बान को इस्तिक़लाल अता फ़रमा। हज़रत अली रजियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की क़सम उस दिन से किसी मुआमले के फ़ैसले करने में मुझे ज़र्रा बराबर भी शुबा न रहा। (मुस्तदरिक, हाकिम, जि. 3, स. 135, तारीखुल खुलफ़ा, स. 66)

ऐ ईमान वालो ! अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ और दस्ते करम का फ़ैज़ मुलाहज़ा फ़रमाइये कि हज़रते अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो अन्हो का सीना इल्मो हिकमत का गन्जीना बन गया। ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने :

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन फ़रमाते हैं कि हम में हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सब से बेहतर फ़ैसला करने वाले थे।

(6) हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ताबई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे ज़माने में : لَمْ يَكُنْ اَحَدٌ مِّنَ الصَّحَابَةِ يَقُوْلُ سَلُوْنِيْ اِلَّا عَلِيًّا

सहाबा में सिवाए हजरत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के कोई यह कहने वाला न था कि जो चाहो मुझसे पूछ लो। (कन्जुल उम्माल, स. 397, अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 125)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के सामने जब हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का ज़िक्र हुआ तो उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने फ़रमाया कि अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से ज़्यादा मसाइले शरइय्या जानने वाला कोई और नहीं है। (अर्रियाज़ुन्नज़रह, स. 255)

(7) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हमको ख़ुतबा दिया और उसमें फ़रमाया कि हम में बड़े क़ाज़ी अली हैं। (इस्तीआब, स. 475, अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 65)

(8) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हु फ़रमाया करते थे कि हज़रत अली की मौजूदगी में कोई शख़्स मस्जिद में फ़तवा न दिया करे। (इस्तीआब, स. 475)

(9) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हु की ख़िदमत में कोई मुश्किल मुक़दमा पेश होता और हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मौजूद न होते तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हु अल्लाह की पनाह मांगा करते थे कि मुक़दमे का फ़ैसला कहीं ग़लत न हो जाए (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 66)

(10) हज़रत अली बाबे मदीनतुल इल्म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जुमा के खुतबा में इरशाद फ़रमाया : سَلُوْنِیْ فَوَاللّٰہِ لَا تَسْأَلُوْنِیْ عَنْ شَیْءٍ یَکُوْنُ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ اِلَّا حَدَّثْتُکُمْ بِہٖ

(खालिसुल एतिकाद, स. 44)

यानी मुझ से पूछो खुदा की क़सम क़ियामत तक होने वाली किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ मगर मैं तुम्हें बताऊँगा।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को जब क़ियामत तक का इल्म अता फ़रमाया है तो अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को कितना इल्म अता फ़रमाया होगा जब हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इल्म का यह आलम है तो प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म का आलम क्या होगा। मगर मानेगा वही जो मोमिन होगा।

निगाहे विलायत : एक दिन हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम एक आदमी की सूरत में हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ हज़रते अली यह बताओ कि इस वक़्त जिब्रईल अलैहिस्सलाम कहाँ हैं ? हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आसमानों की तरफ़ देखा और फ़रमाया इस वक़्त जिब्रईल आसमानों में नहीं हैं। फिर ज़मीन की जानिब नज़र डाल कर मग़रिब की तरफ़ देखा। मशरिक़ की जानिब देखा, शिमाल व जुनूब की तरफ़ नज़र डाली और फ़रमाया इस वक़्त ज़मीन व आसमान के किसी हिस्से में जिब्रईल को नहीं पाता हूँ पस जो इस वक़्त मेरे सामने बैठा है वही जिब्रईल है। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, स. 352)

ऐ ईमान वालो ! निगाहे अली की ताक़त का आलम मुलाहज़ा करो कि पल भर में सारी ज़मीन और आसमान को देख लिया और फ़रमाया कि जो अली के सामने हैं वही जिब्रील हैं। गोया फ़रिश्ता हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की निगाह से छुप नहीं सकता है ! यह हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के निगाह की शान है तो हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे करम का आलम क्या होगा ? क्या कोई उम्मती हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह से छुप सकता है ? हम मस्जिद में हैं तो निगाहे नुबुव्वत देख रही है, हम घर में हैं तो निगाहे नुबुव्वत देख रही है, हम सफ़र व हज़र में हैं तो निगाहे नुबुव्वत देख रही है, तन्हाई में हैं या मजमा में तो निगाहे नुबुव्वत देख रही है, मअ़सियत के आलम में हों या इबादत व बन्दगी कर रहे हों तो निगाहे नुबुव्वत देख रही है। बहर हाल हम किसी भी आलम में हों और आलम की कोई भी चीज़ हो निगाहे नुबुव्वत और नज़रे नुबुव्वत तमाम आलम की तमाम चीज़ें देख रही हैं।

खूब फरमाया आशिक़े मदीना प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

हिजरत : शम्ए नूरे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बुझाने की बे हद कोशिशें की गईं लेकिन ज़ुल्मत कदा दहर में नूरे रहमान चमकता और दमकता ही रहा। हज़ार बन्दिशों के बावजूद इस्लाम फेलता ही चला गया।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दा ज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने शम्ए नुबुव्वत और चिराग़े इस्लाम को गुल कर देने का क़तई फ़ैसला कर लिया। मक्का के मुन्तख़ब शमशीर ज़न नो जवानों की एक बड़ी जमाअत ने रात की तारीकी में काशानए नुबुव्वत का मुहासरा कर लिया। शमशीरें बे नियाम हैं कि आज मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ख़ातिमा कर देंगे। यह फ़ैसला ख़ामोशी के साथ लिया गया था मगर ख़ुदाए अलीम व ख़बीर पर कौनसा राज़ मख़्फ़ी है ? अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के नापाक इरादों पर आगाह कर दिया और मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले जाने का हुक्म दे दिया और हमारे आक़ा नबिये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा से हिजरत का इरादा फ़रमा लिया। जब हमारे सरकार उम्मत के ग़म ख़्वार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हिजरत का मुसम्मम (पक्का) इरादा फ़रमा लिया तो हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हु को बुलाकर फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से हिजरत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना मुनव्वरा जा रहा हूँ और तुम ऐ अली (रज़ियल्लाहो तआला अन्हु) मेरे बिस्तर पर मेरी जगह मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो जाओ तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी, कुरैश की यह अमानतें जो मेरे पास रखी हैं उनके मालिकों को दे देना और तुम भी मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा चले आना।

यह मौक़ा बड़ा ही ख़तरनाक और बहुत ही ख़ौफ़नाक था। हमें मालूम होना चाहिये कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान कितना मज़बूत और अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर किस क़दर एतिमाद व भरोसा था और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम भी था कि कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अदावत व मुख़ालिफ़त में नंगी तलवारें लिये हुए काशानए अक़दस (आपके नूरानी मकान) को घेरे हुए हैं और हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़त्ल के दरपे हैं ऐसी हालत में आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का यह बिस्तर ख़तरे से ख़ाली नहीं है, आज आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का बिस्तर क़त्ल व मौत का बिस्तर भी हो सकता है लेकिन यह सारी बातें जानते हुए भी हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत आराम से बिस्तरे नुबुव्वत पर सोए, इस लिये कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमा दिया था कि ऐ

अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मेरी चादर ओढ़ लो और सो जाओ तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी, अमानतें देकर तुम भी मदीना मुनव्वरा आ जाना। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान व यक़ीन कह रहा था कि अगरचेह दुश्मन नंगी तलवारें लिये खड़े हैं, बिस्तरे नुबुव्वत पर हमला हो सकता है लेकिन हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमा दिया है कि अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) आराम से सो जाओ तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी।

तू कौन है जो मेरे सोने में खलल डाल सकता है और मुझे क़त्ल कर सकता है इस लिये मैं आराम से सोचा रहा और कोई तकलीफ़ भी नहीं हुई। और ज़बान दिल से हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यह ऐलान फ़रमा रहे थे कि दुश्मनाने इस्लाम का मुझे क़त्ल करना तो बहुत बईद अम्र है, हज़रत मलकुल मौत इज़राईल अलैहिस्सलाम भी मौत का परवाना नहीं ला सकते, जब तक मैं इमानतें वापस कर के म दीना मुनव्वरा न पहुँच जाऊँ। इस लिये कि मेरे आक़ा मुख़्तारे कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया है कि इमानतें देकर तुम भी मदीना मुनव्वरा आ जाना। इस लिये मेरे ईमान व यक़ीन है कि मुझे मौत भी नहीं आ सकती जब तक मैं मदीना मुनव्वरा न पहुँछ जाऊँ बे शक व शुबा मेरे हुज़ूर आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान पूरा होकर रहेगा। आसमान फट सकता है, ज़मीन धंस सकती है, चाँद व सूरज का निकलना, डूबना बन्द हो सकता है, निज़ामे आलम बदल सकता है लेकिन हमारे सरकार साहिबे इख़्तियार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान नहीं बदल सकता।

इस लिये कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान अल्लाह तआला का फ़रमान है। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बान पर हक़ तआला बोलता है।

आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

वह दहन जिस की हर बात वहिये ख़ुदा
चश्मए इल्मो हिकमत पे लाखों सलाम

हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बिस्तरे मुबारक पर हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हु रात भर आराम से सोते रहे सुबह उठ कर हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हु ने लोगों की अमानतें उन के मालिकों के हवाले किया और तीन दिन मक्का शरीफ़ में रहे, अमानतों को अदा करने के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं: मैं भी मदीना मुनव्वरा चला आया। हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे मैं भी उसी मकान में ठहर गया।

महब्बते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

(1) अली की महब्बत नबी की महब्बत है : ऐ ईमान वालो ! हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरए अनवर का देखना इबादत, हज़रत अली का ज़िक्र भी इबादत, आक़ाए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैं अली से हूँ और अली मुझ से हैं, मैं जिस का मौला हूँ अली उस के मौला हैं।

जो शख़्स मक़ामे अली को नहीं पहचानता वह शख़्स मक़ामे नबी को नहीं पहचान सकता। जिस शख़्स को फ़ैज़े अली न मिले वह शख़्स फ़ैज़े नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं पा सकता, जिस शख़्स को निस्बते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हासिल न हुई वह शख़्स निस्बते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हासिल नहीं कर सकते। जो शख़्स क़ुरबते अली ना पा सका वह शख़्स क़ुरबते नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं पा सकता। वह शख़्स हुब्बे अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बाग़ी है वह शख़्स हुब्बे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दुश्मन है वह शख़्स हुब्बे ख़ुदाए तआला का दुश्मन है।

हदीस : (1) हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यौमे ग़दीरे ख़ुम के मौक़े पर ख़ुतबा फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ अली उसके वली हैं और इरशाद फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَّالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرْ مَنْ نَصَرَهُ وَاَعِنْ مَنْ اَعَانَهُ.

यानी ऐ अल्लाह तआला तू उससे महब्बत फ़रमा जिसने अली से महब्बत की और उससे अदावत फ़रमा जिसने अली से अदावत की, और तू उसकी मदद कर जिसने अली की मदद की और तू उसकी इआनत फ़रमा जिसने अली की इआनत की।

(मोअजमुल कबीर लित्तबरानी, जि. 4, स. 17)

हदीस : (2) हज़रत अबू तुफ़ैल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे सरकार कुल आलम के मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुतबा पढ़ा जिसको वहाँ खड़े हुए तीस आदमियों ने सुना और अबू नुऐम बयान फ़रमाते हैं कि कसीर तादाद में लोग जमा थे और सब ने गवाही दी कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते नहीं कि मैं मोमिनीन की जानों का मालिक हूँ और उनकी जानों से भी ज़्यादा क़रीब हूँ। उन लोगों ने कहा हाँ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिसका मैं वली हूँ उसका वली अली हैं। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) और फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَّالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ.

ऐ अल्लाह तू उससे महब्बत फ़रमा जो अली से महब्बत रखता है और तू उसको दुश्मन जान जो अली से दुश्मनी रखे। (मुस्नद अहमद बिन हंबल, जि. 4, स. 370)

हदीस : (3) हजरत अम्मार बिन यासिर से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर ईमान लाया और मेरी तस्दीक़ की, मैं उसको वसियत करता हूँ कि वह अली की विलायत को माने, जिसने अली की विलायत को माना उसने मेरी विलायत को माना और फ़रमाया :
وَمَنْ تَوَلَّانِي فَقَدْ تَوَلَّى اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَنْ اَحَبَّهُ فَقَدْ اَحَبَّنِي और जिसने मेरी विलायत को माना उसने अल्लाह तआला की विलायत को माना, जिसने अली से महब्बत की उसने मुझसे महब्बत की। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 1, स. 119)

हदीस : (4) हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया ऐ अली तू दुनिया में भी सय्यद है और आख़िरत में भी सय्यद है, जो तेरा दोस्त है वह मेरा दोस्त है और जो मेरा दोस्त है वह अल्लाह तआला का दोस्त है और जो तेरा दुश्मन है वह मेरा दुश्मन है और जो मेरा दुश्मन है वह अल्लाह तआला का दुश्मन है और फ़रमाया : وَالْوَيْلُ لِمَنْ اَبْغَضَكَ بَعْدِيْ.
और बरबादी है उस शख़्स के लिये जो मेरे बाद तुझसे बुग़्ज़ रखे।

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 128)

हदीस : (5) हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : وَاِنَّهُ مِنِّيْ وَاَنَا مِنْهُ وَهُوَ وَلِيُّكُمْ بَعْدِيْ
बे शक अली मुझसे हैं और मैं अली से हूँ और मेरे बाद अली तुम्हारा वली है।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 5, स. 356)

हदीस : (6) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अरब के सरदार को मेरे पास बुलाओ (यानी हज़रत अली को) हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या आप अरब के सरदार नहीं हैं ? तो आपने फ़रमाया : اَنَا سَيِّدُ وُلْدِ اٰدَمَ وَعَلِيٌّ سَيِّدُ الْعَرَبِ
मैं औलादे आदम का सरदार हूँ और अली अरब के सरदार हैं।

(मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 102, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 11, स. 619)

हदीस : (7) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :
قَالَ كُنَّا نَعْرِفُ الْمُنَافِقِيْنَ بِبُغْضِهِمْ عَلِيًّا.
हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को पहचान लेते थे हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बुग़्ज़ की वजह से। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हदीस : (8) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि मैंने अपने महबूब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ سَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ سَبَّنِيْ.
जिसने अली को गाली दी उसने मुझको गाली दी।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 6, स. 323, हाकिम)

हदीस : (9) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : مُحِبُّكَ مُحِبِّيْ مُبْغِضُكَ مُبْغِضِيْ

अली तुझसे महब्बत करने वाला मेरा मुहिब्ब है और तुझ से बुग़्ज़ रखने वाला मुझसे बुग़्ज़ रखने वाला है। (अल मोअजमुल कबीर, जि. 6, स. 239)

हदीस : (10) हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बेहतरीन भाई अली हैं और बेहतरीन चचा हमज़ा हैं। (देलमी)

हदीस : (11) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़म ख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अली से मुनाफ़िक़ महब्बत नहीं करता और मोमिन अली से बुग़्ज़ व अदावत नहीं रखता। (तिर्मिज़ी शरीफ)

हदीस : (12) हज़रत असमा बिन्ते उमैस से रिवायत है कि बे शक हमारे हुज़ूर नबिये रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ वही की गई इस हाल में कि आपका सरे अक़दस हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की गोद में था। (यह वाक़िआ मक़ामे सहबा का है)

पस हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े अस्र अदा न फ़रमाई यहाँ तक कि सूरज डूब गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया: ऐ अली ! क्या तुमने नमाज़ अदा नहीं की ? अर्ज़ किया नहीं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! बे शक अली तेरी और तेरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इताअत में था, पस सूरज को उस पर लौटा दे। हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने सूरज को गुरूब होते हुए देखा, फिर मैंने सूरज को गुरूब होने के बाद तुलूअ होते हुए देखा। (मुशकिलुल आसार, जि. 4, स. 388)

सूरज को पलटाया : हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये सूरज पलट आया यह वाक़िआ बहुत मशहूर है जो अस्र के वक़्त मदीना मुनव्वरा के क़रीब मक़ामे सहबा में रूनुमा हुआ। हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नमाज़े अस्र अदा फ़रमा ली थी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े अस्र अदा नहीं की थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़ानुए पाक पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपना सरे अनवर रख कर आराम फ़रमा रहे थे।

ज़मीन पर अर्शे आज़म के निशां मालूम होते हैं
अली की गोद में दोनों जहाँ मालूम होते हैं

सूरज गुरूब होता जा रहा था। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कभी डूबते हुए सूरज को देखते थे और कभी अपने आक़ा जाने ईमान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए वद्दुहा की जानिब देखते थे। कभी ख़याल फ़रमाते कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बेदार करके नमाज़े अस्र अदा कर लूँ

फिर खयाल आता कि मेहबूबे खुदा जाने ईमान के आराम में खलल आ जाएगा, क्या करूँ अगर जगाता हूँ तो अल्लाह तआला के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आराम जाता है और अगर नहीं जगाता हूँ तो अल्लाह तआला का फ़र्ज़ जाता है और नमाज भी अस्र की है जिस के मुतअल्लिक़ कुरआने मजीद का इरशादे पाक है

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى

(पारा, 2, रुकू 15)

मुहाफ़िज़त करो तमाम नमाज़ों की खास कर बीच वाली नमाज़ (यानी अस्र की नमाज़) कभी डूबते हुए सूरज को देखते हैं और कभी चेहरए वद्दुहा की तरफ़। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हो इस फ़ैसले पर पहुँचते हैं कि नमाजें क़ज़ा होंगी तो अदा हो जाएँगी और महब्बत क़ज़ा हो तो कब अदा हो।

नमाजें गर क़ज़ा हों फिर अदा हों
निगाहों की क़ज़ाएं कब अदा हों

सूरज गुरूब हो गया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़े अस्र बाक़ी है। अपने प्यारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत की ख़ातिर जान बूझ कर नमाज़ को क़ज़ा होने दिया, लेकिन नमाज़ के क़ज़ा होने पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रो पड़े, आँख से आंसुओं के क़तरें चहरए मेहबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर मोती बन कर गिरे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेदार हुए देखा, अली रज़ियल्लाहु अन्हु रो रहे हैं। प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَا يُبْكِيْكَ يَا عَلِيُّ

ऐ अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुझे किस चीज़ ने रुलाया है ? अर्ज़ किया मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नमाज़े अस्र पढ़ ली थी और मैं ने नमाज़े अस्र अदा नहीं की थी। सूरज गुरूब हो गया है और मेरी नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुआ की। ऐ अल्लाह तआला अली तेरे और तेरे मेहबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की फ़रमांबरदारी में थे। ऐ अल्लाह तआला अली के लिये सूरज को लौटा दे। दस्ते मुबारक उठा और डूबे हुए सूरज की तरफ़ उंगली का इशारा फ़रमाया : तो डूबा हुआ सूरज वापस निकल आया।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरी मर्ज़ी पा गया सूरज फिरा उलटे क़दम
तेरी उंगली उठ गई मेह का कलेजा चिर गया

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े अस्र अदा फ़रमाई इस के बाद सूरज गुरूब हुआ।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ जैसी आला व अफ़ज़ल

इबादत को अपने आक़ा मेहबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हों के आराम पर कुरबान करके क़ियामत तक के लोगों को यह दर्स दिया है कि ऐक जानिब प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हूँ और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की इबादत नमाज़ हो तो नमाज़ की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को नहीं छोड़ा जा सकता और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ातिर नमाज़ को छोडा जा सकता है यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नमाज़ को कुरबान किया जा सकता है और हज़रत अली सर चश्मए विलायत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी नमाज़े अस्र को अपने प्यारे नबी पर कुरबान कर दिया और दुनिया को बता दिया कि :

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़रोअ़ है
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

मौला अली ने वारी तेरी नीन्द पर नमाज़
वह भी नमाज़े अस्र जो आला ख़तर की है

हज़रात ! दूसरी बात यह बताना है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मोहताज व मजबूर नहीं हैं बल्कि उनके मौला ने उनको बे हिसाब इख़्तियारात और तसर्रुफ़ात का मालिक बनाया है और रही बात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मालिक व मुख़्तार मानने और न मानने की तो ईमान वाले अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मालिको मुख़्तार मानते हैं और जो लोग बे ईमान हैं वह नहीं मानते।

आशिके मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

सूरज उलटे पांव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नजदी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की

हदीस 13 : हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ख़ुद बयान फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अली तुम्हारी हालत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी है कि यहूदियों ने उनसे यहाँ तक दुश्मनी की कि उनकी वालिदा हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाई और नसारा ने उनसे मुहब्बत की तो इस क़दर हद से बढ़ गए कि उनको अल्लाह या अल्लाह का बेटा कह दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! याद रखो ! मेरे बारे में भी दो जमाअत गुमराह होकर हलाक होगी एक मेरी महब्बत में हद से तजावुज करेगी और मेरी ज़ात में उन बातों को मन्सूब करेगी जो मुझमें नहीं है और दूसरा गिरोह इस क़दर बुग़्ज़ व इनाद रखेगा कि मुझ पर बोहतान लगाएगा। (मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 1, स. 160, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

बेशक दोनों गिरोह गुमराह होकर हलाक हुए एक को खारजी और दूसरे को राफ़जी कहते हैं।

राफ़जी और खारजी : यह दोनों फ़िर्के जहन्नमी हैं। खारजी फ़िर्का हजरत अली शेरे खुदा रजियल्लाहु तआला अन्हु के बुग़्जो इनाद की वजह से ईमान से खारिज होकर जहन्नम का ईंधन बना।

और राफ़जी (शिआ) फ़िरका हजरत अली शेरे खुदा रजियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत में इतना आगे चला गया (जो झूटी महब्बत है)।

हमारे सरकार प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर इल्ज़ाम लगाया और हजरत अबू बक्र, हजरत उमर फ़ारूके आज़म, हजरत उस्माने गनी, उम्मुल मोमिनीन हजरत आएशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अन्हा और दीगर सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की शान में तबर्रा बकना यानी उनको गालियाँ देना, उन पर तरह तरह के बोहतान लगाना यही मजहब है राफ़जी और शिआ का। इस वजह से राफ़जी, शिआ हज़रात भी ईमान से निकल गए और इस्लाम से खारिज हो गए और जहन्नम को अपना ठिकाना बना लिया।

राफ़ज़ियों का इल्ज़ाम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! जिसका मैं मौला हूँ अली उसके मौला हैं। ऐ अल्लाह उससे महब्बत फ़रमा जो अली से महब्बत करे और उसको दुश्मन जान जो अली को दुश्मन जाने। इस वाकिआ के बाद हज़रत अली, हजरत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मिले तो हज़रत उमर फ़ारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ इब्ने अबी तालिब तुम सुब्हो शाम खुश हो और तुम्हें हर मोमिन मर्द और मोमिना औरत का मौला व मददगार होना मुबारक हो। (अहमद, मिश्कात, सफ़ा 525)

राफ़ज़ी हजरात इस हदीस और इस तरह की दूसरी हदीसों से हज़रत अली शेरे खुदा रजियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफ़त बिला फ़स्ल साबित करना चाहते हैं और अजीबो गरीब गुमराही व बे ईमान की बातें करते हैं, यहाँ तक कहते हैं कि जिब्रईल फ़रिश्ते ने बार बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा कि आप हजरत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफ़त व विलायत का ऐलान कीजिये मगर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम डरते थे, इस वजह से ऐलान नहीं करते थे। और दूसरा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अन्देशा था कि लोग मुनाफ़िक़ हैं वह मानेंगे नहीं। (मआज़ल्लाहे तआला)

यह जहन्नमी फ़िर्क़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की जानिब इशारा कर रहा है कि वह दोनों मुनाफ़िक़ थे।

मआज़ल्लाहि तआला। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सहाबियत कुरआने करीम से साबित है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुनाफ़िक़ कहना कुरआन का इनकार है और कुरआन का इनकार सरीह कुफ्र है। लिहाज़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हु को मुनाफ़िक़ कहने वाला बिला शक व शुबह काफ़िर है और यह कहना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दीगर सहाबए किराम को मुनाफ़िक़ कहा यह सरासर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर इल्ज़ाम है, तोहमत है और प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर बोहतान लगाने वाला हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकता यक़ीनन वह शख़्स काफ़िर व मुरतद है। इसी लिये राफ़ज़ी, शिआ काफ़िर व मुरतद हैं और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ सहाबा तुम्हारे ईमान को तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाए और मेरे अबू बक्र के ईमान को एक पलड़े में तो अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के ईमान का पलड़ा वज़न दार होगा और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान है कि उमर से शैतान दूर भागता है, उमर की ज़बान पर हक़ बोलता है, उमर के रास्ते पर शैतान नहीं आता। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और दूसरी हदीस की मुस्तनद किताबों में बेशुमार हदीसें मौजूद हैं जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी और हज़रत आएशा सिद्दीक़ा की शान का ख़ुतबा दे रही है।

और उनकी शान व अज़मत को समझने और पहचानने के लिये यह काफ़ी है कि हर जुमा के ख़ुतबे में अल्लाह तआला और उसके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाम के बाद इन दोनों मुबारक हंस्तियों का नाम लिया जाता है, क्या उनकी शान व अज़मत को समझने के लिये यह काफ़ी नहीं है। और बादे विसाल भी आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इन दोनों हंस्तियों को अपने पहलू में सुला रखा है, जब ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इनको चाहा है तो हर मुसलमान को उन्हें चाहना चाहिये और उन पर अपना दिल व जान कुरबान करना चाहिये।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तिफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

वह उमर जिनके अअदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुमको जुन्नूरैन जोड़ा नूर का

हज़रात ! राफ़ज़ियों की बकवास कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ग़दीरे ख़ुम के मौके पर ऐलान फ़रमाया मन कुन्तु मौला हु वाली हदीस तो अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त का ऐलान था कि मेरे बाद अली ख़लीफ़ा होंगे। कितना खुला झूट और फ़रेब है और झूटी बात नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब मन्सूब करना मुनाफ़िक़ व काफ़िर की पहचान है।

कौले अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु : इब्ने असाकर ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब बसरा तशरीफ़ लाए तो दो सहाबी ने आपसे पूछा कि हमें बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आपसे वादा फ़रमाया था कि मेरे बाद तुम ख़लीफ़ा होगे तो यह बात कहाँ तक सच है ? इस लिये कि आपसे ज़्यादा इस मुआमले में सही बात और कौन बता सकता है। तो हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यह बात ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझसे ख़िलाफ़त के मुआमले में वादा फ़रमाया था। जब मैं ने सबसे पहले आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नुबुव्वत की तस्दीक़ की तो अब मैं ग़लत बात आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ मन्सूब नहीं कर सकता। अगर हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझसे ख़िलाफ़त का वादा किया होता तो मैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मिम्बर पर खड़े होने नहीं देता। यह तो सब लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अचानक किसी ने क़त्ल नहीं किया और न आपका यकायक विसाल हो गया बल्कि कई दिन तक आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बीमार रहे और जब आपकी बीमारी ने ज़ोर पकड़ा और मुअज़्ज़िन ने आपको नमाज़ के लिये बुलाया तो आपने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपनी जगह पर नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाया और मुशाहदा फ़रमाते रहे। इसी तरह तीन बार फ़रमाया कि मेरी जगह पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ पढ़ाने के लिये कहो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम समझ गए थे कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अपनी जगह पर नमाज़ की इमामत का हुक्म देने का मतलब था कि मेरे बाद मेरी जगह पर मुसलमानों के ख़लीफ़ा और इमाम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु होंगे। जब हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हो गया तो हमने

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बेअत कर ली और उनको अपना ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सच्ची बात यही है कि वह उसके अहल भी थे। इसी लिये किसी ने भी आपकी ख़िलाफ़त से इनकार नहीं किया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया और किसी ने भी हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के बारे में ज़र्रा बराबर भी रू गरदानी (मुख़ालेफ़त) नहीं की और मैंने भी आपकी इताअत क़ुबूल कर ली और जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आपको यह ख़ौफ़ हुआ कि वह ऐसे शख़्स को न ख़लीफ़ा बना दें जिसका जवाब क़यामत के दिन उनको देना पड़े। इस लिये हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी औलाद को भी ख़िलाफ़त के लिये नाम ज़द नहीं फ़रमाया बल्कि आपने ख़िलाफ़त का मुआमला सहाबा के सुपुर्द कर दिया और सब ने मशवरा करने के बाद हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर दिया। मैंने भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली और उनको ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इताअत क़ुबूल कर ली, उनके हुक़ूक़ अदा किये उनके साथ जंगें लड़ीं और उन्होंने जो दिया उसको ख़ुशी ख़ुशी क़ुबूल किया

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 121)

ऐ ईमान वालो! सर चश्मए विलायत अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस वाज़ेह बयान से ज़ाहिर हो गया कि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कोई ऐसा वादा नहीं फ़रमाया था जो ख़िलाफ़त से तअल्लुक़ रखता हो। लिहाज़ा राफ़ज़ी हज़रात या जो लोग भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त बिला फ़स्ल के बारे में जो हदीसें पेश करते हैं वह सब मनघड़त हैं और इस तरह की बात करके वह लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जानिब झूटी बातों को मन्सूब करते हैं। अल्लाह तआला ऐसे गुमराह फ़िर्क़ा यानी राफ़ज़ियों के शर व फ़साद से मेहफ़ूज़ रखे और चारों ख़ुलफ़ाए किराम से सच्ची महब्बत और उनकी गुलामी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

सिद्दीक़ व उमर की महब्बत अली के साथ : तबरानी ने इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मैं सय्यदा फ़ातिमा

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का निकाह (सय्येदुस्सादात) अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के साथ कर दूँ।

प्यारे ईमान वाले भाइयो ! बहुत ग़ौर से सुनिये ! एक दिन की बात है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक जगह तशरीफ़ रखते थे, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर और हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से फ़रमाया कि चलो हम सब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चलते हैं और उनको मशवरा देंगे कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ करें कि सय्येदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का रिश्ता अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ कर दें। अगर शादी के इख़राजात का मस्अला आएगा तो हमारे माल हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये हाज़िर हैं। हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, ऐ अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह तआला आपको हमेशा अच्छे कामों की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाता है। उठो अल्लाह तआला के करम व बरकत पर तवक्कुल करते हुए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चलते हैं। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं तीनों हज़रात, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तलाश में मस्जिद से बाहर निकले, घर में मालूम किया तो वहाँ न पाया। आप अपने ऊँट के ज़रीए पानी निकालकर एक अन्सारी का बाग़ सेराब करने गए हुए थे, यह तीनों हज़रात उस बाग़ की तरफ़ रवाना हो गए। जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन हज़रात को आते हुए देखा तो पूछा कि आप हज़रात कैसे तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ख़ैर व ख़ूबी की कोई ख़सलत नहीं जिसमें आपको सबक़त व फ़ज़ीलत हासिल न हो, सरदाराने क़ुरैश ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का रिश्ता तलब किया लेकिन कामियाब नहीं हुए, आप इस सआदत के हुसूल के लिये कोशिश करें, मुझे पूरी उम्मीद है कि अल्लाह तआला और उसका प्यारा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस रिश्ते को आपके लिये रोके हुए हैं। यह सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आँखों में आंसू उमड आए और फ़रमाया :

ऐ अबू बक्र ! आपने मेरे पुर सुकून जज़्बात में हेजान बरपा कर दिया और एक ख़्वाबीदा तमन्ना को बेदार कर दिया है, मैं तहेदिल से इस सआदत के हुसूल का मुतमन्नी हूँ लेकिन मुफ़्लिसी और तंग दस्ती के बाइस इस ख़्वाहिश के इज़्हार की जुरअत नहीं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ अली ऐसा मत कहो, अल्लाह तआला और उसके मेहबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नज़दीक दुनिया और माफ़ीहा की क़द्र व मन्ज़िलत एक ज़र्रा के बराबर भी नहीं।

चुनाँचे इन हज़रात के मशवरे और हौसला अफ़ज़ाई से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुए और अपना पैग़ाम पेश किया और शरफ़े क़ुबूलियत से बा रियाब हुए। हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मेरी ख़ुशी की कोई इन्तिहा न रही।

जल्दी से बाहर आया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुन्तज़िर पाया, उन्होंने पूछा क्या हुआ? मैंने जब यह ख़ुशख़बरी उन्हें सुनाई तो उनको बे पनाह मसरूर व ख़ुश पाया और सब मस्जिद में आ गए। (कश्कुल गुम्मह, जि. 1, स. 470)

ऐ ईमान वालो ! इस वाक़िआ को सुनने के बाद यक़ीनन आप हज़रात इस नतीजे पर पहुँचे होंगे कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के दिल में हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये किस क़दर महब्बत थी कि सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शादी सय्यिदा फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ तय हुई। उसमें अल्लाह तआला और उसके मेहबूब रसूल की मर्ज़ी के साथ उन दोनों बुज़ुर्गों की शादी का नेक मशवरा भी शामिल था। अच्छे काम का मशवरा दोस्त ही अपने दोस्त को देता है।

महब्बत से लबरेज़ वाक़िआ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ुल कुस्सा जाने के लिये पा बा रिकाब थे जिसमें काफ़ी ख़तरा था। अमीरुल मोमिनीन की जान के नुक़सान का डर था, इब्ने उमर बयान करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ुल कुस्सा जाने के लिये तैय्यार हुए और अपनी सवारी पर बैठ गए तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी सवारी का महार पकड़ लिया और कहा ऐ ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप कहाँ जा रहे हैं ? मैं आपसे वही कहता हूँ जो जंगे उहद के मौक़े पर हमारे सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया था कि अपनी तलवार न्याम में रखो और हम सबको अपनी दायमी जुदाई का सदमा न दो और मदीना वापस जाओ। अल्लाह तआला की क़सम ! अगर आपको कोई नुक़सान पहुँचा तो इस्लाम का शीराज़ा हमेशा के लिये बिखर जाएगा। चुनाँचे हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इसरार पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वापस हो गए। (इब्ने कसीर, जि. 6, स. 314)

ऐ ईमान वालो ! महब्बत से लबरेज़ इस वाक़िआ को बग़ौर सुनिये कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मेहबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किस क़दर महब्बत व उल्फ़त थी कि ख़तरा की जगह जहाँ जान जाने का अन्देशा था हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सवारी का लगाम पकड़ लिया कि आप हरगिज़ उस ख़तरे की जगह न जाएं, इस लिये कि आपकी ज़ात से इस्लाम की सारी बहारें वाबस्ता हैं मगर राफ़ज़ियों का बुरा हो जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

की शान में गालियाँ बकते हैं। अल्लाह तआला उस जहन्नमी फ़िर्क़ा यानी राफ़ज़ी मज़हब से दूर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाबे जन्नत पर होंगे

एक मरतबा का वाक़िआ है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुबारकबाद पेश की, कि ऐ अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपको मुबारक हो। तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि आपने किस बात पर मुझे मुबारकबाद दी है तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने अपने प्यारे नबी मालिके जन्नत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह कहते हुए सुना है कि अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जन्नत के दरवाज़े पर होंगे और वह जिसको इजाज़त देंगे वही जन्नत में दाख़िल होगा। तो हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) आपको भी मुबारक हो तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया कि आप मुझे किस बात की वजह से मुबारकबाद दे रहे हैं ? तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के हुक्म से हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया है कि अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम जिसको इजाज़त दोगे वही जन्नत में दाख़िल होगा और उसको जन्नत में न जाने देना जो अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर से अदावत रखता हो। लेकिन ऐ अली ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम उसको जन्नत में जाने की इजाज़त देना जो शख़्स मेरे रफ़ीक़ अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से महब्बत करता हो तो इस बात पर मैंने आपको मुबारक बाद पेश किया है। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 2)

गोया हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जन्नत में दाख़ले के लिये प्रूफ़ कार्ड के तौर पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत देखेंगे तो अब राफ़ज़ियों का क्या हश्र होगा जिनके पास जन्नत में दाख़ले का प्रूफ़ कार्ड यानी दामने अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नहीं है और हम अहले सुन्नत बद हैं, गुनाहगार हैं लेकिन दामने सिद्दीक़ो उमर और उस्मानो हैदर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर नाज़ां हैं। ख़ूब फ़रमाया मेरे आक़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं नाओ है इतरत रसूलुल्लाह की
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम)

दुरूद शरीफ़..........

महब्बते उमर, अली के साथ रज़ियल्लाहु अन्हुमा

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में दो दिहाती लड़ते हुए हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए, आपने हज़रत सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : इन दोनों के दरमियान फ़ैसला कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़ैसला कर दिया तो उनमें से एक दिहाती ने कहा कि यह यानी अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हमारे दरमियान क्या फ़ैसला करेगा यानी उस शख़्स ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में गुस्ताख़ी की तो यह सुनकर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जलाल में आ गए और उस पर टूट पड़े और उस गुस्ताख़ का गिरेबान पकड़कर फ़रमाया तू जानता है ? यह तेरे और हर मोमिन के मौला व मददगार हैं और जिसके यह (हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मौला नहीं वह मोमिन नहीं।

(अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 177)

हज़रत अली पर हज़रत उमर का एतिमाद

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एतिमाद का यह आलम था कि जब मुल्के शाम का सफ़र आपके लिये ज़रूरी हो गया तो आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मदीना मुनव्वरा में अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया और वापसी तक तमाम उमूरे ख़िलाफ़त हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अन्जाम देते रहे। (इब्ने ख़ुलदून, जि. 4, स. 214)

हज़रत अली व हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की आपस में महब्बत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हो के बाद जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हुए तो आम सहाबा की तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत की और पूरे अहदे उस्मानी में अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ते रहे। फ़ितना व शोरिश के अय्याम में जब मिसरियों का एक वफ़्द आपसे मिला और उसने यह कहा कि हम उस्माने ग़नी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की इमारत (हुकूमत) से बेज़ार हैं आप हमसे बैअत ले लीजिये। तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ुस्से से कांप उठे और फ़रमाया : लश्करे ज़ू मुरवह व ज़ू ख़शब व अअवस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ मलऊन हैं। (इब्ने ख़ुलदून, जि. 4, स. 214)

इन पुर आशोब हालात में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की भरपूर हिमायत करते और पुर ख़ुलूस मशवरे देते रहे। जब बलवाइयों की शिद्दत बढ़ गई और

अमीरुल मोमिनीन हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हो के मकान का मुहासरा कर लिया गया तो हजरत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दोनों बेटे हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु और हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु को बलवाइयों की मुदाफिअत रोकने के लिये अमीरुल मोमिनीन हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु के घर के दरवाजे पर खड़ा कर दिया था ताकि कोई बलवाई घर के अन्दर दाखिल न हो सके। (इब्ने खुल्दून, जि. 4, स. 296)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की महब्बत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु जब शहीद कर दिये गए और यह जानकाह खबर जब मदीना पहुँची तो कूचा व बाजार में कोहराम मच गया, हर आँख अश्क बार थी, बहुत से सहाबए किराम हज़रत आएशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा की खिदमत में हाज़िर हुए ताकि देखें कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की खबर सुनकर उनका क्या हाल है। हज़रत जैद बयान करते हैं कि सब लोग हुजूम की शक्ल में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान पर पहुँचे तो वहाँ हादसे की ख़बर पहले से पहुँच चुकी थी और उम्मुल मोमिनीन गम से निढाल आंसुओं से तर बतर बैठी हैं, लोगों ने यह हालत देखी तो खामोशी से लौट आए। हज़रत ज़ैद बयान फ़रमाते हैं कि दूसरे दिन मशहूर हुआ कि उम्मुल मोमिनीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की कब्र पर जा रही हैं, मस्जिद में जितने भी अन्सार व मुहाजिरीन थे सब इस्तिक़बाल को उठ खड़े हुए और सलाम करने लगे मगर उम्मुल मोमिनीन खामोश थी, न ज़बान बोलती थी, शिद्दते गिरया से ज़बान बन्द थी, दिल तंग था, चादर तक न संभलती थी, बार बार पांव में उलझती थीं और आप लड़खड़ा लड़खड़ा जातीं, लोग पीछे पीछे चले आ रहे थे, हुजरए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में दाख़िल हुईं तो दरवाजा पकड़कर खड़ी हो गईं और डूबे हुए दिल के साथ टूटी हुई आवाज में कहने लगीं ऐ नबिये हिदायत तुम पर सलाम, ऐ अबुल कासिम आप पर सलाम और आपके दोनों अजीज़ साथियों पर सलाम और आपके मेहबूब तरीन अजीज़ की मौत की ख़बर आपको सुनाने आई हूँ, अल्लाह तआला की क़सम आपका प्यारा भाई आपका चुना हुआ दोस्त आपकी मेहबूब तरीन बेटी का शौहर क़त्ल हो गया वल्लाह तआला वह क़त्ल हो गया। जिसकी बीवी अफज़ल तरीन औरत थी अल्लाह तआला वह क़त्ल हो गया, जो ईमान लाया और ईमान के अहद में पूरा उतरा, मैं गम वाली गम ज़दा हूँ मेरा आंसू रुकता नहीं, दिल बैठा जा रहा है, अगर कब्र खुल जाती तो आपकी ज़बान भी यही कहती कि तेरा अज़ीज तरीन और मुअज्जज तरीन वजूद क़त्ल हो गया। इस तरह रो रो कर उम्मुल मोमिनीन फरियाद करती रहीं और कहा कि अब अरब जो चाहें करें कोई उनको रोकने वाला बाक़ी नहीं रहा। (इब्ने खुल्दून, जि. 4, स 221)

दुरूद शरीफ़............

ऐ ईमान वालो ! इन सचे वाक़िआत की रोशनी में आपके दिल में इसके सिवा क्या तास्सुर पैदा हो सकता है कि चारों ख़ुलफ़ाए किराम बरहक़ थे और उन चारों हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के दरमियान कोई मुग़ायरत व दूरी और बुग़्ज़ो अदावत नहीं थी बल्कि एक दूसरे में बड़ी मोहब्बत और भाई चारगी थी, सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के मा बैन इख़्तिलाफ़ात में जाना ईमान को कमज़ोर करता है। सारे सहाबा आपस में भाई भाई थे, एक दूसरे के साथ हमदर्द व मूनिस व ग़मख़्वार थे। सहाबा में सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर फिर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म फिर हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन इनके बाद हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा थे। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा तमाम मोमिनीन की मां हैं और मोमिन कभी भी अपनी मां से अदावत व बुग़्ज़ नहीं रखता। हम अहले सुन्नत हैं हम पर सब की महब्बत हस्बे मदारिज फ़र्ज़ है

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शुजाअत

ऐ ईमान वालो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शुजाअत व बहादुरी की शोहरत आम है, आप शेरे ख़ुदा हैं आप सिवाए ग़ज़वए तबूक के बाक़ी तमाम ग़ज़वात में शरीक हुए और बे शुमार काफ़िरों को वासिले जहन्नम किया। सन् 9 हि. में ग़ज़वए तबूक पेश आया तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुस्लेमा अन्सारी को मदीने का मुहाफ़िज़ और अहले बैते अतहार की ख़बर गीरी के लिये हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुक़र्रर फ़रमाया।

(बुख़ारी बाब ग़ज़वए तबूक)

इस्लाम की पहली जंग : जंगे बद्र में लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार उतबा बिन रबीआ अपने भाई शैबा और अपने बेटे वलीद को लेकर सबसे पहले मैदान में आया और मुक़ाबले के लिये पुकारा, लश्करे इस्लाम में से हज़रत ओन, हज़रत मआज़ और हज़रत अब्दुल्लाह रवाहा उनके मुक़ाबले के लिये निकले, उतबा ने नाम व नसब पूछा, जब उसको मालूम हुआ कि अन्सार हैं, तो उतबा ने पुकारा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) यह लोग हमारे बराबर के नहीं हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अन्सार को वापस बुला लिया और हज़रत हमज़ा, हज़रत अली और हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को भेजा। उतबा हज़रते हमज़ा और वलीद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के मुक़ाबिल हुआ दोनों मारे गए लेकिन शैबा काफ़िर ने हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ख़्मी कर दिया तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बढ़कर शैबा को भी क़त्ल कर दिया। उसके बाद

मारकए जंग बहुत गर्म हो गया, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत से कुफ़्फ़ार को क़त्ल किया।

हज़रत अबू जअ़फ़र मोहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन आसमान से एक फ़रिश्ते ने जिसका नाम रिज़वान है पुकारा : لَا سَيْفَ إِلَّا ذُو الْفَقَارِ وَلَا فَتٰى إِلَّا عَلِيٌّ

(अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 224, अर्रियाजुन्नज़रह, जि. 2, स. 251)

जंगे उहद में लश्करे इस्लाम कामयाब हो गए थे और लश्करे कुफ़्फ़ार मैदान छोड़कर भागे और अपना माल व अस्बाब मैदान में छोड़ गए तो मुसलमानों ने समझ लिया कि हम कामयाब हो गए हैं काफ़िर मैदान छोड़कर भाग निकले हैं तो मुसलमान माले ग़नीमत के हुसूल में लग गए और उधर काफ़िरों का मुन्तशिर लश्कर यकजा होकर लश्करे इस्लाम पर हमला कर दिया। मुसलमान काफ़िरों के मुहासरे में आ गए और बहुत से सहाबा शहीद कर दिये गए। उस वक़्त आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी काफ़िरों के बीच में थे। काफ़िरों ने ऐलान कर दिया कि ऐ मुसलमानों तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) शहीद कर दिये गए। इस ऐलान को सुनकर मुसलमान बहुत परेशान हो गए यहाँ तक कि बहुत से लोग मैदान छोड़कर चले गए। उनका ख़याल था कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही न रहे तो जंग किसके लिये लड़ेंगे। ऐसे सख़्त और मुश्किल वक़्त में हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब काफ़िरों ने मुसलमानों को चारों तरफ़ से घेर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी नज़र नहीं आ रहे हैं तो पहले मैंने अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दों में तलाश किया मगर नहीं पाया, फिर शहीदों में तलाश किया वहाँ भी नहीं पाया तो मैंने अपने दिल में ख़याल किया कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैदाने जंग से भाग जाएं। लिहाज़ा हो सकता है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आसमान पर उठा लिया हो। इस लिये अब बेहतर यही है कि मैं तलवार लेकर काफ़िरों में घुस जाऊँ यहाँ तक कि लड़ते लड़ते शहीद हो जाऊँ। मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मैंने तलवार संभाली और काफ़िरों में घुसकर ऐसा सख़्त हमला किया कि कुफ़्फ़ार का लश्कर इधर उधर हो गया यहाँ तक कि मैंने आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देख लिया, क़ल्ब मुतमईन हो गया और ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिफ़ाज़त फ़रमाई। मैं दौड़ा और अपने आक़ाए सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास पहुँच गया। कुफ़्फ़ार का लश्कर आक़ा कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर हमला करने के लिये आगे बढ़ने लगा, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) इन काफ़िरों को रोको, तो मैंने तन्हा उन सब का

मुक़ाबला किया और उनको अपने प्यारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दूर कर दिया और कई काफ़िरों को क़त्ल भी किया। उसके बाद काफ़िरों का एक गिरोह फिर आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर हमला करने की निय्यत से बढ़ा तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फिर मेरी जानिब इशारा फ़रमाया तो मैंने फिर उस गिरोह का अकेले मुक़ाबला किया। हज़रत जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मेरी शुजाअत व बहादुरी की तारीफ़ की तो हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: اِنَّهٗ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْهُ यानी अली मुझसे हैं और मैं अली से हूँ। इस इरशादे पाक को सुनकर हज़रत जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया: وَاَنَا مِنْكُمَا यानी मैं तुम दोनों से हूँ।

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ बयान करते हैं कि जंगे ख़न्दक़ के रोज़ अम्र बिन अब्दे वुद (जिसकी बहादुरी का यह आलम था कि अकेला एक हज़ार सवारों के बराबर माना जाता था) मैदाने जंग में इस तरह निकला कि पूरे जिस्म पर लौहे की ज़िरहें पहने हुआ था, मैदान में आते ही उसने बलन्द आवाज़ से पुकारा, है कोई जो मेरे मुक़ाबले के लिये आए। अम्र बिन अब्दे वुद की आवाज़ सुनकर हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हो गए और उसके मुक़ाबले के लिये आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से इजाज़त तलब की। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ यह अम्र बिन अब्दे वुद है। दूसरी बार अम्र बिन अब्दे वुद ने फिर आवाज़ दी कि मेरे मुक़ाबले के लिये कौन आता है ? दूसरी मरतबा फिर हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इजाज़त तलब की मगर आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इजाज़त नहीं दी। तीसरी बार फिर अम्र बिन अब्दे वुद ने मुक़ाबले की दावत दी और कुछ अशआर पढ़े तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ब कमाले अदब अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अम्र बिन अब्दे वुद से मुक़ाबले के लिये इजाज़त तलब की तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इजाज़त अता फ़रमा दी और अमामा मुबारक अपने दस्ते मुबारक से हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सर पर बाँधा और अपनी ज़िरह उतारकर पहना दी और अपनी ज़ुल फ़क़ार उनको अता की और हाथ उठाकर दुआ फ़रमाई, इलाही उबैदा बिन हारिस को तूने बरोज़े बद्र और हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को तूने बरोज़े उहद अपने पास बुला लिया अब यह अली तेरा बन्दा मेरा भाई और मेरे चचा का बेटा है मैं इसको तेरी पनाह में देता हूँ, इलाही तू अली की मदद फ़रमा और राही व सालिम, मुज़फ़्फ़र व मन्सूर फिर मुझसे मिला।

शाहे मर्दां शेरे यज़दां हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसके सामने पहुँचे अम्र का क़ौल था कि अगर कोई शख़्स मुझसे तीन बातों की दरख़्वास्त करे तो उसमें से एक

बात ज़रूर कुबूल करूँगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा क्या वाक़ई यह तेरा क़ौल है ? उसने कहा हाँ। आपने फ़रमाया फिर मैं तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ कि तू इस्लाम कुबूल कर ? उसने कहा यह नहीं हो सकता फिर आपने फ़रमाया तू लड़ाई से वापस घर चला जा ? उसने कहा कि मैं कुरैश की औरतों के तअ़ने नहीं सुन सकता। मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाय।फिर लड़ाई के लिये तैय्यार हो जाओ। अम्र हंसा और कहा कि मुझको यह उम्मीद न थी कि कोई मुझसे भी कहेगा कि लड़ाई के लिये तैय्यार हो जाओ। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदल थे, इस लिये उसकी ग़ैरत ने गवारा न किया कि सवार हो कर मुक़ाबला करे, घोड़े से उतर आया और उसने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? आपने नाम बताया, उसने कहा अभी तुम कमसिन नौजवान हो मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता और तुम्हारे बाप मेरे दोस्त थे, मुझको पसन्द नहीं कि अपनी तलवार से तुम्हारा ख़ून बहाऊँ। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, लेकिन मुझको तुम्हारा ख़ून बहाना पसन्द है। अम्र अब गुस्से से बेताब था, तलवार म्यान से निकाली और एक दम आपके सर पर वार कर दिया, आपने उस वार को सिपर पर रोका लेकिन तलवार ढाल को काटती हुई पेशानी पर लगी जिससे हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हलका सा पेशानी पर ज़ख़्म आ गया। फिर शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने संभल कर अपनी ज़ुल फ़क़ार का ऐसा ज़बरदस्त वार किया जिससे उसका शाना कट गया और तलवार नीचे उतर गई गोया उसके दो टुकड़े कर दिये और आपने अल्लाहु अकबर की सदा बलन्द की ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नअ़रए तकबीर की सदा को सुना। अम्र बिन अब्दे वुद ज़मीन पर ख़ाक व ख़ून में पड़ा हुआ था और मैदान का ज़र्रा ज़र्रा ज़बाने हाल से पुकार रहा था :

शाहे मरदां शेरे यज़दां कुव्वते परवरदिगार
ला फ़ता इल्ला अली ला सैफ़ा इल्ला ज़ुलफ़क़ार

फ़ातहे ख़ैबर : ग़ज़वए ख़ैबर भी एक अहम मारका था, ख़ैबर का क़िला बड़ा मज़बूत था जिसे फ़तह करना आसान न था, ख़ैबर के क़िला को फ़तह करने के लिये हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक दिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को झन्डा अता फ़रमाया, दूसरे दिन हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को झन्डा इनायत फ़रमाया लेकिन ख़ैबर का क़िला फ़तह न हुआ

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ग़ज़वए ख़ैबर के मौक़े पर फ़रमाया कि कल मैं उस शख़्स के हाथ में झन्डा दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला फ़तह नसीब करेगा वह शख़्स अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मेहबूब रखता है और अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उसे मेहबूब रखते हैं। चुनाँचे लोग इन्तिज़ार करते रहे, आरज़ू

मन्दों की रात गुज़ारनी मुश्किल हो गई, मुजाहिदीन की नीन्दें उड़ गईं, हर एक की यही तमन्ना व आरज़ू थी कि यह नेअ़मत उसके नसीब में आए। लेकिन जब सुबह हुई तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَيْنَ عَلِيُّ ابْنُ اَبِيْ طَالِبٍ अली इब्ने अबी तालिब कहाँ हैं ? अर्ज़ किया गया, उनको तकलीफ़ है, वह आशोबे चश्म में मुब्तला हैं । आप ने फ़रमाया उन्हें बुला लो ! हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हु हाज़िर किये गए आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दहने मुबारक के शिफ़ा बख़्श के लुआब को उनके आँखों में डाला और दुआ फ़रमाई। उसी वक़्त ऐसा आराम हो गया गोया आप को कभी तकलीफ़ ही न थी।

(बुखारी, जि. 1, स. 525, मुस्लिम शरीफ, मिश्कात, स. 563)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक लुआबे दहन खारी कुएं में पड़ जाए तो पानी हमेशा के लिये मीठा हो जाए और दुखती हुई आँख में डाल दिया जाए तो आँख का दर्द उसी वक़्त ख़त्म हो जाए। यह शान है हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लुआबे दहन शरीफ़ की। अब उन लोगों का हाल मालूम करें जो हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने जैसा बशर और बड़ा भाई कहते हैं, उनसे सवाल किया जाए कि जनाब आप के नापाक थूक का क्या हाल है ? अगर पानी में पड जाए तो कोई पीने के लिये तैय्यार न हो और बे शुमार बीमारियों की जड़ साबित हो फिर भी अल्लाह तआला के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना बड़ा भाई और अपने जैसा बशर जानते हो। तौबह कर लो, ईमान ले आओ। कि जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लुआब शरीफ़ की यह शान और यह बरकत है तो मेरे सरकार रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व शौकत का आलम क्या होगा।

आज ले उनकी पनाह आज मदद मांग उनसे
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

दुरूद शरीफ़.........

चुनाँचे आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु अन्हु को झन्डा अता फ़रमाया। हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूँ जब तक कि वह हमारी तरह मुसलमान न हो जाएं। हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि नर्मी से काम ले, पहले उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाओ कि इस्लाम कुबूल करने के बाद उन पर क्या हुक़ूक़ हैं। खुदा की क़सम अगर तुम्हारी कोशिश से एक शख़्स को भी हिदायत मिल गई तो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँटों से भी बेहतर होगा। (बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात, स. 564)

उस के बाद हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु झन्डा लेकर यहूदियों के क़िले की तरफ़ बढ़े, आप जब क़िला की तरफ़ पहुँचे तो क़िला के ऊपर एक यहूदी खड़ा था, उसने पूछा ऐ साहिबे इल्म ! तुम कौन हो ? तुम्हारा नाम क्या है ? आपने उससे फ़रमाया मैं अली इब्ने अबी तालिब हूँ। उस यहूदी ने अपनी क़ौम से कहा, क़सम है तौरैत की तुम इस शख़्स से मग़लूब होगे, यह फ़तह हासिल किये बग़ैर न लौटेगा। वह यहूदी मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हालात व औसाफ़ अपनी किताबों में पढ़ चुका था, आपके मुक़ाबले के लिये हारिस यहूदी निकला, आपने उसको क़त्ल किया, फिर उसका भाई मरहब मुक़ाबले के लिये निकला, यह बड़ा बहादुर और जंग जूं था, तमाम यहूदियों में इस जैसा कोई बहादुर न था। यह कहते हुए मुक़ाबले के लिये आया कि मैं मरहब हूँ, ज़बरदस्त तरीक़े से हथियार चलाने वाला बहादुर हूँ। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : اَنَا الَّذِیْ سَمَّتْنِیْ اُمِّیْ حَیْدَرْ

यानी मैं वह हूँ कि मेरी मां ने मेरा नाम हैदर रखा यानी शेर। यह फ़रमाया और फिर उस मलऊन को इस ज़ोर से तलवारे ज़ुल फ़क़ार मारी कि उसके जिस्म के दो टुकड़े हो गए। फिर आपने क़िला ख़ैबर के दरवाज़े को उखाड़ने के लिये हाथ डाला जो सारा क़िला थरथराने लगा। शेरे ख़ुदा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़िला के आहनी और मज़बूत दरवाज़े को उखाड़ दिया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पीठ पर उठा लिया था और उस पर मुसलमानों ने चढ़कर क़िला को फतह कर लिया था, उसके बाद आपने वह दरवाज़ा फेंक दिया, जब लोगों ने उसे घसीट कर दूसरी जगह डालना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उसे उठा न सके। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 114)

और इब्ने असाकिर ने अबू राफ़ेअ से रिवायत की है कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जंगे ख़ैबर में क़िले का दरवाज़ा उखाड़ कर हाथ में लेकर उसको ढाल बना लिया वह फाटक उनके हाथ में ढाल के तौर पर बराबर रहा और वह लड़ते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनके हाथों ख़ैबर को फ़तह फ़रमाया, उसके बाद दरवाज़े को आपने फेंक दिया तो कई आदमियों ने मिलकर उसे पलटना चाहा मगर वह नहीं पलटा।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 114)

और एक रिवायत में है कि सत्तर आदमी मिलकर उस दरवाज़े को हिला तक न सके। अल्लामा इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने नक़्ल फ़रमाया कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया मैंने क़िला ख़ैबर का दरवाज़ा कुव्वते जिस्मानी से नहीं बल्कि कुव्वते रब्बानी से उठा लिया था। (तफ़सीरे कबीर, जि. 5, स. 467)

क़िले का दरवाज़ा जब उखाड़ दिया गया तो इस्लामी लश्कर क़िले में दाख़िल हो गया और फ़तह हासिल हो गई। फ़तह के बाद आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

अपने ख़ेमे के बाहर तशरीफ़ लाए और फ़ातहे ख़ैबर हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इस्तिक़बाल किया और उनको अपनी आग़ोश में लेकर उनकी दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया।

शाहे मरदां शेरे यज़दां क़ुव्वते परवरदिगार
ला फ़ता इल्ला अली ला सैफ़ इल्ला ज़ुल फ़क़ार

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ैसले

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब भी कोई अहम मस्अला हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा जाता तो वह बहुत बेहतर जवाब दिया करते थे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 183)

मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं क़ुरआन की हर आयत के मुतअल्लिक़ जानता हूँ कि यह आयत किसके बारे में और कहाँ नाज़िल हुई है और हर आयत के मुतअल्लिक़ यह भी जानता हूँ कि यह रात में नाज़िल हुई है या दिन में। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर सूरए फ़ातिहा की तफ़सीर लिखूँ तो उस तफ़सीर की किताबें सत्तर ऊँटों पर लादी जाएं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 184)

बिस्मिल्लाह की 'बे' का नुक़्ता

अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि सारे उलूम क़ुरआन में और क़ुरआन के सारे उलूम सूरए फ़ातिहा में और सूरए फ़ातिहा के सारे उलूम बिस्मिल्लाह में हैं और बिस्मिल्लाह के सारे उलूम बिस्मिल्लाह की ,बे, में हैं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो बाबे मदीनतुल इल्म हैं फ़रमाते हैं :

انا النقطة تحت الباء बे, के नीचे का नुक़्ता मैं हूँ। (रूहुल बयान, जि. 1, स. 603)

गोया क़ुरआन के उलूम का ख़ज़ाना मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पुर नूर सीना है।

ऐ ईमान वालो ! किताबुल्लाह की तफ़सीर, अहादीसे करीमा की रिवायत व तौज़ीह और पेचीदा फ़िक़ही मक़ालात के लतीफ़ हल, अजीबुन्नोअ मुक़दमात के नायाब फ़ैसला, अख़्लाक़ व औसाफ़ के मुतअल्लिक़ दिक़्क़त आमेज़ बे शुमार वाक़ेआत, तसव्वुफ़ व सुलूक के असरार, दक़ीक़ इल्मी निकात, फ़साहत व बलाग़त से लबरेज़ ख़ुतबात, कुतुबे अहादीस व तारीख़ में बकसरत मिलते हैं जिनके मुतालआ से वाज़ेह होता है कि अल्लाह तआला ने बाबे मदीनतुल इल्म हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पुर नूर सीने को उलूमे क़ुरआन व मआरिफ़े अहादीस का गन्जीना बनाया था, इस लिये अहले इल्मो नज़र का मुत्तफ़क़ा फ़ैसला है कि मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दीनो दुनिया के मसाइल में

जो भी फ़ैसले फ़रमाए वह बे नज़ीर और हक़ हैं।

हज़रत अबी हजन बिन असवद फ़रमाते हैं कि एक मजनूना औरत ने निकाह के छः माह बाद बच्चा जना, लोगों ने उस औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाया। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस औरत के रज्म का इरादा फ़रमाया, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुरआने करीम की रोशनी में फ़रमाया कि छः माह के बाद भी बच्चा हो सकता है।

فَتَرَكَ عُمَرُ رَجْمَهَا وَقَالَ لَوْلَا عَلِيٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके रज्म का इरादा तर्क कर दिया और फ़रमाया अगर अली न होते तो उमर हलाक हो जाता यानी एक बे गुनाह औरत का संग सार होना मेरी हलाकत का बाइस बन जाता। (इस्तीआब, जि. 2, स. 474)

(1) एक यहूदी का वाकिआ : हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दाढी मुबारक घनी और भरी हुई थी चुनाँचे एक दिन एक यहूदी जिसकी दाढ़ी के बाल बहुत मुख़्तसर और कम थे। आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि ऐ अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) आप फ़रमाते हैं कि कुरआन में हर शय का बयान है तो बताइये कि कुरआन में मेरी मुख़्तसर और आपकी घनी दाढ़ी का ज़िक्र कहाँ है ? तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, हाँ सूरए अअराफ़ में है :

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا

यानी जो अच्छी ज़मीन है उसकी हरियाली अल्लाह के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो खराब है उसमें से नहीं निकलती मगर थोड़ी ब मुश्किल। (पारा 8, रुकू 14)

लिहाज़ा वह अच्छी ज़मीन मेरी है और वह खराब ज़मीन तेरी ठोड़ी है।

(2) एक औरत जिसने ज़िना का फ़ेअ़ले क़बीह किया और हामिला हो गई, उस ज़ानिया औरत का मुक़दमा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दरबारे अदालत में पेश किया गया, शरई सुबूत के बाद आप ने उस ज़ानिया औरत को संग सार का हुक्म फ़रमाया। हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमारे प्यारे आका रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि हामिला औरत को बच्चा पैदा होने के बाद संगसार किया जाए इस लिये कि ज़िना का गुनाह औरत ने किया है मगर उस औरत के पेट का बच्चा बे गुनाह है। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहुत आला अन्हु के फ़रमान के बाद अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने अपने फ़ैसले से रुजूअ़ कर लिया और फ़रमाया :

لَوْلَا عَلِيٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ यानी अगर अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु न होते तो उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हलाक हो जाता।

(3) एक शख़्स ने दो औरतों से निकाह किया, इत्तिफ़ाक़ से एक ही रात और एक ही जगह दोनों ने बच्चे जने, एक के लड़की और एक के लड़का पैदा हुआ, रात अन्धेरी थी इस लिये उन दोनों औरतों में इख़्तिलाफ़ हो गया कि लड़की किसकी है और लड़का किसका है।

दोनों औरतों का मुतालबा था कि लड़का मेरा है। यह मुक़दमा हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पेश हुआ। आपने दोनों औरतों के दूध का वज़न किया जिसका दूध वज़नी था उसको लड़का देकर फ़रमाया यह बच्चा उसका है। लोगों ने अर्ज़ किया कि यह मस्अला आपने कहाँ से निकाला है तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, क़ुरआन से।

لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ

मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। बेशक अल्लाह तआला ने मर्द को हर चीज़ में फ़ज़ीलत दी है यहाँ तक कि ग़िज़ा में भी। (नुजहतुल मजालिस, जि. 2, स. 162)

(4) हज़रत हनश बिन मुअम्मर फ़रमाते हैं कि एक औरत के पास दो क़ुरैशी आदमी आए और सो दीनार बतौरे अमानत रख गए और दोनों ने उस औरत से कहा कि जब तक हम दोनों एक साथ तेरे पास न आएं किसी को रुपया न देना। एक साल गुज़रने के बाद उनमें से एक ने आकर कहा कि मेरा दूसरा साथी मर गया है लिहाज़ा वह सौ दीनार मुझे दे दे। उस शख़्स ने दे दिया। वह साल गुज़रने के बाद वह दूसरा साथी भी आ गया और उसने सौ दीनार का मुतालबा किया। उस औरत ने कहा कि तुम्हारा साथी मेरे पास एक साल पहले आया था और यह कहकर कि मेरा साथी मर गया है, मुझसे वह सौ दीनार ले गया है। उस शख़्स ने कहा क्या तुम्हारे साथ यह अहद न था कि जब हम दोनों साथी एक साथ न आएं यह अमानत का रुपया किसी एक को न दे देना ? पस उस औरत और मर्द में झगड़ा शुरू हो गया और मुक़दमा हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में पहुँचा और आपने दोनों के बयानात सुने और समझ गए कि यह मर्द इस औरत से धोका कर रहा है। फ़रमाया क्या तुम दोनों ने यह नहीं कहा था कि जब तक हम दोनों एक साथ न आएं तुम यह रुपया किसी एक को न दे देना ? कहा हाँ। तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : तेरा माल हमारे पास है, जा अपने साथी को ले आ और दोनों एक साथ आकर अपना माल ले जाओ।

(अरियाजुन्नज़रह, जि. 2, स. 261, शमसुत्तवारीख़, जि. 4, स. 778)

(5) हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने सहाबा अलैहिमुर्रहमा के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि दो आदमी लड़ाई झगड़ा करते हुए ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए, एक ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरा एक गधा था इस शख़्स की गाय ने मेरे गधे को मार डाला है, मुझे फ़ैसला चाहिये। हाज़िरीन में से एक शख़्स ने कहा कि जानवरों के फ़ेअल का कोई क्या ज़िम्मेदार हो सकता है ? तो हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फ़रमाया इनके दरमियान फ़ैसला करो। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन दोनों आदमियों से पूछा कि वह दोनों जानवर बंधे थे या खुले थे ? या उनमें से एक बंधा था या दूसरा खुला था ? गधे के मालिक ने कहा कि मेरा गधा बंधा था और इस शख़्स की गाय खुली थी

और यह शख़्स उस गाय के साथ था। गाय के मालिक ने इस बात की तस्दीक़ की। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मेरा फ़ैसला यह है कि गाय का मालिक गधे के नुक़सान का ज़िम्मेदार है जब यह फ़ैसला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुआ तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का फ़ैसला हक़ और सही है। चुनाँचे वही फ़ैसला जारी किया गया। (नूरुल अबसार, स. 88)

(6) हज़रत ज़रीन जेश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि दो आदमी खाना खाने बैठे, एक के पास पाँच रोटियाँ थी और दूसरे आदमी के पास तीन रोटियाँ थीं कि इतने में एक तीसरा शख़्स आ गया, उन दोनों ने उसको भी खाने की दावत दी, वह शख़्स भी खाने में शरीक हो गया। वह तीनों शख़्स आठों रोटियाँ खा चुके तो वह तीसरा शख़्स उठा और उसने उनको आठ दिरहम देकर कहा कि यह ऐवज़ है इस खाने का जो मैंने तुम्हारे साथ खाया है। पाँच रोटियों वाले ने कहा कि मेरी पाँच रोटियाँ थीं और तेरी तीन। लिहाज़ा तीन दिरहम तेरे हुए और पाँच दिरहम मेरे हुए। तीन रोटियों वाले शख़्स ने कहा कि मैं तीन दिरहम नहीं लूँगा बल्कि आधे का हक़दार मैं भी हूँ। चार दिरहम तू ले ले और चार दिरहम मैं ले लूँ। बात बढ़ गई, झगड़े की नौबत आ गई, मुक़दमा हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पेश हुआ। तमाम क़िस्सा सुनकर आपने तीन रोटियों वाले शख़्स से फ़रमाया जो कुछ तेरा साथी तुझे दे रहा है ख़ुशी से ले ले उसमें तुझे फ़ायदा है। उस शख़्स ने कहा जब तक मुझे मेरा हक़ न मिले मैं ख़ुश नहीं होउँगा। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तेरा हक़ तो एक दिरहम ही है। उस शख़्स ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! मेरा हक़ एक दिरहम क्यों है ? तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : आठ रोटियों की चौबीस तिहाइयाँ, पन्द्रह तेरे साथी पाँच रोटी वाले की और नौ तेरी और तुमने बराबर खाया है, पस तूने आठ तिहाइयाँ खाईं और तेरी नौ में से एक तिहाई बची और तेरे दोस्त की पन्द्रह तिहाइयाँ थीं आठ उसने खाईं और उसकी सात बचीं, एक तिहाई तेरी और सात तेरे दोस्त की आठ वह खा गया और अठ तिहाईयाँ खाकर उसने आठ दिरहम दिये लिहाज़ा फ़ी तिहाई एक दिरहम तेरा और सात दिरहम तेरे दोस्त के, तो उस शख़्स ने अर्ज़ किया : अब मैं एक ही पर राज़ी हूँ, हक़ समझ में आ गया।

(इस्तीआब, स. 475, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 498, अस्सवाएक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 127)

(7) हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मरतबा दो औरतें एक लड़के के मुतअल्लिक़ लड़ती झगड़ती दरबारे मौलाए कायनात में हाज़िर आईं, दोनों औरतों का कहना था कि यह लड़का मेरा है। पहले हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दोनों औरतों को समझाया मगर समझ में नहीं आई तो आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुक्म दिया, आरा लाओ, उन्होंने पूछा आरह किस लिये मंगा रहे हैं ? हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, इस लड़के के दो टुकड़े कर के दोनों को आधा

आधा दूँगा। सच में जो मां थी यह सुनकर कि मेरे बेटे को दो टुकड़े कर दिया जाएगा, तड़प उठी बेक़रार होकर कहने लगी अमीरुल मोमिनीन मैं इस लड़के को नहीं लेना चाहती, यह लड़का इसी औरत का है आप इसी को दे दीजिये मगर ख़ुदा के वास्ते इसको क़त्ल न कीजिये आपने वह लड़का उसी बेक़रार और बैचेन औरत को दे दिया और जो औरत ख़ामोश खड़ी रही आपने उसको डांटा कि शर्म करनी चाहिये कि तुमने मेरे दरबार में झूट बोला है। यहाँ तक कि उस औरत ने अपने जुर्म को क़ुबूल कर लिया। (अशरए मुबश्शरा)

(8) दरबारे मौलाए कायनात हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में तीन शख़्स हाज़िर हुए, उनके पास 17 ऊँट थे। उन लोगों ने अर्ज़ किया कि आप इन ऊँटों को हमारे दरमियान तक़सीम कर दें। हम में एक शख़्स आधे का हक़दार है, दूसरा शख़्स तिहाई का हक़दार है और तीसरा शख़्स नवें हिस्से का हक़दार है। मगर शर्त यह है कि हर शख़्स को पूरे और सही व सालिम ऊँट मिलें, काटकर तक़सीम न करें और न किसी शख़्स को किसी से रुपया दिलाएं।

अज़ीमुश्शान इल्म वाले आपकी बारगाह में तशरीफ़ रखते थे, सब हैरान थे यह कैसे हो सकता है ? कि हर शख़्स को पूरे सही व सालिम ऊँट मिलें और काटा न जाए और रुपया भी न दिलाया जाए। एक शख़्स का आधा हिस्सा है जो साढ़े सात हुए और दूसरे शख़्स का हक़ तिहाई है वह भी बग़ैर काटे हल न होगा और एक शख़्स का नवां हिस्सा है वह भी बग़ैर ऊंटों को काटे हल नहीं हो सकता। बग़ैर ज़िबह किये ऊँटों का मस्अला हल नहीं हो सकता।

लाखों सलाम हों हज़रत अली की अक़्ल व दानिश पर, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऊँटों को एक लाईन में खड़े कर दिये और अपने ग़ुलाम को हुक्म दिया कि मेरा एक ऊँट लाओ और इस लाइन में खड़ा कर दो। जब आपके ऊँट को मिलाकर कुछ अठारह ऊँट हो गए तो जिस शख़्स का आधा हिस्सा था उसको आपने 9 ऊँट दिया और जिस शख़्स का तिहाई हिस्सा था उसको 6 ऊँट दिया और जिस शख़्स का नवां हिस्सा था अठारह ऊँटों में से उसको 2 ऊँट दिये और अपने ऊँट को फिर अपनी जगह भिजवा दिया।

क्या शानदार फ़ैसला फ़रमाया कि न तो कोई ऊँट काटा और न ही किसी को कुछ रुपया दिया और सत्रह ऊँटें को उन लोगों की शराइत के मुताबिक़ तक़सीम फ़रमा दिये जिस पर हर शख़्स मुतमईन हो गया और अपना हिस्सा लेकर चला गया।

इस फ़ैसले को देखकर अरबाबे मेहफ़िल हैरान व शुशदिर रह गए कि अल्लाह तआला ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हो के सीने को इल्मो दानिश का ख़ज़ीना, हिकमतो अदालत का सफ़ीना और इल्मे नुबुव्वत का मदीना बनाया है।

(9) हज़रत ज़ैद बिन अरकुम रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक शख़्स ने मरते वक़्त अपने दोस्त को दस हज़ार दिरहम दिये और वसियत की कि जब तुम से और मेरे लड़के से मुलाक़ात हो तो इसमें से जो चाहो उसको दे देना। इत्तिफ़ाक़ से कुछ रोज़ बाद उस शख़्स का लड़का आ गया, उस मौक़े पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस शख़्स ने पूछा कि बताओ

कि तुम मरहूम के लडके को कितना दोगे ? उस शख़्स ने कहा एक हजार दिरहम। आपने फ़रमाया अब तुम उस शख़्स को नो हजार दिरहम दो इस लिये कि जो तुमने चाहा वह 9 हजार हैं और मरहूम ने यह वसियत की थी कि जो तुम चाहो वह उसको दे देना। (अशरए मुबश्शरा)

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामतें

(1) ऐ ईमान वालो ! हजरत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सर चश्मए विलायत और काने करामत हैं।

हजरत बिन शहर आशोब फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सुबह की नमाज़ के बाद एक आदमी से फ़रमाया कि फ़लां महल्ले में एक मस्जिद है और उस मस्जिद के क़रीब एक मकान है, उस मकान में तुझे एक औरत और एक मर्द के आपस में तकरार करने की आवाज़ सुनाई देगी, तुम उन दोनों को मेरे पास ले आओ। वह शख़्स गया और उन दोनों को लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ। आपने उन दोनों से पूछा कि तुम रात भर आपस में लड़ते क्यों रहे? उस नौजवान ने अर्ज़ किया या अमीरुल मोमिनीन मैंने इस औरत से निकाह क्या है, जब खलवत का वक़्त आया तो मुझे इस औरत से क़ुदरती तौर पर नफ़रत हो गई और मैंने इससे सोहबत नहीं की इस वजह से मेरी और इस औरत की तकरार हो रही थी कि आपका ख़ादिम पहुँचा और हम दोनों आपकी ख़िदमत में चले आए हैं। आपने हाज़िरीन से फ़रमाया तुम लोग बाहर चले जाओ कुछ बातें राज़ की करनी हैं। तमाम हाज़िरीन चले गए सिर्फ़ वह मर्द और औरत रह गए, आपने उस औरत से फ़रमाया क्या तू जानती है कि यह नौजवान कौन है ? उस औरत ने अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया अगर मैं तुझ पर तेरी मख़्फ़ी बात ज़ाहिर कर दूँ तो तू इनकार तो नहीं करेगी ? उस औरत ने कहा नहीं !

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया क्या तू फ़लानी और फ़लां की बेटी नहीं है ? कहा हाँ। फ़रमाया क्या तेरा चचा ज़ाद भाई नहीं था और तुम दोनों में महब्बत नहीं थी ? उस औरत ने कहा ठीक है। फ़रमाया तेरा बाप तेरा निकाह उससे नहीं करना चाहता था और अपने पड़ोस से उसको निकाल दिया था? अर्ज़ किया बिल्कुल ठीक है। फ़रमाया तू एक रात क़ज़ाए हाजत के बहाने घर से बाहर निकली और उससे जाकर मिली तो उसने तुझसे सोहबत की और तू उससे हामिला हो गई और तूने अपने हमल को अपने बाप से छुपा कर रखा और तेरी मां को यह बात मालूम हो गई। वज़अ हमल के वक़्त वह रात को तुझे ले गई और घर के बाहर जाकर तुझे लड़का पैदा हुआ और तुमने कपड़े में लपेट कर वहीं रख दिया और वहाँ से चलीं कि एक कुत्ता आया और उसे सूंघने लगा। तुझे ख़ौफ हुआ कि कहीं उसे खा न जाए तो तूने एक पत्थर उठा कर उसको ज़ोर से मारा और वह पत्थर उस बच्चे के सर पर लगा और उसका सर ज़ख्मी हो गया। तूने और तेरी मां ने वहाँ जाकर उस बच्चे के सर पर पट्टी बाँधी और उस बच्चे को वहीं छोड़ दिया और दोनों घर चली आई। फिर तुम्हें उस बच्चे का हाल मालूम नहीं। वह औरत यह सुनकर हैरान व ख़ामोश थी। फ़रमाया सच बोल ! अर्ज़

करने लगी या अमीरुल मोमिनीन सच है, मेरी मां के अलावा इस बात की ख़बर किसी को मालूम नहीं थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हमको तो अल्लाह तआला ने अपने करम से बता दिया है, फिर फ़रमाया कुछ लोग सुबह वहाँ से गुज़रे और उस बच्चे को उठाकर ले गए, पाला, वह बच्चा जवान हो गया और उनके साथ कूफ़े आया और तेरे साथ निकाह किया। यह शख़्स तेरा वही बेटा है। फिर आपने उस नौजवान को फ़रमाया कि अपना सर खोल दे, उसने सर खोला और ज़ख़्म का निशान नज़र आया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यह शख़्स तेरा बेटा है अल्लाह तआला ने उस अम्र से जो कि इस नौजवान पर हराम था इसको बचाया है। अपने बेटे को ले और घर जा, तुम दोनों के दरमियान निकाह नहीं है। (शमसुत्तवारीख़)

(2) पानी का चश्मा : जंगे सफ़्फ़ीन के वक़्त आपके साथियों को सख़्त प्यास लगी, पानी दस्तियाब न था, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने साथियों के साथ पानी की तलाश में एक गिरजा के क़रीब पहुँचे। राहिब से मूलम किया कि पानी कहाँ दस्तियाब होगा? तो राहिब ने बताया कि यहाँ से छः मील के फ़ासले पर पानी मौजूद है। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी सवारी को पश्चिम की तरफ़ मोड़ा और एक जगह की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि ज़मीन खोदो, यहाँ पानी मौजूद है। थोड़ी ही ज़मीन खोदी गई थी कि उसके नीचे एक बड़ा पत्थर ज़ाहिर हुआ, जिसे हटाना आसान न था। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बताया यह पत्थर पानी पर वाक़ेअ़ है इस पत्थर को हटाओगे तो पानी का चश्मा मिल जाएगा, उसी तरह इस पत्थर को हटाओ। आपके साथियों ने पूरी ताक़त लगा दी मगर पत्थर को हिला न सके। लेकिन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी आस्तीन चढ़ाकर उंगलियाँ उस पत्थर के नीचे रखकर ज़ोर दिया तो वह पत्थर हट गया और उसके नीचे ठन्डा और मीठा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी का चश्मा जारी हो गया। जिसका पानी इतना ठन्डा और मीठा था कि पूरे सफ़र में उतना अच्छा पानी न पिया था। साथियों ने उस पानी को ख़ूब पिया और अपने बरतनों को भर लिया फिर आपने उस पत्थर को उठाकरर पानी के उस चश्मे पर रख दिया और फ़रमाया इस पर मिट्टी डाल दो। जब गिरजा घर के राहिब ने यह देखा तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर निहायत अदब से पूछा क्या आप पैग़म्बर हैं ? फ़रमाया नहीं। फिर पूछा क्या आप फ़रिश्ता मुक़र्रब हैं ? फ़रमाया नहीं। तो उसने पूछा फिर आप कौन हैं ? हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दामाद और उनका ख़लीफ़ा हूँ। राहिब ने कहा हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आपके हाथ पर इस्लाम क़ुबूल करूँ। आपने हाथ बढ़ाया तो राहिब ने कलमए तैय्यिब पढ़ा और मुसलमान हो गया। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने राहिब से पूछा कि क्या बात है कि तुम मुद्दत से अपने दीन पर क़ाइम रहे और आज मेरे हाथ पर मुसलमान हो गए तो राहिब ने जवाब दिया, यह गिरजा उसी के हाथ पर फ़तह होना था जो इस चट्टान को हटा दे और पानी का

चश्मा जाहिर कर दे और हमारी किताबों में लिखा है, इस भारी चट्टान को हटाने वाला या तो पैग़म्बर होगा और या पैग़म्बर का दामाद। जब मैंने देखा कि आपने उस भारी वज़न दार पत्थर को हटा दिया तो मेरी मुराद पूरी हो गई और मुझे जिस चीज़ का इन्तिज़ार था वह मिल गई। राहिब से उसकी गुफ्तुगू सुनकर हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इतना रोए कि आपकी दाढ़ी भीग गई फिर आपने फ़रमाया सब तारीफ़ अल्लाह तआला के लिये हैं कि मैं उसकी बारगाह में भूला नहीं हूँ बल्कि मेरा ज़िक्र उसकी किताबों में मौजूद है। (शवाहिदुन्नबुव्वत)

ऐ ईमान वालो ! इन दोनों वाक़ेआत को बार बार सुनने को जी चाहता है और हमारा ईमान भी मजबूत होता है और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इल्मे ग़ैब का भी पता चलता है कि जब अल्लाह तआला ने मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ऐसा इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है तो जो मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के भी आक़ा व मौला हैं यानी हमारे सरकार अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो अल्लाह तआला ने सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कैसा इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया होगा।

(3) हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में एक हब्शी गुलाम ने चोरी की, उसको आपके पास लाया गया, आपने उससे फ़रमाया तुमने चोरी की है ? उसने इक़रार करते हुए कहा, जी हाँ ! मैंने चोरी की है। आपने उस शख़्स का हाथ काट दिया, जब वह हाथ कटवाके चला तो रास्ते में उस शख़्स को हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और इब्नुल करा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिले और उस शख़्स से पूछा कि तेरा हाथ किसने काटा है ? उस शख़्स ने जवाब दिया अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुस्लेमीन दामादे रसूल शौहरे बतूल हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने। इब्नुल करा ने कहा उन्होंने तो तेरा हाथ काट दिया और तू उनकी तारीफ़ कर रहा है तो उस शख़्स ने कहा, मैं उनकी तारीफ़ क्यों न करूँ उन्होंने अद्ल किया है और हक़ यही था कि मेरा हाथ काटा जाता। उन्होंने अज़रूए हक़ मेरा हाथ काटकर मुझे जहन्नम से बचा लिया है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसका यह जवाब सुनकर हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में अर्ज किया, आपने उस हब्शी गुलाम को बुलाया और उसका हाथ उसके नीचे रखकर रुमाल से ढांप दिया और दुआ फ़रमाई तो हमने आसमान से एक आवाज़ सुनी कि रुमाल को हाथ से उठा दो तो जूँ ही हमने रुमाल उठाया उसका हाथ अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी क़ुदरत से दुरुस्त हो गया था।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 5, स. 479)

(4) अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाहि अलैह ने तबक़ात में बयान किया है कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु और आप दोनों साहेबज़ादे हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ऐसे शख़्स को देखा जिसका दायां हाथ सूखा हुआ और बेकार था। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस शख़्स से फ़रमाया क्या मुआमला है ?

उस शख़्स ने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं वह शख़्स हूँ जो गुनाहों में ज़िन्दगी गुज़ारता था और मेरे वालिद मुझे नसीहत करते थे कि अल्लाह तआला से डरो उसकी गिरफ़्त बहुत मज़बूत है। उसकी सज़ा बहुत सख़्त है। एक दिन मेरे वालिद ने मुझे सख़्ती से नसीहत की, मुझे बुरा लगा और मैं अपने वालिद को मार बैठा। उन्होंने क़सम खाली कि मैं अल्लाह तआला के घर मक्का मुकर्रमा में जाकर तेरे लिये बद्दुआ करुंगा। और वह मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए और बैतुल्लाह में मेरे लिये बद्दुआ की। बस उसी वक़्त से मेरा यह दायां हाथ ख़ुश्क और बेकार हो गया। मैं अपने किये पर बहुत नादिम और शर्मसार हूँ। मैंने अपने वालिद से मुआफ़ी मांग ली, यहाँ तक कि उनको राज़ी कर लिया। मेरे वालिद ने कहा मैं अल्लाह तआला के घर मक्का मुकर्रमा में जाकर फिर उसी जगह तेरे लिये दुआ करुँगा जिस जगह मैंने बद्दुआ की थी। मैं उनको लेकर मक्का मुकर्रमा के लिये रवाना हुआ। रास्ते में मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अगर तेरे वालिद तुझसे राज़ी होकर इस दुनिया से गए हैं तो तू यक़ीन कर ले कि अल्लाह तआला भी तुझ से राज़ी हो गया है हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और आहिस्ता आहिस्ता दुआ की उसी वक़्त उस शख़्स का हाथ दुरुस्त हो गया और मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अगर तेरे वालिद तुझसे ख़ुश न हुए होते तो मैं तेरे लिये दुआ न करता। (जमालुल औलिया, जि. 1, स. 28)

ऐ ईमान वालो! इस वाक़िआ से पता चलता है कि मां बाप को मारना कितना बड़ा अज़ाब है और मां बाप को मारने वाला दुनिया ही में मुसीबत व तकलीफ़ का हक़दार क़रार पाता है और दुनिया ही में सज़ा पाकर रहता है। इस लिये मां बाप की ना फ़रमानी से हमें बचना चाहिये बल्कि मां बाप की ख़िदमत करके ढेरों सवाब व रहमत हासिल करना चाहिये और दूसरी बात यह है कि मां बाप जिस शख़्स से नाराज़ हों उसके लिये मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी दुआ नहीं करते। अब ख़ुद ही बताओ कि वली की दुआ हो या उस्ताज़ व पीर व मुर्शिद की दुआ हो, कैसे मक़बूल होगी। जब हमसे हमारे मां बाप नाराज़ व ना ख़ुश हों। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो सारे औलिया के बादशाह और पीरों, फ़क़ीरों के इमाम हैं, जब वह उस शख़्स के लिये दुआ नहीं करते जिसके उससे मां बाप नाराज़ व ना ख़ुश हों। इस लिये हम पर लाज़िम है कि हम अपने मां बाप को राज़ी रखें ताकि उस्ताज़ व शैख़ और औलिया अल्लाह की दुआएं हमें नसीब हों और हम दीन व दुनिया में कामयाब व कामरान बन सकें।

(6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक सफ़र में हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में कौन शख़्स है? जो फ़लां कुंए से पानी भर के ले आए, ताकि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस शख़्स को जन्नत में जाने की ज़मानत दें हाज़िरीन में से एक शख़्स गया, फिर दूसरा शख़्स गया, फिर तीसरा शख़्स गया मगर कोई भी

उस कुएं से पानी न ला सका। उसकी वजह यह थी कि उस कुंए के पास बहुत से दरख़्त थे, जब कोई शख़्स उसके पास जाता तो दरख़्त हिलने लगते और उससे चीख़ने की आवाज़ें आने लगतीं। दरख़्त से आग के शोले गिरते, सर कटे हुए गिरतें तो जाने वाला डर कर वापस आ जाता और कोई भी शख़्स उस कुंए से पानी न ला सका।

अल मुख़्तसर! शाम का वक़्त हो गया प्यास की शिद्दत बढ़ने लगी तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि तुम जाओ और उस कुंए से पानी भर लाओ। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने साथ कुछ लोगों को लिये और मुश्कीज़ा टांगा और कुंए पर पहुँचे, दरख़्त हिलने लगे और उससे पहले से भी ज़्यादा भयानक आवाज़ें आना शुरू हुई मगर कुछ भी परवाह न किया, मुश्कीज़ा टांग कर कमर में पटका बाँध कर कुंए में उतर गए। कुंए से ऐसी आवाज़ें आ रही थीं जैसे किसी का गला दबाया जा रहा हो और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बान पर अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की सदाएं थीं और आप कह रहे थे कि मैं अल्लाह का बन्दा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का भाई हूँ। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुंए से पानी निकालकर दूसरे साथियों को दे रहे थे और सहाबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में पानी पेश कर रहे थे।

(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स 289)

ऐ ईमान वालो! ऐसे ख़तरनाक कुंए में कौन जा सकता है मगर अल्लाह तआला का शेर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गए और पानी भर कर लाए। इस लिये कि जिन्नात भी हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से डरते हैं और उनका एहतिराम करते हैं। या अली अल ग़ियास, या अली अल मदद

हज़रत मौला अली ने अपनी शहादत की ख़बर दी

17 रमज़ानुल मुबारक सन् 40 हि. को हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सुबह के वक़्त बेदार होकर अपने बड़े साहेबज़ादे हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा तो मैंने ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ किया या रसूलल्लालह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आपकी उम्मत ने मेरे साथ अच्छा सुलूक नहीं किया और सख़्त निज़ाअ (झगड़ा) बरपा कर दिया है। सरकार सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम ज़ालिमों के लिये दुआ करो तो मैंने दुआ की या अल्लाह तआला तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुँचा दे और मेरी जगह इन लोगों पर ऐसा शख़्स मुसल्लत कर दे जो बुरा हो।

अभी यह बयान फ़रमा ही रहे थे कि इब्ने नबह मुअज़्ज़िन ने आवाज़ दी अस्सलात अस्सलात यह हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ पढ़ने के लिये घर से चले

रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दे दे कर आप उठा रहे थे।

(अल इस्तीआब, जि. 2, स. 483, इब्ने असीर, जि. 3, स. 128, अल बिदाया वन्निहायह, जि. 8, स. 12)

हज़रत हसन बिन कसीर अपने वालिद से बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब नमाज़ के लिये घर से निकलने लगे तो बतखें आपके सामने आ गई और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगीं, हम उनको हटाने लगे तो आपने फ़रमाया इन को छोड़ दो यह नोहा कर रही हैं और आप तशरीफ़ ले गए। मस्जिद में वह बद बख़्त मलऊन अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम छुपा हुआ बैठा था, जब आप उसके क़रीब से गुज़रे और बक़ौल बाज़ आप मशगूल ब नमाज़ हुए तो उस शक़ी ने इस ज़ोर से आप पर तलवार का वार किया कि आपकी पेशानी कनपटी तक कट गई और तलवार दिमाग़ पर जाकर ठेहरी। तलवार लगते ही आपने फ़रमाया : فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ यानी रब्बे कअ़बा की क़सम मैं कामयाब हो गया। इब्ने मुल्जिम बद बख़्त क़ातिल पर चारों तरफ़ से लोग दौड़े और उसको गिरफ़्तार कर लिया।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 132)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि दो आदमी बड़े शक़ी और बद बख़्त हैं एक वह शख़्स जिसने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी को मारा और दूसरा वह शख़्स जो तेरे सर पर तलवार मारेगा और तेरी दाढ़ी ख़ून से तर हो जाएगी। (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 132, शमसुत्तवारीख़, जि. 4, स. 280)

मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसियत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बड़े साहेबज़ादे से फ़रमाया : ऐ हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैं तुझको वसियत करता हूँ और मेरी वसियत तुझको काफ़ी है और यह वही वसियत है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझको की है।

1) पस जब हालात ऐसे वैसे हों तो घर में रह और अपने मआसी पर रोया करो।
2) ऐ फ़रज़न्द मैं तुझको वसियत करता हूँ कि नमाज़ वक़्त पर अदा कर।
3) जब तू ज़कात दे तो उसके मुस्तहिक़ को दे।
4) खुशी और गुस्से की हालत में म्याना रवी और अद्ल इख़्तियार कर।
5) पड़ोसी के साथ नेकी कर, मेहमान की तौक़ीर व तकरीम कर।
6) मिस्कीनों, ग़रीबों से महब्बत कर और उनके पास बैठा रह।
7) मौत को याद कर और तवाज़ोअ इख़्तियार कर कि यह अफ़ज़ल इबादत है।
8) ख़लवत व जलवत (मजमा व तन्हाई) में अल्लाह तआला से डर।
9) हर क़ौल व फेअ़ल को शरीअत के मुताबिक़ कर।
10) आख़िरत के उमूर (कामों) में जल्दी कर और दुनिया के कामों में ताम्मुल कामों व तहक़ीक़ कर यहाँ तक कि उसमें तेरे लिये भलाई हो।

11) ऐसे मक़ामात पे न जा जहाँ तोहमत का अन्देशा हो।
12) ऐसी सोहबत में न जा जहाँ बुराई का अन्देशा हो, जो ख़ुद बुरा है अपने हम सोहबत को भी बिगाड़ देता है।
13) अपने तमाम आमाल को अल्लाह तआला के लिये ख़ास और ख़ालिस कर
14) गुनाह करने वाले को गुनाह से रोक, उसे अच्छी बात का हुक्म कर और बुरी बातों से मना कर।
15) नेक व सालेह शख़्स से दोस्ती रख ब सबब उसकी नेकी के।
16) फ़ासिक़ व गुनाहगार शख़्स से किनारा कर और दिल में उसको बुरा समझ। अपने हर काम में उसको दूर रख ताकि ऐसा न हो कि तू भी उस जैसा हो जाए
17) बाज़ार में न बैठा कर।
18) बे वक़ूफ़ों से वहस व हुज्जत न कर और उनको दोस्त भी न बना।
19) सुकूत को हमेशा अपने ऊपर लाज़िम कर ताकि ग़नीमत हासिल हो।
20) अपने साथी से होशियार रह और दुश्मन से इज्तिनाब कर।
21) ऐसी मजलिसों को इख़्तियार कर जिनमें ख़ुदाए तआला का ज़िक्र होता हो और दुआ ज़्यादा किया कर।

ऐ मेरे प्यारे फ़रज़न्द हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मैंने तुझे नसीहत करने में कुछ कोताही नहीं की, अब मेरे और तेरे दरमियान जुदाई होती है। अपने भाई हुसैन और दूसरे भाइयों के साथ नेक सुलूक इख़्तियार करते रहना। अल्लाह तआला मेरे बाद तुम्हारा निगेहबान है मैं उससे सवाल करता हूँ कि तुम्हारे कामों की इस्लाह करे और सरकशों और बाग़ियों के शर से तुम्हें मेहफ़ूज़ रखे। आमीन। बेटा सब्र करना यहाँ तक कि अल्लाह तआला का हुक्म आ जाए। لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ (नूरुल अब्सार, स. 117)

और हज़रत अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में आपकी वसियत को इस तरह नक़्ल किया है।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ख़्मी होने के बाद अपने बड़े बेटे इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वसियत की, मेरे फ़रज़न्द हसन मैं तुम को वसियत करता हूँ कि :

1) सबसे बड़ी तवंगरी (मालदारी) अक़्ल की तवानाई है।
2) बे वक़ूफ़ी से ज़्यादा कोई मुफ़्लिसी और तंगदस्ती नहीं।
3) ग़ुरूर व घमण्ड सबसे सख़्त वहशत हैं।
4) सबसे अज़ीम ख़ुल्क़ (आदत) महरबानी करम महरबानी है।

और दूसरी चार बातों से इज्तिनाब (परहेज़) करना है।

1) अहमक़ की महब्बत से बचो इस लिये कि नफ़ा पहुँचाने का इरादा करता है लेकिन [illegible] पहुँचाता है।

2) झूटे से परहेज करो इस लिये कि वह दूर को नजदीक और नज़दीक को दूर कर देता है
3) बख़ील से बचो दूर रहो इस लिये कि वह तुमसे उन चीज़ों को छुड़ा देगा जिनकी तुम्हें ज़रूरत है।
4) गुनाहगार, फ़ासिक़ से किनारा कश रहो, इस लिये कि वह तुम्हें थोड़ी चीज़ के बदले में बेच डालेगा।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत

सर चश्मए विलायत मौलाए कायनात सय्यदना अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ख्मी हालत में जुमा व सनीचर तक बक़ैदे हयात रहे और इतवार की शब में आपकी रूह परवाज़ कर गई। और एक यह भी रिवायत है कि 18 रमज़ान शरीफ़ या 19 रमज़ान शरीफ़ जुमा की शब में आप पर क़ातिलाना हमला हुआ और 21 रमज़ानुल मुबारक शब यक शम्बा सन् 40 हि. में आपका विसाल हुआ।

हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आपको गुस्ल दिया और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। इब्ने जोज़ी की रिवायत के मुताबिक़ आपका मज़ार शरीफ़ नजफ़ अशरफ़ में है। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपके क़ातिल इब्ने मुलजिम मलऊन को क़त्ल किया और उसके हाथ पैर को काटकर एक टोकरे में रखकर उसमें आग लगा दी जिससे उसकी लाश जलकर राख हो गई।

(अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 132)

मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अक़वाले मुबारका

सर चश्मए विलायत मख़ज़ने करामत काने इल्मो हिकमत अमीरुल मोमिनीन सय्येदुस्सादात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चन्द अकवाले मुबारका जो हीरे जवाहरात से कहीं ज़्यादा क़ीमत रखते हैं, रुश्दो हिदायत के लिये बयान किये जा रहे हैं।

1) हमारे आक़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दोस्त वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी करता है और आपका दुश्मन वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की ना फ़रमानी करता है।
2) बे शक अल्लाह तआला ने तुम पर फ़र्ज़ को लाज़िम किया है तो उन्हें ज़ाए न करो।
3) बड़े बड़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा यह है कि गिरे पड़े ग़मगीन लोगों की मदद की जाए और मुसीबत ज़दा लोगों को खुश किया जाए।
4) सख़ावत यह है कि साईल के सवाल से पहले दिया जाए और वह अता जो सवाल करने पर हो वह सख़ावत नहीं।
5) माल व दौलत तमाम ख़्वाहिशात की यानी गुनाहों की बुनियाद है।

6) औरत एक ऐसा विच्छू है जिसका काटना निहायत शीरीं है।
7) तू अपने बीवी बच्चों में मशगूल होने को अपना सबसे बड़ा शग्ल न बनाना क्योंकि अगर तेरे बीवी बच्चे अल्लाह तआला के दोस्तों में से हैं तो अल्लाह तआला अपने दोस्तों को कभी ज़ाए नहीं करता और अगर वह अल्लाह तआला के दुश्मनों में से हैं तो तेरे लिये अल्लाह तआला के दुश्मनों का ग़म खाना और उनमें मशगूल रहना किसी तरह भी जाइज़ नहीं।
8) जब अक्ल कामिल हो जाती है तो कलाम कम हो जाता है।
9) कोई दौलत अदब के बराबर नहीं और कोई मददगार आपसी मशवरे के बराबर नहीं।
10) सबसे बड़ी गुरबत अच्छे साथी का न होना।
11) सदक़ा देना एक कामियाब दवा है।
12) लोगों में अफ़ज़ल वह शख़्स है जो मुआफ़ करने वाला है।
13) तमअ यानी लालच इन्सान को ज़लील कर देती है।
14) जो शख़्स अहले बैत को महबूब रखता है उसको फ़क्र (ग़रीबी) का लिबास पहनने के लिये तैय्यार होना चाहिये।
15) कोई बुज़ुर्गी तक़वा व परहेज़गारी के बराबर नहीं।
16) कोई तिजारत नेक अमल के बराबर नहीं।
17) कोई इल्म ग़ौर व फ़िक्र के बराबर नहीं।
18) दुनिया की मिसाल उस सांप की सी है जो छूने से तो मुलाइम व नर्म मालूम होता है मगर उसके अन्दर ज़हर भरा हुआ है।
19) इल्मे दीन के बग़ैर इताअते इलाही नहीं हासिल कर सकता।
20) उन लोगों में से न हो जाओ जो बग़ैर अमल के आख़िरत में बख़्शिश की उम्मीद रखते हैं
21) ख़ामोशी इख़्तियार करने से हैबत पैदा होती है।
22) दुनिया की तलख़ी (कड़वाहट) आख़िरत की शीरीनी है और दुनिया की शीरीनी आख़िरत की तलख़ी है।
23) अपने दोस्त के साथ हद से ज़्यादा दोस्ती न बढ़ाओ शायद वह किसी दिन तुम्हारा दुश्मन हो जाए और तुम्हारे सारे राज़ ज़ाहिर कर दे।
24) वह थोड़ा अमल जिसे तू हमेशा करता है उस ज़्यादा अमल से बेहतर है जो तू कभी कभी करता है।
25) सवाल न करना फ़क़ीर की ज़ीनत है और शुक्र करना मालदार की ज़ीनत है।
26) सख़्त तरीन गुनाह वह है जिसे गुनाहगार हलका व मामूली समझे।
27) जिस शख़्स ने अपने नफ़्स के ऐब की तरफ़ नज़र की वह दूसरों की ऐब जोई से बाज़ रहा।
28) सबसे बड़ा ऐब यह है कि तू दूसरों के ऐब को देखे।
29) जो शख़्स मकान में जाकर दरवाज़ा बन्द कर ले उस शख़्स को रिज़्क़ कहाँ से हासिल

होगा। फ़रमाया जहाँ से अजल यानी मौत आएगी।

30) दो भूके ऐसे हैं जो कभी सेर नहीं होते। एक तालिबे इल्म, दूसरा तालिबे दुनिया।

31) इन्क़िलाबे हालात में मर्दों की असलियत मालूम हो जाती है।

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने वालिद के वास्ते से हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि इस्लाम में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल थे जिस तरह मेरा यक़ीन है और अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये सबसे ज़्यादा मुख़्लिस थे। वह ख़लीफ़ा हज़रत सिद्दीक़े अकबर और ख़लीफ़ा के ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा थे मेरी ज़िन्दगी की क़सम इस्लाम में उन दोनों का ख़ास मरतबा है और उन दोनों को नुक़सान पहुँचाना इस्लाम में बहुत बड़ा जख़्म है। अल्लाह तआला उन दोनों पर रहम फ़रमाए और जो वह दोनों अमल करते रहे उनकी अच्छी जज़ा अता फ़रमाए। (नहजुल बलाग़ह, स. 7)

एक दूसरे मौक़े पर यह इरशाद फ़रमाया कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद मुसलमानों ने अपने में से दो ऐसे अमीरों (पेशवाओं) को अपना ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया जो सालेह और नेक किरदार थे यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा इन दोनों ने सीरते नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा रखा और सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सरे मू तजावुज़ न किया। (तारीख़ुत्तवारीख़, जि. 2, स. 222)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला की बारगाहे बेकस पनाह में उसके प्यारे नबी और मेहबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से दुआ करते हैं कि वह हमें हक़ समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन व जुमला सहाबए किराम व अज़वाजे मुतह्हारत अलैहिमुर्रिज़वान से सच्ची महब्बत और उल्फ़त अता फ़रमाए। इस लिये कि अमीरे किशवरे विलायत बाबे मदीना इल्मो हिकमत सय्येदुस्सादात शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन नुफ़ूसे क़ुदसिया के फ़ज़ाइलो मरातिब बयान फ़रमाए और उनसे महब्बत व उल्फ़त फ़रमाई है और अल्लाह तआला मौलाए कायनात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अक़वाले मुबारका पर अमल करके दीन व दुनिया संवारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन। وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِين

وَصَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَخُلَفَائِهِ أَجْمَعِينَ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ٥

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

दूसरा जुमा..दूसरा बयान

फ़ज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत
(पारा 25, आयत 23, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़.........

सय्येदा फातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं, हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नूरे नज़र लख़्ते जिगर और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने अहले बैत में सबसे प्यारी हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी और हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की मां और तमाम जन्नती औरतों की सरदार हैं। अल्लाह तआला ने औलादे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरानी सिलसिला आप ही से जारी फ़रमाया।

आशिक़े रसूल इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़ेहरा है कली जिसमें हुसैन व हसन फूल

ख़ूने ख़ैरुर्रसुल से है जिनका ख़मीर
उन की बे लौस तीनत पे लाखों सलाम

उस बतूल जिगर पारए मुस्तफ़ा
हजला आराए इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

जिस का आंचल न देखा मह व महर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

सय्येदा, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

आपका नाम फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) आपके अलक़ाब सय्येदा, ज़ेहरा, बतूल, तैय्यिबा, ताहिरा हैं।

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है :

إِنَّمَا سَمَّيْتُ اِبْنَتِي فَاطِمَةَ لِأَنَّ اللهَ فَطَمَهَا وَمُحِبِّيهَا عَنِ النَّارِ ٥

यानी मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा है कि अल्लाह तआला ने उसको और उसके चाहने वालों को दोज़ख से आज़ाद किया है। (अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 151)

हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ فَاطِمَةَ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَ اللهُ ذُرِّيَّتَهَا عَلَى النَّارِ ٥

बे शक फ़ातिमा पाक है और अल्लाह तआला ने उसकी औलाद को दोज़ख पर हराम कर दिया है। (अल मुस्तदरिक हाकिम जि. 3, स. 152)

आपकी विलादत

हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की पैदाइश की तारीख में इख्तिलाफ़ है, कुछ लोगों ने कहा कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्र शरीफ़ इक्तालीस साल की थी आप पैदा हुईं और कुछ लोगों का बयान है कि ऐलाने नुबुव्वत से एक साल क़ब्ल आपकी विलादत हुई और अल्लामा जोज़ी ने लिखा है कि ऐलाने नुबुव्वत से पाँच साल क़ब्ल ख़ानए काबा की तामीर के वक़्त आपकी पैदाइश हुई। हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेटियों में सबसे छोटी बेटी हैं और आपकी मां हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं।

आपका निकाह : मशहूर आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हिजरत के दूसरे साल अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किया। बाज़ रिवायात के मुताबिक़ सय्येदा फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह मुहर्रम में हुआ और रुख़सती ज़िल हिज्जा में हुई। उस वक़्त सय्येदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की उम्र शरीफ़ पन्द्रह साल और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र पाक इक्कीस साल थी।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह के

बाद आपकी हयाते ज़ाहिरी में किसी और से निकाह नहीं किया। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रुख़्सती की रात आपके लिये दुआ फ़रमाई। ऐ अल्लाह! इन्हें और इनकी औलाद को तेरी पनाह में देता हूँ। (बरकाते आले रसूल, स. 124)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत सय्येदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की उम्र 18 साल और बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ साढ़े पन्द्रह साल की हुई। हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुक्म से सय्येदा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ बड़ी सादगी से कर दिया। उस वक़्त हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र शरीफ़ 24 साल के क़रीब थी। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पानी पर दम करके दोनों पर उसके छींटे मारे और फ़रमाया मैं तुम्हें और तुम्हारी औलाद को शैतान मरदूद से अल्लाह तआला की पनाह में देता हूँ। (कन्जुल उम्माल, जि. 7, स. 113)

आपका मेहर : सय्येदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर कि जिस पर अक़्दे अक़दस हुआ, चार सौ मिसक़ाल चाँदी थी यानी पूरे 160 रुपये। (फ़तावा रज़विया, जि. 5, स. 325)

आपका का जहेज़ : सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी नूरे नज़र लख़्ते जिगर सय्येदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को जहेज़ में बान की एक चार पाई और चमड़े का एक गद्दा जिसमें रुई की जगह खजूरे के पत्ते भरे हुए और एक छागल, एक मशक, दो चक्कियाँ और मिट्टी के दो घड़े थे। (सीरतुस्सहाबियात, स. 100)

शादी से पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास रहमत व बरकत के साए में रहते थे। शादी के बाद घर की ज़रूरत हुई तो हज़रत हारिसा बिन नोअमान अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना एक मकान हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दे दिया। जब सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा नए घर में गईं तो हमारे हुज़ूर अल्लाह तआला के नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उनके घर पर तशरीफ़ लाए, दरवाज़े पर खड़े होकर इजाज़त तलब की, फ़िर अन्दर तशरीफ़ लाए, एक बरतन में पानी लिया और अपने दोनों हाथ उसमें डाला, वह पानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के जिस्म पर छिड़का और फ़रमाया : मेरी प्यारी बेटी फ़ातिमा ? मेरे ख़ानदान में जो शख़्स सबसे बेहतर है मैंने उसके साथ तुम्हारा निकाह किया है। (ज़ुरक़ानी)

आपकी सादगी : हुज़ूर रहमते आलम मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी बेटी हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियलल्लाहु अन्हा हैं मगर सादगी का यह आलम है कि अपने घर का सारा काम ख़ुद करती हैं, झाड़ू अपने हाथ से देती हैं, ख़ुद खाना पकाती हैं चक्की चलाकर अपने हाथ से आटा पीसती हैं, मशक में पानी भर कर लाती हैं, जिसकी वजह से हाथ में छाले और घट्टे पड़ गए हैं। (सीरतुस्सहाबियात, स. 102)

इमाम अहमद जय्यिद सनद से रिवायत करते हैं कि हज़रत अलिये मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को फ़रमाया, प्यारे नबी मालिके रहमतो दौलत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास बहुत से गुलाम आए हैं तुम भी ख़िदमत के लिये कोई ग़ुलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मांग लाओ फिर दोनों बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए, हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आटा पीसते पीसते मेरे हाथों में घट्टे पड़ गए हैं, अब अल्लाह तआला ने आपको वुसअत अता फ़रमाई है, लिहाज़ा आप हमें एक ख़ादिम अता फ़रमाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ब ख़ुदा इस तरह नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें ख़ादिम अता करूँ और अहले सुफ़्फ़ा भूक के सबब अपने पेट पर पत्थर बाँध रहे हों। फिर फ़रमाया क्या मैं तुम दोनों को तुम्हारे सवाल से बेहतर चीज़ की ख़बर न दूँ? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ। फ़रमाया कुछ कलेमात मुझे जिब्रईल अलैहिस्सलाम के ज़रीए बतलाए गए हैं, जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो आयतुल कुर्सी पढ़ो फिर 33 मरतबा सुब्हानल्लाह, 33 मरतबा अलहम्दु लिल्लाह और 34 मरतबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। यह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है। (बुख़ारी शरीफ़, बरकाते आले रसूल, स. 124)

एक रिवायत में आता है कि इन्हीं कलेमात को हर नमाज़ के बाद पढ़ने का हुक्म हुआ और फ़रमाया गया कि इन कलेमात की बरकत से अल्लाह तआला पढ़ने वाले को दीन व दुनिया में ग़नी कर देगा फिर कोई हाजत ही नहीं रहेगी और इन तस्बीहात को तस्बीहे फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा भी कहा जाता है।

अल्लाह तआला ने हज़रत अलिये मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हज़रत फ़ातिमामतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की हयाते मुबारका में किसी और से निकाह हराम फ़रमा दिया। (अबू दाऊद शरीफ़, ब हवाला बरकाते आले रसूल, स. 127)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महबूब तरीन ज़ात

हज़रत जमीअ बिन अमीर तैमी रिवायत करते हैं कि मैं अपनी फूफी के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैं ने पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सब से ज़्यादा महबूब कौन था? قَالَتْ فَاطِمَةُ فَقِيْلَ مِنَ الرِّجَالِ قَالَتْ زَوْجُهَا

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 227, मिश्कात, स. 570)

तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया : फ़ातिमा। फिर मैं ने अर्ज़ किया कि मर्दों में कौन सब से ज़्यादा महबूब था? तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा ने फ़रमाया उनके शोहर (अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

ऐ ईमान वालो ! उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की रिवायत की हुई इस हदीस शरीफ़ और इस तरह की बे शुमार हदीसें आपसे रिवायत हैं। हमें चाहिये कि तअस्सुब व इनाद से अपने आपको दूर रखते हुए इन्साफ़ से ग़ौर करें तो मालूम हो जाएगा कि हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की बयान की हुई हदीसें उनके अद्ल व इन्साफ़ और दयानत व सदाक़त की बहुत बड़ी दलील होने के साथ हज़रत आएशा सिद्दीक़ा और सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के दरमियान गेहरी महब्बत की अलामत हैं। अब वह लोग जो मां आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की शान में बकवास करते हैं और उनकी शान में गालियाँ बकते नज़र आते हैं और हज़रत सय्यिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से झूटी महब्बत का दम भरते नज़र आते हैं यक़ीनन ऐसे लोग अपना हश्र ख़राब कर रहे हैं और अपना ठिकाना जहन्नम बना रहे हैं। हम अल्लाह तआला से अमान के तालिब हैं।

दूसरी हदीस : यूँ रिवायत है कि हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को लोगों में सब से ज़्यादा महबूब कौन थे तो हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया, आएशा सिद्दीक़ा थीं। फिर पूछा गया कि मर्दों में ? तो सैयेदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया उनके बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 461)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब सफ़र के लिये बाहर तशरीफ़ ले जाते।

وَاِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ كَانَ اَوَّلَ النَّاسِ بِهٖ عَهْدًا فَاطِمَةُ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا

(अल मुस्तदरक हाकिम, जि. 3, स. 156)

और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सब से पहले हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मुलाक़ात फ़रमाते।

ऐ ईमान वालो ! हदीस शरीफ़ में साफ़ ज़ाहिर है कि बेटी से महब्बत करना सुन्नत है। जो शख़्स भी सफ़र से आए और पहले अपनी बेटी से मुलाक़ात करे गोया उस शख़्स ने सुन्नत पर अमल किया और बेटी को तोहफ़ा देना भी सुन्नत है।

फ़ातिमा जन्नती औरतों की सरदार हैं

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत करती हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने विसाल फ़रमाने के पहले आख़री दिनों हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के कानों में कुछ राज़ की बातें कहीं जिस को सुन कर आप रोने लगीं फिर थोड़ी देर बाद हज़रत सय्येदा मुस्कुरा पड़ीं, तो हज़रत सय्येदा से पूछा गया कि आप के

रोने की क्या वजह थी तो आप ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल की खबर सुन कर मैं रोने लगी और मुस्कुराने, हंसने की वजह मालूम करने पर सय्येदा ने फ़रमाया कि आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلَا تَرْضِيْنَ اَنْ تَكُوْنِىْ سَيِّدَةَ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَوْنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ

(बुख़ारी, जि. 1, स. 512, मुस्लिम, जि. 2, स 591)

ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तमाम जन्नती औरतों की सरदार तुम हो या तमाम मोमिन औरतों की सरदार तुम हो।

फ़ातिमा तमाम जहाँ की औरतों की सरदार हैं : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلَا تَرْضِيْنَ اَنْ تَكُوْنِىْ سَيِّدَةَ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَوْنِسَاءِ الْعٰلَمِيْنَ

ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तमाम जन्नती औरतों की सरदार तुम हो या तमाम जहाँ की औरतों की सरदार तुम हो।

तो हज़रत सय्येदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया :

يَا اَبَتِ فَاَيْنَ مَرْيَمُ ऐ अब्बा जान ! हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का क्या मक़ाम है ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

تِلْكَ سَيِّدَةُ نِسَاءِ عَالَمِهَا वह अपने ज़माने की औरतों की सरदार हैं।

(अश्शरफुल मूयद, स. 54, अल इस्तीआब, जि. 2, स. 771)

हमारे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَرْبَعُ نِسْوَةٍ سَادَاتُ عَالَمِهِنَّ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ وَاٰسِيَةُ بِنْتُ مُزَاحِمٍ وَخَدِيْجَةُ

بِنْتُ خُوَيْلَدَ وَفَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) وَاَفْضَلُهُنَّ فَاطِمَةُ

(दुर्रे मन्सूर, जि. 2, स. 23, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 6, स. 227)

चार औरतें अपने ज़माने की औरतों की सरदार हैं

हज़रत मरयम बिन्ते इमरान (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मां) हज़रत आसिया बिन्ते मुज़ाहिम (फ़िरऔन की नेक बीवी) हज़रत ख़दीजा ज़ौजा मोहतरमा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और इनमें सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं।

हर एतिबार से यह हक़ीक़त है कि हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हज़रत मरयम और हज़रत आसिया से अफ़ज़ल हैं। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)

डॉक्टर इक़बाल कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मां हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को सिर्फ़ एक निस्बत हासिल है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

की मां हैं लेकिन हजरत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को तीन निस्बतें हासिल हैं :

पहली निस्बत : अव्वलीन व आख़रीन के इमाम, सय्यिदुल मुरसलीन रहमतुल लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नूरे नज़र और बेटी हैं।

दूसरी निस्बत : ताजदारे विलायत मौलाए कायनात हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हैं।

तीसरी निस्बत : नौजवानाने जन्नत के सरदार, जमाअते शोहदा के इमाम हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हुमा की मां हैं

फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है : हज़रत मसूर बिन मखरमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है : اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ قَالَ فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِّنِّیْ فَمَنْ اَبْغَضَهَا فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ

(बुखारी, जि. 2, स. 532, मुस्लिम, जि. 2, स. 290)

यानी बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया : फ़ातिमा मेरे जिस्म का हिस्सा है, पस जिसने उसे नाराज किया बेशक उस ने मुझे नाराज़ किया।

आलिमे रब्बानी इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि बहुत से मुहक़्क़ेक़ीन जिनमें अल्लामा तक़ीयुद्दीन सुबकी, अल्लामा जलालुद्दीन सियूती, अल्लामा बदरुद्दीन ज़रकशी और तक़ीयुद्दीन मुक़रेज़ी शामिल हैं। तसरीह फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातिमा जहान की तमाम औरतों की हत्ता कि सय्यिदा मरयम से भी अफ़ज़ल हैं। अल्लामा सुबकी से जब इस बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया : हज़रत फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अफ़ज़ल हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 266)

ऐसा ही सवाल इब्ने अबू दाऊद से किया गया तो उन्होंने फ़रमाया :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : फ़ातिमा मेरे जिस्म का हिस्सा हैं मैं किसी को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पारए जिस्म के बराबर क़रार नहीं दे सकता। (बरकाते आले रसूल, स. 122)

अल्लामा मुनादी इस की शरह में फ़रमाते हैं (यानी वह हदीस शरीफ़ जो पहले बयान की गई यानी फ़ामिता मेरे जिस्म का टुकड़ा है) सलफ़ व ख़लफ़ की एक जमाअत ने फ़रमाया हम किसी को नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की लख़्ते जिगर (यानी हज़रत फ़ातिमा) के बराबर क़रार नहीं देते। (बरकाते आले रसूल, स. 122)

हश्र में शाने फ़ातिमा : बरोज़े मेहशर अल्लाह तआला अपने प्यारे रसूल की बेटी हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को ऐसी इज़्ज़त व अज़मत अता फ़रमाएगा जो किसी बेटी को नसीब नहीं होगा। इसकी वजह यह है कि हज़रत सय्यिदा ने दुनिया में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म पर अमल किया

और मुकम्मल हिजाब व पर्दा का एहतिमाम रखा तो बरोज़े हश्र रब तआला का इनआम मिलेगा और उनके हिजाब व परदे का इन्तिज़ाम इस सूरत में किया जाएगा।

हजरत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ نَادٰى مُنَادٍ مِّنْ وَّرَاءِ الْحِجَابِ يَا أَهْلَ الْجَمْعِ غُضُّوا أَبْصَارَكُمْ
عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ مُحَمَّدٍ حَتّٰى تَمُرَّ

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 153)

जब क़ियामत का दिन होगा तो (अचानक) पर्दो के पीछे से कोई मुनादी ऐलान करेगा ऐ अहले मेहशर ! अपनी निगाहें झुका लो, फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम (आ रही हैं) हत्ता कि वह गुज़र जाऐंगी।

बहुत से सहाबए किराम से मरवी है कि नबिये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कि कियामत के दिन निदा करने वाला बातिन अर्श से निदा करेगा :

يَا أَهْلَ الْجَمْعِ نَكِّسُوا رُؤُوسَكُمْ وَغُضُّوا أَبْصَارَكُمْ حَتّٰى تَمُرَّ فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ عَلَى الصِّرَاطِ

यानी ऐ मेहशर वालो ! अपने सरों को झुका लो और अपनी आँखों को बन्द कर लो ताकि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पुल सिरात से गुज़र जाएं। (अस्सवाएकुल मुहरिका, स. 116, बरकाते आले रसूल, स. 267)

सरकार आला हज़रत फ़रमाते हैं :

जिसके आंचल को न देखा मह व महर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ ابْنَتِي فَاطِمَةَ حَوْرَاءُ آدَمِيَّةٌ لَمْ تَحِضْ وَلَمْ تَطْمَثْ

(नसाई व हवाला बरकाते आले रसूल, स. 267)

यानी मेरी बेटी फ़ातिमा इन्सानी हूर है जिसे कभी हैज़ नहीं आया।

मेरे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी बेटी सय्यिदा, ज़ाहिरा, तैय्यिबा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़ास फ़ज़ीलत है कि उन्हें कभी हैज़ नहीं आता था।

जब उनके घर बच्चे की विलादत होती तो थोड़ी देर बाद वह पाक हो जातीं यहाँ तक कि उनकी नमाज़ क़ज़ा न होती। इस लिये उनका नाम ज़ेहरा रखा गया जब उन्हें भूक लगती तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उनके सीने पर अपना दस्ते मुबारक रख देते तो भूक मेहसूस नहीं होती। जब हज़रत सय्यिदा तैय्यिबा के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने खुद गुस्ल किया और वसियत की कि कोई उन्हें मुन्कशिफ़ न करे। चुनाँचे हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वसियत के मुताबिक़ हज़रत सय्यिदा को उसी गुस्ल के साथ दफ़्न किया। (ख़साइसे कुबरा, बरकाते आले रसूल, स. 123)

सरकार आला हजरत इमाम अहमद रज़ा फ़रमाते हैं :

सय्यिदा, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़.........

रज़ाए फ़ातिमा रज़ाए ख़ुदा है

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया : إِنَّ اللّٰهَ يَغْضَبُ لِغَضَبِكِ وَيَرْضٰى لِرِضَاكِ

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 154)

बे शक अल्लाह तआला (ऐ बेटी) तेरी नाराज़गी से नाराज़ होता है और तेरी ख़ुशी से ख़ुश हो जाता है।

ऐ ईमान वालो ! रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी बेटी फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से जो महब्बत है उसकी मिसाल दुनिया में मौजूद ही नहीं। अब वह लोग जो सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा या उनकी औलाद की बे अदबी और गुस्ताख़ी करते हैं, इस हदीस शरीफ़ के बारे में उन लोगों को ग़ौर व फ़िक्र करना चाहिये और आख़िरत ख़राब हो जाए उससे पहले तौबह करके हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को राज़ी कर लेना चाहिये। इस लिये कि आले रसूल की ख़ुशी में सय्यिदा की ख़ुशी है और सय्यिदा फ़ातिमा की ख़ुश्नोदी में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुश्नोदी व रज़ा है। अल्लाह तआला सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा और उनकी आल के सदक़े अमान में रखे और ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

बुज़ुर्गों के हाथ चूमना सुन्नत है

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि मैंने किसी को नहीं देखा जो बैठने, उठने, चलने फिरने, हुस्ने ख़ुल्क़ और गुफ़्तुगू में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हज़रत फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ज़्यादा मुशाबह हो।

قَالَتْ وَكَانَتْ إِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ رَحَّبَ بِهَا وَقَامَ إِلَيْهَا فَأَخَذَ بِيَدِهَا فَقَبَّلَهَا وَأَجْلَسَهَا فِي مَجْلِسِهِ

(तिर्मिज़ी, अल मुस्तदरिक, लिल हाकिम, जि. 3, स. 154)

यानी हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास आतीं तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुश हो जाते और उनके लिये खड़े हो जाते (महब्बत से इस्तिक़बाल के लिये) हज़रत फ़ातिमा का

हाथ पकड़ लेते उसको बोसा देते और फिर अपनी नशिस्त पर सय्यिदा फ़ातिमा को बिठाते थे

وكان النبي صلى الله عليه وسلم إذا دخل عليها قامت من مجلسها فقبلته وأجلسته في مجلسها

और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत फ़ातिमा के पास तशरीफ़ ले जाते तो सय्यिदा फ़ातिमा खड़ी हो जाती और आपके दस्ते मुबारक को बोसा देतीं और अपनी जगह पर बिठातीं। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मुस्तदरक हाकिम, जि. 3, स. 154)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीसे पाक से मालूम हुआ कि अगर बड़ा अपने छोटे के लिये अज़ राहे महब्बत खड़ा हो जाए और उसके हाथों को चूम ले तो जाइज़ और सुन्नत है और अगर छोटा अपने बड़े की ताज़ीम के लिये अपनी जगह छोड़कर खड़ा हो जाए और अपनी जगह पर अपने बुज़ुर्ग को बिठाए और उसके हाथों को चूम ले तो यह भी सवाब व सुन्नत है। जैसा कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ किया और हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने अब्बा जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तशरीफ़ लाने पर आप खड़ी हो गईं और आपके हाथों को बोसा दिया और अपनी जगह पर बिठाया। लिहाज़ा साबित हुआ कि अगर छोटा अपने बुज़ुर्ग के लिये ताज़ीमन खड़ा होता है और उनके हाथों को चूमता है तो यह अमल भी सुन्नत से साबित हुआ और अगर इस तरह कोई बुज़ुर्ग महब्बत में अपने छोटे के साथ सुलूक करते हैं तो यह भी जाइज़ व दुरुस्त है।

अब उन गुमराह और बे दीन लोगों का कहना कि अल्लाह तआला के सिवा किसी और की ताज़ीम के लिये खड़ा होना शिर्क व बिदअत है तो यह सरासर गलत और बे दीनी है और इस्लाम की तालीमात से जाहिल होने का सुबूत है। अल्लाह तआला अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आपकी आले पाक व असहाब की सुन्नतों की पैरवी करते हुए बुज़ुर्गों की ताज़ीम और छोटों से प्यार की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

सय्यिदा फ़ातिमा की कनाअत : हमारे सरकार दोनों आलम के मालिको मुख़्तार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़क्र व फ़ाक़ा पर क़नाअत पसन्द फ़रमाया और दुनिया की नेअमत व दौलत, ऐशो इशरत व राहत से इज्तिनाब (परहेज़) इख़्तियार किया चूँकि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी प्यारी बेटी सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से खास महब्बत थी इस लिये जो कुछ आपने अपने लिये पसन्द फ़रमाया उन्हीं चीज़ों को अपनी बेटी सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लिये पसन्द फ़रमाया।

हज़रत सोबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए, मैं भी सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम के हमराह था। हजरत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने गले में से एक सोने की जंजीर उतारी और आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दिखाया और अर्ज़ की, अब्बा जान यह सोने की जंजीर अबुल हसन (हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने मुझको तोहफ़ा दिया है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! क्या तुझे यह अच्छा लगता है कि लोग कहें कि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों में जहन्नम की जंजीर है? यह फ़रमाकर आप तशरीफ़ ले गए और वहाँ न बैठे हज़रत फ़ातिमा ने उसी वक़्त उस सोने की जंजीर को बेच दिया, जो क़ीमत मिली उससे एक गुलाम खरीद कर राहे ख़ुदा में आज़ाद कर दिया :

فَبَلَغَ ذٰلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰى فَاطِمَةَ مِنَ النَّارِ

तो जब यह ख़बर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहुँची तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये, जिसने फ़ातिमा को दोज़ख़ से नजात दी। (अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 153)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हमारे पास कोई बिस्तर नहीं है, एक मेंढे की खाल के अलावा जिस पर हम रात को सोते हैं और दिन में उसी खाल पर अपने ऊँट को चारा वग़ैरह डालते हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी सब्र करो कि हज़रत मूसा बिन इमरान ने अपनी बीवी के साथ दस बरस इस तरह गुज़ारे थे कि उनके लिये कोई बिस्तर वग़ैरह न था सिवाए एक चादर के जो छोटी सी थी। (नुरक़ानी अलल मवाहिब)

मशहूर बुज़ुर्ग हुज्जतुल इस्लाम इमाम मोहम्मद ग़ज़ाली तहरीर फ़रमाते हैं कि :

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह सुबह के वक़्त हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए, दरवाज़े पर पहुँचकर अपनी बेटी फ़ातिमा को सलाम किया और फ़रमाया कि एक शख़्स मेरे साथ है, क्या हम अन्दर आ जाएं? हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे बदन पर एक पुरानी चादर के अलावा और कोई कपड़ा नहीं है और उससे सारा बदन नहीं छुपता। आपने अपनी पुरानी चादर उनकी तरफ़ फेंक दी जिससे हज़रत फ़ातिमा ने अपना बदन छुपाया। फिर आप घर के अन्दर तशरीफ़ लाए, फ़रमाया बेटी क्या हाल है? हज़रत सय्यिदा ने अर्ज़ किया अब्बा जान! कल से मैंने कुछ खाया नहीं है, फ़ाके से हूँ भूक ने बहुत तंग कर दिया है। यह सुनकर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँखों में आंसू आ गए और फ़रमाया ऐ

मेरी प्यारी बेटी ! तीन दिन हो गए हैं मैंने भी कुछ नहीं खाया है और अगर मैं अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज करूँ तो रब तआला मुझे जरूर खिलाए लेकिन मैंने दुनिया पर आखिरत को तरजीह देकर फक्र व फाका को पसन्द किया है। (कीमियाए सआदत)

हजरत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया : जो शख्स ब नियते अज्र यानी अल्लाह तआला की खुश्नोदी के लिये भूका रहेगा वह शख्स कियामत के दिन की सख्ती से महफूज़ रहेगा (कन्ज़ुल उम्माल)

आलिमे रब्बानी हुज्जतुल इस्लाम हजरत इमाम मोहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत आएशा फरमाती हैं कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया : ऐ आएशा बराबर जन्नत का दरवाज़ा खटखटाती रहा करो, मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जन्नत का दरवाज़ा किस चीज़ से खटखटाएं ? फ़रमाया भूक और प्यास से। (कीमियाए सआदत)

मुसलमानो ! अल्लाह तआला ने आपको खूब नेअमत व दौलत से नवाज़ा है लेकिन कभी कभी जान बूझकर अल्लाह तआला की रज़ा व खुश्नोदी के लिये भूके और प्यासे भी रहा करो कि बन्दे का यह अमल अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है और भूक से बे शुमार बीमारियों का इलाज भी है।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक हदीस शरीफ़ नक़्ल फरमाते हैं कि हजरत हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने डकार आई। आप ने फरमाया इस डकार से बचो इस लिये कि जो शख्स इस दुनिया में बहुत सेर है वह शख्स क़ियामत के दिन भूका होगा और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया तुम भूक और प्यास से अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया करो इस लिये कि उस का सवाब कुफ्फ़ार के साथ जिहाद करने के बराबर है। (कीमियाए सआदत)

सहाबए किराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अफ़ज़ल तरीन शख्स कौन है ? फरमाया जो थोड़ा खाए, थोड़ा सोए, थोड़ा हंसे और थोड़े कपड़े पर क़नाअत करे और अपने दीन व ईमान की हिफ़ाज़त के लिये तफ़क्कुर करे। (कीमियाए सआदत)

हजरत अब्दुल्लाह बिन मिगफ़ल फरमाते हैं कि एक शख्स ने हमारे प्यारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम खुदा की क़सम मैं आप को महबूब रखता हूँ, फ़रमाया देख लिया कह रहा है ? कहा उस शख्स ने, कि खुदा की क़सम वाक़ेई मैं आप को महबूब रखता हूँ और इस तरह तीन मरतबा उस शख्स ने कहा तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर तू वाक़ेई मुझ को महबूब रखता है तो फक्र व फ़ाका के लिये तैय्यार हो जाओ क्यों कि जो मुझ को महबूब रखता है फक्र व फ़ाका बहुत जल्द उस की तरफ़ आता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर में तीन दिन तक बराबर गेहूँ की रोटी किसी ने नहीं खाई। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

जन्नती जवानों के सरदार हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हम सब घर वालों को एक दिन के बाद खाना मयस्सर आया, मैं और मेरे वालिद (हज़रत अली) और मेरे भाई (इमाम हुसैन) रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा खाना खा चुके थे और मेरी मां हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अभी खाना नहीं खाया था कि दरवाज़ा पर एक साइल ने आवाज़ दी। ऐ रसूलुल्लाह की बेटी तुम को सलाम हो। मैं दो दिन से भूका हूँ, मुझे खाना दो। यह सुनकर मेरी वालिदा माजिदा ने मुझसे फ़रमाया बेटा जाओ यह खाना अल्लाह तआला के उस साइल को दे दो मुझे तो एक दिन का फ़ाक़ा है और उस शख़्स ने दो दिन से खाना नहीं खाया है। (सीरते फ़ातिमा)

. मशहूर मुहद्दिस इब्ने जोज़ी फ़रमाते हैं कि आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को एक नई क़मीस दी थी, कुछ दिनों के बाद सय्यिदा के दरवाज़े पर एक फ़क़ीर आया और उसने आवाज़ लगाई, ऐ नबी के घर वालो मैं मोहताज हूँ, कोई फटा पुराना कपड़ा हो तो मुझको दे दो। सय्यिदा के पास उस वक़्त एक पुरानी क़मीस थी, फ़रमाती हैं जब उस पुरानी क़मीस के देने का इरादा किया तो यह आयते करीमा याद आई : لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ○

यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम भलाई की आला मन्ज़िल को नहीं पहुँच सकते जब तक अल्लाह तआला की राह में अपनी पसन्दीदा चीज़ न दोगे।

फ़ौरन हज़रत सय्यिदा ने पुरानी क़मीस रख दी और नई क़मीस निकालकर साइल को पेश कर दी। (नुज़हतुल मजालिस)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ज़िन्दगी का यह नूरानी वाक़िआ हम सब के लिये दर्से इबरत है।

आज हमारा हाल बहुत बुरा हो चुका है, ग़रीबों, फ़क़ीरों को कुछ देते भी हैं, गई गुज़री चीज़ें जिसको कोई भी न पूछे। शादी ब्याह में खाना बच गया तो मदरसों में उन बच्चों के लिये भेज देते हैं जो मेहमाने रसूल हैं, वह भी बे वक़्त।

ऐ मुसलमान ! तुझे क्या हो गया है, जिनकी शफ़ाअत ही से तुझे जन्नत मिलने वाली है उनके मेहमानों के साथ तुम्हारा क्या सुलूक है। ख़ुद के मेहमान को दावत देकर बड़ी इज़्ज़त से खिलाया और जो कुछ बचा, कुचा था नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मेहमानों के लिये मदरसे में भेज दिया। होश संभाल लो और क़ियामत के दिन से डरो, अल्लाह तआला अपने अमान में रखे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक शख़्स बनी सुलैम में से था हमारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में

गुस्ताख़ी किया करता था, लेकिन हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी गुफ़्तुगू और अच्छे अखलाक़ का उस पर यह असर हुआ कि वह शख़्स मुसलमान हो गया सहाबए किराम ने उस शख़्स को क़ुरआन सिखाया। हज़रत सअद बिन उबादह ने अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इशारे पर अपनी ऊंटनी उसको दे दी और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स को अपना अमामा अता फ़रमा दिया।

फ़िर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कौन है जो इस शख़्स के खाने का इन्तिज़ाम कर दे। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उठे और चन्द मकानों पे गए लेकिन इत्तिफ़ाक़ से कुछ न मिला।

फ़िर हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान पर हाज़िर हुए और दरवाज़ा खटखटाया। घर के अन्दर से हज़रत सय्यिदा ने फ़रमाया कौन है ? अर्ज़ किया मैं सलमान फ़ारसी हूँ। आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से एक शख़्स के लिये खाना लेने आया हूँ। यह सब माजरा सुनकर सय्यिदा के आँखों में आंसू भर आए और कहने लगीं ऐ सलमान उस ख़ुदा की कसम जिसने मेरे बाप को रसूल बना कर भेजा है। आज तीसरा दिन है कि हम सब घर वाले फ़ाके से हैं। लेकिन हमारे घर से कोई ख़ाली वापस चला जाए यह भी गवारा नहीं, यह एक ही मेरे पास चादर है जिस को ओढ़ कर मैं नमाज़ पढ़ती हूँ। इसी चादर को ले जाओ और शमऊन यहूदी के पास जाकर कहो कि फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की यह चादर है, इसे रख लो और थोड़ा सा जो क़र्ज़ दे दो। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस चादरे मुबारक को ले कर शमऊन यहूदी के पास गए और सारा हाल बयान किया। शमऊन यहूदी कुछ देर तक उस चादरे नूर को देखता रहा और उस पर एक ख़ास कैफ़ियत तारी हो गई और कहने लगा ऐ सलमान ! अल्लाह तआला की क़सम यही वह नेक लोग हैं जिन की ख़बर अल्लाह तआला ने हमारे पैग़म्बर मूसा अलैहिस्सलाम को तोरात में दी है। मैं सच्चे दिल से तौबह करता हूँ और हज़रत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के बाप मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ईमान लाता हूँ यह कह कर उस ने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

उस के बाद शमऊन ने हज़रत सलमान फ़ारसी को जौ दिये और बड़े अदब व एहतिराम के साथ सय्यदा की वह चादरे नूर भी वापस कर दी। सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जौ पीसा और रोटियाँ तैय्यार कीं और हज़रत सलमान फ़ारसी को सब रोटियाँ अता कर दीं। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ने गुज़ारिश की कि कुछ रोटियाँ बच्चों के लिये रख लें। फ़रमाया यह सब अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है अब इस में से कुछ लेना हमारे लिये दुरुस्त नहीं है।

हज़रत सलमान फारसी रजियल्लाहु तआला अन्हु रोटियाँ ले कर दरबारे नुबुव्वत व रिसालत में हाजिर हुए और तमाम किस्सा आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सुनाया। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वह एक रोटी उस शख्स को अता फरमा दी और अपनी प्यारी बेटी हजरत सय्यदा फातिमा रजियल्लाहु तआला अन्हा के घर तशरीफ ले गए। देखा कि भूक से सय्यदा का चेहरा ज़र्द हो रहा है और नकाहत व कमजोरी के आसार नुमायां हैं। आप ने अपनी प्यारी बेटी सय्यदा को अपने पास बिठा कर तस्कीन दी और आसमां की तरफ चेहरए मुबारक कर के दुआ की। अल्लाह तआला फातिमा तेरी बान्दी है इस से राजी रहना। (सीरते फातिमा)

ऐ ईमान वालो ! क्या शान है हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की और आप के घर वालों की कि खुद तो भूके हैं तीन दिन के फाके से हैं लेकिन कोई फकीर वापस चला जाए। अल्लाह तआला के नाम का साइल खाली घर से लौट जाए यह उन को कब गवारा है।

इस लिये ऐ सुन्नियो ! ग़ौसो ख्वाजा व रज़ा के गुलामो ! उन से मांगो और उन्हीं से मांगते रहो उन का खज़ाना भरा हुआ है। खुद तो भूके रहते हैं लेकिन साइल को दर से खाली नहीं लौटाते।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेअमतें हैं उनके खाली हाथ में

हजरत फातिमा की इबादत : ताजदारे विलायत हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा खाना पकाने की हालत में भी कुरआने करीम की तिलावत फरमाया करती थीं। (सीरते फातिमा)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से हजरत सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर गया तो मैं ने देखा कि हजरत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा सो रहे हैं और सय्यदा फातिमा उन को पंखा कर रही हैं और ज़बाने मुबारक से कुरआने मजीद की तिलावत फ़रमा रही हैं। यह देख कर मुझ पर एक खास रिक्क़त की हालत तारी हो गई। (कीमियाए सआदत)

नौजवानाने जन्नत के सरदार इमाम हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने अपनी मां सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को देखा है कि वह घर की मस्जिद के मेहराब में रात रात भर नमाज़ में मशगूल रहतीं यहाँ तक कि सुबह तुलूअ हो जाती और मैं ने उन्हें यानी अपनी मां को मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के हक़ में बहुत ज़्यादा दुआ करते सुना। उन्होंने यानी मेरी मां ने अपनी ज़ात के लिये कोई दुआ न मांगी। मैं ने अर्ज़ किया ऐ मादरे मेहरबान क्या सबब है कि आप अपने लिये कोई दुआ नहीं मांगतीं ? तो फरमाया ऐ बेटे पहले हमसाया हैं फिर घर है। (यानी मेरे अब्बा जान की उम्मत की बख्शिश हो

जाए यही फ़ातिमा की दुआ है। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 790)

ऐ ईमान वालो ! हजरत सय्यदा फातिमातुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब रात रात भर जाग कर गुनाहगार उम्मत की बख़्शिश व नजात के हक़ में दुआ फरमाई है तो क्या हम पर उन का कुछ हक नहीं बनता कि हम उम्मती भी उन की आल व औलाद से महब्बत करें और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की खुशी हासिल करके अल्लाह तआला और उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में बे शुमार अज्रो सवाब के हकदार बन जाएं।

ऐ गुलामाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सय्यदना फ़ातिमा की कनीज़ाओं और बान्दियो ! अगर तुम को अपने अस्लाफ़ से कुछ भी पास व लिहाज़ है और उन से थोड़ी सी भी निसबत व तअल्लुक़ क़ाइम है तो नमाज़ पढ़ने की आदत डालो, कुरआन शरीफ़ की तिलावत करो।

एक आज कल की हमारी माएं और बहनें हैं जो पन्जवक्ता नमाज़ भी नहीं अदा करतीं और एक वह हज़रात इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की मां हज़रत सय्यदा फ़ातिमा थीं जिन के शोहर ताजदारे विलायत हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जिन के वालिद मालिके दो जहां महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और जिन के बेटे शहीदों के सरदार, शोहर वलियों के सरदार, और जिस के वालिदे गिरामी की शान व शौकत का यह आलम है कि तमाम नबियों और रसूलों के सरदार बल्कि कुल अव्वलीन व आख़रीन के सरदार हैं जिन के बेटे और शोहर और बाप का दोनों जहां में कोई जवाब नहीं वह सय्यदा फ़ातिमा खाना पकाती हैं तो कुरआने मजीद की तिलावत फ़रमाती हैं। बच्चो को सुलाती हैं तो कुरआने पाक की तिलावत करती नज़र आती हैं। रात रात भर नमाज़ में मशगूल हैं। मशहूर रिवायत है कि शोहर की ख़िदमत से फ़ारिग होकर बच्चो को खिला पिला कर और उन्हें सुला कर अपने रब तआला की इबादत में मशगूल हो जाती हैं। नमाज़ की निय्यत बान्ध कर अपने मौला की बारगाह में नमाज़ के लिये खड़ी हो जाती हैं। पहली रकअत का पहला सज्दा है। सज्दा का कैफ़ व सुरूर और हालते सज्दह में लज़्ज़ते बन्दगी में ऐसी खो जाती हैं महव व गुम हो जाती हैं कि पहला सज्दा ख़त्म नहीं हो पाता है और सर्दी के महीने की लम्बी रात ख़त्म हो जाती है। अज़ान की सदा पर्दए समाअत से हम किनार होती है। आँखों से आंसू जारी हो जाते हैं और उसी बे ख़ुदी के आलम में अर्ज़ करती हैं कि मौलाए करीम तूने कितनी छोटी छोटी रातें बनाई हैं कि तेरी रात ख़त्म हो जाती है और तेरे महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी बेटी का एक सज्दा भी पूरा नहीं हो पाता है। ऐ रहमान व रहीम अल्लाह ! एक रात इतनी लम्बी बना दे कि तेरे महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की लाडली बेटी दिल खोल कर तेरी बारगाह में सज्दा कर ले।

अल्लाहु अकबर !! अल्लाहु अकरबर !! क्या शाने बन्दगी है हज़रत सय्यदा फ़ातिमा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की कि सारी रात बीती है सज्दा करने में लेकिन आरज़ू और तमन्ना तो देखो कि रात छोटी है, लम्बी चाहिये कि सज्दे की लज़्ज़त बाकी रह जाती है।

अल्लाह तआला हमारी माओं और बहनों को हज़रत सय्यदा की इबादत के सदके में नमाज़ की आदत अता फ़रमाए और उन्हें सज्दा से महब्बत की तौफीक दे आमीन सुम्मा आमीन।

मां बाप कुरबान : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की आदत करीमा थी कि जब हज़रत सय्यदा फ़ातिमा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास आतीं तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उनके लिये खड़े हो जाते और हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हाथ चूमते। इसी तरह जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान पर आकाए कायनात तशरीफ़ ले जाते तो ताजीमन हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपने अब्बा जान की ताज़ीम के लिये खड़ी हो जातीं और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों को बोसा देती थीं। इमाम शोकानी रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं : اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِفَاطِمَةَ فِدَاكِ اَبِيْ وَاُمِّيْ
(दुर्रुस्सहाबा, स. 279)

कि नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया (मेरी बेटी) फ़ातिमा तुझ पर मेरे मां, बाप कुरबान हों, सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमते अकदस में अर्ज़ करते। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप पर मेरे मां, बाप कुरबान हों और हज़रत सय्यदा फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से बे पनाह शफ़कत व महब्बत फ़रमाते हुए आकाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा तुझ पर मेरे मां, बाप कुरबान हों, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सय्यदा, ज़ाहिरा, तैय्यिबा, ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

हज़रत फ़ातिमा की चक्की

हज़रत उम्मे ऐमन फ़रमाती हैं कि रमज़ान शरीफ़ का महीना दोपहर का वक्त था, शिद्दत की गर्मी पड़ रही थी और मैं हज़रत फ़ातिमा के मकान पर हाज़िर हुई, दरवाज़ा बन्द था और आटा पीसने की चक्की के चलने की आवाज़ आ रही थी, मैंने रोशन दान से झांककर देखा कि सय्यिदा फ़ातिमा तो चक्की के पास ज़मीन पर सो रही थीं और चक्की खुद ब खुद चल रही थी और पास ही हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का गहवारा भी खुद ब खुद हिल रहा था। मैं यह देखकर हैरान व मुतआज्जिब हुई और उसी वक्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई और सारा माजरा बयान किया तो आपने फरमाया : इस शिद्दत की गर्मी में मेरी बेटी फातिमा रोज़े से है, अल्लाह तआला

मेरी बेटी फातिमा पर नीन्द ग़ालिब कर दी ताकि उसको गर्मी की शिद्दत और तश्नगी महसूस न हो, वह फरिश्ते थे जो मेरी बेटी फातिमा के कामों को अन्जाम दे रहे थे। (सीरते फातिमा)

बे इजाजत जिनके घर जिब्रईल भी आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत

सय्यिदा फातिमा से इस्लाम फैला : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमत में कुरैश की कुछ औरतें हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि हमारे घर बेटी की शादी है। हम सब की तमन्ना है कि अगर आप सय्यिदा फ़ातिमा को उस शादी में भेज देंगे तो हमारी इज़्ज़त बढ़ जाएगी। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वादा फ़रमाकर उन्हें रुख़सत कर दिया और घर तशरीफ लाकर हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया, कुरैश के फ़लां घर में शादी है, मेरी बेटी तुम उस शादी में शरीक हो जाओ। हज़रत सय्यिदा ने अर्ज़ किया, अब्बा जान ! कुरैश की औरतें ज़र्क़ बर्क़ लिबास और क़ीमती ज़ेवरात में मलबूस होंगी और मैं पेवन्द लगे लिबास में जाउँगी तो मेरा मज़ाक़ उड़ाऐंगी कि मुसलमानों के नबी की बेटी के लिबास कैसे हैं ? अभी यह गुफ्तुगू हो ही रही थी कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और सलातो सलाम पेश करके अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला का हुक्म है कि आपकी बेटी फ़ातिमा को कुरैश की शादी में आप ज़रूर भेजें कि वहाँ तुम्हारे जाने से कुरैश की कुछ औरतें मुशर्रफ़ ब इस्लाम होंगी। हज़रत सय्यिदा फातिमा ने चादर ओढ़ी और कुरैश की शादी में शरीक होने के लिये तशरीफ़ ले जाती हैं। वहाँ कुरैश की औरतें बनी संवरी बैठी थीं कि हमारे यह लिबासे फाखिरा और चमकदार ज़ेवरात को देखकर नबी की बेटी सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपनी मिस्कीनी व नादारी पर ज़रूर अफ़सोस करेंगी और इस मेहफ़िल में शर्मिन्दा होंगी। मगर मुसब्बेबुल अस्बाब अल्लाह तआला की कुदरत का ज़हूर होता है, हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा जन्नती कपड़ों में मलबूस नज़र आती हैं और एक ग़ैबी सदा आती है कि ऐ दुनिया वालो ! होशियार हो जाओ कि सलतनते इलाहिया की शेहज़ादी तशरीफ़ लाई हैं और हूराने बहिश्ती की झुरमुट में जलवा अफरोज, जिनके वजूद पर नूर से दरो दीवार मुनव्वर हो गए हैं, जिनकी कनीज़ों के हुस्नो जमाल और लिबासे फ़ाख़िरा के सामने नाज़नीनाने कुरैश का हुस्न मान्द पड़ गया है, तमाम कुरैश की औरतें शर्मिन्दा होकर अदब व ताज़ीम के लिये खड़ी हो जाती हैं।

हज़रत सय्यिदा को मस्नद पर बिठाया, आपके चेहरे का नूर और बहिश्ती लिबास का हुस्न देखकर कुरैशी औरतें कहने लगीं कि ऐसा लिबास तो हमने कभी देखा ही नहीं, इस लिबास को बनाया किसने और यह लिबास कहाँ से आया है।

अर्ज करती हैं कि ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बेटी खाने पीने के लिये क्या हाज़िर करें। हज़रत सय्यिदा फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया मेरे अब्बा जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की आदत है कि दो रोज फ़ाक़ह

करें और एक दिन कुछ थोडा खा लिया करें और शुक्र अदा करें। कुरैश की औरतों ने अर्ज़ की जो मर्ज़ी हो इरशाद फ़रमाएं, हम सब आपकी ख़ुशी की ख़ातिर आपके हुक्म पर अमल करें।

सय्यिदा ने इरशाद फ़रमाया : हमारी ख़ुशी तो अल्लाह तआला और उसके सच्चे रसूल मेरे अब्बा जान की ख़ुशी में है और वह यह है कि तुम सब कुफ्र व शिर्क से तौबह कर लो, बुत परस्ती से बेज़ार हो कर ख़ुदा परस्ती में लग जाओ, कलेमा तैय्यिबा पढकर इस्लाम कुबूल कर लो। प्यारे नबी की प्यारी बेटी सैय्यिदा फ़ातिमा की प्यारी बातें सुनकर किस्मत वाली औरतों ने कलिमा तैय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पढा और दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हो गई।(रौज़तुश्शोहदा, व हवाला करामाते अहले बैते अतहार, स. 21)

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का मेहर, उम्मत की शफ़ाअत

हज़रत अब्दुर्रहमान सफ़ूरी शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब अपनी प्यारी बेटी सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ किया और जब बात मेहर की आई तो सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने अब्बा जान नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में दरख़्वास्त की कि मेरी मेहर क़ियामत के दिन आपकी गुनाहगार उम्मत की शफ़ाअत व बख़्शिश ही मुक़र्रर की जाए। पस जब क़ियामत क़ाइम होगी तो सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपना मेहर तलब करेंगी। पस अल्लाह तआला अपने करम के तुफ़ैल आपकी शफ़ाअत से उम्मत के मोमिन गुनाहगारों को बख़्श देगा और जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, स. 446)

सय्यिदा फ़ातिमा का विसाल : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ से तमाम सहाबए किराम और अहले बैते अतहार रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को बहुत सदमा हुआ था मगर जिस क़दर सदमा सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को पहुँचा वह बयान से बाहर है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि आप अकसर रोया करती थीं। आप जब तक ब क़ैदे हयात थीं कभी आपको हंसते, मुस्कुराते नहीं देखा गया।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि जब सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दफ़्न कर दिया गया तो सय्यिदा ने सहाबा से कहा कि तुम्हारे हाथों ने मेरे अब्बा जान पर मिट्टी डालना कैसे गवारा कर लिया ? यह सुनकर तमाम सहाबा रोने लगे और फ़रमाया तक़दीरे इलाही के आगे कोई चारा नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल और जुदाई के सदमे में दिन रात इस क़दर रोती थीं कि दूसरे लोग भी रोने लगते थे, यहाँ तक कि छः माह बाद तीन रमज़ानुल मुबारक सन् 11 हि. मंगल की रात में आपका विसाल हुआ। सय्यिदा के कहने से

हजरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपके लिये लकड़ी का एक गहवारा बनाया जिसको देखकर आप बहुत खुश हुई और उस गहवारे पर एक चादर डाली गई जो आपकी वसियत थी। आज तक जो गहवारे पर चादर डाली जाती है उसकी इब्तिदा हजरत सय्यिदा फातिमा के दुफ्न पर की गई। आपकी नमाजे जनाजा हजरत मौला अली या हजरत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने पढ़ाई।

और एक रिवायत के मुताबिक आपकी नमाजे जनाजा अमीरुल मोमिनीन हजरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई।

हजरत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि सय्यिदा फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वसियत थी कि मैं जब दुनिया से रुखसत हो जाऊं तो मुझे रात में दफ्न करना ताकि मेहरम लोगों की नजरें मेरे जनाजे पर न पड़ें, इसी लिये रात के वक्त जन्नतुल बकीअ में मदफून हुई। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि 2, स 790)

आपकी औलादे अमजाद : शहजादिये सलतनते इलाहिया हजरत सय्यिदा फातिमतुज्जहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से तीन बेटे हजरत इमाम हसन, हजरत इमाम हुसैन, हजरत मोहसिन और तीन बेटियाँ हजरत उम्मे कुलसूम, हजरत जैनब, और हजरत रुकय्या अहदे तफूलियत में ही विसाल फरमा गए। हजरत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ जिनसे एक बेटे हजरत जैद और एक बेटी हजरत रुकय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा पैदा हुई और दोनों बचपन ही में विसाल फरमा गए। और तीसरी बेटी हजरत जैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इनका निकाह हजरत अब्दुल्लाह बिन जअफर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि 2, स 788)

बेकस व बे नवा की इल्तिजा : मेरे करीम व मुर्शिदे आजम हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो मेरे कब्र के उजाला और आखिरत के सहारा हैं, और मेरे मेहरबान ख्वाजा हिन्द के राजा हुजूर गरीब नवाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जिनके रहमो करम पर मैं पला और बढ़ा हूँ और उनके दर की खैरात हमारे लिये दौलते दारैन है, उनकी जद्दए करीमा खातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमतुज्जहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मेरी अक़ीदत व महब्बत का यह आलम है कि मैंने अपनी बेटी का नाम नूरी फ़ातिमा और दोनों बेटों का नाम अनवार हसन और अनवार हुसैन रखा है। ऐ काश हज़रत सय्यिदा दुनिया से हश्र तक मेरी इस निस्बत व तअल्लुक का भरम रख लें और मुझे और मेरे बच्चों को अपने मंगतों में कुबूल फरमा लें। हजरत सय्यिदा की कुबूलियत जन्नत की जमानत है। दरे सय्यिदा का मंगता

अनवार अहमद क़ादरी रज़वी

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाकी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

तीसरा जुमा .... पहला बयान

फ़ज़ाइले सय्यदना इमामे हसन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत

(पारा 25, आयत 23, तर्जा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़.........

आशिक़े रसूल मुहिब्बे अहले बैत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सय्यदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में फ़रमाते हैं :

हसने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम
औजे बहरे हुदा मौजे बहरे नदा
रौहे रूहे सख़ावत पे लाखों सलाम
शहद ख़्वार लुआब ज़बाने नबी
चाश्नी गीर अस्मत पे लाखों सलाम

विलादत : 15 रमज़ान शरीफ़ सन् 3 हि. की शब मदीना मुनव्वरा में हुई और आपके अलक़ाब सय्यद, सिब्ते रसूल, रैहानतुर्रसूल और आख़िरुल ख़ुलफ़ा बिन नस ही कहते हैं। (सयानेह करबला, स. 56)

आपका नाम : हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आपका नाम हसन रखा और पैदाइश के सातवें रोज़ आपका अक़ीक़ा किया, बाल मुन्डवाए और हुक्म दिया कि बालों के वज़न के बराबर चाँदी सदक़ा की जाए। (सयानेह करबला, स. 56)

बुखारी शरीफ़ की रिवायत है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शक्लो सूरत में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबहत रखते थे, और हसन यह जन्नती नाम है आपके पहले किसी का नाम हसन नहीं रखा गया है। हज़रत असमा बिन्ते उमैस ने ख़िदमते अकदस में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश का मुज़्दा सुनाया। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया मेरे बेटे को मेरे पास लाओ। हज़रत असमा ने एक कपड़े में लेकर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया।

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दाहिने कान में अज़ान और बाएं कान में तकबीर फ़रमाई और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया तुमने क्या नाम रखा है। मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरी क्या मजाल कि आपके होते हुए मैं नाम रखूँ। वैसे मेरा ख़्याल यह है कि हरब नाम रखा जाए। आपने फ़रमाया कि इनका नाम मैंने हसन रखा है। (बुख़ारी शरीफ, व हवाला सवानेह करबला, स. 57)

एक रिवायत में यह भी है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने (अल्लाह तआला के हुक्म) का इन्तिज़ार फ़रमाया, यहाँ तक कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला की मर्ज़ी है कि आपके इस प्यारे बेटे का नाम हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के बेटे शब्बर के नाम पर रखा जाए और शब्बर का मअ़ना हसन है। तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने प्यारे बेटे का नाम हसन रखा। (मुलख़्ख़सन, सवानेह करबला, स. 57)

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ज़ाइल

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बहुत प्यारे नवासे और मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बेटे और सय्यिदा फ़ातिमा ख़ातूने जन्नत रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लख़्ते जिगर और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बिरादरे अकबर हैं। आपकी तरबियत नबी व अली व सय्यिदा फ़ातिमा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम व रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) की आग़ोशे मुबारक में हुई। आपकी पूरी ज़िन्दगी ज़ोहद व वरअ, तक़वा व तहारत का हसीन गुलदस्ता है। फ़य्याज़ी व सख़ावत में भी इम्तियाज़ी शान रखते थे। किसी साइल को किसी हाल में अपने घर से वापस न करते थे बल्कि फ़य्याज़ी तो आपको विरासत में मिली थी। एक एक आदमी को एक एक लाख रुपया अता फ़रमा देते थे। (इब्ने सअद अली बिन जेद जदआन से रिवायत करते हैं कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मरतबा

अपना कुल माल राहे ख़ुदा में दे डाला और तीन मरतबा अपना आधा माल राहे ख़ुदा में सदका किया। मुलख्खसन। (बरकाते आले रसूल, स 129, सवानेह करबला, स 58)

अच्छी सवारी, अच्छा सवार

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु को अपने कन्धे पर बिठाए हुए थे। किसी सहाबी ने अर्ज किया: نِعْمَ الْمَرْكَبُ رَكِبْتَ يَا غُلَامُ ऐ साहिबजादे तेरी सवारी कितनी अच्छी सवारी है।

यह सुनकर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया: وَنِعْمَ الرَّاكِبُ هُوَ यानी ऐ सहाबी अगर सवारी अच्छी है मगर यह भी तो देख कि सवार कितना अच्छा है। (मिश्कात शरीफ, स 571)

दोशे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर सवारी: हजरत बरा बिन आजिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा कि आप हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने कन्धे पर बिठाए हुए हैं और दुआ फरमा रहे हैं: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ

यानी ऐ अल्लाह तआला मैं इससे महब्बत रखता हूँ तू भी इससे महब्बत रख।

(बुखारी, स. 530, बरकाते आले रसूल, स. 136)

इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मेरा बेटा और सय्यद है

हजरत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा कि आप मिम्बर शरीफ़ पर जलवा फ़रमा हैं और हजरत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपके पहलू में थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कभी सहाबा की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते और कभी अपने बेटे इमाम हसन की तरफ। और आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: اِنَّ ابْنِيْ هٰذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللّٰهَ اَنْ يُّصْلِحَ بِهٖ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

मेरा यह बेटा सय्यद है यानी सरदार है। उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रीए मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान मुसालहत कर देगा।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 530, बरकाते आले रसूल, स. 136, सवानेह करबला, स 57)

महबूबे ख़ुदा के महबूब हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं

हजरत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हजरत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अहले बैत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बहुत ज्यादा मुशाबह और बहुत ही महबूब थे। मैंने देखा कि

हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सज्दे में हैं और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आते और आपकी गरदन या पुश्ते अनवर पर सवार हो जाते तो आप उन्हें उतारते नहीं थे बल्कि वह ख़ुद ही उतर जाते थे और मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रुकू की हालत में होते तो आप उन्हें उतारते नहीं थे बल्कि वह ख़ुद ही उतर जाते थे। और मैंने देखा कि आप रुकू की हालत में होते तो अपने दोनों पैरों के बीच इतना फ़ासला कर लेते कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसमें से दूसरी तरफ़ गुज़र जाते। (बरकाते आले रसूल, स. 136)

जिस्मे नूर से मुशाबहत : हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु शक्लो सूरत में अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बहुत मुशाबह थे

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ الْحَسَنُ اَشْبَهُ بِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَابَيْنَ الصَّدْرِ اِلَى الرَّاْسِ وَالْحُسَيْنُ اَشْبَهُ بِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ مَاكَانَ النَّعْلُ مِنْ ذٰلِكَ

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 219)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि यानी हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सीना से लेकर सर तक रसूलुल्लाह सल्लललाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुशाबह हैं और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस से नीचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुशाबह हैं।

आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

एक सीना तक मुशाबह एक वहाँ से पांव तक
हसने सिब्तैन उन के जामों में है नीमा नूर का

साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयां
ख़ते तवाम में लिखा है यह दो वर्क़ा नूर का

और फ़रमाते हैं :

मअदूम न था साया शाह सक़लैन
उस नूर की जलवा गाह थी ज़ाते हसनैन

तमसील ने उस साया के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

ज़बाने नुबुव्वत आप के मुंह में : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में देखा कि वह अपनी उंगलियाँ सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दाढ़ी मुबारक में डालते थे :

وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ يُدْخِلُ لِسَانَهٗ فِيْ فَمِهٖ ثُمَّ قَالَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ

और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी ज़बाने मुबारक उन के मुंह में डालते और फ़रमाते। ऐ अल्लाह मैं इस को महबूब रखता हूँ तू भी इस को महबूब रख। (अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जि. 2, स. 169)

हज़रत अबू बक्र के कन्धे पर इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अबू तहीका फ़रमाते हैं कि हज़रत उक़्बा बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हमें अस्र की नमाज़ पढ़ाई फिर बाहर निकले तो हज़रत इमाम हसन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को खेलते हुए देखा, तो आप ने उन्हें अपने कन्धे पर उठा लिया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमा रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शबीह (यानी इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) पर मेरे बाप फ़िदा हों, यह (यानी इमाम हसन) हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुशाबह नहीं हैं और यह बात सुन कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुस्कुरा रहे थे। (बरकाते आले रसूल, स. 137)

इमाम हसन का इख़्लास व अदब : हाकिम ने अब्दुल्लाह बिन उबैद उमर से रिवायत किया कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पचीस हज पैदल किये हैं। जब कि सवारियाँ आप के साथ मौजूद होती थीं मगर इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अल्लाह तआला की बारगाह में तवाज़ोअ और इख़्लास व अदब का यह हाल था कि आप हज के लिये पैदल सफ़र फ़रमाते थे। आप का कलाम बहुत शीरीं होता था। अहले मजलिस नहीं चाहते कि आप गुफ़्तुगू ख़त्म फ़रमाएं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, सवानेह करबला, स. 58)

इमाम हसन की अज़मत दुश्मन की नज़र में : इब्ने असाकर ने रिवायत किया कि इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हिल्म व बुर्दबारी का यह हाल था कि आप के विसाल के बाद मरवान (जो आप का सख़्त मुख़ालिफ़ था) बहुत रोया, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि आज तू रो रहा है और उनकी ज़िन्दगी में उनके साथ किस किस तरह की बद सुलूकियाँ करता था तो मरवान पहाड़ की तरफ़ इशारा करके कहने लगा, मैं उस पहाड़ से ज़्यादा हलीम व बुर्दबार के साथ ऐसा बुरा सुलूक करता था। अल्लाह रे हिल्म, गोया मरवान जैसे संग दिल को भी एतिराफ़ था कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हिल्म व बुर्दबारी पहाड़ से भी ज़्यादा है। (सवानेह करबला, स. 58)

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन मुन्तख़ब हुए। लोगों ने ऐसे नेक शख़्स को अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन चुना था। जो शरफ़ व बुज़ुर्गी, तक़्वा व तहारत, इल्मो फ़ज़्ल, सियासत व शुजाअत, ख़ैर

ख्वाहिये उम्मत, हर लिहाज़ से हुकूमते इलाहिया की इमामत के अहल थे। आप छः माह तक मसनदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ रहे, ना आक़िबत अन्देश इराक़ियों ने नेअमते इलाहिया की क़द्र नहीं की और सिब्ते पयम्बर के साथ बे वफ़ाई का वही बरताओ किया जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कर चुके थे। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हालात को मद्दे नज़र रखते हुए उम्मत को फ़ितना व फ़साद और क़त्ल व ख़ून से बचाने के लिये चन्द शर्तों के साथ ख़िलाफ़त हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को सुपुर्द कर दिया और उन्होंने शर्तों के साथ क़ुबूल कर लिया। दोनों हज़रात की आपस में सुलह हो गई। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादे गिरामी की सदाक़त ज़ाहिर हुई जो आप ने फ़रमाया था कि मेरा यह बेटा (यानी इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

तफ़वीज़े ख़िलाफ़त (हुकूमत छोड़ने) का यह वाक़िआ रबीउल अव्वल शरीफ़ सन् 41 हि. में हुआ। इस तरह ख़िलाफ़त के पूरे तीस साल मुकम्मल हुए और हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस इरशाद की तकमील हुई।

اَلْخِلَافَةُ بَعْدِیْ ثَلٰثُوْنَ سَنَةً ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا

यानी मेरे बाद ख़िलाफ़त तीस साल रहेगी फिर बादशाहत क़ाइम हो जाएगी।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब, जि. 2, स. 259, अल बिदाया वन्निहाया, जि, 8, स. 16)

क़यामे मदीना मुनव्वरा : तफ़वीज़े ख़िलाफ़त (हुकूमत छोड़ने) के बाद मेरे आक़ा इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने अहलो अयाल के साथ मुआमलात से किनारा कश हो कर अपने तमाम औक़ात ज़िक्रे इलाही और फ़िक्रे आख़िरत में बसर करने लगे लेकिन इस सुलह से उन के चाहने वालों को जो ज़ख़्म पहुँचा था उस की वजह से जब आप उन के महलों से गुज़रते तो वह लोग आप को : يَا عَارَ الْمُؤْمِنِيْنَ कह कर पुकराते। आप हिलमो बुर्दबारी का पैकर बन कर जवाब देते। اَلْعَارُ خَيْرٌ مِّنَ النَّارِ यानी यह आर (शर्मो हया) उस नार (आग) से बेहतर है जिस का अन्देशा क़त्लो ग़ारत गरी से था।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत

रौज़तुश्शोहदा में है कि हज़रत रसूले रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और वलिये उम्मत हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक ग़ज़वा में तशरीफ़ ले गए थे, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अभी बचे ही थे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर से निकले और कहीं दूर चले गए कि सालेह बिन रक़अह यहूदी ने आप को तन्हा और हैरत ज़दा देख कर अपने घर ले गया और छुपा दिया, जब काफ़ी देर हो गई, नमाज़े अस्र का वक़्त हो गया और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर नहीं पहुँचे तो सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को फ़िक्र लाहिक़ हुई। आप बार बार काशानए अक़दस से बाहर दरवाज़े पर आतीं और वापस जातीं, कोई आदमी नज़र नहीं आता जिस को शहज़ादे की तलाश में भेजतीं। बहुत

इन्तिजार के बाद आप ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फ़रमाया कि अपने भाई हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तलाश करके लाओ। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर से निकले और तलाश करते रहे मगर कहीं पता नहीं चला। एक हिरण दिखाई दिया आप ने जोशे महब्बत में उस हिरण से फरमाया : يَاظَبْيُ هَلْ رَأَيْتَ أَخِيْ حُسَيْنًا ऐ हिरण मेरे भाई हुसैन को क्या तुम ने देखा है। अल्लाह तआला की कुदरत से उस हिरण ने इन्सान की जबान में अर्ज किया : اَخَذَهٗ صَالِحُ بْنُ رَقْعَةَ الْيَهُوْدِيُّ وَاَخْفٰى فِيْ بَيْتِهٖ

यानी हुज़ूर शहजादए हुसैन को सालेह बिन रक़अह यहूदी ने पकड़ कर अपने घर में छुपा दिया है हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस यहूदी के घर तशरीफ़ लाए और सालेह यहूदी को आवाज़ दी, वह यहूदी घर से बाहर आया आप ने फ़रमाया मेरे भाई हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को लाकर मेरे सुपुर्द कर, वर्ना याद रख अगर मेरी वालिदा माजिदा ने तेरे लिये दुआए हलाकत फ़रमा दी तो तेरे कुंबा कबीला का पता न चले गा और अगर मेरे वालिद मौला अली शेर ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम हो गया तो उन की तलवारे ज़ुल फ़िक़ार से कोई यहूदी न बचेगा और अगर मेरे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तक यह बात पहुँच गई और नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तेरे बरबादी के लिये लबहाए मुबारक हिला दिये तो सारे यहूदी हलाक व बरबाद हो जाएँगे। सालेह यहूदी ने जब आप की गुफ़्तुगू सुनी तो बड़ा हैरान था कि मेरे घर में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मैं ने छुपा रखा है यह बात उन को कैसे मालूम हो गई।

सालेह यहूदी ने कहा कि आप की वालिदा कौन हैं। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हज़रत सय्यदा फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम।

तो सालेह यहूदी ने अर्ज़ की, ऐ नवासए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सब से पहले आप मुझे कलमा पढ़ा कर मुसलमान कीजिये। आप ने उस यहूदी को इस्लाम में दाख़िल किया और सालेह सिद्क़ दिल के साथ मुसलमान हुआ।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को घर से लाकर आप के सुपुर्द कर दिया और शाहज़ादों पर ज़र सुर्ख़ व सपेद (सोना, चाँदी के सिक्के) निसार किये और फिर अदब व एहतिराम से रुख़सत किया। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने भाई इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लेकर अम्मी जान सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में पहुँचे तो सय्यदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने दोनों शहज़ादों को देख कर बहुत ख़ुश हुई और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तावीज़

मैदाने करबला में बहुत से अअ़वान व अन्सार जामे शहादत नोश फ़रमा चुके हैं। हज़रत इमाम क़ासिम बिन हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने भी मैदाने कार ज़ार में

जाने की इजाज़त चाही तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इजाज़त देने से इनकार कर दिया और फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे भतीजे क़ासिम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम मेरे बिरादरे अकबर इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निशानी हो, मैं तुम को मैदाने दग़ा में भेज कर अपने भाई की निशानी को मिटता हुआ देख कर कैसे बरदाश्त कर सकता हूँ, इस लिये तुम को मैदाने ख़ाक व ख़ून में जाने की हरगिज़ इजाज़त नहीं है। हज़रत इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आँखों में आंसू भर आए। भीगी पलकों के साथ सोच व फ़िक्र में डूबे हुए हैं कि कौन सी तदबीर अपनाई जाए जिस से अम्मे मोहतरम सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इजाज़त हासिल हो जाए और आप की महब्बत में मैदाने कार ज़ार में जाकर जान को कुरबान कर के शहादते उज़्मा का दर्जा नसीब हो जाए।

रौज़तुश्शोहदा में है कि हज़रत इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने वालिदे गिरामी हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक वसियत याद आती है कि मेरे वालिदे गिरामी ने एक तावीज़ मेरे बाज़ू पर बान्धा था और वसियत की थी कि जिस वक्त तुम्हारे लिये सब से मुश्किल वक़्त आए और चारों तरफ़ रन्जो ग़म का माहौल हो तो उस वक़्त इस तावीज़ को खोल कर पढ़ लेना, तुम्हारी मुश्किल आसान हो जाएगी। हज़रत इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सोचा कि इस वक़्त से ज़्यादा मुश्किल वक़्त कभी नहीं आएगा कि प्यारे नाना जान का शहज़ादा मेरा प्यारा चचा दुश्मनों के नरग़े में है और मैं अपनी जान बचाकर चला जाऊँ, यह वक़्त मेरे लिये बहुत मुश्किल की घड़ी है। हज़रत इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस तावीज़ को बाज़ू से उतारा और उसे खोल कर पढ़ा तो वह तावीज़ हक़ीक़त में वसियत नामा था कि ऐ क़ासिम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम को वसियत करता हूँ कि तुम्हारे चचा जान हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखना कि मैदाने करबला में शामी दग़ा बाज़ों और कूफ़ी बे वफ़ाओं के नरग़े में घिरे हुए हैं तो उनके क़दमों पर अपना सर कुरबान करने और अपनी जान उन पर फ़िदा कर ने से हरगिज़ बाज़ न रहना अगरचेह वह तुमको मैदाने कारज़ार में जाने से रोकें मगर तुम मैदाने जंग में जाने की इजाज़त लेने में ख़ूब मुबालग़ा ज़िद करना और मिन्नत व समाजत (मनाने की कोशिश) करना क्यों कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर जान कुरबान करना शहादत के दरवाज़े की कुन्जी है और बुज़ुर्गी व नेकी हासिल होने का वसीला है।

(करामाते अहले बैते अतहार, स. 34)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हसन बिन अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के फ़रमान के मुताबिक़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत में क़त्ल होना और उन पर अपनी जान को कुरबान करना शहादते उज़्मा है और हक़ पर होते हुए जान देना और क़त्ल होने से अल्लाह तआला शहादत का दर्जा अता फ़रमाता है। अच्छी तरह यह बात साबित हो गई कि करबला में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हक़ पर थे। अब वह लोग जो हमारे प्यारे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में

ग़लत नज़रिया रखते हैं और कहते हैं कि यज़ीद हक़ पर था और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ना हक़ पर थे। यह नज़रिया बातिल और सरासर झूट है, ऐसे यज़ीद के हामियों का हश्र बरोज़े क़ियामत यज़ीद के साथ होगा और हम आशिक़े रसूल गुलामाने गौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का हश्र व अंजाम इश्के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ होगा इन्शाअल्लाहु तआला।

बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्के को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

दुरूद शरीफ़ ....

दूसरी बात यह साबित हुई कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को बरसों के बाद होने वाला करबला का वाक़िआ मालूम था कि मेरे भाई इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को करबला के बे आबो दाना मैदान में क़त्ल कर दिया जाएगा, यह इल्मे गैब नहीं तो और क्या है।

बे शक अल्लाह तआला अपने महबूब बन्दों को इल्मे गैब अता फ़रमाता है। जब आल के इल्मे ग़ैब का यह आलम है तो रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब का आलम क्या होगा।

खूब फ़रमाया हुज़ूर आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़.....................

इमाम हसन की दुआ का असर : हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बेटे के साथ सफ़र फ़रमा रहे थे कि आपका गुज़र एक बाग़ में हुआ जो खजूरों का था। बाग़ के सारे दरख़्त सूखे हुए थे। आपने उसी बाग़ में क़याम फ़रमाया।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ काश यह दरख़्त हरे होते और उसमें ताज़ा खजूर लगे होते तो हम उसे खाते। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया क्या तुम ताज़ा खजूर खाना चाहते हो ? हज़रत इब्ने ज़ुबैर ने अर्ज़ की, हाँ हुज़ूर। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ के लिये हाथ उठाया और कुछ कहा जो किसी को मालूम ना हुआ। उसी वक़्त खजूर का एक दरख़्त हरा हो गया तो ताज़ा खजूरों से लदा हुआ था। फिर लोगों ने दरख़्त से खजूर तोड़ा और सबने पेट भर कर खाया।

(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 302, करामाते अहले बैते अतहार, स. 36)

ऐ ईमान वालो ! बुज़ुर्गों की दुआ का बड़ा असर होता है। वह शख़्स बड़ा खुश नसीब है जो बुज़ुर्गों की दुआएं लेता है। बुज़ुर्गों की दुआओं से मुश्किलें आसान हो जाती हैं। बलाएं टल जाती हैं ... जाते हैं।

अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों की दुआओं को रद नहीं फ़रमाता है।

न जाने कौन दुआओं में याद करता है
मैं डूबता हूँ दरिया उछाल देता है

हज़रत इमाम हसन के इल्मी कमालात : हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के गेहवारए इल्म में परवरिश पाई थी और बुज़ुर्ग व बरतर अस्लाफ़ के उलूम के वारिस बने थे, आपकी रिवायत की हुई हदीसें जो कुतुबे अहादीस में पाई जाती हैं उनकी तादाद कुल 13 हैं जब कि विसाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ सिर्फ़ साढ़े सात साल की थी। आपका शुमार मदीना मुनव्वरा के अस्हाबे इल्म में किया जाता था, आपके हकीमाना अक़वाल पन्दो मौइज़त से लबरेज़ हैं।

एक शख़्स ने आपसे सवाल किया कि ज़िन्दगी बसर करने के एतिबार से अच्छी ज़िन्दगी कौन शख़्स बसर कर सकता है तो आपने जवाब दिया, वह शख़्स जो अपनी ज़िन्दगी में दूसरों को भी शरीक कर ले।

फिर उस शख़्स ने सवाल किया कि सबसे बुरी ज़िन्दगी किस शख़्स की है ?

तो आपने जवाब में फ़रमाया : जिस शख़्स के साथ कोई दूसरा ज़िन्दगी न बसर कर सके।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि ज़रूरत का पूरा न होना इससे कहीं बेहतर है कि उसके लिये किसी ना अहल की तरफ़ रुजूअ किया जाए यानी किसी ना अहल के सामने हाथ फैलाया जाए।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़रमान है कि अल्लाह तआला की राह में किसी भाई की हाजत पूरी कर देना मेरे नज़दीक एक महीना के एतिकाफ़ करने से बेहतर है।

(ख़ुलफ़ाए राशेदीन, स 535)

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत

हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल अलैहिर्रहमा तहरीर फ़रमाते हैं कि इब्ने सअद ने इमरान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत की, कि किसी ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में देखा कि आपकी आँखों के दरमियान कुल हुवल्लाहु अहद लिखी हुई है। आपके अहले बैत में इससे बहुत ख़ुशी हुई। लेकिन जब यह ख़्वाब हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने बयान किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि अगर आपका यह ख़्वाब सच्चा है तो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्र के चन्द ही दिन रह गए हैं। यह ताबीर सही साबित हुई और बहुत क़रीब ज़माने में आपको ज़हर दिया गया।

एक मरतबा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहद में मिलाकर ज़हर दिया गया।

दूसरी मरतबा आपको खजूरों में ज़हर खिलाया गया।

खजूरे खाते ही आपको सख़्त घबराहट हुई, अपने भाई हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर तशरीफ़ लाए और रात भर बे क़रार रहे। सुबह होते ही अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अतहर पर हाज़िर हुए और शिफ़ा की इल्तिजा की तो अल्लाह तआला ने आपको शिफ़ा अता फ़रमाई। इसी तरह पाँच मरतबा आपको ज़हरे हलाहल दिया गया और आप अपने नाना जान शाफ़ी, नाफ़ी रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे अक़दस में हाज़िर होते और ज़हर का असर ख़त्म हो जाता था। लेकिन छटी बार हीरे की कनी पिसी हुई आपके पीने के पानी की सूराही में डाल दी गई जिसका पानी पीते ही ऐसा मालूम हुआ कि हलक़ से नाफ़ तक कट गया और क़ल्ब व जिगर के टुकड़े टुकड़े कट कट कर गिरने लगे, जब हालत ज़्यादा नाज़ुक हुई और ज़िन्दगी की उम्मीद न रही, विसाल शरीफ़ के क़रीब आपकी ख़िदमत में आपके प्यारे भाई हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए और दरियाफ़्त किया कि आपको ज़हर किसने दिया है ? आपने फ़रमाया नाम मालूम करके क्या करोगे ? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा मैं उसको क़त्ल करूँगा। आपने फ़रमाया जिसके बारे में मेरा गुमान है अगर हक़ीक़त में वही ज़हर देने वाला है तो ख़ुदाए तआला बेहतर बदला लेने वाला है और उसकी पकड़ बहुत मज़बूत है। और अगर मेरा गुमान ग़लत है तो मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई बे गुनाह क़त्ल किया जाए।

सुब्हानल्लाह ! हज़रत इमाम की करामत और मन्ज़िलत कैसी बलन्द है कि आप सख़्त तकलीफ़ में मुब्तला हैं, आंतें कट कट कर निकल रही हैं, नज़्अ की हालत हैं मगर इन्साफ़ का बादशाह उस वक़्त भी अपनी अदालत व इन्साफ़ का ना मिटने वाला नक़्श (तारीख़ की किताबों में) पर सब्त फ़रमाता है, उसकी एहतियात इजाज़त नहीं देती कि जिसकी तरफ़ गुमान है उसका नाम भी लिया जाए।

विसाल के क़रीब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि बिरादरे मुअज़्ज़म हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बैचेनी और बेक़रारी बहुत ज़्यादा है तो तसल्ली देते हुए अर्ज़ किया कि ऐ बिरादरे मोहतरम यह बैचेनी और बे क़रारी कैसी है ? आप तो अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने बाबा जान हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, अपनी नानी जान सय्यिदा ख़दीजा और अम्मी जान सय्यिदा फ़ातिमा और अपने चचा हज़रत हमज़ा और हज़रत जअफ़र और हज़रत हम्माम हज़रत क़ासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के पास जा रहे हैं और उनसे मुलाक़ात करेंगे।

वक़्ते विसाल आपकी उम्र शरीफ़ पैंतालीस साल, छः माह चन्द रोज़ की थी। आपने पाँच रबीउल अव्वल शरीफ़ सन् 49 हि. मदीना मुनव्वरा में विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ में हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पहलू में मदफ़ून हुए।

(मुलख़्ख़सन तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, सवानेह करबला, स. 61-62)

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

हज़रत इमाम हसन हर दिल अज़ीज़ थे

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस क़दर हर दिल अज़ीज़ और उम्मत के प्यारे थे कि आपके विसाल पर सिर्फ़ मदीना मुनव्वरा ही नहीं पूरा आलमे इस्लाम सोगवार हो गया था। मदीना मुनव्वरा में सफ़े मातम बिछी हुई थी, बाज़ार बन्द हो गए थे, गलियों में सन्नाटा छा गया था, मामूलाते ज़िन्दगी मुअत्तल (बेकार) हो गए थे।

आपकी नमाज़े जनाज़ा में लोगों की कसरत का यह आलम था कि सअलबा बिन मालिक जो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नमाज़े जनाज़ा में शरीक थे, उनका बयान है कि मैंने जन्नतुल बक़ीअ़ में इतना अज़ीम अज़दहाम न देखा कि अगर सुई फेंकी जाती तो ज़मीन पर नहीं बल्कि किसी के सर पर गिरती। (अल असाबा फ़िस्सहाबा, जि. 1, स. 231)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल शरीफ़ का यह असर था कि वह मस्जिद में नाला व ज़ारी (रोना, गिड़गिड़ाना) करते थे और ब आवाज़े बलन्द पुकार पुकार कर कहते थे :

يَاأَيُّهَا النَّاسُ مَاتَ الْيَوْمَ حُبُّ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ فَابْكُوْا (तहज़ीबुत्तहज़ीब, जि. 2, स. 260)

यानी आज खूब रो लो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का महबूब दुनिया से चला गया।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा मुहिब्बे अहले बैत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़ेहरा है कली जिसमें हुसैन व हसन फूल
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

ऐ ईमान वालो ! 5 रबीउल अव्वल शरीफ़ मेरे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नवासे और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बिरादरे मुअज़्ज़म हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाले मुबारक यानी उर्स शरीफ़ का दिन है। इस अज़ीम तारीख़ को हमें याद रखना चाहिये बल्कि इस अज़ीम तारीख़ में मेहफ़िले ज़िक्रे पाक का इनइक़ाद करें और आक़ा इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते आलिया में नज़रो नियाज़ का नज़राना पेश करें और आपकी बारगाह से बे शुमार बरकत व रहमत हासिल करे।

अल्लाह तआला हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सच्चे गुलामों में क़ुबूल फ़रमाए और आपका सदक़ा हमें और हमारे बच्चों और तमाम घर को अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

फ़ज़ाइले सय्यदना इमामे हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ O اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ O

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O

قُلْ لَّآ اَسْئَلُکُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत (पारा 25, आयत 23, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़...........

ममलकते शहादत के ताजदार और गुलिस्ताने अली व फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के फूल, आले रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शक्लो सूरत में अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुस्नो जमाल के रोशन आईना थे और सीरत में सीरते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मज़हरे अतम थे। आपका ख़ुल्क, ख़ुल्के रसूल था। आपका किरदारे रसूल था। आपकी हर हर अदा से अदाए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुश्बू आती थी।

अल ग़रज़ ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की चलती फिरती तसवीर थे। आशिक़े मुस्तफ़ा मुहिब्बे अहले बैत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

मअ़दूम न था साया शाहे सक़लैन
उस नूर की जलवा गाह थी ज़ाते हसनैन
तमसील ने उस साए के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने आधे से हुसैन

और किसी आशिक़ ने कहा है :

कौनैन में बलन्द है रुतबा हुसैन का
फ़र्शे ज़मीन से अर्श तक शोहरा हुसैन का
बे मिस्ल है जहाँ में कुंबा हुसैन का
सुल्ताने दो जहाँ है नाना जान हुसैन का

दुरूद शरीफ............

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत

नवासए रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) बाग़े रिसालत के फूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत पाँच शअबानुल मुअज़्ज़म सन् 4 हि. को मदीनामुनव्वरा में हुई।

हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप के कान में अज़ान दी, आप के मुंह में लुआबे दहन डाला और आप के लिये दुआ की। सातवें दिन आप का नाम हुसैन रखा और अक़ीक़ा किया।

आप का प्यारा लक़ब सिब्ते रसूल, और रैहानतुर्रसूल है और आप की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है।

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों का नाम शब्बर व शब्बीर रखा था और उन्हीं के नाम शब्बर व शब्बीर पर जिस का मअना हसन व हुसैन है तो मैं ने अपने बेटों का नाम हसन व हुसैन रखा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)

और हदीस में आता है कि : اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ اِسْمَانِ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ

यानी हसन और हुसैन जन्नती नामों में से दो नाम हैं। इस से पहले किसी का नाम हसन और हुसैन नहीं रखा गया। (अस्सवाएकुल मुहर्रिका, स. 188, अश्शरफुल मूअब्बद, स. 70)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ज़ाइल

ऐ ईमान वालो ! नवासए रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) बाग़े अली व फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के महकते हुए फूल हमारे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कौन हैं ? ख़ूब ग़ौर से सुनिये।

हुसैन मुझ से और मैं उसे से हूँ

रसूले आज़म नबिये दो आलम अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुहम्मदुर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया :

حُسَيْنٌ مِّنِّيْ وَاَنَا مِنَ الْحُسَيْنِ اَحَبَّ اللهُ مَنْ اَحَبَّ حُسَيْنًا

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 219 मिश्कात, स. 571, बरकाते आले रसूल, स. 144)

हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूँ। अल्लाह तआला उस शख़्स से महब्बत करता है जो हुसैन से महब्बत करता है। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जन्नती मर्द हैं

हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

जिसे यह पसन्द हो कि किसी जन्नती मर्द को देखे (एक रिवायत में है) जन्नती जवानों के सरदार को देखे। वह हुसैन बिन अली को देखे। (नूरुल अबसार, स. 114, बरकाते रसूल, स. 144)

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ आशिक़े हुसैन के लिये

हमारे सरकार नेअ़मत व दौलत वाले नबी शफ़ाअत व बख़्शिश वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया मेरा छोटा बच्चा कहाँ है ? (इतने में देखा) कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दौड़ते हुए आए और अपने नाना जान (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) की गोद में बैठ गए और अपनी उंगलियाँ दाढ़ी मुबारक में दाख़िल कर दीं। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन के मुंह का बोसा लिया और फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ وَاَحِبَّ مَنْ یُّحِبُّهٗ

(नूरुल अबसार, स. 114, बरकाते आले रसूल, स. 145)

यानी ऐ अल्लाह तआला मैं हुसैन से महब्बत करता हूँ तू भी हुसैन से महब्बत फ़रमा और उस शख़्स से भी महब्बत कर जो शख़्स हुसैन से महब्बत करे।

ऐ ईमान वालो ! वह शख़्स (सुन्नी मुसलमान) कितना ख़ुश नसीब होता है जो मेरे आक़ा इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु सेमहब्बत करता है और उन की महब्बत में मेहफ़िलें मुनअ़क़िद करता है। खिचड़े पकाता है, सबीलें लगाता है, इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की महब्बत का कितना अज़ीमुश्शान बदला व सिला पाता है कि अल्लाह तआला और उस के मेहबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस शख़्स से महब्बत फ़रमाते हैं।

दुरूद शरीफ़ :

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़बाने मुबारक चूसना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम : يَمُصُّ لُعَابَ الْحُسَيْنِ كَمَا يَمُصُّ الرَّجُلُ التَّمْرَ

(नूरुल अबसार, स. 114, बरकाते आले रसूल, स. 145)

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लुआबे दहन को चूसते हुए देखा जिस तरह आदमी खजूर को चूसता है।

इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कितने अफ़ज़ल हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा के साया में तशरीफ़ फ़रमाते थे। उन्होंने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तशरीफ़ लाते हुए देखा तो फ़रमाया :

هٰذَا اَحَبُّ اَهْلِ الْاَرْضِ اِلٰی اَهْلِ السَّمَاءِ الْیَوْمَ (बरकाते आले रसूल, स. 145)

आज यह यानी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आसमान वालों के नज़दीक तमाम ज़मीन वालों से ज़्यादा महबूब हैं।

आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने बेटे को इमाम हुसैन पर कुरबान कर दिया

हमारे प्यारे रसूल मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक दिन अपनी गोद में दाएं हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को और बाएं अपने बेटे हजरत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को बिठाए हुए हैं कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला उन दोनों को आप के पास जमा न रहने देगा। उन में से एक को अपने पास बुला लेगा। अब उन दोनों में से जिसे आप चाहें अपने पास रखें। मेरे आका करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर हुसैन रुखसत हो जाएं तो उन की जुदाई में फ़ातिमा, अली को तकलीफ़ होगी और मुझे भी रन्ज होगा और अगर इब्राहीम को रुखसत करता हूँ तो ज़्यादा ग़म मुझे होगा। इस लिये मुझे अपना ग़म पसन्द है। यानी मेरे नवासे हुसैन मेरे पास रहेंगे और मेरे बेटे इब्राहीम को अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूँ। इस वाक़िआ के तीन दि के बाद हजरत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल होगा।

इस वाक़िआ के बाद जब भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमत में आते तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मरहबा फरमाते फिर उन की पेशानी को चूमते और लोगों से फ़रमाते कि मैं ने हुसैन पर अपने बेटे इब्राहीम को कुरबान कर दिया है।

(शवाहिदुन्नुबुव्वह, स. 305)

ऐ ईमान वालो ! मेरे आका हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वह नेक मर्द और सालेह इन्सान हैं जिन पर हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कुरबान किया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मैदाने करबला में अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आपके दीन की खातिर अपने आल व औलाद हत्ता कि पूरे घर का घर कुरबान कर दिया।

जिसने हक़ करबला में अदा कर दिया
अपने नाना का वादा वफ़ा कर दिया
घर का घर सब सुपुर्दे खुदा कर दिया
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि नवासए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पैदल चलकर पचीस हज किये। आप बड़ी फ़ज़ीलत के मालिक थे और कसरत से नमाज़, रोज़ा, हज, सदक़ा और दीगर उमूरे ख़ैर अदा फ़रमाते थे।

(इब्ने असीर व हवाला बरकाते आले रसूल, स. 145)

हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा आग़ोशे नबी में

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और आप इस हालत में बाहर तशरीफ़ लाए कि आप कम्बल ओढे हुए थे और उसमें कोई चीज़ उभरी हुई थी जिससे यह मालूम हो रहा था कि उसमें ज़रूर कोई चीज़ है जिसे मैं नहीं जानता था, जब मैं अपनी ज़रूरियात से फ़ारिग़ हुआ तो मैंने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ किया :

يَارَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَسَلَّمَ فِدَاكَ اَبِيْ وَاُمِّيْ

आपकी आग़ोशे मुबारक में क्या चीज़ ? है तो आपने कम्बले मुबारक का गोशा हटाया तो मैंने देखा कि आपकी मुबारक गोद में इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जलवा फ़रमा हैं और फिर आपने यह फ़रमाया : هٰذَانِ اِبْنَایَ وَاِبْنَا اِبْنَتِیْ यह दोनों मेरे बेटे और मेरी बेटी के बेटे हैं और फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُحِبُّهُمَا فَاَحِبَّهُمَا وَاَحِبَّ مَنْ یُّحِبُّهُمَا

ऐ अल्लाह मैं इन दोनों को महबूब रखता हूँ तू भी महबूब रख, और जो शख़्स इन दोनों से महब्बत करे तू उससे महब्बत फ़रमा। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 218, मिश्कात, स. 570)

हस्नैन जन्नती जवानों के सरदार हैं

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ

हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 218, मिश्कात, स. 570)

हसन व हुसैन जन्नती फूल हैं : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से जब इराक़ के लोगों में हालते एहराम में मक्खी या मच्छर मारने का मस्अला पूछा तो आपने फ़रमाया इन अहले इराक़ को देखो मुझसे मक्खी मारने का मस्अला पूछते हैं, हालांकि इन्होंने नवासए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क़त्ल किया है और फिर उन्होंने बयान किया :

وَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هُمَا رَيْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْيَا

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (हसन व हुसैन) यह दोनों दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (बुख़ारी, जि. 1, स. 520)

हज़रत सअद बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत अकदस में हाज़िर हुआ, उस वक़्त इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) आपकी पुश्ते अनवर पर खेल रहे थे तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या आप इन दोनों (यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से महब्बत रखते हैं ?

فَقَالَ وَمَالِیْ لَا اُحِبُّھُمَا وَاِنَّھُمَا رَیْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْیَا

तो फ़रमाया क्यों न महब्बत रखूँ जब कि यह दोनों यानी हसन व हुसैन दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 110)

और एक रिवायत इस तरह है : اِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَیْنَ ھُمَا رَیْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْیَا

बे शक हसन और हुसैन दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (मिश्कात, स. 570)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ प्यार व महब्बत का यह आलम था कि : فَیَشُمُّھُمَا وَیَضُمُّھُمَا

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इन दोनों शहज़ादों को सूँघते थे और अपने सीनए मुबारक से चिमटाया करते थे। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 220)

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !! हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का मक़ाम व मरतबा कितना बलन्द व बाला है कि दुनिया में सब लोग अपने बच्चों को प्यार व महब्बत से चूमते हैं लेकिन हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने दोनों नवासे इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बारे में फ़रमाते हैं कि यह दोनों दुनिया के मेरे फूल हैं जो अल्लाह तआला ने मुझे अता फ़रमाए हैं और यह बात ज़ाहिर है और खुली हुई है कि फूल को सूंघा जाता है इस लिये मैं अपने इन दोनों फूलों को यानी हसन और हुसैन दोनों को सूंघा करता हूँ।

खूब फ़रमाया आक़ाए नेअमत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिसमें हुसैन और हसन फूल

दुरूद शरीफ़ :

इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा खुतबे के वक़्त

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम खुत्बा दे रहे थे कि दौराने खुतबा हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा मस्जिद में आ गए। बचपन का ज़माना था और अभी पूरी तरह चलना नहीं आता था, दोनों शहज़ादों ने सुर्ख रंग का धारी दार क़मीस ज़ेबेतन किये हुए थे, चलते थे और गिर जाते थे जब आपने यह मन्ज़र मुलाहज़ा फ़रमाया तो

खुतबा रोककर मिम्बर से नीचे उतरे और इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को अपने गोद में उठा लिया और अपने सामने बिठाया फिर फ़रमाया : अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया है कि तुम्हारे माल और औलाद तुम्हारे लिये आज़माइश है।

نَظَرْتُ اِلٰی هٰذَیْنِ الصَّبِیَّیْنِ یَمْشِیَانِ وَیَعْثُرَانِ فَلَمْ اَصْبِرْ حَتّٰی قَطَعْتُ حَدِیْثِیْ وَرَفَعْتُهُمَا

तर्जमा : मैंने इन दोनों को चलते और गिरते देखा तो मुझे गवारा न हुआ इस लिये खुतबा रोककर इन दोनों को उठा लिया (तिर्मिज़ी, जि 2, स. 241, मिश्कात 1, स 400, अशिअतुल्लमआत, जि 8, स 20..)

इमाम हसन और इमाम हुसैन के लिये सज्दा तवील कर दिया

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सज्दे में थे कि हसन व हुसैन आए और आपकी पुश्ते अनवर पर सवार हो गए, पस आपने (उनकी ख़ातिर) सज्दा तवील कर दिया फिर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क्या सज्दा को तवील करने का हुक्म आ गया है।

فَیَقُوْلُ اِنَّ ابْنِیْ ارْتَحَلَنِیْ فَکَرِهْتُ اَنْ اُعَجِّلَهٗ

(मजमउज़्ज़वाइद, जि.9, स.181)

तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं नहीं मेरे बेटे मेरी पुश्त पर (सज्दे की हालत में) चढ़ गए थे तो मैंने यह ना पसन्द किया कि मैं जल्दी करूँ (इस लिये सज्दा तवील कर दिया)

एक दफ़ा हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी पुश्ते अनवर पर सज्दे की हालत में सवार हो गए तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस वक़्त सज्दे में रहे जब तक इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पुश्ते अक़दस से खुद न उतर गए। फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हमारे मां बाप आप पर क़ुरबान, क्या अब सज्दा को तवील करने का हुक्म आ गया है या आप पर उस वक़्त वही नाज़िल हो रही थी जो आपने इतनी तवील सज्दा अदा फ़रमाया।

قَالَ کُلُّ ذٰلِكَ لَمْ یَکُنْ وَلٰکِنَّ ابْنِیْ ارْتَحَلَنِیْ فَکَرِهْتُ اَنْ اُعَجِّلَهٗ حَتّٰی یَقْضِیَ حَاجَتَهٗ

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐसी कोई वजह नहीं थी बल्कि वजह यह थी कि मेरा बेटा मेरे ऊपर सवार हो गया था मेरे दिल ने यह पसन्द नहीं किया कि मैं जल्दी उठूँ और यह गिर जाए।

सवारी अच्छी है तो सवार कितना अच्छा है

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने हसन और

हुसैन दोनों को देखा कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कन्धों पर सवार हैं तो मैंने कहा कितनी अच्छी सवारी तुम्हारे नीचे है।

فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَنِعْمَ الْفَارِسَانِ

पस नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (ऐ उमर) सवारी अच्छी है तो सवार कितने अच्छे हैं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को अपनी पुश्ते अनवर पर बिठाए हुए हैं और आप दोनों हाथों और दोनों घुटनों के बल चल रहे हैं तो मैंने कहा (ऐ शहज़ादो !) तुम्हारी सवारी कितनी अच्छी है।

فَقَالَ وَنِعْمَ الرَّاكِبَانِ هُمَا तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (ऐ जाबिर) दोनों सवार कितने अच्छे हैं। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 108, अल बिदाया, जि. 8, स. 36)

ऐ ईमान वालो ! वह मन्ज़र कितना प्यारा होगा जब प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दोशे मुबारक पर इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा सवार थे, इसी लिये तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह रूह परवर मन्ज़र देखकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आपकी कितनी अच्छी सवारी हैं तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ऐ उमर ! सवारी कितनी अच्छी है तो यह भी देखो कि सवार कितने अच्छे हैं। गोया अगर सवारी नबियों और रसूलों के सरदार हैं तो सवार जन्नती जवानों के सरदार हैं। अगर सवारी महबूबे ख़ुदा हैं तो सवार महबूबे मुस्तफ़ा हैं। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

इमाम हुसैन के लिये जन्नत से जोड़े आना

माहे रमज़ानुल मुबारक ख़त्म होने के क़रीब है, ईद का चाँद नज़र आने वाला है, इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बचपन का ज़माना है, ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा घर के तमाम काम काज से फ़ारिग़ होकर नमाज़ के लिये मुसल्ला बिछाती हैं उधर दोनों शहज़ादे अपनी प्यारी मां हज़रत ख़ातूने जन्नत की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ करते हैं, ऐ अम्मी जान ! सुबह ईद का दिन है, मदीना के लोगों के बच्चे नए

नए लिबास पहनेंगे और महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासों के लिये नए जोड़ों का इन्तिज़ाम नहीं ? क्या ईद के दिन हम नए जोड़े नहीं पहनेंगे ? बच्चों के सवाल से मां की ममता तड़प गई, बच्चों को तसल्ली देकर फ़रमाया, मेरे बेटों ! फ़िक्र मत करो तुम्हारे लिये भी (इन्शाअल्लाहु तआला) नए जोड़ों का इन्तिज़ाम हो जाएगा।

ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अल्लाह तआला की बारगाहे इनायत में दुआ के लिये दस्ते सवाल दराज़ किया और अर्ज़ किया या रहमानो रहीम मौला ! तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नवासों ने मुझसे नए कपड़े मांगे हैं। ऐ मौलाए करीम व रहीम ! मैंने तेरे करम पर भरोसा करते हुए उनसे वादा कर लिया है। ऐ मेरे मौलाए करीम ! मैंने अपने बच्चों से जो वादा किया है उसकी लाज रख ले। नमाज़े फ़ज्र के बाद दुआ मांग कर जब फ़ारिग़ होती हैं तो किसी शख़्स ने दरवाजे पर दस्तक दी, हज़रत सय्यिदा ने पूछा कौन ? दस्तक देने वाले ने जवाब दिया, अहले बैत का दर्ज़ी हूँ शहज़ादों के लिये नए नए कपड़े लेकर आया हूँ, हज़रत सय्यिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने दरवाज़े से वह कपड़े ले लिये और इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) दोनों शहज़ादों को पहना दिये। महबूबे ख़ुदा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया ऐ मेरी प्यारी बेटी फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) क्या तुम्हें मालूम है कि यह कपड़े कौन लेकर आया था ? हज़रत सय्यिदा ने अर्ज़ किया अब्बा जान आप ही बता दें। तो आपने फ़रमाया, वह जिब्रीले अमीन थे जो अल्लाह तआला की तरफ़ से जन्नत के कपड़े लेकर हाज़िर हुए थे। (रौज़तुश्शोहदा, स. 70)

इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की कुश्ती

सय्यिदुस्सादात हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों भाई बचपन में एक दूसरे से कुश्ती लड़ रहे थे और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बैठे हुए अपने दोनों नवासों की कुश्ती को मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ऐ हसन ! हुसैन को पकड़ लो तो हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब यह सुना तो सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को तअज्जुब हुआ और अर्ज़ किया अब्बा जान ! आप बड़े से फ़रमा रहे हैं कि छोटे को पकड़ लो तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, मेरी बेटी फ़ातिमा मैंने इस लिये फ़रमाया कि दूसरी जानिब जिब्रईल अलैहिस्सलाम खड़े हैं और वह हुसैन से कह रहे हैं कि हसन को पकड़ लो तो मैंने हसन से कहा कि तुम हुसैन को पकड़ लो। (नूरुल अबसार, स. 114)

ऐ ईमान वालो ! सय्यिदुल अम्बिया और सय्यिदुल मलायका अलैहिमस्सलातो वस्सलाम ने इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कुश्ती क्यों लड़ाई ? तो उसकी अस्ल वजह यह है कि आज ही तैय्यारी मुकम्मल करा दी जाए ताकि करबला के मैदान में जब हक़ की हिफ़ाज़त के लिये इस्लाम की बक़ा के लिये यज़ीद और यज़ीदियों से मुक़ाबला हो और बातिल ताक़त से टकराना पड़े तो नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रूबरू जो तैय्यारी कराई थी वह काम आ जाए।

قِيلَ الحَكِيمِ لَا يَخْلُو عَنِ الحِكْمَةِ

उस शहीदे कर बला शाहे गुल गूँ क़ुबा
बे कस दश्ते गुरबत पे लाखों सलाम

कितने बिखरे हुए हैं मदीने के फूल
करबला तेरी क़िस्मत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़.........

इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तख़्तियाँ

كَتَبَ الحَسَنُ وَالحُسَيْنُ فِي لَوْحَيْنِ

हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने दो तख़्तियाँ लिखीं और दोनों भाई आपस में कहने लगे कि हमारी तहरीर अच्छी है तो फ़ैसले के लिये अपने वालिदे गिरामी हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास लाए। आपने बड़े बड़े फ़ैसले फ़रमाए हैं मगर यह फ़ैसला नहीं फ़रमाते हैं, इस लिये कि दोनों में से किसी का दिल न टूटने पाए। इस लिये हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अपनी मां सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा के पास ले जाओ। दोनों शहज़ादे अपनी अम्मी जान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा अम्मी जान ! आप फ़ैसला फ़रमा दें कि किसकी तहरीर अच्छी है ? हज़रत सय्यिदा ने फ़रमाया कि मैं यह फ़ैसला नहीं करूँगी। इस फ़ैसले को तुम दोनों अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास ले जाओ वह बेहतर फ़ैसला फ़रमा देंगे। दोनों शहज़ादे अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में आ गए और अर्ज़ किया कि नाना जान आप फ़ैसला फ़रमा दें कि हम दोनों में से किसकी तहरीर अच्छी है ? सारे आलम का फ़ैसला फ़रमाने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ग़ौर व फ़िक्र किया कि हसन की तहरीर को अच्छी कहूँगा तो हुसैन का दिल टूटेगा और अगर हुसैन की तहरीर को अच्छी कहूँगा तो हसन को रन्ज होगा और दोनों में से किसी का भी रन्जीदा होना मुझे गवारा नहीं है। इस लिये आपने फ़रमाया कि इसका फ़ैसला जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम करेंगे। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से नाज़िल हुए और बारगाहे

अक़्दस में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इसका फ़ैसला अल्लाह तआला फ़रमाएगा मैं उसके हुक्म से जन्नत का एक सेब लाया हूँ, उसने फ़रमाया है कि मैं इस जन्नती सेब को दोनों की तख़्तियों पर गिराऊँ जिसकी तख़्ती पर सेब गिरेगा फ़ैसला हो जाएगा कि किसकी तख़्ती की तहरीर अच्छी है। दोनों तख़्तियाँ एक जगह पास पास रखी गईं और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दोनों तख़्तियों के ऊपर से जन्नती सेब को गिराया। अल्लाह तआला के हुक्म से सेब के दो टुकड़े हो गए, आधा सेब एक तख़्ती पर और दूसरा आधा सेब दूसरी तख़्ती पर गिरा। इस तरह अल्लाह तआला ने फ़ैसला फ़रमा दिया कि दोनों शहज़ादों की तख़्ती की तहरीर अच्छी है, इस फ़ैसले से दोनों शहज़ादे खुश हो गए। (नुजहतुल मजालिस, जि. 2, स. 460 व हवाला इमाम नस्फ़ी)

इमाम हुसैन के क़दम की ख़ाक की बरकत : एक दिन का वाक़िआ है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबए किराम के हमराह (जैसे चौदहवीं का चाँद सितारों के दरमियान होता है) मदीना मुनव्वरा की गलियों से गुज़र रहे थे, एक मक़ाम पर मदीना मुनव्वरा के चन्द बच्चे आपस में खेल रहे थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन बच्चों में से एक लड़के को गोद में उठा लिया और उसकी पेशानी को बोसा दिया और बहुत प्यार से अपने सीने से चिमटा लिया। सहाबए किराम अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान ने जब इस मन्ज़र को मुलाहज़ा किया तो हैरत व तअज्जुब से बारगाहे अक़्दस में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हमें बड़ा तअज्जुब है कि यह कौन लड़का है ? इसको इस क़दर प्यार करने का सबब क्या है ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि इस बच्चे के साथ मेरे प्यार व महब्बत का सबब यह है कि एक दिन मैंने देखा कि यह बच्चा मेरे प्यारे हुसैन के साथ खेल रहा था और मेरे बेटे हुसैन के क़दम के नीचे की धूल को लेकर अपनी आँखों पर मलता था, तो मैं उसी दिन से इस लड़के को दोस्त रखता हूँ और इससे महब्बत करता हूँ और क़ियामत के दिन मैं इसकी शफ़ाअत करूँगा और इसके साथ इसके मां बाप को बख़्शवाकर जन्नत में दाख़िल करूँगा। (अनासिरुश्शहादतैन, स. 113)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से महब्बत करने वाले की कल क़ियामत के दिन हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शफ़ाअत फ़रमाकर उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाऐंगे।

अल्लाह तआला मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के गुलामों में क़ुबूल फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

इमाम हुसैन के लिये हिरणी ने बच्चा पेश किया

एक दिन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के एक सहाबी हिरणी का बच्चा पकड़ लाए और आपकी ख़िदमत में बतौरे हदया पेश किया, आपने उसे

क़ुबूल फ़रमाया और वह हिरणी का बच्चा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अता फ़रमा दिया। आप हिरणी के बच्चे के साथ खेलते खेलते घर पहुँचे तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज की कि भाईजान! हिरणी का बच्चा मुझे दे दो। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा ऐ भाई हुसैन मुझे नाना जान ने दिया है, तुम भी नाना जान से ले आओ। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने नाना जान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया नाना जान! आपने भाई हसन को हिरणी का बच्चा अता किया है मुझे भी हिरणी का बच्चा दीजिये। हिरणी का बच्चा तलब करते हुए क़रीब था कि आप रो पड़ते मगर देखते क्या हैं कि जंगल की तरफ़ से एक हिरणी अपने एक बच्चे के साथ दौड़ती हुई चली आ रही है। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज करने लगी कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पहला बच्चा जिसको आपके सहाबी पकड़कर आपके पास लाए वह भी मेरा ही बच्चा है, अब यह दूसरा बच्चा मैं ख़ुद लेकर हाज़िर हुई हूँ इसे भी क़ुबूल फ़रमा कर इमाम हुसैन को अता फ़रमा दें। या नबियल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं अपने बच्चों की जुदाई तो बरदाश्त कर सकती हूँ लेकिन आपके बेटे हुसैन का रोना मैं गवारा नहीं कर सकती हूँ। (अनारिरुश्शहादतैन, स. 116)

ऐ ईमान वालो! हमारे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क्या शान है कि जानवर तक आपसे महब्बत करता है। हाय रे यज़ीद पलीद तू कैसा बद बख़्त और बद नसीब था कि तूने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ इश्क़ व महब्बत के बजाए उनके घर को लूटा, उनके बेटों को भूके, प्यासे रखा और फिर क़त्ल किया और अपना ठिकाना जहन्नम बनाया।

हम हुसैनियों को यज़ीद और यज़ीदियों से क्या सरोकार, जो शख़्स भी जन्नत में जाना चाहे तो जवानाने जन्नत के सरदार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से महब्बत करे, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अनहु की महब्बत जन्नत की कुन्जी है।

इमाम हुसैन की शहादत की ख़बर : शहीदों के क़ाफ़ला सालार, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत के साथ ही आपकी शहादत की ख़बर मशहूर हो चुकी थी।

उठाए कुछ वर्क़ लालह ने कुछ नरगिस ने कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्तान मेरी

शीर ख़्वागी के अय्याम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उम्मुल फ़ज़्ल को आपकी शहादत की ख़बर दी। हज़रत सय्यिदा ख़ातूने जन्नत रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने प्यारे बेटे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़मीने करबला में ख़ून बहाने के लिये ख़ूने जिगर यानी दूध पिलाया। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने शहज़ादे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़ाके करबला में इस्लाम की ख़ातिर जाने अज़ीज़ को क़ुरबान करने के लिये सीने से लगाकर

पाला। रसूलुल्लाह प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला के दीन की हिफ़ाजत के लिये बिया बान में सूखा गला कटवाने और मरदाना वार जान नज़्र करने के लिये अपने नवासा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी आग़ोशे रहमत में तरबियत फ़रमाया। उस फ़रज़न्दे अरजुमन्द प्यारे नवासे की विलादत की मसर्रत के साथ शहादत की ख़बर सुनकर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की चश्माने नुबुव्वत (मुबारक आँखों) से अश्कों के मोती निछावर हुए।

बावजूद इसके कि उस फ़रज़न्दे अरजुमन्द प्यारे नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़बरे शहादत पाकर चश्मे मुबारक से अश्क तो जारी हो जाते हैं मगर नाना जान प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बारगाहे इलाही में दुआ के लिये हाथ नहीं उठाते हैं कि मेरा प्यारा हुसैन इस हादसा यानी क़त्ल होने से मेहफ़ूज़ रहे और दुश्मनों के हलाक व बरबाद होने की भी दुआ नहीं फ़रमाते हैं।

और न ही वालिदे गिरामी हज़रत मौला अली और न प्यारी अम्मी जान हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अर्ज करते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इस ख़बरे जानकाह ने तो दिल व जिगर पारह पारह कर दिया है आपके क़ुरबान, बारगाहे हक़ में अपने इस फ़रज़न्दे हुसैन के लिये दुआ फ़रमा दीजिये कि हर बला व आफ़त दूर हो जाए। न अज़्वाजे मुतहहरात न सहाबए किराम सब शहादत की ख़बर सुनते हैं मगर बारगाहे रिसालतो नुबुव्वत में किसी जानिब से भी दरख़्वास्त पेश नहीं होती। अस्ल हक़ीक़त यह बात है कि शजरे इस्लाम की आबयारी के लिये ख़ूने हुसैन की ज़रूरत थी और मक़ामे इम्तिहान में साबित क़दमी दरकार है यह महल उज़्र व ताम्मुल नहीं ऐसे मौक़े पर जान देने से दरेग़ करना अल्लाह तआला के महबूब व जां बाज़ मर्दों का शेवा नहीं। इख़्लास से जां निसारी ऐन तमन्ना है। दुआएं की गईं मगर यह कि मेरा फ़रज़न्दे अरजुमन्द हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक़ामे सख़ा व वफ़ा में सादिक़ साबित हो, तौफ़ीक़े इलाही मुसाइद रहे, मसाइबो आलाम का हुजूम व अम्बोह मेरे हुसैन के क़दम को पीछे न हटा सके।

अबू नुऐम फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र के मक़ाम पर पहुँचे। हज़रत मौला अली ने बयान फ़रमाया यहाँ उन शोहदा के ऊँट बन्धेंगे, यहाँ उनके कजावे रखे जाऐंगे, यहाँ उनके ख़ून बहेंगे, इमाम हुसैन और उनके साथी इस मैदान में शहीद होंगे, आसमान व ज़मीन उन पर रोऐंगे। इन ख़बरों से मालूम होता है कि हज़रत मौला अली और सहाबए किराम ज़मीने करबला के चप्पा चप्पा से आगाह थे। यह शहादत का कमाल है ऐसा ऐलाने आम हो अपने पराए सब जान जाएं, मक़ाम बता दिया गया हो, वहाँ की मिट्टी शीशियों में रख ली गई हो। उसके ख़ून हो जाने का इन्तिज़ार हो और शौक़े शहादत में कमी न आए। जज़्बए जाँ निसारी रोज़ अफ़ज़ूं होता रहे (दिन ब दिन बढ़ता ही रहे) तमाम चाहने वाले पहले से बा ख़बर हों, ख़ुद मेरे इमाम को भी अपनी क़ुरबानी और शहादत की ख़बर है।

पहाड़ भी होता तो इस खबर की वहशत से कांप जाता मगर कभी वहशत व परेशानी मेरे
इमाम के पास नहीं फटकती और कोई हिर्स व तमा (लालच) जाह व हश्मत, ताज व
हुकूमत ग़रज़ यह कि बड़ी से बड़ी नेअमत व दौलत मेरे इमाम के राहे शहादत में दीवार न बन
सकीं और मेरे इमाम के पायए इस्तिकलाल (मजबूत पांव) को हिला न सकीं और मेरे आक़ा
इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब्रो रज़ा के साथ अपने मौलाए करीम के लिये राहे
शहादत की तमाम तैय्यारियाँ मुकम्मल कर ली, यह मरदाने खुदा और फ़रज़न्दाने मुस्तफ़ा
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हिस्सा और उन्हीं का हिस्सा है।

बे खतर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल थी महवे तमाशा लबे बाम अभी

यह फ़ैज़ाने नज़र था या कि मकतब की करामत थी
सिखाए किसने इस्माईल को आदाबे फ़रज़न्दी

(इक़बाल)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि इमाम हसन और इमाम
हुसैन दोनों मेरे घर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने
खेल रहे थे कि जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और कहा :

يَا مُحَمَّدُ اِنَّ اُمَّتَكَ تَقْتُلُ اِبْنَكَ هٰذَا مِنْ بَعْدِكَ

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम बे शक आपकी उम्मत
आपके इस बेटे यानी हुसैन को आपके बाद क़त्ल कर देगी।

(सवाइके मुहर्रिक़ा, स. 191, ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 125)

और आपको वहाँ की मिट्टी दी। आपने उस मिट्टी को सूंघा और फ़रमाया इसमें रन्जो बला
की बू है। पस आपने इमाम हुसैन को अपने सीने से चिमटा लिया और रोए। फिर फ़रमाया ऐ
उम्मे सलमा जब यह मिट्टी खून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा (हुसैन) क़त्ल हो गया।
उम्मे सलमा ने उस मिट्टी को बोतल में रख दिया था और हर दिन उस मिट्टी को देखतीं और
फ़रमाती थीं जिस दिन यह मिट्टी खून हो जाएगी वह दिन अज़ीम दिन होगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बारिश के फ़रिश्ते ने अल्लाह तआला से
हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने की
इजाज़त मांगी तो अल्लाह तआला ने उसे इजाज़त दी, वह आया तो इमाम हुसैन भी आपकी
ख़िदमत में आए और आपके कन्धों पर चढ़कर बैठ गए। आप उनको चूमा और प्यार किया।
तो फ़रिश्ते ने कहा, क्या आप हुसैन से प्यार व महब्बत करते हैं ? आक़ा सल्लल्लाहु तआला
अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ। मैं हुसैन से प्यार करता हूँ। फ़रिश्ते ने कहा :

اِنَّ اُمَّتَكَ تَقْتُلُهُ۔

(सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 190, ख़साइसे कुबरा, जि. 3, स. 125)

बेशक आपकी उम्मत हुसैन को क़त्ल कर देगी और अगर आप चाहें तो मैं आपको वह
जगह दिखा दूँ जहाँ हुसैन क़त्ल किये जाएंगे। फिर वह फ़रिश्ता सुर्ख़ मिट्टी लाया वह मिट्टी

हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अन्हा ने ले ली और अपने कपड़े के कोने में बाँध ली रावी फ़रमाते हैं कि हम सुना करते थे कि हुसैन करबला में शहीद होंगे।

हजरत अनस बिन हारिस रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना :

قَالَ اِنَّ اِبْنِیْ هٰذَا یَعْنِی الْحُسَیْنَ یُقْتَلُ بِاَرْضٍ یُقَالُ لَهَا کَرْبَلَا فَمَنْ شَهِدَ ذٰلِکَ مِنْکُمْ

فَلْیَنْصُرْهُ فَخَرَجَ اَنَسُ بْنُ الْحَارِثِ اِلٰی کَرْبَلَا فَقُتِلَ بِهَا مَعَ الْحُسَیْنِ

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बेशक मेरा बेटा हुसैन कत्ल कर दिया जाएगा उस ज़मीन में जिसको करबला कहा जाता है, तो जो शख़्स तुम लोगों में से वहाँ मौजूद हो तो उसको चाहिये कि वह हुसैन की मदद करे। तो अनस बिन हारिस करबला गए और इमाम हुसैन के साथ शहीद हो गए। (ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 25, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 8, स. 199, दलाइलुन्नुबुव्वत, अबू नुऐम, स. 486)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि :

مَا کُنَّا نَشُکُّ وَاَهْلُ الْبَیْتِ مُتَوَفِّرُوْنَ اَنَّ الْحُسَیْنَ بْنَ عَلِیٍّ یُقْتَلُ بِالطَّفِّ

हमें और अहले बैत को इस बात में कोई शक व शुबा नहीं था कि (इमाम) हुसैन बिन अली ज़मीने तिफ़ यानी करबला में शहीद होंगे। (अल मुस्तदरक, जि. 3, स. 179, ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 126)

ऐ ईमान वालो ! इन अहादीसे करीमा से साफ़ तौर पर जाहिर और साबित हो गया कि हमारे आका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने प्यारे नवासे हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु के शहीद होने की ख़बर थी।

लेकिन महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कि अल्लाह तआला जिन की रज़ा व खुश्नोदी चाहता है। वह महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिन की अजमतों का परचम अर्श की बलन्दी पर लहरा रहा है, वह महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिन का हुक्म बहरो बर (दरया व ख़ुश्की) में नाफ़िज़ है, वह महबूब रसूल जिन को शजर व हजर (दरख़्त व पत्थर) सलाम करते हैं, वह महबूब रसूल जिन का इशारा पाकर चाँद दो टुकड़े हो जाता है, वह महबूब रसूल जिन के हुक्म से डूबा हुआ सूरज पलट आता है, वह महबूब रसूल जिन की हुकूमत फ़र्श से अर्श तक है, वह महबूब रसूल दुआ नहीं करते कि या अल्लाह मेरे नवासे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस अज़ीम इम्तिहान से बचा ले।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे खुदा रजियल्लाहु तआला अन्हु और जन्नती औरतों की सरदार हजरत सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जिन के बेटे हैं हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु, और अमीरुल मोमिनीन हजरत इमाम हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छोटे भाई हैं हज़रत इमाम हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु, और इन सब को ख़बर है कि इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने करबला में कत्ल किये जाएंगे, शहीद होंगे मगर कोई भी यह दुआ नहीं करता है कि या अल्लाह

तआला मेरे हुसैन (रजियल्लाहु तआला अन्हु) को कत्ल होने और आजमाइश से बचा ले, बल्कि सब यही दुआ मांगते नजर आते हैं कि या अल्लाह तआला कादिर व कय्यूम मौला। मेरे हुसैन को सब्र दे और उस आजमाइश व इम्तिहान में कामयाबी व सरफराजी अता फरमा।

मुख़ालिफ़ का एतिराज़

ऐ ईमान वालो ! कुछ लोग जो रसूल और आले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह के गुस्ताख व बे अदब हैं और बुजुर्गों के मुखालिफ व दुश्मन हैं वह लोग अपनी बद अकीदगी और इस्लाम व ईमान से दूरी की वजह से यह एतराज करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने नवासे हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु को कत्ल होने से नहीं बचा सकते तो उम्मत के दीगर लोगों को किसी बला व मुसीबत से क्या बचा पाऐंगे तो इस एतराज का जवाब यह है कि हमारे आका महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने नवासा हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु को कत्ल होने से बचाने की कोई फ़िक्र ही नहीं की, बल्कि दुआ भी मांगी तो सब्र और इस्तिक़ामत की।

तो यह एतराज करना बिल्कुल गलत साबित हुआ कि वह अपने नवासे हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को कत्ल होने से बचा नहीं सके। अब रही बात यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में यह ताकत व कुव्वत है या नहीं ? कि वह अपने घर वालों और अपनी उम्मत को बला व मुसीबत से बचा सकते हैं या नहीं?

तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत व ताकत का मज़हरे अतम हमारे आका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बनाया है और सब से अज़ीम बला व मुसीबत की जगह जहन्नम है। दुनिया की हर बला व मुसीबत दोज़ख के अज़ाब के सामने हेच है। और उसकी कोई हैसियत ही नहीं है। बे इज़्निल्लाह हमारे सरकार दोनों आलम के मालिको मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बरोज़े क़ियामत अपनी उम्मत के तमाम गुनाहगार ईमान वालों को जहन्नम के अज़ाब से बचाऐंगे और जन्नत में दाखिल फ़रमाऐंगे मगर बख़्शिश की शर्त यह होगी कि उम्मती ईमान वाला हो, चाहे कितना ही बुरा और गुनाहगार क्यों न हो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और अगर उम्मती बे ईमान, गद्दार, वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी है तो यक़ीनन हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस बे अदब व गुस्ताख़ उम्मती को नहीं बचाऐंगे और उसकी मदद भी नहीं फ़रमाऐंगे।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

अर्श हक़ है मस्नदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की

और कुछ गुस्ताख इस तरह की भी बातें करते नज़र आते हैं कि इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के मानने वाले, उनसे महब्बत व उल्फ़त करने वाले, मदद के लिये या हुसैन, या हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) पुकारते हैं और उनसे मदद मांगते हैं जब इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मैदाने करबला में खुद अपनी जान की हिफाजत नहीं कर सके और अपने भूके प्यासे घर वालों और साथियों को क़त्ल होने से नहीं बचा पाए तो या हुसैन, या हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) कहने वालों की क्या मदद कर सकते हैं ?

तो इसका जवाब यह है कि मेरे आक़ा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी और अपने घर वालों और साथियों की जान बचाने की फ़िक्र ही नहीं की थी, बल्कि मेरे सरदार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने नाना जान मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त की फ़िक्र की थी, इसी अहम मक़सद की तकमील के लिये हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने करबला में तशरीफ़ ले गए थे। अपनी जान को बचाने नहीं गए थे बल्कि अपनी जान को देकर इस्लाम बचाने गए थे।

बचपन में अपने नाना जान (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) से जो वादा किया था उस वादे को पूरा करने गए थे और उसमें कामियाबी हासिल की और शहादते उज़्मा के दर्जे पर फ़ाइज़ हुए और सुबहे क़ियामत तक के लिये यज़ीदी फ़ितने से दीने इस्लाम को बचाकर ज़िन्दा और ताबिन्दा कर दिया।

यज़ीद नापाक क़त्ल करके खुद मर गया और अपने मक़सद में नाकाम व ना मुराद ही रहा और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क़त्ल होने के बाद भी ज़िन्दा हैं और अपने मक़सद में कामियाबी व बा मुराद रहे।

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद

हज़रत अमीर मुआविया सहाबी हैं

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी हैं :

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक की पलीदी और नापाकी की वजह से उसके बाप होने के सबब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुरा भला न कहो इस लिये कि वह सहाबी हैं।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु : हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी और कातिबे वही हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और सहाबी वह खुश नसीब मुसलमान है जिसने ईमान की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा और ईमान पर उसका खातिमा हुआ। और सहाबी का वह दर्जा है कि कोई शख्स कितना ही बड़ा वली और कुतुब क्यों न हो उनके अदना दर्जे के बराबर नहीं हो सकता।

हदीस बुखारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने फ़रमाया : وَلَا تَسُبُّوا اَصْحَابِىْ فَلَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ اَنْفَقَ مِثْلَ اُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ اَحَدِهِمْ وَ نَصِيْفَهٗ

यानी तुम मेरे सहाबा को गाली न दो और न बुरा कहो। इस लिये कि तुम में से अगर कोई शख़्स उहद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो वह शख़्स उनके किलो और आधा किलो गेहूँ और जौ ख़र्च करने के बराबर नहीं हो सकता। (मिश्कात शरीफ़, स. 553)

और इसी तरह की रिवायत है कि जब उनका ज़िक्र किया जाए तो उन पर नुक्ता चीनी न करो और जो शख़्स मेरे सहाबा को गाली दे और बुरा कहे उस पर अल्लाह तआला की लअनत। (मिश्कात शरीफ़, स. 554)

आशिके अहले बैत, मुहब्बे सहाबा हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि

हज़रत अल्लामा सअ़दुद्दीन तफ्ता ज़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि अहले हक़ का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम उमूर में हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हक़ पर थे और फ़रमाते हैं :

وَالتَّحْقِيْقُ اَنَّهُمْ كُلَّهُمْ عَدُوْلٌ

यानी तहक़ीक़ यह है कि तमाम सहाबा आदिल हैं और सारी जंगें और इख़्तिलाफ़ात तावील पर मबनी हैं, उनके सबब कोई भी अदालत से ख़ारिज नहीं इस लिये कि वह सब मुजतहिद हैं। (बरकाते आले रसूल, स. 282)

और इसी तरह अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अल्लामा लिकानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अल्लामा इब्ने सुब्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अल्लामा क़ाज़ी अयाज रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तहरीर फ़रमाया है और अल्लामा जलालुद्दीन सयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने रिसाला अलक़ामुल हजर में इस बात पर इत्तिफ़ाक़ नक़्ल किया है कि किसी सहाबी को गाली देने वाला फ़ासिक़ है अगर उसे वह हलाल न जाने और अगर वह हलाल जाने तो काफ़िर है। (अशरफ़ुल मुअय्यद, स. 104)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ला रैब यक़ीनन सहाबी हैं, अइम्मए किराम व मुहद्देसीने इज़ाम और बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित है कि तमाम सहाबए किराम को या किसी एक सहाबी को चाहे अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गाली देने वाला, उनको बुरा कहने वाला अहले सुन्नत में नहीं है। यक़ीनन ऐसा शख़्स राफ़ज़ी और जहन्नमी ही हो सकता है।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाओ है इतरत रसूलुल्लाह की

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

चौथा जुमा .... पहला बयान

हज़रत इमाम हुसैन का मदीने से सफ़र और इमाम मुस्लिम की शहादत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۗ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝

तर्जमा : और ज़रूर हम तुम्हें आज़माऐंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और खुश खबरी सुना उन सब्र वालों को (पारा 2, रुकू 3, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! कामिल मोमिन और मुसलमान होना आसान नहीं है। बला व मुसीबत से मुक़ाबला करना और फिर कामियाब हो जाना मुश्किल अम्र है मगर अल्लाह तआला जिसे तौफ़ीक़ दे।

यह शहादत गहे उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग आसां समझते हैं मुसलमान होना

बिला शक व शुबह ईमान व कुफ़्र, हक़ व बातिल, जन्नती और जहन्नमी, सच्चे और झूटे की पहचान तो इम्तिहान व आज़माइश के मैदान ही में होती है और हर शख़्स का इम्तिहान उसकी अज़मत व बुज़ुर्गी की हैसियत के मुताबिक़ होता है। जिस क़दर उसका दीन व ईमान बुलन्द व बाला होता है उसी क़दर उसका इम्तिहान भी बड़ा और सख़्त होता है।

चुनाँचे हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का है उनके बाद सालहीन का फिर दर्जा व दर्जा।

अल्लाह तआला की राह में जो शख़्स जितनी ज़्यादह कुरबानी पेश करता है और ज़िल्लत उठाता है तो वह शख़्स अल्लाह तआला की बारगाह से उसी क़द्र इज़्ज़त व बुज़ुर्गी भी पाता है। हमारे आक़ा महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ाहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की मर्ज़ी हुई कि मेरे प्यारे बेटे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इम्तिहान और उनकी आज़माइश, अज़ीम और सख़्त हो ताकि मक़ामे शहादत भी अज़ीम और बलन्द व बाला हो।

अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल और यज़ीद नापाक की हुकूमत

जब कोई वाक़िआ होने वाला होता है तो उसके होने के अस्बाब भी पैदा हो जाते हैं। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के अस्बाब इस तरह पैदा हुए कि हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रजब सन् 60 हि. दमिश्क़ में विसाल फ़रमाया। आपके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तबर्रुकात में से इज़ार शरीफ़ चादरे मुबारक, क़मीस शरीफ़, मूए मुबारक और तराशहाए नाख़ुन हुमायूं थे। आपने वसियत फ़रमाई थी कि मुझे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इज़ार शरीफ़ व चादरे मुबारक क़मीसे अनवर में कफ़न दिया जाए और मेरे उन आज़ा पर जिनसे सज्दा किया जाता है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मूए मुबारक और तराशए नाख़ुने अक़दस रख दिये जाएं और मुझे अरहमुर्राहिमीन के रहम पर छोड़ दिया जाए। (सवानेह करबला, स. 75)

यज़ीद पलीद की तख़्त नशीनी

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल के बाद उनका ना ख़लफ़ और नापाक बेटा यज़ीद पलीद तख़्ते सलतनत पर बैठा और उसने अपनी बैअत लेने के लिये हुकूमत के अतराफ़ व जवानिब में ख़ुतूत रवाना किया। मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद बिन उक़्बा थे, उनको अपने बाप के विसाल की इत्तिला की और लिखा कि हर ख़ासो आम से मेरी बैअत लो और हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से पहले बैअत लो, इन सब को एक लम्हा की मोहलत न दो।

मदीना तैय्यिबा का हाकिम जब यज़ीद नापाक की बैअत लेने के लिये हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने यज़ीद के फ़िस्क़ो फ़ुजूर और ज़ुल्म व ज़्यादती के सबब उसकी बैअत से इनकार फ़रमा दिया।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जानते थे कि यज़ीद नापाक की बैअत का इनकार उसके ग़ुस्सा व इश्तिआल का सबब बनेगा और नापाक यज़ीद मेरी जान का दुश्मन और ख़ून का प्यासा हो जाएगा लेकिन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तक़वा व दयानत दारी ने इजाज़त नहीं दी कि अपनी जान की ख़ातिर ना अहल के हाथ पर बैअत करें और मुसलमानों की तबाही और दीन व शरीअत की बे हुरमती की परवाह न करें

और यह इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे नेक व सालेह फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही वसल्लम से किस तरह मुमकिन था। अगर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त यज़ीद नापाक की बैअत कर लेते तो यज़ीद आपकी बहुत क़द्र व मन्ज़िलत करता और आपके आराम व आसाइश में कोई कमी नहीं आने देता बल्कि आपके पास दुनिया की दौलत कसरत से जमा हो जाती। लेकिन इस्लाम का निज़ाम दिरहम बिरहम हो जाता और दीन में ऐसा फ़साद बरपा हो जाता जिसका दूर करना और ना मुमकिन होता और यज़ीद की हर बुराई और बद किरदारी के जाइज़ व हलाल होने के लिये इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बैअत की सनद बन जाती और दीन व शरीअत का सही नक्शा मिट जाता। उसी वक़्त हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा जाने के लिये तैयार हो जाते हैं। यह वाक़िआ चार शअबान सन् 60 हि. का है। (सवानेह करबला, स. 77)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मदीना मुनव्वरा से जुदाई

हालात इस क़दर ख़राब और बिगड़ चुके थे कि उस बरकत व रहमत वाले शहर प्यारे मदीना को छोड़कर मक्का मुकर्रमा के लिये जाना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये ज़रूरी हो गया।

वह मदीना मुनव्वरा जहाँ अतराफ़े आलम (दुनिया के चारों तरफ़) से मुसलमान हाज़िर होने की तमन्ना करें, वह मदीना मुनव्वरा जिसको देखने के लिये मोमिन ख़्वाहिश व आरज़ू करें

दिखादे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है

मदीना मुनव्वरा से जाने की तैय्यारी मुकम्मल हो गई। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने नाना जान महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अकदस पर आख़री सलाम पेश करने के लिये हाज़िर हुए।

इश्क़ो महब्बत वालो इमाम हुसैन के गुलामो! ज़रा सोचो तो सही कि जब हमारे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोज़ए अतहर पर अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रूबरू आख़री सलाम के लिये हाज़िर हुए होंगे उस वक़्त मेरे आक़ा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत व कैफ़ियत का आलम क्या होगा। बिला शुबह नूर व रहमत वाली आँखों ने रन्ज व ग़म से आंसुओं की बरसात की होगी और अर्ज़ किया होगा कि मेरे प्यारे नाना जान मैं आपका प्यारा नवासा हुसैन हूँ जिसको आप कन्धे पर बिठाया करते थे, जिसको आपने अनपी आग़ोशे रहमत में पाला था, आख़री सलामी के लिये हाज़िर हुआ हूँ। ऐ मेरे प्यारे नाना जान आपका प्यारा मदीना छोड़ रहा हूँ कि मेरा मदीना में रहना कठिन और दुश्वार हो गया है। मैं जा रहा हूँ मुझे इजाज़त

अता हो। उस वक़्त रोज़ए अतहर में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर क्या गुज़री और बीती होगी और उनका क्या हाल हुआ होगा इसका तसव्वुर इश्को महब्बत वाले ही बयान कर सकते हैं।

आह! आज का दिन कितने ग़म व रन्ज का है, ज़बान में ताक़त कहाँ जिसको बयान कर सके। यही रोज़ए अतहर क़रारे दिल और कअ़बए ईमान हैं जो हमेशा के लिये छूट रहा है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिनका सब कुछ मदीना में है मगर आज वह मदीना मुनव्वरा से जा रहे हैं और हमेशा के लिये जा रहे हैं। अल वदाअ़ ऐ नाना जान! अल वदाअ़ कहते हुए हसरत भरी निगाह से तुरबते अक़दस को देखते और रोते हुए रुख़सत हुए। फिर आप अपनी मादरे महरबान हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे:

ऐ मेरी अम्मी जान! यह नाज़ों का पाला तुम्हारा हुसैन आज तुमसे जुदा होने और आख़री सलाम कहने आया है। फिर आप अपने बिरादरे अकबर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार पर हाज़िर हुए और आख़री सलाम पेश करके घर वालों के साथ मक्का मुकर्रमा रवाना हो गए।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाह में कूफ़ियों के ख़ुतूत: ख़लीफ़ए आला हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यद मोहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं: मुल्के शाम जो यज़ीद नापाक का दारुस्सलतनत था और वहाँ के बाशिन्दों ने यज़ीद की बैअत क़ुबूल कर ली थी और अहले कूफ़ा अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में ख़ुतूत भेज रहे थे और आपकी तशरीफ़ आवरी की इल्तिजाएं कर रहे थे लेकिन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने साफ़ तौर पर इनकार फ़रमा दिया था। अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल और यज़ीद नापाक का तख़्ते सलतनत पर बैठने के बाद इराक़ के लोगों ने इत्तिफ़ाक़ राय से हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में तक़रीबन डेढ सौ ख़ुतूत भेजे और उन ख़ुतूत में अपनी नियाज़ मन्दी व जज़्बाते अक़ीदत व इख़्लास का इज़हार किया और आप पर अपनी जान व माल फ़िदा करने की तमन्ना ज़ाहिर की।

अगरचेह इमाम पाक की शहादत की ख़बर मशहूर थी और कूफ़ियों की बे वफ़ाई का पहले भी आपको तजरबा हो चुका था मगर जब यज़ीद नापाक बादशाह बन गया और उसकी हुकूमत व सलतनत दीन के लिये ख़तरा थी और उसकी वजह से उसकी बैअत ना रवा (नाजाइज़) थी और वह तरह तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उसकी बैअत करें, इन हालात में कूफ़ियों का यह पासे मिल्लत यज़ीद नापाक की बैअत से दस्त कशी करना और हज़रत इमाम पाक से तालिबे बैअत होना हज़रत इमाम पाक पर लाज़िम करता था कि उनकी दरख़्वास्त क़ुबूल फ़रमाए। जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक़ की बैअत

पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तेहकाक़े अहल से दरख़्वास्ते बैअत करे उस पर अगर वह उनकी इस्तिदआ कुबूल न करे तो उसके मअ़ना यह होते हैं कि वह उस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाला करना चाहता है। इमामे पाक अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त कुबूल न फ़रमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के इस मुतालबे का इमामे पाक के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दर पे हुए मगर इमाम पाक बैअत के लिये राज़ी न हुए बदीं इस वजह से हमको यज़ीद नापाक के ज़ुल्म व तशद्दुद से मजबूर हो कर उसकी बैअत करना पड़ी। अगर इमाम पाक हाथ बढ़ाते तो हम उन पर जानें फ़िदा करने के लिये हाज़िर थे।

यह मस्अला ऐसा दरपेश आया जिसका हल बजूज़ इसके और कुछ न था कि हज़रत इमामे पाक उनकी दावत पर लब्बैक फ़रमाएं अगर चेह अकाबिर सहाबए किराम हज़रत इब्ने अब्बास व हज़रत इब्ने उमर व हज़रत जाबिर व हज़रत अबू सईद व हज़रत अबू वाकिद लैसी वग़ैरहुम हज़रत इमामे पाक की इस राय से मुत्तफ़िक़ न थे और उन्हें कूफ़ियों के अहदो पैमान का एतबार न था। इमामे पाक की महब्बत और शहादत इमामे पाक की शोहरत उन लद के दिलों में इख़्तिलाज (धड़कन) पैदा कर रही थी। गो कि यह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का यही वक़्त है और इसी सफ़र में यह मरहला दरपेश होगा लेकिन अन्देशा मानेअ था। हज़रत इमामे पाक के सामने मस्अला की यह सूरत दरपेश थी कि इस इस्तिदआ को रोकने के लिये उज़्रे शरई क्या है। इधर ऐसे जलीलुल क़द्र सहाबा के शदीद इसरार का लिहाज़ और कूफ़ा वालों की इस्तिदआ रद न फ़रमाने के लिये कोई शरई उज़्र न होना हज़रत इमामे पाक के लिये निहायत पेचीदा मस्अला था जिसका हल बजूज़ इसके कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए। अगर कूफ़ियों ने बद अहदी व बे वफ़ाई की तो उज़्रे शरई मिल जाएगा और अगर वह अपने अहद पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी। (सवानेह करबला, स. 79)

हज़रत इमाम मुस्लिम की कूफ़ा को रवांगी

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अक़ील रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना नाइब बनाकर कूफ़ा को रवाना फ़रमाया और कूफ़ा वालों को तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारी इल्तिजा व इस्तिदआ पर हम इमाम मुस्लिम को अपना नाइब बनाकर तुम्हारे पास भेज रहे हैं तुम लोगों पर उनकी नुसरत व हिमायत लाज़िम है। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दो साहबज़ादे मुहम्मद और इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो बहुत कम उम्र थे और अपने बाप के बहुत प्यारे बेटे थे उस सफ़र में अपने महरबान बाप हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ थे। (सवानेह करबला, स. 80)

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफ़ा में

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कूफ़ा पहुँचकर मुख़्तार बिन उबैद के

मकान पर क़याम फ़रमाया। कूफ़ा वाले आपकी तशरीफ़ आवरी की खबर सुनकर जोक़ दर जोक़ आपकी ज़ियारत के लिये आ रहे थे और एक हफ़्ता के अन्दर बारह हज़ार कूफ़ियों ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बैअत की।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इराक़ के लोगों की गिरवीदगी व अक़ीदत देखकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में ख़त लिख दिया कि यहाँ के हालात बेहतर हैं और इल्तिमास किया कि आप जल्द तशरीफ ले आएं ताकि बन्दगाने ख़ुदा यज़ीद नापाक के शर से महफ़ूज रहें और दीने हक़ की ताईद हो। मुसलमान इमामे हक़ की बैअत से मुशर्रफ़ व फ़ैज़ियाब हो सकें।

कूफ़ा वालों का जोश व जज़्बा देखकर हज़रत नोअ़मान बिन बशीर सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो उस वक़्त कूफ़ा के गवर्नर थे, कूफ़ा के लोगों को जमा किया और फ़रमाया ऐ लोगो सुन लो! यह बैअत यज़ीद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है और वह इस पर बहुत भड़केगा और फ़ितना फ़साद करेगा। हज़रत नोअ़मान बिन बशीर सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इत्तिलाअ़ देकर ज़ाब्ते की कार्रवाई पूरी करके बैठ गए और इस मुआमले में आगे किसी क़िस्म की कार्रवाई न की।

मुस्लिम यज़ीद हज़रमी और अमारह बिन वलीद बिन उक़बा (यह लोग यज़ीद के तरफ़दार थे) ने यज़ीद नापाक को इत्तिलाअ़ दी कि हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अक़ील तशरीफ़ लाए हैं और कूफ़ा वालों में उनकी महब्बत व अक़ीदत का जोश बढ़ रहा है, हज़ारों कूफ़ी उनके हाथ पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बैअत कर चुके हैं और कूफ़ा के गवर्नर नोअ़मान बिन बशीर ने अब तक कोई कार्रवाई उनके ख़िलाफ़ नहीं की, न उन पर सख़्ती की और न कोई तदबीर अमल में लाए। यज़ीद नापाक ने यह ख़बर सुनते ही नोअ़मान बिन बशीर को उनके ओहदे से बरखास्त कर दिया और उनकी जगह उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद जो बसरा का गवर्नर था उसे कूफ़ा का भी गवर्नर बना दिया। उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद बड़ा मक्कार और अय्यार था, वह बसरा से रवाना हुआ और उसने अपने फ़ौज को क़ादसिया में छोड़ा और ख़ुद हिजाज़ियों का लिबास पहनकर ऊँट पर सवार होकर और चन्द आदमियों को साथ लेकर रात के अन्धेरे में मग़रिब व इशा के दरमियान उस रास्ते से कूफ़ा शहर में दाख़िल हुआ जिस रास्ते से मक्का के लोग आया करते थे। इस मक्कारी और अय्यारी से उसका मतलब यह था कि ऐसे तौर पर शहर में दाख़िल होना चाहिये कि कूफ़ा के लोग उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को पहचान न सकें और कूफ़ा वाले यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ले आए ताकि वह बे ख़तर अमन व आफ़ियत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए। चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद की इस मक्कारी और अय्यारी से कूफ़ा के लोग धोके में आ गए।

अहले कूफ़ा जिनको हर लम्हा और हर आन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तशरीफ़ आवरी का बड़ी बे सबरी से इन्तिज़ार था, उन्होंने धोका खाया और रात के

अन्धेरे में हिजाज़ी लिबास और मक्का शरीफ़ से आने वाले रास्ते से आता देखकर समझे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ले आए। नअ़रहाए मसर्रत बलन्द किये गिर्दो पेश मरहबा कहते चले।

مَرْحَبًا بِكَ يَا ابْنَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَقَدِمْتَ خَيْرَ مَقْدَمٍ का शोर मचाया यह मरदूद तो दिल में जलता रहा और उसने अन्दाज़ा कर लिया कि कूफ़ियों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार है और उनके दिल उनकी तरफ़ माइल हैं मगर उस वक़्त की मस्लेहत से ख़ामोश रहा ताकि उन पर इसका मक्र न खुल जाए यहाँ तक कि दारुल इमारत में दाख़िल हो गया। उस वक़्त कूफ़ा वाले यह समझे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु न थे बल्कि मक्कार उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद इस फ़रेब और धोके के साथ आया और उन्हें हसरत व मायूसी हुई। रात गुज़ार कर सुबह को उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने कूफ़ा वालों को जमा किया और हुकूमत का परवाना पढ़कर सुनाया और यज़ीद नापाक की मुख़ालिफ़त से डराया और धमकाया, तरह तरह के हीलों और बहानों से हज़रत इमाम मुस्लिम की जमाअत को मुन्तशिर कर दिया। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हानी बिन अरवह के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे। उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने मुहम्मद बिन अशअस को एक फ़ौज के साथ हानी बिन अरवह के मकान पर भेजा और उसकी फ़ौज ने हानी बिन अरवह को गिरफ़्तार कर लिया और उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास भेज दिया और उनको कैद कर लिया गया। कूफ़ा के तमाम रऊसा व अमाएदीन (सरदारों) को भी किला में नज़र बन्द कर दिया।

उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का मुहासरा : हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह ख़बर पाकर बाहर तशरीफ़ लाए और आपने अपने चाहने वालों को आवाज़ दी। जौक़ दर जौक़ लोग आने लगे और चालीस हज़ार लोगों ने आपके साथ शाही महल को घेर लिया। सूरत बन आई थी हमला करने की देर थी, हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमला करने का हुक्म दे देते तो उसी वक़्त किला फ़तह हो जाता और इब्ने ज़ियाद मक्कार और उसके साथी हज़रत इमाम मुस्लिम के हाथ में गिरफ़्तार होते और यही लश्कर सेलाब की तरह उमन्ड कर यज़ीदियों को तबाह व बरबाद कर डालता और यज़ीद नापाक को जान बचाने के लिये कोई राह न मिलती। नक़्शा तो यही जमा था मगर कारे बदस्त कारे कुनां कुदरत अस्त यानी बन्दों का सोचा क्या होता है।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किले का मुहासरा तो कर लिया और बावजूद यह कि कूफ़ियों की बद अहदी और इब्ने ज़ियाद की मक्कारी व फ़रेबकारी और यज़ीद नापाक की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आपने अपने लश्कर को हमले का हुक्म न दिया और एक अद्ल व इन्साफ़ वाले बादशाह के नाइब की हैसियत से आपने इन्तिज़ार फ़रमाया कि पहले गुफ़्तुगू से कतए हुज्जत कर लिया जाए और सुलह की सूरत पैदा हो सके तो मुसलमानों में खूं रेज़ी न होने दी जाए आप अपने इस पाक इरादे से इन्तिज़ार में रहे

और अपनी एहतियात को हाथ से जाने न दिया। दुश्मन ने उस वक़्फ़ा यानी मोहलत से फ़ायदा उठा लिया और कूफ़ा के रऊसा व अमाएदीन यानी बड़े बड़े लोगों को जिनको इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने पहले से क़िले में बन्द कर रखा था उन्हें मजबूर किया कि वह अपने रिश्तेदारों और ज़ेरे असर लोगों को मजबूर करके हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जमाअत से अलेहदा कर दें। यह लोग इब्ने ज़ियाद बद निहाद के हाथ में क़ैद थे और जानते थे कि अगर इब्ने ज़ियाद बद निहाद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फ़तह होने तक उनका खातमा कर देगा। इस खौफ़ से वह सब घबराकर उठे और उन्हों ने क़िले की दीवार पर चढ़कर अपने रिश्तेदार मुतअल्लेक़ीन से गुफ़्तुगू की और उन्हें हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का साथ छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जे का ज़ोर दिया और बताया कि अलावा इस बात के कि हुकूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी यज़ीद नापाक तुम्हारे बच्चे बच्चे को क़त्ल कर डालेगा, तुम्हारे माल लुटवा देगा, तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाएँगी, यह और मुसीबत है कि अगर तुम लोग हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़ियाद के हाथ में क़ैद हैं क़िले के अन्दर मारे जाएँ गे। ऐ लोगो ! अपने अन्जाम पर नज़र डालो, हमारे हाल पर रहम करो, अपने घरों को चले जाओ। यह हिला कामयाब हुआ और हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लश्कर मुन्तशिर होने लगा। यहाँ तक कि बवक़्ते शाम हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कूफ़ा की मस्जिद में जिस वक़्त मग़रिब की नमाज़ शुरू की तो आपके साथ पाँच सौ आदमी थे और जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपके साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़हार और इल्तिजाओं के तोमार से जिस अज़ीज़ महमान को बुलाया था उस के साथ यह वफ़ा है कि वह तन्हा हैं और उन के रिफ़ाक़त के लिये कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफ़ा वालों ने हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमियत से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ किया और उन्हें ज़रा पर वाह न हुई कि क़ियामत तक तमाम आलम में उनकी बे हिम्मती का शोहरह रहेगा और उस बुज़्दिलाना बे मरूती और ना मरदी से वह रुसवाए आलम होंगे। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़िल्लाहु तआला अन्हु उस गुरबत व मुसाफ़िरत में तन्हा रह गए। किधर जाएं, कहाँ क़याम करें, हैरत है कूफ़ा के तमाम मेहमान खानों के दरवाज़े मुक़फ़ल थे। जहाँ से ऐसे मोहतरम मेहमानों को मदऊ करने खुतूत और रसाइल का तांता बाँध दिया गया था। छोटे छोटे बच्चे साथ हैं, हाँ उन्हें लिटाएं, कहाँ सुलाएं। कूफ़ा के वसीअ़ ख़ित्ता में दो चार गज़ ज़मीन हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शब गुज़ारने के लिये नज़र नहीं आती। उस वक़्त हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की याद आती है और दिल तड़पा देती है वह सोचते हैं कि मैं ने इमाम हुसैन की जनाब में ख़त लिखा। तशरीफ़ आ:वरी की इल्तिजा की है। और इस बद अहद क़ौम के इख़्लास व अक़ीदत का एक दिल कश नक़्शा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवरी पर ज़ोर दिया है। यक़ीनन हज़रत इमाम

हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मेरी इल्तिजा रद न फ़रमाएंगे और यहाँ के हालात से मुतमइन हो कर मआ अहलो अयाल चल पड़ेंगे। यहाँ उन्हें किया मसाइब (मुसीबतें) पहुँचेंगे और चमने ज़ेहरा के जन्नती फूलों को उस बे महरी की तपिश कैसी गुज़िन्द (तकलीफ़) पहुँचाएगी यह ग़म अलग दिल को घायल कर रहा था और अपनी तहरीर पर शर्मिन्दगी व इनफ़आल और हज़रत इमाम हुसैन के लिये ख़तरात अलैहदा बे चेन कर रहे थे और मौजूदा परेशानी जुदा दामन गीर थी। (सवानेह करबला, स. 84)

हज़रत इमाम मुस्लिम प्यास की हालत में

इस हालत में हजरत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को प्यास मालूम हुई। एक घर सामने नज़र आया जहाँ तोअह नामी एक औरत मौजूद थी उससे पानी मांगा, उस औरत ने पहचान लिया और पानी पेश किया और अपनी सआदत समझकर आपको अपने मकान में फ़रोकश किया, उस औरत का बेटा मुहम्मद इब्ने अशअस का गुरगा था, उसने फ़ौरन ही उसको ख़बर कर दी और उसने इब्ने ज़ियाद बद निहाद को इस पर मुत्तला किया, उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने अम्र बिन हारिस कूफ़ा शहर के कोतवाल और मुहम्मद बिन अशअस को भेजा, उन दोनों ने एक लश्कर को साथ लेकर तोआ के घर को घेर लिया और चाहा कि हज़रत इमाम मुस्लिम को गिरफ़्तार कर लें। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तलवार लेकर निकले और मजबूरन आपने उन ज़ालिमों से मुक़ाबला किया, उन जालिमों ने देखा कि हज़रत इमाम मुस्लिम उनकी फौज पर इस तरह टूट पड़े जैसे शेरे बबर बकरियों के रीवड़ पर हमला करता है। आपके शेराना हमलों से ज़ालिमों के हौसले टूट गए, उनमें से बाज़ मारे गए और बे शुमार ज़ख्मी हो गए। उन ज़ालिमों, बे वफ़ाओं को मालूम हो गया कि मौला अली शेरे खुदा के मैदान के एक जवान से मुक़ाबला आसान नहीं है।

अब यह तजवीज़ की कि कोई चाल चलनी चाहिये और किसी फ़रेब से हज़रत इमाम मुस्लिम पर काबू पाने की कोशिश की जाए। यह सोचकर अमन व सुलह का ऐलान कर दिया और हज़रत इमाम मुस्लिम से अर्ज़ किया कि हमारे और आपके दरमियान जंग की ज़रूरत नहीं है न हम आपसे लड़ना चाहते हैं। मुद्दआ सिर्फ़ इस क़दर है कि आप इब्ने ज़ियाद जो शहर कूफ़ा का वाली है उसके पास तशरीफ़ ले चलें और उससे गुफ़्तुगू करके मुआमला तय कर लें। हज़रत इमाम मुस्लिम ने फ़रमाया मैं ख़ुद जंगो जिदाल का इरादा नहीं रखता हूँ और जिस वक़्त मेरे साथ चालीस हज़ार का लश्कर था उस वक़्त भी मैंने जंग नहीं की और मैं इन्तिज़ार करता रहा कि इब्ने ज़ियाद गुफ़्तुगू करके कोई सुलह की सूरत पैदा करे और क़त्लो ख़ून रेज़ी न होने पाए।

हज़रत इमाम मुस्लिम की शहादत

चुनाँचे उन ज़ालिमों बे वफ़ाओं ने मकरो फ़रेब से काम लेकर हज़रत इमाम मुस्लिम और उनके नन्हे नन्हे दोनों साहेबज़ादों को उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद बद निहाद के पास शाही महल में ले गए और उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद बद निहाद ने पहले ही से शाही महल के दोनों दरवाज़ों

की आड़ में आदमियों को तेग व तलवार के साथ खड़ा कर रखा था और उन्हें हुक्म दे दिया था कि हजरत इमाम मुस्लिम जैसे ही दरवाज़े के अन्दर दाखिल हो, एक दम दोनों तरफ़ से उन पर वार किया जाए। हज़रत इमाम मुस्लिम उस मक्कारी व अय्यारी से बे ख़बर और ना वाक़फ़ियत के साथ तशरीफ़ ला रहे हैं और आप यह आयते करीमा :

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ ۝ पढ़ते हुए शाही महल के दरवाज़े में दाखिल हुए। दाखिल होना था कि ज़ालिमों ने दोनों तरफ़ से तलवारों के वार किये और बनी हाशिम का मज़लूम मुसाफ़िर आदाए दीन की बे रहमी से शहीद हुआ : إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝

(सवानेह करबला, स. 85,86)

हज़रत इमाम मुस्लिम के दोनों बच्चों की शहादत

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दोनों नन्हे नन्हे दोनों साहबज़ादे मुहम्मद और इब्राहीम आपके साथ थे उन्हों ने इस बे कसी की हालत में अपने महरबान बाप का सर उनके मुबारक तन से जुदा होते हुए देखा। छोटे छोटे बच्चों के दिल ग़म व रन्ज से फट गए और वह इस सदमे में बेद की तरह लरज़ने और कांपने लगे। एक भाई दूसरे भाई को देखता था और उन की सुरमगीं आँखों से ख़ून के आंसू जारी थे लेकिन इस मअरकए ज़ुल्मो सितम में कोई उन नन्हे नन्हे बच्चों पर रहम करने वाला न था। सितम गारों ने उन नो निहालों को भी तेग़े सितम से शहीद किया। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝

और हानी को क़त्ल करके सूली पर चढ़ाया : إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝

इन तमाम शहीदों के सरों को नेज़ों पर चढ़ा कर कूफ़ा के गली कूचों में फिराया गया और बे हयाई के स ाथ कूफ़ियों ने अपनी संग दिली और मेहमान कुशी का अमली तोर पर मुज़ाहिरा किया। यह वाक़िआ 3 ज़िल हिज्जा सन् 60 हि. का है इसी रोज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का मुकर्रमा से कूफ़ा के लिये रवाना हुए। (सवानेह करबला, स. 86)

ऐ ईमान वालो! कूफ़ा वालों की इस बद अहदी, दग़ा बाज़ी और बे वफ़ाई पर क़ियामत तक आने वाली नस्ले इन्सानी नफ़रत व मलामत करती रहेगी कि ऐसे मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम मेहमान को जिसे बड़ी बड़ी तमन्नाओं और इल्तिजाओं के साथ डेढ़ सो ख़ुतूत भेज कर बुलाया और फिर उस के हाथ पर बैअत करके उस के नुसरत व हिमायत का मोहकम वादा किया और फिर इस तरह उसे बेकसी व बे बसी के आलम में ख़ूंख़्वार दुश्मनों के हवाले कर दिया। उन को और उन के छोटे छोटे दोनों बच्चों को कूफ़ियों के सामने तेग़े ज़ुल्म (ज़ुल्म की तलवार) से ज़िबह कर दिया गया और यह बे हया व बे ग़ैरत क़ौम उन मुज़लिमों के सरों को नेज़ों पर चढ़ाया कर कूचा व बाज़ार में फिराने का तमाशा देखती रही।

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

सब्र व रज़ा के पैकर

हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन की शहादत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ٥

तर्जमा : और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और ख़ुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को। (पारा 2, रुकूअ़ 3, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

दश्ते बला को अर्श का ज़ीना बना दिया
जंगल को मुस्तफ़ा का मदीना बना दिया
हर ज़र्रे को नजफ़ का नगीना बना दिया
तूने हुसैन मरने को जीना बना दिया

और किसी आशिक़ ने कहा है :

जो दहकती आग के बिस्तर पे सोया वह हुसैन
जिस ने अपने ख़ून से दुनिया को धोया वह हुसैन
जो जवां बेटे की मय्यित पर न रोया वह हुसैन
जिस ने सब कुछ खोके फिर भी कुछ न खोया वह हुसैन
मरतबा इस्लाम का जिस ने दो बाला कर दिया
ख़ून ने जिस के दो आलम में उजाला कर दिया

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफ़ा रवाना हुए

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त आने के बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दरख़्वास्त क़ुबूल फ़रमा लेने में किसी तरह की तशवीश व तरद्दुद की कोई वजह बाक़ी नहीं रही थी। ज़ाहिर में शक्ल तो यह थी और हक़ीक़त में क़ज़ा व क़द्र के फ़रमान नाफ़िज़ हो चुके थे। तक़दीर का लिखा हुआ मिटता नहीं।

चाक को तक़दीर के मुमकिन नहीं करना रफ़ू
सूज़ने तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे

आप की शहादत का वक़्त नज़दीक आ चुका था। शहादत का जज़्बए शौक़ दिल को खींच रहा था। फ़िदाकारी के वलवलों ने दिल को बे ताब कर दिया था इसी लिये तो शहादत की कशिश मैदाने करबला की जानिब खींचे लिये जा रही थी और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाल कुछ इस तरह था।

दो क़दम भी नहीं चलने की है ताक़त मुझ में
इश्क़ खींचे लिये जाता है मैं क्या जाता हूँ

अकाबिर सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को इस सफ़र से रोकने के लिये बहुत ही मिन्नत व समाजत करते रहे कि आप मक्का मुकर्रमा से कूफ़ा तशरीफ़ न ले जाएं मगर उन सब की कोशिशें नाकाम रहीं और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा जाने के लिये पुख़्ता इरादा फ़रमा लिया और 3 ज़िल हिज्जा सन् 60 हि. को अपने अहलो अयाल और अज़ीज़ व अक़ारिब और ग़ुलामों कुल बयासी नुफ़ूसे क़ुदसिया के साथ मक्का मुकर्रमा से इराक़ के लिये रवाना हो गए। (सवानेह करबला, स. 86)

करबला जाने वाले अहले बैत : ऐ ईमान वालो ! इस सफ़र में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तीन बेटे आप के साथ थे। हज़रत अली औसत जिन को इमाम ज़ैनुल आबेदीन कहते हैं। यह हज़रत शहर बानो के बत्न से थे, उस वक़्त उन की उम्र बाईस साल की थी और अलील थे, हज़रत इमाम के दूसरे साहबज़ादे हज़रत अली अकबर थे जो यअ़ला बिन्त अबी मुर्रह के बत्न से थे। उन की उम्र अठारह साल की थी यह करबला में शहीद हुए। हज़रत इमाम के तीसरे बेटे जिन्हें हज़रत अली असग़र कहते हैं उन की मां क़बीला बनी क़ज़ाअ़ह से थीं। यह शीर ख़्वार बच्चे थे। हज़रत इमाम की एक साहबज़ादी हज़रत सकीना भी साथ थीं जिन की उम्र सात बरस की थी उन की मां का नाम रुबाब बिन्त अमरउल कैस था। हज़रत सकीना की निस्बत हज़रत क़ासिम के साथ हुई थी और करबला में हज़रत क़ासिम के साथ उन के निकाह होने की जो रिवायत मशहूर है वह ग़लत है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो बीवियाँ आप के साथ थीं एक हज़रत शहर बानो, दूसरी हज़रत अली असग़र की वालिदा माजिदा और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चार नौजवान साहबज़ादे (1) हज़रत क़ासिम (2) हज़रत अब्दुल्लाह (3) हज़रत

उमर (4) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह थे जो करबला में शहीद हुए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पाँच फ़रज़न्द (1) हज़रत अब्बास बिन अली (2) हज़रत उस्मान बिन अली (3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली (4) हज़रत मुहम्मद बिन अली (5) और हज़रत जअफ़र बिन अली, हज़रत इमामे पाक के साथ थे, करबला में शहीद हुए। और हज़रत अक़ील के बेटों में हज़रत मुस्लिम तो अपने दोनों बेटे हज़रत मुहम्मद और हज़रत इब्राहीम के साथ पहले ही कूफ़ा में शहीद कर दिये गए थे और तीन बेटे (1) हज़रत अब्दुल्लाह (2) हज़रत अब्दुर्रहमान (3) हज़रत जअफ़र इमामे पाक के हमराह करबला में शहीद हुए। और हज़रत जअफ़र तय्यार के दो पोते हज़रत मुहम्मद और हज़रत ओन करबला में शहीद हुए। उन के वालिद का नाम अब्दुल्लाह बिन जअफ़र है। हज़रत मुहम्मद और हज़रत ओन इमामे पाक की हक़ीक़ी बहन हज़रत ज़ैनब बिन्ते अली के बेटे और इमामे पाक के भान्जे हैं। अहले बैत में से कुल सतरह हज़रात हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ मरतबा-ए-शहादत से सरफ़राज़ हुए और हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (बीमार) और दूसरे कम उम्र शहज़ादगान जैसे हज़रत उमर बिन हसन और हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन अली क़ैदी बनाए गए। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। (सवानेह करबला, स. 87)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहुत तेज़ी के साथ सफ़र फ़रमा रहे थे, रास्ते में बशीर बिन क़ालिब असदी से मुलाक़ात हुई जो कूफ़ा से मक्का मुकर्रमा जा रहे थे। इमामे पाक ने उन से कूफ़ा का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने जवाब दिया कि अहले कूफ़ा के दिल तो आप के साथ हैं मगर उन की तलवारें बनी उमय्या के साथ हैं और ख़ुदा जो चाहता है करता है : يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ हज़रत इमामे पाक ने फ़रमाया सच है। और आगे रास्ते में अरब का मशहूर शाइर फ़िरज़ोक़ से मुलाक़ात हुई उसने भी इसी तरह की बात कही। बहरहाल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सफ़र जारी रखा कि बत्नुर्रुम्मा नाम के मक़ाम से आगे बढ़े तो अब्दुल्लाह बिन मुतीअ से मुलाक़ात हुई। उन्होंने इमामे पाक की बहुत मिन्नत व समाजत की कि आप कूफ़ा हर गिज़ न जाएं वहाँ आप को यक़ीनन शहीद कर दिया जाएगा। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : لَنْ يُّصِيْبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا

हमें वही मुसीबत पहुँच सकती है जो अल्लाह तआला ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमा दी है। (सवानेह करबला, स. 90)

हज़रत इमाम मुस्लिम की शहादत की ख़बर

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मन्ज़िल ब मन्ज़िल सफ़र फ़रमाते हुए चले जा रहे थे और अब तक कूफ़ा में इमाम मुस्लिम की शहादत और वहाँ के बदले हुए बे वफ़ा हालात से बिल्कुल ही बे ख़बर थे कि मन्ज़िले सअलबिया पर बकीर असदी से मुलाक़ात हुई जो कूफ़ा से आ रहे थे। उन्होंने इमामे पाक के क़दमों का बोसा लेकर कूफ़ा के बद तरीन

हालात से हज़रत इमामे पाक को आगाह किया और हज़रत इमाम मुस्लिम और उन के बच्चों की शहादत और दर्द नाक हालात को बयान किया। हज़रत इमामे पाक कूफ़ियों की ग़द्दारी और अहद शिकनी की दास्तां सुन कर हैरान व परेशान रह गए।

हज़रत इमाम मुस्लिम और उन के फ़रज़न्दों की शहादत और कूफ़ियों की बे वफ़ाई और बद अहदी का हाल सुन कर बाज़ लोगों ने कहा कि ऐ इमामे पाक यहीं से वापस तशरीफ़ ले चलें। चुनाँचे हज़रत इमाम पाक ने वापसी का इरादा फ़रमाया मगर हज़रत इमाम मुस्लिम के भाइयों ने रो रो कर अर्ज़ किया कि ऐ इमाम भाई मुस्लिम की ऐसी दर्दनाक और मज़लूमाना शहादत के बाद हम लोग वापस नहीं जाऐंगे बल्कि खूने नाहक़ का बदला लेंगे। आप ने यह बात सुन कर वापसी का इरादा तर्क कर दिया और क़ाफ़ला आगे चल पड़ा। (तबरी, जि. 2, स. 227)

इसी तरह क़ाफ़ला आगे बढ़ता रहा जब इमामे पाक मकामे ज़बाला में पहुँचे तो उस जगह पर आप ने क़ाफ़ला वालों से फ़रमाया कि हमें दर्दनाक ख़बर मिली है कि मुस्लिम बिन अक़ील शहीद कर दिये गए और हमारी इताअत के दावेदारों ने हमें छोड़ दिया। लिहाज़ा जो शख़्स तुम में से चाहे वह वापस चला जाए हमारी तरफ़ से उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

कुछ अरब के लोग जो रास्ते में इमामे पाक के साथ हो गए थे इस ऐलान के सुनते ही सब दाएं, बाएं और इधर उधर रवाना हो गए और ज़्यादा तर वही लोग बाक़ी रह गए जो मदीना मुनव्वरा से आप के साथ आए थे। (तबरी, जि. 2, स. 227)

हुर और एक हज़ार का लश्कर : जब इमामे पाक कोहे ज़ी हशम में पहुँच कर ख़ेमा ज़न हुए तो मुहर्रम शरीफ़ सन् 60 हि. की पहली तारीख़ थी कि

हुर बिन यज़ीद रियाही एक हज़ार के लश्कर के साथ आप का रास्ता रोक कर खड़ा हुआ है, हुर ने हज़रत इमामे पाक को सलाम किया और अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे कूफ़ा के यज़ीदी गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने आप की गिरफ़्तारी के लिये भेजा है और साथ ही साथ यह मअज़िरत भी पेश की कि ख़ुदा गवाह है कि मैं बादले ना ख़्वास्ता आया हूँ और मुझे आप की मुक़द्दस बारगाह में बाल के बराबर भी बे अदबी और गुस्ताख़ी गवारा नहीं है लेकिन मैं इब्ने ज़ियाद ज़ालिम हाकिम के हुक्म से मजबूर व लाचार हूँ।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ हुर! मैं इस शहर कूफ़ा में ख़ुद ब ख़ुद नहीं आया हूँ बल्कि कूफ़ा वालों ने मुझे डेढ़ सो ख़ुतूत लिख कर बुलाया है और यह ख़ुतूत अकसर उन्हीं लोगों के हैं जो इस वक़्त तुम्हारे इस लश्कर में मेरी गिरफ़्तारी के लिये आए हैं।

हुर ने क़सम खाकर कहा वल्लाह! मुझ को इसका कुछ भी इल्म नहीं है कि आप के पास कब ख़ुतूत भेजे गए? और किन किन लोगों ने ख़ुतूत भेजे? और मैं आप को छोड़ सकता हूँ और न वापस लौट सकता हूँ। यह सुनकर हज़रत इमामे पाक ने ख़ुतूत का थेला उलट दिया और फ़रमाया कि देख लो, यह ख़ुतूत मौजूद हैं इन को पढ़ लो। इन के दस्तख़त और मोहरें देख लो।

फिर आप ने नाम ले ले कर पुकारा कि ऐ शीस बिन रुबआ, ऐ क़ैस बिन अशअस! ऐ ज़ेद

बिन हारिस ! सच सच बोलो क्या तुम लोगों ने ख़ुतूत लिख लिख कर और क़स्में दे दे कर मुझे नहीं बुलाया है ? इमामे पाक की पुकार सुन कर यह सब बे हया और नाबकार शर्म से गर्दनें झुकाए खड़े रहे और किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

इस के बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इतमामे हुज्जत के लिये यह भी फरमाया कि बहरहाल ऐ कूफ़ियो ! अगर तुम लोग अपने अहद व पैमान पर क़ाइम हो तो मैं तुम्हारे शहर में क़दम रखूँ वर्ना मैं इस के लिये भी तैय्यार हूँ कि मैं यहीं से अपने वतन को वापस चला जाऊँ। (तबरी, जि. 2, स. 222)

मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की गुफ़्तुगू अभी हुर से हो ही रही थी कि एक शख़्स सांडनी पर सवार हो कर बड़ी तेज़ी के साथ आया और उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का ख़त हुर को दिया कि जिस मक़ाम पर तुम्हें मेरा ख़त मिले तुम हज़रत इमाम हुसैन को उसी मक़ाम पर रोक लो, न उन्हें कूफ़ा शहर में दाख़िल होने दो, न वतन वापस लौटने दो। ख़त को पढ़ कर हुर ने अर्ज़ किया ऐ इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ! देख लीजिये आप को गिरफ़्तार करने के लिये उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का किस क़दर इसरार है ? इस लिये मैं मजबूर व लाचार हूँ कि आप को किसी तरह छोड़ नहीं सकता। हुर ने यह कहा लेकिन शिद्दते ग़म से उस की आँखों में आंसू आ गए और आवाज़ टूट टूट कर बिखरने लगी।

ऐ ईमान वालो ! इस बात में कोई शक व शुबह नहीं कि हुर के दिल में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बे पनाह अज़मत थी। चुनाँचे वह नमाज़ों में बराबर बराबर हज़रत इमामे पाक ही की इक़्तिदा करता रहा लेकिन वह इब्ने ज़ियाद बद निहाद के ज़ुल्मो सितम से लाचार व मजबूर था।

अगर इमाम पाक के साथ किसी तरह की रिआयत करता तो एक हज़ार लश्कर की मौजूदगी में यह राज़ पोशीदा नहीं रह सकता था। और इब्ने ज़ियाद बद निहाद के ज़ुल्मो सितम का निशाना बनना पड़ता। (सवानेह करबला, स. 11)

इसी सबब से हज़रत इमामे पाक को बे आबो गयाह चटयल मैदान में उतरना पड़ा।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने करबला में

मुहर्रम शरीफ़ की 2 तारीख़ सन् 61 हि. जुमेअरात का दिन था जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मैदाने करबला में नुज़ूल फ़रमाया। इमामे पाक ने पूछा इस मैदान का नाम क्या है ? तो लोगों ने बताया इस का नाम करबला है, करबला का नाम सुनते ही आप घोड़े से उतर गए और फ़रमाया :

هٰذِهٖ كَرْبَلَاءُ مَوْضَعُ كَرْبٍ وَّبَلَاءٍ هٰذَا مَنَاخُ رِكَابِنَا وَمَحَطُّ رِحَالِنَا وَمَقْتَلُ رِجَالِنَا

(नूरुल अबसार, स. 117)

यह करबला है जो मक़ामे करबो बला है (यानी रन्ज व मुसीबत की जगह) यही हमारे ऊंटों के बैठने की जगह है। यहीं हमारे मालो अस्बाब उतरेंगे। और इसी मक़ाम पर हमारे साथी क़त्ल किये जाएँगे।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु करबला से वाक़िफ़ थे और आप को यह भी मालूम था कि करबला वह जगह है जहाँ अहले बैत का ख़ून बहाया जाएगा और उन्हें भूके प्यासे रख कर क़त्ल किया जाएगा। करबला के मैदान में इमामे पाक बैठे हुए फ़िक्र व तदबीर में डूबे हुए थे कि आप को नीन्द आ गई ख़्वाब में अपने नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमा रहे हैं यह करबला है जो तुम्हारी शहादत की जगह है और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इमामे पाक के सीनए अक़दस पर अपना नूरानी हाथ रख कर दुआ फ़रमाई।

اَللّٰهُمَّ اَعْطِ الْحُسَيْنَ صَبْرًا وَّاَجْرًا ऐ अल्लाह तआला हुसैन को सब्र अता फ़रमा और बेहतर अज्र नसीब फ़रमा। (सवानेह करबला, स. 92)

हज़रात ! बे वतन मुसाफ़िर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सामान अभी बे तरतीब इधर उधर पड़ा हुआ है, बे हया और दग़ाबाज़ कूफ़ियों को ज़रा भी ग़ैरत नहीं आई कि जिस मेहमाने मुकर्रम को डेढ सौ ख़ुतूत लिख कर हज़ारों तमन्नाओं और इल्तिजाओं के साथ बुलाया है और फिर उस के साथ क्या सुलूक कर रहे हैं ? ग़ालिबन दुनिया की तारीख़ में ऐसे अज़ीमुश्शान मेहमान के साथ इस क़दर ज़ुल्म व ज़ियादती का बद तरीन सुलूक न कभी हुआ है न आइन्दा होगा जो करबला में फ़ातिमा के लअ़ल और अली के दुलारे के साथ बे वफ़ा और ग़द्दार कूफ़ियों ने किया है। हज़रत इमामे पाक को उन बे वफ़ाओं और ग़द्दारों की बे वफ़ाई और बद अहदी पर इन्तिहाई हैरत थी कि अभी इत्मीनान के साथ बैठने भी न पाए थे कि कुछ तकान दूर करें कि कूफ़ा से उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का क़ासिद यह ख़त लेकर पहुँचता है कि आप यज़ीद की बैअत कीजिये या जंग के लिये तैय्यार हो जाइये। हज़रत इमामे पाक ने वह ख़त पढ़ा और क़ासिद से फ़रमाया, मेरे पास इस ख़त का कोई जवाब नहीं है।

(सवानेह करबला, स. 93)

अम्र बिन सअ़द : इब्ने सअ़द एक जन्नती सहाबी हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बेटा था और वह ना अहल हरीसुद्दुनिया हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़मत व बुज़ुर्गी से ख़ूब अच्छी तरह वाक़िफ़ था इस लिये वह यज़ीदी फ़ौज की सिपह सालारी से बचने की कोशिश करने लगा, बल्कि साफ़ तौर पर इनकार भी किया कि मैं इब्ने रसूल के ख़ूने नाहक़ से अपने दामन को दाग़दार नहीं कर सकता मगर इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने उस को मजबूर कर दिया कि या तो वह ईरान की गवर्नरी से अलग हो जाए या हज़रत इमामे पाक से जंग के लिये तैय्यार हो जाए। (सवानेह करबला, स. 93)

ऐ ईमान वालो ! दुनिया की लालच और हुकूमत की कुर्सी बहुत बुरी बला है कि जब यह दुनिया शैतान बन कर किसी के सर पर सवार होती है तो वह शख़्स कितना ही बड़ा इस्तिक़ामत का पहाड़ क्यूं न हो, मगर उस के क़दम को दुनिया की लालच हिला कर रख देती है। اِلَّا مَاشَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی

चुनाँचे अम्र बिन सअ़द जो एक जन्नती बाप का बेटा था मगर ईरान की हुकूमत के लालच में आ गया और हैदरे कर्रार के गोहर पारे नौजवानाने जन्नत के सरदार हज़रत इमाम हुसैन नामदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर को लूटने और उन को क़त्ल करने के लिये तैय्यार हो गया और पाँच हज़ार की फ़ौज जफ़ा शिआर का सिपह सालार बन कर करबला में पहुँचा और दरयाए फ़ुरात के किनारे पड़ाव डाला और अपना फ़ौजी मरकज़ क़ाइम किया। और पाँच सो सवारों को हथियारों के साथ दरयाए फ़ुरात के किनारे पहरा बिठा दिया। ख़बरदार ख़बरदार पानी का एक क़तरा भी साक़िये कौसर के बेटे इमाम हुसैन के ख़ेमे के अन्दर पहुँचने न पाए।

हाकिमे कूफ़ा उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद बद निहाद बराबर कूफ़ा से फ़ौजें रवाना करता रहा, यहाँ तक कि करबला के मैदान में बाईस हज़ार का लश्कर जमा हो गया।

ऐ ईमान वालो! कितनी हैरत का मक़ाम है ? कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ कुल बयासी इन्सानों का क़ाफ़ला है। उन में औरतें भी हैं और बच्चे भी, बूढ़े भी हैं और जवान भी। उन ही बयासी मुसाफ़िरों में हज़रत आबिद बीमार भी और हज़रत अली असग़र शीर ख़्वार भी, और यह लोग जंग के इरादे से भी नहीं आए हैं और इन लोगों के पास सामाने जंग और काफ़ी हथियार भी नहीं हैं, लेकिन इस के बावजूद उन बयासी हज़रात के मुक़ाबले के लिये बाईस हज़ार की फ़ौज हथियार के साथ भेजी जाती है और उस के बाद भी यज़ीदी फ़ौज पर ख़ौफ़ व देहशत तारी है और यज़ीदी फ़ौज को मालूम है कि फ़ातहे ख़ैबर हज़रत अली शेरे ख़ुदा के शेरों से मुक़ाबला आसान नहीं है।

अली का घर भी वह घर है कि जिस घर का हर एक बच्चा
जहाँ पैदा हुआ शेरे ख़ुदा मालूम होता है

अहले बैत पर पानी बन्द

ऐ ईमान वालो! यज़ीदियों को अच्छी तरह मालूम था कि शेरे ख़ुदा के शेरों से मुक़ाबला करना आसान नहीं है। इस लिये उस ज़ालिम ने यह तदबीर की कि पहले उन पर पानी बन्द करके उन्हें प्यास की शिद्दत से निढाल और कमज़ोर कर दिया जाए। इस तरह सात मुहर्रम को नहरे फ़ुरात के पानी पर पहरा बिठा दिया गया और पानी बन्द कर दिया गया।

तेरी कुदरत जानवर तक आब से सेराब हों
प्यास की शिद्दत से तड़पे बे ज़बान अहले बैत

हज़रत इमाम हुसैन की इस्तिक़ामत

दूसरी मुहर्रम से दसवीं मुहर्रम तक अहले बैत का क़ाफ़ला इस तरह करबला में मुक़ीम रहा और इब्ने ज़ियाद का क़ासिद बार बार यह पैग़ाम लाता रहा कि ऐ इमामे पाक आप यज़ीद की बैअत कर लें। यह बाईस हज़ार लश्कर जो आप के ख़ून का प्यासा है आप के क़दम चूमेगा। यज़ीद आप के क़दमों पर दौलतों का ढेर लगा देगा किसी मुल्क की गवर्नरी आप के हवाले कर दी जाएगी। अपनी जान बचा लो और अपने घर वालों और साथियों की जान की फ़िक्र कर लो

वर्ना आप का घर लूट लिया जाएगा और आप के बच्चों का ख़ून बहा दिया जाएगा।

ग़रज़ यह कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तरह तरह की लालच दी गई और हिर्स व तमअ के ऐसे सुनेहरे और दिल कश बाग़ दिखाए गए कि इमामे पाक की जगह कोई और होता तो हो सकता था कि इस फ़रेब में आ जाता और इस क़दर डराया और धमकाया गया और ऐसी ऐसी दर्दनाक और ख़ौफ़नाक धमकियों से ख़ौफ़ ज़दा किया गया कि इमामे पाक की जगह कोई और होता तो हो सकता था कि उस के हौसले टूट कर बिखर जाते और वह देहशत व ख़ौफ़ से घबरा कर उन ज़ालिमों के सामने झुकने पर मजबूर हो जाता।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन फ़रज़न्दे फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो के ख़ून के क़तरे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़ून शामिल है।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

और इमामे पाक यही जवाब देते रहे कि मैं एक ऐसे मक़ाम पर खड़ा हूँ जहाँ से दो रास्ते निकलते हैं। एक रास्ता तो यह है कि मैं यज़ीद पलीद की बैअत कर लूँ तो यह सही है कि मुझे बज़ाहिर इज़्ज़त व दौलत और किसी मुल्क की गवर्नरी ज़रूर मिलेगी और यज़ीद नापाक मेरा एहसान मन्द होकर मुझ पर जान व माल से क़ुरबान हो जाएगा लेकिन उस का अन्जाम यह होगा कि मेरा पाक हाथ यज़ीद के नापाक हाथ में जाते ही दीने इस्लाम का परचम सर निगूँ हो जाएगा और इस्लाम की बुनियाद जिस को मेरे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबाए किराम के ख़ून से मज़बूत व मुस्तहकम किया है, यज़ीदियों की बद अअमालियों और बद किरदारियों से शाने इस्लाम कमज़ोर और अज़मते दीन व शरीअत मिट जाएगी और दूसरा रास्ता यह है कि मैं यज़ीद नापाक की बैअत किसी हाल में न करूँ और यह सही है कि मैं क़त्ल किया जाऊँगा और मेरे अहले बैत का ख़ून बे दरेग़ बहाया जाएगा और अहले बैत को बे पनाह मसाइब और जान व माल के नुक़सान से गुज़रना पड़ेगा। लेकिन इस का नतीजा यह होगा कि इस्लाम का परचम हमेशा के लिये सर बलन्द रहेगा और अहले बैत के ख़ून से सेराब होने वाला बाग़े इस्लाम का हर फूल हमेशा के लिये सर सब्ज़ व शादाब रहेगा और क़ियामत तक यज़ीदियों की बे दीनी और गुमराही की हवा बाग़े इस्लाम के फूलों को ख़िज़ां से हमकिनार नहीं कर सकती।

लिहाज़ा ऐ यज़ीदियो ! मेरा आख़री फ़ैसला यही है कि हम ख़ुद बहत्तर ज़ख़्म खा कर घोड़े से ज़मीन पर गिरेंगे मगर इस्लाम को गिरने नहीं देंगे। ख़ुद कटेंगे मगर इस्लाम को कटने नहीं देंगे। ख़ुद उजड़ेंगे मगर इस्लाम को उजड़ने नहीं देंगे, ख़ुद मिट जाएंगे मगर क़ुरआन के एक एक लफ़्ज़ को मिटने नहीं देंगे।

चुनाँचे करबला का ज़र्रा ज़र्रा गवाह है कि फ़ातिमा के लाल इमामे पाक ने दुनिया की दौलत व हुकूमत को ठोकर मार कर राहे हक़ में आने वाली तमाम मुसीबतों का ख़ुश हो कर

इस्तिकबाल किया और क़त्ल होना और घर लुटाना सब कुछ गवारा किया मगर यजीद नापाक की बैअत न कर के इस्लाम के पाक दामन को दाग़दार होने से हमेशा हमेश के लिये बचा लिया।

घर लुटाना सर कटाना कोई तुझ से सीख ले
जाने आलम हो फ़िदा ऐ खानदाने अहले बैत

ऐ ईमान वालो ! यजीद नापाक और उस के नापाक साथियों ने हौज़े कौसर के मालिक के नवासे हज़रत इमामे पाक पर पानी बन्द कर के यह खयाल किया था कि इमामे पाक मजबूर हो कर यजीद नापाक की बैअत कुबूल कर लेंगे मगर उन ज़ालिमों को मालूम न था कि :

मुहम्मद मुस्तफ़ा के बाग़ के सब फूल ऐसे होते हैं
जो बिन पानी के तर रहते हैं मुरझाया नहीं करते

हज़रात ! कोई बद दीन व गुस्ताख़ यह न समझे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मजबूर और बे ताक़त थे। अगर ऐसा न होता तो खुद प्यासे क्यों रहते और अपने बच्चों की भूक व प्यास की शिद्दत को बरदाश्त कैसे करते, खुदा की क़सम ! हरगिज़ हरगिज़ ऐसा नहीं है अगर मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु चाहते तो करबला के तपते हुए सेहरा में पानी के बे शुमार चशमे उबल पड़ते मगर इमामे पाक राज़ी बरज़ाए इलाही थे। मैदाने सब्रो रज़ा में ताक़त नहीं दिखाई जाती है बल्कि सब्रो रज़ा के मैदान में इम्तिहान देकर अल्लाह तआला की बारगाह में साबिर होने का शानदार एज़ाज़ हासिल किया जाता है और कुरआने करीम के इरशाद के मुताबिक़ : اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ के इनआम से सरफ़राज़ हुए।

ला रैब , बेशक हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब्रो रज़ा के दिल दोज़ और सख्त तरीन इम्तिहान में कामियाब हुए और क़ियामत तक के साबिरों के इमाम हो गए।

दुरूद शरीफ़ :

इमामे पाक का साथियों से ख़िताब : नवीं मुहर्रम शरीफ़ का दिन गुज़र कर दसवीं मुहर्रमुल हराम की रात आ गई, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम साथियों को जमा किया और फ़रमाया कि आप लोगों ने हर मक़ाम पर मेरा साथ दिया। आप हज़रात की जां निसारी और वफ़ादारी रहती दुनिया तक ज़िन्दा और बाक़ी रहेगी और लोग उस पर फ़ख्र व नाज़ करते रहेंगे।

आज यज़ीदी लश्कर मेरे ख़ून का प्यासा है। उन ज़ालिमों को आप लोगों से कोई ग़रज़ नहीं अगर वह बैअत मांगते हैं तो मेरी , अगर सर मांगते हैं तो मेरा। इस लिये बख़ुशी में तुम लोगों को इजाज़त देता हूँ कि तुम जहाँ चाहो रात की तारीकी में चले जाओ। तमाम रुफ़क़ा ने अर्ज़ किया

या इमाम ! हम सब आप का साथ छोड़ने के लिये तैय्यार नहीं हैं। हमें अपने क़दमों से दूर न कीजिये अगर हम आप को बला व मुसीबत के इस मैदान में तन्हा छोड़ दिये तो बरोज़े क़ियामत आप के नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

को मुंह क्या दिखाऐंगे और दुनिया हमें क्या कहेगी।

हज़रत इमामे पाक ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और अपने खेमे के गिर्द ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया। चुनाँचे ख़न्दक़ खोदी गई और सिर्फ़ एक रास्ता रखा गया जहाँ से निकल कर दुश्मनों से मुक़ाबला किया जाए और ख़न्दक़ में आग लगा दी गई ताकि कोई यज़ीदी दुश्मन ख़ैमा के अन्दर न आ सके। रात धीरे धीरे गुज़र रही थी। हज़रत इमामे पाक ने अपने प्यारे बेटे हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ! बेटे जाओ मैदाने जंग का नक़्शा देख कर आओ। हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदान में पहुँचे तो क्या देखते हैं कि सारा मैदान ख़ाली है और फ़ुरात नहर पर पहरा लगा हुआ है और एक बुरक़ा पोश ख़ातून रेत के ज़र्रात में से कंकरियाँ चुन रही हैं। हज़रत अलिये अकबर यह मन्ज़र देखकर मैदान से वापस हुए और मैदाने जंग का सारा नक़्शा बयान कर दिया, हज़रत इमामे पाक की आँखों में आंसू आ गए, बेटे हज़रत अलिये अकबर ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो हज़रत इमामे पाक ने फ़रमाया बेटा ! जिस मुक़द्दस ख़ातून को तुम ने मैदाने करबला में कंकरियाँ उठाते हुए देखा है वह मेरी अम्मी जान सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा थीं।

दसवीं मुहर्रम शरीफ़ की रात हज़रत इमामे पाक और तमाम साथियों ने इबादत व रियाज़त, तस्बीह व तहलील, ज़िक्र व फ़िक्र और तिलावते क़ुरआने करीम में गुज़ारी, फ़ज्र का वक़्त हुआ। अज़ान पढ़ी गई और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इमामत फ़रमाई और तमाम हक़ परस्त साथियों ने इमामे पाक की इक़्तिदा में नमाज़े फ़ज्र अदा की। सामने यज़ीदी फ़ौज की तलवारें चमक रही हैं और इधर नमाज़े इश्क़ अदा हो रही है

दसवीं मुहर्रम का क़ियामत नुमा दिन : दस मुहर्रमुल हराम सन् 61 हि. जुमा का क़ियामत नुमा दिन आ गया और दुनिया से सफ़र करने वाले भूके प्यासे ग़रीबुल वतन मुसाफ़िरों ने अपने ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़े फ़ज्र अदा की और सूरज तुलूअ हुआ। इधर अम्र बिन सअ़द ने अपने बाईस हज़ार फ़ौज को मैदान में लाकर जंग का नक़्क़ारा बजा दिया।

इतमामे हुज्जत : हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने जंग में तशरीफ़ ले गए और इतमामे हुज्जत के लिये एक तक़रीर फ़रमाई। हम्द व सलात के बाद इमामे पाक ने फ़रमाया ऐ यज़ीदी लश्कर के लोगो ! मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि ख़ूने नाहक़ हराम और अल्लाह तआला के क़हर व ग़ज़ब का सबब है कि तुम इस गुनाह में मुब्तला न हो, मैं ने किसी का क़त्ल नहीं किया है। किसी का घर नहीं जलाया है, अगर तुम अपने शहर में मेरा आना पसन्द नहीं करते हो तो मुझे वापस जाने दो, मैं तुम से किसी चीज़ का तलबगार नहीं। मैं तुम्हारे दरपै आज़ार नहीं। तुम क्यूँ मेरी जान के दरपै हो और तुम किस तरह मेरे ख़ून के इल्ज़ाम से बरी हो सकते हो ? क़ियामत के दिन तुम्हारे पास मेरे ख़ून का क्या जवाब होगा। अपना अन्जाम सोचो और अपनी आक़िबत पर नज़र डालो, फिर यह भी सोचो और समझो कि मैं कौन हूँ। मेरे नाना जान कौन है ? मेरे वालिद कौन हैं ? मेरी वालिदा माजिदा कौन हैं ?

मैं उस रसूल का नवासा हूँ जिस का तुम कलमा पढ़ते हो, मुझ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना बेटा फ़रमाया है जिस के उम्मती होने का तुम दावा करते हो। मैं उस बाप का बेटा हूँ जिस को शेरे खुदा अलियुल मुरतज़ा फ़ातहे खैबर कहा जाता है, मैं उस मां का बेटा हूँ जिस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने राहते जान और अपने जिगर का टुकड़ा कहा है। और जन्नती औरतों की सरदार फ़रमाया है। मैं वही हुसैन इब्ने अली हूँ जिस की महब्बत, रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी महब्बत फ़रमाया है। मैं वही हुसैन हूँ जो खुद नहीं आया बल्कि तुम्हारे बुलाने पर आया हूँ तो क्या एक बुलाए हुए मेहमान का यही हक़ है जो तुम अदा कर रहे हो। अब भी वक़्त है कि अपने किये पर नादिम व शर्मिन्दा हो जाओ। अभी तौबह का दरवाज़ा खुला हुआ है वर्ना बरोज़े क़ियामत मेरे और मेरी अहले बैत के ख़ून का तुम्हारे पास कोई जवाब न होगा। तुम दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़्वार हो जाओगे।

जब सरे मेहशर वह पूछेंगे हमारे सामने
क्या जवाबे जुर्म दोगे तुम खुदा के सामने

हजरत इमामे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तक़रीर का उन बद नसीबों पर कोई असर न हुआ और ज़ालिमों ने शोरो गुल मचाना शुरू कर दिया और कहने लगे ऐ इमामे हुसैन! आप के फज़ाइल व मनाक़िब से हम अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं लेकिन इस वक़्त यह मस्अला ज़ेरे बहस नहीं है इस वक़्त तो जंग के लिये आप किसी को भेजिये। (सवानेह करबला, स. 98)

इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करबला में करामतें

ज़ालिमों का यह गुस्ताखाना जवाब सुन कर हज़रत इमामे पाक अपने ख़ेमे की तरफ़ तशरीफ़ लाए, इतने में यज़ीदी फ़ौज का एक बद नसीब सिपाही मालिक बिन उरवा घोड़ा दौड़ा कर सामने आ गया और उस ने ख़ेमे के पास ख़न्दक़ में आग देखी तो उस बे अदब यज़ीदी फ़ौजी ने कहा कि ऐ हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ! तुम ने वहाँ की आग से पहले यहीं आग लगा ली ? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ ऐ दुश्मने खुदा तू झूटा है क्या तुझे यह गुमान है कि मैं जहन्नम में जाऊँगा।

हज़रत इमामे पाक के जां निसार हज़रत मुस्लिम बिन ओसजह को उस बद नसीब का यह जुमला गवारा न हुआ और उन्होंने उस बद नसीब के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त चाही, मगर इमामे पाक ने इजाज़त नहीं दी लेकिन हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मजरूह दिल से यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह तआला तू इस बद नसीब को दोज़ख की आग से पहले ही दुनिया की आग का मज़ा चखा दे। इमामे पाक का दुआ करना था कि उस बद नसीब के घोड़े का पेर एक सूराख में गया और घोड़ा फिसला और यह इस तरह गिरा कि घोड़े की रिकाब में उस का पेर उलझ गया और घोड़ा उस को घसीटते हुए ख़न्दक़ की तरफ़ ले कर भागा और यह बद नसीब ख़न्दक़ की आग में गिरा और जल कर राख हो गया।

हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और अर्ज़ किया ऐ मेरे अल्लाह ! तेरा शुक्र है कि तूने अहले वैत के दुश्मन को सज़ा दी। हज़रत इमामे पाक की ज़बान से यह जुमला सुन कर यज़ीदी फ़ौज में से एक बद नसीब सिपाही ने कहा कि ऐ हुसैन तुम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से क्या निस्बत ? इस लफ़्ज से इमामे पाक का कलेजा फट गया और आप ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि इलाही तू फ़ौरन इस बद नसीब, गुस्ताख़ को अज़ाब में मुब्तला कर दे। अभी इमामे पाक ने दुआ की और उस गुस्ताख़ को बैतुल ख़ला की हाजत हो गई और वह नंगा हो कर एक जगह क़ज़ाए हाजत के लिये बेठा, अचानक एक काले ज़हरीले बिच्छू ने उसको डंक मारा और यह दर्द से तड़पता और बिलकता हुआ नजासत व गन्दगी में लत पत होकर भागा और लश्कर के सामने तड़प तड़प कर ज़िल्लतो रुसवाई के साथ मर गया। मगर बेग़ैरत यज़ीदी फ़ौज को यह सब देख कर भी शर्मो हया न आई।

इसी तरह एक गुस्ताख़ मुज़नी ने साक़िये कौसर के नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा ऐ हुसैन ! देखलो दरियाए फ़ुरात मोजें मार रहा है मगर तुम को उस में से एक क़तरा पानी नहीं मिलेगा और तुम प्यासे मर जाओगे। हज़रत इमामे पाक ने उस गुस्ताख़ के लिये यह दुआ की : اَللّٰهُمَّ اَمِتْهُ عَطْشَانًا ऐ अल्लाह तआला इसको प्यासा मार।

चुनाँचे मुज़नी का घोड़ा भागा और यह गुस्ताख़ उस घोड़े को पकड़ने के लिये दौड़ा तो उस गुस्ताख़ पर प्यास का इतना शदीद ग़लबा हुआ कि प्यास, प्यास पुकारता था मगर जब उसके हलक़ में पानी डाला जाता था तो एक क़तरा भी उसके हलक़ के नीचे नहीं उतरता था, यहाँ तक कि प्यास की शिद्दत से तड़प तड़प के मर गया। (सवानेह करबला, स. 100)

ऐ दिल बगीरद अमन सुल्ताने औलिया
यानी हुसैन बिन अली जाने औलिया

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इन ईमान अफ़रोज़ करामतों को देखकर यज़ीदियों, ज़ालिमों के सीनों में दिल लरज़ जाना चाहिये था और वह उससे इबरत समझकर इमामे पाक के ख़ूने नाहक़ से बाज़ आ जाते मगर यह शरारत व ख़बासत के मुजस्समे जिनके सरों पर दुनिया की लालच शैतान बनकर मुसल्लत हो चुकी थी, इन इबरत आमोज़ करामात से कोई सबक़ हासिल न कर सके बल्कि और ज़्यादा बे अदबी और गुस्ताख़ी के शैताने मुजस्सम बनकर जंगी अशआर पढ़ते हुए अपनी तलवारों को चमकाते हुए हज़रत इमामे पाक से लड़ने के लिये मैदाने जंग में निकल आए। लेकिन हज़रत इमाम हुसैन और उनके जां निसार साथी उन यज़ीदियों की फ़ौज की कसरत और उनके हथियारों की चमक से न डरे न झुके बल्कि जज़्बए शहादत से सरशार और अल्लाह तआला की राह में अपना सर कटाने के लिये बे क़रार थे।

इशरत क़त्ल गहे अहले तमन्ना मत पूछ
[illegible] नज़्ज़ारा है शमशीर का उरयां होना

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथियों की शहादत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आपके अहले बैत शौक़े शहादत में सरशार थे उन्होंने मैदाने कारज़ार में जाना चाहा मगर क़ुर्बो जवार के गांव के रहने वाले वह जां निसार जो इस हादसे की खबर सुनकर हाज़िरे दरबार हो गए थे वह लोग हज़रत इमामे पाक के क़दमों को चूमकर मचल गए और अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यह ग़ैर मुमकिन है कि जब तक हम में से एक जां निसार भी बाक़ी है अहले बैत का ख़ून ज़मीन पर गिरे, इस लिये हम अपना सर आपके क़दमों पर निसार करेंगे चुनाँचे यके बाद दीगरे उन जां निसारों ने मैदाने जंग में जाकर राहे ख़ुदा में अपनी जानों को क़ुरबान किया और जामे शहादत से सरफ़राज़ हुए। (सवानेह करबला, स. 101)

हुर आए और जन्नती हो गए : हुर बिन यज़ीद रियाही का सीना पहले ही से इश्क़े अहले बैत का मदीना था मगर यज़ीदी फ़ौज के कमान्डर थे इस लिये मजबूर थे मगर वह वक़्त आ ही गया कि हुर की आँखों से ग़फ़लत के परदे उठ गए, दिल की दुनिया बदल गई और जिस्म पर लरज़ा तारी हो गया। किसी शख़्स ने पूछा था कि ऐ हुर आज से पहले मैंने तुझे कभी ख़ौफ़ ज़दा नहीं पाया तो हुर ने कहा कि मेरे एक तरफ़ जहन्नम के भड़कते हुए शोले हैं और दूसरी तरफ़ जन्नत की बहारें हैं और मैं सोच रहा हूँ कि अब किधर जाऊँ। फिर हज़रत हुर ने अपने घोडे को ऐड़ लगाई और नवासए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमों में हाज़िर हो गए।

निकल कर लश्करे आदा से मारा हुर ने यह नारा
कि देखो निकलते हैं जहन्नम से ख़ुदा वाले

भीगी पलकों और रोती आँखों से हुर ने अर्ज़ किया, या इमाम हुसैन ! क्या मेरी ख़ता मुआफ़ हो सकती है ? इमाम पाक ने फ़रमाया ऐ हुर सुन लो राहे हक़ पर आने वाले की हर ख़ता व गुनाह को अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमा देता है यानी हुर के मअ़ना है आज़ाद। गोया इमाम पाक यह फ़रमा रहे थे कि आज के बाद से तू हर गुनाह से पाक है और दोज़ख़ की आग से आज़ाद है और हुर अभी इमाम पाक की क़दम बोसी करके गुफ़्तुगू कर ही रहे थे कि यज़ीदी लश्कर का एक सिपाही मैदाने जंग में आकर चिल्लाने लगा कि कौन है जो मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी जान देना चाहता है। हज़रत हुर ने उस का बदकार की ललकार सुनी तो आक़ा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से उस के मुक़ाबले में जाने के लिये और आप के क़दमों पर जान क़ुरबान करने के लिये इजाज़त तलब की और मैदाने कार ज़ार में पहुँच गए। यज़ीदी सिपाही से मुक़ाबला होता रहा फिर पूरी ताक़त से उस लईन के सीने में तलवार उतारी वह वासिले जहन्नम हुआ। इस के बाद यज़ीदी फ़ौज के कई लोगों ने चारों तरफ़ से हज़रत हुर को घेर लिया। आप उन सब का तन्हा मुक़ाबला करते रहे और बहुत से यज़ीदियों

को वासिले जहन्नम किया उस के बाद हज़रत हुर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर तलवारों की बारिश कर दी गई और आप वासिले इलल्लाह हो गए और जामे शहादत नोश फ़रमा लिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन O

वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी : इसी तरह हज़रत वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मुजाहिदाना किरदार और जज़्बए शहादत की दास्तां भी क़ियामत तक याद की जाती रहेगी। वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी बहुत ही हसीन और खूब सूरत नौजवान थे और उन की नई नई शादी हुई थी जो अभी सिर्फ़ सत्रह दिन ही हुए थे कि उन की बूढ़ी मां ने कहा बेटा आज मेरे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने करबला में बे यारो मददगार यज़ीदी दुश्मनों के नरगे में गिरफ़्तार और रन्जो ग़म का शिकार हैं। ऐ मेरे प्यारे बेटे! तेरी बूढ़ी मां की आरज़ू और तमन्ना है कि तेरा वह खून जो मेरे दूध से बना है आज उस खून का एक एक क़तरा राहे हक़ में बहा कर तू अपनी जान इमामे हुसैन पर कुरबान कर के मेरी मग़फ़िरत का सामान कर दे।

ऐ बेटा! यह ठीक है कि तू ही मेरी ज़िन्दगी का सहारा है तू ही मेरे घर का उजाला है और मुझे यह भी मालूम है कि तेरी शादी को सिर्फ़ सत्रह दिन ही हुए हैं मगर तेरी बूढ़ी मां की ज़िन्दगी की आख़िरी ख़्वाहिश है कि तुम मेरे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लअल इमामे पाक पर अपनी जान फ़िदा कर के शहीद हो जाओ ताकि बरोज़े क़ियामत तुम्हारी बूढ़ी मां का नाम भी शहीदों की मां में शुमार किया जाए। मां की इस पुर दर्द आरज़ू और तमन्ना ने वफ़ादार बेटे हज़रत वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी के दिल में शौक़े शहादत का तूफ़ान बरपा कर दिया। फिर हज़रत वहब अपनी नई नवेली दुल्हन के पास गए उस के साथ आख़िरी मुलाक़ात करते हुए फरमाया, ऐ मेरी प्यारी बीवी! मुझे मालूम है कि तूने मेरी ख़ातिर अपने मां, बाप के घर को छोड़ा है, बहन भाइयों की जुदाई को बरदाश्त किया है, मैं तेरे सुहाग की क़ीमत को भी जानता हूँ मगर आज इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर मुसीबत का वक़्त आ गया है। मैं चाहता हूँ कि परचमे इस्लाम हमेशा बलन्द रहे इस लिये हज़रत इमामे पाक के क़दमों पर अपनी जान कुरबान कर दूँ उस नेक बीवी ने फ़ौरन अपने नेक शोहर को इजाज़त देते हुए अर्ज़ किया कि ऐ मेरे शोहर इस से बढ़ कर मेरी खुश नसीबी और क्या हो सकती है कि बरोज़े महशर जहाँ आप को शहीद कहा जाएगा वहीं मुझे एक शहीद की बीवी कह कर पुकारा जाएगा, जल्दी कीजिये और जाकर इमामे पाक की महब्बत व उल्फ़त में फ़िदा हो जाइये चुनाँचे हज़रत वहब इब्ने अब्दुल्लाह कल्बी ने इमामे पाक के क़दमों का बोसा लिया और मैदाने कार ज़ार में जाने की इजाज़त लेकर मैदाने जंग में तशरीफ़ ले गए और यज़ीदी फ़ौज के साथ लड़ते हुए जान दे दी और शहादत के अज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन O

ऐ ईमा वालो! हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुख़्लिस और जां निसार

साथियों ने यके बाद दीगरे मैदाने जंग में इमामे पाक पर अपनी जानें क़ुरबान करते रहे और जामे शहादत नोश फ़रमाते रहे।

करबला वालों ने रौशन कर दिया इस्लाम को
शमएं गुल होती गईं और रोशनी बढ़ती गई

दुरूद शरीफ़:

आख़िर कार उन सब जां निसारों की शहादत के बाद ख़ानदाने अहले बैत के नौजवानों की क़ुरबानी का वक़्त आ ही गया।

इमाम क़ासिम की शहादत : अहले बैत के बहुत से नौजवानों की शहादत के बाद हज़रत इमाम क़ासिम बिन हज़रत इमाम हसन मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जिन की उम्र 22 साल की थी अपने प्यारे चचा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मैदाने जंग में जाकर गरदन कटाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं। हज़रत इमामे पाक ने फ़रमाया बेटा क़ासिम तुम मेरे प्यारे भाई इमाम हसन की निशानी और यादगार हो, मैं किस तरह गवारा कर सकता हूँ कि तुम मेरे सामने ख़ाक व ख़ून में तड़पते हुए अपना गला कटाओ और मैं देखता रहूँ। मैं इस जान लेवा सदमे को बरदाश्त करने की ताक़त नहीं रखता। इस लिये मैं तुम्हें मैदाने जंग में जाने की इजाज़त नहीं दे सकता।

हज़रत इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब देखा कि इमामे पाक किसी तरह से इजाज़त नहीं दे रहे हैं बस उसी वक़्त यह ख़याल आया कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझ को एक तावीज़ लिख कर दी थी जो मेरे बाज़ू पर बंधी हुई है और वालिदे गिरामी ने फ़रमाया था कि बेटा क़ासिम जब तुम पर सख़्त मुसीबत और इम्तिहान व आज़माइश का वक़्त आए तो इस तावीज़ को खोल कर पढ़ लेना, तुम्हारी सब तकलीफ़ दूर हो जाएगी। आपने सोचा कि इस से बड़ी मुसीबत और क्या हो सकती है, चुनाँचे आप ने तावीज़ को खोला और पढ़ा जिस का मज़मून यह था कि बेटा क़ासिम जब तुम्हारे चचा मेरे प्यारे भाई इमाम हुसैन मैदाने करबला में मसाइब व आलाम में घिरे हुए हों तो तुम अपनी जान को उन पर क़ुरबान कर देना। इमाम क़ासिम ने उस तावीज़ को इमामे पाक की ख़िदमत में इस यक़ीन के साथ पेश कर दिया कि अब मुझे इजाज़त मिल जाएगी। हज़रत इमामे पाक ने जब तावीज़ को खोल कर पढ़ा तो पलकें भीग गईं और आँखों से अश्क जारी हो गए और इमाम क़ासिम को मैदाने जंग में जाने की इजाज़त अता कर दी। और इमामे पाक ने अपने प्यारे भाई हज़रत इमामे हसन का अमामा इमाम क़ासिम के सर पर बाँधा, और तलवार हाथ में देकर घोड़े पर सवार करके फ़रमाया बेटा जाओ। अपनी मां और फूफी से मिल लो। चुनाँचे हज़रत इमाम क़ासिम ख़ेमे में तशरीफ़ ले गए अपनी मेहरबान मां और फूफी और तमाम अहले बैत से मुलाक़ात की और आख़री सलाम करके इमामे पाक के पास हाज़िर थे, इमामे पाक ने जन्नती दूल्हा को दुआ देते हुए मैदाने जंग की तरफ़ रवाना किया।

हज़रत इमाम क़ासिम जोशे जिहाद से लबरेज़ घोड़ा दौड़ाते हुए यज़ीदी फ़ौज के सामने

पहुँच गए, रज्ज के अशआर पढ़कर फरमाया : ऐ यज़ीदियो ! अब जिसके सर पर मौत सवार हो वह मेरे सामने आए, मेरी तलवार की गार से अपने खून में नहाए। इमाम क़ासिम की इस हैदरी ललकार से यज़ीदियों की फौज पर डर और हैबत तारी हो गई, किसी में जुरअत व हिम्मत नहीं हुई कि इमाम क़ासिम के मुकाबले के लिये आए।

इब्ने सअ़द बदकार ने जब यह देखा कि यज़ीदी लश्कर में से कोई भी हज़रत इमाम क़ासिम के मुक़ाबले के लिये नहीं निकलता तो उस ने मशहूर शामी पहलवान अरज़क़ को पुकारा जो यज़ीद की तरफ़ से सालाना दस हज़ार दीनार तनख़्वाह पाता था। जब अरज़ुक़ पहलवान इब्ने सअ़द के पास हाज़िर हुआ तो इब्ने सअ़द ने कहा कि ऐ अरज़क ? देख बड़ी देर से यह नौजवान मुक़ाबले की दावत दे रहा है मगर हमारे लश्कर में किसी की भी हिम्मत नहीं है कि इस नौजवान के मुकाबले के लिये जाए। इस लिये अब मैं तुझ को हुक्म देता हूँ कि तू एक हज़ार सवार का लश्कर ले कर उस नौजवान के मुक़ाबले के लिये मैदान में जा। अरज़क़ को इब्ने सअ़द की बात बहुत बुरी लगी वह ग़ज़बनाक हो कर कहने लगा, ऐ इब्ने सअ़द तुझे शर्म नहीं आती कि मुझ जैसे बहादुर नामी पहलवान को एक कमसिन लड़के से लड़ने के लिये भेज रहा है, जिस के मुंह से अभी दूध की बू आ रही है। ऐ इब्ने सअ़द ! सारा मिस्र व शाम जानता है कि मैं अकेला एक हज़ार बहादुरों का मुक़ाबला करता हूँ, क्या आज मैं एक बच्चे से मुकाबला कर के अपना नाम ख़राब व बरबाद करूँगा। इब्ने सअ़द ने कहा ऐ अरज़क़ तू किस गुमान व खयाल में है तू इस नौजवान की उम्र और उस के नाज़ुक बदन को न देख, अफ़सोस ! तू इन्हें पहचानता नहीं कि यह कौन हैं ? यह नौजवान फ़ातहे ख़ैबर शेरे खुदा हज़रत अली के पोते और इमाम हसने मुज्तबा के बेटे हैं। इन की रगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ख़ून है। खुदा की क़सम अगर यह भूके प्यासे न होते तो यह तन्हा ही यज़ीद की पूरी फ़ौज के लिये काफ़ी होते। जब इब्ने सअ़द ने अरज़क़ पहलवान को मजबूर कर दिया तो उस ने कहा कि ऐ इब्ने सअ़द मैं उस नौजवान से तो नहीं लड़ुँगा लेकिन इस जंग में मेरे चार बहादुर बेटे मौजूद हैं जो ताक़त व बहादुरी में बे मिसाल हैं। उन में से एक को भेज देता हूँ वह चन्द लम्हों में इस नौजवान का सर काट कर लाएगा। चुनाँचे अरज़क़ का एक बेटा तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सवार हो कर अपनी क़ीमती तलवार चमकाता हुआ और बादल की तरह गरजता हुआ मैदान में निकला। हज़रत इमाम क़ासिम ने उस को मैदान में आता हुआ देख कर फ़रमाया कि अफ़सोस ! तेरे बाप को तुझ पर रहम नहीं आया ? कि तुझ को मेरी तलवार से क़त्ल होने के लिये मैदान में भेज दिया। जैसे ही अरज़क़ का बेटा मैदान में हमले के लिये आगे बढ़ा हज़रत क़ासिम ने अपना ख़न्जर उस के पेट में उतार दिया और वह बद बख़्त ज़ख़्म की ताब न लाकर घोड़े से ज़मीन पर गिर गया। इसी तरह अरज़क़ के और तीनों बेटे बारी बारी मैदाने जंग में इमाम क़ासिम के मुक़ाबले में आते रहे और इमाम क़ासिम ने उन तीनों को भी वासिले जहन्नम कर दिया।

अरज़क़ पहलान अपने चारों बहादुर बेटों को इस तरह ज़िल्लत के साथ क़त्ल होता हुआ

देख कर गैज व गज़ब में अपने होश व हवास खो बैठा और ग़ज़बनाक हो कर दाढ़ी के बाल नोचते हुए घोड़ा दौड़ा कर मैदाने जंग में इमाम कासिम के सामने आ गया और कहने लगा ओ बच्चे ! मेरे बच्चों को तो तुम ने क़त्ल कर दिया अब तुम्हारा मुक़ाबला मुझ से है। संभल जा कि अब तू बच नहीं सकता। हज़रत क़ासिम ने फ़रमाया ऐ अरज़क़ तुझे खबर नहीं है कि हमारी रगों में नबी और अली का ख़ून है। अरज़क़ गुस्से से चूर हुआ म्यान से तलवार खींच ली, हज़रत कासिम ने भी तलवार निकाल ली और आगे बढ़े, अरज़क़ की आंखें हज़रत कासिम की तलवार पर पड़ीं, हैरान होकर पूछता है कि यह तलवार तो मेरे बेटे की हैं यह तुम्हारे पास कहाँ से आ गई। हज़रत कासिम ने मुस्कुराकर फ़रमाया, हां तेरा बेटा अपनी यादगार के लिये यह तलवार मुझे इस लिये दे गया है ताकि इसी तलवार से मैं तुझे क़त्ल कर के तेरे बेटों के पास पहुँचा दूँ। यह सुनकर अरज़क़ का गुस्सा और बढ़ गया और उसने हमले के लिये तलवार उठाई। हज़रत कासिम ने फ़रमाया कि अरज़क़ ! हम तुझे बड़ा तजरबे कार बहादुर समझते थे मगर तुम तो बड़े ही अनाड़ी हो, तुम को अपने घोड़े की पेटी का भी ध्यान नहीं कि वह ढीली हो चुकी ? अरज़क जल्दी से झुककर घोड़े के तंग को देखने लगा इतने में हज़रत कासिम ने उसकी कमर पर तलवार का ऐसा वार किया कि अरज़क का जिस्म दो टुकड़े हो गया और वह लईन वासिले जहन्नम हो गया। फिर हज़रत क़ासिम ने देखा कि इब्ने सअद कल्बे लश्कर में खड़ा है और यज़ीदी फ़ौज की कमान कर रहा है, आपने सोचा कि क्यों न इसी ख़बीस को क़त्ल कर डालूँ। इसी ख़याल से आगे बढ़े ही थे कि चारों तरफ़ से यज़ीदी लश्कर ने घेर कर तलवारों और नेज़ों की बारिश कर दी। आप सत्ताईस ज़ख़्म खाकर घोड़े से गिरे, शीश बिन सअद मलऊन ने आपके सीने पर ऐसा नेज़ा मारा जिसकी ताब न लाकर हज़रत इमाम कासिम ने अपनी जान को जाने जानां के सुपुर्द कर दिया और मरतबा-ए-शहादत हासिल कर लिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन 0

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इमाम क़ासिम की मुक़द्दस लाश को गोद में उठाया और चेहरए पुर अनवार से ख़ाक व ख़ून के धब्बों को साफ़ करके ख़ेमे में लाए।

ऐ ईमान वालो ! इसी तरह मैदाने करबला में हज़रत इमाम क़ासिम के तीनों भाई अब्दुल्लाह बिन हसन और उमर बिन हसन और अबू बक्र बिन हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी यज़ीदी लश्कर से जंग करते हुए राहे हक़ में शहादत से हम किनार हुए।

हज़रत अब्बास अलमदार की शहादत

ऐ ईमान वालो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्द हज़रत अब्बास अलमदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मैदाने कार ज़ार में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं और इमामे पाक की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं कि भाईजान ! हम नन्हें नन्हे बच्चों का प्यास से तड़पना और उनका रोना बिलकना मुझसे नहीं देखा जाता। अल्लाह के लिये अब मुझे

इजाज़त दीजिये कि मैं कुरबान हो जाऊं या एक मशक पानी का लेकर आऊँ और इन प्यासों की प्यास को बुझाऊँ। हज़रत इमामे पाक ज़ारो कतार रोने लगे और फरमाया कि भाई अब्बास ! मेरे अलम को उठाने वाले तुम हो, मेरे खेमे की निगेहबानी करने वाले तुम हो, अब तुम्हारे बाद मेरा अलम कौन उठाएगा और मेरे खेमे की हिफाज़त कौन करेगा। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रोते हुए अर्ज किया कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरी जान आप पर कुरबान। खुदा की कसम अब ज़िन्दगी में कोई मज़ा बाकी नहीं रहा और मैं दुनिया से बिल्कुल तंग आ चुका हूँ, बस अब मेरी आख़री आरज़ू और तमन्ना यही है कि मालिके कौसर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम के नवासों को दरयाए फ़रात का पानी पिलाकर मैं भी जल्द से जल्द अपने भाइयों और भतीजों के पास पहुँच जाऊँ। हज़रत अब्बास अलमदार के इसरार से मजबूर होकर हज़रत इमामे पाक ने इजाज़त दे दी।

हज़रत अब्बास अलमदार एक मशक कान्धे पर लटकाए हुए घोड़े पर सवार होकर मैदाने कार ज़ार में यज़ीदी फ़ौज के सामने पहुँचे और इत्मामे हुज्जत के लिये फ़रमाया, ऐ यज़ीद नापाक के बे दीन फ़ौजियो और बे रहम इन्सानो ! तुमने आले रसूल पर पानी बंद करके जिस दरिन्दगी और ज़ुल्म की इन्तिहा की है मैं तुमसे कहता हूँ कि अब भी वक़्त है अपने ज़ुल्मो सितम से तौबह कर लो और हज़रत इमामे पाक के ख़ूने नाहक़ से बाज़ आ जाओ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे बच्चों को इस तरह प्यास से न तड़पाओ।

हज़रात ! बे रहम कूफ़ियों के सीनों में दिल की जगह शायद पत्थर का टुकड़ा था कि हज़रत अब्बास अलमदार की बातों का उन पर कुछ भी असर नहीं हुआ बल्कि बेरहम यज़ीदी ज़ालिमों ने आप पर तीरों की बारिश कर दी। हज़रत अब्बास ने नारए तकबीर बलन्द किया और तलवारे आबदार लेकर उन पर हमला कर दिया। आप का हमला था कि क़हरे ख़ुदा था, जो यज़ीदियों पर नाज़िल हो गया, घोड़े बिदकने और कूदने लगे, तलवारें हाथों से गिरने लगीं, लईनों के सर कट कट कर गिरने लगे, हज़रत अब्बास अलमदार उनका क़त्ले आम करते हुए नेहरे फ़ुरात पर पहुँच गए, नेहरे फ़ुरात से पानी का मुश्कीज़ा भर कर कन्धे पर लटकाया और ख़ुद पानी पीने के लिये चुल्लू में लिया और पीने का इरादा किया तो सकीना की प्यास याद आ गई, हज़रत अलिये असग़र शीर ख़्वार की ख़ुश्क ज़बान और प्यास से उनका रोना व बिलकना याद आ गया तो चुल्लू का पानी फ़ुरात में फेंक दिया और फ़रमाया कि ऐ दरयाए फ़ुरात ! गवाह रहना कि तेरा पानी और इसका एक एक क़तरा उस वक़्त तक मुझ पर हराम है जब तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल को पानी न पिला दूँ। फिर आपने अपने घोड़े को पानी पीने का इशारा किया तो घोड़े ने भी पानी पीने से इनकार कर दिया।

मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

इशारह अस्पे ताज़ी को था पानी पीने का
प्यासा गरचे था घोड़ा, मगर वाक़िफ़ क़रीने का
लगा जब मुंह से पानी और होंटों तक तरी आई
हटाई ख़ुद ही सतहे आब से गरदन वह रेअ़नाई

हज़रत अब्बास अलमदार घोड़े पर सवार हुए और ख़ेमे की तरफ़ रवाना हुए। इब्ने सअ़द ने अपने लश्कर को ललकारा और कहा कि ख़बरदार ! अगर यह मुश्कीज़ा इमामे पाक के ख़ेमे में पहुँच गया और शेरे ख़ुदा के शेरों को पानी मिल गया तो तुम में से कोई भी ज़िन्दा नहीं बच सकता। यह सुनते ही यज़ीदी फ़ौज ने हज़रत अब्बास अलमदार का चारों तरफ़ से मुहासरा (घेराओ) कर लिया और तीर व तलवार की बारिश करने लगे, यहाँ तक कि नोफ़िल मलऊन ने धोके से ऐसी तलवार मारी कि हज़रते अब्बास का दाहिना बाज़ू कट गया आपने जल्दी से मुश्कीज़े को अपने बाएं बाज़ू पर लटकाया। फिर एक ज़ालिम यज़ीदी ने ऐसी तलवार चलाई कि आपका बायां बाज़ू भी कट कर ज़मीन पर गिर गया। जब दोनों बाज़ू कट गए तो आपने मुश्कीज़ा को अपने दांतों से पकड़ लिया और घोड़े की रिकाब से दुश्मनों को ठोकर देते हुए ख़ेमे की तरफ़ बढ़ते चले जा रहे थे कि एक यज़ीदी ज़ालिम ने ऐसा ताक कर मुश्कीज़ा पर तीर चलाया कि मुश्कीज़ा में सूराख़ हो गया और पानी गिरने लगा और आप ख़ेमे की क़रीब पहुँच गए मगर मशक में एक क़तरा भी पानी नहीं था और जिस्म ज़ख़्मों से छलनी हो चुका था। निढाल होकर घोड़े से ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए और इमामे पाक को आवाज़ दी : يَا اَخِيْ اَدْرِكْ اَخَاكَ यानी ऐ भाई हुसैन अपने भाई की ख़बर लीजिये। हज़रत इमामे पाक दौड़ कर पहुँचे तो क्या देखा कि हज़रत अब्बास अलमदार ख़ून में नहाए हुए ख़ुल्दे बरीं का मेहमान बनने के लिये तैय्यार हैं। हज़रत इमामे पाक ने इतनी ज़ोर से आह खींची कि करबला की ज़मीन ख़ौफ़ से दहल गई और आपको अपनी आग़ोश में उठाकर ख़ेमे में लाए और ज़बाने मुबारक पर ग़म में डूबे हुए यह कलेमात थे : اَلْاٰنَ اِنْكَسَرَ ظَهْرِيْ अब मेरी कमर टूट गई और मेरा सहारा कोई नहीं रहा। फिर आप रोते हुए हज़रत अब्बास अलमदार के ख़ून आलूद चेहरे पर अपना मुंह रखकर ऐ भाई ऐ भाई पुकारते रहे। फिर हज़रत अब्बास की रूह क़फ़से उन्सरी से परवाज़ कर गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ०

हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत

अब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नूरे नज़र तस्वीरे पयम्बर हज़रत अलिये अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हैं जिनकी उम्र शरीफ़ 18 बरस की है और मैदाने जंग में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं। अल्लाहु अकबर अजीब वक़्त है कि प्यारा बेटा मेहरबान बाप से सर कटाने की इजाज़त तलब कर रहा है। हज़रत इमामे पाक ने महब्बत भरी निगाह अपने प्यारे बेटे पर डाली और फ़रमाया बेटा तुमको ख़ाक व ख़ून में तड़पने की इजाज़त किस क़ल्बो जिगर से दूँ और अगर इजाज़त नहीं देते तो बाग़े आले रसूल का शादाब

गुल रन्ज व ग़म से मुरझा जाता क्यों कि उसको शोक़े शहादत ने इस क़दर वारुफ्ता बना दिया था कि अगर हज़रत इमामे पाक उनको मैदाने जंग में जाने से रोक देते तो सदमात से उनके सीने में दिल का शीशा पाश पाश हो जाता। चारो नाचार हज़रत इमामे पाक ने इजाज़त अता फ़रमा दी। हज़रत अलिये अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शक्लो सूरत हू बहू जमाले मुस्तफ़ा सल्लाल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आईना थी। हज़रात सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को जब दीदारे मुस्तफ़ा का शौक़ बेताब करता तो वह दूर दूर से सफ़र करके मदीना मुनव्वरा आते थे और हज़रत अलिये अकबर के चेहरए अनवर का हुस्नो जमाल देखकर उनके दिलों को तसल्ली हासिल हो जाती थी, यह नूर का पेकर और तन्वीरे मुस्तफ़ा का मुरक्क़ा थे। जिस वक़्त मैदाने जंग का इरादा करके रवाना होने लगे तो खुद हज़रत इमामे पाक ने अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ुबाए रहमत को आपके ज़ेबे तन किया और हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पटका आपकी कमर में बांधा और आपके सरे अनवर पर लोहे की टोपी रखी और तलवार व नेज़ा अपने मुबारक हाथ से उनके हाथों में देकर दुआ की कि बेटा जाओ तुम्हारा ख़ुदा हाफ़िज़ व नासिर है। हज़रत अलिये अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आखिरी सलाम किया और मैदाने कारज़ार में पहुँचकर असदुल्लाही शेर ने यज़ीदी फ़ौज की तरफ़ नज़र की और ज़ुल फ़िक़ारे हैदरी चमकाकर रज्ज़ का यह शेर पढ़ा :

اَنَا عَلِیُّ بْنُ حُسَیْنِ بْنِ عَلِیٍّ

نَحْنُ اَھْلُ الْبَیْتِ اَوْلٰی بِالنَّبِیِّ

यानी ऐ यज़ीदियो ! जान लो तुम मुझे पहचान लो कि मैं अलिये अकबर हूँ, मेरे बाप का नाम हुसैन है जो अली शेरे ख़ुदा के बेटे हैं और याद रखो कि हम अहले बैत हैं और सुन लो कि ख़ुदा के इस आसमान के नीचे और खुदा की इस ज़मीन के ऊपर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हमसे ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार कोई नहीं है।

हज़रत अलिये अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जिस वक़्त यह रज्ज़ पढ़ी तो आपकी अज़मत व शान की हैबत से मैदाने करबला का ज़र्रा ज़र्रा कांप उठा मगर बे दीन यज़ीदी जिनका क़ल्ब स्याह और पत्थर से ज़्यादा सख़्त हो चुका था, उन पर कोई असर न हुआ। फिर आप ने फ़रमाया ऐ औलादे रसूलुल्लाह के ख़ून के प्यासे यज़ीदियो ! आओ मैदान में आओ। शेरे ख़ुदा के शेर की ललकार सुनी तो लश्करे आदा में किसी को भी मुक़ाबला करने की जुरअत व हिम्मत न हुई। आख़िर कार हज़रत अलिये अकबर ने यज़ीदी फ़ौज पर हमला कर दिया और आपकी तलवार यज़ीदी फ़ौज पर क़हरे ख़ुदा बनकर बरसी, फिर शेरे ख़ुदा के शेर ने जिस तरफ़ रुख़ किया सफ़ें उलट पुलट दीं, जब लड़ते लड़ते प्यास के ग़लबे से निढाल हो गए तो ख़ेमे की तरफ़ आए और अर्ज़ की : يَا اَبَتَاهُ اَلْعَطَشُ अब्बा जान प्यास से बेताब हूँ। इमामे पाक ने अपने बेटे की प्यास की सख़्ती तो देखी, मगर यहाँ पानी कहाँ था जो पानी

पिलाते। दस्ते शफ़क़त से चेहरए पुर नूर का गरदो गुबार साफ़ किया और फ़रमाया बेटा अब तुम्हारी प्यास के खत्म होने का वक़्त क़रीब आ गया है, अब तुम्हें हौज़े कौसर से पानी पिलाया जाएगा उसके बाद तुम्हें कभी प्यास न लगेगी। बेटा ! मैं जब कभी प्यासा होता था तो मेरे नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे मुंह में अपनी ज़बाने मुबारक दे दिया करते थे, आज इस प्यास की हालत में तुम मेरी ज़बान को अपने मुंह में ले लो। हज़रत अली अकबर ने इमामे पाक की ज़बान अक़दस को चूसा और तसल्ली हो गई फिर हज़रत अलिये अकबर मैदाने कारज़ार की तरफ़ रवाना हुए और यज़ीदी लश्कर को ललकारा। अम्र बिन सअ़द आपकी तलवार की काट देख चुका था, तमाम यज़ीदी फ़ौज को इस शेर की ताक़त व कुव्वत का अन्दाज़ा हो चुका था, इस लिये इब्ने सअ़द अपनी फ़ौज के एक बड़े बहादुर तारिक़ बिन शीस पहलवान को मुक़ाबले के लिये भेजा।

हज़रत अलिये अकबर ने उस पर ऐसी तलवार का वार किया कि वह बद बख़्त कटा और गिर कर वासिले जहन्नम हो गया फिर उसके बाद इब्ने सअ़द ने यज़ीदी लश्कर के एक नामवर बहादुर निसार बिन ग़ालिब को मुक़ाबले के लिये रवाना किया उस लईन ने आपके सर पर नेज़ा मारा मगर आपने उसके नेज़े ही को क़लम कर दिया और फिर उसके सर पर ऐसी तलवार मारी कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। अब यज़ीदी फ़ौज में किसी की हिम्मत नहीं थी वह तन्हा शेरे ख़ुदा के शेर से मुक़ाबले के लिये आता। आख़िर इब्ने सअ़द ने मोहकम बिन तुफ़ैल को हज़ार सवारों के साथ यकबारगी हमला करने के लिये भेजा। उन बद नसीब यज़ीदियों ने चारों तरफ़ से आपको घेर लिया और तलवारों और नेज़ों की बारिश कर दी। आपका जिस्मे पाक ज़ख़्मों से चूर चूर हो गया और आप घोड़े से ज़मीन पर आ गए और पुकारा: يَا اَبَتَاهُ اَدْرِكْنِىْ ऐ अब्बा जान ! मेरी ख़बर लीजिये इमामे पाक मैदान में पहुँचे और आपको उठाकर ख़ेमे में लाए, सर को गोद में लिया और उनके चेहरे से ख़ून आलूद मिट्टी साफ़ करने लगे। हज़रत अलिये अकबर ने आंखें खोल दीं, इमामे पाक के चेहरए पाक का आख़िरी दीदार किया और हमेशा के लिये आंखें बन्द हो गईं और आप मन्सबे शहादत पर जलवा फ़रमा हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन O

हज़रत अलिये असग़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत

अभी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अलिये अकबर की लाशे मुबारक को ज़मीन पर लिटाया ही था कि इमामे पाक की बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हज़रत इमामे पाक के शीर ख़्वार बेटे हज़रत अली असग़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गोद में लिये हुए तशरीफ़ लाईं जिनकी उम्र छः माह की है। कहने लगीं कि भाई हुसैन अब हमसे अली असग़र की प्यास देखी नहीं जाती, भूकी, प्यासी मां के सीने में दूध ख़ुश्क हो चुका है और यह शीर ख़्वार बच्चा प्यास से बेताब है और तड़प तड़प कर दम तौड़ रहा है। फूल जैसा हसीन व रंगीन चेहरा भूक प्यास और गरमी से मुरझा गया है, इसका रोना बिलकना और तड़पना, मचलना देखने की अब हमारे अन्दर ताब व ताक़त नहीं नहीं है, इस लिये भाई जान

मेरी यह गुजारिश है कि आप इस नन्हे बच्चे को मैदान में ले जाकर जफ़ाकारों यजीदियों को दिखाइये, शायद उन संग दिलों को इस बच्चे की प्यास पर रहम आ जाए और वह चन्द घूंट पानी इस बच्चे को पिला दें।

बहन हज़रत ज़ैनब के इसरार पर मजबूर होकर इमामे पाक अपने शीर ख़्वार बच्चे हज़रत अलिये असग़र को अपनी गोद में लेकर अपने सीने से लगाकर स्याह दिल यज़ीदियों के सामने तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ मेरे नाना जान का कलमा पढ़ने वालो ! यह मेरा सबसे छोटा बच्चा है जो प्यास से दम तोड़ रहा है, यह अपने नन्हे नन्हे हाथों को तुम्हारी तरफ़ फैलाकर तुमसे पानी के चन्द घूंट मांग रहा है, अगर तुम्हारे नज़दीक मुजरिम हूँ तो मैं हूँ इस बच्चे का कोई जुर्म नहीं है, इसको तो पानी पिला दो। देखो तो कि प्यास की शिद्दत से इसकी हालत कैसी हो रही है, अगर तुम लोगों के दिलों में कुछ भी रहम हो तो इस नन्हे बच्चे के लिये थोड़ा सा पानी दे दो। मैं वादा करता हूँ कि मैदाने मेहशर में तुम्हें अपने नाना जान के हाथों से पेट भरकर कौसर का जाम पिलाउँगा।

हज़रात ! अभी हज़रत इमामे पाक की दिल हिला देने वाली तक़रीर जारी ही थी कि यज़ीदी फ़ौज का एक बद नसीब सिपाही हुरमला बिन काहिल मरदूद ने तीर का ऐसा निशाना बाँध कर चलाया कि हज़रत अलिये असग़र को छेदता हुआ इमामे पाक के बाज़ू में पेवस्त हो गया, हज़रत इमाम ने तीर खींच कर निकाला तो ख़ून का फ़व्वारा हज़रत अली असग़र के गले से उबलने लगा और प्यासे बच्चे ने बाप के हाथों में तड़प कर जान दे दी और नन्ही सी लाश ख़ून में नहा गई। हज़रत इमामे पाक ने हसरत भरी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा।

जहाँ भर के यज़ीदी को पयामे मर्ग लाएगा
शहीदाने वफ़ा का ख़ूने नाहक़ रंग लाएगा
ज़ख़्मी जिगर ख़बीसों ने तोड़ा हुसैन का
बच्चा भी शीर ख़्वार न छोड़ा हुसैन का

हज़रत इमामे पाक ने नन्ही सी लाश को बहन की गोद में दिया और फ़रमाया कि बहन ज़ैनब सब्र करो और शुक्र अदा करो कि अल्लाह तआला ने हमारी यह सबसे छोटी क़ुरबानी भी क़ुबूल फ़रमा ली है। फिर नन्हे शहीद की लाश को अपने कलेजे से लगाकर आहिस्ता आहिस्ता ख़ेमे की तरफ़ रवाना हुए।

हज़रत ज़ैनब ने जिस वक़्त मां की गोद में अली असग़र की लाश को दिया तो मां ने हाय मेरा लाल कहकर लाश को कलेजे से लगा लिया और रोते हुए कहा, बेटा ! मेरा प्यारा बेटा ! एक मरतबा और अपनी मां के सूखे हुए पिस्तान में मुंह लगा लो कि अब तुम को अपने सीने से मुझे लगाना कभी नसीब नहीं होगा हाय अफ़सोस !

फूल तो दो दिन बहारे जां फ़ज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पे है जो बिन खिले मुरझा गए

ताजदारे करबला हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत

करबला में बेसरो सामां वही है ख़ानदान
बनके ख़ादिम आए थे जिब्रील जिस घर के लिये
किस क़दर जानकाह है करबला का हादसा
हर बशर ग़मग़ीन है शब्बीरो शब्बर के लिये
हश्र तक छोड़ गए एक दरख़ शिन्दा मिसाल
हक़ परस्तों को न भूलेगा यह एहसाने हुसैन

अब जन्नत के नौजवानों के सरदार, शहीदों के क़ाफ़ला सालार, नवासए रसूल इब्ने फ़ातिमतुज़्ज़हरा लख़्ते दिल अलिये मुरतज़ा क़रारे जान हसने मुज्तबा, सहाबा की आँखों के तारे, टूटे हुए दिलों के सहारे, मोमिनों के दिल के चैन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत का वक़्त आ गया है।

उस्ताज़े ज़मान हज़रत मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

साअत आहो बका व बे क़रारी आ गई
सय्यदे मज़लूम की रन में सवारी आ गई
साथ वाले, भाई बेटे हो चुके हैं सब शहीद
अब इमामे बे कस व तन्हा की बारी आ गई

चुनाँचे ! हजरत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने तमाम कुन्बा व ख़ानदान और अज़ीज़ो अक़ारिब और अअवान व अन्सार को राहे ख़ुदा में कुरबान करने के बाद मैदाने कार ज़ार में जाने का इरादा फ़रमाते हैं और ख़ेमा अहले बैत में तशरीफ़ ले जाते हैं तो क्या देखते हैं कि आबिद बीमार हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बीमार और कमज़ोरी के बावजूद नेज़ा लिये हुए इमामे पाक की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं बाबा जान ! पहले हमें मैदाने कार ज़ार में ज़ाने और अपनी जान को कुरबान करने की इजाज़त दीजिये। मेरे होते हुए आप शहीद हो जाएं यह नहीं हो सकता। हज़रत इमामे पाक ने अपने नूरे नज़र हज़रत ज़ैनुल आबेदीन को अपनी आग़ोशे महब्बत में लिया। प्यार किया और फ़रमाया बेटा ! अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया है। अभी तो तुम को अपनी माओं और बहनों की निगेहदाश्त करनी है और उन बे कसाने अहले बैत को वतन तक पहुँचाना है। मेरे प्यारे बेटे अल्लाह तआला तुम ही से मेरी नस्ल और हुसैनी सादात का सिलसिला जारी फ़रमाएगा। देखो सब्र व शुक्र से रहना और राहे हक़ में आने वाली हर तकलीफ़ व मुसीबत को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करना हर हालत में नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करना। बेटा मसाइबो आलाम सहते हुए जब कभी मदीना मुनव्वरा पहुँचो तो सब से पहले नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम के रोज़ए अनवर पर जाना और नाना जान को मेरा सलाम कहना। सारा आँखों देखा हाल सुनाना फिर मेरी अम्मी जान हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा की क़ब्र पर जाना और उन को भी मेरा सलाम कहना फिर मेरे भाई हसने मुज्तबा को मेरा सलाम कहना। मेरे प्यारे बेटे जैनुल आबेदीन मेरे बाद तुम ही मेरे जानशीन हो और इमामे पाक ने अपनी दस्तारे मुबारक उतार कर हज़रत इमाम जैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सर पर रख दी और उस साबिर व आबिद बेटे को फ़र्शे अलालत पर लिटा दिया।

अब इमाम पाक ने उस सन्दूक़ को खोला जिस में तमाम तबर्रुकात रखे हुए थे कुबाए मिसरी ज़ेबे तन फ़रमाई। अपने नाना जान महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अमामा शरीफ़ सर पर बांधा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ढाल पुश्त पर रखी अपने बिरादरे अकबर हज़रत इमाम हसने मुज्तबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पटका अपनी कमर पर बाँधा अपने बाप हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तलवार ज़ुल फ़िक़ार हिमाइल की। शहीदों के सरदार हज़रत इमामे पाक सब कुछ राहे हक़ में कुरबान करने के बाद अब अपनी जाने अज़ीज़ को कुरबान करने के लिये तय्यार हो गए।बीबियों ने जब इस मन्ज़र को देखा तो उन पर बेकसी की इन्तिहा हो गई। चेहरों के रंग उड़ गए और आँखों से आंसुओं के मोती टपकने लगे। हज़रत ज़ैनब ने रोते हुए कहा बाबा जान! कहाँ जा रहे हो? इस जंगल में हमें किस के सहारे छोड़ कर जा रहे हो जो दरिन्दे नन्हे अलिये असग़र पर रहम नहीं खाए। वह सफ़्फ़ाक ज़ालिम हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे। हज़रत इमामे पाक ने फ़रमाया अल्लाह तआला तुम लोगों का हाफ़िज़ो निगेहबान है आप ने सब को सब्र व रज़ा की तलक़ीन फ़रमाई और मरज़िये मौला पर साबिर व शाकिर रहने की वसियत की और अपना आख़री दीदार दिखा कर फ़रमाया, तुम सब को मेरा आख़री सलाम हो और घोड़े पर सवार हो गए।

फ़ातिमा के लाडले का आख़री दीदार है
हश्र का हंगामा बरपा है म्याने अहले बैत

और इमामे पाक मैदाने करबला में यज़ीदी अन्धेरों में हक़ व सदाक़त का आफ़ताब बनकर चमके और अपनी ज़ाती व नसबी फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल एक रज्ज़ पढ़ा फिर फ़रमाया, ऐ यज़ीदियो! कान खोलकर सुन लो ताकि क़ियामत के दिन तुम बहाना न बना सको कि हमें मालूम नहीं था कि हुसैन कौन थे।

तुम जिस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कलमा पढ़ते हो उसी रसूल का फ़रमान है कि हसन व हुसैन मेरे दोनों नवासे जन्नती जवानों के सरदार हैं। उसी रसूल का इरशादे पाक है कि जिसने हसन व हुसैन से दुश्मनी की उसने मुझसे दुश्मनी की और जिसने मुझसे दुश्मनी की उसने अल्लाह तआला से दुश्मनी की। तो ऐ यज़ीदियो! अल्लाह तआला से डरो मेरी दुश्मनी से तौबह कर लो, वर्ना अल्लाह व रसूल को क्या मुंह दिखाओगे और मेरे ख़ूने नाहक़ का तुम्हारे पास क्या जवाब होगा। मैं नवासए रसूल इब्ने

बतूल और अली शेरे ख़ुदा का बेटा हुसैन हूँ।

हज़रत इमामे पाक की तक़रीर का उन बद बख़्तों पर कुछ असर न हुआ बल्कि यज़ीदियो ने कहा, आप या तो यज़ीद की बैअत कर लें वर्ना जंग के लिये तैय्यार हो जाएं। अब हज़रत इमामे पाक बीस हज़ार यज़ीदियों की फ़ौज के सामने खड़े होकर फ़रमा रहे थे कि अपने बहादुरों को मेरे मुक़ाबले के लिये भेजते जाओ।

चुनाँचे मशहूर बहादुर तमीम बिन क़हतबह और जाबिर बिन काहिर और बद्र बिन सुहैल यमनी जैसे नामवर जंगजूं हज़रत इमामे पाक के मुक़ाबले के लिये यके बाद दीगरे आते रहे और इमामे पाक ने उन सब को वासिले जहन्नम कर दिया। ग़रज़ यह कि इमामे पाक ने दुश्मनों की लाश का अम्बार लगा दिया दुश्मनों के लश्कर में शोर मच गया कि जंग का यह अन्दाज़ रहा तो हमारी फ़ौज का एक सिपाही बचकर नहीं जा सकता।

लिहाज़ा अब मौक़ा मत दो और चारों तरफ़ से घेर कर यक बारगी हमला कर दो। इब्ने सअ़द ने हुक्म दिया कि चारों तरफ़ से तीरों की बारिश कर दो। यज़ीदी फ़ौज ने आपको चारों तरफ़ से घेर लिया और हज़ारों तीर की बारिश शुरू हो गई। आपका घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उसमें कुव्वत व हिम्मत न रही, नाचार हज़रत इमामे पाक को एक जगह ठहरना पड़ा। अब हर तरफ़ से तीर आ रहे थे और इमामे पाक का तने अक़दस ज़ख़्मी हो रहा था, ज़ालिमों ने आपके नूरानी जिस्म को ज़ख़्मों से पारा पारा और लहु लुहान कर दिया।

बे वफ़ा कूफ़ियों और नापाक यज़ीदियों ने नवासए रसूल फ़रज़न्दे बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मेहमान बनाकर बुलाया और उनके साथ यह सुलूक किया। यहाँ तक कि ज़हर में बुझा हुआ एक तीर आपकी उस नूरानी पेशानी पर आकर लगा जिसे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बेशुमार बार चुमा था, तीर लगते ही नूरानी चेहरे से ख़ून का फ़व्वारा जारी हो गया। इमामे पाक ग़श खाकर घोड़े की ज़ीन से फ़र्शे ज़मीन पर आ गए, उसके बाद ज़ालिमों ने नेज़ों और तलवारों से हमला किया। जहन्नमी सिनान ने एक ऐसा नेज़ा मारा जो तने नूर के पार हो गया। तीर और नेज़ा और तलवारों के बहत्तर ज़ख़्म खाने के बाद आपके सीनए अतहर पर शिमर मलऊन सवार हो गया। हज़रत इमामे पाक ने फ़रमाया कि ऐ ज़ालिम! आज जुमा मुबारका का दिन है और सूरज ढल गया है, यह वक़्त है कि मेरे नाना जान की उम्मत नमाज़े जुमा अदा कर रही होगी और मिम्बरों पर मेरे नाना जान का ख़ुत्बा पढ़ा जा रहा होगा। ऐ शिमर मलऊन तू थोड़ी देर के लिये मेरे सीने से उतर जाता कि मैं इस हाल में भी सज्दा कर लूँ और नमाज़ अदा कर लूँ।

चुनाँचे हज़रत इमामे पाक ने नमाज़ शुरू की और अपनी ज़िन्दगी के आख़री सज्दे में तशरीफ़ ले गए कि शिमर मरदूद ने ऐसी तलवार मारी कि इमामे पाक का सरे अनवर जिस्मे नूर से अलग हो गया। इसी तरह तीर और नेज़ा और तलवारों के बहत्तर ज़ख़्म खाने के बाद छप्पन साल, पाँच माह, पाँच दिन की उम्र में जुमा मुबारका के दिन मुहर्रम शरीफ़ की 10 तारीख़ सन् 61 हि. मुताबिक़ 680 ई. को इमामे पाक शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन O

ऐ ईमान वालो ! आह सद आह इस सदमए जानलेवा से दिल घायल, क़ल्ब मजरूह, जिस्म लरज़ा बरन्दाम और आँखें अश्कबार हैं अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस।

यह इनायतों की जज़ा मिली, यह हिदायतों का सिला मिला
जो चिराग़ नूरे नबी का था उसे करबला में बुझा दिया
चमन आप अपना लुटा गए कि बहारे दीने खुदा रहे
न जमा जो रंग बहार से तो लहू भी अपना मिला दिया

और हिन्द के राजा मेरे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

शाह हस्त हुसैन बादशाह हस्त हुसैन
दीन हस्त हुसैन दीन पनाह हस्त हुसैन
सरदाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए लाइलाहा हस्त हुसैन

इमामे पाक ज़िन्दा हैं और यज़ीद नापाक मर गया

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद
ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर
अल्लाह अल्लाह मौत को किसने मसीहा कर दिया

आज तक इस्लाम को है फ़ख़्र तेरी ज़ात पर
जान दी बेअत न की लेकिन यज़ीदी हाथ पर
शरीके ग़म नहीं कोई शरीके जश्न हज़ार
हुसैन आज भी तन्हा है करबला की तरह

ऐ ईमान वालो ! दुनिया की अजीबो ग़रीब दास्तान है, इस दुनिया में क्या क्या न हुआ, कितनी बार ग़मों की मजलिसें बरपा हुई, कहीं पर तलवारों की बारिश हो रही है तो कहीं पर बम व बारूद बरसाए जा रहे हैं, कहीं आग के अंगारों पर लिटाया जा रहा है, कहीं इन्सानी जिस्मों पर घोड़े दौड़ाए जा रहे हैं। यह सब कुछ हुआ और होता रहता है। कोई यतीम होकर खस्ता हाली में रन्जो ग़म के साथ दिन काटता है, किसी की मौत पर सिर्फ़ बाज़ार बन्द किये जाते हैं, किसी की मौत पर पूरे सूबे में सोग बनाया जाता है और किसी की मौत पर पूरा मुल्क रन्जो ग़म में डूब जाता है। लेकिन याद रखिये। हर शख़्स और हर ग़म के लिये कोई न कोई इख़्तिताम ज़रूरी है, कभी न कभी वह ख़त्म हो ही जाता है और दुनिया उसको ऐसा फ़रामोश करती है कि उसका नामो निशान तक नहीं मिलता। सबसे बड़ा मारका और अज़ीम जंग वही है जिसका सदमा आम हो हर शहर, हर सूबा, हर मुल्क बल्कि पूरी दुनिया में उसके रन्जो ग़म का एहसास किया जाए, सुनने वाले के दिल पर जो ज़ख़्म पैदा हो वह रहती दुनिया तक

मुन्दमिल न हो सके। सारा आलम उस दास्ताने रन्जो अलम को सुनकर बेचैन व बे करार हो जाए और क़ियामत तक आहो ज़ारी और अश्क बारी का सिलसिला जारी व सारी रहे।

ज़मीने करबो बला पर राहे खुदा में हज़रत इमाम हुसैन के साथ रन्जो अलम का एक ऐसा ही वाक़िआ नमूदार हुआ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नवासे, अली के लाडले, सय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के प्यारे बेटे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके जां निसार साथियों ने हक़ व सच की मुहाफ़िज़त के लिये जो दर्द व ग़म की बे मिसाल कुरबानी पेश की हैं, दुनिया वाले उन नुक़ूशे वफ़ा को मिटाने से आजिज व क़ासिर हैं। कितनी बार कुछ नापाक तबीअत वालों ने बेजा कोशिशें कीं मगर ख़ूने शहीदां का रंगे वफ़ा बढ़ता ही गया, ज़माने ने कितने पलटे खाए, कातिलो यज़ीदियों की नस्लें तक नेस्तो नाबूद हो गईं, उनके तख़्तो ताज के झूटे दावे और हुकूमत के घमण्ड व गुरूर कब के कब ख़ाक में मिल गए और वह ज़ालिम बे नामो निशान हो गए, यह है हक़ व सच से लड़ने और मुक़ाबला करने का दुनिया ही में बदला और अभी आख़िरत का दर्दनाक अज़ाब बाक़ी है। मगर शहीदाने वफ़ा की कुरबानियाँ आज भी तमाम आलम की आँखों को रुला रही हैं और उनके दिलों को तड़पा कर उनसे महब्बत व अक़ीदत का ख़राज वसूल कर रही हैं, दुनिया सोगवार है, जहाँ मातम कर रहा है हर तबीअत ग़म से पज़मुरदा, हर दिल दर्द से अफ़सुरदा है, वह कौन सा बे दर्द है जिसका सीना ग़मे हुसैन से पाश पाश नहीं हो गया, वह कौन सा बे रहम है जिसने ग़मे हुसैन में अपने दिल को चाक नहीं कर डाला, वह कौन सा बे ग़ैरत है जिसके दिल में यादे हुसैन नहीं है।

इस राज़ से वाक़िफ़ हैं ज़माने वाले
ज़िन्दा हैं मुहम्मद के घराने वाले
मिट गए मिटते हैं मिट जाएंगे आख़िर
शब्बीर तेरा नाम मिटाने वाले

न यज़ीद का वह सितम रहा न वह ज़ुल्म इब्ने ज़ियाद का
जो रहा तो नाम हुसैन का जिसे ज़िन्दा रखती है करबला

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद का वाक़िआ

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब शहीद हो गए तो यज़ीदी लश्कर ने खेमा-ए-अहले बैत का सारा सामान लूट लिया और ख़ेमे को जला डाला और अपने मरे हुए फ़ोजियों को दफ़्न किया और तमाम शोहदाए किराम का सर काटकर उनके मुक़द्दस लाशों पर घोड़े दौड़ाए जिससे उनकी हड्डियाँ चकना चूर हो गईं और उनकी लाशों को बे गोरो कफ़न छोड़ दिया और तमाम शोहदाए किराम के सरों को नेज़ों पर चढ़ाकर करबला से कूफ़ा और दमिश्क़ तक गश्त कराया। फिर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने कूफ़ा के दारुल हुकूमत को

आरास्ता किया और दरबारे आम मुनअक़िद करके हज़रत इमामे पाक के सरे अनवर को अपने तख़्त के नीचे रखा और बे अदबी की। फिर शिमर मरदूद के साथ उन मुक़द्दस सरों को यज़ीद नापाक के पास दमिश्क़ भेज दिया। यज़ीद नापाक ने सरे मुबारक और अहले बैते अत्हार को हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ मदीना मुनव्वरा रवाना किया और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरे अनवर हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पहलू में या हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पहलू में मदफ़ून हुआ। (सवानेह करबला, स. 131)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सख़्त सदमा

इस हादसए अज़ीमा से महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जो सख़्त सदमा हुआ वह बयान से बाहर है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि एक रोज़ दोपहर को मैं ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदारे पुर बहार से मुशर्रफ़ हुआ और मैंने देखा कि हुज़ूर के बाले मुबारक चेहरए पुर नूर पर बिखरे हुए हैं और दस्ते मुबारक में एक ख़ून से भरी हुई बोतल है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप पर मेरी जान फ़िदा, यह बोतल कैसी है ? और इस क़दर रन्जो मलाल क्यों है ?

तो आपने इरशाद फ़रमाया कि यह मेरे प्यारे नवासे हुसैन और उनके जां निसार साथियों का ख़ून है जिसको मैं आज सुबह से उठा रहा हूँ।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उस तारीख़ और वक़्त को याद रखा और जब चन्द दिनों के बाद खबर आई तो मालूम हुआ कि यही वह वक़्त था कि हज़रत इमाम हुसैन शहीद किये गए थे। (बैहक़ी, नूरुल अबसार, स. 120)

दिन में अन्धेरा और ख़ून की बारिश : रिवायत है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दिन आपका मुक़द्दस ख़ून ज़मीन पर गिरते ही दिन में हर तरफ़ अन्धेरा छा गया और तीन दिन तक मुकम्मल बग़ैर बादल के धूप नज़र नहीं आई और हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा नज़र आता था। आसमान से ख़ून की बारिश हुई और उस दिन बैतुल मुक़द्दस में जो पत्थर उठाया जाता था उसके नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता था और सारी फ़ज़ा पर रन्ज और उदासी के आसार नमूदार नज़र आते थे। (बैहक़ी)

यज़ीद नापाक की हलाकत : हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद यज़ीद नापाक बिल्कुल ही बे लगाम हो गया और उसके ज़ुल्म व शर से ज़मीन कांप उठी। ज़िना, सूद और शराब व कबाब का हर तरफ़ बाज़ार गर्म हो गया। नमाज़ व रोज़ा और हज व ज़कात की पाबन्दियाँ ख़त्म हो गईं और शआइरे इस्लाम की अलल ऐलान बे हुरमती

होने लगी। यजीद नापाक की बुराई और सरकशी इस हद तक बढ़ी की सन् 63 हि. में यज़ीद फिरओन ने मुस्लिम बिन अक़बा खबीस को बारह या बीस हज़ार का लश्कर देकर मदीना मुनव्वरा पर हमला करने का हुक्म दिया और उस यज़ीदी लश्कर ने रसूलुल्लाह के दयार और मदीना मुनव्वरा के कूचा व बाज़ार में वे अदबी और बद तमीज़ी का तूफ़ान बरपा कर दिया और यजीदी लश्कर ने मदीना मुनव्वरा में सात सौ सहाबा को इन्तिहाई बे दर्दी के साथ शहीद किया और दूसरे दस हजार मुसलमानों को क़त्ल किया और यज़ीदी फ़ौज ने मस्जिदे नबवी शरीफ के सुतूनों में घोड़े बाँधे और मदीना मुनव्वरा की पाक औरतों के साथ बद तमीज़ियाँ कीं कि उनके तसव्वुर से भी जिस्म का रोंगटा खड़ा हो जाता है और बदन कांपने लगता है। फिर यजीदी लश्कर ने मक्का मुकर्रमा पर हमला किया, काबा-ए-मुअज़्ज़मा पर पत्थर बरसाए और हरमे मोहतरम में नजासत फेंकी फिर काबए मुअज़्ज़मा में आग लगा दी जिससे ग़िलाफ़ काबा और काबे की छत जल गई और काबा के तमाम तबर्रुकात को जला डाला।

उन्हीं तबर्रुकात में हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फ़िदया में ज़िबह किये हुए दुम्बा का वह सींग था जो जल गया। काबा मुअज़्ज़मा कई दिनों तक बे ग़िलाफ़ रहा और हरमे मोहतरम के रहने वाले तमाम मुसलमान सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे, आख़िरकार यज़ीद नापाक अल्लाह तआला के क़हरो ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुआ और तीन साल सात महीने तक हुकूमत करने के बाद पन्द्रह रबीउल अव्वल सन् 64 हि. को जिस दिन उसके हुक्म से कअबए मुअज़्ज़मा में आग लगाई, 39 साल की उम्र में उनके शाम के शहर हमस में क़िस्म क़िस्म के मरज़ में मुब्तला होकर मर गया और हलाक हो गया।

यज़ीदी फौज को जब अपने गुमराह और नापाक अमीर यज़ीद पलीद की मौत व हलाकत का पता चला तो यजीदी लश्कर ज़लीलो ख़्वार होकर मक्का मुकर्रमा से फ़रार होने लगा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हरमे मोहतरम के रहने वालों ने घेर लिया और उनको क़त्ल किया। इस तरह यज़ीद नापाक और उसकी फ़ौज ज़िल्लतो रुसवाई के साथ हलाक हो गई।

न यज़ीद का वह सितम रहा न ज़ुल्म इब्ने ज़ियाद का
जो रहा तो नाम हुसैन का जिसे ज़िन्दा रखती है करबला

एक लाख चालीस हज़ार का क़त्ल : हाकिमे मुहद्दिस की रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर वही नाज़िल की कि यहूदियों ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को क़त्ल किया तो उनके एक ख़ून के बदले सत्तर हज़ार यहूदी क़त्ल हुए और आपके नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक ख़ून के बदले सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार यानी एक लाख चालीस हज़ार शामी और कूफ़ी क़त्ल होंगे। चुनाँचे अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ और मुख़्तार सक़फ़ी ने सत्तर हज़ार शामी और कूफ़ी को क़त्ल किया फिर अब्दुल्लाह बिन सफ़ाह ने सत्तर हजार शामी और कूफ़ी को क़त्ल किया।

ऐ ईमान वालो ! आज तक इराक़ की ज़मीन संभल न सकी, वह सर ज़मीन जिस पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आपके जां निसार साथियों का ख़ून बहाया गया है, वह नाहक़ खून हमेशा अपना असर दिखाता रहेगा और क़ियामत तक मुल्क इराक़ सुकून व इत्मीनान की दौलत से मेहरूम ही रहेगा।

ख़बरदार ! नाहक़ ख़ून से और अल्लाह तआला के बन्दों के साथ ज़ुल्म व ज़ियादती से परहेज़ लाज़िम है वर्ना यज़ीदियों के बुरे अन्जान की तरह बुरा ही अन्जाम होगा। अल्लाह तआला ज़ुल्म के अज़ीम गुनाह से महफ़ूज़ रखे और अपने अम्नो अमान के साया में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं कि जितने लोग भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले में आए और आपके क़त्ल में शरीक हुए या आपकी शहादत से राज़ी और खुश हुए उनमें से कोई भी ऐसा न था जिसने दुनिया ही में अज़ाबे इलाही न देखा और सज़ा न पाई हो। उनमें से बाज़ तो बुरी तरह मारे गए और बाज़ अन्धे और रू स्याह हो गए, बाज़ मबरूस और कोढ़ी हो गए और बाज़ सख़्त इबरत नाक बलाओं और बीमारियों में मुब्तला होकर हलाक हुए।

मोहतरम बुज़ुर्गों और दोस्तो ! फ़रज़न्दे रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आपके जां निसार साथियों की दर्दनाक लरज़ा खेज़ मज़लूमाना शहादत और नापाक व बद बख़्त यज़ीद पलीद और उसके ख़बीस व शरीर लश्कर के जोरो जफ़ा, ज़ुल्मो सितम और स्याह कारियों के वाक़ेआत मोअतबर किताबों के हवाला जात के साथ ज़िक्र किये गए। अद्लो इन्साफ़ की आँखों ने देख लिया और अक़्लो शुऊर रखने वालों ने जान लिया होगा कि तारीख़े इन्सानियत में यह वाहिद वाक़िआ है जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। खुद को मुसलमान कहलाने वालों में अपने ही नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल फ़रमाने के सिर्फ़ पचास साल गुज़र जाने के बाद अपने रसूल ही की ख़ास औलाद के साथ जिस दरिन्दगी और ज़ुल्मो सितम का मुज़ाहरा किया, रहती दुनिया तक अहले हक़ उन यज़ीदियों पर लअनत व मलामत करते रहेंगे यहाँ तक कि नामे यज़ीद एक गाली और बुराई बनकर रह गया और आज यज़ीद पलीद के किसी हामी की भी यह जुरअत नहीं कि वह अपने बेटों का नाम यज़ीद पलीद रखे, इसके बर अक्स प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूरे ऐन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी इस्मे गिरामी अद्लो इन्साफ़ और महासिन व ख़ूबी का अलम बन गया और नामे हुसैन अलमबरदारे इस्लाम और दीनो शरीअत का पासबान बन गया और नेकी व ख़ूबी का निशान हो गया और आज दुनिया में एक दो नहीं बल्कि लाखों लोगों के नाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नामे पाक की निस्बत से मन्सूब हैं।

हश्र तक ज़िन्दा रहे तेरा नाम ऐ इब्ने रसूल
कर गया है तू वह एहसान नोए इन्सानी के साथ

सब्रो रज़ा के पैकर हज़रत इमामे पाक ने रज़ाए इलाही का बलन्द मक़ाम हासिल किया, ईसारो कुरबानी और सब्रो रज़ा का वह मुज़ाहरा किया कि हुसैनियत, सरबलन्दियों और सरफ़राज़ियों का उनवान हो गई और नामे पाक हुसैन ईमान वालों के क़ल्बो जिगर के लिये क़रारे जान हो गया और महब्बते हुसैन जाने ईमान हो गई, आज लाखों गुलामाने हुसैन हैं।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शहीद होकर जो फ़तह व कामयाबी हासिल की और हक़ का बोल बोला किया उसने यज़ीदी और हर फ़ासिक़ व फ़ाजिर और ज़ालिम व जाबिर के फ़िस्क़ो फुजूर, ज़ुल्मो जब्र की राहें मस्दूद (बन्द) कर दीं और परचमे हक़ को हमेशा के लिये बलन्द कर दिया और अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत को बातिल व ज़ालिम के ख़िलाफ़ डट जाने और सब कुछ राहे खुदा में कुरबान कर देने का वह बे मिसाल जज़्बा अता कर दिया है जो क़ियामत तक हक़ वालों के लिये मीले राह व शम्ए राह बन गया है। इसी लिये दुनिया के हर गोशे और कोने से अपने प्यारे इमाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में सलामो रहमत के फूल भेजे और पेश किये जाते हैं।

सुल्ताने करबला को हमारा सलाम हो
जानाने मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो
वह भूक व प्यास वह फ़र्ज़ जिहादे हक़
सर चश्मए रज़ा को हमारा सलाम हो
उम्मत के वास्ते जो उठाई हंसी ख़ुशी
उस लज़्ज़ते जफ़ा को हमारा सलाम हो
अब्बास नाम दार हैं ज़ख़्मों से चूर चूर
उस पैकरे रज़ा को हमारा सलाम हो
अकबर से नो जवां भी रन में हुए शहीद
हम शक्ले मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो
होकर शहीद क़ौम की कश्ती तिरा गए
उम्मत के ना ख़ुदा को हमारा सलाम हो
नासिर विलाए शाह में कहते हैं बार बार
उम्मत के पेशवा को हमारा सलाम हो

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक और उसके हम नवाओं का क्या हश्र होगा जिन का कलमा पढ़ा उन्हीं के नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ अदावत व दुश्मनी की जो मिसाल क़ाइम की है तारीख़ में ऐसी बद तरीन मिसाल नहीं मिलती और न मिलेगी, फ़ैसला आप के हाथ में है कि यज़ीद नापाक जन्नती है या जहन्नमी ? अगर आप के सीने में ज़र्रा बराबर भी ईमान की रमक़ बाक़ी है तो आप का ईमान आप को यह कहने पर मजबूर कर देगा कि यज़ीद नापाक जहन्नमी और उस के तरफ़दार भी जहन्नमी हैं और आले

पाक मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं और आप से उल्फ़त व महब्बत रखने वाले भी जन्नती हैं।

सच फ़रमाया : उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी ने :

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मदह ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत
अहले बैते पाक से गुस्ताख़ियाँ बे बाकियाँ
लअ़नतुल्लाहि अलैकुम दुश्मनाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आदिल हैं

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं जो लोग कहते हैं कि यज़ीद अमीरुल मोमिनीन और अमीर की इत्तिबाअ़ व पैरवी लाज़िम होती है और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने अमीरुल मोमिनीन यज़ीद की बैअत से इनकार किया और बग़ावत करके गुनाह किया। (मआज़ल्लाह)

उन जाहिल, बे दीन यज़ीदियों में कुछ भी इल्म नहीं कि उस अमीर की इत्तिबाअ़ व पैरवी लाज़िम होती है जो नेक व सालेह और ईमानदार हो और यज़ीद पलीद वह शख़्स है जिस को तमाम बुज़ुर्गों ने बिल इत्तिफ़ाक़ गन्दा, कमीना, शराबी, ज़ानी और नापाक कहा और बाज़ बुज़ुर्गों ने काफ़िर भी लिखा है ऐसे शख़्स को शहज़ादए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अमीरुल मोमिनीन कैसे तस्लीम कर लेते। इस लिये अपनी क़ुरबानी दीं (मुलख़्ख़सन) (तक्मीलुल ईमान, स. 97)

और इसी तरह इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने भी लिखा है।

(शरह अक़ाइद, स. 110)

हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अली क़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बग़ावत की तो यह अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक बातिल है और इस तरह की बोली ख़ारजियों, यज़ीदियों की गढ़ी हुई ख़ुराफ़ात है जो अहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हैं। (शरह फ़िक़ह अकबर, स. 87)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ اِمَارَةِ الصِّبْيَانِ قَالُوْا وَمَا اِمَارَةُ الصِّبْيَانِ قَالَ اِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ هَلَكْتُمْ اَیْ فِیْ دِیْنِکُمْ وَاِنْ عَصَیْتُمُوْهُمْ اَهْلَکُوْکُمْ اَیْ فِیْ دُنْیَاکُمْ بِاِزْهَاقِ النَّفْسِ اَوْ بِاِذْهَابِ الْمَالِ اَوْ بِهِمَا

यानी मैं लड़कों की इमारत (हुकूमत) से पनाह मांगता हूँ, सहाबा ने अर्ज़ किया लड़कों की इमारत कैसी होगी ? फ़रमाया अगर तुम उनकी इताअत करोगे तो (दीन के मुआमले में)

हलाक हो जाओगे और अगर तुम उनकी ना फ़रमानी करोगे तो वह तुम्हें (तुम्हारी दुनिया के बारे में) जान लेकर या माल लेकर या दोनों लेकर हलाक कर देंगे। (फतहुल बारी, जि. 13, स. 8)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना है, फ़रमाया:

يَكُوْنُ خَلْفٌ مِّنْ بَعْدِ سِتِّيْنَ سَنَةً أَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا

यानी वह ना खलफ़ 60 हि. के बाद होंगे जो नमाज़ों को ज़ाए करेंगे और शहवात (नफ़्सानी ख़्वाहिशें) की पैरवी करेंगे तो वह अनक़रीब ग़य्य (जहन्नम की एक खतरनाक वादी) मे डाले जाएँगे। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 8, स. 230)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

تَعَوَّذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ سَنَةِ سِتِّيْنَ وَمِنْ اِمَارَةِ الصِّبْيَانِ यानी 60 हि. के साल और लड़कों की इमारत व हुकूमत से अल्लाह की पनाह मांगो। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 8, स. 231)

ऐ ईमान वालो! इन अहादीस से वाज़ेह तौर पर साबित हो गया कि उन बद अक़्ल और ज़ालिम लड़कों की हुकूमत व इमारत सन् 60 हि. से शुरू होगी और यज़ीद नापाक सन् 60 हि. ही में तख़्त नशीन हुआ और उन आवारा लड़कों की हुकूमत व इमारत का यह आलम होगा कि जो शख़्स उनकी इताअत व फ़रमांबरदारी करेगा उसका दीन तबाह व बरबाद हो जाएगा और जो शख़्स उनकी इताअत नहीं करेगा तो उसके जान व माल की तबाही होगी।

हज़रत कअब बिन उजरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया:

ऐ कअब बिन उजरह! मैं तुझको बे अक़्लों की हुकूमत से अल्लाह की पनाह में देता हूँ। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम वह बे अक़्लों की हुकूमत क्या है? फ़रमाया अन क़रीब ऐसे ऐसे उमरा (हाकिम) होंगे कि बात करेंगे तो झूट बोलेंगे और अमल करेंगे तो ज़ुल्म करेंगे।

فَمَنْ جَآءَهُمْ فَصَدَّقَهُمْ بِكِذْبِهِمْ وَاَعَانَهُمْ عَلٰى ظُلْمِهِمْ فَلَيْسَ مِنِّيْ اِلٰى اٰخِرِ الْحَدِيْث......

पस जो उनके पास आकर उनके झूट की तस्दीक़ करेगा और उनके ज़ुल्म पर उनकी मदद करेगा तो वह शख़्स मुझसे नहीं और मैं उससे नहीं।

(और फिर यह फ़रमाया) और न वह शख़्स कल (क़ियामत के दिन) मेरे हौज़े कौसर पर आ सकेगा। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 477)

ऐ ईमान वालो! हज़रत कअब बिन उजरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत कर्दा हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि ज़ालिम और झूटे अमीर व हाकिम की इताअत व पैरवी करने से महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मना फ़रमाया है।

और यज़ीद नापाक की बद किरदारियाँ और उसका झूट व ज़ुल्म ज़ाहिर हो चुका था

इसकी वजह से शहजादए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये उसकी बैअत व इताअत से इन्कार फर्ज था और यह भी मालूम था कि यजीद नापाक की बैअत से इनकार का नतीजा आसान न होगा और उस इनकार के नतीजे में अद्लो इन्साफ के बादशाह ने घर, कुन्बा, अहबाब सबको कुरबान किया और खुद भी कुरबान हो गए लेकिन उम्मत का सौदा नहीं किया बल्कि यज़ीद नापाक की खबासत व पलीदी से उम्मत को बचा लिया और अद्लो इन्साफ़ का परचम बलन्द फ़रमाया और साबित कर दिया कि यज़ीद नापाक व जालिम है अमीरुल मोमिनीन नहीं है।

कुतुबे अहादीस में सबसे मुस्तनद किताब सही बुखारी शरीफ़ में एक बाब है :

بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ هَلَاكُ اُمَّتِيْ عَلٰى يَدَيْ اُغَيْلِمَةٍ سُفَهَاءَ

यानी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ौल कि मेरी उम्मत की हलाकत बे अक्ल (आवारा) लड़कों के हाथ से होगी।

और इसी बाब में यह हदीस है :

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

هَلَكَةُ اُمَّتِيْ عَلٰى اَيْدِيْ غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ فَقَالَ مَرْوَانُ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ غِلْمَةً

यानी मेरी उम्मत की हलाकत कुरैश के चन्द (आवारा) लड़कों के हाथों से होगी तो यह सुनकर मरवान ने कहा, उन लड़कों पर अल्लाह की लअनत हो।

فَقَالَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ لَوْ شِئْتُ اَنْ اَقُوْلَ بَنِيْ فُلَانٍ وَبَنِيْ فُلَانٍ لَفَعَلْتُ

तो अबू हुरैरह ने फ़रमाया अगर मैं चाहूँ तो बता दूँ कि फ़लां इब्ने फ़लां और फ़लां इब्ने फ़लां हैं। (बुखारी शरीफ़, जि. 2, स. 1046)

इसी हदीस बुखारी की शरह में जलीलुल क़द्र मुहद्दिस अल्लामा हाफ़िज़ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तर्जमा हदीस : मैं कहता हूँ कि सबी और ग़लीम (लड़का) का लफ़्ज़ तस्ग़ीर के साथ उस पर बोला जाता है जो अक़्ल व तदबीर और दीन में कमज़ोर और ज़ईफ़ हो। अगर चेह वह जवान हो और यहाँ यही मुराद है। क्यों कि खुलफ़ाए बनू उमय्या में कोई ऐसा न था जो उम्र के हिसाब से ना बालिग़ होता। (शरह बुखारी, फ़तहुल बारी, जि. 13, स. 7)

यज़ीद नापाक के हामियों से सवाल

कुरैश के वह चन्द लड़के जिन्हों ने उम्मत के इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद का शीराज़ा बिखेर दिया और उम्मत की हलाकत व बरबादी का सबब बने वह आवारा लड़के कौन थे ? (जिनकी हुकूमत थी) अगर मालूम नहीं है तो यज़ीद की तरफ़ दारी से तौबह कर लो और ग़ैब की खबर बताने वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान मुलाहज़ा हो

हज़रत अबू उबैदह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا يَزَالُ أَمْرُ أُمَّتِي قَائِمًا بِالْقِسْطِ حَتَّى يَكُونَ أَوَّلَ مَنْ يَثْلِمُهُ رَجُلٌ مِّنْ بَنِي أُمَيَّةَ يُقَالُ لَهُ يَزِيدُ

यानी मेरी उम्मत का अम्र (हुकूमत) अद्ल के साथ क़ाइम रहेगा यहाँ तक कि पहला शख़्स जो उसे तबाह करेगा वह बनी उमय्या में से होगा जिसको यज़ीद कहा जाएगा (यानी उसका नाम यज़ीद होगा)। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 8, स. 231, अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 219)

हज़रत अबू दर्दा रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना : أَوَّلُ مَنْ يُبَدِّلُ سُنَّتِي رَجُلٌ مِّنْ بَنِي أُمَيَّةَ يُقَالُ يَزِيدُ

फ़रमाते हैं कि पहला वह शख़्स जो मेरी सुन्नत को बदलेगा वह बनी उमय्या में से होगा जिसको यज़ीद कहा जाएगा। (यानी उसका नाम यज़ीद होगा। (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 219)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी इब्ने अबी शैबा की रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं :

कि मशहूर सहाबी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाज़ार में चलते हुए यानी अल्लाह तआला की बारगाह में यह अर्ज़ किया करते थे कि :

اَللّٰهُمَّ لَا تُدْرِكْنِي سَنَةُ سِتِّيْنَ وَلَا إِمَارَةُ الصِّبْيَانِ

यानी ऐ अल्लाह मुझे 60 हि. का साल और आवारा लड़कों की इमारत व हुकूमत न दे यानी उससे पहले मुझे मौत दे दे। (फतहुल बारी, जि. 13, स. 8)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि सन् 60 हि. में आवारा लड़कों की हुकूमत से पनाह मांगने का हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दिया था और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम था इसी लिये वह दुआ किया करते थे कि या अल्लाह मैं सन् 60 हि. की इब्तिदा और (आवारा) लड़कों की हुकूमत से तेरी पनाह मांगता हूँ।

अल्लाह तआला ने उसकी दुआ कुबूल फ़रमाई और उनको सन् 59 हि. में मौत दे दी और सन् 60 हि. में अमीर मुआविया का विसाल हुआ और यज़ीद की हुकूमत हुई और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जानते थे कि सन् 60 हि. में यज़ीद की हुकूमत होगी और यज़ीद के ना पसन्दीदा हालात को सादिक़ व मस्दूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बताने से हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जानते थे। इसी वजह से उन्होंने उस साल से अल्लाह की पनाह तलब की। (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 219)

हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी फ़रमाते हैं :

हदीस से ज़ाहिर है कि उन लड़कों में पहला लड़का साठ हिजरी में होगा। चुनाँचे वही हुआ क्योंकि यज़ीद बिन मुआविया 60 हिजरी ही में ख़लीफ़ा बना और 64 हि. तक बाक़ी रहा फिर मर गया। (फतहुल बारी, जि. 13, स. 8)

यही इमाम दूसरी जगह फ़रमाते हैं : कि उन (आवारा) लड़कों में पहला यज़ीद है क्यों कि यज़ीद (अपनी हुकूमत में) अकसर हालात में बुज़ुर्गों को बड़े बड़े शहरों की हुकूमत से हटाकर

उनकी जगह अपने रिश्तेदारों में से नो उम्र लड़कों को (ओहदों) पर मुकर्रर करता था।

(फतहुल बारी, जि. 13, स. 8)

अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी और अल्लामा करमानी ने भी उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, स. 180 व हाशिया बुखारी शरीफ़ में इसी तरह नक़ल किया है उन (आवारा) लड़कों में से पहला यज़ीद है।

और इमाम अल्लामा अली क़ारी ने मिरक़ात और शरह शिफ़ा, जि. 1, स. 694 में इसी तरह फ़रमाया है कि हदीस शरीफ़ में जो आवारा लड़कों की हुकूमत फ़रमाया गया है उससे मुराद यज़ीद बिन मुआविया है जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़त्ल कराया और मदीना मुनव्वरा की हुरमत को पामाल किया और अपने लश्कर के वास्ते मदीना मुनव्वरा की पाक बाज़ औरतों के साथ ज़िना तीन दिन के लिये जाइज़ कर दिया।

आशिके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत शाह अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन लड़कों को उनके नामों और उनकी शक्लो सूरत को पहचानते थे मगर डर और फ़साद की वजह से उनका नाम ज़ाहिर नहीं करते थे और मुराद यज़ीद बिन मुआविया और इब्ने ज़ियाद और दूसरे नौजवान हैं।

और फिर एक जगह फ़रमाते हैं कि क़बीला सक़ीफ़ में ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ हुआ जिसने एक लाख बीस हज़ार मुसलमानों को क़ैद करके क़त्ल किया और बनी हुनैफ़ा में मुसेलमा कज़्ज़ाब हुआ जिसने नुबुव्वत का झूटा दावा किया और बनी उमय्या में यज़ीद और इब्ने ज़ियाद जैसे ज़ालिम हुए जिन्होंने नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया और इब्ने ज़ियाद ने जो कुछ भी किया यज़ीद के हुक्म और उसकी रज़ा से किया। (अशअतुल लम्आत, जि. 2, स. 623)

ग़ौसुल अग़वास, फ़रदुल अफ़राद, कुतबुल अक़्ताब शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सुम्मा बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस बुज़ुर्ग इमाम के मुक़ल्लिद हैं वह हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद नापाक को काफ़िर कहते हैं और उस पर लअ़नत भेजना जाइज़ समझते हैं। चुनाँचे आपके साहबज़ादे हज़रत सालेह ने यज़ीद नापाक से दोस्ती रखने या उस पर लअ़नत करने के बारे में पूछा तो इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : يَابُنَيَّ وَهَلْ يَتَوَلّٰى يَزِيْدَ اَحَدٌ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَلِمَ لَا اَلْعَنُ

यानी ऐ मेरे बेटे ! कोई शख़्स अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाला ऐसा होगा जो यज़ीद से दोस्ती रखे और मैं उस पर क्यों न लअ़नत करूँ। (अस्सवाएकुल मुहरिक़ा, स. 220)

और आगे वजह भी लिखी है जिसका जी चाहे किताब का मुतालआ करले।

ऐ ईमान वालो ! मेरे पीर, पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के इमाम हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ौल से ज़ाहिर हो गया कि कोई मोमिन यज़ीद से दोस्ती नहीं रखेगा बल्कि उस ख़बीस, पलीद यज़ीद नापाक पर लअ़नत भेजेगा।

हज़रत अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इमाम इब्ने हमाम का कौल नक़ल फ़रमाते हैं कि इमाम इब्ने हमाम ने फ़रमाया, बाज़ ने यज़ीद नापाक को काफ़िर कहा, इस लिये कि उससे ऐसी बातें ज़ाहिर हुईं जो यज़ीद के कुफ़्र पर दलालत करती हैं। मसलन शराब को हलाल करना और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आपके साथियों के क़त्ल के बाद यह कहना कि मैंने (उनसे) बदला लिया है, अपने बुज़ुर्गों और सरदारों के क़त्ल का जो इन्होंने (मैदान) बद्र में किये थे, या ऐसी ही और बातें शायद इसी वजह से इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद को काफ़िर कहते हैं कि उनके नज़दीक उसकी इस बात की नक़्ल साबित होगी। (शरह फ़िक़ह अकबर, स. 88)

शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं :

यज़ीद नापाक गुमराह और गुमराह गर था और गुमराही की तरफ़ बुलाने वाला शाम में यज़ीद था और इराक़ में मुख़्तार था। (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा, जि. 2, स. 507)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादात और सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के अक़वाल और अइम्मए किराम व मुहद्देसीने इज़ाम के फ़रमूदात जो किताबों में मौजूद हैं उससे साबित हो गया कि यज़ीद नापाक सुन्नत को बदलने वाला बे अक़्ल, झूटा, ज़ालिम था मज़ीद इत्मीनान व यक़ीन के लिये हवाला मुलाहज़ा फ़रमाएं :

हज़रत इमाम बुख़ारी ने सही बुख़ारी, जि. 2, स. 1046 और हज़रत इमाम हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अल बिदाया वन्निहाया, जि. 8, स. 231 पर और हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़तहुल बारी, जि. 13, स. 7 पर और अल्लामा इमाम इब्ने हजर हेतमी मक्की ने अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 219, और अल्लामा अली मुत्तक़ी ने कन्ज़ुल उम्माल, जि. 6, स. 45 पर और अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी और अल्लामा करमानी अलैहिमर्रहमा ने उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, स. 80 पर, हज़रत इमाम अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहि अलैह मिरक़ात और शरह शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 694, और शरह फ़िक़ह अकबर स. 88 पर, अल्लामा अली इब्ने अहमद रहमतुल्लाहि अलैह सिराजे मुनीर शरह जामेअ़ सग़ीर, जि. 3, स. 296 पर, अल्लामा सादुद्दीन तफ़्ताज़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह शरह अक़ाइद, स. 102 पर, और हज़रत अल्लामा शैख़ मुहम्मद बिन अलस्सबान ने अस्आफ़ुर्राग़िबीन, स. 210 पर, इमाम अहमद कस्तलानी शारेह सही बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अस्सावी जि. 5, स. 101 पर, और अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 80 पर, और साहिबे रूहानियत बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह मसनवी शरीफ़ में, और शाफ़इयों के बुज़ुर्ग इमाम व फ़क़ीह हज़रत अल्लामा अल्किया अल हरासी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ह्यातुल हैवान, जि. 2, स. 225 पर आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

तकमीलुल ईमान, स. 97 और अशअतुल लमआत, जि. 2, स. 623 पर, और इमामे रब्बानी हजरत मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मक्तूबात शरीफ़, स. 54 पर और मौलाना अब्दुल हय्य लखनवी मजमूउल फतावा, जि. 3, स. 8 पर, और हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज मुहद्दिसे देहलवी सिर्रुश्शहादतैन, स. 12 और फ़तावा अज़ीज़िया, जि. 1, स. 252 पर, और हज़रत अबू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी लिखी हुई मसनवी, स. 6 पर, और ख़ातिमुल मुहक़्क़ेक़ीन मुफ़्तिये बग़दाद अल्लामा अबुल फ़ज़्ल शहाबुद्दीन आलोसी बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तफ़सीरे रूहुल मआनी, जि. 26, स. 66 पर और हज़रत अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तफ़सीरे मज़हरी, जि. 5, स. 21 पर, और अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी अश्शरफ़ुल मूयद, स. 49 पर और अल्लामा इब्ने ख़ुलदून मुक़द्दमा इब्ने ख़ुलदून, स. 180 पर लिखा कि यज़ीद नापाक, फ़ासिक़ व फ़ाजिर और शराबी व ज़ालिम था।

ऐ ईमान वाले भाइयो ! बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात से अच्छी तरह वाज़ेह और साबित हो गया कि यज़ीद कैसा था और उसने कैसे कैसे ज़ुल्म व गुनाह किये हैं, उसके बाद भी कोई बद अक़ीदा शख़्स यज़ीद नापाक को अमीरुल मोमिनीन कहता है और उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करता है तो वह ज़ालिम और झूटा है और उसका हश्र भी यज़ीद नापाक के साथ ही होगा इन्शाअल्लाहु तआला।

अब आख़िर में हम इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तहरीर पेश करते हैं, वह लिखते हैं कि यज़ीद पलीद ब इज्माए अहले सुन्नत फ़ासिक़ व फ़ाजिर और गुनाहे कबीरा का मुरतकिब था, इस पर अइम्मए अहले सुन्नत का इत्तिफ़ाक़ है। सिर्फ़ उसकी तकफ़ीर व लअ़न में इख़्तिलाफ़ है फ़रमाया :

इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के मुत्तबेईन व मुवाफ़िक़ीन उसे काफ़िर कहते हैं। शक नहीं कि यज़ीद ने वालिये मुल्क होकर ज़मीन में फ़साद फैलाया। हरमैन तैय्यिबैन और ख़ुद काबा मुअज़्ज़मा और रोज़ा तैय्यिबा की सख़्त बे हुरमतियाँ कीं। मस्जिदे करीम में घोड़े बाँधे उन की लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े रहे, तीन दिन तक मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अज़ान व नमाज नहीं होने दी, मक्का व मदीना व हिजाज़ में हज़ारों सहाबा व ताबेईन को बे गुनाह शहीद किया, काबा मुअज़्ज़मा पर पत्थर बरसाए और ग़िलाफ़े काबा को फाड़ा और जलाया।मदीना मुनव्वरा की पाक दामन पारसाएं यानी औरतों को तीन दिन और तीन रातें अपने ख़बीस लश्कर पर हलाल कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिगर के टुकड़े हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीन दिन भूका, प्यासा रखकर मए साथियों के तेग़े ज़ुल्म से ज़िबह किया।

और प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गोद के पाले हुए तने नाज़नीन पर शहादत के बाद घोड़े दौड़ाए गए कि तमाम हड्डियाँ चूर चूर हो गईं। हज़रत

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरे अनवर जो महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बोसा गाह था, काट कर नेज़े पर चढ़ाया और जगह जगह फिराया। हरमे मोहतरम महज़रात मकशूए रिसालत यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेटियों को क़ैद किया गया और वे अदबी के साथ उस ख़बीस, यज़ीद नापाक के दरबार में लाया गया। उस से बढ़ कर क़तअ रहम और ज़मीन में फ़साद किया होगा। मलऊन है वह जो उन मलऊन हरकात को फ़िस्क़ व फ़ुजूर न जाने। कुरआने करीम में सिराहतन उस पर لعنهم الله फ़रमाया। लिहाज़ा इमाम अहमद बिन हम्बल और उन के मुवाफ़िक़ीन उस पर लअ़नत फ़रमाते हैं और हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु लअ़न व तकफ़ीर से एहतियातन सुकूत करते हैं कि उस से फ़िस्क़ व फ़ुजूर मुतवातिर हैं कुफ़्र मुतवातिर नहीं मगर उस के फ़िस्क़ व फ़ुजूर से इनकार करना और इमाम मज़लूम पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ है और ज़ॅलाल (गुमरही) व बद मज़हबी साफ़ है। मुलख्ख़सन (फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि. 6, स. 107, 108)

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक के मुतअल्लिक़ मुख़ालिफ़े अहले सुन्नत के गिरोह के उलमा के अक़वाल व बयानात भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये।

देवबन्दी और तब्लीग़ी जमाअ़त के बड़े मौलाना मौलवी अशरफ़ अली थानवी लिखतेउ हैं कि यज़ीद फ़ासिक था और फ़ासिक़ की विलायत मुख़्तलफ़ फ़ीह है (इमदादुल फ़तावा, जि. 5, स. 51)

और देवबन्दियों के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही तहरीर करते हैं :

कि बाज़ अइम्मा ने जो यज़ीद की निस्बत कुफ़्र से कफ़े लिसान किया है वह एहतियात है क्यों कि क़त्ले हुसैन को हलाल जानना कुफ़्र है मगर यह अम्र कि यज़ीद क़त्ल को हलाल जानता था मुहक्क़क़ नहीं, लिहाज़ा काफ़िर कहने से एहतियात रखे मगर (यज़ीद) फ़ासिक़ बेशक था। (फ़तावा रशीदिया, जि. 1, स. 7)

देवबन्दी जमाअत के मुस्तनद मौलाना मौलवी क़ासिम नानोतवी बानी दारुल उलूम देवबन्द लिखते हैं :

बाज़ के नज़दीक यज़ीद काफ़िर हो गया और बाज़ के नज़दीक उस का कुफ़्र मुतहक़्क़क न हुआ बल्कि उस का पहला इस्लाम फ़िस्क़ के साथ मख़लूत हो गया।

अगर इमाम हुसैन ने उस को काफ़िर समझा तो उस पर ख़ुरूज करने में किया ग़लती की ? इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि को यही बात पसन्द आई।

(मकतूबाते शैख़ुल इस्लाम, जि. 1, स. 258)

देवबन्दी जमाअत के एक बड़े मौलवी साहब, मौलवी मोहम्मद तैय्यिब, साबिक़ मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द लिखते हैं।

बहर हाल यज़ीद के फ़िस्क़ो फ़ुजूर पर जब कि सहाबए किराम सब के सब ही मुत्तफ़िक़ हैं ख़्वाह मुबाएईन हों या मुख़ालेफ़ीन, फिर अल्लामा हतीमी, अल्लामा इब्ने जोज़ी अल्लामा सअ़दुद्दीन तफ़्ताज़ानी, मुहक़्क़िक़ इब्ने हुमाम, हाफ़िज़ इब्ने कसीर, अल्लामा अलकिया

अल हरासी जैसे मुहक़्क़ेक़ीन यज़ीद के फ़िस्क़ पर उलमाए सलफ़ का इत्तिफ़ाक़ नक़्ल कर रहे हैं और खुद भी इसी के क़ाइल हैं तो इससे ज़्यादा यज़ीद के फ़िस्क़ (यानी गन्दा व नापाक) के मुत्तफ़क़ होने की शहादत और क्या हो सकती है ? (शहीदे करबला और यज़ीद, स. 159)

ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम यानी अहले हदीस कहलाने वालों के पेशवा नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली कहते हैं : मुक़रेज़ी ने ख़त में ज़िक्र किया है कि जब हुसैन मारे गए आसमान रोया और ज़ोहरा ने कहा कि हमको यह बात पहुँची है कि जिस दिन क़त्ले हुसैन हुआ कोई पत्थर बैतुल मुक़द्दस में का नहीं उठाया गया लेकिन उसके नीचे से ताज़ा सुर्ख़ ख़ून निकला और दुनिया में तीन दिन तक तारीकी रही और लिखते हैं कि ज़ोहरी ने कहा कि क़ातिलाने हुसैन में से कोई शख़्स नहीं बचा लेकिन आख़िरत से पहले दुनिया ही में सज़ा पाया तो मारा गया या रू स्याह हो गया। (तशरीफ़ुल बशर, ब ज़िकरुल अइम्मातुल इस्ना अश्र, स. 29)

जमाअते इस्लामी के बानी व अमीर अबुल आला मौदूदी लिखते हैं : कि यज़ीद के दौर में तीन ऐसे वाक़ेआत हुए जिन्होंने पूरी दुनियाए इस्लाम को लरज़ा बरन्दाम कर दिया।

पहला वाक़िआ सय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत का वाक़िआ है। मौदूदी साहब हाफ़िज़ इब्ने कसीर के हवाले से लिखते हैं कि क़त्ले हुसैन पर यज़ीद ने इब्ने ज़ियाद को न कोई सज़ा दी न उसे माज़ूल किया न उसे मलामत ही का कोई ख़त लिखा यज़ीद में अगर इन्सानी शराफ़त की भी कोई रम्क़ होती तो वह सोचता कि फ़तहे मक्का के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसके पूरे ख़ानदान पर क्या एहसान किया था और उसकी हुकूमत ने उनके नवासे के साथ क्या सुलूक किया। (इसी तरह जमाअते इस्लामी के अमीर मौदूदी साहब ने क़दरे तफ़सील के साथ यज़ीद के ज़ुल्मो सितम को बयान किया है और यज़ीद को ज़ालिम और ग़द्दार साबित किया है।

(इमामे पाक और यज़ीद पलीद, स. 115)

आज कल कुछ देवबन्दी और ग़ैर मुक़ल्लेदीन यज़ीद नापाक को नेक व सालेह और जन्नती कहते और लिखते हैं जब कि उनके बुज़ुर्गों ने भी यज़ीद को फ़ासिक़ व फ़ाजिर और ज़ालिम लिखा है जैसा कि ऊपर गुज़रा।

हदीसे कुस्तुनतुनिया और यज़ीद नापाक

यज़ीद नापाक की हिमायत व वफ़ादारी में जो लोग बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से यज़ीद पलीद का जन्नती होना साबित करना चाहते हैं महज़ बातिल और झूट है। अल अमान वल हफ़ीज़

हदीस शरीफ़ : أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُوْنَ مَدِيْنَةَ قَيْصَرَ مَغْفُوْرٌ لَّهُمْ

मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो क़ैसर के शहर में जंग करेगा वह बख़्शा हुआ है।

सही बुख़ारी की इस हदीस में मुतलक़न नहीं फ़रमाया गया कि जितने लोग भी क़ैसर के शहर में ग़ज़वा करेंगे उन सब के लिये बख़्शिश है। बल्कि हमारे प्यारे रसूल ग़ैबदां आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म में था कि मेरे अहले बैत का दुश्मन और मेरे बेटे इमाम हुसैन का क़ातिल यज़ीद नापाक, पहला लश्कर जो क़ैसर के शहर

कुस्तुनतुनिया पर हमला करेगा उससे पहले लश्कर में शामिल नहीं होगा इस लिये आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मग़फ़िरत व बख़्शिश का इनआम उन के लिये रखा जो : أَوَّلُ جَيْشٍ مِّنْ اُمَّتِي फ़रमा कर पहले लश्कर में जो लोग शरीक होंगे उन के लिये ख़ास फ़रमा दिया और उस से पहले लश्कर में यज़ीद शरीक ही नहीं था मुलाहज़ा फ़रमाइये अल्लामा इब्ने असीर फ़रमाते हैं : और उसी साल सन् हि. 49 में और कहा गया है कि सन् हि. 50 में हज़रत मुआविया ने एक लश्करे जर्रार बलादे रूम की तरफ़ भेजा और उस पर हज़रत सुफ़ियान बिन औफ़ को अमीर बनाया और अपने बेटे यज़ीद को उनके साथ जंग में शरीक होने का हुक्म दिया तो यज़ीद बैठा रहा और हीले बहाने शुरू किये तो अमीर मुआविया उसके भेजने से रुक गए। (इब्ने असीर, जि. 3, स. 189)

अल्लामा इब्ने असीर की इस रिवायत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो पहला लशकर क़ैसरे रूम पर भेजा उस लश्कर में यज़ीद शामिल ही नहीं था।

इमामुल मुहद्देसीन अल्लामा इमाम बदरुद्दीन ऐनी शारेह सही बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि अगर यह बात मान भी ली जाए कि यज़ीद ने सबसे पहले क़ैसर के शहर कुस्तुनतुनिया में जंग की है तो मैं कहता हूँ कि वह कौन सी मनक़बत है जो यज़ीद के लिये साबित हो गई जब कि उसका हाल ख़ूब मशहूर है। अगर तुम यह कहो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस लश्कर के हक़ में مَغْفُوْرٌ لَّهُمْ फ़रमाया है तो मैं कहता हूँ कि इस उमूम में यज़ीद के दाख़िल होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह किसी दूसरी दलील से उससे ख़ारिज भी न हो सके क्यों कि इसमें तो अहले इल्म का कोई इख़्तिलाफ़ ही नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ौल مَغْفُوْرٌ لَّهُمْ में वही दाख़िल हैं जो मग़फ़िरत के अहल हैं हत्ता कि अगर ग़ज़वा करने वालों में से कोई मुरतद हो जाता तो वह यक़ीनन इस बशारत के उमूम में दाख़िल न रहता।

पस यह साफ़ तौर पर साबित हो जाता है कि मग़फ़िरत से मुराद यह है कि जिसके वास्ते मग़फ़िरत की शर्त पाई जाए उसके वास्ते मग़फ़िरत है। (उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, जि. 6, स. 49)

क़रीब ऐसा ही अल्लामा इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अस्सावी शरह बुख़ारी, जि. 5, स. 101 पर और अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़तहुल बारी शरह बुख़ारी, जि. 6, स. 65 पर और अल्लामा शैख़ अली इब्न अश्शैख़ अहमद रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने सिराते मुनीर शरह जामेअ़ सग़ीर, जि. 2, स. 79 पर लिखते हैं : साबित हो गया कि यज़ीद हरगिज़ हरगिज़ हदीसे बुख़ारी में जो बशारत दी गई है उसका मुस्तहिक़ नहीं है।

ऐ ईमान वालो! बेशक हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हर क़ौल और हर हदीस हक़ और सच है मगर उसमें शराइत का पाया जाना ज़रूरी होता है जैसे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : दुआ मांगो

अल्लाह तआला कुबूल फ़रमाएगा। मगर शर्त यह है कि झूट और हराम रोज़ी से बचोगे तो दुआ कुबूतल होगी। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ो मगर इस शर्त के साथ कि कामिल तहारत और वुज़ू कर लो वर्ना नमाज़ न होगी। इसी तरह हज व रोज़ा और ज़कात वग़ैरह तमाम आमाल के लिये शराइत हैं कि अगर ऐसा करोगे तो मक़बूल बनोगे।

जैसे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ فَقَدْ دَخَلَ الْجَنَّةَ

कि जिस शख़्स ने कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा वह जन्नती हो गया।

बे शक मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान हक़ और बहुत ही सच है लेकिन यज़ीद नापाक को जन्नती कहने वाले यज़ीदी हज़रात से पूछना चाहिये कि एक शख़्स है जो तक़दीर को, फ़रिश्तों को, अम्बियाए सादेक़ीन को, मरने के बाद ज़िन्दा होने को, क़ब्र के सवाल व जवाब को, क़ियामत के दिन हिसाब व किताब को, जन्नत व दोज़ख को और जो उमूरे ज़ुरूरियाते दीन हैं उनको नहीं मानता है या उनमें से किसी एक अम्रे ज़रूरी को नहीं मानता है और न ही उस पर ईमान रखता है और उस शख़्स का हाल यह है कि सुबह से शाम तक बे शुमार मरतबा कलमा शरीफ़ पढ़ता रहता है तो क्या वह शख़्स कलमा पढ़ने की बुनियाद पर जन्नती है। ऐ यज़ीदी गिरोह के लोगो! हिम्मत है तो कह दो कि वह शख़्स जन्नती है इस लिये कि वह कलमा पढ़ता है चाहे वह ज़रूरियाते दीन का इनकार करता हो, मर जाओगे मगर उस शख़्स को जन्नती साबित नहीं कर सकते हो।

इसी तरह यज़ीद नापाक का हाल है जैसा कि अइम्मए किराम, मुहद्देसीने इज़ाम और बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि यज़ीद नापाक कुस्तुनतुनिया वाली हदीस शरीफ़ की बशारत से महरूम है और अपने बुरे किरदार और गन्दे अफ़आल के सबब, यज़ीद पलीद, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, ज़ालिम व क़ातिल और मुस्तहिक़्क़े अज़ाबे नार है।

अहले बैते पाक से गुस्ताख़ियाँ बे बाकियाँ
लअनतुल्लाहि अलैकुम दुश्मनाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत
इन्सान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

दस मुहर्रम के मशहूर वाक़िआत

इस्लाम का पहला महीना मुहर्रम शरीफ़ है इस माह में जंगो जिदाल हराम है और इस माह में आशूरा का दिन बहुत बुज़ुर्ग है यानी 10 वीं मुहर्रम का दिन।

10 मुहर्रम को यह वाक़िआत रूनुमा हुए।

1) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह क़ुबूल हुई।
2) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आए।
3) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती से सलामती के साथ उतरे।
4) हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।
5) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए।
(फ़ैज़ुल क़दीर, शरह जामेअ़ सग़ीर लिल मुनादी, जि. 3, स. 34)
6) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आग गुलज़ार हुई।
7) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने मरज़ से शिफ़ा पाई।
8) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की बीनाई वापस आई।
9) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुएं से निकले।
10) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बादशाही मिली।
11) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी दिन जादूगरों पर ग़ालिब आए।
(अजाएबुल मख़लूक़ात, स. 44)
12) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहीद हुए।
13) क़ियामत इसी दिन आएगी।
14) पहली बारिश आसमानों से नाज़िल हुई। (ग़ुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 53)

आशूरा के दिन नेक काम

ऐ ईमान वालो! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम एक बुज़ुर्ग दिन है उसमें नेक कामों के बड़े अज्रो सवाब हैं, कुछ नेक कामों का ज़िक्र किया जाता है।

हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं:

(1) 10 मुहर्रम शरीफ़ के दिन किसी यतीम के सर पर महब्बत से हाथ फेरना बड़ा अज्रो सवाब है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ مَسَحَ بِيَدِهٖ عَلٰى رَأْسِ يَتِيْمٍ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ رَفَعَ اللّٰهُ تَعَالٰى لَهٗ بِكُلِّ شَعْرَةٍ عَلٰى رَأْسِهٖ دَرَجَةً فِي الْجَنَّةِ

जो शख़्स आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरेगा तो अल्लाह उसके लिये यतीम के सर के हर बाल के बदले एक दर्जा जन्नत में बलन्द फ़रमाएगा। (ग़ुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 53)

ऐ ईमान वालो ! यतीम से महब्बत करना और उसको खिलाना पिलाना बड़ा सवाब है। यतीम की दुआ से बला व मुसीबत दूर हो जाती है और रोज़ी बढ़ा दी जाती है।

(2) हमारे प्यारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं : مَنِ اغْتَسَلَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ لَمْ يَمْرِضْ مَرَضًا اِلَّا مَرَضَ الْمَوْتِ

यानी जो शख़्स आशूरा के दिन गुस्ल करे तो किसी मरज़ में मुब्तला न होगा सिवाए मर्ज़े मौत के। (गुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 53)

(3) दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन गुनाहों और ख़ताओं से तौबह क़सरत से करना चाहिये कि तौबह उस दिन जल्दी क़ुबूल होती है। अल्लाह तआला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है, अपनी क़ौम को हुक्म दो कि वह दसवीं मुहर्रम को मेरी बारगाह में तौबह करें और जब दसवीं मुहर्रम का दिन हो तो मेरी तरफ़ रुजूअ करें।

اَغْفِرْلَهُمْ में उन सब की मग़फ़िरत फ़रमाऊँगा। (फ़ैज़ुल क़दीर शरह जामेअ सग़ीर, जि. 3, स. 34)

(4) 10 मुहर्रम के दिन आँखों में सुर्मा डालना, आँखों की तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स आशूरा के दिन इस्मिद का सुर्मा लगाए :

لَمْ تَرْمَدْ عَيْنُهُ اَبَدًا तो उसकी आँख कभी भी न दुखेगी। (बैहक़ी)

मौज़ूआतुल कबीर में हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं : 10 मुहर्रम के दिन आँखों में सुर्मा लगाना ख़ुशी के इज़हार के लिये नहीं होना चाहिये क्योंकि 10 मुहर्रम शरीफ़ की ख़ुशी मनाना ख़ारजियों का फ़ेअ़ल है बल्कि हदीस शरीफ़ पर अमल करने के लिये सुर्मा डालना चाहिये।

(5) 10 मुहर्रम के दिन अहलो अयाल के वास्ते घर में वसीअ़ पैमाने पर.खाने का इन्तिज़ाम करना चाहिये ताकि अल्लाह तआला 10 मुहर्रम की बरकत से पूरे साल वुसअत व बरकत अता फ़रमाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले आज़म रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स आशूरा के दिन अपने अहलो अयाल पर नफ़क़ा में वुसअत करे यानी ख़ूब ज़्यादा ख़र्च करेगा तो अल्लाह तआला उस पर पूरे साल वुसअत फ़रमाएगा।

قَالَ سُفْيَانُ اِنَّا قَدْ جَرَّبْنَاهُ فَوَجَدْنَاهُ كَذَالِكَ

यानी हज़रत सुफ़ियान सोरी ने फ़रमाया कि हमने इसका तजरबा किया तो ऐसा ही पाया (यानी रोज़ी में ख़ूब बरकत पाया)। (बैहक़ी, मिश्कात, स. 170)

मेरे प्यारे पीर, पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि हमने पचास साल इसका तजरबा किया तो वुसअत व बरकत ही देखी। (गुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 54)

(6) ऐ ईमान वालो इसी तरह अल्लामा मुनादी फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 2, स. 236 पर लिखते हैं कि हज़रत जाबिर सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हमने इसका तजरबा किया तो इसको सही पाया और हज़रत इब्ने औना रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि हमने पचास साठ साल इसका तजरबा किया तो रोज़ी में वुसअत व बरकत ही पाई। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि दस मुहर्रम शरीफ़ को ख़ूब ज़्यादा खाना पकाना चाहिये और खिलाना चाहिये।

पीरों के पीर हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन लोगों को पानी पिलाना बहुत बड़ा सवाब है। (अब अगर कोई शख़्स दूध पिलाए तो उसका सवाब कितना ज़्यादा होगा) हमारे प्यारे सरकार नबिये मुअज़्ज़म रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَمَنْ سَقٰى شَرْبَةً مِّنْ مَّاءٍ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ فَكَاَنَّمَا لَمْ يَعْصِ اللّٰهَ طَرْفَةَ عَيْنٍ

यानी जो आशूरा के दिन पानी पिलाए तो गोया उसने थोड़ी देर के लिये अल्लाह तआला की ना फ़रमानी नहीं की (यानी उसने अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी का काम किया)

दस मुहर्रम का रोज़ा रखना बड़ा सवाब है

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आशूरा के दिन ख़ुद भी रोज़ा रखा और अपने गुलामों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

صُوْمُوْا يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَوْمٌ كَانَتِ الْاَنْبِيَاءُ تَصُوْمُهٗ

यानी आशूरा के दिन रोज़ा रखो, उस दिन अम्बियाए किराम रोज़ा रखते थे।

(जामेअ सग़ीर, जि. 4, स. 215)

इस हदीस शरीफ़ के तहत अल्लामा मुनादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन यानी दस मुहर्रम शरीफ़ की फ़ज़ीलत बहुत बड़ी है और इसकी हुरमत व बुज़ुर्गी क़दीम ज़माने से चली आ रही है। इब्ने रजब ने फ़रमाया कि दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और दीगर अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने रोज़ा रखा है। (फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 4, स. 215)

रमज़ान के बाद सब से अफ़ज़ल रोज़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले रहमतो बरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ के बाद अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह तआला का महीना मुहर्रम शरीफ़ में आशूरा का रोज़ा है और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ यानी तहज्जुद की नमाज़ है।

(मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 171)

ऐ ईमान वालो ! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम शरीफ़ बड़ा अज़ीम दिन है उस दिन का रोज़ा रमज़ान शरीफ़ के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा है, अल्लाह तआला हमें भी उस अज़ीम

और बरकत व रहमत वाले दिन तमाम खेल, तमाशों की ग़लत रस्मों से बचाए और दस मुहर्रम शरीफ़ के बरकत वाले दिन अदब व एहतिराम के साथ रोज़ा रखने की और इबादतों में मशगूल रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

दसवीं मुहर्रम शरीफ़ की रात की नफ़्ल नमाज़ें

सुल्तानुल बग़दाद फ़रदुल अफ़राद हुज़ूरे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि शबे आशूरा में कसरत से नमाज़ों और दुआओं का एहतिमाम करना चाहिये और फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इस रात में चार रकअत नमाज़ इस तरह पढे कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद पचास मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े तो रहमानो रहीम मौला तआला उस शख़्स के पचास बरस के पिछले और पचास साल के आइन्दा के गुनाहों को बख़्श देता है और उसके लिये जन्नत में एक हज़ार महल तय्यार करता है। (मा सबत मिनस्सुन्नह, गुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 54)

और जो शख़्स आशूरा की रात में दो रकअत नमाज़ नफ़्ल क़ब्र की रोशनी के वास्ते पढ़े तो अल्लाह तआला उसकी क़ब्र को रोशनी से भर देगा और क़ियामत तक उसकी क़ब्र रोशन रहेगी। तरकीब यह है कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद तीन मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े। (जवाहरे ग़ैबी)

दस मुहर्रम के दिन की नफ़्ल नमाज़ें

हमारे प्यारे आक़ा महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद कुल हुवल्लाहु अहद ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े तो अल्लाह तआला उसके पचास साल के गुनाह बख़्श देता है और उस के लये एक नूरानी मिम्बर बनाता है।

(नुज़हतुल मजालिस, जि. 1, स. 146)

दस मुहर्रम के दिन जो काम सख़्त मना हैं

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब मौज़ूआतुल कबीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम के दिन काले कपड़े पहनना, सीना कूटना, बाल नोचना, नोहा करना, सर पीटना, छुरी, चाक़ू से बदन ज़ख़्मी करना जैसा कि राफ़ज़ी यानी शीओं का तरीक़ा है हराम और गुनाह है ऐसे मलऊन अफ़आल से परहेज़ करना लाज़िम व ज़रूरी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक हदीस रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُوْدَ وَشَقَّ الْجُيُوْبَ وَدَعٰى بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ

यानी वह शख़्स हम में से (यानी हमारी जमाअत में से) नहीं है जो अपने गालों पर मारे और अपने गिरेबान फाड़े और पुकारे जाहिलियत का पुकारना (यानी अपना सीना कूटते हुए चीख़े और चिल्लाए)। (बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात, स. 150)

आशूरा की रात और दिन इबादत के लिये हैं

ऐ ईमान वालो ! बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व बयानात से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि आशूरा की रात और आशूरा का दिन रहमत व बरकत और अज़मत व बुज़ुर्गी वाले हैं।

मुहर्रम शरीफ़ में बाजे बजाना यज़ीदियों का तरीक़ा है

जब हज़रत इमामे पाक शहीद हो गए तो ख़ुशी में यज़ीदियों ने बाजे बजाए और जश्न मनाया मगर आज कल इमामे पाक की महब्बत का दावा करने वाले बाजा बजाते हैं। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत अता फ़रमाए और यज़ीदियों के तरीक़ों पर अमल करने से बचाए।

आशूरा की रात में लहवो लअ़ब खेल कूद और तमाम ख़ुराफ़ात से बचा जाए और कसरत से नमाज़ और तिलावते कुरआने करीम का एहतिमाम किया जाए और कलमा शरीफ़ व दुरूदे पाक का विर्द किया जाए।

आशूरा के दिन रोज़ा रखा जाए और ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात किया जाए और सबका सवाब हज़रत इमामे पाक और शोहदाए करबला की पुर नूर बारगाहों में नज़्र किया जाए यही सच्ची अक़ीदतो महब्बत है हज़रत इमामे पाक से।

आशिके मदीना पेशवाए अहले सुन्नत हुज़ूर आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुहर्रम शरीफ़ में ख़ुराफ़ात व बिदआत का रद अपनी किताब इआलल इफ़ादा फ़ी ताज़ियतिल हिन्द व बयानुश्शहादह में तहरीर फ़रमाया है जिसको देखना हो इस किताब का मुतालआ फ़रमाए।

खुला धोका और इल्ज़ाम

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुरव्वजा ताज़ियादारी और मुहर्रम शरीफ़ में होने वाले ख़ुराफ़ात व बिदआत का रद्दे बलीग़ फ़रमाया है।

मगर बे दीन व गुमराह लोग इन ख़ुराफ़ातों और बिदअतों को जनम देने वाला और राइज करने वाला आपको बताते हैं। अल्लाह तआला ऐसे झूटों से बचाए।

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(1)

मुहर्रमुल हराम

चौथा जुमा .... तीसरा बयान

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

وَسَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

तर्जमा : और सलाम उसके चुने हुए पर। (पारा 19, रुकूअ् 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

या इलाही कर ग़ौसे आज़म के गुलामों में कुबूल
हम शबीहे ग़ौसे आज़म मुस्तफ़ा के वास्ते
हम को अब्दुल मुस्तफ़ा कर बहरे शैख़े मुस्तफ़ा
मुफ़्तिये आज़म जनाब मुस्तफ़ा के वास्ते

हज़रात ! हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह शान है कि :

उन का साया एक तजल्ली, उनका नक़्शे पा चिराग़
वह जिधर से गुज़रे, उधर ही रोशनी होती गई

विलादत : 22 ज़िल हिज्जा सन् 1310 हि. 7 जुलाई सन् 1893 ई. बरोज़ जुमा ब वक़्त सुबह सादिक़, ब मुक़ाम महल्ला सौदागरान बरैली शरीफ़

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत का सन् हि. इस आयते करीमा से निकलता है : وَسَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِی اصْطَفٰی
(पारा 19, रुकूअ् 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

1310 हि.

इस्मे गिरामी : हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु का पैदाइशी और असली नाम मुहम्मद है। इसी नामे पाक पर आपका अक़ीक़ा हुआ। ग़ैबी नाम आलुर्रहमान है। पीरो

मुर्शिद ने आपका नाम अबुल बरकात मोहयुद्दीन जीलानी तजवीज फ़रमाया और वालिद माजिद ने उर्फ़ी नाम मुस्तफ़ा रज़ा रखा। फ़न्ने शाएरी में आप अपना तख़ल्लुस नूरी फ़रमाते थे।

बेअत व ख़िलाफ़त : 25 जुमादल उख़रा सन् 1311 हि. 6 माह 3 योम की उम्र शरीफ़ में सय्यिदुल मशाइख़ हज़रत शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी अंगुश्ते मुबारक हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के दहने मुबारक (मुंह) में डाली, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म शीरे मादर (मां के दूध) की तरह चूसने लगे। हज़रत नूरी मियाँ ने दाख़िले सिलसिला फ़रमाया और तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया और मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी।

पीरो मुर्शिद की बशारत : सय्यिदुल मशाइख़ हज़रत शाह सय्यद अबुल हुसैन अहमदे नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बेअत करते वक़्त इरशाद फ़रमाया :

यह बच्चा दीनो मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़लूक़े ख़ुदा को इसकी ज़ात से बहुत फ़ैज़ पहुँचेगा। यह बच्चा वली है, जिसकी निगाहों से लाखों गुमराह लोग दीने हक़ पर क़ाइम होंगे, यह फ़ैज़ का दरया बहाएगा।

तालीमो तरबियत : मौलाना महमूद अहमद क़ादरी मुज़फ़्फ़रपूरी अपनी.याद्दाश्त में लिखते हैं कि :

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया : कुछ अपनी तालीम के बारे में भी फ़रमाएं ?

तो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : क़ुरआन शरीफ़ आला हज़रत से भी पढ़ा, मन्झले और छोटे चचा के अलावा बड़े भाई साहब मौलाना हामिद रज़ा से भी पढ़ा, उसके बाद फ़ारसी, अरबी भी इन्हीं हज़रात से पढ़ी। जब मदरसा अहले सुन्नत क़ाइम हुआ तो उसके असातिज़ा से भी, मौलाना सय्यद बशीर अहमद अली गढ़ी से भी पढ़ा। मौलाना ज़हूरुल हसन फ़ारूक़ी रामपूरी से भी पढ़ा, जब मौलाना रहम इलाही मुज़फ़्फ़र नगरी मुदर्रिसे दौम होकर आए तो उनसे ख़ास तौर पर पढ़ा यह मेरे ख़ास उस्ताज़ थे। जब मुतवस्सितात पढ़ चुका तो ज़्यादातर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर रहता जिससे फ़वाइदे कसीरा हासिल हुए।

फ़राग़त : हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सन् 1328 हि. सन् 1910 ई. में 18 साल की उम्र में जुमला उलूमो फ़ुनून पर उबूर हासिल करके मरकज़े अहले सुन्नत दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़ से सनदे फ़राग़त हासिल की।

(जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 102,103,104)

तमहीद : जिस आलिमे रब्बानी, वलिये कामिल मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद की शान व बुज़ुर्गी का बयान हो रहा है वह ज़ात इल्मो अमल और हुस्नो तदबीर का पैकर, हिल्मो बुर्दबारी और

अज़्मे मोहकम की मज़बूत चट्टान, तफ़क्क़ोह व तदब्बुर में यगानए रोज़गार, शरीअत व तरीक़त में बहरे ज़ख़्ख़ार, तक़वा परहेज़गारी के शाहकार, किशवरे शेअ़रो अदब के शहरयार, ममलकते सुलूको तसव्वुफ़ और विलायतो करामत के ताजदार, क़ुतबे आलम, हुज़ूर मुफ्तिये आज़म, अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नामे नामी इस्मे गिरामी से मशहूर व मअ़रूफ़ हैं।

हज़रात ! हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शक्ल में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर बरैली शरीफ़ के उफ़क़ से उठने वाला यह सहाबे रहमत उठा और उठता ही चला गया, बढ़ा और बढ़ता ही चला गया, फैला और फैलता ही चला गया, बरसा और बरसता ही चला गया, दीनो शरीअत और इल्मो अमल की खेतियाँ हरी भरी हो गईं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़ैज़, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शक्ल में पुरी दुनिया के बे शुमार शहरों और दिहातों में पहुँचा और उन्हें सेराब किया।

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ! वह कुआं न थे कि लोग वहाँ जाकर प्यास बुझाते, वह बादल थे हर जगह ख़ुद ही जाकर बरस आते। अपनों पर बरसे, ग़ैरों पर बरसे, पहाड़ों पर बरसे, वादियों पर बरसे, सेहराओं पर बरसे, शहरों पर बरसे, झोपड़ियों पर बरसे। यही वजह है कि जब वह विसाल फ़रमाए और निगाहों से रूपोश हुए तो दुनिया चीख़ पड़ी एक मोहतात अन्दाज़े के मुताबिक़ 20 लाख इन्सानों का जम्मे ग़फ़ीर हर तरफ़ से शहरे बरैली में जमा हो गया।

पहला फ़तवा : सन् 1328 हि. सन् 1910 ई. में जब हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उम्रे मुबारक 18 साल की थी, आपने एक फ़तवा तहरीर फ़रमाया यह फ़तवा जहाँ आपकी इल्मी सलाहियत व क़ाबिलियत का पता देता है वहीं फ़िक़ही महारत को भी उजागर करता है।

इसी पहले फ़तवे के मुतअल्लिक़ हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद अपने क़लम से लिखते हैं कि :

नो उम्री का ज़माना था मैंने मलेकुल उलमा (मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी) से कहा कि फ़तावा रज़विया देखकर आप जवाब लिखते हैं। मौलाना (ज़फ़रुद्दीन बिहारी) ने फ़रमाया: अच्छा तुम बग़ैर देखे लिख दो तो जानूं। मैंने फ़ौरन लिख दिया और वह रज़ाअत का मस्अला था। (माहनामा आला हज़रत बरैली 10 जुलाई 1960)

जब यह फ़तवा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में पेश किया गया तो आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़त पहचान लिया, क़ल्बे अतहर में मसर्रतो शादमानी का तूफ़ान उमन्ड आया और चेहरए मुबारका पर बशाशत व फ़रहत की किरणें फूट पड़ीं। फ़रमाया : यह किसने लिखा है ? हामिले फ़तवा ने जवाब दिया: छोटे मियां ने। (घर में लोग प्यार से छोटे मियां कहकर पुकारा करते थे) फिर आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उन्हें बुलाओ। आने के बाद दस्तख़त करवाकर लिखा:

صَحَّ الْجَوَابُ بِعَوْنِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابْ

और अपना ताईदी दस्तखत सब्त फ़रमाया और खुश होकर पाँच रुपया इनआम देते हैं फिर अबुल बरकात मोहयुद्दीन जीलानी मुहम्मद उर्फ़ मुस्तफ़ा रज़ा की मोहर बनवाकर अता फरमाते हैं। (अनवारे मुफ़्तिये आजम, स. 59) तजकिरा उलमाए अहले सुन्नत, स. 223)

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म का फ़तवा मक्का मुअज़्ज़मा में

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा हुज़ूर मुफ्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब 1364 हि. मुताबिक़ सन् 1945 में हज व ज़ियारत के लिये हरमैन तैयेबैन हाज़िर हुए उस वक़्त नज्दी हुकूमत ने हाजियों पर हज व ज़ियारत का टेक्स लगा दिया था और वहाबी, नज्दी उलमा ने उसके जवाज़ का फ़तवा भी दे दिया था मगर हक़ परस्त सुन्नी उलमा नज्दी हुकूमत के जब्र व ज़ुल्म से खाइफ़ होकर रुखसत पर अमल करते हुए खामोश थे। लेकिन जब हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हरमे मोहतरम, मक्का मुअज़्ज़मा में हाज़िर हुए तो उस मर्दे खुदा मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद ने मक्का मुअज़्ज़मा में उस नज्दी टेक्स के हराम व गुनाह होने पर इन्तिहाई मुदल्लल, मुफ़स्सल, अरबी ज़बान में फ़तवा लिखा जिसका नाम اَلْقَنَابِلُ الذَّرِّيَّةُ عَنْ اَوْثَانِ النَّجْدِيَّةِ है।

जिसे पढ़ने के बाद उलमाए हरमैन तैय्यिबैन ने मुत्तफ़का तौर पर फ़रमाया : إِنْ هٰذَا إِلَّا إِلْهَامٌ

और तमाम उलमाए हरमैन तैय्यिबैन ने मुत्तफ़का तौर पर हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इमामे वक़्त, शैखुल हिन्द वल हरम तस्लीम फ़रमाया और बतौरे तबर्रुक कुरआने करीम व अहादीस तैय्यिबा व फ़िक़ह के सलासिल की इजाज़तें लीं और अपने आपको हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़ुमरए तलामिज़ा शागिर्दों में दाखिल करने पर फ़ख्र फ़रमाया (मुलख्खस अनवारे मुफ़्तिये आजम, स. 256)

हज़रात! मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने नज्दी हुकूमत के जबरो तशद्दुद और उनकी गुमराही और बद दीनी को देखकर अपने शेर में यूँ कहा है

तेरे हबीब का प्यारा चमन किया बरबाद
इलाही निकले यह नज्दी बला मदीने से

और क़िसी ने कहा :

आईने जवां मरदां हक़ गोई व बे बाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही

मुफ़्तिये आज़म का लक़ब

हज़रत मौलाना सय्यद शाहिद अली रज़वी साहब ने ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अख्तर रज़ा अज़हरी इन्होंने नमूनए अस्लाफ़ अल्लामा मुबीनुद्दीन अमरोहवी से, इन्होंने सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी के हवाले से फ़रमाया कि यह लक़ब (यानी मुफ़्तिये आज़म का लक़ब) खुद इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने ही अता फ़रमाया। (गुलदस्तए फ़कीह इब्ने फ़कीह, स. 106)

इमाम अहमद रज़ा के सातवें उर्स पचीस सफ़र सन् 1374 हि. के अज़ीमुश्शान इज्लास में हुज्जतुल इस्लाम समेत ग़ैर मुनक़सिम (पाकिस्तान बनने से पहले के) हिन्दूस्तान के बड़े बड़े मुफ्तियाने किराम और उलमाए इज़ाम मौजूद थे, उस इज्लास में आपको मुफ़्तिये आज़म कहा गया और हुज्जतुल इस्लाम के हुक्म से मन्ज़ूर शुदा तजवीज़ों में से एक तजवीज़ में आपके लिये मुफ्तिये आज़म का लफ़्ज़ आया है।

और ऑल इन्डिया सुन्नी कान्फ्रेंस सन् 1946 बनारस के तारीख साज़ इज्लास जिसमें पाँच सौ मशाइखे इज़ाम, सात हज़ार मुफ़्तियाने किराम और उलमाए इज़ाम शरीक थे उसमें आपको बार बार मुफ़्तिये आज़म के लक़ब से याद किया गया और उसकी मुख्तलिफ़ तजवीज़ों में मुफ़्तिये आज़म लिखा गया। (अल मीज़ान, अप्रेल 1987, स. 120)

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अकाबिर की नज़र में

(1) हुज़ूर मुहद्दिसे आज़म हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद किछोछवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक फ़तवा की तस्दीक़ फ़रमाते हुए लिखते हैं :

هٰذَا حُكْمُ الْعَالِمِ الْمُطَاعِ وَمَا عَلَيْنَا اِلَّا الْاِتِّبَاعُ

यानी यह एक आलिमे मुताअ़ का हुक्म है और हमारे लिये इत्तिबाअ़ के सिवा कोई चारए कार नहीं। (माहनामा इस्तिक़ामत कानपुर, अनवारे मुफ्तिये आज़म, स. 198, जहाने मुफ्तिये आज़म, रज़ा अकेडमी मुम्बई, स. 231)

और हुज़ूर मुहद्दिसे आज़म फ़रमाते हैं :

ताजदारे अशरफ़ियत हज़रत मुफ़्ती शाह सय्यद मुहम्मद मुहद्दिसे आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने ख़ुतबए सदारत, इरशादाते दीन परवर, में फ़रमाया : मेरा ख़याल है सुन्नी जमईयतुल उलमा क्या चीज़ है ? काश इस सवाल का जवाब हज़रत मुफ़्तिये आज़म सुन्नियों का आक़ा, सुन्नियों का मरकज़ी आसरा का क़लम देता।

(अल मीज़ान अप्रेल सन् 1987, स. 141)

(2) हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत की नज़र में

मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुरादाबादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर मुफ्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बिला शुबह वली हैं। आज जो उनसे सबक़ पढ़ रहा है कल उसे इस पर फ़ख्र होगा कि मैंने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक सबक़ पढ़ा है। जो इनसे बैअत होगा उसे इस पर फ़ख्र होगा कि मैं हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत हुआ हूँ। जो इनसे मुसाफ़हा करेगा वह इस पर फ़ख्र करेगा कि मैंने उनसे मुसाफ़हा क्या है। जो इनकी ज़ियारत करेगा वह इस पर फ़ख्र करेगा कि मैंने उन्हें देखा है। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तक़वा, तहारत के पैकर) इल्मो फ़न के समन्दर हैं। (अनवारे मुफ्तिये आज़म, स. 198)

(3) हुज़ूर अहसनुल उलमा की नज़र में

ताजदारे मारहरा मुताहरा, अलम बरदारे मस्लके आला हज़रत, हज़रत सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन, हसन मियाँ, अहसनुल उलमा, क़ादरी बरकाती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फ़रमाते हुए मैंने सुना है कि आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा और हज़रत मुफ़्तिये आज़म मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का ज़िक्र मेरे घर में रोज़ होता है। एक दो बार नहीं बल्कि दिन भर में कई बार होता है। (अनवार अहमद क़ादरी)

हज़रात ! हज़रत सय्यिदुल उलमा अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अश्शाह सय्यद आले मुस्तफ़ा सय्यद मियाँ, क़ादरी बरकाती मारेहरवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मुर्शिदे आज़म अहसनुल उलमा हाफ़िज़ व क़ारी मौलाना अश्शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन, हसन मियाँ क़ादरी बरकाती मारेहरवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ता हयात मस्लके आला हज़रत की शानदार ख़िदमत करते रहे और अपने मुतवस्सेलीन व मुरीदीन को भी मस्लके आला हज़रत पर मज़बूती से क़ाइम रहने का दर्स देते रहे और सय्यिदुल उलमा फ़रमाते हैं :

या इलाही मस्लके अहमद रज़ा ख़ाँ ज़िन्दाबाद
हिफ़्ज़े नामूसे रिसालत का जो ज़िम्मेदार है

(4) हुज़ूर बद्रे मिल्लत की नज़र में

राक़िमुल हुरूफ़ अनवार अहमद क़ादरी ने ख़ुद अपने मुर्शिदे करीम उस्ताज़े शफ़ीक़, आलिमे बा अमल, वलिये कामिल हज़रत मौलाना मुफ़्ती अश्शाह मुहम्मद बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बयान फ़रमाते हुए मुतअद्दिद बार सुना है कि शहज़ादए आला हज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नाइबे ग़ौसे आज़म और क़ुतबे आलम थे।

(5) हुज़ूर बहरुल उलूम की नज़र में

बुज़ुर्गों की यादगार, सरापा ख़ुलूसो वफ़ा हज़रत अल्लामा मौलाना अश्शाह मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब क़िब्ला आज़मी दामज़िल्लहुल आली फ़रमाते हैं कि हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा रहमतुल्लाहि तआला अलैह अहले दिल सूफ़ी और बा कमाल बुज़ुर्ग थे।

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैह वअ़ज़ व तक़रीर नहीं फ़रमाते थे लेकिन लोगों की रुश्दो हिदायत के लिये उनके चन्द जुमले लम्बी लम्बी तक़रीरों पर भारी थे।

(तलख़ीस जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 246)

हज़रात ! इन चन्द बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात पर बस करता हूँ वर्ना लिखने के लिये एक दफ़्तर दरकार है।

हज़रात ! हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद अश्शाह [illegible]म्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इल्मी क़द भी बहुत ही बल[illegible] है। आपसे पढ़ने

और इस्तिफ़ादा करने वालों की बड़ी तादाद है। यहाँ पर हम सिर्फ़ दो अज़ीम शख्सियतों का ज़िक्र कर रहे हैं जिन्होंने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इल्म इस्तिफ़ादा किया और पढ़ा है।

(1) शेर बेशए अहले सुन्नत मौलाना हश्मत अली लखनवी सुम्मा पीलीभीती

मज़हरे आला हज़रत शेर बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना हश्मत अली लखनवी सुम्मा पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सन् 1340 हि. और सन् 1921 ई. में हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुख़ारी शरीफ़ पढ़ी। (मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, स. 41, जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 1017)

(2) मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान, मौलाना सरदार अहमद लाइलपूरी

ख़लीफ़ा हुज्जतुल इस्लाम मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना सरदार अहमद लाइलपूरी ने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मन्ज़रे इस्लाम में मुनयह, क़ुदूरी, कन्ज़ुद्दक़ाइक़ और शरह जामी पढ़ी। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 1017)

हज़रात ! शेर बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना हश्मत अली क़ादरी रज़वी पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना सरदार अहमद चिश्ती क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इल्मी क़द उलमा और अवाम के दरमियान बहुत बलन्द है और इन दोनों बुज़ुर्गों ने दीनो सुन्नियत और मस्लके आला हज़रत की ख़िदमत का हक़ अदा कर दिया है।

हज़रात ! आप अन्दाज़ा कीजिये कि जब शागिर्द ऐसे हैं तो उस्ताज़ हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कैसे रहे होंगे।

उनका साया एक तजल्ली उनका नक़्शे पा चिराग़
वह जिधर से गुज़रे उधर ही रोशनी होती गई

हज़रात ! मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इम्तियाज़ी शान यह भी है कि उनके मुरीदों में अकाबिर उलमा पाए जाते हैं जो अपने इल्मो फ़ज़्ल, तक़वा व तहारत और नेकी व बुज़ुर्गी में यगानए रोज़गार हैं, जिनकी फ़ेहरिस्त अगर मुरत्तिब की जाए तो ख़ुद एक किताब तैय्यार हो जाए। उन बुज़ुर्ग हस्तियों में से हम यहाँ पर सिर्फ़ दो शख्सियतों का ज़िक्र करते हैं जो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद और ख़लीफ़ा थे।

(1) हुज़ूर बद्रे मिल्लत मौलाना शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी गोरखपूरी

आरिफ़े हक़, आलिमे बा अमल, वलिये कामिल हुज़ूर बद्रे मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती अश्शाह मुहम्मद बदरुद्दीन अहमद सिद्दीक़ी क़ादरी रज़वी मुसन्निफ़ सवानेह आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद नाइबे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। हुज़ूर बद्रे मिल्लत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इल्मो फ़ज़्ल, तक़्वा व तहारत और रूहानियत व करामत के मालिक थे। आपकी हयाते तैय्यिबा का लम्हा लम्हा मस्लके आला हज़रत के मुताबिक़ गुज़रा। आप पांचों नमाज़ों के अलावा नमाज़े चाश्त और तिलावते कुरआने मजीद बिला नाग़ा के पाबन्द थे। यही वजह थी और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्ची निस्बते गुलामी और मस्लके हक़, मस्लके आला हज़रत पर सख़्ती के साथ वाबस्तगी का नतीजा और फल था कि अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम ने साथ दिया कि हुज़ूर बद्रे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने सफ़रे आख़िरत के वक़्त भी नमाज़े मग़रिब अदा फ़रमाई और बादे नमाज़ चेहरा शरीफ़ मदीना तैय्यिबा की जानिब किये हुए तस्बीहो तहलील में मशग़ूल थे कि मुसल्ला ही पर 63 साल की उम्र शरीफ़ में आपका विसाल हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ०

(2) बक़ियतुस्सलफ़ हज़रत मौलाना मुबीनुद्दीन रज़वी अमरोहवी

बक़ियतुस्सलफ़ आलिमे रब्बानी हज़रत अल्लामा मौलाना अश्शाह हाजी मुबीनुद्दीन क़ादरी रज़वी अमरोहवी अलैहिर्रहमा, मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद क़ुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। हज़रत हाजी मुबीनुद्दीन साहब अलैहिर्रहमा आलिमे बा अमल थे। आपका तक़्वा व तहारत नुमायां था। आपको देखने वाला बुज़ुर्गों की याद ताज़ा कर लिया करता था, बे शक अल्लाह तआला के वली थे।

हज़रात! इन दोनों बुज़ुर्गों की नेकी व पारसाई और रूहानियत व बुज़ुर्गी को देखकर आप ब ख़ूबी अन्दाज़ा कर सकते हैं कि जब मुरीद व ख़लीफ़ा इस शान के हैं तो पीरो मुर्शिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म क़ुतबे आलम नाइबे ग़ौसे आज़म अश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नेकी व पारसाई, तक़्वा व तहारत, विलायत व रूहानियत की शान का क्या आलम होगा।

उनका साया एक तजल्ली उनका नक़्शे पा चिराग़
वह जिधर से गुज़रे उधर ही रोशनी होती गई

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म नाइबे ग़ौसे आज़म हैं

बक़ियतुस्सलफ़ हज़रत मौलाना अश्शाह हाजी मुबीनुद्दीन साहेब क़िब्ला रज़वी अमरोहवी अलैहिर्रमा लिखते हैं कि शहर बरैली में नवाब राहत जान साहब रहते हैं, यह बुज़ुरगाने किराम से बे पनाह अक़ीदत रखते हैं, मेरे भी मौसूफ़ से क़रीबी तअल्लुक़ात हैं। एक बार नवाब साहब ने मुझसे खुद बयान किया कि मेरे दिल में यह आरज़ू थी कि मैं किसी ख़ास ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जा नशीन से बेअत होउँगा जो इस दौर में ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की चलती फिरती तस्वीर हों। जिसके तक़वा और तहारत से ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की याद ताज़ा होती हो। जिसके उस्लोबे बयान से ग़ौसे पाक रजियल्लाहु तआला अन्हु का अन्दाज़ मिलता हो। जिसके वअज़ो नसीहत से ग़ौसे रब्बानी मोहयुद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी जैसा असर मुरत्तिब होता हो। जिसके सीने में ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा इश्क़े रसूल तड़प रहा हो। उस वक़्त मेरी नज़्रों में चन्द बुज़ुर्ग हस्तियाँ थीं, सरे फ़ेहरिस्त हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द थे और दीगर बुज़ुर्ग भी थे मगर मैं मुतमइन न हो सका कि सही मअ़नों में जा नशीने ग़ौस कौन है। लेकिन मेरे सीने में मचलते हुए जज़्बात थे, उठती हुई तमन्नाएं थीं, हसरतो यास में डूबा हुआ दिल ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जा नशीन को ढूँढता रहता था, इसी कश्मकश और इस जुस्तुजू में कोशां रहता कि मुझे नाइबे ग़ौसुल वरा मिल जाए। हत्ता कि मैं जा नशीने ग़ौस की तलाश में बग़दाद शरीफ़ पहुँचा, बग़दाद की गलियों में दीवाना वार चक्कर लगाता, बग़दाद की फ़ज़ाओं में मस्ताना चाल चलता, सिर्फ़ ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जा नशीन को तलाश करने में मुनहमिक रहता। जब ख़ानक़ाहे ग़ौस में पहुँचा, दरगाह शरीफ़ के एक सज्जादा नशीन जो वाक़ई मेरी नज़र में जा नशीने ग़ौसुल वरा लगते थे मैंने चाहा कि उनके दस्ते हक़ परस्त पर शरफ़े बैअत हासिल कर लूँ, मगर फिर न जाने क्यूं मेरे अन्दर एक खटक सी महसूस हुई और दिल में उनकी तरफ़ से आरज़ुओं का जो चिराग़ रौशन हो चुका था वह यक बयक गुल हो गया, मेरे दिल की अन्जुमन का गोशए महब्बत सर्द पड़ गया, मेरी उल्फ़त के ज़ख्मों का बन्धन टूट गया, दिल की खिली हुई कली मुरझाती चली गई लेकिन याद रखिये ग़म की चौट उभरती है तो खुद ब खुद अब्रे रहमत उसकी हिफ़ाज़त करती है। ग़रज़ कि दिल की इस खटक की वजह से मैंने अपना इरादए बैअत मन्सूख़ कर दिया।

आख़िर दिल की बे क़रारी हद से तजावुज़ करने लगी तो मेरी आरज़ुओं की शमा को रौशन करने के लिये सरकार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दरियाए रहमत जोश में आ ही गया और अचानक मेरे ऊपर ग़ुनूदगी की कैफ़ियत तारी हो गई, हालते ख़्वाब में देखता क्या हूँ कि सरकारे दो जहाँ महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आगे आगे जलवा फ़रमा हैं, उनके पीछे पीछे सय्यदना ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, उनके पीछे सय्यदना हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रमा हैं, मेरी ज़ान से बरजस्ता निकला

प्यारे ग़ौस। इस वक़्त दुनिया में आपका जा नशीन कौन है ? हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि तेरे ही शहर बरैली में तो मेरा जां नशीन है। मुझ से फिर भी न रहा गया और मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर कौन हैं ?

सय्यदना ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सरकार मुफ़्तिये आज़म की तरफ़ इशारा फ़रमाकर फ़रमाया कि देख यही तो मेरा है नाइब। मैंने अपनी ला इल्मी पर बे पनाह अफ़सोस किया और फिर मैंने बरैली ही का सफ़र शुरू कर दिया। सर ज़मीने बरैली शरीफ़ पहुँच कर आक़ाए नेअमत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त सरकार मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बर जस्ता इरशाद फ़रमाया : कहिये मियाँ नवाब साहब कहाँ, कहाँ घूम आए, क्या क्या देखा। हज़रत के यह चन्द कलिमाते मुबारका सुनकर मैं हैरान व सुशदिर रह गया और अचानक मेरी आँखों में आंसू निकल आए। फ़ौरन मैंने सरकार मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर शरफ़े बैअत हासिल किया। शायद इसी मौक़ा के लिये किसी ने कहा है :

दिलों की बात निगाहों के दरमियान पहुँची
कहाँ चिराग़ जला, रोशनी कहाँ पहुँची

(मक़्तूबाते नईमी, अव्वल, स. 20, 21)

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से साफ़ तौर पर पता चला कि हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नाइबे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

मुफ़्तिये आज़म और इश्क़े रसूल

मशहूर आलिमे दीन हज़रत अल्लामा यासीन अख़तर मिस्बाही रक़म तराज़ हैं कि : आलमे इस्लाम की बर गुज़ीदा और अहम शख़्सियतों पर एक नज़र डालिये तो इश्क़े रसूल के बाब में मुफ़्तिये आज़म का इस्मे गिरामी जली हर्फ़ों में रोशन नज़र आएगा। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महब्बते रसूल की एक जीती जागती तस्वीर हैं, कितना ख़ुशनसीब है जिसने इश्क़े मुस्तफ़ा को, मुस्तफ़ा रज़ा के पैकर में चलते फिरते, उठते बैठते देख लिया है।

रसूले बतहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आशिक़े ज़ार का हाल ज़ेल के वाक़िआ में मुलाहज़ा फ़रमाइये। अनोखे और निराले अन्दाज़ में एहतिरामे निस्बत का हसीन मन्ज़र भी देखिये।

सफ़रे हज में जब आप ग़ारे सोर की ज़ियारत के बाद ग़ारे हिरा के पास पहुँचे तो अपना अमामा मुबारका, जुब्बा, सदरी, कुरता सब उतारकर ज़मीन पर रख दिया, उस वक़्त सूज़िशे इश्क़ से आपका क़ल्ब तपां और आँखों से अश्क रवां था। ग़ार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और उसकी पाक मिट्टी बदन पर मलने लगे और उसके ज़र्रात से अपनी पेशानी को इस तरह चमकाया कि कहकशां का जमाल, आफ़ताब की शुआएं और माहताब की दरफ़शानी भी उसकी ताबानियों पर क़ुरबान होने लगी और जब आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवार पर मवाजह अक़दस में सलातो सलाम पेश करने की सआदत नसीब हुई तो हरम शरीफ़ के ख़ादिम से झाड़ू लेकर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए उस मुबारक सर ज़मीन को बुहारा उस वक़्त आपका जज़्बए शौक़ और कैफ़ो सुरूर बयान से बाहर है। एक मुद्दत से ख़्वाबीदा आरज़ू आज बेदार हो चुकी थी, दिल में मसर्रत की कलियाँ खिल उठीं और मुरादें बर आई थीं, जिन्हें आपने अपने नअ़ते पाक में नज़्म फ़रमाया है:

ख़ुदा ख़ैर से लाए वह दिन भी नूरी
मदीने की गलियाँ बुहारा करूँ मैं
तेरा ज़िक्र लब पर ख़ुदा दिल के अन्दर
यूँ ही ज़िन्दगानी गुज़ारा करूँ मैं
दमे वापसी तक तेरे गीत गाऊँ
मुहम्मद मुमज्जद पुकारा करूँ मैं

(तलख़ीस हिजाज़े जदीद मुफ़्तिये आज़म नम्बर, स. 92, अनवारे मुफ़्तिये आज़म, स. 66)

(1) मुफ़्तिये आज़म और एहतिरामे सादात

हैदर आबाद का वाक़िआ है कि मक्का मस्जिद का अज़ीमुश्शान इज्लास जिसमें कमोबेश साठ हज़ार मुसलमानों का इज्तिमाअ़ था और फिर हर एक दिल में मुफ़्तिये आज़म की ज़ियारत की तमन्ना और उस पर सादाते किराम का हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म से गुज़ारिश करना कि आप कम अज़ कम कुर्सी पर रौनक़ अफ़रोज़ हो जाएं ताकि मुश्ताक़ाने दीद की तमन्नाएं पूरी हो जाएं। यह वह मन्ज़र है जिन्हें फ़रामोश नहीं किया जा सकता मगर उन मनाज़िर से ज़्यादा फ़रामोश न किये जाने के लायक हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वह जवाब है जो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने अपनी ज़बाने फ़ैज़े बार से फ़रमाया था कि आले रसूल नीचे हों और मैं कुर्सी पर बैठूँ यह मुझे कभी गवारा नहीं। अम्र (हुक्म) पर अदब को तरजीह (अव्वलियत) देकर एक और वारुफ़्तगी की बिना डाली जिसे हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पाकीज़ा जज़्बात की याद ताज़ा कर दी।

हैदरआबादी हैरान व सुशदिर रह गए, उनके दिलों में इश्क़े रसूल की शमा फ़रोज़ां होने लगी और पूरा मजमा नशा-ए-महब्बत में सरशार नज़र आने लगा।

(मुलख़्ख़सन हिजाज़े जदीद मुफ़्तिये आज़म नम्बर, स. 61, अनवारे मुफ़्तिये आज़म, स. 63)

(2) ताज़ीमे आले रसूल का अजीबो ग़रीब वाक़िआ

हुज़ूर बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब क़िब्ला आज़मी साबिक़ शैख़ुल हदीस जामिआ अशरफ़िया मुबारकपूर दामत बरकातहुमुल आलिया रक़म तराज़ हैं कि:

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत अलैहिर्रहमा नई तामीरात के संगे बुनियाद के मौक़े पर एक आल

इन्डिया तालीमी कान्फ्रेंस का ऐलान फ़रमा चुके थे, कान्फ्रेंस हुई और बे मिसाल हुई। उसमें अजरहे दीन परवरी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म और हज़रत मौलाना सय्यद आले मुस्तफ़ा अलैहिमर्रहमा भी शरीक हुए, कुछ अक़ीदत मन्दों ने अहले किछोछा के बायकाट से मुतास्सिर होकर उस ख़ानदान की दूसरी शाख़ (अहले बस्खारी) के सज्जादा नशीन मारुफ़बह बाबू मियां को शिरकत की दावत दी तो वह भी शरीक हुए।

उलमाए देवबन्द के खिलाफ़ उलमाए अरब व अजम के फ़तावा कुफ़्र से सारी दुनिया वाक़िफ़ है और आला हज़रत और उनके ख़ानदान को इस सिलसिले में हक़ की हिमायत और सच की जुम्बादारी में जो तक़द्दुम (पहल) हासिल है वह किसी की निगाह से पोशीदा नहीं अब सूरते हाल यह है कि बाबू मियां जिनके अज्दाद (बाप, दादा) पर देवबन्दियों की हिमायत का इल्ज़ाम था, उस जल्सए संगे बुनियाद में शिरकत के मौक़े पर हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैह को सलाम किया, मुसाफ़हा के लिये हाथ बढ़ाया और ख़ुद ही तआरुफ़ कराया होगा या किसी ने बताया होगा या पहले से ही हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि तआला अलैह को मालूम था। बहर हाल हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द ने न सलाम का जवाब दिया न मुसाफ़हा किया, बल्कि फ़रमाया साहेब आपके ख़ानदान के लोग उलमाए देवबन्द के हामी रहे हैं और उन पर उलमाए अरब व अजम के कुफ़्र के फ़तवे हैं, अगर आप भी उस रविश में उन्हीं के हमराह हैं तो मैं आपसे कैसे सलामो कलाम कर सकता हूँ जब कि हदीस शरीफ़ में ऐसे लोगों से क़तअ तअल्लुक़ (रिश्ता ख़त्म करने) का हुक्म आया है।

बाबू मियां ने कहा हुज़ूर मैं अकाबिरे देवबन्द की तकफ़ीर में सारी दुनिया के अहले इस्लाम का साथी हूँ, चुनाँचे उसी वक़्त उन्होंने इस मज़मून की अपनी दस्तख़ती तहरीर हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के हुज़ूर पेश की।

उस वक़्त लोगों ने एक अजीबो ग़रीब मन्ज़र देखा। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने बाबू मियाँ से फ़रमाया, साहेबज़ादे आप ज़रा खड़े हो जाएं। न तो बाबू मियाँ यह समझे कि क्यों यह हुक्म हो रहा है, न मजलिस में बैठने वाले ही समझे, मगर यह हुक्म पाकर बाबू मियाँ खड़े हुए तो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने ब आं शानो जलाल, ब आं अज़मतो तक़द्दुस व ब आं रीशे सफ़ेद व रिफ़अत पीरी, एक सब्ज़ा आग़ाज़ नौजवान (बाबू मियां) का पैर दोनों हाथ से पकड़ लिया डबडबाई आँखें उनके चेहरे की तरफ़ उठाकर फ़रमाया : साहेबज़ादे हम तो आपके ग़ुलाम व ख़ाना ज़ादे हैं, हमारे पास जो कुछ है आपके ही जद्दे करीम का दिया हुआ है। हमने शुरू में जो किया आपके ही जद्दे करीम के हुक्म की बजा आवरी और उन्हीं के दीन का परचम बलन्द करने के लिये किया। ऐसा मालूम हो रहा था कि एक चाकर अपने मालिक के पांव पकड़कर उससे मुआफी मांग रहा है। उस वक़्त पूरे मजमे पर रिक़्क़त तारी थी और खुली आंखों से दुनिया देख रही थी कि बिला शुबा हक़्क़ो हिदायत, इताअते शरअ व इत्तिबाए सुन्नत इन्हीं बुज़ुर्गों के दम क़दम से है। दुरूद हो रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जिन्होंने फ़रमाया : مَنْ رَاٰى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ यानी जो बुराई देखे अपने हाथ से

दुरुस्त करे और सलाम हो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म पर कि आप ने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस हुक्म पर पूरी ज़िन्दगी अमल करके शाहराहे हक़ क़ाइम फ़रमा दी। (जहाने मुफ़्तिये आज़म, स. 250)

ख़ुश्बू से बता दिया कि कोई सय्यद साहब हैं

अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही लिखते हैं कि (हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के) इन्तिक़ाल की शब जब लोग तीमार दारी में मसरूफ़ थे, एक सय्यद साहब भी वहाँ मौजूद थे, और वह भी ख़िदमत में लगे हुए थे कि अचानक हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने आँख खोली, और फ़रमाया ! यहाँ कोई सय्यद साहब हैं ? मुझे ख़ुश्बू मेहसूस हो रही है। लोगों ने अर्ज़ किया जी हुज़ूर ! फ़लां सय्यद मुहम्मद हुसैन साहब हैं। आप ने इरशाद फ़रमाया कि ख़िदमत करके मुझे गुनाहगार न बनाएं। आप सिर्फ़ मेरे हक़ में दुआए ख़ैर फ़रमाएं और बस ! (हिजाज़े जदीद मुफ़्तिये आज़म नम्बर, स. 92, अनवारे मुफ़्तिये आज़म, स. 64)

हज़रात ! इन वाक़िआत से ब ख़ूबी पता लगाया जा सकता है कि जब हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु को सादाते किराम से इस दर्जे की महब्बत थी तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ो महब्बत का क्या आलम रहा होगा।

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

बे इजाज़त जिन के घर में जिब्रईल आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत

दुरूद शरीफ़ :

(1) हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की करामतें

बक़ियतुस्सलफ़ हज़रत अल्लामा अश्शाह अलहाज मुहम्मद मुबीनुद्दीन साहब क़िब्ला रज़वी अमरोहवी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि हुज़ूर सय्यदी मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक आशिक़े रसूल, एक दीवानए ख़ुदा थे। अगर इस से पहले कभी आप ने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की किताबे हयात का मुतालआ किया है तो शायद आप को याद होगा जबलपूर का वह तारीख़ी वाक़िआ कि जब आप ने अपने मुरीद के बेहद इसरार पर जबलपूर के इलाक़ों में अपने चन्द ख़ादिमों के साथ तांगे में सवार होकर तशरीफ़ ले जा रहे हैं, तांगा अपनी रफ़्तार पर आगे बढ़ता जा रहा है, चलते चलते एक गांव से गुज़रता है कि सड़क पर एक बच्चा खेलता, कूदता अचानक तांगे के नीचे आ जाता है, तांगे का पहियां उस बच्चे के सीने और पेट के दरमियान से उतर जाता है, लोगों में ग़म व गुस्से की एक लहर दौड़ जाती है, चारों तरफ़ हू का आलम है, पूरी सड़क पर सन्नाटा छा गया, हर इन्सान अपनी अपनी जगह पर परेशान, हर तरफ़ बे चेनी ही बे चेनी नज़र आ रही है, बाप धाड़ें मार, मार कर रो रहा है, मां बच्चे की हालत देख कर पछाड़ें खा रही है, किसी को सुकून व चैन नहीं , मगर हो ही किया

सकता था। इस मजमे में अल्लाह का एक वलिये कामिल, रसूले अरबी का सच्चा आशिक़, गौसुल वरा का सही जा नशीन, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी की चमकती हुई तलवार है, जिन के चेहरए अनवर पर अज़्म व इस्तिक़लाल की एक चट्टान है, तहम्मुल व बुर्दबारी का एक दरया है जो इन्तिहाई सुकून व इत्मीनान की मोजें मार रहा है, वह उस वक़्त देखने से तअल्लुक़ रखता था। आप के लब गुलफ़शां हुए और आप ने ख़ादिम से फ़रमाया कि इस बच्चे को उठा कर लाओ। किसी की हिम्मत न हुई चूँकि ब ज़ाहिर उस के जिस्म में जान नहीं। दुनिया ज़ाहिर पर नज़र रखती है, मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे ज़ाहिर व बातिन दोनों पर यकसां नज़र रखते हैं और हक़ीक़त से आशना होते हैं, वह जानते हैं कि यह क़ज़ा हक़ीक़ी नहीं बल्कि क़ज़ा मुअल्लक़ है बक़ौल हज़रत आरिफ़े रूमी।

लोहे महफ़ूज़ अस्त पेशे औलिया

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के मुकर्रर (दोबारा) इरशाद फ़रमाने पर एक ख़ादिम आगे बढ़ा और उसने बच्चे को उठाकर ख़िदमत में पेश कर दिया, उस बच्चे को लेकर जो बज़ाहिर दम तोड़ता हुआ नज़र आ रहा था, ज़िन्दगी की आख़री सिसकियाँ ले रहा था, बच्चा हज़रत के हाथों में है, आपने उस बच्चे के सीने और पेट के दरमियान अपना दस्ते शिफ़ा फेरा, फिर क्या था कि अचानक वह बच्चा मुस्कुरा पड़ा, जैसे निकली हुई रूह वापस आ गई हो, वह बच्चा उछल पड़ा और अपने घर की तरफ़ दौड़ा, लोग उसे बुलाते रह गए और बच्चा यह पैग़ाम देता हुआ घर चला गया:

मदीने के गदा देखे हैं दुनिया के इमाम अकसर
बदल देते हैं तक़दीरें मुहम्मद के ग़ुलाम अकसर

(मक़ालाते नईमी अव्वल, स. 18, 19)

(2) हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म बयक वक़्त बरैली में और हरमैन तैय्यिबैन में

शारेह बुख़ारी फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद शरीफ़ुल हक़ साहब क़िब्ला अमजदी रज़वी सदर शोअबए इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया मुबारकपूर लिखते हैं कि:

एक साल बरैली शरीफ़ के एक हाजी साहब वापस आए तो लोगों से दरयाफ़्त किया कि हज़रत मुफ़्तिये आज़मे हिन्द कब हज के लिये गए थे और वापस हुए या नहीं? लोगों ने उन्हें बताया कि हज़रत मुफ़्तिये आज़मे हिन्द इमसाल हज के लिये नहीं गए थे, उन्होंने ईदगाह में ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ाई है, हमने ख़ुद पढ़ी। सब हाज़िरीन ने मुत्तफ़क़ुल लफ़्ज़ होकर यही बताया। उन्होंने हैरत से कहा, आप लोग कैसी बातें कर रहे हैं, मैंने उनको तवाफ़ करते देखा है मस्जिदे हराम में, सफ़ा में, अरफ़ात में उनसे मुलाक़ात की है। मदीना मुनव्वरा मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ते हुए देखा है। मवाजह अक़दस में सलाम अर्ज़ करते हुए देखा है। यह सुनकर सारे हाज़िरीन दम बख़ूद रह गए, लेकिन सबने फिर यही कहा कि तुम्हें धोका हुआ होगा, हज़रत तो इमसाल दौलत कदा ही पर रहे हज के लिये नहीं गए थे। मगर फिर

उन्होंने वताकीद कहा कि धोका कैसा ? मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि मैंने उनसे वहां मुलाकात की है, उनकी दस्त बोसी की, बात चीत की और बिला किसी शुबह के मस्जिद नबवी और मवाजह अक़दस में देखा है। इसका आम चर्चा हुआ सब ने उन हाजी साहब का यही बताया कि तुम जो कहते हो सच है मगर हजरत इमसाल हज के लिये नहीं गए थे। हाजी साहब ने वाक़िआ खुद मुझसे बयान किया और भी बहुत से लोगों से बयान किया।

यह हाजी साहब जब हजरत की खिदमत में हाजिर हुए, हजरत ने उन्हें बहुत प्यार से देखा जां नवाज अन्दाज में मुस्कुराए और हस्बे आदत उनके कदम और आँखों को बोसा दिया। हाजी साहब दम बखुद बैठे टकटकी बाँधे हजरत को देखते रहे, कुछ देर के बाद हजरत उनसे मुखातब हुए और हरमैन तैय्यिबैन के हालात पूछते रहे और एक बार बड़े महब्बत आमेज़ लहजे में फ़रमाया, हाजी साहब हर बात बयान करने की नहीं होती इसका ख़याल रखियेगा। इसी से मुतास्सिर होकर यह हाजी साहब मुरीद हुए। (अनवारे मुफ्तिये आज़म, स. 272)

हुज़ूर मुफ्तिये आज़म गैबदां थे : हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उर्स में शिरकत के लिये हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु देहली तशरीफ ले गए तो कूचए जीलां में क़याम किया। वहाँ एक बद अक़ीदा मौलवी आपसे इल्मे गैब के मस्अले पर बहस करने लगा। साहिबे ख़ाना अशफ़ाक़ अहमद ने आपसे मुअद्दबाना गुज़ारिश की, हुज़ूर यह मौलवी बहुत बद बख़्त है इस पर किसी की बात का असर नहीं होता। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने अपने मेज़बान से फ़रमाया, यह साहब तो अपनी बात सुनाते हैं और वह भी अनसुनी कर दी जाती है। आज मैं इनकी सारी बातें तवज्जोह से सुनूँगा, हाज़िरीन भी ख़ामोशी से सुनें। मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी (देवबन्दी) ने सवा घन्टे तक यह बात साबित करने की कोशिश की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब नहीं था। जब मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी बात करते करते थक कर ख़ामोश हो गया तो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : अगर कोई दलील तुम अपने मौक़फ़ की ताईद में बयान करना भूल गए हो तो याद कर लो। मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी साहब जोश में आ गए और सवा घन्टे तक बोलने के बाद कहा : पस यह बात अच्छी तरह साबित हो गई है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को इल्मे ग़ैब नहीं था। तुम (यानी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द से कहा कि तुम) अपने बातिल अक़ीदे से फ़ौरन तौबह कर लो। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को अल्लाह तआला ने ग़ैब का इल्म अता नहीं फ़रमाया था।

अब मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी देवबन्दी से फ़रमाया कि आप इल्मे ग़ैब के रद और नफ़ी में वह सब कुछ कह चुके हैं जो कह सकते थे। अब अगर ज़ेहमत न हो तो मेरे दलाइल इल्मे ग़ैब के सुबूत में सुन लें। मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी ने बिरहम होकर कहा : मैंने तुम जैसे लोगों की सारी दलीलें सुन रखी हैं, मुझे मालूम है कि क्या कहोगे।

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बड़े सब्रो तहम्मुल से फ़रमाया : मौलवी साहब ! मेरे चन्द सवालात हैं आप उनका जवाब दे दीजिये, उसमें आपके सारे सवालों का जवाब मौजूद है।

(1) बेवा मां के हुक़ूक़ बेटा पर क्या हैं ? मौलवी सईदुद्दीन ने तेज़ आवाज़ में कहा कि मैं ग़ैर मुतअल्लिक़ सवाल का जवाब नहीं दूँगा।

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अच्छा तुम मेरे सवालों का जवाब न देना सुन तो लो ! मैंने तुम्हारी बातों को तक़रीबन डेढ़ पौने दो घन्टे तक सुना है, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हु की बात पर देवबन्दी मौलवी ख़ामोश हो गया तो : (2) आपने दूसरा सवाल किया, क्या किसी से क़र्ज़ लेकर रू पोश हो जाना जाइज़ है ? (3) क्या अपने माज़ूर बेटे की किफ़ालत से दस्त कश होकर (उसकी मदद न करके) उसे भीक मांगने के लिये छोड़ा जा सकता है ? (4) क्या हज्ज़े बदल का रुपया किसी से लेकर हज न करना जाइज़ है ?

अभी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने सवालात मुकम्मल भी नहीं किये थे कि मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी देवबन्दी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़िल्लाहु तआला अन्हु के क़दमों में गिर गया और आपका क़दम पकड़कर कहने लगा, बस कीजिये हज़रत मस्अला हल हो गया है और मुझे सारे सवालों के जवाब मिल गए हैं और आज यह बात मेरी समझ में आ गई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इल्मे गैब हासिल था।

इस लिये कि यह चारों ऐब मेरे ही अन्दर मौजूद हैं और मेरे अलावा कोई नहीं जानता, लेकिन आपको सब खबर है। उसी वक़्त मौलवी सईदुद्दीन अम्बालवी देवबन्दी ने नाइबे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर तौबह की और मुरीद हो गए। (यादगारे रज़ा, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म नम्बर, सन् 2006, स. 113 रज़ा अकेडमी)

हज़रात ! आपने सुन लिया कि हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रौशन ज़मीरी की क्या शान है तो महबूबे खुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ग़ैबदानी का क्या आलम होगा।

भटकने वालों को देते थे रौशनी हर दम
चिराग़े राहे हिदायत थे मुफ़्तिये आज़म

सलाम उस पर जो नाइबे ग़ौसे आज़म और मुफ़्तिये आज़म था। सलाम उस पर जो मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद था। सलाम उस पर जो गुफ़्तारो किरदार में नमूनए अस्लाफ़ था। सलाम उस पर जिसको देखकर खुदा याद आता था। सलाम उस पर उस मुस्तफ़ा रज़ा पर जो अक्से जमाले अहमद रज़ा था।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

ख़ौफ़े ख़ुदा

अज़्ज़ व जल्ला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِهِ الْکَرِیْمِ وَ عَلٰی اٰلِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُکَرَّمِیْنَ وَابْنِهِ الْکَرِیْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِیْلَانِیِّ الْبَغْدَادِیِّ وَاٰلِهِ الْکَرِیْمِ خواجہ غریب نواز الْاَجْمِیْرِیِّ اَجْمَعِیْنَ ○

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और हर गिज़ न मरना मगर मुसलमान। (पारा4, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : ऐ ईमान वालो ! ख़ौफ़े ख़ुदा वह नेक और मक़बूल अमल है कि जिस दिल में पैदा हो जाता है वह दिल नेकी और तक़वा का मरकज़ बन जाता है और वह शख़्स हर क़िस्म के गुनाह व बुराई से दूर और महफ़ूज़ नज़र आने लगता है और यह ख़ौफ़े ख़ुदा का नतीजा होता है कि जिस्म के तमाम अअ्ज़ा यानी आँख, कान, ज़बान, हाथ, पैर और दिल व दिमाग़ सब के सब नेक और अच्छे कामों में मशग़ूल नज़र आते हैं। यह ख़ौफ़े ख़ुदा के बरकात व हसनात होते हैं कि आँख बुराई नहीं ख़ूबी और भलाई देखती है। दिल व दिमाग़ बुरा और ख़राब नहीं बल्कि भला और अच्छा सोचते दिखाई देते हैं। हाथ और पेर गुनाह व ज़ुल्म के रास्ते पर चलने की बजाए नेक और हक़ व सच रास्ते पर चलते नज़र आते हैं।

हज़रात ! मेरी गुफ़्तुगू का खुलासा यह है कि जब आदमी अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कर लेता है और अल्लाह तआला से डरने लगता है तो हर क़िस्म के गुनाह और बुराई से महफ़ूज़ हो कर अल्लाह तआला की बारगाह में महबूब व मक़बूल बन जाता है और ख़ौफ़े ख़ुदा का इनआम व इकराम बड़ा अज़ीम होता है। हर नेक काम का बड़ा बेहतर अज्र और बदला है। दुनिया में ख़ैरो बरकत और आख़िरत में इज़्ज़त व अज़मत और नजात व बख़्शिश और फिर जन्नत की नेअ्मत। लेकिन ख़ौफ़े ख़ुदा, अल्लाह तआला से डरना वह नेअ्मत व दौलत है कि क़ुरआने मजीद बयान फ़रमाता है कि जिस दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा है अल्लाह तआला उस को दो जन्नत अता फ़रमाएगा।

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ○

तर्जमा : और जो अपने रब के हुजूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।
(पारा 27, रुकू 13, सूरए रहमान)

अल्लाह तआला से डरने वाले के तमाम गुनाह झड़ जाते हैं

महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ 1 : जब बन्दे का जिस्म खौफ़े खुदा से काँपता है तो उस के गुनाह उस के बदन से ऐसे झड जाते हैं : كَمَا يَتَحَاتُّ عَنِ الشَّجَرَةِ وَرَقُهَا ○

जैसे दरख़्त को हिलाने से उसके पत्ते झड़ जाते हैं। (अत्तरगीब वत्तरहीब, जि. 4, स. 117, एहया उलूम, जि. 4, स. 142, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 5)

हदीस शरीफ़ 2 : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया है अल्लाह तआला फ़रमाएगा : اَخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ ذَكَرَنِىْ يَوْمًا اَوْخَافَنِىْ فِىْ مَقَامٍ ○

दोज़ख से उस शख़्स को निकाल दो जिस ने एक दिन भी मुझे याद किया या मेरे खौफ़ के से कहीं भी मुझ से डरा। (तिर्मिज़ी, स. 712/4, हाकिम मुस्तदरिक, स. 141/1, बैहक़ी, स. 201/1)

रोने वाली आँख आग से महफ़ूज़ है

हदीस शरीफ़ 3 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना : عَيْنَانِ لَا تَمَسُّهُمَا النَّارُ عَيْنٌ بَكَتْ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَعَيْنٌ بَاتَتْ تَحْرُسُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

यानी दो आँखों को आग नहीं छुएगी (1) वह आँख जो अल्लाह तआला के खौफ़ से रोई और (2) वह आँख जिस ने अल्लाह तआला की राह में पहरा देकर रात गुज़ारी। (तिर्मिज़ी, जि. 4, स. 92, हाकिम मुस्तदरिक, जि. 2, स. 92, अत्तरगीब वत्तरहीम, जि. 2, स. 157)

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि शहे तैबा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला को दो क़तरों और दो निशानों से ज़्यादा कोई चीज़ पसन्द नहीं।

قَطْرَةُ دُمُوْعٍ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَقَطْرَةُ دَمٍ تُهْرَقُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ○

यानी अल्लाह तआला के खौफ़ से (बहने वाला) आंसू का क़तरा और अल्लाह तआला की राह में बहने वाला ख़ून का क़तरा। (तिर्मिज़ी, जि. 4, स. 190, तबरानी कबीर, जि 8, स 235, अत्तरगीब वत्तरहीम, जि 2, स. 192)

हदीस शरीफ़ 5 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला का इरशादे पाक है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मैं अपने बन्दे पर दो खौफ़ और दो अमन इकट्ठे नहीं करूँगा।

اِذَا خَافَنِیْ فِی الدُّنْیَا اٰمِنْتُهٗ یَوْمَ الْقِیَامَةِ وَاِذَا اٰمِنَنِیْ فِی الدُّنْیَا اَخَفْتُهٗ یَوْمَ الْقِیَامَةِ

यानी अगर वह मुझ से दुनिया में ख़ौफ़ रखेगा तो मैं उस को क़ियामत के रोज़ अमन में रखूँगा और अगर वह मुझ से दुनिया में बे ख़ौफ़ रहा तो मैं उस को क़ियामत के दिन ख़ौफ़ में मुब्तला करूँगा।

हदीस शरीफ़ 6 : मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक दिन एक तिनका हाथ में लेकर फ़रमाया : काश ! मैं एक तिनका होता, कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न होता। काश ! मुझे मेरी मां न जनती। और आप ख़ौफ़े ख़ुदा से इस क़दर रोया करते थे कि आप के चेहरे पर आंसुओं के बहने की वजह से दो स्याह निशान पड़ गए थे। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 7)

हदीस शरीफ़ 7 : मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा से रोता है वह जहन्नम में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा।

حَتّٰی یَعُوْدَ اللَّبَنُ فِی الضَّرْعِ ○

यानी इस तरह जैसे कि दूध दुबारा अपने थनों में नहीं जाता। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 292, नसाई, जि. 2, स. 54, मुस्नद अहमद, जि. 3, स. 301, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 8)

महबूबे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब था कि ख़ौफ़े ख़ुदा से हर वक़्त लरज़ा बरन्दाम रहा करते थे और बोल चाल में बहुत एहतियात फ़रमाते और कम बोलना और मुख़तसर गुफ़्तुगू को अपनी आदत बना रखी थी। इसी वजह से कभी कभी अपने मुंह में एक पत्थर रख लेते और फ़रमाया करते थे कि कम बोलने में बड़ी आफ़ियत है।

हदीस शरीफ़ : مَنْ سَکَتَ نَجَا ○ यानी जो चुप रहा नजात पाया।

(मिश्कात शरीफ़, स. 413, कशफ़ुल महजूब, स. 513)

हज़रात ! मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस क़दर बलन्द व बाला शान व अज़मत है कि अम्बियाए किराम के बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक न कोई अल्लाह तआला का नेक बन्दा हुआ है और न सुबह क़ियामत तक होगा जिस क़दर नेक और परहेज़गार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे।

ख़ौफ़े ख़ुदा की बरकत से गुनाहगार जन्नत का हक़दार हो गया

ऐ ईमान वालो ! आलिमे रब्बानी, हुज्जतुल इस्लाम, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक वाक़िआ नक़्ल किया है कि एक नौजवान एक औरत की महब्बत में मुब्तला हो गया वह औरत एक क़ाफ़ला के साथ सफ़र पर रवाना हुई जवान आशिक़ को जब मालूम हुआ तो वह भी क़ाफ़ला के साथ चल पड़ा, जब क़ाफ़ला जंगल में

पहुँचा तो रात हो गई थी। क़ाफ़ला जंगल में ठहर गया और सब लोग थके मान्दे थे सो गए, तो वह नौजवान चुपके से उस औरत के पास पहुँचा और कहने लगा मैं तुझ से बहुत महब्बत करता हूँ और तेरी महब्बत के सबब ही मैं क़ाफ़ला के साथ आया हूँ, औरत ने कहा जाकर देख लो कोई जाग तो नहीं रहा है ? जवान बड़ा खुश हुआ और सारे क़ाफ़ला का चक्कर लगाया और वापस आकर कहने लगा कि सब लोग ग़ाफ़िल पड़े सो रहे हैं। औरत ने पूछा : अल्लाह तआला के बारे में तेरा क्या ख़याल है ? क्या वह भी सो रहा है ? तो जवान बोला : अल्लाह तआला तो न कभी सोता है, न उसे कभी ऊंघ आती है। तब औरत बोली : लोग सो गए तो क्या हुआ, अल्लाह तआला तो जाग रहा है और हमें देख रहा है और उसी से हम को डरना चाहिये। जवान ने जब यह बात सुनी तो ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ गया और बुरे इरादे से ताइब हो कर घर वापस चला गया। कहते हैं कि जब उस जवान का इन्तिक़ाल हुआ तो किसी ने ख़्वाब में देख कर उस से पूछा : कैसे गुज़री ? नौजवान ने जवाब दिया : मैं ने अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से एक गुनाह को छोड़ा था तो अल्लाह तआला ने उसी सबब से मेरे तमाम गुनाहों को बख़्श दिया। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 6)

हज़रात ! आलिमे रब्बानी हज़रत हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बनी इसराईल का एक वाक़िआ लिखते हैं कि बनी इसराईल की एक औरत ने इफ़्लास (ग़रीबी) व तंग दस्ती से परेशान होकर एक ताजिर के घर जाकर खाने का सवाल किया, ताजिर ने कहा : अगर तुम मेरी आरज़ू पूरी कर दो तो जो चाहो मुझ से ले सकती हो। औरत बे चारी चुप चाप ख़ाली हाथ घर लौट आई और जब बच्चों का भूक की शिद्दत से रोना बिलकना देखा तो वह औरत दोबारा उसी ताजिर के पास लौट गई और खाने का सवाल किया। ताजिर ने फिर वही बात की जो पहले कह चुका था।

औरत रज़ा मन्द हो गई मगर जब यह दोनों तन्हाई में पहुँचे तो औरत ख़ौफ़ से कांपने लगी। ताजिर ने पूछा, किस से डरती हो ? उस औरत ने कहा : रब तआला के ख़ौफ़ से लरज़ां हूँ जिस ने हमें पैदा किया। तो ताजिर ने कहा कि जब तुम इतनी मोहताजी और तंग दस्ती में भी ख़ुदाए तआला से डरती हो तो मुझे भी अल्लाह तआला के अज़ाब से डरना चाहिये। यह कहा और औरत को बहुत सा माल व मनाल दे कर इज़्ज़त के साथ रुख़सत कर दिया। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर वही भेजी कि फ़लां बिन फ़लां के पास जाओ और उसे मेरा सलाम कह दो और कहना कि मैं ने उस के तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से उस ताजिर के पास आए और उस से पूछा कि तुम ने कौन सी ऐसी नेकी की है ? जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 8)

हज़रात ! ख़ौफ़े ख़ुदा वह नेकी है जिस के सबब बन्दा गुनाहों से पाक व साफ़ हो कर नेक व सालेह बन जाता है।

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाले पर दोज़ख़ की आग हराम है

हज़रात ! बरोज़े क़ियामत एक शख़्स को लाया जाएगा, जब उस के आमाल तोले जाऐंगे तो बुराइयों का पलड़ा भारी हो जाएगा। चुनाँचे उसे जहन्नम में डालने का हुक्म मिलेगा उस वक़्त उस की पलकों का एक बाल अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करेगा कि ऐ रब तआला ! तेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया था : जो शख़्स अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से रोता है तो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग को हराम कर देता है और मैं तेरे ख़ौफ़ से रोया था। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएगा इस शख़्स को एक अश्कबार बाल के बदले जहन्नम से बचा लिया जाएगा। उस वक़्त हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पुकारेंगे : फ़लां बिन फ़लां एक बाल के बदले नजात पा गया।

(मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 8)

हदीस शरीफ़ 8 : आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कोई ऐसा बन्दए मोमिन नहीं जिस की आँखों से ख़ौफ़े ख़ुदा से मक्खी के पर के बराबर आंसू बहे तो उस शख़्स को कभी जहन्नम की आग छुए।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. :33, स. 142, तबरानी कबीर, जि. 10, स. 17, इब्ने माजह, जि 2, स. 309)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है कि हज़ार दीनार राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा में एक आंसू बहा लेना ज़्यादा पसन्द है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 424)

हदीस शरीफ़ 9 : हज़रत औन बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा से बहने वाले आंसू इन्सान के जिस्म के जिस हिस्से पर लगते हैं उस हिस्से को अल्लाह तआला जहन्नम पर हराम कर देता है। (सही इब्ने हब्बान, जि. 2, स. 92)

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्ज़िर रहमतुल्लाहि अलैह जब ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते तो आंसुओं के पानी को अपनी दाढ़ी और चहरे पर मल लिया करते और फ़रमाते कि मैंने सुना है कि आंसुओं के पानी जहाँ लग जाएंगे उसे जहन्नम की आग नहीं जलाएगी। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 9)

मोमिन के आंसू दोज़ख़ की आग को बुझा देंगे

हज़रात ! बरोज़े क़ियामत दोज़ख़ से एक निहायत ही बलन्द आग बाहर निकलेगी और उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब बढ़ेगी। उम्मत उस आग से बचने की कोशिश करेगी और कहेगी ऐ आग ! तुझे नमाज़ियों, सदक़ा देने वालों, रोज़ा दारों और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों का वास्ता वापस चली जा ! मगर आग बराबर पढ़ती चली जाएगी। तब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पानी से लबरेज़ एक प्याला अल्लाह के हबीब, उम्मत के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश करेंगे और कहेंगे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इस पानी से आग पर छींटे मारिये तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आग पर पानी के छींटे मारेंगे तो वह आग फ़ौरन बुझ जाएगी। उस वक़्त

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिब्रईल अलैहिस्सलाम से उस पानी के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाऐंगे तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम कहेंगे कि यह वह पानी है जो ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाले आप के गुनाहगार उम्मतों की आँखों से निकले थे और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं यह पानी आप की ख़िदमत में पेश करूँगा और आप उस से जहन्नम की आग को बुझा दें। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 9)

ऐ ईमान वालो ! जब मोमिन के आँख के आंसू जहन्नम की आग को बुझा देते हैं तो महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आंसुओं की शान व अज़मत का किया आलम होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

वल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं

हज़रात ! अल्लाह तआला की बारगाहे करम व बख़्शिश में रोना, आंसू बहाना बहुत ही मक़बूल और पसन्दीदा अमल है। हज़रात अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की गिरया व ज़ारी के वाक़ेआत ख़ूब मशहूर हैं और महबूबे ख़ुदा इमामुल अम्बिया मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो रात रात भर सज्दे में सरे अनवर रख कर रोते रहते और अल्लाह तआला की बारगाह में उम्मती, उम्मती की सदा लगा कर उम्मत के हक़ में नजात व बख़्शिश की दुआ फ़रमाया करते थे।

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुआ मांगा करते थे कि ऐ अल्लाह तआला मुझे ऐसी आँखें अता फ़रमा जो तेरे ख़ौफ़ से रोने वाली हों। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 2, स. 184)

हज़रात ! हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँखें तो हमेशा रोती ही रहती थीं लेकिन इस हदीस पाक में तालीमे उम्मत और हिदायत के लिये फ़रमाया ताकि उम्मती की आँखें भी ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाली हो जाएं।

ऐ ईमान वालो ! आलिमे रब्बानी हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक का क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाले का एक आंसू समन्दरों जैसी तवील व अरीज़ आग को बुझा देता है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 424)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की अश्कबारी

हदीस शरीफ़ : हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि आफ़ताबे नुबुव्वत महताबे रिसालत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की गोद में सरे अनवर रख कर आराम

फ़रमा थे। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आख़िरत की याद करके (ख़ौफ़े ख़ुदा में) रो पड़ीं और उन के आंसू आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए अनवर पर गिरे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँख खुल गई तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया आएशा ! क्यों रोती हो ? तो उम्मुल मोमिनीन ने अर्ज़ की हुज़ूर ! आख़िरत को याद किया तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से) आँखें अश्कबार हो गईं। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 295)

इब्ने अली इब्ने हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का रोना

हज़रत ज़ैनुल आबेदीन बिन अली बिन हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जब वुज़ू से फ़ारिग़ होते तो कांपने लग जाते, लोगों ने सबब मालूम किया तो आप ने फ़रमाया : तुम पर अफ़सोस है, तुम्हें पता नहीं कि मैं किस की बारगाह में जा रहा हूँ और किस से मुनाजात का इरादा कर रहा हूँ। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 423)

ख़न्दा व गिरया ज़ारी

अल्लाह तआला का फ़रमान : اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝

(पारा 27, रुकू 7)

तर्जमा : तो क्या इस बात से तुम तअज्जुब करते हो और हंसते हो और रोते नहीं (कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ : इस आयत के नाज़िल होने के बाद नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम कभी नहीं हंसे, सिर्फ़ तबस्सुम फ़रमाया करते थे।

हज़रात ! उम्मत की फ़िक्र का यह हाल था, यह सब कुछ उम्मती के ग़म में था वर्ना आप अल्लाह तआला के हबीब व महबूब हैं सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

और एक रिवायत में है कि इस आयते करीमा के नुज़ूल के बाद आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को हंसते और मुस्कुराते हुए नहीं देखा गया यहाँ तक कि आप का विसाल शरीफ़ हो गया। (तफ़सीरे रूहुल मआनी, जि. 15, स. 111, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 626)

हंसो कम, ज़्यादा रोओ

हदीस शरीफ़ : ज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक दिन मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे करीम से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुछ लोगों को देखा कि हंस हंस कर बातें कर रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के पास ठहर गए उन्हें सलाम किया और उन से फ़रमाया कि दुनिया की तमाम लज़्ज़तों को मुनक़तअ़ करने वाली (मौत) को अकसर याद किया करो। फिर एक मरतबा आप का गुज़र एक ऐसी जमाअत से हुआ जो हंस रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें देख कर फ़रमाया : वल्लाह अगर तुम वह जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम कम हंसते और ज़्यादा रोते। (हिलयतुल औलिया, जि. 9, स. 263)

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को नसीहत की

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब अलैहदा होना चाहा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मुझे नसीहत कीजिये, हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम !

(1) खुद को झगड़ों से बचाइये। (2) ज़रूरत के बग़ैर क़दम न उठाइये। (3) तअज्जुब के बग़ैर मत हंसिये। (4) गुनाहगारों को उनकी ख़ताओं की वजह से शर्मिन्दा न करिये। (5) और अपनी तरफ़ से रब के हुज़ूर रोते रहिये। (मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 626)

हदीस शरीफ़ : महबूबे दावर शफ़ीए महशर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है। (इब्ने माजह, स. 309)

जवानी में हंसना बुढ़ापे में रुलाता है

महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : (1) जो शख़्स जवानी में हंसता है, बुढ़ापे में रोता है। (2) जो मालदारी में हंसता है फ़क्र में रोता है। (3) और जो शख़्स ज़िन्दगी में हंसता है मौत के वक़्त रोता है।

(मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 627)

रोना न आए तो रोने जैसा चेहरा बना लो

हदीस शरीफ़ : शाहे तैबा का इरशाद है कि कुरआन पढ़ो और रोओ (यानी नमाज़ पढ़ो और रोओ, दुआ मांगो और रोओ, ज़िक्र करो और रोओ) अगर रोना न आए तो रोने जैसा चेहरा बनाओ। (इब्ने माजह, स. 309)

आक़ा करीम इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद

शहज़ादए रसूल हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह आयते करीमा सुनी।

अल्लाह का फ़रमान : فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ج

तर्जमा : तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं (पारा 10, रुकू 17, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

तो आप ने फ़रमाया कि दुनिया में क़म हंसो वर्ना आख़िरत में बहुत रोना पड़ेगा और यह तुम्हारे आमाल की जज़ा होगी। मज़ीद फ़रमाया कि मुझे इस हंसने वाले पर तअज्जुब होता है जिस के पीछे जहन्नम है और उस मसरूर व शादां पर तअज्जुब होता है जिस के पीछे मौत लगी हुई है।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक ऐसे जो उन के ग़रीब से गुज़र हुआ जो हंस रहा था। आप ने पूछा ऐ बेटे ! क्या तूने पुल सिरात को उबूर (पार) कर लिया है ? उस ने कहा नहीं तो आप ने फ़रमाया किया तुझे यह मालूम है कि तू जन्नत में जाएगा। आप ने फिर पूछा तो वह जवान न बोला। आप ने फ़रमाया फिर कस लिये हंस रहे हो ? उस के बाद उस जवान को कभी भी हंसते हुए नहीं देखा गया। (मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 627)

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नसीहत

हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की। ऐ शहज़ादए रसूल आप मुझे नसीहत कीजिये ! तो हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ सुफ़ियान ! (1) झूटे शख़्स में मुरव्वत नहीं होती। (2) हसद करने वाले में ख़ुशी नहीं होती। (3) बद ख़ुल्क़ के लिये सरदारी नहीं होती। (4) और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ सुफ़ियान ! अल्लाह तआला ने जिस चीज़ से मना फ़रमाया है उस को छोड़ दोगे तो आबिद हो जाओ गे। (5) अल्लाह तआला की तक़सीम पर राज़ी रहोगे तो मुसलमान होगे। (6) जैसी दोस्ती तुम लोगों से चाहते हो, तुम भी उन के साथ वैसी ही दोस्ती रखो तब तुम मोमिन होगे। (7) बुरों से दोस्ती न रखो वर्ना तू भी बुरे अमल करने लगेगा। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 425)

हदीस शरीफ़ : اَلْمَرْءُ عَلٰی دِیْنِ خَلِیْلِهٖ فَلْیَنْظُرْ اَحَدُ کُمْ مَنْ یُّخَالِلُ

यानी आदमी अपने दोस्त के तरीक़े पर अमल करता है इस लिये तुम देखो कि तुम्हारी दोस्ती किस से है। (हिलयतुल औलिया जि. 3, स. 194 कन्ज़ुल उम्माल, जि. 9, स. 21)

और फ़रमाया अपने कामों में उन से मशवरा लो जो ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हों। (8) और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया जो शख़्स बग़ैर क़बीले के इज़्ज़त चाहे और बग़ैर हुकूमत के हैबत (दबदबा) चाहे उस को चाहिये कि अल्लाह तआला की ना फ़रमानी की ज़िल्लत से निकल कर अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी में आ जाए। (9) और फ़रमाया कि जो आदमी बुरों की सोहबत इख़्तियार करता है सलामत नहीं रहता। (10) और जो शख़्स बुरी जगह जाता है बद नाम होता है। (11) और जो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त नहीं करता शर्मिन्दगी उठाता है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 425)

हज़रात ! शहज़ादए रसूल हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादात व फ़रमूदात हीरे जवाहरात से ज़्यादा क़ीमती बल्कि अनमोल हैं मगर ! जिस तरह हीरे जवाहरात के लिये जोहरी या बादशाह चाहिये उसी तरह इन अनमोल फ़रमूदात व इरशादात पर अमल करने के लिये नेक व सालेह तबीअत का मुसलमान चाहिये।

एक हज़ार में से 999 जहन्नम में और एक जन्नत में

हदीस शरीफ़ : मेरे आक़ाए करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से फ़रमाएगा कि उठिये और जहन्नमियों को जहन्नम में भेज दीजिये। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे या रब तआला ! कितनों को जहन्नम में भेजूं ! तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि हर (एक) हज़ार में से नो सो निनानवे को (जहन्नम) में भेज दीजिये। (और एक को जन्नम में) (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. : 4 ,स. 230, हिलयतुल औलिया, जि. 6, स. 187, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 14, स. 384)

सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने जब यह फ़रमान सुना तो खौफ़े खुदा से (रोने लगे) और हंसना मुस्कुराना छोड़ दिया। हबीबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब अपने गुलामों का यह हाल मुशाहदा फरमाया तो इरशाद फ़रमाया कि अमल करो और इत्मीनान रखो! सहाबए किराम यह सुनते ही खुश हो गए। (मुकाशिफतुल कुलूब, स. 296)

ऐ ईमान वालो! यह रोने वाले, खौफ़े खुदा में आंसू बहाने वाले, मामूली मुसलमान न थे। महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते नुबुव्वत पर ईमान लाने वाले, तमाम औलिया, अक़्ताब व अब्दाल से अफ़ज़ल व आला सहाबए किराम थे। तो मालूम हुआ कि ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाले, आंसू बहाने वाले मामूली लोग नहीं होते हैं बल्कि वह लोग ख़ौफ़े ख़ुदा में लरज़ते, कांपते हैं और आंसू बहाते हैं जो अल्लाह तआला की बारगाह में महबूब व मक़बूल होते हैं।

हज़रात! इस दुनिया से आख़री सफ़र हो उस से पहले अपने रब तआला रहमान व रहीम मौला तआला की बारगाहे बे कस पनाह में खूब रो रो कर तौबा व इस्तिग़फ़ार करके मुआफ़ी मांग लो वर्ना जहन्नम के भड़कते हुए शोले कैसे बरदाश्त कर सकोगे?

जहन्नम का अज़ाब : जहन्नम का मशरूब गर्म पानी के पीते ही पेट की अतड़ियां सब कट कट कर बाहर आ जाएंगी तो लोग जहन्नम में मौत की तमन्ना करेंगे मगर मौत नहीं आएगी। उन के पांव, उन की पेशानियों से बन्धे होंगे उन के चेहरे गुनाहों से काले होंगे, उन को बाँध कर मुंह के बल डाल दिया गया होगा, उन के दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे आग ही आग होगी। उन का खाना, पीना, बिस्तर, लिबास सब कुछ आग का होगा। उन के लिये लोहे के हथोड़े होंगे जिन से उन के सरों को तोड़ा जाएगा, उन के मुंह से पीप बहेगी, दोज़ख की आग की गर्मी से उन की आँखों की पुतलियां उन के रुख़सारों पर बहेंगी जिस से उन के रुख़सारों का गोश्त और बढ़ जाएगा वह लोग उस वक़्त मौत की तमन्ना करेंगे मगर उन्हें मौत कभी नहीं आएगी।

जहन्नम के सांप और बिच्छू उन के जिस्म से चिमटे हुए होंगे। तो यह मनाज़िर देख कर तुम्हारा क्या हाल होगा। (मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 297)

हज़रात! अल्लाह तआला रहमान व रहीम परवरदिगार मोमिन बना कर ज़िन्दा रखे और मोमिन बना कर इस दुनिया से उठाए। बे शक मोमिन ही जन्नत का हक़दार है।

मेरे आक़ाए नेअमत, सरकार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

हज़रात! हर मोमिन को चाहिये कि वह अज़ाबे इलाही से डरता रहे और अपने आप को ख़्वाहिशाते नफ़सानी से रोकता रहे।

अल्लाह तआला का फ़रमान : فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝ وَاٰثَرَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا ۝ فَاِنَّ الْجَحِیْمَ هِیَ الْمَاْوٰى ۝
وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰى ۝

तर्जमा : तो वह जिस ने सरकशी की और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी। तो बेशक जहन्नम ही उस का ठिकाना है और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है। (पारा 30, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी जिस किसी ने ना फ़रमानी की और दुनिया की ज़िन्दगी को सब कुछ जाना, उस का ठिकाना जहन्नम है और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा और अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका तो उस का ठिकाना जन्नत है।

हज़रात ! जो इन्सान अज़ाबे इलाही से बचता है और सवाब व रहमत का उम्मीदवार होता है, उसे चाहिये कि दुनियावी मसाइब (मुसीबतों) पर सब्र करे और अल्लाह तआला की इबादत करता रहे और गुनाहों से बचता रहे।

हदीस शरीफ़ : मेरे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जब जन्नती, जन्नत में दाख़िल होंगे और उन को तरह तरह की नेअ़मतों से नवाज़ा जाएगा मगर वह लोग हैरत में होंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मेरे बन्दो हैरान क्यों हो। तो मोमिन अर्ज़ करेंगे या अल्लाह तआला ! तूने एक वादा फ़रमाया था जिस का वक़्त आ गया है। तो फ़रिश्तों को हुक्मे इलाही होगा कि उन के चहरों से परदे उठा दो फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे, या अल्लाह तआला ! यह तेरा दीदार कैसे करेंगे हालांकि यह गुनाहगार थे तो अल्लाह तआला का फ़रमान होगा कि तुम हिजाब उठा दो, यह मेरे बन्दे मेरे ख़ौफ़ से रोने वाले थे और मेरे दीदार के उम्मीदवार थे। उस वक़्त हिजाब उठा दिया जाएगा और जन्नत वाले जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार बे हिजाब करेंगे।

अल्लाह तआला फ़रमाएगा : سَلَامٌ عَلَیْكُمْ عِبَادِیْ فَقَدْ رَضِیْتُ عَنْكُمْ فَهَلْ رَضِیْتُمْ عَنِّیْ ۝
यानी ऐ मेरे बन्दो ! तुम पर सलामती हो मैं तुम से राज़ी हूँ, क्या तुम मुझ से राज़ी हो ?

तो जन्नत वाले अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब तआला ! हम कैसे राज़ी नहीं होंगे, हालांकि तूने हमें वह नेअ़मतें अता की हैं जिन को न किसी आँख ने देखा, न कान ने सुना और न ही किसी दिल में उन का तसव्वुर गुज़रा। और यही इस फ़रमाने इलाही رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۝ (पारा 30, रुकूअ़ 3) का मक़सूद है कि अल्लाह उसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए और سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ ۝ (पारा 23, रुकू 3)

तर्जमा : उन पर सलाम होगा महरबान रब का फ़रमाया हुआ।

(कन्ज़ुल ईमान, मुकाशिफ़तुल कुलूब, स. 10)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

पहला जुमा .... दूसरा बयान

मौत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلاً ط

तर्जमा : वह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो, तुम में किस का काम ज़्यादा अच्छा है। (पारा 29, रुकूअ 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की खबर नहीं

मौत से किस को रुस्तगारी है
आज वह, कल हमारी बारी है

कोई गुल बाक़ी रहेगा न चमन रह जाएगा
पर रसूलुल्लाह का दीने हसन रह जाएगा

हम सफ़ीर रो ! बाग़ में हैं कोई दिन के चहचहे
बुलबुलें उड़ जाऐंगी सूना चमन रह जाएगा

अतलस व कम ख़्वाब के पोशाक पे नाज़ां न हो
इस तने बे जान पर ख़ाकी कफ़न रह जाएगा

सब फ़ना हो जाएंगे काफ़ी व लेकीन हश्र तक
नामे अहमद का ज़बानों पर सुख़न रह जाएगा

बादहू ! खुदाई दस्तूर है कि जो भी इस दुनिया में आया है उसे इस दुनिया से जाना जरूर है। बादशाह हो या गदा, अमीर हो या ग़रीब, मर्द हो या औरत, बच्चा हो या बूढ़ा हर इन्सान और जानदार को मरना ज़रूर है। كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ○

तर्जमा : हर जान को मौत चखनी है। (पारा 4, रुकू 10, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

सद अफ़सोस ! कि हम इन्सान हैं मगर हम को मौत का ख़याल नहीं आता, जब कि हमारा यक़ीन है कि हमें मरना ज़रूर है और हमारे सामने रोज़ाना कई जनाज़े उठते हैं, यह सब देखते हुए भी हम बुरे कामों से बाज़ नहीं आते और हर क़िस्म का गुनाह करते नज़र आते हैं।

हज़रात ! मौत का पन्जा बहुत मज़बूत है, वह हमें बन्द कोठरियों और मज़बूत क़िलों में भी नहीं छोड़ेगा।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ

तर्जमा : तुम जहाँ कहीं हो मौत तुम्हें आलेगी अगरचेह मज़बूत क़िलों में हो।

(पारा 5 रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

मौत से किस को रुस्तगारी है
आज वह, कल हमारी बारी है

मौत की याद

हदीस शरीफ़ : एक मरतबा हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐसी जमाअत को देखा जो हंस हंस कर बातें कर रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मौत को याद करो। अल्लाह तआला की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, जो मैं जानता हूँ अगर वह तुम्हें मालूम हो जाए तो तुम कम हंसो और ज़्यादा रोओ। (अहया उल उलूम, जि. 4, स. 392)

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि : أَكْثِرُوا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ ○

यानी मौत को कसरत से याद किया करो कि यह लज़्ज़तों को मिटाने वाली है। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 57, नसाई, जि. 1, स. 258, इब्ने माजह, स. 314 मिश्कात शरीफ़, स. 140)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि मौत को याद करना बहुत बड़ी भलाई है इस लिये कि मौत की याद से दिल गुनाहों से मुतनफ़्फ़िर (बेज़ार) होता है और नेकी का जज़्बा पैदा होता है।

मौत को याद करने वाला शहीदों के साथ होगा

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने पूछा : या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) किस का हश्र शहीदों के साथ होगा ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हां जो शख़्स दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करता है, वह शहीदों के साथ उठाया जाएगा। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 186)

अल्लाहु अकबर : मौत को याद करने वाला कितना नेक बन जाता है कि अगर दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करता है तो गोया उस का हश्र शहीदों के साथ होगा।

हदीस शरीफ : महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि मौत, मोमिन के लिये एक तोहफा है। (हिलयतुल औलिया, जि. 8, स 199, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 546, मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 186)

मौत की याद से सख्त दिल नर्म हो जाते हैं

उम्मुल मोमिनीन हजरत सफ़िया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि एक औरत ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से अपनी संग दिली की शिकायत की तो उन्होंने फरमाया कि मौत को याद किया करो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा। उस औरत ने ऐसा ही किया और उस का दिल नर्म हो गया। वह हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की खिदमत में हाज़िर हुई और आप का शुक्रिया अदा किया। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 189)

तीन चीजें बहुत अच्छी हैं : हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, तुम मौत के लिये जीते हो। वीरान करने के लिये आबाद करते हो, फ़ानी चीज़ पर हरीस हो और बाक़ी रहने वाली चीज़ को नहीं मानते हो सुनो !

तीन चीजें सख्त हैं, जो अच्छी हैं : (1) मौत (2) फ़क्र (3) मरज़। (शरहुस्सुदूर, स. 16)

हज़रत अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं फ़क्र को तवाज़ोअ के लिये अच्छा समझता हूँ और मौत को अपने रब तआला की मुलाकात के लिये अच्छा समझता हूँ और मरज़ (बीमारी) को अपनी खताओं के मिट जाने के सबब अच्छा समझता हूँ। (बैहकी शअबिल ईमान)

मौत एक पुल है : हज़रत हब्बान बिन असवद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं الموت جسر يوصل الحبيب إلى الحبيب यानी मौत एक पुल है जो एक दोस्त को दूसरे दोस्त से मिलाने का ज़रीआ है। (शरहुस्सुदूर, स. 17)

मलकुल मौत, हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के पास आए

मलकुल मौत, हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के पास आए कि उनकी रूह निकालें, तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि किया कभी तुमने एक दोस्त को दूसरे दोस्त की रूह निकालते देखा है ? तो मलकुल मौत अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जाओ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से कह दो कि क्या कभी तुमने एक दोस्त को दूसरे दोस्त की मुलाक़ात को बुरा जानते हुए पाया ? तो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मेरी रूह अभी क़ब्ज़ कर लो (शरहुस्सुदूर, स. 17)

हज़रात ! मालूम हुआ कि अल्लाह तआला से मुलाक़ात का शौक़ रखने वाला मरने से कभी ख़ौफ़ नहीं खाता कि मौत के बग़ैर महबूब से मुलाक़ात ना मुमकिन है।

मौत पसन्दीदा चीज़ है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन से फ़रमाया, अगर तुम मेरी वसियत याद रखो तो वह यह है कि मौत से ज़्यादा पसन्दीदा चीज़ तुम्हारे नज़दीक कोई न हो।

(शरहुस्सुदूर, स. 17)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की हालत

आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि रूहुल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब मौत का ज़िक्र सुनते तो उन के जिस्म से ख़ून के क़तरे गिरने लगते।

अल्लाह तआला के नबी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जब मौत और कियामत का ज़िक्र करते तो उन की सांस उखड़ जाती और जिस्म पर लरज़ा तारी हो जाता और जब रहमत का ज़िक्र करते तो उन की हालत संभल जाती। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है कि मैंने जिस अक़्ल मन्द को देखा तो उन को मौत से लरज़ां और ग़मगीन पाया।

(मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 189)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रोना

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक आलिम से कहा कि मुझे नसीहत कीजिये तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम ख़लीफ़ा होने के बावजूद मौत से नहीं बच सकते, तुम्हारे आबा व अजदाद में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक हर एक ने मौत का जाम पिया है और अब तुम्हारी पारी है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब यह सुना तो बहुत देर तक रोते रहे। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 189)

घर में क़ब्र बना रखी थी : हज़रत रबीअ़ बिन ख़शीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने घर के एक गोशे में क़ब्र खोद रखी थी और दिन में कई मरतबा उस में जा कर सोते और हमेशा मौत का ज़िक्र करते हुए कहते। अगर मैं एक लम्हा भी मौत की याद से ग़ाफ़िल हो जाऊं तो सारा काम बिगड़ जाए। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 190)

हज़रात ! आप हज़रात ने सुन लिया कि मौत क्या है और मौत की याद के वक़्त उन अल्लाह वालों की किया हालत होती थी जब कि उन के पास सिर्फ़ नेकी ही नेकी थी बल्कि वह सरापा नेक थे और हमारा हाल यह है कि हम गुनाहों में डूबते हुए हैं और हम को मौत की फ़िक्र ही नहीं। अल अमान व हफ़ीज़। अल्लाह तआला हम को अपने अमान में रखे और मौत को याद कर के नेक व सालेह बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा। आमीन सुम्मा आमीन।

हर आदमी का हिस्सा सिर्फ़ कफ़न है : इब्ने अबिद्दुनिया से रिवायत है कि बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि याद रखो कि तु हर चीज़ छोड़ कर चले जाओगे सिवाए अपने हिस्से के, और वह कफ़न है।

और फ़रमाया कि जो कुछ तुम ने जमा किया, उस में तेरा हिस्सा सिर्फ़ वो चादर है जिस में (तू मरने के बाद) लपेटा जाएगा और बस। (शरहुस्सुदूर, स 22)

आज हम घर में हैं और कल क़ब्र में होंगे

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु [illegible] फ़रमाते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मरीज़ व बलीग़ नसीहत के बाद जल्द ही ग़ाफ़िल हो जाते हैं। मौत नसीहत करने को काफ़ी है, ज़माना जुदाई डालने को काफ़ी है, आज हम घरों में हैं और कल क़ब्रों में होंगे। (शरहुस्सुदूर, स 22)

अल्लाह वाले मौत के मुश्ताक़ क्यों होते हैं

हजरत अब्दुल्लाह बिन अबी जकरिया रजियल्लाहु तआला अन्हु कहते थे कि अगर मुझे पता चल जाए कि अल्लाह तआला ने मुझे इख्तियार दे दिया है कि चाहे मैं सौ साल जिन्दा हूँ या आज ही मर जाऊं तो आज ही मरने को इख्तियार कर लेता ताकि अल्लाह तआला और उस के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) और सहाबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से मुलाक़ात कर सकूं। (शरहुस्सुदूर, स 18)

हजरत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खुशी : हजरत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि आशिके रसूल हजरत बिलाल रजियल्लाहु तआला अन्हु इस कदर लागिर व कमज़ोर हो गए थे कि उन के चेहरे पर मौत का रंग और इन्तिक़ाल के आसार ज़ाहिर हो गए थे तो उस वक़्त उन की बीवी ने जब यह मन्ज़र देखा तो ग़म से नढाल हो कर बे क़रार हो गई और उन के मुंह से यह अलफ़ाज़ निकल गए واحرباه यानी हाए रे मेरी मुसीबत ! बीवी के मुंह से इतना सुनना था कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तड़प उठे और इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरी बीवी ! तुम यह मत कहो कि हाए रे मेरी मुसीबत। बल्कि तुम यह कहो واطرباه यानी वाह रे मेरी शादमानी और खुशी। ऐ मेरी बीवी सुन ! इस से बढ़ कर ख़ुशी और मसर्रत और क्या होगी कि मैं कल वफ़ात पा कर अपने तमाम महबूबों यानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन के सहाबा से मुलाक़ात की मसर्रत हासिल करूँगा। (मसनवी शरीफ़)

हज़रत आसी ग़ाज़ी पूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

आज फूले न समाएंगे कफ़न में आसी
क़ब्र की रात है उस गुल से मुलाक़ात की रात

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल : मौलल मोमिनीन हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल है कि लोग सो रहे हैं और जब मर जाएंगे तो जाग उठेंगे। (शरहुस्सुदूर, स. 24)

क़ब्रों की ज़ियारत से मौत याद आती है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्रों की ज़ियारत करो क्यों कि यह मौत को याद दिलाती है। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 672, शरहुस्सुदूर, स. 24)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने तुम को क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था, अब ज़ियारत किया करो क्योंकि यह दुनिया में ज़ुहद (परहेज़गारी) और आख़िरत की याद दिलाती है। (इब्ने माजह, जि. 1, स. 501)

मौत की तमन्ना नहीं करना चाहिये

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्म ने फ़रमाया कि तुम में से कोई मुसीबत आने की वजह से मौत की तमन्ना न करे और अगर तमन्ना करना है तो यह कहे ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है, तो ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये मौत में बेहतरी हो तो मौत दे।

और! हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे क्यों कि अगर नेक है तो उम्मीद है कि उस की नेकियाँ ज़ाइद होंगी और अगर बद है तो शायद भलाई की तरफ़ लौट आए। (बुख़ारी शरीफ़, नसाई शरीफ़, व हवाला शरहुस्सुदूर, स. 6)

दीन में फ़ितना के डर से मौत की तमन्ना का जवाज़

मालिक और बज़्ज़ार ने हज़रत सोअबान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तमीम, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक कानों के करने और बुरे कामों के छोड़ने और मिस्कीनों से महब्बत करने की दुआ करता हूँ और तू जब लोगों को आज़माइश में डालना चाहे तो मुझे आज़माइशों में डालने से पहले अपने पास बुला लेना (यानी मुझे मौत दे देना) (शरहुस्सुदूर, स. 9)

हज़रात! हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मासूम हैं, बल्कि सय्यिदुल मासूमीन हैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर गुनाह और ख़ता से पाक व साफ़ हैं और आक़ा करीम मासूम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जो इस तरह से फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक कामों के करने और बुरे कामों के छोड़ने की दुआ करता हूँ तो यह दुआ तालीमे उम्मत के लिये थी कि मेरा उम्मती अल्लाह तआला की बारगाह में इस तरह से दुआ मांगे। मोमिन कभी अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गुनाहगार व ख़ताकार नहीं जानता, हां मुनाफ़िक़ ज़रूर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम को गुनाहगार व खताकार जानते हैं और लिखते भी हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अहले हदीस कहलाने वालों के पेशवा मौलवी रफ़ीक ख़ां पसरवी लिखते हैं कि :

अकीदा : अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ऐब दार होते हैं। (इस्लाहे अक़ाइद, स. 154)

हज़रात ! अल्लाह तआला के चुने हुए और पसन्दीदा बन्दे, हज़रात अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम थे और तमाम महबूबों और जुमला अम्बिया व रुसुल के सरदार हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम बे ऐब और बे गुनाह थे।

आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी
सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम)

दुरूद शरीफ़ :

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआल अन्हु फ़रमाते हैं कि ऐ अल्लाह ! मेरी कुव्वत कम हुई और उम्र बड़ी हुई, मेरी रिआया मुनतशिर हुई, तो मुझे मौत दे, ताकि मैं ज़ाए करने वाला और कोताही करने वाला न बनूं। अभी एक माह भी इस दुआ को किये हुए न गुज़रने पाया था कि आप शहीद हुए। (शरहुस्सुदूर, स. 9)

इब्ने अबिद्दुनिया ने हज़रत सुफ़ियान से रिवायत की कि लोगों पर एक ज़माना आएगा कि उन के उलमा के नज़दीक मौत (यानी मर जाना) सुर्ख़ सोने से बहतर होगी। (शरहुस्सुदूर, स. 10)

या अल्लाह तआला ! हम को तमाम फ़ितनों से महफ़ूज रख और ईमान के साथ ख़ातिमा नसीब फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

मरहूम पर जन्नत वाजिब हो गई

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि कुछ लोग एक जनाज़ा के साथ गुज़रे तो उन लोगों ने उस मय्यित की तारीफ़ की, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ! वाजिब हो गई।

फिर ! कुछ लोग दूसरे जनाज़े के साथ गुज़रे तो उन्होंने उस मय्यित की बुराई बयान की तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ! वाजिब हो गई। मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया। (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम) क्या वाजिब हो गई ? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स की तुम ने तारीफ़ की तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई और जिस की तुम ने बुराई बयान की तो उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। तुम ज़मीन पर अल्लाह तआला के गवाह हो। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 760, सही मुस्लिम जि. 2, स. 655)

जनाज़ा जल्दी उठाओ ! हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जनाज़े को जल्दी उठाओ क्यों कि अगर जनाज़ा नेक आदमी का है तो यह एक नेक काम है जिसे तुम कर रहे हो और अगर जनाज़ा इस के अलावा (यानी बुरे आदमी) का है तो तुम एक बुराई को अपनी गरदनों से उतार रहे हो। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 772, सही मुस्लिम, जि. 2, स. 601)

मौत के वक़्त कलमए तैय्यिबा की तलक़ीन करना चाहिये

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अपने मरने वालों को ला इलाहा इल्लल्लाहु (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) की तलक़ीन किया करो। (सही मुस्लिम, जि. 2, स. 631, अबू दाऊद शरीफ़, जि. 3, स. 190)

नमाज़े जनाज़ा के बाद दुआ मांगना सुन्नत है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना जब तुम मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुको तो उस के लिये ख़ुलूसे दिल से दुआ किया करो।

(अबू दाऊद शरीफ़, जि 3, स. 310 इब्ने माजह, जि. 1, स. 480)

हज़रात ! आज कल कुछ लोग नमाज़े जनाज़ा के बाद दुआ मांगने को मना करते हैं जब कि नमाज़े जनाज़ा के बाद दुआ मांगने का हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दिया है। अल्लाह तआला सुन्नत पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

मय्यित के लिये ईसाले सवाब का सुबूत : (1) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि एक आदमी आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : मेरी वालिदा अचानक इन्तिक़ाल कर गई उस को सवाब पहुँचेगा ? قَالَ نَعَمْ यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हां (उस को सवाब पहुँचेगा) (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 467, सही मुस्लिम, जि. 2, स. 696)

(2) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है, और उन्होंने माल छोड़ा है। और उन्होंने वसियत भी नहीं की अगर मैं उन की तरफ़ से सदक़ा ख़ैरात करूँ तो क्या यह सदक़ा व ख़ैरात उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा ?

قَالَ نَعَمْ यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

(उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा।) (सही मुस्लिम, जि. 2, स. 804, नसाई, जि. 2, स. 173)

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हो चुका है अगर मैं उस की तरफ़ से सदक़ा दूँ तो क्या वह सदक़ा उसे नफ़ा देगा ? आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हाँ ! उस शख़्स ने अर्ज़ किया मेरे पास एक बाग़ है। فَاُشْهِدُكَ اَنِّیْ قَدْ تَصَدَّقْتُ بِهٖ عَنْهَا

यानी मैं आप को गवाह बनाता हूँ कि मैं ने यह बाग़ उस की (यानी अपनी मां) की तरफ़ से सदक़ा कर दिया। (तिर्मिज़ी, शरीफ़, जि. 3, स. 56, अबू दाऊद शरीफ़, जि. 3, स. 118)

(4) हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया ! या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उम्मे सअ़द (यानी मेरी मां) का इन्तिक़ाल हो गया है। तो कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है ?

قَالَ: اَلْمَاءُ قَالَ: فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ: هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ٥

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया पानी, तो उन्होंने एक कुंवा खुदवाया और कहा : यह उम्मे सअ़द का कुंवा है।

(अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 130, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 41, मिश्कात शरीफ़, स. 362)

(5) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब इन्सान मर जाता है तो उस के आमाल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है सिवाए तीन चीज़ों के (यानी उन तीन चीज़ों का अज्र उसे मिलता रहता है)

اِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْلَهٗ यानी एक सदक़ा जारिया दूसरा वह इल्म जिस से फ़ायदा उठाया जाए। तीसरी वह नेक औलाद जो उस के लिये दुआ करे।

(सही मुस्लिम, जि. 3, स. 1255, बुख़ारी अल अदबुल मुफ़रद, जि. 1, स. 28, अबू दाऊद, जि. 3, स. 117)

हज़रात ! अहादीसे तैय्यिबा से दिन के उजाले से ज़्यादा रौशन और ज़ाहिर हुआ कि विसाल करने वाले, मरने वाले के हक़ में फ़ातिहा व दुआ करना और सदक़ा व ख़ैरात करना नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि जाइज़ और सुन्नत है।

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

मौत से किस को रुस्तगारी है
आज वह, कल हमारी बारी है

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

महब्बते रसूल

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

तर्जमा : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो ! अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमांबरदार हो जाओ, अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा। (पारा 3, रुकूअ् 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

और फ़रमाते हैं :

दिल है वह दिल जो तेरी याद से मामूर रहा
सर है वह सर जो तेरे क़दमों पे कुरबान गया
उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुसलमान गया

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : ऐ ईमान वालो ! महब्बत नहीं तो कुछ भी नहीं। दो आलम में जो कुछ नज़र आ रहा है, वह इश्क़ो महब्बत ही का जलवा है। एक आदमी औलाद की महब्बत में दूकान व मकान और फ़ेक्ट्री वग़ैरह तामीर करता नज़र आता है।

अल्लाह तआला तू औलाद से पाक है मगर उस के महबूब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जिन की ख़ातिर अम्बिया रुसुल को फ़रिश्तों इन्सानों को, ज़मीनों आसमानों को, जन्नत व दोज़ख़ को, फ़र्श से अर्श तक पैदा फ़रमाया और अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से इरशाद फ़रमाया :

لَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُكَ यानी अगर मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व आलिही वसल्लम न होते तो मैं तुम को पैदा न करता। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 62, दुर्रे मन्सूर, अल मुस्तदरिक हाकिम, जि. 2, स. 615, रूहुल बयान अहज़ाब, स. 230)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहाँ तुम्हारे लिये

हज़रात ! बाप, बेटे भाई, कुंबा वग़ैरह से महब्बत करने को इस्लाम ने मना नहीं किया है बल्कि हुक्म दिया है कि صِلُوا الْاَرْحَامَ यानी अपने रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करो और उन से उल्फ़त व महब्बत रखो। मगर सवाल उस वक़्त का है कि जब अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत का उन चीज़ों की महब्बत से टकराओ हो तो उस वक़्त इस्लाम का किया हुक्म है ?

तो ईमान वालो ! उस वक़्त इस्लाम का हुक्म यही है कि इन तमाम चीज़ों की महब्बत व उल्फ़त को अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत पर कुरबान कर दिया जाए।

चुनाँचे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद है कि : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ

तर्जमा : यानी उस वक़्त तक कोई तुम में से मोमिन हो ही नहीं सकता जब तक कि वह अपनी औलाद, अपने मां, बाप, बल्कि तमाम जहां के इन्सानों से बढ़ कर महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ महब्बत न करे।

(मिश्कात शरीफ़, स. 12)

मुहम्मद की महब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुहम्मद की महब्बत ख़ून के रिश्तों से बाला है
यह रिश्ता दुनियवी क़ानून के रिश्तों से आला है
मुहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा
ज़न व फ़रज़न्द से, मां, बाप से औलाद से प्यारा

हज़रात ! महब्बते रसूल, इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही ईमान की बुनियाद और असल हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ां फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अल्लाह की सरता ब क़दम शान हैं यह
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं यह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
और ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

हज़रात ! आदमी, इस्लामी अहकाम का पाबन्द हो, नमाज़ी हो, हाजी हो और ग़ाज़ी भी हो लेकिन अगर उस का सीना महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ख़ाली है तो हरगिज़ हरगिज़ वह आदमी मुसलमान नहीं हो सकता। देखिये मुनाफ़िक़ीन नमाज़ी थे, हाजी थे, मैदाने जिहाद के ग़ाज़ी भी थे और हम लोग तो आज के इमामों के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं मगर यह मुनाफ़िक़ीन तो इमामुल अम्बिया वल मुरसलीन के पीछे मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ें पढ़ते थे, मगर किया वजह है ? कि क़ुरआने करीम ने ऐसे नमाज़ियों के बारे में इरशाद फ़रमाया कि : وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ

यानी यह लोग मोमिन नहीं। (पारा 1, रुकू 2)

हज़रात ! मुनाफ़िक़ीन क्यों मोमिन नहीं कहलाए ? बस यही वजह थी कि उन के दिलों में महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं थी। इस लिये यह लोग उम्र भर दौलते ईमान से महरूम ही रहे और उन लोगों के रोज़े व नमाज़, हज व ज़कात वग़ैरह तमाम आमाले सालिहा बेकार और बरबाद हो गए। डाक्टर इक़बाल ने किया ख़ूब कहा :

بمصطفیٰ برساں خویش را کہ دیں ہمہ اوست
اگر باو نرسیدی تمام بولہبی ست

ऐ मुसलमान याद रख ! कि दीन नाम है आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व उल्फ़त का।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन्हें जाना, उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुसलमान गया

और किसी ने किया है अच्छी बात कही है :

काफ़िर है वह बद बख़्त जो उस दिल को कहे दिल
जिस दिल में न हो उल्फ़ते सरकारे मदीना

क़ियामत का सरमाया

एक देहाती सहाबी, हज़रत ज़ुल ख़ुवेसरा यमानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम : مَتَى السَّاعَةُ
(मिश्कात शरीफ़, स. 26)

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क़ियामत कब आएगी ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि : مَا اَعْدَدْتَ لَهَا तुम ने क़ियामत के लिये किया तैय्यारी की है ? तो सहाबिये रसूल ने अर्ज़ की : مَا اَعْدَدْتُ لَهَا اِلَّا اَنِّیْ اُحِبُّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ (मिश्कात शरीफ़, स. 426)
यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे पास इस के

सिवा और कुछ तैयारी नहीं है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता हूँ।

न ताअत पर न तक़वा पर न ज़ुहद व इत्तिक़ा पर है
हमारा नाज जो कुछ है मुहम्मद मुस्तफ़ा पर है

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहाबी से यह सुन कर फ़रमाया : اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ यानी क़ियामत के दिन उसी के साथ रहोगे जिस के साथ महब्बत रखते हो। (बुख़ारी, जि. 1, स. 521)

सहाबए किराम यह सुन कर इस क़दर खुश हुए कि हजरत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा को ज़िन्दगी में कभी भी इतनी ख़ुशी नहीं हुई थी जितनी ख़ुशी उस वक़्त हुई जब आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ रहेगा।

और हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह रिवायत भी नक़ल की है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह बशारत सुन कर फ़रमाया :

فَاَنَا اُحِبُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَبَابَكْرٍ وَّعُمَرَ وَاَرْجُوْا اَنْ اَكُوْنَ مَعَهُمْ بِحُبِّيْ اِيَّاهُمْ وَاِنْ لَّمْ اَعْمَلْ بِمِثْلِ اَعْمَالِهِمْ○ (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 521)

यानी मैं आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और अबू बक्र व उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से महब्बत रखता हूँ लिहाज़ा मैं यह उम्मीद रखता हूँ कि क़ियामत के दिन मैं उन लोगों के साथ ही मैं रहूँगा, अगरचेह मेरा अमल कभी भी उन हज़रात के आमाल के बराबर नहीं हो सकता।

ऐ ईमान वालो ! महब्बते रसूल, इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह ला ज़वाल और बे बहा दौलत व नेअमत है कि एक मोमिन के लिये जमीन व आसमान के ख़ज़ानों में इस से बढ़ कर कोई दौलत नहीं। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की महब्बत के चन्द नमूने पेश हैं मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की महब्बत

हज़रात ! जंगे हुनैन में बहुत ज़्यादा माल व दौलत मुसलमानों को मिला उस दिन आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुजाहेदीने इस्लाम को इस क़दर कसीर माले ग़नीमत अता फ़रमाया कि सब को माला माल फ़रमा दिया, एक एक मुजाहिद को सो सो ऊंटों की क़तार इनायत फ़रमा दी, लेकिन यह अजीब बात हुई कि उस जिहाद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सब जगहों के मुजाहेदीन को तो ख़ूब माल दिया मगर मदीना वालों अन्सार को कुछ भी नहीं दिया। यह मन्ज़र देख कर कुछ मदीना के नौजवान अन्सार के मुंह से निकल गया कि :

يَغْفِرُ اللّٰهُ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِىْ قُرَيْشًا وَيَدَعُنَا وَسُيُوْفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ

यानी अल्लाह तआला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मग़फ़िरत फ़रमाए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम कुरैशियों को अता फ़रमाते हैं और हमें कुछ नहीं देते, हालांकि हमारी तलवारों से खून टपक रहा है

मदीना तैय्यिबा के नौजवान अन्सारियों की यह बातें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गोशे मुबारक (मुबारक कान) तक पहुंची तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने क़ासिद भेज कर तमाम मदीना वालों, अन्सारियों को बुलाया और फ़रमाया कि : مَا حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ

ऐ मदीना वालो ! यह कैसी बात है जो तुम्हारी तरफ़ से मेरे कान में आई है। तो मदीना वाले अन्सार के समझदार और बूढ़े लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम में से समझदार लोगों ने तो कुछ भी नहीं कहा। कहने वाले चन्द नौजवान लड़के हैं। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि : أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالْأَمْوَالِ وَأَنْتُمْ تَرْجِعُونَ إِلَى رِحَالِكُمْ

بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ رَضِينَا (मिश्कात शरीफ़, स. 261)

यानी ऐ मदीना वालो ! गिरोहे अन्सार ! क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं हो कि (मक्का वाले) और सब लोग तो अपने अपने घर मालो दौलत ले कर जाएंगे और तुम जब अपने घर जाओगे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने साथ ले कर जाओगे। क्यों कि मैं मक्का वालों या दूसरे लोगों के साथ नहीं जाऊंगा बल्कि मैं तुम्हारे साथ मदीना चलूँगा। तो तुम बताओ ! कि तुम्हें माल व दौलत लेकर घर जाने में खुशी होगी या, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को साथ लेकर घर जाने में तुम ज़्यादा खुश होगे ? यह सुनकर महब्बते रसूल सल्लाल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सैलाब मीदना वालों, अन्सार के दिलों से उमन्ड कर आँखों में आ गया और सब की आँखें बरसने लगीं और गोया सब का यही जवाब था कि :

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
अन्सार के लिये है खुदा का रसूल बस

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम यह ऊंट, यह बकरियां यह बाग़ात, यह सारा माल आप दूसरों को दे दीजिये, हमें तो अल्लाह का रसूल चाहिये (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम)

दुरूद शरीफ़ :

(1) सहाबा की महब्बत : अरवा बिन मस्ऊद, कुफ़्फ़ार की जानिब से सालिस बन कर, क़ासिद बन कर मदीना तैय्यिबा में आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की महब्बत और नियाज़ मन्दी को देख कर इस क़दर मुतास्सिर हुए कि पलट कर जब मक्का

पहुँचे तो अपने साथियों, कुफ्फार व मुश्रेकीन से मिले तो कसम खा कर बयान करने लगे कि मेरी कौम ! खुदा की कसम ! बेशक मैं ने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उस के साथी उस की इस कदर ताजीम व महब्बत करते हों जितनी महब्बत व ताजीम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबा करते हैं । खुदा की कसम जब वह थूकते हैं तो उन का थूक शरीफ कोई न कोई अपने हाथ में ले लेता है और वह उस को अपने बदन और चेहरे पर मल लेता है और जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबा को हुक्म देते हैं तो सहाबा आप के हुक्म की तामील की खातिर दौड़ते हैं। (सही बुखारी, जि. 1, स. 379)

وَاِذَا تَوَضَّأَ كَادُوْا يَقْتَتِلُوْنَ عَلٰى وَضُوْئِهٖ

यानी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वुज़ू करते हैं तो सहाबा वुज़ू के पानी को लेने के लिये इस कदर कोशिश करते हैं कि जैसे आपस में लड़ पड़ेंगे और खून खराबे की नोबत आ जाएगी।

हज़रात ! अरवा बिन मस्ऊद ने मक्का जाकर कुफ्फार व मुश्रेकीन से आँखों देखा हाल बयान किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब वुज़ू करते हैं तो जिस्म से लगा हुआ वुज़ू का पानी सहाबए किराम जमीन पर नहीं गिरने देते हैं बल्कि इस पानी को अपने हाथों में ले लेते हैं और अपने बदन और चेहरे पर मल लेते हैं तो जो सहाबा अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरने देते वह कब गवारा करेंगे कि उन के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्म का खून ज़मीन पर गिरे। इस लिये नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से जंग करना आसान नहीं है।

सहाबा की महब्बत मूए मुबारक के साथ

(1) सर चश्मए विलायत हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद व खलीफा हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन ताबई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उबैदा से कहा कि हमारे पास आका करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कुछ बाल शरीफ हैं जो हमें हज़रत अनस या हज़रत अनस के घर वालों से मिले हैं तो यह सुन कर हज़रत उबैद ने कहा :

لَاَنْ تَكُوْنَ عِنْدِيْ شَعْرَةٌ مِّنْهُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا (सही बुखारी, जि. 1, स. 29)

(2) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने आका करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा कि हज्जाम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरे मुबारक के बाल शरीफ को बना रहा था और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गिर्द हलका बांधे हुए थे।

فَمَا يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَقَعَ شَعْرَةٌ اِلَّا فِيْ يَدِ رَجُلٍ

यानी सहाबए किराम यही चाहते थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का जो बाल भी गिरे वह किसी न किसी शख़्स के हाथ में हो। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 356)

(3) हजरत उस्मान बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि: मेरी बीवी ने मुझ को एक पानी का प्याला दे कर उम्मुल मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अन्हा के पास भेजा और मेरी बीवी की यह आदत थी कि जब भी किसी को नजर लगती या कोई बीमार होता तो वह बरतन में पानी डालकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास भेज दिया करतीं क्योंकि उन के पास आका करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बाल शरीफ़ था।

وَكَانَتْ تُمْسِكُهُ فَاَخْرَجَتْ مِنْ شَعْرِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
فِيْ جُلْجُلٍ مِنْ فِضَّةٍ فَخَضْخَضَتْهُ لَهٗ فَشَرِبَ مِنْهُ

(सही बुखारी, जि. 2, स. 875, मिश्कात शरीफ़, स. 391)

यानी वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उस बाल को निकालतीं जिस को उन्होंने चाँदी की नली में रखा हुआ था और पानी में डाल कर हिला देतीं और मरीज़ वह पानी पी लेता उस को शिफ़ा हो जाती।

हज़रात ! सही बुख़ारी की इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम मूए मुबारक, तबर्रुकन अपने पास रखते थे और हालते मर्ज़ में उस की बरकत से शिफ़ा पाते थे।

(4) सैफ़ुल्लाह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पेशानी मुबारक के बाल थे और उन्होंने उन को अपनी टोपी में आगे की जानिब सिल रखे थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उन बालों की बरकत थी कि उम्र भर हर जिहाद में मुझे कामयाबी व कामरानी हासिल होती रही। (असाबा, शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 44)

जंगे यरमूक में मूए मुबारक की बरकत

जंगे यरमूक में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे, काफ़िरों में से एक पहलवान आया जिस का नाम नस्तूर था, दोनों का देर तक सख़्त मुक़ाबला होता रहा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का घोड़ा ठोकर खा कर गिर पड़ा और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की टोपी ज़मीन पर गिर गई, नस्तूर पहलवान मौक़ा पाकर आपकी पुश्त पर आ गया उस वक़्त हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पुकार, पुकार कर अपने साथियों से कह रहे थे कि मेरी टोपी मुझे दो अल्लाह तआला तुम पर रहमत करे। एक शख़्स जो आप की क़ौम बनी मख़ज़ूम में से था वह दौड़कर आया और टोपी उठाकर आप को दे दी, आप ने उसे पहन कर नस्तूर पहलवान का मुक़ाबला किया यहाँ तक कि उस को क़त्ल कर दिया। लोगों ने जंग ख़त्म होने

के बाद जब आप से पूछा कि आप ने वह हरकत की कि दुश्मन तो आप की पुश्त पर आ पहुँचा और टोपी की फ़िक्र में लगे रहे।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि उस टोपी में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पेशानी मुबारक के बाल शरीफ़ सिले हुए हैं, जो मुझे मेरी जान से ज़्यादा महबूब हैं। हर जंग में इन मुबारक बालों की बरकत से कामयाब होता हूँ इसी लिये मैं बेकरारी से अपनी टोपी की तलब में था कि कहीं उन की बरकत मेरे पास से चली न जाए और काफ़िरों के हाथ न लग जाए।

(शिफ़ा शरीफ़, जि. २, स. ४४)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर करो कि जब सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मूए मुबारक के बाल शरीफ़ से महब्बत व तअल्लुक़ का यह आलम था तो ख़ुद आक़ा करीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत व तअल्लुक़ का आलम क्या होगा।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज है लज़्ज़ते आशनाई

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत : शुरू इस्लाम में अभी चन्द लोग मुसलमान हुए थे। महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ानए काबा के पास खड़े होकर तक़रीर कर रहे थे और इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमा रहे थे कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हमला कर दिया और आप को इस क़दर मारा कि आप ख़ून में नहा गए और बे होश हो गए। लोगों ने समझा कि आप अब न बच सकेंगे आप की वालिदा माजिदा आती हैं और अपने बेटे की यह हालत देख कर घबरा गईं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु होश में आ गए तो मां ने हाल पूछा तो आपने बर जस्ता फ़रमाया कि मां बताओ कि मेरे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कैसे हैं ?

यानी अपनी कोई फ़िक्र ही नहीं है अगर फ़िक्र है तो आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की है।

(अल बिदाया वन्निहाया, जि. 3, स. 30)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

और !

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज है लज़्ज़ते आश्नाई

माल की कुरबानी : ग़ज़वए तबूक के मौक़े पर, महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुल माल दौलत और घर का तमाम सामान इस्लाम के लिये अपने महबूब आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे करम में पेश किया तो उस वक़्त एक कम्बल ओढ़े हुए थे और बटन की जगह कांटे लगाए हुए थे। तो महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने यार अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ
यानी अपने (घर) अहलो अयाल के लिये किया छोड़ा ?

तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया : اَبْقَيْتُ لَهُمُ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
यानी घर वालों के लिये मैं अल्लाह और उसके रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को छोड़ आया हूँ।

(अबू दाऊद शरीफ़, जि. 1, स. 243, मिश्कात , जि. 556, तारीखुल खुलफ़ा)

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है खुदा का रसूल बस

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इश्क़ : मशहूर मुहद्दिस व मुफ़स्सिर हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक मरतबा अपनी अंगूठी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अता की कि इस अंगूठी पर अल्लाह का नाम ला इलाहा इल्लल्लाहु कन्दा करवा के लाओ। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्श करने वाले के पास गए और फ़रमाया इस अंगूठी पर ला इलाहा इल्लल्लाहु और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) कन्दा कर दो नक़्श कर दो। और जब लिखा गया तो उस अंगूठी को ले कर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए और अंगूठी को पेश की। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अंगूठी को मुलाहज़ा फ़रमाया तो देखा कि अंगूठी पर अल्लाह तआला के नामे पाक के साथ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे अक़दस भी लिखा हुआ था और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे मुबारक भी लिखा हुआ था। हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मैं ने तुम को सिर्फ़ अल्लाह तआला का नामे पाक लिखने के लिये कहा था, तुम ने मेरा नाम और अपना नाम भी लिखवा दिया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे इश्क ने और मेरी महब्बत ने यह गवारा न किया कि अल्लाह के नामे पाक से उसके महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे अक़दस जुदा हो। अल्लाह तआला का नाम पाक रहे और महबूबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम शरीफ न रहे। फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम शरीफ अल्लाह तआला के नामे पाक के साथ लिखाया है। मगर ! खुदा की क़सम ! मैं ने अपना नाम नहीं लिखवाया। इतने में सिदरह मकीन हज़रत जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमते आलिया में हाज़िर हुए और अर्ज किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अबू बक्र सिद्दीक का नाम मैं ने लिखा है। जब अबू बक्र मेरे नाम के साथ, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम जुदा नहीं करना चाहते तो मैं भी अबू बक्र सिद्दीक का नाम तुम्हारे नाम से जुदा नहीं करना चाहता। (तफसीरे कबीर, जि. 1, स 87)

इलाही तड़पने, फड़कने की तौफ़ीक़ दे
दिले मुरतज़ा को, सोज़े सिद्दीक़ दे

ईमान महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम है

सही बुख़ारी में है : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ

यानी तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस के नज़दीक उस के मां, बाप और औलाद और सब लोगों से ज़्यादा मैं महबूब न हो जाऊँ।

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 7, मिश्कात शरीफ़, स.12)

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

अल्लाह की सरता ब क़दम शान हैं यह
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं यह
कुरआन तो ईमान बताता हैं इन्हें
ईमान यह कहता है मेरे जान हैं यह

महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सिला

महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरा जनाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ए अनवर व अक़दस पर ले जाना और सामने रख देना और अर्ज करना कि आप का दोस्त अबू

तक सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर है। अगर रोज़ए अक़्दस का दरवाज़ा खुद ब खुद खुल जाए तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कुर्ब में दफ़्न कर देना वर्ना जन्नतुल बक़ीअ क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना। जब आप का विसाल हुआ तो वसियत के मुताबिक़ आप का जनाज़ा रोज़ए अनवर पर ले जा कर दरवाज़ा के सामने रख दिया गया और अर्ज़ किया गया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप के रफ़ीक़ और ख़लीफ़ा अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हैं और आपके कुर्ब में दफ़्न होने की इजाज़त चाहते हैं। रोज़ए मुबारक का दरवाज़ा खुद ब खुद खुल गया और क़ब्रे अनवर व अतहर से आवाज़ आई।

ادخلوا الحبيب الى الحبيب فان الحبيب الى الحبيب مشتاق.

यानी दोस्त को दोस्त से मिला दो बे शक दोस्त, दोस्त से मिलने के लिये मुश्ताक़ है।

(तफ़सीरे कबीर, स. 645/5, जामेअ करामाते औलिया, स. 128/1, ख़साइसे कुबरा, स. 281/2)

ऐ इश्क़ तेरे सदके जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हक़ीक़त में महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही ईमान है। अगर कोई शख़्स इस्लाम के अहकाम का पाबन्द है, नमाज़ी भी, हाजी भी है, ग़ाज़ी भी है लेकिन अगर उसका सीना महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मदीना नहीं है तो हर गिज़ हरगिज़ वह मोमिन व मुसलमान नहीं है। देखिये मुनाफ़िक़ीन नमाज़ी भी थे हाजी भी थे, इमामुल अम्बिया के पीछे नमाज़ पढ़ते थे मगर क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला ने उन नमाज़ियों के बारे में इरशाद फ़रमाया कि :

وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ यानी यह लोग मोमिन नहीं हैं। (पारा 1, रुकू 2)

हज़रात ! मुनाफ़िक़ीन मोमिन क्यों नहीं ! बस उस की यही वजह थी कि उन के दिलों में महब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं थी, इस लिये यह लोग ज़िन्दगी भर बे ईमान ही रहे और इन लोगों के रोज़े व नमाज़ और हज व ज़कात वग़ैरह तमाम आमाले सालिहा ग़ारत व बरबाद हो गए।

ब मुस्तफ़ा बरसां ख़ेश रा कि दीं हमा औसत
अगर बऊ न रसीदी तमामे बू लहबीस्त

हज़रात ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दौरे जाहिलियत का वाक़िआ बयान करते हुए अपने बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि अब्बा जान ! जंगे बद्र में, मैं अबू जहल के साथ था और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे। दौराने जंग आप मेरी तलवार की ज़द में आ गए लेकिन मैं ने आप पर वार न किया, बाप जान कर। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने फ़रमाया बेटा ! لو اقتلتک إن لم انصرف ومالک

यानी अगर तू मेरी जद में आ जाता तो मैं तेरा लिहाज़ न करता (यानी मैं तुझे क़त्ल कर देता) उस वक़्त मैं तुझ को बेटा नहीं बल्कि दुश्मने रसूल समझता। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 30)

मुहम्मद की महब्बत ख़ून के रिश्तों से बाला है
यह रिश्ता दुनियवी क़ानून के रिश्तों से आला है
मुहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा
ज़न व फ़रज़न्द से, मां, बाप से औलाद से प्यारा

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत

मुसलमान कहलाने वाला बिशर नाम का एक मुनाफ़िक़ था, उस मुनाफ़िक़ का एक यहूदी के साथ झगड़ा हो गया, यहूदी ने मुनाफ़िक से कहा इस झगड़े का फ़ैसला मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कराएं। चुनाँचे मुक़दमा आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमते अक़दस में पहुँचा, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुआमले की तहक़ीक़ फ़रमाई तो हक़ यहूदी का साबित हुआ तो उस के हक़ में फ़ैसला फ़रमा दिया। मुनाफ़िक़ जो बज़ाहिर मुसलमान बना हुआ था, बाहर निकला तो कहने लगा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला समझ में नहीं आया, इस लिये फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चलते हैं, वह जो फ़ैसला करेंगे मन्ज़ूर होगा। दोनों हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास पहुँचे। यहूदी ने आप के सामने पूरा वाक़िआ बयान कर दिया। आप ने फ़रमाया : अच्छा ठहरो मैं घर के अन्दर से आता हूँ और फ़ैसला कर देता हूँ। मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर के अन्दर गए और तलवार ले कर आए और मुनाफ़िक़ की गरदन पर एसी तलवार मारी कि सर तन से जुदा हो गया और मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया और इरशाद फ़रमाया कि जो हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला न माने, उस का फ़ैसला मेरी तलवार करती है।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 3, स. 248, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 122)

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मामूं को क़त्ल किया

जंगे बद्र में हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हक़ीक़ी मामूं, आस बिन हश्शाम बिन मुग़ीरा जंग के लिये मैदान में आया तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस से मुक़ाबला किया और फिर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने हक़ीक़ी मामूं के सर पर एसी तलवार मारी कि वह क़त्ल हो गया और क़ियामत तक के लिये यह मिसाल क़ाइम कर दी कि कुंबा, क़बीला और रिश्तेदारी सब कुछ महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कुरबान है। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत

मक़ामे हुदैबिया में महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के हमराह मौजूद थे और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मक्का मुअज़्ज़मा में क़ुरैश से सुलह करने के लिये रवाना फ़रमाया तो क़ुरैश हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहने लगे कि तुम्हारे नबी मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को तवाफ़े काबा की इजाज़त नहीं है हां ऐ उस्माने ग़नी तुम आ गए हो तो तुम को तवाफ़े काबा की इजाज़त है। तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तवाफ़े काबा से इनकार कर दिया और फ़रमाया : مَا كُنْتُ لِأَفْعَلَ حَتّٰى يَطُوْفَ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

यानी मैं उस वक़्त तक तवाफ़े काबा नहीं करूंगा जब तक हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तवाफ़ न कर लेंगे।

(मिश्कात शरीफ़, जि. 2, स. 32, मिरक़ात शरीफ़, स. 561)

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हर क़दम पर गुलाम आज़ाद किया

एक दिन की बात है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने घर बुलाया और बड़ी शानदार दावत का एहतिमाम किया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अआलिही वसल्लम हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर चले तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक को शुमार करने लगे और हर क़दम के बदले एक एक गुलाम आज़ाद किया। (जामेअ मोअजिज़ात, स. 65)

हज़रात ! कुरआने मजीद, कलामुल्लाह और हदीस शरीफ़ फ़रमाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में कहीं भी सिराहतन यह हुक्म नहीं दिया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हर क़दम शुमार किया जाए और एक एक क़दम के बदले गुलाम आज़ाद किया जाए।

लेकिन ! खलीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक को शुमार कर के हर क़दम के बदले एक, एक गुलाम आज़ाद किया और किसी सहाबी ने इस अमल को बिदअत ना जाइज़ न कहा अल्लाह तआला हम को भी हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत के कुछ छींटे नसीब फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत : सर चश्मए विलायत मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

كَانَ وَاللهِ اَحَبَّ اِلَيْنَا مِنْ اَمْوَالِنَا وَاَوْلَادِنَا وَاٰبَائِنَا وَاُمَّهَاتِنَا
وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ عَلَى الظَّمَاءِ

तर्जमा : ख़ुदा की क़सम आप हम को अपने मालों, बाल बच्चों और बापों और माओं से और प्यास के बावजूद ठन्डे पानी से ज़्यादा महबूब हैं।

(शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 18, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 348)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महब्बते रसूल में नमाज़ को तर्क कर दिया

ऐ ईमान वालो ! जान की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला ने हर मुसलमान पर फ़र्ज़ फ़रमाया है। मगर महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व इताअत में इस फ़र्ज़ को तर्क कर दिया। सांप ग़ारे सोर में उन्हें काटता रहा मगर उन्होंने अपना पाओं नहीं हटायाकि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नीन्द में ख़लल पड़ जाएगा।

इसी तरह हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मक़ामे सहबा में जब आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन की रान पर अपना सरे मुबारक रख कर आराम फ़रमा रहे थे तो सूरज ग़ुरूब हो गया और नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई मगर आप ने पांव नहीं उठाया और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नीन्द में ख़लल नहीं पड़ने दिया।

अल्लाहु अकबर ! हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महब्बत व इताअते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में जान बचाने का फ़र्ज़ छोड़ दिया और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व इताअत में नमाज़े अस्र, ख़ुदा के फ़र्ज़ को तर्क करदिया मगर उन दोनों बुज़ुर्गों पर न अल्लाह तआला ने नाराज़गी ज़ाहिर की और न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने।

बल्कि हजरत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़ख़्म पर लुआबे दहन (मुबारक थूक) लगा कर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शिफ़ा अता फ़रमाते हैं और अल्लाह तआला सकीना नाज़िल फ़रमाता है।

और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं : إِنَّ عَلِيًّا كَانَ فِيْ طَاعَةِ اللهِ وَطَاعَةِ رَسُوْلِهِ

यानी अली अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की फ़रमांबरदारी में थे। (मुश्किलुल आसार, जि. 4, स. 388)

फिर आक़ा करीम, मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इशारा फ़रमाते हैं तो डूबा हुआ सूरज पलट आता है और मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़े अस्र अदा फ़रमाते हैं।

हज़रात ! महबूबे मुस्तफ़ा हजरत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हजरत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु का यह अमल ऐलान कर रहा है कि :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ

तर्जमा : जिसने रसूल का हुक्म माना बे शक उसने अल्लाह का हुक्म माना।

(पारा 5, रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़रोअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताज वर की है

हज़रात ! रौज़े रोशन से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम में सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल और उम्मतमें सब से ज़्यादा नेक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सय्यिदुल औलिया हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तअआला अन्हु सारे आमाल और तमाम इबादात से ज़्यादा अफ़ज़ल व आला महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जानते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की महब्बत : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तअआला अन्हु के बेटे मशहूर आशिक़े रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का एक दफ़ा पांव सूज गया तो आप से कहा गया कि जो आप के सब से ज़्यादा महबूब हो उस को याद कीजिये।

فَصَاحَ يَا مُحَمَّدَاهُ فَانْتَشَرَتْ यानी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने ज़ोर से या मुहम्मदाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) कहा तो उन का पांव ठीक हो गया। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 18, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 351)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व

आलिका वसल्लम कहना शिर्क व बिदअत नहीं, बल्कि सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुन्नत है।

और यह भी पता चला कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहने से बीमारी दूर हो जाती है और मुश्किलें आसान हो जाती हैं और यह भी मालूम हुआ कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम वही शख़्स कहता है जिस को महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम से महब्बत होती है। या अल्लाह तआला हमारे सीना को महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मदीना बना दे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत

हज़रात ! जब भी इश्क़ो उल्फ़त की बात होगी और महब्बत की किताब पढ़ी जाएगी तो आशिक़े रसूल हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे मुबारक ज़रूर आएगा। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इश्क़ो महब्बत के मैदान में इस क़दर अज़ियतें उठाई हैं कि आप के गले में ज़ालिमों ने रस्सी का फन्दा डाला, उन की मुक़द्दस पीठ पर इस क़दर कोड़े बरसाए कि पुश्त मुबारक लहू लुहान हो गई। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सीने पर काफ़िरों ने इतना वज़नी पत्थर रख दिया था कि उन की ज़बान बाहर निकल पड़ी, फिर सख़्त धूप में गर्म गर्म रेत पर ज़ख़्मी पीठ के बल लिटा दिया। मगर ज़मीन व आसमान गवाह हैं, ख़ुदाई गवाह है। ख़ुदा गवाह है। कि इस बे कस व बे बसी की हालत में भी कलमए हक़ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) बलन्द आवाज़ से पढ़ते रहे और ज़बाने हाल से एलान करते रहे कि :

मैं मुस्तफ़ा के जामे महब्बत का मस्त हूँ
यह वह नशा नहीं जिसे तुरशी उतार दे

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

हज़रत बिलाल को महब्बत का कितना अज़ीम सिला मिला : आशिक़े रसूल हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सख़्त आज़माइश व बला से गुज़रे मगर अपने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दामने करम को न छोड़ा। तो अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में कितना बलन्द मक़ाम हासिल हुआ और कितना अज़ीम सिला मिला कि सहाबए किराम आप की इज़्ज़त व तकरीम करते थे और मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपको या सय्यदी या बिलाल कहकर मुख़ातब होते थे, यह सब कुछ महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत थी।

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुमने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

सहाबिये रसूल हज़रत ज़ैद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तय्यिबा के कुर्ब व जवार के रहने वाले थे। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मिलने के लिये ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए तो हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पाक तबीअत अलील थी। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आराम फरमा थे। हज़रत ज़ैद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी मुलाक़ात के बाद जब चले तो आपकी नज़र आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तलवे पर थी, तलवे का जलवा देखते रहे और दरबारे करम से रुख़सत होते रहे। हज़रत ज़ैद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर पहुँच गए मगर निगाहों में आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तलवे का जलवा समाया हुआ था, अपने बाग़ में काम कर रहे थे और बेटे ने आकर यह ख़बर सुनाई कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल शरीफ़ हो गया। तो हज़रत ज़ैद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अभी ताज़ा ताज़ा अपने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे पाक का तलवा शरीफ देखा था और वही उन की आँखों में समाया हुआ और बसा हुआ था तो बस चीख़ उठे और यह दुआ मांगी।

اللهم اذهب بصري حتى لا ارى بعد حبيبي محمد احدا

यानी या अल्लाह तआला मेरी आँख छीन ले यानी मुझे अन्धा कर दे ताकि मैं उन आँखों से अपने महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद किसी को न देखूँ।

(मदारिजुन्नुबुव्वा, जि. 1, स. 351, अनवारे मुहम्मदिया, स. 413)

चुनाँचे! उन की दुआ क़ुबूल हुई और वह अन्धे हो गए।

इस हदीस शरीफ़ को, आशिके मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यूँ बयान फ़रमाया है :

तेरे क़दमों में जो हैं गैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तलवा तेरा

हज़रत ख़ालिद बिन मअदान की महब्बत

सहाबिये रसूल, हज़रत ख़ालिद बिन मअदान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ इतनी ज़्यादा महब्बत थी कि हर वक़्त उन की ज़बान पर आप का नामे पाक रहता था। आप की बेटी हज़रत उब्दह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मेरे बाप हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर में तशरीफ़ लाते और सोने का इरादा फरमाते तो अपने रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला

अन्हुम मुहाजिरीन व अन्सार के साथ अपनी महब्बत को ज़ाहिर करते और हर एक को नाम ले कर याद करते और कहते : هُمْ اَصْلِیْ وَفَصْلِیْ وَاِلَیْهِمْ یَحِنُّ قَلْبِیْ

यानी यह हज़रात मेरी अस्ल और फ़रअ़ हैं। और इन्हीं की जानिब मेरा दिल मैलान करता है। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 17, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 350)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर पता चला कि सोते वक़्त या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहना नाजाइज़ व बिदअत नहीं, बल्कि सहाबिये रसूल की सुन्नत है।

मैं सो जाऊं या मुस्तफ़ा कहते कहते
खुले आँख सल्लि अला कहते कहते

बाप नापाक, बिस्तर पाक : उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के वालिद, अबू सुफ़ियान, सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मदीना तैय्यिबा अपनी बेटी से मिलने गए तो हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बिस्तर लपेट कर रख दिया और काफ़िर बाप को बैठने न दिया और हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने काफ़िर बाप, अबू सुफ़ियान से फ़रमाया कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पाक बिस्तर है और तुम मुश्रिक होने की वजह से नापाक हो। इस लिये इस बिस्तरे नुबुव्वत पर नहीं बैठ सकते। मुश्रिक बाप, अबू सुफ़ियान को बेटी की इस बात से बड़ा रन्ज हुआ। मगर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के दिल में जो महब्बते रसूल थी उस के लिहाज़ से वह कब बरदाश्त कर सकती थीं ? कि बिस्तरे नुबुव्वत पर एक मुश्रिक नापाक बेठे।

अल्लाहु अकबर ! उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने बाप की अज़मत व महब्बत को महब्बते रसूल पर कुरबान कर दिया क्योंकि यही ईमान की शान है कि बाप छूट जाए मगर अज़मते मुस्तफ़ा और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दामन न छूटने पाए।

बे मिसाल महब्बत ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़माने में दो भाई थे जिन का नाम हवीसा और मुहीनसा था। उन में से छोटा ईमान ले आया था और बड़ा अभी तक ईमान न लाया था। छोटे भाई को आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक यहूदी को क़त्ल करने का हुक्म दिया था जो बड़ा अफ़सादी था। तो बड़े भाई ने कहा कि तू ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहता है कि उस का एहसान हमारे ऊपर है। तो छोटे भाई ने जवाब दिया कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही अगर मुझ को तेरे क़त्ल का हुक्म फ़रमा दें तो भी मैं देर न करूँगा और फ़ौरन क़त्ल कर दूँगा। यह सुन कर और अजीब व ग़रीब महब्बत देख कर वह भी मुसलमान हो गया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 355)

हजरात ! दीन व ईमान में मजबूत और सख्त रहने से दूसरों पर बहुत अच्छा असर पड़ता है और पिलपिला और सुलह कुल्ली बनने से खुद का दीन व ईमान भी खतरे में रहता है और दूसरों पर तो कोई असर ही नहीं होता।

सुतूने हन्नाना की महब्बत : मस्जिदे करीम में मिम्बरे करीम बनने से पहले खजूर का एक सुतून था जिसे सुतूने हन्नाना कहते हैं , इस सुतून से आका करीम, मुस्तफा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पुश्ते अनवर लगा कर वअज फरमाया करते थे मिम्बरे करीम बनने के बाद जब आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बरे पर जलवा बार हुए तो सुतूने हन्नाना जोर ज़ोर से रोने लगा।

حَتّٰى نَزَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهِ

(सही बुखारी किताबुल जुमआ, जि. 1, स. 125)

यानी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बरे करीम से उतरे और सुतूने हन्नाना पर अपना दस्ते करम फेरा (तो उस को सुकून हासिल हुआ) और एक रिवायत यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बरे करीम से नीचे उतरे और सुतूने हन्नाना को अपने सीने से लगाया तो उस को सुकून हासिल हुआ और वह चुप हो गया। तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया खुदा की कसम अगर मैं उस को सीने से न लगाता तो यह कियामत तक रोता ही रहता। फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुतूने हन्नाना को मिम्बरे करीम के नीचे दफ़न करा दिया। (शिफा शरीफ, ज़ुरकानी अलल मवाहिब, जि. 4, स. 138)

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाकी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

इस्मे पाक मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

के फ़ज़ाइलो बरकात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

तर्जमा : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। (पारा 26, रुकू 12, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

लब पे आ जाता है जब नामे जनाब
मुंह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जां बे ताब
अपने लब चूम लिया करते हैं

मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मअ़ना : हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक बड़ा ही अज़ीम और प्यारा है इसका मअ़ना है।

اَلَّذِیْ یُحْمَدُ حَمْدًا بَعْدَ حَمْدٍ

यानी जिस ज़ात की हमेशा तारीफ़ की जाए।

हज़रात ! जिस ज़ाते गिरामी की हर जगह और हमेशा तारीफ़ व तौसीफ़ का खुतबा पढ़ा गया है और पढ़ा जाता रहेगा, वह निराली शख़्सियत और प्यारी ज़ात हमारे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की है। फ़र्श पर जिधर देखो उन्हीं के नामे पाक का चर्चा है।

पाँचों वक़्त अज़ानों में, और ख़ुदा की इबादत नमाज़ों में ज़िक्रे ख़ुदा के साथ ज़िक्रे मुस्तफ़ा मौजूद है और आसमानों में, जन्नत की बहारों में, हर सू, हर एक शय में नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जलवा और अर्श की बलन्दी पर नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का झन्डा लहरा रहा है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

अर्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श में तुर्फ़ा धूम धाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

दुरूद शरीफ़ :

हुज़ूर के अस्माए मुबारका की तादाद : हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बहुत से नाम हैं बहुत से उलमाए किराम ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामों की तादाद 99 बयान की है।

और हज़रत अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी अलैहिर्रहमा तहरीर फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अआलिही वसल्लम के नामों की तादाद एक हज़ार है।

(रूहुल बयान, जि. 7, स. 184)

हुज़ूर के ज़ाती नाम दो हैं बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़ाती नाम दो हैं। आसमानों में अहमद और ज़मीन में मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम।

हज़रात ! अहमद का मअ़ना है यानी जो ज़ात अल्लाह तआला की ख़ूब हम्द और सब से ज़्यादा तारीफ़ बयान करे और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मअ़ना यानी अल्लाह तआला ने जिस ज़ात की तारीफ़ व ख़ूबी को सब से ज़्यादा उजागर किया और बयान फ़रमाया

यही वजह है : कि आसमानों में हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक अहमद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है कि फ़रिश्तों को मालूम हो जाए कि जिस ज़ात ने सब से ज़्यादा अल्लाह तआला की हम्द और तारीफ़ बयान की है। वह महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह अहमदे मुज्तबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं। और ज़मीन में हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है कि दुनिया के तमाम बादशाहों, अमीरों को पता चल जाए कि सब से ज़्यादा जिस ज़ात की तारीफ़ो तौसीफ़ बयान की गई है और हमेशा बयान होती रहेगी वह ज़ाते गिरामी महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की है।

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक अहमद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) का

ज़िक्र कुरआन शरीफ़ में एक मरतबा आया।

وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗ اَحْمَدُ ط

तर्जमा : (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि) मैं खुश खबरी देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आने वाला है उस का नाम अहमद होगा। (पारा 28, रुकू 9)

और ! नामे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) का तज़किरा चार मरतबा हुआ है।

(पारा 4, रुकू 6) —— وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ط

(पारा 22, रुकू, 2) —— مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ط

(पारा 26, रुकू, 12) —— مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ

(पारा 26, रुकू, 5) —— وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ख़ुदा ने आक़ा करीम का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) रखा

सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह ! जब बच्चा पैदा होता है तो उस का नाम मां, बाप, दादा, दादी उस्ताज़ व पीरो मुर्शिद वग़ैरह रखते हैं मगर महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक खुद ख़ुदाए तआला ने रखा मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत आमना तैयिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को ख्वाब में बशारत दी गई कि तू इस उम्मत के सरदार की मां है जब वह पैदा हों तो उन का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) रखना। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 303)

और ! शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक ख़ल्क़ (यानी तमाम कायनात) की पैदाइश से एक हज़ार साल पहले रखा।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 307)

नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत

(1) अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हदीसे क़ुद्सी है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

وَعِزَّتِيْ وَجَلَالِيْ لَا اُعَذِّبُ اَحَدًا يُّسَمّٰى بِاسْمِكَ فِي النَّارِ

तर्जमा : यानी (ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं उस को दोज़ख़ में अज़ाब नहीं दूँगा जिस का नाम आप के नाम (मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) पर होगा।

(सीरते हलबिया, जि. 1, स. 135, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 162, अनवारे मुहम्मदिया, स. 316)

नामे पाक की बरकत से कभी फ़ाक़ा नहीं होगा

(2) अहले मक्का कहते हैं : مَا مِنْ بَيْتٍ فِيْهِ اِسْمُ مُحَمَّدٍ اِلَّا نُمِيَ وَرُزِقَ وَرُزِقَ جِيْرَانُهُمْ

तर्जमा : यानी जिस घर में मुहम्मद नाम का कोई हो तो उस घर में ख़ूब बरकत होगी और रिज़्क़ ज़्यादा मिलेगा और उस के पड़ोसी को भी। (शिफा शरीफ़, जि. 1, स. 105)

(3) एक रिवायत में है कि जिस घर या मजलिस में मुहम्मद नाम का शख़्स हो वह घर और मजलिस बा बरकत हो जाती है। (कश्फ़ुल गुम्मा, जि. 1, स. 283)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शफ़ाअत फ़रमाएंगे

मशहूर आशिके रसूल हजरत अल्लामा शैख़ अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं :

फ़ारसी.............

तर्जमा : यानी जिस का नाम मुहम्मद होगा हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस की शफ़ाअत करके जन्नत में दाखिल फरमाएंगे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 362)

नामे पाक की बरकत से लड़का पैदा हो और जिन्दा रहे

हज़रत अल्लामा इस्माईल हक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं :

مَنْ كَانَ لَهٗ ذُوْبَطْنٍ فَاَجْمَعَ اَنْ يُّسَمِّيَهٗ مُحَمَّدًا رَزَقَهُ اللّٰهُ غُلَامًا. وَمَنْ كَانَ لَا يَعِيْشُ لَهٗ وَلَدٌ
فَجَعَلَ اللّٰهَ عَلَيْهِ اَنْ يُّسَمِّيَ الْوَلَدَ الْمَرْزُوْقَ مُحَمَّدًا عَاشَ

तर्जमा : यानी जिस की बीवी हामिला हो और बच्चा का नाम मुहम्मद रखने का इरादा करे तो अल्लाह तआला उसे बेटा अता करेगा और जिस का बच्चा जिन्दा न रहता हो और वह अल्लाह तआला के भरोसे पर इरादा कर ले कि वह होने वाले बच्चे का नाम मुहम्मद रखेगा तो उस का बच्चा ज़िन्दा रहेगा। (रूहुल बयान शरीफ़, जि. 7, स. 184, मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 42)

जिस का नाम मुहम्मद है क़ियामत के दिन जन्नत में दाख़िल होगा

शाह तैबा आका करीम, मुस्तफा रहीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जिस ने नाम रखा तो उस नामे पाक की बरकत से वह शख़्स जन्नत में दाख़िल हो जाएगा मुलाहज़ा फरमाइये।

हदीस शरीफ़ :

اِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ نَادٰى مُنَادٍ اَلَا لِيَقُمْ اِسْمُهٗ مُحَمَّدٌ فَلْيَدْخُلِ الْجَنَّةَ لِكَرَامَةِ اِسْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तर्जमा : यानी जब क़ियामत का दिन होगा तो (अल्लाह तआला की जानिब से) निदा करने वाला यह निदा करेगा ख़बरदार वह शख़्स खड़ा हो जाए जिस का नाम मुहम्मद है और

जन्नत में दाखिल हो जाए। महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे पाक की बरकत व करामत से। (शिफा शरीफ़, जि. 1, स. 105)

एक घर में ज़्यादा से ज़्यादा मुहम्मद नाम वाले होना चाहिये

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने बारगाहे करम में अर्ज किया कि जिस घर में एक शख्स का नाम मुहम्मद है तो क्या दूसरे का नाम भी मुहम्मद ही पर रखे तो आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया :

अरबी : مَا ضَرَّ اَحَدَكُمْ اَنْ يَكُوْنَ فِيْ بَيْتِهٖ مُحَمَّدٌ وَّمُحَمَّدَانِ وَثَلَاثَةٌ

(शिफा शरीफ, जि. 1, स. 105)

तर्जमा : यानी तुम को कोई नुकसान नहीं कि तुम्हारे घर में एक नाम का मुहम्मद हो या दो नाम वाले मुहम्मद हों या तीन नाम वाले मुहम्मद हों।

हज़रत आदम की तौबह कुबूल हुई, नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से

हज़रात ! जिस ज़ाते गिरामी के सबब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मस्जूद मलायका के मरतबे से मुशर्रफ़ हुए थे वही ज़ाते पाक उन की तौबह के कुबूल होने का बाइस बनती है। चुनाँचे हज़रत आदम सफ़ियुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब जन्नत से रूए ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो तीन सो बरस तक रो, रो कर तौबह व इस्तिग़फार करते रहे और नदामत की वजह से सर को आसमान की तरफ न उठाया।

और हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि :

قَالَ يَارَبِّ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ لَّمَّا غَفَرْتَ لِيْ.

यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब तआला मैं तुझ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीला से सवाल करता हूँ कि मुझे बख्श दे।

तो अल्लाह तआला ने फरमाया : ऐ आदम (अलैहिस्सलाम) तूने (मेरे महबूब) मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को कैसे पहचाना ? अभी तो मैंने उन को पैदा नहीं किया (इस दुनिया में) तो उन्होंने अर्ज किया ऐ मेरे रब तआला जब तूने मुझ को पैदा फ़रमाया और मुझ में रूह डाली तो मैं ने अपने सर को उठाया और अर्शे आज़म के सुतूनों पर लिखा हुआ देखा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) तो मैं ने जान लिया कि जिस का नाम तूने अपने नाम के साथ लिखा है वह तुझे तमाम मखलूक़ से ज़्यादा महबूब है। فَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى صَدَقْتَ يَا اٰدَمُ اِنَّهٗ لَاَحَبُّ الْخَلْقِ اِلَيَّ وَاِذْ سَاَلْتَنِيْ بِحَقِّهٖ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكَ وَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُكَ (ज़रक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 62, दुर्रे मन्सूर, अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 2, स. 615, [illegible] स. 290, अहमद)

यानी तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ आदम (अलैहिस्सलाम) तुम ने बिल्कुल सच कहा बे शक वह तमाम मख़लूक़ में सब से ज़्यादा महबूब हैं और जब तुम ने उन के वसीले से बख़्शिश चाही तो मैं ने तुम को बख़्श दिया और अगर वह मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) न होते तो मैं तुम को पैदा ही नहीं करता।

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

لَوْ تَشَفَّعْتَ اِلَيْنَا بِمُحَمَّدٍ فِيْ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَشَفَّعْنَاكَ

(ज़ुरकानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 62)

यानी ऐ आदम अलैहिस्सलाम अगर तुम (मेरे महबूब) मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) का नाम ले कर तमाम ज़मीन व आसमान वालों की बख़्शिश मांगते तो हम सब को बख़्श देते और तुम्हारी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाते।

ऐ ईमान वालो ! हदीसे तैय्यिबा से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हुआ कि अल्लाह तआला की बारगाहे समदियत में हमारे आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे मुबारक इस क़दर महबूब व मक़बूल है कि जिस ने नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला पेश किया तो रब तआला की बारगाह में उस की दुआ मक़बूल हो गई।

हमारे मुर्शिदे आज़म मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ्तिये आज़मे हिन्द अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हर गिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

और मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बे उन के वास्ता के ख़ुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत, ग़लत यह हविस बे बसर की है

दुरूद शरीफ़ :

अर्श पर नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लिखा है

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

رَاَيْتُ عَلٰى اَقْوَامِ الْعَرْشِ مَكْتُوْبًا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा हुआ है।

यानी मैं ने देखा कि अर्शे आज़म के सुतूनों पर ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा हुआ है।

(ज़ुरकानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 62, अलमुस्तदरिक हाकिम, जि. 2, स. 615)

जन्नत की हर चीज़ पर नामे मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लिखा है

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत शीस अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जब मुझे जन्नत में ठहराया तो मैंने हर जगह नामे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा देखा, जन्नत के हर महल व चप्पारा पर नामे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) नजर आया, जन्नत की हूरों के सीनों पर, जन्नत के दरख़्तों के पत्तों पर وَعَلٰى وَرَقِ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى وَعَلٰى اَطْرَافِ الْحُجُبِ وَبَيْنَ اَعْيُنِ الْمَلٰئِكَةِ यानी और सिदरतुल मुन्तहा के पत्तों पर और पर्दों के किनारों पर और फ़रिश्तों की आँखों की पुतलियों में लिखा पाया। (खसाइसे कुब्रा, जि. 1, स. 7)

हर आसमान पर नामे मुहम्मद

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा है

हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि शबे मेअ़राज مَا مَرَرْتُ بِسَمَاءٍ اِلَّا وَجَدْتُ اِسْمِيْ فِيْهَا مَكْتُوْبًا यानी मैं जिस आसमान से गुज़रा सब पर मैं ने अपना नाम लिखा पाया।

(हुज्जतुल अलल आलमीन, स. 311)

हज़रात ! दिन के उजाले से ज़्यादा रोशन और ज़ाहिर हो गया कि हम ग़रीबों के आक़ा, हम फ़क़ीरों की सरवत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे पाक को ख़ुदा करीम ने फ़र्श से अर्श तक और दुनिया से जन्नत तक बलन्द किया और हर शय पर लिखा भी, इस लिये हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी उठते बैठते, सोते जागते, सुबह से शाम तक, रात व दिन या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम की सदा लगाते रहें और पुकारते रहें।

हश्र तक डालें हम पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िले गिराते जाएंगे

ख़ाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जाएंगे

दुरूद शरीफ़ :

नामे मुबारक चूमना हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत है

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के दरमियान जलवा

अफ़रोज थे कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अज़ान पढी तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दोनों अंगूठों को (चूम कर) अपनी दोनों आँखों पर रखा और पढ़ा قُرَّةُ عَيْنِي بِكَ يَارَسُوْلَ اللهِ ﷺ

जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अज़ान दे चुके तो आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स ऐसा करेगा जैसा मेरे अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने किया है तो मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा और वह मेरे साथ जन्नत में दाख़िल होगा। (रूहुल बयान शरीफ़, जि. 7, स. 229)

हज़रात ! नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चूम कर आँखों पर लगाने वाले बड़े ही ख़ुश नसीब होते हैं इस लिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत कर के जन्नत में ले जाऐंगे।

लिहाज़ा ! साबित हुआ कि जन्नत में जाने वाले ही अंगूठा चूम कर आँखों से लगाते हैं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

लब पे आ जाता है जब नाम जनाब, मुंह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जां बे ताब अपने लब चूम लिया करते हैं

नामे मुबारक चूमने वाला कभी अन्धा न होगा

आफ़ताबे रिसालत, माहताबे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ سَمِعَ اِسْمِیْ فِی الْاَذَانِ فَقَبَّلَ ظُفْرَیْ اِبْہَامَیْہِ وَمَسَحَ عَلٰی عَیْنَیْہِ لَمْ یَعْمَ اَبَدًا

यानी जो शख़्स अज़ान में मेरा नाम सुने और अपने अंगूठे चूम कर आँखों से लगाले वह कभी अन्धा न होगा। (रूहुल बयान शरीफ़, जि. 7, स. 229)

या अल्लाह तआला ! महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आशिक़ और नामे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीवाना बना दे। आमीन सुम्मा आमीन।

नामे मुबारक की बरकत से दो सौ बरस का गुनाह बख़्शा गया

हज़रत अली बिन बुरहानुद्दीन हल्बी और हज़रत अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह और हज़रत अल्लामा यूसुफ़ इब्ने इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अपनी किताबों में लिखा है कि :

बनी इसराईल में एक बड़ा गुनाहगार था जिस ने दो सो बरस तक अल्लाह तआला की ना फ़रमानी की, जब वह मर गया तो लोगों ने उस को नजिस व गन्दगी की जगह फेंक दिया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल की कि उस शख़्स को वहाँ से उठा कर लाओ और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़वाओ और दफ़्न करो। कलीमुल्लाह

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की : ऐ अल्लाह तआला के नबी इसराईल गवाही देते हैं कि वह शख़्स बड़ा ही गुनाहगार था, दो सो बरस तक तेरी ना फ़रमानी करता रहा। इरशाद हुआ कि यह सच है लेकिन उस की आदत थी।

كُلَّمَا نَشَرَ التَّوْرَاةَ وَنَظَرَ اِلٰى اِسْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَهُ وَوَضَعَهُ عَلٰى عَيْنَيْهِ وَصَلّٰى عَلَيْهِ فَشَكَرْتُ ذَالِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوْبَهُ وَزَوَّجْتُهُ سَبْعِيْنَ حُوْرَاءَ

तर्जमा : यानी जब वह तौरात शरीफ़ खोलता और (मेरे महबूब के) नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखता तो उस को चूम कर आँखों पर रख लेता और मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ता। इस लिये मैं ने उस को बख़्श दिया सत्तर हूरें उसके निकाह में दिया। (अबू नुऐम हिलयतुल औलिया, सीरते हलबिया, जि. 1, स. 60 हुज्जतुल्लाहे अलल आलमीन, मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 82)

हज़रात! हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर है कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे मुबारक को चूमने से आदमी गुनाहगार नहीं होता है बल्कि नामे मुबारक चूमने की बरकत से दो सो साल का गुनाहगार जन्नती और मक़बूले बारगाहे ख़ुदा हो गया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

या मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहा मुश्किल आसान हो गई

हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बुख़ारी अल अदबुल मुफ़रद में लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का पांव सुन हो गया तो एक शख़्स ने उन से कहा कि उसे याद कीजिये जो आप को सब से ज़्यादा महबूब है।

فَقَالَ يَا مُحَمَّدَاهْ

(बुख़ारी, अल अदबुल मुफ़रद, स. 432 शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 18)

यानी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने पुकारा या मुहम्मद, सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम।

आंखें रौशन हो गई : हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक नाबीना शख़्स आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला आंखें रोशन फ़रमा दे, तो आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जाओ वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढो और उस के बाद यह दुआ मांगो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ قَدْ تَوَجَّهْتُ

بِكَ اِلٰى رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

(इब्ने माजह, स. 100, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 197)

ऐ ईमान वालो ! यह वह दुआ है जो हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुद अपने सहाबी को तालीम फ़रमाई और इस हदीस शरीफ़ से साफ़ ज़ाहिर है कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गोया सबक़ दे रहे हैं कि अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ के वक़्त मेरी ज़ात का वसीला और मेरे नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला और या मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहने से अल्लाह तआला ख़ुश होता है और दुआ मांगने वाले की दुआ को कुबूल फ़रमा लेता है।

हज़रात ! हमारा मुख़ालिफ़ कहता है कि या मुहम्मद, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तअआला अलैका व आलिका वसल्लम कहना यह सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़ाहिरी ज़माने में था, अब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हो चुका है इस लिये अब नहीं कह सकते। (मआज़ल्लाह) मुलाहज़ा कीजिये।

हज़रत उस्माने ग़नी के ज़माने में या मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहा

मशहूर आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तबरानी शरीफ़ की हदीस को नक़्ल फ़रमाया है कि एक शख़्स को हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कुछ काम था मगर वह तवज्जोह न फ़रमाते थे। उस ने अपनी परेशानी का ज़िक्र हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किया तो उन्होंने ने वही दुआ जो नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें तालीम फ़रमाई थी, उस शख़्स को सिखा दी और कहा कि दो रकअत नफ़्ल नमाज़ अदा करके यह दुआ पढ़ो, तुम्हारी मुश्किल आसान हो जाएगी। चुनाँचे उस परेशान शख़्स ने यह दुआ पढ़ी और फिर ख़लीफ़ए वक़्त अमीरुल मोमिनीनं हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास हाज़िर हुआ इस से पहले तो आप उस की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं करते थे मगर आज दुआ का यह असर हुआ कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसे अपने पास बिठाय, उस से उस की हाजत व ज़रूरत दर्याफ़्त की और उसे पूरा फ़रमाया। और दुआ की यह बरकत थी कि फिर फ़रमाया कि तुम्हें हम से जब भी कोई काम हो तो आ जाया करो। उस के बाद वह शख़्स वज़ीफ़ा बताने वाले हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गया और शुक्रिया अदा

करते हुए कहा जज़ाकल्लाहु खैरा यानी अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर अता फरमाए, आप की बताई हुई दुआ से मेरा काम बन गया। (जज़बुल कुलूब, स. 219)

हज़रात ! महबूबे खुदा मुहम्मद, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद भी सहाबा ने या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम पुकारा।

नामे मुबारक का अदब : सुल्तान महमूद ग़ज़नवी ने एक रोज अपने वज़ीरे खास के बेटे मुहम्मद से कहा : ऐ अयाज़ के बेटे पानी ला। हज़रत अयाज़ जो वली सिफ़ते वज़ीर थे, जब उन्होंने बादशाह के मुंह से यह अलफ़ाज़ सुने तो मुतफ़क्किर हुए कि शायद मेरे बेटे से कोई बे अदबी, गलती सरज़द हो गई है जिस की वजह से सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह नाराज़ हैं जो आज मेरे बेटे का नाम ले कर नहीं बुलाया बल्कि अयाज़ का बेटा कहा। बहर हाल हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह परेशान हो गए। बादशाह ने हज़रत अयाज़ के परेशानी की वजह मालूम की तो हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने कहा कि बादशाहे मुअज़्ज़म ! आज आप ने मेरे बेटे को बुलाया तो नाम ले कर नहीं बल्कि अयाज़ के बेटे कह कर बुलाया। मुझे फ़िक्र हुई कि शायद मेरे बेटे से कोई बे अदबी, गुस्ताखी हो गई है तो सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह से फ़रमाया : ऐ अयाज़ ! मैं तुम्हारे बेटे से नाराज़ नहीं हूँ बल्कि मुआमला यह है कि तुम्हारे बेटे का नाम मुहम्मद है और जिस वक़्त मैंने उसे बुलाया था तो उस वक्त मेरा वुज़ू नहीं था।

फ़ारसी................

यानी मुझे शर्म आई कि बे वुज़ू लफ़्ज़ मुहम्मद ज़बान पर लाऊँ।

(रूहुल बयान शरीफ, जि. 7, स. 175)

हज़रात ! हज़रत सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह बादशाह व वज़ीर दोनों नेक और वली हैं, मालूम हुआ कि जो जितना ही नेक व सालेह होता है वह उसी कदर नामे मुबारक का अदब व एहतिराम करता नज़र आता है और जब उन के दिल में नामे मुबारक का इतना अदब व महब्बत है तो खुद महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते बा बरकत के अदब व महब्बत का किया आलम होगा।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क तेरे सदके जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

शैख अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी की रिवायत : आशिके रसूल मुहक्किक अलल इतलाक शैख अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक्ल फरमाते हैं कि मुझे सुल्तानुल बगदाद,, फरदुल अफराद, कुतुबुल अकताब अबुश्शेख, अबू मुहम्मद

सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख्वाब में ज़ियारत नसीब हुई, उन की ख़िदमत में खड़े हो गए, हाज़िरीने मजलिस ने अर्ज की कि मुहम्मद अब्दुल हक़ सलाम अर्ज करता है तो हज़रत गौसुस्सक़लैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और आप से मुआनक़ा फ़रमाया यानी हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने सीने से चिमटा कर गले लगा लिया और इरशाद फ़रमाया कि अब्दुल हक़ तुम पर दोज़ख की आग हराम है। हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि यह बशारत व ख़ुश ख़बरी इस नामे मुबारक की बरकत से है क्यों कि मेरा नाम मुहम्मद अब्दुल हक़ है। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 162)

हज़रात ! हमारे पीरे आज़म, हुज़ूर ग़ौसे आज़म, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नामे मुबारक का कितना अदब किया कि नामे मुबारक सुन कर बा अदब खड़े हो गए और उस नाम वाले से मुआनक़ा फ़रमाया और जन्नत की बशारत भी दी। यह हैं नामे मुबारक की बरकतें और उस की रहमतें।

दुआ : अल्लाह तआला हमें आशिक़े रसूल बना कर ज़िन्दा रखे और अदब वालों में क़ुबूल फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस शेर के साथ मैं आप हज़रात से रुख़सत हो रहा हूँ।

करूँ तेरे नाम पे जां फ़िदा, न बस एक जां, दो जहाँ फ़िदा
दो जहाँ से भी नहीं जी भरा, करूँ क्या करोरों जहाँ नहीं

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

तीसरा जुमा .... पहला बयान

मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

की आमद

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط

तर्जमा : यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से इन की मदद की। (पारा 28, रुकूअ् 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आफ़ाक़ में फेलेगी कब तक न महक तेरी
घर घर लिये फिरती है पैग़ाम सबा तेरा

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

हज़रात! आशिक़े मदीना मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, इमामे इश्क़ो महब्बत अश्शाह इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में क़ई तरह के फ़ितने पैदा हो चुके थे, कुछ फ़ितने खुले हुए थे और कुछ फ़ितने इस्लामी लिबास में थे। वह शहद दिखाते थे और ज़हर पिलाते थे।

उस दौर में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते अनवर पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से हमले किये जा रहे थे जिस का मक़सद साफ तौर पर यह था कि आक़ाए कायनात मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान कम कर दी जाए। यही वजह है कि कभी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को एक आम बशर साबित करने की नापाक कोशिश हो रही थी, कभी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब पर उंगलियाँ उठाई जा रही थीं, कभी बारगाहे ईज़दी में आप की वजाहत व अज़मत पर पर्दा डाल कर शफ़ाअते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इनकार किया जा रहा था, कभी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इल्म पर शैतान के इल्म की बरतरी साबित करने की

मज़मूम जसारत की जा रही थी और हद तो यह है कि अल्लाह वहदहू ला शरीक के हवाले से इमकाने किज़्ब यानी अल्लाह तआला झूट बोल सकता है (मआज़ल्लाह) ऐसे गन्दे और नापाक अक़ीदे फैलाए जा रहे थे। मुसलमान तरह तरह के वहम व शक में मुब्तला होता हुआ नज़र आ रहा था।

ऐसे फ़ितनो और परा गन्दा माहौल में अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मोअजिज़ा और सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत बन कर ईमान व इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ के लिये इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जलवा गर हुए।

अल्लाह तआला की अता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इनायत और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नज़रे विलायत से और अपने मुर्शिदाने इज़ाम की दुआओं से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पचास से ज़ाइद उलूम व फ़ुनून पर कामिल मलका हासिल था और आप ने ईमान व इस्लाम और मुसलमानों के सच्चे अक़ीदे की हिफ़ाज़त की ख़ातिर एक हज़ार से ज़्यादा तक़रीबान चौदहसौ किताबें तहरीर फ़रमाईं।

क्यों रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

ऐ इमाम अहमद रज़ा ! तुम्हारी तुरबत पर शाम व सहर रहमत व नूर का सावन बरसे। तुम्हारे क़लम की रौशनाई ने शहीदों के लहू की तरह बाग़े इस्लाम को हरा भरा बना दिया तुम ने बद अक़ीदगी के आंधियों के मु क़ाबले में इश्क़ का चिराग़ जलाया और ज़िन्दगी का लम्हा लम्हा इस्लाम व ईमान की बक़ा के लिये वक़्फ़ कर दिया।

ऐ अहले सुन्नत के मोहसिन ! तुम ने हक़ व बातिल के दरमियान इतनी वाज़ेह और ज़ाहिर लकीर न खींच दी होती तो आज बद अक़ीदगी और गुमराही के उमण्डते हुए ख़तरनाक सैलाब में मोमिनों और मुसलमानों का क्या हाल होता।

क्या मालूम हम अहले सुन्नत किस ज़लालत व बद अक़ीदगी और जहन्नमी राह पर भटकते होते, हमारा दीन व ईमान आप का मरहूने मिन्नत है।

(2) जो दीन हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दिया था।

उस दीन की हिफ़ाज़त व सयानत अच्छे रज़ा, प्यारे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने की है।

ऐ अहले सुन्नत के इमाम ! अल्लाह तआला ग़ाफ़िर व क़दीर तुम्हारी ख़्वाब गाह को रहमतों के फूल से भर दे।

फ़ना के बाद भी बाक़ी है शाने रहबरी तेरी
ख़ुदा की रहमतें हों ऐ अमीरे कारवां तुझ पर

इमाम अहमद रज़ा मुजद्दिदे आज़म : सही हदीस शरीफ़ में हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ اللهَ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْأُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا

यानी हर सदी के ख़त्म पर इस उम्मत के लिये अल्लाह तआला एक मुजद्दिद ज़रूर भेजेगा जो उम्मत के लिये उस का दीन ताज़ा कर दे। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 241)

मशहूर आलिमे बा अमल हज़रत मौलाना अश्शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं :

इस्लामी बोली में मुजद्दिद उसे कहते हैं जो उम्मत को भूले हुए अहकामे शरइय्या याद दिलाए। नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुर्दा सुन्नतों को ज़िन्दा फ़रमा दे, फ़िक़ह कलाम के उलझे हुए मअरकतुल आरा मसाइल को सुलझा दे, अपनी आलिमाना सतवत के ज़रीए एलाए कलिमतुल हक़ फ़रमा कर बातिल और अहले बातिल की झूटी शौकत को मिटा दे।

हदीस शरीफ़ की रहनुमाई के मुताबिक़ जब हम चौदहवीं सदी पर निगाह डालते हैं तो हमें एक ऐसा मुजद्दिद नज़र आता है जो चौदहवीं चाँद की तरह अपनी शाने मुजद्दिदियत में दरख़्शां और ताबां है। फ़ज़्लो कमाल के साथ हर एक इल्म में अल्लाह व रसूल जल्ला जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दीन के उस मुजद्दिद को वह बलन्द मरतबा अता फ़रमाया जिस के सामने अरब व अजम हिल्लो हरम के बड़े बड़े उलमा ने सरे नियाज़ ख़म किये जिस के इल्मी दबदबे से एशिया के फ़लासफ़ा लरज़ते रहे। इस अज़ीमुल मरतबत मुजद्दिद का प्यारा नाम अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा है जो इस्लामी दुनिया में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी के नाम से मशहूर है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरदाहु अन्ना व अन अहलिस्सुन्नते वल जमाअत। (सवानेह आला हज़रत, स. 85)

ऐ इमामे अहले सुन्नत ताजदारे इल्मो फ़न
ख़ूब की तजदीदे मिल्लत तुमने ऐ सिर्रो चमन

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के ख़ानदान का मुख़्तसर ख़ाका

(1) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा (2) बिन हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ां (3) बिन मौलाना रज़ा अली ख़ाँ (4) बिन मौलाना हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ (5) बिन मौलाना शाह मुहम्मद आज़म ख़ां (6) बिन हज़रत मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ (7) बिन हज़रत मुहम्मद सईदुल्लाह ख़ां रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन।

(1) हज़रत मुहम्मद सईदुल्लाह ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह क़न्धार (मुल्क अफ़ग़ानिस्तान) के बा अज़मत क़बीला बड़हेच के पठान थे। हुकूमते मुग़लिया के ज़माने में लाहौर तशरीफ़ लाए और मुअज़्ज़ज़ ओहदों पर फ़ाइज़ रहे। लाहौर का शीश महल आप की

जागीर था। फिर लाहौर से देहली तशरीफ़ लाए उस वक़्त आप शुश हज़ारी ओहदे पर फ़ाइज़ थे, दरबारे शाही से आप को शुजाअते जंग का खिताब मिला।

(2) हज़रत मुहम्मद सआदत यार खां अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान को हुकूमते मुग़लिया ने एक जंगी मुहिम सर करने के लिये रोहील खन्ड भेजा, फ़तह याबी के बाद फ़रमाने शाही पहुँचा कि आप को इस इलाक़े का सूबा दार बनाया गया है लेकिन उस वक़्त आप बिस्तरे विसाल पर थे और सफ़रे आख़िरत की तैय्यारी फ़रमा रहे थे।

(3) हज़रत मौलाना मुहम्मद आज़म खां अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान बरैली तशरीफ़ फ़रमा हुए, कुछ दिन हुकूमत के ओहदए वुज़ारत पर फ़ाइज़ रहे फिर उमूरे सलतनत से बिल्कुल अलग होकर इबादत व रियाज़त में मशगूल रहने लगे आपने तर्के दुनिया फ़रमा कर शहर बरैली के मुहल्ला मेअ़मारान में इक़ामत इख़्तियार फ़रमाई, वहीं आप का मज़ारे पाक भी है। हज़रत मौलाना मुहम्मद आज़म खां अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान का शुमार साहिबे करामत औलिया में है।

(4) हज़रत मौलाना हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान शहर बदायूं के तहसील दार थे उस ज़माने में यह ओहदा आज कल के डी.एम के मन्सब का क़ाइम मुक़ाम था। दोसो सवारों की बटालीन आप की ख़िदमत में रहा करती थी, आप को आठ गांव जागीर में मिले थे।

(5) कुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना शाह रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ज़माने के बे मिस्ल आलिम और वलिये कामिल गुज़रे हैं। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ानदान में हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वक़्त से हुकमरानी का रंग ख़त्म हो कर फ़क़ीरी व दुरवेशी का रंग ग़ालिब आ गया वर्ना आप से पहले बुज़ुर्गो का यह आलम था कि शुरू में उमूरे सलतनत के ओहदों पर फ़ाइज़ रहते फिर आख़िर में उस से अलग हो कर इबादत व रियाज़त में मशगूल हो जाते लेकिन यह सिलसिला कुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना शाह रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात से ख़त्म हो गया। चुनाँचे आप ने दुनियवी हुकूमत का कोई ओहदा इख़्तियार न फ़रमाया और इब्तिदा ही से ज़ोहदो तक़वा, फ़क्र व तसव्वुफ़ की ज़िन्दगी गुज़ारी। आप की ज़ाते गिरामी से बहुत सी करामतें ज़हूर में आई हैं।

(6) हज़रत मौलाना शाह नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने वालिदे माजिद शाह रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी हासिल किये। आप अपने ज़माने के जलीलुल क़द्र आलिम, बे नज़ीर मुसन्निफ़ गुज़रे हैं। आप की सब से बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि अल्लाह तआला ने आप को महबूबे ख़ुदा हुज़ूरे अक़दस सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी व ख़िदमत और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुश्मनों पर ग़ेज़ब शिद्दत के लिये पैदा फ़रमाया था। (सवानेह आला हज़रत, स. 86)

हज़रात ! मज़कूरा ख़ानदानी हालात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित होता है कि मुजद्दिद इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के आबा व अजदाद बाप, दादा थे अकसर आलिमो फ़ाज़िल, हाफ़िज़ क़ाज़ी मुफ़्ती व मुहद्दिस, वली कुतुब थे तो इस हक़ीक़त के बाद यह कहना बजा होगा कि मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ानदानी आलिम व फ़ाज़िल, मुफ़्ती व मुहद्दिस, वली कुतुब थे।

आला हज़रत की विलादत : आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादते बा सआदत 10 शव्वाल 1272 हि. मुताबिक़ 14 जून 1856 ई. बरोज़ शम्बा ज़ोहर के वक़्त शहर बरेली शरीफ़ मुहल्ला जसोली में हुई। पैदाइशी नाम मुहम्मद और तारीख़ी नाम अल मुख़्तार है। जद्दे अमजद मौलाना रज़ा अली ख़ाँ ने आप का इस्म शरीफ़ अहमद रज़ा रखा। ख़ुद आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी विलादत की सन् हिजरी इस आयते करीमा से निकाली है।

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ

तर्जमा : यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया, और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की। (पारा 28, रुकू 3, कंज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! आयते करीम का हासिल यह है कि जो शख़्स अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुश्मनों से नफ़रत करता उन से बेज़ार हो कर तिनका तोड अलग रहेगा उन से मेल जोल, दोस्ती न रखेगा तो उस के लिये वअदए इलाहिया है कि अल्लाह तआला उसके दिल में ईमान नक़्श करमा देगा और उस को अपनी मददे ख़ास से नवाज़ेगा। अपने और ग़ैर सब जानते हैं कि आला हज़रत की ज़ात गिरामी ख़ुदा व रसूल के मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों से नफ़रत करने और बे ज़ार रहने में सं मील की हेसियत रखती है लिहाज़ा यह कहना बिल्कुल बजा होगा और दुरुस्त है कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुदाए तआला के उन ख़ास बन्दों में हैं जिन के दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया है चुनाँचे ख़ुद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है कि अगर मेरे दिल के दो टुकड़े कर दिये जाएं तो ख़ुदा की क़सम एक पर लिखा होगा ला इलाहा इल्लल्लाहु और दूसरे पर लिखा होगा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। (सवानेह आला हज़रत, स. 88)

हज़रात ! मेरे आक़ाए नेअमत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत, सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तन मन धन सब कुछ अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर फ़िदा और कुरबान था।

ख़ुद फ़रमाते हैं :

मुरा तन मन धन सब फूंक दिया
यह जान भी प्यारे जला जाना

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कैसे सच्चे आशिक़े ख़ुदा व मुस्तफ़ा (जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) थे कि ख़ुद फ़रमाते हैं कि अगर मेरे दिल के दो टुकड़े किये जाएं तो एक पर ला इलाहा इल्लल्लाहु और दूसरे पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा होगा।

ख़ुदा एक पर हो तो एक पर मुहम्मद
अगर क़ल्ब अपना दो पारा करूँ मैं

(जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम)

वालिदे गिरामी का ख़्वाब : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे गिरामी हज़रत मौलाना शाह नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक अजीब व ग़रीब ख़्वाब देखा और अपने वालिदे माजिद, क़ुतबुल वक़्त हजरत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ख़्वाब बयान किया जिस की ताबीर में क़ुतबुल वक़्त ने इरशाद फ़रमाया कि :

ख़्वाब मुबारक है। बशारत हो कि अल्लाह तआला तुम्हारी पुश्त से एक ऐसा सालेह फ़रज़न्द पैदा करेगा जो उलूम के दरया बहा देगा और उस की शोहरत मशरिक़ व मग़रिब में फैलेगी।

जब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए तो आप के दादा जान क़ुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गोद में उठा लिया, प्यार किया और फ़रमाया कि मेरा यह बेटा बहुत बड़ा आलिम होगा इस के चश्मए इरफ़ान से एक दुनिया सेराब होगी। (हयाते आला हज़रत, स. 22)

हज़रात ! बचपन में ही आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशानी पर सआदत के आसार नुमायां थे और हक़ीक़त में निगाहें देख रही थीं कि जो बच्चा इब्तिदाअन ही इतना हो नहार और अरजुमन्द है ख़ुदाए तआला की अता व बख़्शिश से इल्मो फ़न का दरया बहाएगा और करामत व बुज़ुर्गी का आफ़ताब बन कर चमकेगा।

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिन सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

आला हजरत के दादा जान क़ुतबुल वक़्त थे

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दादा जान, क़ुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सनद याफ़्ता आलिमो फ़ाज़िल, मुफ़्ती व मुहद्दिस थे। आप के ख़ुदा दाद इल्मो फ़ज़्ल की शोहरत अतराफ़ व ज़मान में हुई।

कुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़क़रो तसव्वुफ़ में कामिल महारत रखते थे, आप बहुत पुर असर वअ़ज़ फ़रमाते थे, आप के औसाफ़ शुमार से बाहर हैं, ख़ुसूसन फ़साहत कलाम, ज़ोहदो क़नाअत, सलाम की सबक़त, हिल्म व तवाज़ोअ़, ज़रीदो तफ़रीद को आप की ख़ुसूसियत में शुमार किया जा सकता है। (ज़िक्रे रज़ा, स. 27)

कुतबुल वक़्त हज़रत रज़ा अली ख़ां की करामत

एक मरतबा का वाक़िआ है कि मुश्रेकीन के त्योहार होली के दिन कुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने कुछ अहबाब के हमराह एक गली से गुज़र रहे थे कि मकान के ऊपर से एक औरत ने आप पर रंग फेंक दिया, आप ने छत के ऊपर नज़र डाली और इरशाद फ़रमाया, ऐ अल्लाह तआला उस ने मुझे रंगा है तू उसको रंग दे। साथ वाले समझे कि अभी औरत मकान के ऊपर से गिरेगी और ख़ून में रंग जाएगी मगर अल्लाह के वलीकी ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ की तासीर कुछ और थी, अभी थोड़ा ही वक़्त गुज़रा था कि वह औरत आप की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कलमा शरीफ़ पढ़ कर मुसलमान हो गई। इस तरह ज़माने ने अपने माथे की आँखों से देख लिया कि अल्लाह तआला ने अपने वली कुतबुल वक़्त की ज़बाने अक़दस से निकली हुई बात को पूरी फ़रमा दी और उस औरत को इस्लाम व ईमान के हक़ीक़ी रंग में रंग दिया। (हयाते आला हज़रत, स. 4)

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

हज़रात ! मुजद्दिदे अज़म दीनो मिल्लत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दादा जान हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आलिमो फ़ाज़िल, मुफ़्ती व मुहद्दिस और मशहूरे ज़माना वली और बा करामत कुतुब थे।

तो अब यह कहना बजा होगा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का घराना विलायत व कुतबियत और करामत व रूहानियत का घराना था।

आला हज़रत के वालिद मुस्तजाबुद्दावात थे : हामिये बिदअत, रअसुल फुज़ला, हज़रत मौलाना शाह नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बातिनी फ़हम व फ़रासत की यह हालत थी कि जिस मुआमले में जो कुछ फ़रमा देते, वही ज़हूर में आता। (ज़िक्रे रज़ा, स. 27)

हज़रात! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे गिरामी को अल्लाह तआला ने मुस्तजाबुद्दावात बनाया था यानी आप जो दुआ फ़रमाते अल्लाह तआला उस को शरफ़े कुबूल अता फ़रमाता। अल्लाह तआला जब अपने किसी बन्दे को महबूब व मक़बूल बनाता है तो उस को विलायत का अज़ीम मन्सब अता फ़रमाता है और जब बन्दा अल्लाह तआला का वली हो जाता है तो उस की दुआ को

क़ुबूलियत के शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमाता है तो साबित हुआ कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुहद्दिस व फ़िक़ह और वली के फ़रज़न्द थे।

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बिस्मिल्लाह ख़्वानी

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बिस्मिल्लाह ख़्वानी के वक़्त अपने उस्ताज़े मोहतरम से इस क़दर ऊंचे सवालात किये कि उस्ताज़े मोहतरम दंग रह गए और जवाब न दे सके तो आप के दादा जान क़ुतबुल वक़्त हज़रत रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो उस वक़्त मौजूद थे, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सवालात सुन कर जोशे महब्बत में आप को गले लगा लिया और दिल से दुआएं दीं और सारे सवालों का तसल्ली और तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब अता फ़रमाया और बातों ही बातों में इसरार व हक़ाइक़, रुमूज़ व इशारात के दरयाफ़्त व इदराक की सलाहियत आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्ब व दिमाग़ में बचपन ही से पैदा फ़रमा दी जिस का असर बाद में सब ने अपनी आँखों से देख लिया कि आला हज़रत अगर शरीअत में सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़दम ब क़दम हैं तो तरीक़त में सरकार ग़ौसे अज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाइबे अकरम हैं। मुलख़्ख़सन (सवानेह आला हज़रत, स. 79, 90)

ख़ूब फ़रमाया आलिमे बा अमल ख़लीफ़ए हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म हज़रत मौलाना नईमुद्दीन साहब सिद्दीक़ी रज़वी गोरखपूरी अलैहिर्रहमा ने :

रस्मे बिस्मिल्लाह में था किस क़दर ऊंचा सवाल
महवे हैरत अन्जुमन थी वाह यह नूरी ज़हन

दुरूद शरीफ़ :

नाज़रा ख़त्म किया

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चार साल की उम्र में क़ुरआने मजीद का नाज़रा ख़त्म किया।

आप की तक़रीर व तालीम : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने छः साल की उम्र में माहे मुबारक रबीउल अव्वल शरीफ़ की तक़रीर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हो कर बहुत बड़े मजमे की मौजूदगी में ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ पढ़ा, आप ने उर्दू फ़ारसी की किताबें पढ़ने के बाद हज़रत मिरज़ा ग़ुलाम क़ादिर बेग अलैहिर्रहमा से मीज़ान व मुनशअ़ब वग़ैरह की तालीम हासिल की फिर आप ने अपने वालिदे माजिद मौलाना शाह नक़ी अली ख़ाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इक्कीस उलूम पढ़े।

(सवानेह आला हज़रत, स. 91)

आला हज़रत फ़ारिगुत्तहसील हुए

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 13 बरस 10 महीने 5 दिन की उम्र शरीफ़ में 14 शअबान 1286 हि. मुताबिक़ 19 नवम्बर 1869 को आलिम व फ़ाज़िल, मुफ़्ती व मुहद्दिस हो कर फ़ारिगुत्तहसील हुए। (सवानेह आला हज़रत, स. 92)

आला हज़रत का पहला फ़तवा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आलिम व फ़ाज़िल, मुफ़्ती व मुहद्दिस बन कर फ़ारिगुत्तहसील हुए उसी दिन मस्अला रज़ाअत से मुतअल्लिक़ एक फ़तवा लिख कर अपने वालिदे माजिद की ख़िदमत में पेश किया। जवाब बिल्कुल सही था, वालिदे माजिद ने ज़हने नक़्क़ाद देख कर उसी वक़्त से फ़तवा नवेसी की जलीलुश्शान ख़िदमत आप के सुपुर्द कर दी। (सवानेह आला हज़रत, स. 92)

आला हज़रत के उस्ताज़े तरीक़त

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तालीमे तरीक़त हज़रत मुर्शिदे बरहक़ उस्ताज़ुल आरेफ़ीन हज़रत मौलाना सैयद शाह आले रसूल अहमदी मारहरवी रज़ियल्लाहु अन्हु से हासिल की, मुर्शिदे बरहक़ के विसाल के बाद भी बाज़ तालीमे तरीक़त नीज़ इब्तिदाई इल्मे तफ़सीर व इब्तिदाई इल्मे जफ़र वग़ैरह उस्ताज़ुस्सालेकीन हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हुसैन अहमदे नूरी मारेहरवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हासिल फ़रमाया।

शरह चिग़मनी का बाज़ हिस्सा हज़रत मौलाना अब्दुल अली रामपूरी अलैहिर्रहमा से पढ़ा फिर फ़ज़्ले रब्बानी व फ़ैज़े नबवी ने आप पर इनायत की ख़ुसूसी निगाह डाली जिस के नतीजे में आप ने किसी उस्ताज़ से बग़ैर पढ़े महज़ ख़ुदा दाद बसीरते नूरानी से 59 उलूमो फ़ुनून पर दस्तरस हासिल फ़रमाई और उन के शेख़ व इमाम हुए। (सवानेह आला हज़रत, स. 92)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उलूम के ख़ज़ाने को समझना है और तफ़सीली मालूमात हासिल करना है तो मारूफ़ आलिम बा अमल, वलिये कामिल, फ़ना फ़िर्रज़ा हज़रत मौलाना अश्शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मोअतबर व मुस्तनद किताब सवानेह आला हज़रत का मुतालआ कीजिये।

आला हज़रत की ज़हानत : मौलवी एहसान हुसैन साहब बयान फ़रमाते हैं कि मैं अरबी की इब्तिदाई तालीम में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़िब्ला का हम सबक़ रहा हूँ। आला हज़रत क़िब्ला की ख़ुदादाद ज़हानत का हाल यह था कि उस्ताज़ से कभी चौथाई किताब से ज़्यादा नहीं पढ़ा, किताब का एक चौथाई हिस्सा उस्ताज़ से पढ़ लेने के बाद बक़िया पूरी किताब अज़ ख़ुद पढ़ते और याद कर के सुना दिया करते थे। (सवानेह आला हज़रत, स. 96)

आला हज़रत के बचपन के हालात

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बचपन ही में तक़्वा तहारत इत्तिबाए सुन्नत, पाकीज़ा अख़्लाक़ और हुस्ने सीरत के औसाफ़ से मुज़य्यन हो चुके थे।

आला हज़रत ने अपने उस्ताज़ को सलाम सिखाया

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपन के ज़माना में जो मौलवी साहब आप को पढ़ाया करते थे, एक दिन बच्चों ने उन को सलाम किया तो मौलवी साहब ने जवाब दिया, जीते रहो। उस पर आला हज़रत ने मौलवी साहब से फ़रमाया यह तो सलाम का जवाब न हुआ, व अलैकुमुस्सलाम कहना चाहिये था, मौलवी साहब सुन कर बहुत खुश हुए और आप को बहुत दुआएं दीं। (सवानेह आला हज़रत, स. 110)

आला हज़रत का अदब : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने छः बरस ही की उम्र में मालूम कर लिया था कि बग़दाद शरीफ़ किधर है। फिर उस वक़्त से दमे आख़िर तक कभी भी बग़दाद शरीफ़ की जानिब पांव नहीं फैलाया।

(सवानेह आला हज़रत, स. 110)

फ़ारसी.................

आला हज़रत को मजज़ूब बुज़ुर्ग भी इज़्ज़त देते थे

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपन का वाक़िआ है कि बरैली शरीफ़ की एक मस्जिद में मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रत बशीरुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रहा करते थे, जो शख़्स उन के पास मिलने जाता उसे बुरा भला कहते। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुआ, एक दिन आप उन के पास चले गए और जाकर फ़र्श पर (यानी उन के सामने ज़मीन पर) बैठ गए, वह मजज़ूब बुज़ुर्ग पन्द्रह बीस मिनिट तक तो ग़ौर से आप को देखते रहे और फिर वह मस्त व मजज़ूब बुज़ुर्ग आप से मुख़ातब हुए और कहने लगे कि तुम रज़ा अली ख़ां साहब के कौन हो ? आला हज़रत ने फ़रमाया मैं उन का पोता हूँ, यह सुन कर उन्होंने फ़रमाया, जभी फिर फ़ौरन उठे और चार पाई की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया : यहाँ तशरीफ़ रखिये। (हयाते आला हज़रत, स. 23)

हज़रात ! दीनो सुन्नियत की हिफ़ाज़त व पासबानी की जो रिवायात आप की ज़ात से वाबस्ता हैं उन का आग़ाज़ भी बचपन ही से हो चुका था, जभी तो एक मस्त व मजज़ूब बुज़ुर्ग आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इज़्ज़त व क़दर करते हुए ज़मीन से उठा कर चार पाई के ऊपर बिठाते नज़र आ रहे हैं।

आला हज़रत और रमज़ान का रोज़ा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपन का ज़माना था आप के पहले रोज़े के इफ़्तार की तक़रीब मनाई जा रही थी, रमज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना था, सख़्त गर्मी पड़ रही थी, जिस की वजह से वालिदे गिरामी आप को साथ ले कर एक कमरे में तशरीफ़ ले गए जहाँ फ़ीरनी के प्याले चुने हुए थे हज़रत वालिदे माजिद ने फ़रमाया : लो खा लो !

आला हज़रत ने अर्ज़ की मेरा तो रोज़ा है, कैसे खा लूँ, वालिदे मोहतरम ने फ़रमाया : बच्चों का रोज़ा ऐसा ही होता है मैं ने दरवाज़ा बन्द कर दिया है, कोई देखने वाला नहीं है, किसी को ख़बर न होगी, चुपके से खा लो ! आला हज़रत जवाब देते हैं :

जिस के हुक्म से रोज़ा रखा है वह तो देख रहा है।

यह सुनते ही हज़रत वालिदे माजिद की आँखों से आंसू छलक पड़े, कमरा खोल कर आप को बाहर ले आए। (हयाते आला हज़रत, स. 24)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जब बचपन में मअ़रिफ़ते हक़ तआला की यह शान थी तो जिस वक़्त अल्लाह तआला ने आप को मुजद्दिद का मन्सबे आलिया अता फ़रमाया होगा तो उस वक़्त मअ़रिफ़ते रब तआला की शान का आलम क्या होगा।

ख़ुदी को कर बलन्द इतना कि हर तदबीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से पूछे ख़ुद बता तेरी रज़ा क्या है

आला हज़रत ने साढ़े तीन साल की उम्र में अरबी में गुफ़्तुगू की

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि मैं मस्जिद के सामने खड़ा था, उस वक़्त मेरी उम्र साढ़े तीन साल की होगी, एक साहब अरबी लिबास पहने हुए तशरीफ़ लाए, देखने से मालूम होता था कि अरबी हैं, उन्होंने मुझ से अरबी ज़बान में गुफ़्तुगू फ़रमाई, मैंने फ़सीह अरबी में उन से गुफ़्तुगू की फिर उस बुज़ुर्ग हस्ती को कभी न देखा। (सवानेह आला हज़रत, स. 95)

आला हज़रत ज़ेर पढ़ते और उस्ताज़ ज़बर पढ़ाते

एक मरतबा का वाक़िआ है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बचपन के ज़माने में उस्ताज़े गिरामी से कुरआने मजीद की एक आयते करीमा पढ़ रहे थे उस्ताज़े मोहतरम बार बार ज़बर पढ़ाते मगर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ेर पढ़ते थे, उस वक़्त आप के दादा जान कुतबुल वक़्त हज़रत मौलाना रज़ा अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद थे और देख रहे थे, हज़रत दादा

जान ने कुरआने मजीद देखा तो वाक़ेई कातिब ने गलती से ज़ेर की बजाए ज़बर लिख दी थी।

दादा जान ने फ़रमाया, जिस तरह उस्ताज साहब पढ़ाते थे तुम उस तरह क्यों नहीं पढ़ते थे, तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज की, मैं चाहता था कि इसी तरह पढ़ूँ जैसा उस्ताज़े मोहतरम पढ़ाते हैं मगर ज़बान पर क़ाबू न था, दादा जान क़ुतबुल वक़्त ने फ़रमाया ख़ूब ! और तबस्सुम फ़रमा कर सर पर हाथ फेरा और दुआएं दीं, उस्ताज़े मोहतरम ने फ़रमाया कि बच्चा सही पढ़ रहा था दर अस्ल कातिब ने गलत लिख दिया था और खुद अपने दस्ते अक़दस से तस्हीह फ़रमा दी। (हयाते आला हज़रत, स. 24)

उस्ताज़ ने कहा : अहमद रज़ा तुम इन्सान हो या जिन। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ुदा दाद काबिलियत व ज़हानत का यह आलम था कि उस्ताज़ से जो सबक़ पढ़ते तो एक दो बार देख कर किताब बन्द कर देते, मगर जब उस्ताज़ सबक़ सुनते तो लफ़्ज़ ब लफ्ज़ सुना देते। यह हालत देख कर उस्ताज़ सख़्त मुतअज्जिब होते, एक दिन उस्ताज़े मुअज़्ज़म ने कमरा बन्द किया और कहने लगे कि अहमद रज़ा ! सच सच बताओ कि तुम इन्सान हो या जिन्नात ? मुझ को पढ़ाने में देर लगती है और तुम्हें याद करने में देर नहीं लगती। (हयाते आला हज़रत, स. 24)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आला हज़रत को सिखाया

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने (हज़रत मौलाना अब्दुल अली रामपूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह) से शरह चिग़मीनी शुरू की थी कि वालिदे माजिद हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि उस में अपना वक़्त क्यों सर्फ़ करते हो, मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह से यह उलूम तुम को ख़ुद ही सिखा दिये जाएंगे। चुनाँचे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद फ़रमाते हैं कि यह सब (उलूम) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का करम है। (यानी मुझ को सारे उलूम सिखाने वाले मेरे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं). (सवानेह आला हज़रत, स. 97)

हज़रात ! यही वजह है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इल्म का जवाब पूरी दुनिया मिल कर नहीं ला सकती, उस की वजह साफ़ ज़ाहिर है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने महबूब उम्मती अहमद रज़ा को सिखाया और पढ़ाया है। अल्लाह तआला ने रसूलुलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तालीम दी और रसूलुल्लाह सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आला हज़रत इमाम अहमदर ज़ा को पढ़ाया तो अल्लाह तआला के पढ़ाए हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम का कोई जवाब नहीं है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सिखाए हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का चौदहवीं सदी में कोई जवाब नहीं है। इसी लिये आला हज़रत खुद फ़रमाते हैं :

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

आला हज़रत के इल्म की शान, बहुत ही कम लोग हैं जो नक़्शे मुसल्लस या मुरब्बअ मशहूर क़ायदा से भरना जानते हैं, पूरी चाल से नुक़ूश की खाना पुरी करने पर तो शायद दो चार हज़रात को उबूर हासिल होगा। आला हज़रत के शागिर्द व ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को एक शाह साहब मिले जिन का ख़याल था कि फ़न्ने तकसीर का इल्म सिर्फ़ मुझ को है। दौराने गुफ़्तुगू मौलाना बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने शाह साहब से दरयाफ़्त किया कि जनाब नक़्शे मुरब्बअ कितने तरीक़े से भरते हैं ? शाह साहब ने बड़े फ़ख़्र के अन्दाज़ में जवाब दिया कि सोलह तरीक़े से। फिर उन शाह साहब ने मौलाना बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से पूछा कि आप कितने तरीक़े से भरते हैं । मौलना बिहारी ख़लीफ़ा अलावा हज़रत ने बताया कि अलहम्दु लिल्लाह मैं नक़्शे मुरब्बअ को ग्यारह सौ बावन तरीक़े से भरता हूँ। शाह साहब सुन कर महवे हैरत हो गए और पूछा कि मौलाना आप ने फ़न्ने तकसीर किस से सीखा है ? मौलाना बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया : हुज़ूर पुर नूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से। शाह साहब ने दरयाफ़्त किया कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्शे मुरब्बअ क़तने तरीक़ों से भरते हैं ? मौलाना बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने जवाब दिया दो हज़ार तीन सौ तरीक़े से।

(सवानेह आला हज़रत, स. 103)

वालिदे माजिद फ़रमाते हैं तुम मुझे पढ़ाते हो

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ज़मानए तालिबे इल्मी में एक दिन उसूले फ़िक़ह की मशहूर किताब मुसल्लिमुस्सुबूत का मुतालआ कर रहे थे कि आप के वालिदे माजिद हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तहरीर किया हुआ एतराज़ व जवाब नज़र से गुज़रा। आला हज़रत ने किताबे मज़कूर के हाशिया पर अपना एक मज़मून तहरीर फ़रमाया जिस में मतन की ऐसी तहक़ीक़ फ़रमाई कि सिरे से एतराज़ वारिद ही न था। फिर जब आला हज़रत पढ़ने के लिये हज़रत वालिदे माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हज़रत मौलाना की निगाह आला हज़रत के लिखे हुए हाशिया पर पड़ी तो देख कर उन को इस क़दर मसर्रत हुई कि वालिदे माजिद उठे और आला हज़रत को अपने सीने से लगाया और फ़रमाया : अहमद रज़ा ! तुम मुझ से पढ़ते नहीं हो, बल्कि तुम मुझ को पढ़ाते हो। (सवानेह आला हज़रत, स. 107)

आला हज़रत को इल्मे लदुन्नी था : वाइस चान्सलर अलीगढ़ यूनिवर्सिटी रियाज़ी का एक

मस्अला मालूम करने के लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में बरैली शरीफ़ तशरीफ़ ले गए थे, ख़लीफ़ा आला हज़रत, हज़रत मौलाना सय्यद ज़फ़रुद्दीन बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने वाइस चांस्लर साहब से कहा कि आप ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा को कैसा पाया ? उन्हों ने कहा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बहुत ही बा अख़्लाक़ और मुनकसेरुल मिजाज और रियाज़ी बहुत अच्छी ख़ासी जानते हैं, बावजूद यह कि किसी से यह इल्म पढ़ा नहीं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा को इल्मे लदुन्नी था।

हज़रत मौलाना बिहारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि वाइस चांसलर साहब को आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जो थोड़ी सी सोहबत नसीब हुई तो उस की बरकत से वाइस चांसलर ने दाढ़ी रख ली और नमाज़ के भी पाबन्द हो गए।

ذَالِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(सवानेह आला हज़रत, स. 106)

ऐ ईमान वालो ! हम सुन्नियों के इमाम मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इल्मे लदुन्नी हासिल था और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबत की बरकत से दुनिया, जहान का इल्म रखने वाला अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर गुनाह व ख़ता से तौबह कर के नेक व सुन्नत वाली ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर होता हुआ नज़र आता है।

हज़रात ! ग़रीब व सादा लोगों को मुतास्सिर तो हर कोई कर सकता है मगर पढ़े लिखे लोगों को मुतास्सिर कर देना और वह भी बहुत बड़ी यूनिवर्सिटी के सब से बड़े ओहदे पर फ़ाइज़ रहने वाले वाइस चांसलर को अपनी नेक व पाक सोहबत से मुतास्सिर कर के उस की ज़िन्दगी को बदल देना यक़ीनन यह काम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा जैसे कुतबुल इरशाद मुजद्दिदे आज़म ही का हो सकता है वर्ना इस दौर में अकसर व बेशतर देखने में आ रहा है कि बड़े घराने के पीरो मुर्शिद कहलाने वाले कालेजों और यूनिवर्सिटियों के बड़े बड़े मन्सब व ओहदे वालों को मुतास्सिर कर देना तो दूर की बात रही बल्कि ख़ुद उन की बिगड़ी हुई ज़िन्दगी से मुतास्सिर हो कर दुनिया दार बनते नज़र आ रहे हैं। (अल अमान वल हफ़ीज़)

आला हज़रत जैसा आलिम दोसो साल में नज़र नहीं आया

हक़ीक़त यह है कि दीन के मुजद्दिद के लिये कुरआनो हदीस के उलूम में जिस क़दर उबूर की ज़रूरत होती है उस से कहीं ज़्यादा अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कुरआनो हदीस में उबूर अता फ़रमाया था। अल ग़रज़ आला हज़रत का इल्मी पाया इतना बलन्द है कि जलीलुल क़द्र उलमा फ़रमाते थे कि गुज़शता दो सदी यानी दौसो साल 1200 हि. 1300 हि. के अन्दर कोई ऐसा जामेअ आलिम नज़र नहीं आया। (सवानेह आला हज़रत, स. 106)

आला हज़रत के पड़ोसी एक हाजी साहब का बयान

जनाब सय्यद अय्यूब अली साहब का बयान है कि एक रोज़ हाजी मुहम्मद शाह ख़ां साहब जो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान के कुछ फ़ासले पर उन का मकान था और हाजी मुहम्मद शाह साहब बड़े दौलत मन्द और ज़मीन दार शख़्स थे, हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर झाड़ू लगा रहे थे, हम लोगों ने जब हाजी साहब को झाड़ू लगाते हुए देखा तो हमारी ग़ैरत ने गवारा न किया कि एक बूढ़ा दीन दार और ज़मीन दार शख़्स झाड़ू लगाए और हम लोग देखते रहें, हम लोगों ने चाहा कि यह ख़िदमत हम अन्जाम दें। मगर बूढ़े ज़मीन दार हाजी साहब न माने और फ़रमाने लगे कि मेरे लिये यह फ़ख़्र की बात है कि अपने पीर व मुर्शिद के आस्तानए आलिया की जारोब कशी करूँ और हाजी मुहम्मद शाह साहब फ़रमाते हैं कि मैं उम्र में हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बड़ा हूँ, उन का बचपन देखा, जवानी देखी और अब बुढ़ापा देख रहा हूँ, हर हालत में यक्ताए ज़माना पाया तब हाथ में हाथ दिया और मुरीद हुआ। बुढ़ापे में तो हर कोई बुज़ुर्ग हो जाता है मगर मैं ने उन्हें बचपन ही से तक़वा, तहारत में बे मिस्ल और यक्ताए रोज़गार देखा। (हयाते आला हज़रत, स. 25)

हज़रात ! ज़माने भर में पीर व बुज़ुर्ग बन के फिरना और बात है, कमाल तो जब है कि घर और मुहल्ले के लोग पीर व बुज़ुर्ग मान लें, मेरे आक़ाए नेअमत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस तरह पूरी दुनिया की महब्बत व एहतिराम की निगाह में पीर व बुज़ुर्ग और मुजद्दिद थे इसी तरह बल्कि इस से कहीं ज़्यादा घर और मुहल्ले वालों और शहर वालों में भी पीर व बुज़ुर्ग और मुजद्दिद जाने और माने जाते थे।

इसी लिये घर वाले और शहर वाले और पूरी दुनिया वाले पुकार उठे।

रहबरे राहे शरीअत सय्यदी अहमद रज़ा
मुर्शिदे राहे तरीक़त सय्यदी अहमद रज़ा

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط

तर्जमा : यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की। (पारा 28, रुकू 3, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत 10 शव्वाल 1272 हि. मुताबिक़ 14 जून 1856 ई. में हुई और आप 1294 हि. मुताबिक़ 1877 ई. में तक़रीबन बाईस साल की उम्र शरीफ़ में और आप के वालिदे माजिद हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मारहरा शरीफ़ में हुज़ूर पुर नूर सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया में बैअत हुए। उसी वक़्त मुर्शिदे बरहक़ सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप दोनों हज़रात को ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमा कर ख़िर्क़ा मुक़द्दसा से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। हज़रत मौलाना सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ की कि हुज़ूर ! आप के यहाँ एक तवील ज़माना तक बा मशक़्क़त मुजाहिदात व रियाज़ात कराने के बाद ख़िलाफ़त व इजाज़त दी जाती है मगर आप ने उन दोनों हज़रात को बैअत करते ही ख़िलाफ़त व इजाज़त भी अता फ़रमा दी तो हज़रत मुर्शिदे बरहक़ सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : मियाँ साहब और लोग ज़ंग आलूद मेला कुचेला दिल ले कर आते हैं, उस की सफ़ाई और

पाकीज़गी के लिये मुजाहिदाते तवीला और रियाज़ाते शाक्का की जरूरत पड़ती है और यह दोनों हज़रात साफ सुथरा और पाकीज़ा दिल ले कर हमारे पास आए, उन को सिर्फ इत्तिसाले निस्बत की जरूरत थी और वह मुरीद होते ही हासिल हो गई।

फिर पीरो मुर्शिद आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मुझे इस बात की बहुत बड़ी फ़िक्र रहती थी कि जब कियामत के दिन अल्लाह तआला पूछेगा कि ऐ आले रसूल ! तू मेरे लिये (दुनिया से) किया लाया है तो मैं बारगाहे इलाही में कौन सी चीज़ पेश करूँगाघ्रघ्रदिल से दूर हो गई क्यों कि जब अल्लाह तआला पूछेगा कि आले रसूल (दुनिया से) तू मेरे लिये क्या लाया ? तो मैं अर्ज करूँगा कि इलाही तेरे लिये अहमद रज़ा लाया हूँ। (सवानेह आला हज़रत, स. 125, 126)

ऐ ईमान वालो ! आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु किस शान के मुत्तकी व परहेजगार, नेक व सालेह और पाक दिल थे कि पीरो मुर्शिद हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रजियल्लाहु तआला अन्हु को अपने प्यारे और अच्छे मुरीद आला हज़रत इमाम अहमद रजा रजियल्लाहु तआला अन्हु पर नाज था और आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु इस लाइक मुरीद थे कि पीरो मुर्शिद आप को बरोजे कियामत अल्लाह तआला की बारगाह में पेश फरमाएं

हज़रात ! इसी लिये मैं कहता हूं कि जब आले रसूल अहमदी जैसे खुदा रसीदा पीरो मुर्शिद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा जैसे अबकरी मुरीद पर नाज़ करते हैं तो हम गुलामाने रज़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, कादरी रज़ा, बरकाती रज़ा इमाम अहमद रज़ा पर क्यों न नाज करें।

आला हज़रत और पीर की गली का एहतिराम

आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु अपने पीरो मुर्शिद हजरत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रजियल्लाहु तआला अन्हु का किस कदर अदब व एहतिराम फरमाते रहे होंगे। आप जब मारहरा शरीफ हाजिर होते तो मारहरा शरीफ मे जूता चप्पल नहीं पहनते थे बल्कि आप नंगे पैर मारहरा शरीफ की राह पर चलते। अल्लाहु अकबर ! जब पीरो मुर्शिद के शहर की गलियों के राहों के अदब का यह आलम था तो पीरो मुर्शिद के अदब व एहतिराम का क्या आलम रहा होगा। मुलख्खसन (ज़िक्रे रज़ा, स. 62)

हज़रात ! जब पीरो मुर्शिद के शहर की गलियों के रास्तों का यह अदब है तो जब आशिके मुस्तफा, हुज़ूर आला हजरत इमाम अहमदर जा फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मुशफिक व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा की गलियों से गुजरे होंगे तो अदब व एहतिराम का क्या आलम रहा होगा। इसी लिये आला हजरत इमाम अहमद रज़ा फाजिले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

हरम की जमीं और कदम रख के चलना
अरे सर का मौका है ओ जाने वाले

मदीना के ख़ित्ते ख़ुदा तुझ को रखे
ग़रीबों फ़क़ीरों को ठहराने वाले

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

आला हज़रत और पीर ज़ादे का एहतिराम

(1) शहज़ादए शाहे बरकात हज़रत सय्यद शाह मेहदी हसन मियां साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन सरकार कलां मारहरा शरीफ़ बयान फ़रमाते हैं कि जब मैं बरैली आता तो आला हज़रत ख़ुद खाना लाते और हाथ धुलाते। (हयाते आला हज़रत, स. 45)

(2) शहज़ादए सय्यिदुल उलमा हज़रत सय्यद शाह आले रसूल हस्नैन मियां नज़मी मारहरवी दाम ज़िल्लुहुल आली ने बयान फ़रमाया कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा मारहरा शरीफ़ हाज़िर हुए, ख़ास मकाम पर आप के आराम करने के लिये चार पाई बिछा दी गई। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा थोड़ी देर आराम फ़रमाने के बाद अपने मुर्शिदाने इज़ाम की बारगाहों में हाज़री के लिये चले गए और जब वापस लौट कर आए तो देखा कि उस चार पाई पर हज़रत सय्यिदुल उलमा सय्यद आले मुस्तफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन की उम्र अभी तक़रीबन तीन साल की थी, ख़ाली चार पाई देख कर सो गए और मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु चार पाई के क़रीब शहज़ादे के सामने हाथ बांध कर खड़े थे, इतने में साहिबे सज्जादा हज़रत सय्यद मेहदी मियां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ले आए तो क्या देखा कि शहज़ादा सो रहा है और वक़्त का मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अदब व एहतिराम का मुजस्समा बन कर चार पाई के क़रीब शहज़ादे के रू बरू खड़े हैं। हज़रत सय्यद मेहदी हसन मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शहज़ादे को डांट कर जगाना चाहा और कहने लगे कि तुम सो रहे हो और आला हज़रत खड़े हैं। हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बड़े अदब से अर्ज़ किया कि हुज़ूर! शहज़ादे को सोने दिया जाए और मैं देख रहा हूँ कि मेरे इस अदब से अल्लाह तआला मेरे मदारिज बलन्द फ़रमा रहा है।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

हज़रात! अदबो एहतिराम की इस शान की मिसाल दूर दूर तक नज़र नहीं आती इसी लिये चौदहवीं सदी में दूर दूर तक ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में ऐसे बा अदब आशिके आले रसूल, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा जैसा शरफ़ व बुज़ुर्गी वाला भी कोई आलिमे रब्बानी नज़र नहीं आता।

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

मुर्शिद की निस्बत का हैरत अंगेज़ एहितराम : एक मरतबा का वाक़िआ है कि हज़रत सय्यद मेहदी मियाँ साहब ने बरैली शरीफ़ आला हज़रत के पास ख़बर भेजी कि घर की रखवाली के लिये दो कुत्तों की ज़रूरत है और रामपूर के कुत्ते चाहिये। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कि बहुत जल्द आला हज़रत नस्ल के वफ़ादार दो कुत्ते ले कर मैं हाज़िर हो रहा हूँ, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने दोनों साहब ज़ादों मौलाना हामिद रज़ा हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम और मौलाना शाह मुस्तफ़ा रज़ा हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द को ले कर मारहरा शरीफ़ ख़ानक़ाहे बरकातिया में हाज़िर हुए और सय्यद मेहदी मियाँ से कहा कि हुज़ूर ! हुक्म के मुताबिक़ दो कुत्ते हाज़िर हैं। यह सारा दिन, घर का काम काज भी करेंगे और रात को घर की चौकीदारी और रखवाली भी करेंगे। (ज़िक्रे रज़ा, स. 62)

दो आलम से करती है बे गाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

आला हज़रत और पीर की निस्बत का एहतिराम

आशिक़े आला हज़रत, हुज़ूर बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा को बयान करते हुए ख़ुद सुना है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने पीरो मुर्शिद की निस्बत व तअल्लुक़ का इस क़दर अदब व एहतिराम था कि पीरो मुर्शिद के शहर मारहरा शरीफ़ से अगर नाई आ जाता तो बहुत ख़ुश हो कर घर में ख़बर करते कि पीरो मुर्शिद के शहर मारहरा शरीफ़ से नाई शरीफ़ तशरीफ़ लाए हैं,. खाने का एहतिमाम किया जाए और ख़ुद खाना लाते और नाई को खाना खिलाते।

हज़रात ! मुझे बताना और समझाना यह है कि जब आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाह में पीरो मुर्शिद के शहर का नाई इस क़दर शरीफ़ है तो उन की निगाह में पीरो मुर्शिद किस क़दर शरीफ़ व बुज़ुर्ग होंगे।

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

आला हज़रत और ताज़ीमे आले रसूल : उलमा फ़रमाते हैं कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने दारुल इफ़्ता में फ़तवों को लिखते और तस्नीफ़ व तालीफ़ में मशग़ूल रहते, क़रीब के एक मकान में एक सय्यद साहब अपने बाल बच्चों के साथ रहते थे, सय्यद साहब के एक साहब ज़ादे जो कमसिन थे, वह सय्यद ज़ादे खेलते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु आला अन्हु के दारुल इफ़्ता के सामने आ जाते तो हुज़ूर आला हज़रत उन कम उम्र सय्यद साहब का अदब व एहतिराम इस क़दर करते कि क़लम, काग़ज़ रख देते और दस्त बस्ता आले रसूल की ताज़ीम के लिये खड़े हो जाते फिर जब साहब ज़ादे सय्यद साहब ख़ुद ब ख़ुद सामने से इधर उधर हो जाते तो आला हज़रत फिर क़लम उठाते और लिखने में मशग़ूल हो जाते, फिर साहब ज़ादे

सामने आ जाते तो आशिके सादिक़ फिर ताज़ीमन खड़े हो जाते। इस तरह मुतअद्दिद बार वाक़िआ पेश आता मगर चेहरए मुबारका पर नाराज़गी के आसार नमूदार नहीं होते।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को किस क़दर अदब व ताज़ीम के आला मंसब पर फ़ाइज़ फ़रमाया था कि अपने प्यारे नबी सलल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आले पाक के एक छोटे से बच्चे की किस क़दर ताज़ीमो तौक़ीर करते नज़र आते हैं तो अब मैं कहना चाहूँगा कि जब आल की महब्बत व ताज़ीम का यह आलम है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व ताज़ीम का आलम क्या होगा। इसी लिये फ़रमाते हैं :

दहन में ज़बां तुम्हारे लिये बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहाँ तुम्हारे लिये उठें भी वहाँ तुम्हारे लिये

और फ़रमाते हैं :

बे निशानों का निशान मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

साइलो दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सादाते किराम और बुज़ुर्गों का अदब व ताज़ीम का वाफ़र हिस्सा जो आला हज़रत के हिस्से में आया है पूरी दुनिया में उस की नज़ीर नहीं मिलती।

यानी आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुनिया वालों के सामने बरमला, अलल ऐलान आले रसूल सादाते किराम के शरफ़ व बुज़ुर्गी, महब्बत व उल्फ़त, अदब व ताज़ीम का खुत्बा पढ़ा और अपनी किताबों में लिखा और अपने किरदार व अमल से ज़ाहिर व साबित किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

और

बे इजाज़त जिन के घर जिब्रईल भी आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत

(हसन रज़ा बरेलवी)

आला हज़रत ने सादात के एहतिराम व अदब को बताया

हुज़ूर सय्यदी शाह आले रसूल हस्नैन मियां नज़मी दाम ज़िल्लुहुल आली रक़म तराज़ हैं कि हुज़ूर वालिदे माजिद सय्यिदुल उलमा मौलाना य्यद शाह आले मुस्तफ़ा सय्यद मियां

अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान फ़रमाते थे : हम ने सोचा कि अल्लाह तआला की कुदरत में था कि मुजद्दिद के मरतबे पर अपने हबीबे मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल में से किसी सय्यद ज़ादे को फ़ाइज़ कर देता फिर आख़िर बरैली के एक ख़ान जादे को क्यों यह मन्सब अता फ़रमाता तब अन्दर से किसी ने जवाब दिया आले मुस्तफ़ा अगर कोई सय्यद मुजद्दिद के मन्सब पर फाइज़ होता और वह इस तरह सादात के एहतिराम का दर्स देता तो लोग कह सकते थे कि सय्यद ज़ादा अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बन रहा है उस ने आले रसूल का अदब व एहतिराम एक नाइबे रसूल के ज़बान व क़लम से मुशतहिर करवा दिया। आला हज़रत का दुनिया भर के तमाम सय्यदों पर यह एहसाने अज़ीम है कि इन्होंने अपने क़ौल व फ़ेअ़ल व हाल के ज़रीए दुनिया वालों को बता दिया और समझा दिया कि सय्यदों का अदब किस तरह किया जाता है। (पैग़ामे रज़ा, जनवरी 2005 ई., स. 37)

आला हज़रत और बग़दाद शरीफ़ का अदब

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने छः बरस ही की उम्र में मालूम कर लिया था कि (हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु का शहरे पाक) बग़दाद शरीफ़ किधर है फिर उस वक़्त से दमे आख़िर तक बग़दाद शरीफ़ की जानिब पैर नहीं फैलाए। (सवानेह आला हज़रत, स. 110)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्ब व जिगर में ज़ब बग़दाद शरीफ़ का इस कदर महब्बत व अक़ीदत और अदब व ताज़ीम है तो करबला शरीफ़ और फिर मदीना तैय्यिबा की अकीदत व महब्बत और अदब व ताज़ीम का क्या आलम होगा।

मुलाहज़ा फ़रमाइये ! कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किस क़दर मदीना तैय्यिबा का अदब व एहतिराम फ़रमाते थे।

मदीना तैय्यिबा का अदब व एहतिराम : जब कोई साहिबे हज बैतुल्लाह शरीफ़ करके आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होते तो उन से सब से पहले यही पूछते कि सय्यदे आलम, रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में भी हाज़िरी दी ? अगर वह हाजी साहब हां कहते तो आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ौरन उन के क़दम चूम लेते। (सवानेह आला हज़रत, स. 111)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन हाजी साहब का क़दम इस लिये नहीं चूमते थे कि वह साहिब हज कर के आए हैं जो मज़कूरा वाक़िआ में सवाल से ज़ाहिर है बल्कि आप उन हाजी साहब का कदम इस लिये चूम लिया करते थे कि उन के क़दमों ने मदीना तैय्यिबा की ज़मीन का बोसा लिया है। तो जब मदीना तैय्यिबा की ज़मीन का बोसा लेने वाला क़दम मोहतरम व मुअज़्ज़म हो गया, तो आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्ब व जिगर में मदीना तैय्यिबा और फिर मदीना वाले

आक़ा, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम किस क़दर मुअज़्ज़म होंगे।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु आला अन्हु फ़रमाते हैं:

हाजियों आओ शहंशाह का रोज़ा देखो
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत हुज़ूर के नामे पाक का नक़्शा बन कर सोते

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ब शक्ले नामे पाक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सोया करते थे।

इस तरह कि दोनों हाथ मिला कर सर के नीचे रखते और पांव समेट लेते जिस से सर मीम बन जाता और हाथों की कोहनियाँ हे बन जातीं और कमर मीम होजाती और पांव दाल बन जाते गोया नामे पाक मुहम्मद का नक़्शा बन जाते। सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। (सवानेह आला हज़रत, स. 112)

आला हज़रत का अदब कुतुबे अहादीस के साथ

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हदीस की किताबों पर दूसरी किताब न रखते थे। (सवानेह आला हज़रत, स. 112)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब हदीस शरीफ़ की किताबों का ऐसा अदब करते थे तो कलामुल्लाह क़ुरआने मजीद का अदब व एहितराम किस शान के साथ करते रहे होंगे।

इसी अदब व एहितराम और इश्क़ो महब्बत ने अहमद रज़ा को इमाम अहमद रज़ा और सारे हज़रतों में आला हज़रत बना दिया।

ख़ूब फ़रमाया है :

ख़लीफ़ए हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द मौलाना नईमुद्दीन साहब रज़वी गोरखपूरी अलैहिर्रहमा ने :

दीने हक़ की ख़िदमत व अहया सुन्नत के सबब
आला हज़रत आप को कहते हैं सब अहले सुनन
नक़्शबन्दी, क़ादरी, चिश्ती, सोहरवर्दी के तुम
हो अमीरे कारवां मक़्बूले रब्बे ज़ुलमिनन

आला हज़रत का अदब महफ़िले मीलाद में

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु आला अन्हु महफ़िले मीलाद शरीफ़ में शुरू से आख़िर तक बा अदब दो ज़ानू बैठे रहते। (सवानेह आला हज़रत, स. 112)

आला हज़रत का पहला हज : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पहली बार 1295 ई. मुताबिक़ 1878 ई. में अपने वालिदैन करीमैन के हमराह हज फ़र्ज़ अदा फ़रमाने के लिये रवाना हुए। (सवानेह आला हज़रत, स. 126)

हज़रात ! उलमा बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुम्बई से पानी के जहाज़ में सवार हुए, जहाज़ जानिबे जद्दा रवाना हुआ, जहाज़ पानी का सीना चीरते हुए आगे बढ़ता जा रहा था कि समन्दर में तुग़यानी कैफ़ियत तारी हो गई, ख़तरनाक समन्दर तूफ़ान पैदा हो गया। जिस ने जहाज़ को अपनी चपेट में ले लिया जहाज़ के अमला ने और कप्तान ने जहाज़ को डूबने और हलाक होने से बचाने की बहुत कोशिश की मगर नाकाम रहे। बिल आख़िर जब जहाज़ के बचने की कोई तदबीर न रही तो जहाज़ के पुकतान ने मजबूर हो कर ऐलान किया कि तमाम ज़ाएरीन और हुज्जाजे किराम होशियार आगाह हो जाएं और अपने जान व माल की हिफ़ाज़त ख़ुद करें। तमाम मुसाफ़िर कप्तान के इस ऐलान को सुन कर होश बाख़्ता हो गए मगर कुछ लोग बाहम मशवरा कर के सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में दुआ के लिये हाज़िर हो गए और जहाज़ के कप्तान के होशरुबा ऐलान को बताया कि समन्दर में ज़बरदस्त तूफ़ान की वजह से जहाज़ डूबता जा रहा है, आगाह किया और दुआ की दरख़्वास्त की। तो नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मोअजिज़ा अहमद रज़ा, कुतबुल अक़्ताब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत अहमद रज़ा, हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ अहमद रज़ा, ख़ानदाने बरकात का चश्मो चिराग़ अहमद रज़ा अहले सुन्नत का इमाम अहमद रज़ा, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बड़े ही इत्मीनान व यक़ीन के साथ इरशाद फ़रमाया : आप हज़रात मुकम्मल इत्मीनान से अपनी अपनी जगह पर बैठिये और ज़िक्र व दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ते रहिये, इन्शाअल्लाह तआला सुम्मा इन्शाअर्रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारा जहाज़ ख़ैर व सलामती के साथ जद्दा पहुँचेगा, तूफ़ान की क्या मजाल जो जहाज़ को डूबो दे इस लिये कि मैंने अपने प्यारे आक़ा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बताई हुई दुआ पढ़ ली है : بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ फिर जहाज़ में सवार हुआ हूँ।

याद रखो ! कि चाँद सूरज का निकलना डूबना बन्द हो सकता है, हवाओं का रुख़ बदल सकता है और अन्धेरा उजाले में और उजाला अन्धेरे में और आलम का निज़ाम बदल सकता है लेकिन मुख़्तारे दो आलम रसूले बहरो बर का फ़रमान नहीं बदल सकता।

मगर कप्तान की जानिब से बार बार ऐलान किया जा रहा है कि जहाज़ डूबता जा रहा है तमाम मुसाफ़िर अपने जान व माल की ख़ुद हिफ़ाज़त करें।

अब सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जहाज़ की छत पर तशरीफ़ ले गए

और मदीना तैय्यिबा की जानिब रुख़ करके बा अदब खड़े हो गए और नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में अर्ज़ करने लगे, ऐ हमारे प्यारे आक़ा मुश्किल कुशा, रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तालीम की हुई दुआ पढ़कर जहाज़ की सवारी की है, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद व फ़रमान पर ही एतिमाद करते हुए लोगों को इत्मीनान व यक़ीन दिला दिया है कि जहाज़ डूबेगा नहीं, मगर हाल यह है कि जहाज़ डूबता जा रहा है फिर सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में मुकम्मल इज़आन व यक़ीन के साथ फ़रयाद करते हैं कि :

आने दो या डुबो दो, अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी, लंगर उठा दिये हैं

अब यह हाल था कि जहाज़ भंवर से निकल कर तूफ़ान के नर्ग़ा से आज़ाद हो चुका था, कुछ दिनों के बाद जहाज़ ख़ैर व सलामती के साथ जद्दा के साहिल पर लंगर अन्दाज़ हुआ।

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चला कि हमारे प्यारे आक़ा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बताई हुई दुआओं के पढ़ने से अल्लाह तआला डूबती हुई कश्ती को बचा लेता है और जान व माल को सलामती नसीब फ़रमा देता है। इस लिये हम को भी चाहिये कि हर मौक़े की दुआओं को पढ़ा करें ताकि इस की बरकत से जान भी महफ़ूज़ रहे और माल भी सलामत रहे और नेकी व सवाब भी हासिल होता रहे।

हमें करनी है शहंशाहे बतहा की रज़ा जोई
वह अपने हो गए तो रहमते परवरदिगार अपनी
तरीक़े मुस्तफ़ा को छोड़ना है वज्हे बरबादी
इसी से क़ौम दुनिया में हुई बे इक़्तिदार अपनी

दुरूद शरीफ़ :

नूरे ख़ुदा, आला हज़रत की पेशानी में

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पहले हज में एक दिन मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ी इमाम शाफ़ईया हज़रत हुसैन बिन सालेह जमलुल्लैल रज़ियल्लाहु अन्हु)जो ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे) ने जब आप का चेहरए अनवर देखा तो बग़ैर किसी जान पहचान के आप का हाथ पकड़ा और अपने घर ले गए और बहुत देर तक आप की पेशानिये मुक़द्दस पर निगाह जमाए देखते रहे फिर उन्होंने इरशाद फ़रमाया :

إِنِّي لَأَجِدُ نُورَ اللهِ فِي هٰذَا الْجَبِيْنِ

यानी बे शक मैं इस पेशानी में अल्लाह का नूर देख रहा हूँ।

इस के बाद सिहा सित्ता और सिलसिलए आलिया क़ादरिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त अपने मुबारक हाथों से लिख कर आप को अता फ़रमाई। (सवानेह आला हज़रत, स. 126)

आला हज़रत का दूसरा हज : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरा हज 1323 हि. मुताबिक़ 1906 ई. में अदा फ़रमाया।

(सवानेह आला हज़रत, स. 126)

हज़रात ! दूसरे हज का वाक़िआ हज़रत मौलाना सय्यद ज़फ़रुद्दीन क़ादरी रज़वी बिहारी अलैहिर्रहमा ने बयान फ़रमाया कि मेरे सामने का वाक़िआ है कि आला हज़रत के बिरादरे असग़र हज़रत मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ां साहब और आला हज़रत के ख़लफ़े अकबर हज़रत मौलाना हामिद रज़ा ख़ां साहब और आला हज़रत की अहिलया मोहतरमा यह सब हज़रात हज व ज़ियारत के लिये रवाना हुए तो आला हज़रत झांसी तक उन सब को पहुँचाने के लिये तशरीफ़ ले गए जब उन हज़रात को झांसी में ट्रेन पर सवार कर दिया मुम्बई जाने के लिये यह सब हज़रात मुम्बई के लिये रवाना हो गए। इस वक़्त तक आला हज़रत का इरादा हज व ज़ियारत के सफ़र के लिये बिल्कुल न था कि हज्जे फ़र्ज़ अदा हो चुका है, ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो चुके हैं, मगर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपनी नअ़त के अशआर याद आ गए कि :

गुज़रे जिस राह से वह सय्यदे वाला होकर
रह गई सारी ज़मीं अंबर सारा हो कर

वाए महरूमिये क़िस्मत कि मैं फिर अब की बरस
रह गया हमरह ज़व्वार मदीना हो कर

इस का याद आना था कि दिल बे चैन हो गया और फ़रमाया :

फिर उठा वलवलए याद मुग़लियाने अरब
फिर खींचा दामने दिल सूए बियाबाने अरब

और फ़रमाते हैं :

ले रज़ा सब चले मदीना को
मैं न जाऊँ अरे ख़ुदा न करे

दिल व दिमाग़ सब मदीना तैय्यिबा पहुँच चुके थे तवाफ़े गुम्बदे ख़ज़रा में मशग़ूल थे : फ़रमाते हैं :

जानो व दिल होशो ख़िरद सब तो मदीना पहुँचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

बस उसी वक़्त हज व ज़ियारत बल्कि ख़ास ज़ियारत सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मुसम्मम (पुख़्ता) इरादा फ़रमा लिया और बरैली शरीफ़ तशरीफ़ लाकर वालिदा माजिदा से इजाज़त ले कर सामाने सफ़र मुकम्मल फ़रमाया और मुम्बई के लिये रवाना हो गए और हुसने इत्तिफ़ाक़ कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु के पहुँचने तक वह जहाज़ रवाना न हुआ था, सब लोग एक ही जहाज़ में रवाना हुए।

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

का यह सफ़रे मुबारक ख़ालिस दरबारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हाज़री के लिये था, हज्जे बैतुल्लाह तुफ़ैल में किया, असल मक़सद ज़ियारत व हाजरी दरबारे अक़दस व अनवर था।

इसी को आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन के तुफ़ैल हज भी ख़ुदा ने करा दिये
अस्ल मुराद हाज़री उस, पाक दर की है

काबा का नाम तक न लिया तैबा ही कहा
पूछा था हम से जिस ने कि नेहज़त किधर की है

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़रूअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक्का शरीफ़ पहुँच कर अदाए हज से फ़ारिग़ होकर मदीना तैय्यिबा हुज़ूरे अकरम सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर हुए, मुलख्खसन (हयाते आला हज़रत, स. 43)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार आलमे बेदारी में किया

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा रोज़ए अक़दस व अनवर पर हाज़िर हुए शौक़े दीदार में मज़ारे नूर के मवाजा शरीफ़ में दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहे और यक़ीन किया कि ज़रूर सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमोंगे और बिल मवाजा ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाएंगे लेकिन पहली शब ऐसा न हुआ (यानी ज़ियारत नसीब न हुई) तो कुछ कबीदा ख़ातिर हो कर एक नअ़त लिखी जिस का मतलअ यह है।

वह सूए लाला ज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

फिर उस नअ़त के मुक़तअ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अपने करीम व रहीम नबी और जवादो फ़याज रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सख़ावत व रहमत पर नाज़ और अपनी बे बसी और बे कसी का इज़हार करते हुए अर्ज़ करते हैं :

कोई क्यों पूछे तेरी बात रज़ा
तुझ से कुत्ते हज़ार फिरते हैं

अपने मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के

मवाजा शरीफ़ में यह नअत अर्ज की और मुअद्दब मुनतज़िर बैठ गए क़िस्मत जागी, हिजाब उठा और आलमे बेदारी में हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। मुलख्खसन (हयाते आला हज़रत, स. 44)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख्वाब में तो बार बार ज़ियारत जमाले अनवर से शरफ़ याब हुए मगर इस बार ख़ास रोज़ए मुक़द्दसा के हुज़ूर आलमे बेदारी में दीदार से सरफ़राज़ हुए हैं जो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कमाले इश्क़ को ज़ाहिर करती नज़र आती है और उन की मक़बूलियत की खुली हुई दलील है।

हज़रात ! यह इनआमो इकराम मुशफ़िक़ व महरबान नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह से वह एज़ाज़ है जो बड़े नाज़ के पालों को ही मयस्सर आता है।

अल्लामा जलालुद्दीन सयूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुतअल्लिक़ इमाम अब्दुल वहाब शअ़रानी अलैहिर्रहमा ने मीज़ानुश्शरीअतुल कुबरा में ज़िक्र फ़रमाया है कि पिचहत्तर मरतबा आलमे बेदारी में सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हुआ और बिल मुशाफ़ा हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से तहक़ीक़ाते हदीस की दौलत पाई। (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 41)

आला हज़रत उलमाए मदीना के झुरमुट में

मदीना तैय्यिबा में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हाज़री से पहले ही आप के इल्म व फ़ज़्ल का शोहरा और आप के सच्चे इश्क़ का चरचा पहुँच चुका था। मदीना तैय्यिबा के उलमा उस आशिक़े रसूल, नाइबे नबी की मुलाक़ात व ज़ियारत के लिये बे क़रार हो कर आप की आमद का बेचेनी से इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे, हज़रत मौलाना करीमुल्लाह मुहाजिर मदनी अलैहिर्रहमा का बयान है कि हम सालहा साल से मदीना तैय्यिबा में मुक़ीम हैं, अतराफ़ व आफ़ाक़ से उलमा आते हैं और चले जाते हैं, कोई बात नहीं पूछता लेकिन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पहुँचने से पहले ही उलमा और अहले बाज़ार तक, आप की ज़ियारत व मुलाक़ात के मुश्ताक़ थे चुनाँचे जब मदीना तैय्यिबा में आला हज़रत की हाज़री हुई और आमद की ख़बर हर तरफ़ फैली तो सुबह से शाम तक आप के पास उलमाए मदीना का हुजूम रहता था, मुलाक़ात व ज़ियारत करने वालों की भीड़ बारह बजे रात से पहले हटने का नाम न लेती थी, यहाँ तक कि अगर किसी को तन्हाई में आला हज़रत से मिलना होता तो वह आधी रात के बाद ही मिल सकता था, मक्का मुअज़्ज़मा के उलमाए किराम की तरह मदीना तैय्यिबा के उलमाए इज़ाम ने भी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सनदें और इजाज़तें हासिल कीं और यह सिलसिला मदीना तैय्यिबा से

वापसी तक क़ाइम रहा यहाँ तक कि रवांगी के दिन जब क़ाफ़ला के ऊंट आ गए और उस पर सवार होने की तैय्यारी हो चुकी उस वक़्त तक उलमाए किराम आप से इजाज़त नामे लिखवाते रहे। (सवानेह आला हज़रत, स. 316)

मदीना तैय्यिबा के मशहूर आलिमे दीन शैखुद्दलाइल हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद सईद मग़रबी के कमाले अक़ीदत का यह आलम था कि आप आला हज़रत को या सय्यदी कह कर पुकारते थे। (सवानेह आला हज़रत, स. 317)

हक़ीक़त यह है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मन्सब व रिफ़अत से जिस क़दर उलमाए मक्का व मदीना वाक़िफ़ हुए इस क़दर खुद हिन्दूस्तान के हज़रात भी वाक़िफ नहीं हैं। मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा में आला हज़रत का जैसा एज़ाज़ व इकराम हुआ और जिस तरह मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा के अकाबिर हज़रात ने आप की बुलन्द व बाला शानो अज़मत के सामने सर नियाज़ ख़म किया उस का कुछ अन्दाज़ा इस नूरानी वाक़िआ से किया जा सकता है। आगे आने वाले बयान में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिए इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

चौथा जुमा .... पहला बयान

आशिक़े रसूल इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सुन्नियत की शनाख़्त

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اُولٰٓئِکَ کَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط

तर्जमा : यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की। (पारा 28, रुकू 3, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा साहब अपनी तस्नीफ़े सफ़र नामा हरमैन, स. 66 में रक़म तराज़ हैं कि हम लोग एक साथ वफ़्द की शक्ल में उलमाए हरम से मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुए, हमारे साथियों की मुलाक़ात सब से पहले हज़रत मौलाना मुफ़्ती सअदुल्लाह मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह से हुई जो निहायत ही मुअम्मर बुज़ुर्ग हैं तक़रीबन तीस साल मुम्बई में रह चुके हैं , अब आख़री उम्र में फिर मक्का शरीफ़ की सुकूनत इख़्तियार फ़रमा ली है। अल्लामा मौसूफ़ ने फ़रमाया कि बलादे अरब में आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का डंका बज रहा है और उलमाए हरमैन तय्यिबैन आला हज़रत से जिस क़दर वाक़िफ़ हैं हिन्दूस्तान के लोग इस क़दर वाक़िफ़ नहीं हैं। हज़रत अल्लामा सअ़दुल्लाह मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हम लोगों को बग़रज़े इम्तिहान हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी (रहमतुल्लाहि अलैह) के पास भेजा जो उस वक़्त मक्का शरीफ़ के क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात हैं उन के वालिदे मोहतरम आला हज़रत के हम अस्र दोस्त थे। हज़रत अल्लामा सअ़दुल्लाह मक्की (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) ने हम लोगों से फ़रमाया कि आप लोग हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) से मुलाक़ात के बाद सिर्फ़ इतना कहियेगा कि:

نَحْنُ تَلَامِیْذُ تَلَامِیْذِ اَعْلٰی حَضْرَتْ مَوْلَانَا اَحْمَد رَضَا خَان بَرِیْلَوِیْ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

फिर अपनी आँखों से देख लीजियेगा कि आला हज़रत के इल्मो फ़ज़्ल का सिक्का उलमाए हरम पर किस क़दर बैठा हुआ है और उलमाए हरम के दिलों में आला हज़रत का कितना

एहतिराम व वक़ार है। बहर कैफ़ हम लोग हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्म अलवी मालिकी मद्दज़िल्लुहुल आली के दरे दौलत पर हाज़िर हुए, थोडी देर के बाद एक हसीनो जमील बुजुर्ग तशरीफ़ लाए जिन की सूरत से नूरे सियादत की शुआएं निकल रही थीं, सब लोग ताज़ीम के लिये खड़े हो गए! हज़रत मौलाना ने हाज़िरीन को अस्सलामु अलैकुम कहा और सब को बैठने का इशारा किया, सब लोग अपनी अपनी जगह पर बैठ गए और फिर हर शख़्स मुसाफ़हा व दस्त बोसी करने लगा। हज़रत मौलाना ने हर शख़्स से ख़ैरियत पूछी फिर निहायत ही शीरीं और ठन्डा शरबत हाज़िरीन को पेश किया गया। हज़रत मौलाना ने हर शख़्स का मक़सदे हाज़री दरयाफ़्त फ़रमाया और हाजत रवाई फ़रमाई। जब हम लोगों क़ी बारी आई तो हम लोगों ने वही जुमला दोहराया।

نَحْنُ تَلَامِیْذُ تَلَامِیْذِ اَعْلیٰ حَضْرَتْ مَوْلَانَا اَحْمَدْ رَضَا خَانْ فَاضِلِ بَرَیْلَوِیْ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالیٰ عَلَیْہِ

यानी हम लोग आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां के शागिर्दो के शागिर्द हैं। इतना सुनते ही हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी सर व क़द उठ कर खड़े हो गए और फ़रदन फ़रदन हम लोगों से मुसाफ़हा और मुआनक़ा फ़रमाया और बेहद ताज़ीम की। फिर दो बारह शरबत व क़हवह पेश हुआ और उन्होंने अपनी पूरी तवज्जोह हम लोगों की जानिब मबज़ूल फ़रमा दी एक आह सर्द भर कर फ़रमाया सय्यदी अल्लामा मौलाना अहमद रज़ा ख़ां साहब फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

نَحْنُ نَعْرِفُہٗ بِتَصْنِیْفَاتِہٖ وَتَالِیْفَاتِہٖ حُبُّہٗ عَلَامَۃُ السُّنَّۃِ وَبُغْضُہٗ عَلَامَۃُ الْبِدْعَۃِ

यानी हम हज़रत मौलाना अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी को उन की तस्नीफ़ात से पहचानते हैं, उन की महब्बत सुन्नियत की अलामत है और उन से बुग़्ज़ बद मज़हबी की पहचान है। इस मजलिस में बड़े बड़े रुऊसाए मक्का जलवा अफ़रोज़ थे और हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी की इस खुसूसी शफ़क़त व इल्तिफ़ात को देख कर दम व ख़ुद थे। तमाम लोगों से हज़रत मौलाना मौसूफ़ ने हम लोगों का तआरुफ़ कराया और बार बार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र फ़रमाया।

(सवानेह आला हज़रत, स. 321)

हज़रात! हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कोई मामूली और हिन्दूस्तानी आलिम नहीं बल्कि आले नबी, औलादे अली, सय्यिदुस्सादात और मक्का मुअज़्ज़मा के क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात हैं। वह आले नबी और औलादे अली फ़रमाते हैं कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु की महब्बत सुन्नियत की अलामत है और उन से बुग्ज व अदावत बद मज़हबी और गुमराही की पहचान है। अब अगर कुछ मौलवी या पीर या फ़लां फ़लां कहलाने वाले यह कहें कि हम सुन्नी हैं, हमारी सुन्नियत की पहचान के लिये आला हज़रत की महब्बत की ज़रूरत नहीं तो हम गुलामाने रज़ा हज़रत सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रमान की रोशनी में यह फ़ैसला देंगे कि आप मौलवी हैं हुआ करें, आप पीर साहब हैं हुआ करें, आप

फ़लां, फ़लां हैं हुआ करें। हम सुन्नियों को आप की ज़रूरत नहीं, हमारी सुन्नियत तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु की मरहूने मिन्नत है।

सब उन से जलने वालों के गुल हो गए चिराग़
अहमद रज़ा की शमा फ़रोज़ां है आज भी

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत का क़याम मदीना तैय्यिबा में

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़ले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़याम शहर पाके मदीनए तैय्यिबा में इकत्तीस दिन तक रहा उस दरमियान मैं आप एक मरतबा मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ को गए और एक बार मैदाने उहद में सय्यिदुश्शोहदा हज़रत अमीरे हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जियारत के लिये हाज़िर हुए बाक़ी दिनों सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह की हाज़री में गुज़रा।

(सवानेह आला हज़रत, स. 31९)

इश्क़ सरापा, अहमद रज़ा : जब बन्दा आशिक़े सादिक़ होता है तो उस का क़ल्बो जिगर महबूब की निस्बत व तअल्लुक़ रखने वाली हर चीज़ की ताज़ीम व तौक़ीर के लिये बे क़रार नज़र आने लगता है।

देखिये सहाबए किराम के इश्क़ का किया आलम था कि महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आबे वुज़ू को हासिल करने के लिये इस तरह टूटे पडते थे कि जैसे जंग हो जाएगी। मूए मुबारक को जान से ज़्यादा क़ीमती समझते थे कि ऐन जंग के वक़्त वह टोपी गिर गई जिसमें मूए मुबारक सिले हुए थे तो अपनी जान की परवाह किये बग़ैर उसके हुसूल में लग जाते और जब तक हासिल न हो जाए सुकून व क़ार न लेते।

हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महब्बत व ताज़ीम के पेशे नज़र शहरे पाक, मदीना तैय्यिबा में क़भी सवारी न की और (पेशब, पाख़ाना) ही पूरी ज़िन्दगी बोल व बराज़ फ़रमाया, उस के लिये इन्हें किसी दलील की ज़रूरत न थी बस यही दलील काफ़ी थी कि ख़ुदा व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इस महब्बत व ताज़ीम से मना नहीं फ़रमाया है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहरे पाके, मदीना तैय्यिबा में हाज़िरिये दरबारे नूर इस तरह सिखाते नज़र आते हैं :

जब हरम मोहतरम, मदीना में दाख़िल हो, हसन यह है कि सवारी से उतर पड़े, रोता, सर झुकाए, आँखें नीची किये चले, हो सके तो बरहना पांव यानी नंगे पेर बहतर। (अनवारुल बशारत)

इमाम अहमद रज़ा फ़रमाते हैं :

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले

सहाबए किराम के मुक़द्दस कुलूब (दिलों) में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इस क़दर महब्बत व अज़मत थी कि जानवर को आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सज्दा करते देख कर बे क़रार हो गए। अर्ज़ किया, आक़ा ! जानवर तो आप को सज्दा करें और हम महरूम रहें क्या हमें इजाज़त न होगी ? इरशाद हुआ मेरी शरीअत में ग़ैर ख़ुदा का सज्दा रवा नहीं। अगर होता तो औरत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे। मुलख्ख़सन

(अज़्ज़ुबदतुज़्ज़किय्यह फी तहरीमे सुजूदुत्तहिय्यह)

कभी कभी इमाम अहमद रज़ा पर भी सहाबए किराम जैसी कैफ़ियते इश्क़ तारी होती है लेकिन शरीअत का पास व लिहाज़ इस क़दर है कि फ़रमाते हैं :

पेशे नज़र वह नौ बहार सज्दा को दिल है बे क़रार
रोकिये सर को रोकिये हां यही इम्तिहान है

दूसरी जगह फ़रमाते हैं :

न हो आक़ा को सज्दा, आदम व यूसुफ़ को सज्दा हो
मगर सद्दे ज़राए दाब है अपनी शरीअत का

इश्क़ का तक़ाज़ा और बढ़ता है तो यूँ तसल्ली दे लेते हैं :

ऐ शौक़े दिल यह सज्दा गर उन को रवा नहीं
अच्छा वह सज्दा कीजिये कि सर को ख़बर न हो

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इश्क़ की तड़प हमें उन के मक़ामे इश्क़ का पता देती है। इसी लिये तो फ़रमाते हैं :

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम

दहन में ज़बां तुम्हारे लिये, बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहाँ तुम्हारे लिये, उठें भी वहाँ तुम्हारे लिये

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत से इश्क़े रसूल मिला : कहाँ हैं आशिक़ाने मुस्तफ़ा जो पहाड़ों की खो और समन्दरों के टापो में और कॉलेजों, स्कूलों और माहनामों के पर्चों में मन्ज़िले इश्क़ को तलाश करना चाहते हैं : वह लोग आएं और आला हज़रत की बारगाह में इश्क़ व महब्बत का दर्स हासिल करें।

अल्लाह तआला ने आला हज़रत को इश्क़ व महब्बत का मुजस्समा बनाया था, आप के सूज़िशे इश्क़ की गर्मी जिस तालिब पर पड़ जाती उस का दिल महब्बते रसूल का मदीना बन जाता। उस्ताज़ुल मुहद्देसीन हज़रत मौलाना वसी अहमद मुहद्दिस सूरती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक मरतबा उन के शागिर्द हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद साहब मुहद्दिसे आज़म हिन्द किछोछवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की कि :

हज़रत ! आप तो मौलाना शाह फ़ज़्लुर्रहमान साहब गन्ज मुरादाबादी अलैहिर्रहमा से

मुरीद हैं लेकिन आप को जितनी महब्बत व अकीदत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है, उतनी और किसी से नहीं। आला हज़रत की याद, उन का तज़किरा, उन के इल्म व फ़ज़्ल का ख़ुतबा आप की ज़िन्दगी के लिये रूह का मकाम रखता है, इस की क्या वजह है ? हज़रत मुहद्दिस सूरती रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया सब से बड़ी दौलत वह इल्म नहीं है जो मैं ने मौलवी इस्हाक़ साहब मोहश्शी बुख़ारी शरीफ़ से पाई। सब से बड़ी नेअमत वह बैअत नहीं है जो मुझे हज़रत मौलाना शाह फ़ज़लुर्रहमान साहब से हासिल हुई बल्कि सब से बड़ी दौलत और सब से बड़ी नेअमत वह ईमान है जिस को मैंने सिर्फ़ आला हजरत से पाया मेरे सीने में पूरी अज़मत के साथ मदीना को बसाने वाले आला हज़रत ही हैं इस लिये उन के तज़किरे से मेरी रूह में बालीदगी पैदा होती है, मैं उन के एक एक कलमा को अपने लिये मिशअले हिदायत जानता हूँ। (सवानेह आला हजरत, स. 125)

हज़रात ! ख़ूब अच्छी तरह जान लीजिये कि हज़रत मौलाना अहमद सहाब मुहद्दिसे सूरती रहमतुल्लाहि तआला अलैह कोई मामूली आलिम और मुहद्दिस न थे बल्कि अपने दौर के इमामुल मुहद्देसीन थे। वह फ़रमाते हैं कि मुझ को इश्के रसूल की सरमदी नेअमत और अबदी दौलत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हासिल हुई इस लिये उन का तज़किरा हमेशा हमारी ज़बान पर रहता है। और क्यों न उन का तज़किरा करूँ कि उन के ज़िक्र से क़ल्ब व रूह को सुकून व करार मयस्सर आता है।

आला हज़रत से ईमान की मज़बूती

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत अल्लामा शाह अब्दुल अजीज़ मुहद्दिस मुराद आबादी बानी अल जामिअतुल अशरफिया मुबारकपूर फ़रमाते हैं कि :

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यद शाह मुहम्म नईमुद्दीन मुराद आबादी खलीफ़ए आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अकसर फ़रमाते थे कि बहुत से लोगों को आला हज़रत इमाम अहमद रजा फ़ाज़िले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु के दरबार से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दौलतें नसीब हुई।

लेकिन ! मुझे सब से बड़ी दौलत ईमान की अगर कहीं से नसीब हुई तो वह आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का दरबारे गिरामी है। (पास्बान इलाहआबाद नवम्बर 1955 ई., स. 18 ब हवाला किताबुल अक़ाइद, स. 5)

हज़रात ! मशाइख़े मारहरा शरीफ़ ख़ास कर हुज़ूर सय्यिदुल उलमा शाह आले मुस्तफ़ा क़ादरी बरकाती और हुज़ूर अहसनुल उलमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन क़ादरी बरकाती मारहरवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आला हजरत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तज़किरा कसरत से अपनी महफ़िलों और घर वालों में किया करते थे। यह वतीरा और तरीक़ा इश्क़ो महब्बत में सरशार, सर मस्तों का था।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

आला हज़रत आठ दस घन्टे में हाफ़िज़े कुरआन हो गए

हामिये सुन्नत, क़ातिए वहाबियत व नजदियत, मज़हरे आला हज़रत, शेर बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना मुफ़्ती शाह हश्मत अली क़ादरी रज़वी पीली भीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शअ़बान 1337 हि.का अपना ऐनी मुशाहिदा बयान फ़रमाते हैं कि एक शख्स ने ला इल्मी में आला हज़रत को ख़त लिखा और ला इल्मी में हाफ़िज़ लिख दिया। आला हज़रत ने ख़त पढ़ा, तो अपने, अलक़ाब के साथ हाफ़िज़ मुलाहज़ा फ़रमाया, ख़ौफ़े ख़ुदा से दिल कांप उठा और रोने लगे और फ़रमाया मैं इस बात से डरता हूँ कि मेरा हश्र उन लोगों में न हो जिन के बारे में कुरआने मजीद फ़रमाता है :

يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا

तर्जमा : और चाहते हैं कि बे किये उन की तारीफ़ हो। (पारा 4, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

इस वाक़िआ के बाद आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया और तरावीह में सुना भी दिया। (तर्जमाने अहले सुन्नत पीली भीत)

हज़रात ! इसी तरह की इबारत ख़लीफ़ए आला हज़रत सय्यद ज़फ़रुद्दीन बिहारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी तस्नीफ़ हयाते आला हज़रत, स. 36 पर लिखी है।

और आशिक़े आला हज़रत वलिये कामिल हज़रत मौलाना मुफ़्ती शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी तस्नीफ़ सवानेह आला हज़रत, स. 127 पर रक़म फ़रमाया है।

हज़रात ! शेरे बेशए अहले सुन्नत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चश्म दीद वाक़िआ के बयान से पता चलता है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इशा के वुज़ू करने के बाद से इशा की जमाअत के क़ाइम होने के दरमियान कुरआने मजीद हिफ़्ज़ किया करते थे जो तक़रीबन ज़्यादा से ज़्यादा पन्द्रह बीस मिनट का वक़्त होता होगा। तो 29 शअ़बान से 27 रमज़ान शरीफ़ तक कितने घन्टे होते हैं, हिसाब लगा लीजिये। यही तक़रीबन आठ दस घन्टे होते हैं।

गोया ! अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुल तक़रीबन आठ दस घन्टे में पूरा कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया और हाफ़िज़े कुरआन हो गए और ख़त लिखने वाले की बात भी सच्ची साबित हो कर रही।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۝

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

हज़रात ! सिराजुल उम्मा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दिन भर ख़िदमते दीन व शरीअत में मशग़ूल रहते, रात में इबादत भी करते मगर रात के कुछ हिस्से में आराम भी करते। एक मरतबा कहीं जा रहे थे उन्होंने देख कर किसी ने कह दिया कि

यह वह (बुज़ुर्ग) हैं जो रात भर इबादत में गुज़ारते हैं। हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस वक़्त से पूरी रात इबादत और शब बेदारी इख़्तियार कर ली।

(तज़किरतुल औलिया, स. 125)

हज़रात ! हज़रत इमामे आज़म के वाक़िआ और मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत के हाफ़िज़ होने के वाक़िआ में किस क़दर मुमासलत और यगानगत है। इसी तरह आला हज़रत की ज़िन्दगी के तमाम वाक़िआत किसी न किसी बुज़ुर्ग की याद ताज़ा करते नज़र आते हैं।

आला हज़रत के मामूलात

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़िन्दगी की आख़री सांस तक शरीअत व सुन्नत के पाबन्द रहे।

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आदते मुबारका थी कि जुमा और मंगल के दिन गुस्ल फ़रमाते और लिबास तब्दील फ़रमाया करते थे, हां ईदैन के दिन किसी और रोज़ आ जाती तो उस दिन भी गुस्ल फ़रमा कर लिबास तब्दील फ़रमाते।

1) इसी तरह आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु हफ़्ते में दो मरतबा जुमा और मंगल के दिन गुस्ल फ़रमा कर लिबास तब्दील फ़रमाया करते थे, हाँ अगर ईदैन या मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यानी 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ का दिन किसी और रोज़ पड़ता तो उस दिन भी गुस्ल फ़रमा कर लिबास तब्दील फ़रमाते।
2) हंसने में कभी ठट्ठा न लगाते।
3) जमाही आने के वक़्त दांतों में उंगली दबा लेते जिस की वजह से कोई आवाज़ न होती।
4) बाल बनवाते वक़्त अपना कंघा और आईना इस्तेमाल फ़रमाते।
5) अकसर वुज़ू मकान ही से कर के मस्जिद में तशरीफ़ लाते।
6) आप को वुज़ू के लिये दो लोटे पानी रखा जाता।
7) नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मकान तशरीफ़ ले जाया करते लेकिन अस्र की नमाज़ पढ़ कर फाटक में चार पाई पर तशरीफ़ रखते और चारों तरफ़ कुर्सियां बिछा दी जातीं और आम मुलाक़ात होती, यह सिलसिला नमाज़े मग़रिब तक जारी रहता।

(सवानेह आला हज़रत, स. 112)

हज़रात ! मेरे आक़ाए नेअ़मत व दौलत, सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु चौबीस घन्टे में तक़रीबन तीन घन्टा सोया करते थे, बाक़ी औक़ात तस्नीफ़ व तालीफ़, कुतुब बीनी, फ़तावा नवेसी और औरादो अशग़ाल के लिये मख़सूस थे। आम मुलाक़ात के लिये अस्र और मग़रिब के दरमियान का वक़्त मुक़र्रर था हर अमीर व ग़रीब, अदना व आला से मुलाक़ात फ़रमाते, हाजत मन्दों की हाजतें पूरी फ़रमाते, मगर अब शैख़े मोहतरम, पीरे मुग़ां के हालात दीगर हैं, अमीर व रईस और दौलत मन्द के लिये वक़्त ही वक़्त है मगर ग़रीब व मुफ़लिस नादार मुसलमान के लिये डांट व फटकार, कि वक़्त

नहीं देखते ? जब समझ में आए आ जाते हो ? कल आना, परसों आना, फिर मिलेंगे।

अरे शैखे मोहतरम, पीर साहब ! कुछ तो खयाल कीजिये कि ग़रीबों से महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने किस क़दर प्यार व महब्बत फ़रमाई है, जिन के नाम का खाते हो उन की सुन्नत का कुछ तो खयाल करो।

आला हज़रत का नमाज़े बा जमाअत का एहतिमाम

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पांचों वक़्त नमाज़ के लिये मस्जिद में हाज़िर होते और हमेशा नमाज़े बा जमाअत तकबीरे ऊला के साथ अदा फ़रमाया करते, हमेशा अमामा के साथ नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे कभी भी सिर्फ़ टोपी के साथ नमाज़ अदा न किया। (सवानेह आला हज़रत, स. 112)

आला हज़रत आमिले सुन्नत थे : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़र्ज़ व वाजिब और सुन्नते मुअक्कदह और मुस्तहब्बात के सख्त पाबन्द थे और अगर यह मालूम हो जाता कि जाने ईमान, मेरे करीम व रहीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़लां काम अन्जाम दिया है तो उस सुन्नत व आदत पर भी अमल के लिये बे क़रार हो जाते और उस वक़्त तक रूह व क़ल्ब को सुकून मयस्सर न आता जब तक उस सुन्नत पर अमल न फ़रमा लेते हिदायत व नसीहत से लबरेज़ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत पर अमल का नूरानी वाक़िआ मुलाहज़ा फ़रमाइये।

आशिक़े रसूल आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा दो हज़रात के कन्धों पर अपना हाथ रख कर उन के कन्धों के सहारे नमाज़ के लिये मस्जिद तशरीफ़ ले जाते हैं हाज़रीने बारगाह में उलमाए किराम, मुफ़्तियाने इज़ाम और मुरीदीन व खुद्दाम सब के सब इस हैरत अंगेज़ वाक़िआ को देख कर हैरान व परेशान कि आला हज़रत नहीफ़ व कमज़ोर भी नहीं हैं और न अलील व बीमार हैं फिर आला हज़रत दो हज़रात के कन्धों का सहारा लेकर मस्जिद क्यों तशरीफ़ ले गए।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद में हाज़िर हुए, नमाज़े बा जमाअत अदा फ़रमाई और बग़ैर सहारे के दौलत कदा पर तशरीफ़ लाए, हाज़िरीने बारगाह जवाब के मुनतज़िर थे कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दो हज़रात के कन्धों का सहारा लेकर मस्जिद क्यों तशरीफ़ ले गए।

दिलों की बात निगाहों के दरमियान पहुँची

आमिले सुन्नत, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि एक मरतबा हमारे मुशफ़िक़ व महरबान रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने दो सहाबी के कन्धों पर अपना दस्ते मुबारक रख कर नमाज़ के लिये मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ लाए अहमद रज़ा ने सोचा कि अगर मौत आ गई तो

महबूबे सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की एक सुन्नत पर अमल बाक़ी रह जाएगा, इस लिये बग़ैर किसी उज़्र के मैं दो हज़रात के कन्धों पर हाथ रख कर उन के सहारे से नमाज़ के लिये मस्जिद हो आता कि महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत वअदा पर भी अमल हो जाए।

हज़रात ! शाहे तैबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से यह अमल साबित हो गया था तो आशिक़े मुस्तफ़ा, अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस सुन्नत को भी हाथ से न जाने दिया और दुनिया को बता दिया कि अहमद रज़ा का जब अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ग़ैर मुअक्कदह सुन्नत पर अमल का यह आलम है तो फ़र्ज़ व वाजिब और सुन्नते मुअक्कदह पर अमल का क्या आलम होगा।

आला हज़रत ने बीमारी में भी नमाज़े बा जमाअत को तर्क न किया

(1) आला हज़रत इमाम अहमद रजा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कई महीनों से अलील थे और मर्ज़ इस क़दर शदीद था कि चलने फिरने की ताक़त नहीं, शरीअत इजाज़त देती है कि ऐसा मरीज़ घर में तन्हा नमाज़ पढ़ ले। मगर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़े बा जमाअत की पाबन्दी करते और चार आदमी कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद तक पहुँचाते और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद में नमाज़े बा जमाअत अदा करते। (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 56)

(2) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सख़्त अलील हैं, मस्जिद में कोई ले जाने वाला न था, जमाअत का वक़्त हो गया, तबीअत परेशान, नाचार, ख़ुद ही किसी तरह घसिटते हुए मस्जिद में हाज़िर हुए और नमाज़े बा जमाअत अदा की। (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 56)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यूँ ही आला हज़रत और मजद्दिदे आज़म नहीं हो गए थे।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहे
कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है

ऐ आला हज़रत के मानने वालो ! ग़ौर करो ! और सोचो ! कि हमारी नमाज़ों का क्या हाल है ? नमाज़े बा जमाअत मस्जिद में अदा करना तो कुजा अपने घर में तन्हा नमाज़ नहीं अदा करते। आला हज़रत के वाक़िआ से हम को दरसे इबरत हासिल करना चाहिये।

आला हज़रत बुज़ुर्गों की बारगाह के मुअद्दब थे

बा अदब बा नसीब, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह से सबक़ मिलता है कि बुज़ुरगाने दीन की ताज़ीम व तौक़ीर उलमाए किराम माकिराम का अदब व एहतिराम हर हाल में मलहूज़ रखना चाहिये।

मुलाहज़ा फ़रमाइये। आला हज़रत जब अल्लामा शामी और मुहक्क़िक़ अलल इतलाक़ जैसे बुज़ुर्गों की बातों पर कलाम करते हैं तो अदब व ताज़ीम और तवाज़ोअ व ख़ाकसारी का दामन मज़बूती के साथ पकड़े हुए नज़र आते हैं।

एक जगह रद्दुल मुख़्तार में अल्लामा शामी ने फ़रमाया इस एतराज़ का हल (यानी जवाब) हमारी समझ में न आया, मगर इसी एतराज़ के बारे में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे उस का हल यानी जवाब मिल गया। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जद्दुल मुमतार में लिखते हैं:

وَظَهَرَ لَنَا بِبَرَكَةِ خِدْمَةِ كَلِمَاتِكُمْ

यानी ऐ हमारे बुज़ुर्ग अल्लामा शामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह आप के कलेमात पर (यानी आप की बातों) पर काम करने की बरकत से हमें (इस एतराज़ का हल व जवाब) समझ में आ गया। मुलख़्ख़सन (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 61)

हज़रात ! आज कल मग़रबी तहज़ीब में परवरिश पाने वाले, दिल, दुनिया को देने वाले, कुछ यहाँ के और अकसर बाहरी दुनिया में जा कर आने वाले, बे अदब व गुस्ताख़ हो कर अकाबिर, बुज़ुरगाने दीन पर हर्फ़ गीरी और उन के फ़रमूदात पर एतराज़ करते नज़र आते हैं। यह अदबी और गुस्ताख़ी का हल उन लोगों का है जिन्हें आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के उलूम का पचासवां हिस्सा भी नसीब नहीं।

मुलाहज़ा फ़रमाइये कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किस क़दर बा अदब थे।

शहज़ादए शाहे बरकात हज़रत सय्यद शाह मेहदी हसन मियां साहब, सज्जादा नशीं सरकारे कलां मारहरा शरीफ़ बयान फ़रमाते हैं कि मैं बरैली शरीफ़ हाज़िर हुआ, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद खाना लाते और ख़ुद ही मेरा हाथ धुलाते, हाथ धुलाते वक़्त देखा कि मेरे हाथ की उंगली में सोने की अंगूठी है (यानी मैं ने सोने की अंगूठी पहन रखी थी) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बड़े ही अदब से अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे अंगूठी इनायत फ़रमा दें। हज़रत सय्यद मेहदी मियां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़ौरन अंगूठी उतार कर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दे दी और बरैली शरीफ़ से मुम्बई तशरीफ़ ले गए और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस सोने की अंगूठी को मारहरा शरीफ़ में हज़रत सय्यद शाह मेहदी मियां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेटी फ़ातिमा के पास भेज दी और एक ख़त भी साथ में भेजा जिस में लिखा था कि शाह ज़ादी साहिबा यह सोने की अंगूठी आप के लिये है (औरतों के लिये सोना हलाल है और मर्दों के लिये नहीं) जब सय्यद मेहदी मियां साहब मुम्बई से मारहरा शरीफ़ वापस तशरीफ़ लाए तो शहज़ादी फ़ातिमा ने बताया कि बरैली शरीफ़ से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह सोने की अंगूठी भेजी है और यह भी फ़रमाया है कि शहज़ादी साहिबा यह सोने की अंगूठी आप के लिये है। इतना सुनना था कि हज़रत सय्यद मेहदी हसन

मियां रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि बेटी ! आला हज़रत ने अंगूठी भेज कर दीन व शरीअत का मस्अला समझाया है। मुलख्खसन (हयाते आला हज़रत, स. 209)

हज़रात ! कुछ लोग ख़ानदानी बे बाक और बे अदब होते हैं पहले उन के बाप दादा ने अज़ाने सानी के मस्अला में शरीअते मुतहहरा का मुक़ाबला किया और आमिले शरीअत व सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह के इस क़दर बे अदब हुए कि मुक़दमा काइम कर दिया। मुख़ालिफ़ दुनिया की झूटी कचहरी में गए और आला हज़रत अपने मुर्शिदे आज़म कुतबुल अक़्ताब शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सच्ची सरकार में हाज़िर हुए अल हासिल जो जहां के थे वहाँ गए जो जिस का था उस से मदद मांगी।

आला हज़रत बग़दाद वाले सरकार के मुरीद व मुलाज़िम थे इस लिये आलमे तसव्वुर में बग़दाद हाज़िर हुए और अपनी बे कस व बे बसी और लाचारी व मजबूरी की फ़रयाद बे कसों के कस, बे बसों के बस और लाचारों के चारा गर, मजबूरों के फ़रयाद रस और कमज़ोरों की हिम्मत व कुव्वत, महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सरकार में पेश करते हुए अर्ज़ करते हैं :

तलब का मुंह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस

दुहाई या मोहियुद्दीन दुहाई
बला इस्लाम पर नाज़िल है या ग़ौस

तेरा वक़्त और पड़े यूँ दीन पर वक़्त
न तू आजिज़ न तू ग़ाफ़िल है या ग़ौस

अदू बद दीन मज़हब वाले हासिद
तू ही तन्हा का ज़ोरे दिल है या ग़ौस

अताएं मुक़्तदर, ग़फ़्फ़ार की हैं
अबस बन्दों के दिल में गुल है या ग़ौस

दिया मुझ को उन्हें महरूम छोड़ा
मेरा क्या जुर्म, हक़ फ़ासिल है या ग़ौस

रज़ा का ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा
तेरी रहमत अगर शामिल है या ग़ौस

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! बग़दाद शरीफ़ से इनायत की नज़र उठी, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत हामिये शरीअत व सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ाइज़ुल मराम और कामयाब व कामरां हुए, तजदीदे सुन्नत की तासीर पूरी दुनिया में ज़ाहिर हुई, दुनिया की अकसर मसाजिद में अज़ाने सानी सुन्नत के मुताबिक़ होने लगी।

मौलाना अहमद रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, मुजद्दिदे आज़म, आला हज़रत मोअजिज़ए नबी, चश्मो चिराग़ ख़ानदाने बरकात बन कर चमके, चमक रहे हैं और चमकते रहेंगे और मुख़ालिफ़ खाइब व ख़ासिर थे और रहेंगे। इन्शाअल्लाहु तआला।

सब उन से जलने वालों के गुल हो गए चिराग़
अहमद रज़ा की शमा फ़रोज़ां है आज भी

हज़रात ! आज भी इस ज़हनियत के हामिल कुछ मौलाना, मौलवी कहलाने वाले मग़रबी दुनिया को दिल का सौदा कर के आने वाले अपने बाप दादा का बदला लेना चाहते हैं और कुछ लोग बाप दादा की रविश के ख़िलाफ़ आला हज़रत पर एतराज़ व सवाल करते नज़र आ रहे हैं, उन को मालूम नहीं कि आला हज़रत की बारगाह से दीन व सुन्नियत का दूध पीने वाले आला हज़रत के हज़ारों लाखों रूहानी बेटे इल्म व दौलत से माला माल पूरी दुनिया में फेले हुए हैं और आला हज़रत ने जो दूध पिलाया था वक़्त आने पर उस दूध का हक़ अदा करेंगे, इन्शाअल्लाहो तआला, सारे उलमा मदारिस महसूस कर रहे हैं कि यह ग़लत और फ़ासिद तहरीरें और बातें क्यों पेश की जा रही हैं और पसे पर्दा इन तहरीरों और बातों के राज़ किया हैं, होश के नाखुन लो, मुतकब्बिर और घमण्डी मत बनो, हिदायत का रास्ता लो, मस्लके आला हज़रत का दामन मज़बूती के साथ थाम लो, याद रखो ! कल के मुख़ालिफ़ बड़ी शान व शौकत, असर व रुसूख़, पीरी, मुरीदी वाले थे मगर गुमनामी की तारीक दुनिया में गुम हो गए, तारीख़ मुआफ़ नहीं करती, तारीख़ में उन का नाम इस तरह मिलता है कि यह लोग सुन्नत का मुक़ाबला करने वाले बल्कि सुन्नत को बदलने वाले थे, तो तुम्हें भी तारीख़ कभी मुआफ़ नहीं करेगी। हक़ पर रहो, हक़ की हिमायत करो यही मोमिन की शान और पहचान है।

आज पूरी दुनिया में मोमिनों के नज़दीक सिक्कए राइजुल वक़्त की हैसियत से आला हज़रत की ज़ात है।

वादी रज़ा की कोहे हिमाला रज़ा का है
जिस सम्त देखिये वह इलाक़ा रज़ा का है

आला हज़रत का ख़ुलूस

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं,. जिस का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने हिदायत दी और मैं किसी की तारीफ़ पर न ख़ुश होता हूँ और न ही इतरा रहा हूँ और जो लोग मुझे गालियाँ देते हैं और बुरा भला कहते हैं उन की बुराई से मैं परेशान नहीं होता बल्कि अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ कि उस ने अपने करम से इस ना क़ाबिल अहमद रज़ा को इस क़ाबिल किया कि अल्लाह तआला की अज़मत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इज़्ज़त व बुज़ुर्गी, हिमायत व ताईद का परचम लहराता रहे। इस ख़िदमते आलिया पर अगर कोई मुझे गाली दे तो अहमद रज़ा गालियाँ खाता रहे और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबार के पहरा देने

वाले कुत्तों में इस का नाम व चेहरा रखा जाए। (खुलासा फवाइद फतवा, स. 49)

मेरी किस्मत की क़सम खाएं सगाने बग़दाद
हिन्द में भी रहूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा
हैं रज़ा यूँ न बिलक तू नही जय्यिद तो न हो
सय्यिद, जय्यिद हर दहर है मौला तेरा

आला हज़रत का पैग़ाम दीन के ख़ादिमों के नाम

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तअला अन्हु की बारगाह में एक मुरीद हाज़िर थे, गालियों से भरा ख़त देख कर गुस्से में आ गए, अर्ज़ किया कि यह शख़्स मेरे क़रीब का रहने वाला है, उस पर मुक़दमा दाइर करके उस को सज़ा दिलाई जाए। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत से तारीफ़ी ख़ुतूत लाकर सामने रख दिये वह पढ़कर बहुत ख़ुश हुए आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, पहले उन तारीफ़ करने वालों को इनआम व इकराम से मालामाल कर दीजिये फिर गाली देने वाले को सज़ा दिलाइये और जब महिब को फ़ायदा नही पहुँचा सकते तो दुश्मन को नुक़सान पहुँचाने की भी फ़िक्र न कीजिये। मुलख़्ख़सन। (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 44)

हज़रात ! यह था आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़ुलूस और दीन के ख़ादिमों के नाम पैग़ाम कि दीन व सुन्नियत का काम करते चले जाओ, तारीफ़ से ख़ुश न होना और बुराई से परेशान न होना। अल्लाह तआला हमें इस पर साबित क़दम फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

आला हज़रत का इख़्लास

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में एक साहब हाज़िर हुए और मिठाई से भरी हांडी पेश की। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : किस लिये आना हुआ। उन साहिब ने अर्ज़ किया कि सलाम करने, हुज़ूर से मुलाक़ात के लिये हाज़िर हो गया हूँ। सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया कोई ज़रूरत है ? उन साहब ने कहा कि बस यूँ ही मुलाक़ात के लिये आ गया हूँ, थोड़ी देर के बाद फिर पूछा कि आप के आने का कोई मक़सद है, अगर कोई ग़रज़ है तो कहिये ? वह साहब बोले कोई ग़रज़ नहीं बस ज़ियारत के लिये हाज़िर हो गया हूँ, तीन मरतबा पूछने के बाद अब आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मिठाई की हांडी को घर के अन्दर भेज दिया। थोड़ा ही वक़्त गुज़रा था कि वह साहब बोले कि हुज़ूर एक तावीज़ दे दीजिये। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तावीज़ लिख कर दिया और घर के अन्दर से मिठाई की हांडी मंगवा कर उन साहब को वापस करते हुए फ़रमाया कि मेरे यहाँ तावीज़ बेची नहीं जाती। (हयाते आला हज़रत, स. 29)

(2) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ुलूस के पैकर थे :

वाक़िआ का खुलासा मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सूबा गुजरात के शहर धूरा से आप के कुछ मेमन मुरीदीन बरैली शरीफ़ हाज़िर हुए और अपने शहर धूरा चलने के लिये अपने पीर व मुर्शिद से इसरार करने लगे, बड़ी मिन्नत व समाजत के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु धूरा जाने के लिये राज़ी हो गए। तांगा लाया गया, सामाने सफ़र उस पर रखा गया, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु धूरा जाने के लिये तांगे पर सवार हो गए, तांगा चन्द क़दम ही चला होगा कि धूरा के मेमन मुरीदों ने ख़ुशी में सरशार मसर्रत का इज़हार करते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में अर्ज़ करने लगे कि हुज़ूर ! आप अपने दौलत मन्द मुरीदों में तशरीफ़ ले जा रहे हैं, इस क़दर नज़राना पेश होगा कि हुज़ूर की लिखी हुई तमाम किताबें छप जाएंगी। रुपया और दौलत का ज़िक्र आते ही पैकरे ख़ुलूस आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तांगा रोक दिया जाए और सामान तांगे से उतार लिया जाए। इस लिये कि सफ़र मुलतवी कर दिया गया है। लोगों ने बहुत मिन्नत व समाजत की लेकिन आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सफ़र के लिये तैय्यार न हुए और फ़रमाया कि अहमद रज़ा दौलत व रुपया और नज़राना के लिये सफ़र नहीं कर रहा था बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा और ख़ुश्नोदी की ख़ातिर सफ़र के लिये तैय्यार हो गया था।

अल मुख़्तसर निया की लालच सामने आते ही आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सफ़र मुलतवी फ़रमा दिया और हज़ार कोशिशों के बावजूद भी सफ़र के लिये तैय्यार न हुए और धूरा तशरीफ़ न ले गए।

हज़रात ! मिठाई की हांडी तावीज़ लेने के बाद वापस कर दी गई वह वाक़िआ और दुनिया की दौलत की लालच का मुआमला आते ही धूरा का सफ़र मुलतवी कर दिया। इन दोनों वाक़िआत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित होता है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हर काम अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा और ख़ुश्नोदी के लिये हुआ करता था और आज कल के कुछ पीर व मुर्शिद कहलाने वाले ऐसे भी नज़र आते हैं जो नज़राना के लिये मालदार मुरीदों के घर जाना अपनी ख़ुश नसीबी समझते हैं। (अल अयाज़ बिल्लाहे तआला)

वाजिब पर अमल न हो तो कोई वज़ीफ़ा क़ुबूल नहीं

एक शख़्स आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुरीद हुए और किसी वज़ीफ़ा के तलबगार हुए। उन साहब की दाढ़ी हद्दे शरअ से कम थी। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से फ़रमाया : जब दाढ़ी शरअ के मुताबिक़ हो जाएगी तो वज़ीफ़ा बता दिया जाएगा। कुछ दिनों के बाद फिर दरख़्वास्त की तो फ़रमाया कि

किसी गुज़ारिश की ज़रूरत नहीं, जब दाढ़ी शरअ के मुताबिक़ हो जाएगी तो ख़ुद वज़ीफ़ा बता दिया जाएगा। यानी नफ़्ल पर वाजिब मुक़द्दम है। (इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 65)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुरीद की किस तरह से कोई परवाह न की बल्कि शरीअत का सबक़ सिखाते रहे कि जब दाढ़ी शरअ के मुताबिक़ हो जाएगी तो वज़ीफ़ा बता दिया जाएगा।

यह थे हमारे आक़ाए नेअमत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अपने मुरीद को हर हाल में शरीअत का दर्स सिखाते रहे और वज़ीफ़ा उस वक़्त तक न सिखाया जब तक मुरीद ने शरीअत के मुताबिक़ दाढ़ी न रख ली।

हज़रात ! हमारे क़ब्र के उजाला, आख़िरत के सहारा, हमारे पीरे आज़म, हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

विलायत की तीन अलामतें हैं

(1) हर चीज़ में अल्लाह तआला ही से नियाज़ मन्दी व इस्तिग़ना बिल्लाह (2) हर चीज़ में क़नाअत (3) हर चीज़ में रुजूए इलल्लाह। (कशकोले फकीर क़ादरी, स. 23)

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादे पाक के जामेअ, नाइबे ग़ौसे आज़म, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी नज़र आ रही है, हक़ीक़त में अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम और हुज़ूर ग़ोसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नवाज़िशात ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरकाती को दो आलम से बे नियाज़ कर दिया था, ख़ुद फ़रमाते हैं :

माले दुनिया तो कोई चीज़ नहीं है सर मद
आँख उठा कर न कभी देखूँ सूए मुल्के अबद
सब यह उल्फ़त की बदौलत है ग़िनाए बेहद
हब्बज़ा आफ़रीं ऐ दौलते इश्क़े अहमद
मैं गदाई के पर्दा में सिकन्दर निकला

आला हज़रत रौशन ज़मीर थे

हज़रत मौलाना सय्यद दीदार अली शाह रहमतुल्लाहि तआला अलैह को एक मरतबा ख़लीफ़ए हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुराद आबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने दोस्ताना और याराना तअल्लुक़ात की बिना पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात की रग़बत दिलाई तो उन्होंने कहा भाई मुझे उन से कुछ हिजाब सा आता है, वह पठान ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते हैं और सुना है कि उन की तबीअत सख़्त है। बहर हाल हज़रत मौलाना सय्यद दीदार अली शाह रहमतुल्लाहि तआला अलैह हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल के साथ

बरैली शरीफ़ पहुँचे, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने आला हज़रत से पूछा कि हुज़ूर के मिज़ाज कैसे हैं ? आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : भाई क्या पूछते हो, पठान ज़ात हूँ, तबीअत सख़्त है।

कश्फ़ और रोशन ज़मीरी की यह शान देख कर हज़रत मौलाना सय्यद दीदार अली शाह रहमतुल्लाहि तआला अलैह की आँखों में आंसू भर गए और सोचने पर मजबूर हो गए कि यह बात तो मैं ने कहाँ और कब कही थी, मगर आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर हो गई।

दिलों की बात निगाहों के दरमियान पहुँची
कहां चिराग़ जला रोशनी कहाँ पहुँची

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ऐसे ज़बरदस्त मोअतक़िद हुए कि बारगाहे आला हज़रत से हमेशा के लिये मुनसलिक हो गए।

(तज़किरए उलमाए अहले सुन्नत लाहौर, स. 270)

आला हज़रत ग़ैबदां थे

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अल्लाह व रसूल जल्ला शानहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अता किये हुए उलूम के ज़रीए विसाल से चार माह बाईस दिन पहले मालूम हो चुका था कि मुझे 1340 हि. में दुनियाए फ़ानी से कूच करके बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हाज़िर होना है। चुनाँचे तीन रमज़ान शरीफ़ 1339 हि. मुताबिक़ 10 मई 1921 ई. को अपनी तारीख़ विसाल की ख़बर देते हुए आप ने अपने क़लमे हक़ से यह आयते करीमा तहरीर फ़रमाई। وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ

तर्जमा : और उन पर चाँदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा।

(पारा 29, रूकूअ 19, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अल्लाहु अकबर : सरकारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आशिक़े सादिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़िन्दगी ही में वह आयते मुक़द्दसा भी तहरीर कर दी जो उन के माद्दए तारीख़े विसाल पर मुश्तमिल है।

और फिर दुनिया ने देख भी लिया कि अपना माद्दए तारीख़े विसाल पेश करने वाला ठीक 25 सफ़र 1340 हि. को विसाल फ़रमाता है। (सवानेह आला हज़रत, स. 376)

यहाँ आकर मिलें नहरें शरीअत व तरीक़त की
है सीना मजमउल बहरैन ऐसे रहनुमा तुम हो

आला हज़रत की निगाहों से परदे उठ चुके थे

जबलपूर का वाक़िआ है कि एक मरतबा महफ़िले मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़ाइल व कमालात बयान फ़रमा रहे थे, कि दौराने तक़रीर मजलिस में हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद बुरहानुल हक़ साहब और एक मर्द सालेह मौजूद थे, दोनों बुज़ुर्गों ने बयान किया, दरमियाने तक़रीर हमारी हमारी आँख लग गई हम सो गए, हमने एक अजीब जलवए नूर देखा और सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हैं और हम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हो रहे हैं और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तक़रीर बन्द कर के मिम्बर से उतर गए और सलातो सलाम पढ़ने लगे, तमाम हाज़िरीन भी खड़े हो गए और सब के सब सलातो सलाम पढ़ने में मशगूल हो गए। मगर तमाम हाज़िरीन व हैरत में थे कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तक़रीर बन्द करके मिम्बर से उतर कर सलातो सलाम पढ़ने की वजह किया है। जब हज़रत मौलाना मुफ़्ती बुरहानुल हक़ साहब क़िब्ला ने अपना वाक़िआ बयान किया कि दौराने तक़रीर में महवे ख़्वाब हो गया और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और मैं ने ज़ियारत का शरफ़ हासिल किया तब लोगों को मालूम हुआ कि आला हज़रत दौराने तक़रीर मिम्बर से उतर गए और सलातो सलाम पेश करने लगे इस की वजह किया थी, हज़रत बुरहाने मिल्लत ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देख रहे थे और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने सर की आँखों से सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार कर रहे थे। (मुलख्खसन, करामाते आला हज़रत, स. 98)

हज़रात ! ऐसा ही वाक़िआ सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक वअ़ज में पेश आया था और आला हज़रत नाइबे ग़ौस हैं।

मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत अल्लामा अब्दुल अलीम मैरठी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं :

तुम ही फैला रहे हो इल्मे हक़ अकनाफ़े आलम में
इमामे अहले सुन्नत नाइबे ग़ौसुल वरा तुम हो

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत मज़हरे ग़ौसे आज़म थे

अल्लाह तआला ने अपने नेक और बर गुज़ीदा बन्दे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु को दीने इस्लाम की सच्ची ख़िदमत और महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत और गुलामी के लिये चुन लिया था।

आला हज़रत की ज़ाते गिरामी हुज़ूर ग़ौसे आज़म शहंशाहे बग़दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ास इनायतों की जलवा गाह थी, ख़ुद आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि :

एक मरतबा मैं ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत वालिदे माजिद के साथ एक बहुत उम्दा और ऊंची सवारी है हज़रत वालिदे माजिद ने मुझे पकड़ कर उस ऊंची सवारी पर सवार किया और फ़रमाया कि ग्यारह दर्जा तक तो मैंने पहुँचा दिया आगे अल्लाह मालिक है। आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में इस से सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ग़ुलामी मुराद है। (अल मलफ़ूज़, जि. 3, स. 61, सवानेह आला हज़रत, स. 331)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु शरीअत में इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के नाइब हैं तो तरीक़त में हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़हरे अतम हैं। इसी लिये कुतबे वली और मजज़ूब बुज़ुर्ग भी आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु का एहतिराम व अदब करते हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

बरैली शरीफ़ में एक मजज़ूब बुज़ुर्ग दीना मियां रहते थे जिस की ज़बां पूरबी थी और वह एक लंगूटी पहना करते थे मगर मैं उन की बातों को क़ारेईन की आसानी के लिये उर्दू में लिख रहा हूँ

हज़रत दीना मियां रहमतुल्लाहि अलैह ने एक मरतबा ट्रेन को अपनी करामत से रोक दिया था। शहर बरैली के हिन्दू व मुसलमान सभी उन के नाम से वाक़िफ़ हैं एक दिन उन का गुज़र मुहल्ला सौदाग्रान में हुआ जब वह बुज़ुर्ग आला हज़रत की मस्जिद के सामने पहुँचे तो आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु काशानए अक़्दस (अपने मकान) से तशरीफ़ ला रहे थे मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रत दीना मियां रहमतुल्लाहि तआला अलैह आप को देख कर भागे और एक गली में ज़ाकर छुप गए लोगों ने कहा मियाँ क्यूँ भागते फिरते हो। उन्हों ने फ़रमाया कि बाबा मौलवी साहब आ रहे हैं लोग बोले कि मौलवी साहब आ रहे हैं तो क्या हुआ तो उन्होंने घुटनों पर हाथ रख कर फ़रमाया फ़रज खुले हुए हैं यानी जिस्म का वह हिस्सा खुला हुआ है तो ऐसी हालत में मुजद्दिदे वक़्त नाइबे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने होना उन के एहतिराम के ख़िलाफ़ है। (सवानेह आला हज़रत, स. 331)

गुलामों को बना दो रह शनास मन्ज़िले इरफ़ां
कि इस मंज़िल के अच्छे राहबर अहमद रज़ा तुम हो

हज़रात ! महबूबे सुब्हानी पीरे लासानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी सरापा करामत थी तो आप के मज़हर व नाइब आक़ाए नेअमत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते अक़्दस से भी रूहानियत व करामत के जलवों का ज़हूर होता था। आला हज़रत सिर्फ़ आलिम ही नहीं बल्कि आरिफ़ व सूफ़ी और बा करामत वली और क़ुतुब भी थे।

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(2)

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के

इरशादात और करामात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اُولٰٓئِکَ کَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط

तर्जमा : यह हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की। (पारा 28, रुकूअ 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

मौलाना गुलाम हुसैन साहब जो उलूमे नुजूम में बड़े कमाल के माहिर थे। सितारों की शनाख़्त और उस के नताइज निकालने में काफ़ी मलका रखते थे।

एक मरतबा मौलाना गुलाम रसूल साहब आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हुए आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से फ़रमाया कि बारिश का क्या अन्दाज़ा है ? बारिश कब तक होगी ? उन्होंने सितारों की वज़अ से ज़ाइचा बनाया और फ़रमाया कि इस महीने में पानी नहीं है। आइन्दा माह में बारिश होगी यह कह कर ज़ाइचा हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ बढ़ा दिया। आप ने देख कर फ़रमाया। अल्लाह तआला को सब कुदरत है चाहे तो आज ही बारिश हो। उनहोंने कहा यह कैसे हो सकता है ? आप सितारों की वज़अ नहीं देखते ? आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मोहतरम मैं सब देख रहा हूँ और उस के साथ सितारों की वज़अ और अल्लाह तआला की क़दरत को भी देख रहा हूँ फिर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से पूछा कि इस वक़्त क्या बज रहे हैं, सामने दीवार पर कलाक यानी घड़ी देख कर उन्होंने कहा सवा ग्यारह बज रहे हैं। आला हज़रत ने फ़रमाया बारह बजने में कितनी देर है ? वह साहब बोले पोन घन्टा, आला हज़रत ने फ़रमाया इस से पहले बारह बज जाए तो, वह साहब बोले हर गिज़ नहीं ठ़ीक पौन घन्टा के बाद ही बारह बजेगा। आला हज़रत उठे और घड़ी की बड़ी सुई घुमा दी, उसी वक़्त फ़ौरन टन टन बारह बजने लगे। आला हज़रत ने फ़रमाया आप ने तो कहा था कि

ठीक पौन घन्टा के बाद बारह बजेगा और बारह तो बज गया वह साहब बोले घड़ी की सूई घुमा दी गई है वर्ना हिसाब से तो पौन घन्टा के बाद ही बारह बजते आला हज़रत ने फ़रमाया इसी तरह अल्लाह तआला क़ादिरे मुतलक़ है कि जिस सितारे को जिस वक़्त जहाँ चाहे पहुँचा दे। अल्लाह तआला चाहे तो एक महीना, एक हफ़्ता, एक दिन क्या, अभी बारिश होने लगे। इतना फ़रमाना था कि चारों जानिब से घंघोर घटा छाई और पानी बरसने लगा।

(हयाते आला हज़रत, स. 162, जि. 3)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में इस क़दर महबूब व मक़बूल थे कि आप की मर्ज़ी हो गई तो बग़ैर मौसम के बारिश होने लगी।

आला हज़रत की दुआ की बरकत से मय्यित की बख़्शिश हो गई

बरैली शरीफ़ में नवाब ज़मीर ख़ाँ के बड़े भाई का इन्तिक़ाल हुआ तो उन की वालिदा की आरज़ू व तमन्ना के मुताबिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनकीनमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रात में उन की बीबी साहिबा ने ख़्वाब में देखा कि मेरे शोहर बहुत ख़ुश हैं और अच्छी हालत में हैं, जिस की तवक़्क़ोअ बज़ाहिर उन के आमाल के एतिबार से न थी, बीबी साहिबा ने ख़ुशी और अच्छी हालत का सबब मालूम किया तो उन्होंने फ़रमाया, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उन की दुआओं के सबब मेरे सब गुनाह बख़्श दिये गए और मैं बहुत ख़ुश और अच्छी हालत में हूँ। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 162)

हज़रात ! इस वाक़िआ से पता चला और मालूम हुआ कि नेकों से नमाज़े जनाज़ा पढ़ानी चाहिये और नेकों की दुआएं लेनी चाहिये इस लिये कि नेकियों की दुआ से गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है।

आला हज़रत की करामत देख कर ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी ताइब हो गया

मुन्शी लताफ़त हुसैन बयान करते हैं कि एक ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी मुरादआबादी से मेरे एक मस्अला में बहस हो गई वह ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब से जवाब न बन पड़ा तो आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुरा भला कहने लगे, मुन्शी लताफ़त हुसैन साहब ने कहा कि आप को इस मस्अला में शुबह है तो आला हज़रत की बारगाह में बरैली शरीफ़ चल कर गुफ़्तुगू कर के मस्अला हल कर लीजिये किराया वग़ैरह इख़राजात में बरदाश्त कर लूँगा वह ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब बोले मैं बरैली आला हज़रत के पास नहीं जाऊँगा।

रात को ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब ने ख़्वाब देखा कि उन्हें किसी जगह जाना है बीच में एक बड़ा दरया है, कश्ती का पता नहीं, इसी फ़िक्र में थे कि दो सवार कि ख़ुश्की की तरफ़ आ रहे हैं और दरया में जा रहे हैं ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब ने कहा कि आप लोग मुझे लेते चलिये उन में से एक साहब ने कहा कि उसे छोड़ दीजिये यह शख़्स नापाक है, ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब को सख़्त तअज्जुब हुआ कि मैं तो बड़ा मुवाहिद यानी अल्लाह तआला को मानने वाला मौलवी हूँ, मुझे नापाक किस वजह से फ़रमाया ?

ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब को ख़याल आया कि शायद मौलाना अहमद रज़ा साहब की शान में गुस्ताख़ी और ग़ैर मुक़ल्लिद होने की वजह से ऐसा फ़रमाया इसी तरद्दुद में थे कि कुछ दिनों के बाद दूसरा ख़्वाब देखा कि एक बहुत बड़ा और अज़ीमुश्शान शहर है उसका फाटक भी बहुत बड़ा है, और दोनों जानिब दरबान खड़े हैं और लोग अन्दर जा रहे हैं, जो शख़्स अन्दर जाना चाहता है तो दरबान उस से कुछ पूछते हैं और चिट्ठी मांगते हैं, जो शख़्स चिट्ठी दिखा देता है उस को शहर के अन्दर जाने देते हैं मैं ने भी पूछा कि यह शहर किया जगह है ? दरबान ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दरबार है। मैं ने कहा मुझे भी जाने दिया जाए तो दरबान ने पूछा कि तुम्हारे पास चिट्ठी है ? मैं ने कहा मेरे पास चिट्ठी नहीं है, दरबान ने कहा मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछ कर बताता हूँ वह इजाज़त लेने गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उस शख़्स से कह दो कि पाक व साफ़ हो कर चिट्ठी ले कर आए, मैं ने जाकर उस से कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि पाक व साफ़ हो कर चिट्ठी ले कर आए तो उस शख़्स ने कहा कि कैसे पाक व साफ़ होकर आऊँ और चिट्ठी कहाँ से लाऊँ ? फिर दरबान ने जाकर मालूम किया तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मौलवी अहमद रज़ा बरैलवी शे पाक व साफ़ होकर आओ और उन्हीं से छुट्टी भी ले कर आओ उस वक़्त खुल गई फिर सोना हराम हो गया, फिर ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी साहब बरेली शरीफ़ हाज़िर हुए और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कदमों में गिर कर रोने लगे, रोते रोते हिचकियाँ बन्द गईं और सब हाल अर्ज़ किया तौबह किया, दाख़िले सिलसिला हो कर मुरीद हुए। अआला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शजरा इनायत फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि यही छुट्टी है और जिस कश्ती की तलाश में थे वह पीरो मुर्शिद है।

(हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 162)

हज़रात ! सुहागन वही है जिसे पिया चाहे, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के नज़दीक आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु की बड़ी इज़्ज़त और बलन्द मक़ाम है और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम तक पहुँचने के लिये आला हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु से महब्बत व उल्फ़त लाज़िम है और मस्लके आला हज़रत पर इस्तिक़ामत ज़रूरी है वर्ना

फ़ारसी.....................

यानी हिदायत पानेकी बजाए गुमराह हो सकता है।

यहाँ आकर मिलीं नहरें शरीअत और तरीक़त की
है सीना मजमउ़ल बहरैन ऐसे रहनुमा तुम हो

आला हज़रत क़ुतुब थे

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद अब्दुर्रहीम ख़ाँ साहब सुल्तान पूरी बयान करते हैं कि एक साहब बरैली के रहने वाले वह पीलीभीत अकसर जा करते थे, पीली भीत के जंगल में एक ख़ुदा रसीदा फ़क़ीर रहते थे, वह साहब उन की तलाश में रहा करते थे, वह साहब बयान करते हैं कि मैं पीलीभीत के जंगल में उस अल्लाह वाले बुज़ुर्ग की तलाश में रहा करता था, इत्तिफ़ाक़न एक दिन उस फ़क़ीर से जंगल में मुलाक़ात हो गई, बहुत ही बूढ़े आदमी थे, मैं ने सलाम किया, जवाब दिया और कहा कि बच्चा यहाँ कहाँ आ गया ? भाग भाग यह शेरों का जंगल है मैं बैठ गया क्या देखता हूँ कि पीछे से एक शेर आ रहा है मैं ने कहा, हज़रत बचाइये शेर आ रहा है उन बुज़ुर्ग ने शेर की तरफ़ देखा, शेर वहीं खड़ा रह गया और मुझ से फ़रमाया तू यहाँ से चला जा तेरा हिस्सा यहाँ नहीं है। फिर मैं ने कहा कि मेरा हिस्सा कहाँ है ? मेरी दिली तमन्ना यही है कि हुज़ूर ही से मुरीद होउँगा, तो उस बुज़ुर्ग फ़क़ीर ने फ़रमाया कि बरैली मुहल्ला सौदागरान उन में एक क़ुतुब मौलवी है, तेरा हिस्सा वहाँ हैं, मैं ने नाम पूछा तो आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी लिया और मुझे अपने साथ जंगल के बाहर लाकर वापस चले गए उस के बाद मैं बरैली शरीफ़ आया और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुरीद हुआ।

(हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 165)

हज़रात ! अल्लाह तआला के वह नेक व पारसा बन्दे जो जंगलों में रह कर अपनी सुबह व शाम अल्लाह तआला के ज़िक्र में गुज़ारते हैं ऐसे ख़ुदा वाले नेक व पारसा बन्दे औलिया अल्लाह भी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मक़ाम व मन्सब को पहचानते हैं और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़ुतुब व वली फ़रमाते हैं और अल्लाह के बन्दों को आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुरीद कराते नज़र आते हैं।

फ़ारसी तर्जमा : यानी वली को वली ही पहचानते हैं

आला हज़रत हर जगह मुरीदों के साथ हैं

मौलवी एजाज़ वली साहब का बयान है कि 1320 हि. में वालिदैन करीमैन हज के लिये जाने लगे तो वालिदा साहिबा आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुई और इजाज़त चाही, आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : मैं आते जाते तुम्हारे साथ हूँ, फिर दोबारह आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं सच

कहता हूँ, मैं आते जाते तुम्हारे साथ हूँ, वालिदा माजिदा हज के लिये रवाना हो गई।

एक रात की बात है कि वालिदा साहिबा हतीमे कअबा में नफ़्ल पढ़ रही थीं कि लोगों का हुजूम आ गया और साथ वाले सब जुदा हो गए, वालिदा साहिबा बहुत घबरा गई और खयाल किया कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया था कि मैं आते जाते तुम्हारे साथ हूँ अब कौन सा वक़्त आएगा जिसमें मदद फ़रमाएंगे ? लोगों का हुजूम इस क़दर था कि रास्ता मिलना दुश्वार था कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा, इरादा किया कि सलाम करें कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुछ अरबी ज़बान में फ़रमाया, इस क़दर हुजूम के बावजूद मुझे रास्ता मिल गया और वालिदा साहिबा आसानी के साथ वहाँ से चली आई और जब हरम शरीफ़ के दरवाज़ा के बाहर आई तो वालिद साहिब मिल गए और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ाइब हो गए। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 166)

वालिदा साहिबा जब हज से वापस बरैली शरीफ़ आई और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सारा वाक़िआ बयान किया तो आप ख़ामोश सुनते रहे।

(हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 166)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नाइबे ग़ौसे आज़म और क़ुतबुल इरशाद थे और जो क़ुतुब होता है अल्लाह तआला की अता से जब और जहाँ चाहता है आता है और जाता है।

तुम्हीं फैला रहे हो इल्मे हक़ इकनाफे आलम में
इमामे अहले सुन्नत नाइबे ग़ौसुल वरा तुम हो

बादे विसाल की करामत

आला हज़रत ने ख़्वाब में आकर तसल्ली दी : जनाब मुहम्मद हुसैन रज़वी साहब का बयान है कि मैं इतना सख़्त बीमार हुआ कि परेशान हो गया, मैं अपने पीरो मुर्शिद आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर हुआ, रो रो कर दुआ मांगी कि हुज़ूर एक लड़की सवा महीने की है, बाक़ी सब बच्चे भी छोटे हैं, हुज़ूर मेरा घर तबाह हो जाएगा दुआ फ़रमा दीजिये, हुज़ूर अपने हयात में मुझ से फ़रमाया करते थे पीरो मुर्शिद हश्र में, क़ब्र में हर जगह मदद करता है। हुज़ूर इस वक़्त से ज़्यादा कौन सा वक़्त होगा ? मेरे लिये दुआ फ़रमाइये और इसी हालत में बहुत रोया कि उन्हीं दिनों में मेरी मंझली लड़की ने आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़्वाब में देखा कि आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि तेरे वालिद इस क़दर ना उम्मीद हो गए हैं, उन से कह दो कि बहुत जल्द आराम हो जाएगा, चुनाँचे चन्द दिन ही गुज़रे थे कि बीमारी जाती रही और शिफ़ा नसीब हो गई। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 166)

हज़रात ! इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मज़ारे अक़दस व अनवर बीमारों मरीज़ों के लिये शिफ़ा ख़ाना है और जो शख़्स सिद्क़ दिल और सच्ची निय्यत से आक़ाए नेअमत मुर्शिदे

शरीअत व तरीक़त मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर हो कर दुआ मांगता है तो अल्लाह तआला उस को यक़ीनन शिफ़ा नसीब फ़रमाता है और उस की हर दुआ कुबूल फ़रमाता है।

भिकारी तेरे दर की भीक की झोली हैं फैलाए
भिकारी की भरो झोली गदा का आसरा तुम हो
गुलामों को बना दे रहे शनास मन्ज़िले इरफ़ां
कि उस मन्ज़िल के अच्छे राहबर अहमद रज़ा तुम हो

आला हज़रत के मलफ़ूज़ात

हदीस ज़ईफ़ है मगर अल्लाह तआला से उम्मीदे क़वी है :

(1) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब दूसरी मरतबा हज के लिये गए, मक्का मुअज़्ज़मा में आप को बुखार था, मुहर्रम शरीफ़ के आख़री दिनों में तबीअत ठीक हुई तो आप ने गुस्ल फ़रमा कर हम्माम से बाहर आकर देखा कि घटा छा गई है, हरम शरीफ़ तक पहुँचते बारिश शुरू हो गई, मुझे हदीस शरीफ़ याद आई कि जो बारिश में तवाफ़ करे वह रहमते इलाही में तेरता है, उसी वक़्त हजरे असवद का बोसा ले कर बारिश ही में काबा का तवाफ़ किया। बुख़ार सर्दी की वजह से फिर लौट आया। मौलाना सय्यद इस्माईल रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने बुख़ार देख कर फ़रमाया कि एक ज़ईफ़ हदीस के लिये आप ने अपनी जान को तकलीफ़ दी और बे एहतियाती फ़रमाई।

हज़रात ! आशिक़े रसूल आक़ाए नेअमत हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो जवाब दिया वह आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल है।

आप ने फ़रमाया हदीस ज़ईफ़ है मगर अल्लाह तआला से उम्मीदे क़वी है।

(अल मलफ़ूज, जि. 2, स. 25)

हज़रात ! बहुत सी हदीसें जो अपनी सन्दों की वजह से मुहद्देसीन के नज़दीक ज़ईफ़ हैं मगर साहिबे रूहानियत औलियाए किराम के नज़दीक कश्फ़ो मुशाहदा के बाइस क़वी हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब मुनीरुल ऐन फ़ी तक़बीलिल इबहामैन में इस का तफ़सीली ज़िक्र फ़रमाया।

फ़ज़ाइले आमाल में हदीस ज़ईफ़ पर अमल बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं :

इमाम शैख़ुल इस्लाम अबू ज़करिया रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने किताबुल अज़कार अल मुन्तख़ब मिन कलामे सय्यिदुल अबरार में फ़रमाते हैं :

मुहद्देसीन व फ़ुक़हा वग़ैरहुम उलमा ने फ़रमाया कि फ़ज़ाइल और नेक बात की रग़बत और बुरी बात से ख़ौफ़ दिलाने में हदीसे ज़ईफ़ पर अमल जाइज़ व मुस्तहब है जब कि मौज़ूअ न हो।

(2) अल्लामा इब्राहीम हल्बी ग़ुनयतुल मुस्तमली फ़ी शरह मुनयतुल मुसल्ली में फ़रमाते हैं :

ग़ुस्ल करने के बाद बदन को रूमाल से पोछना मुस्तहब है कि इमाम तिर्मिज़ी ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वुज़ू के बाद रूमाल से आज़ाए मुबारक साफ़ फ़रमाते। यह हदीस ज़ईफ़ है मगर फ़ज़ाइल में हदीसे ज़ईफ़ पर अमल जाइज़ है।

(3) हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मौज़ूआते कबीर में बयान फ़रमाते हैं :

फ़ज़ाइले आमाल में हदीसे ज़ईफ़ पर बिल इत्तिफ़ाक़ अमल किया जाता है, इसी लिये हमारे अइम्मए किराम ने फ़रमाया कि वुज़ू में गरदन का मसह मुस्तहब या सुन्नत है।

इसी तरह की बातें इमाम जलालुद्दीन सयूती ने तुलूइस्सरयावे इज़्हारे अरकाने खुफ़िया में और इमाम इब्ने अल हुमाम ने अल मुकतदुन नदीद फ़क़ी तहक़ीक़ कलिमतुत्तौहीद में और सय्यदी अब्दुल ग़नी नाबलसी ने हदीक़ा नदिया शरह तरीक़ा मुहम्मदिया में और इमामे फ़िक़हुन्नफ़्स मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ ने फ़तहुल क़दीर में लिखी हैं।

(मुनीरुल ऐन फ़ी हुक्मे तक़बीलिल इबहामैन, स. 52)

हज़रात ! महबूबे ख़ुदा मुख़्तारे दो आलम सय्यिदे आलम रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये डूबे हुए सूरज को पलटाया, निकाला हत्ता की अस्र का वक़्त हो गया और मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े अस्र अदा फ़रमाई।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सूरज उलटे पांव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नज्दी देख ले कुदरत रसूलुल्लाह की

हज़रात ! वहाबी, देवबन्दी इस हदीस शरीफ़ को ज़ईफ़ हदीस होने की वजह से उस की फ़ज़ीलत से इनकार करते हैं और इसी तरह कुछ सुन्नी कहलाने वाले वहाबियों , देवबन्दियों से घेल मेल रखने वाले भी इस हदीस शरीफ़ की फ़ज़ीलत के मुनकिर नज़र आते हैं।

इमाम तहावी व इमाम क़ाज़ी अयाज़ व इमाम मुग़लताई व इमाम क़ुतुबे खीज़री व इमाम हाफ़िज़ अस्क़लानी व इमाम हाफ़िज़ सियूती वग़ैरहुम ने हसन व सहीह कहा।

(मुनीरुल ऐन फ़ी हुक्मे तक़बीलुल इबहामैन, स. 149)

ऐ ईमान वालो ! एक ज़ईफ़ हदीस में आया है कि बुध के दिन नाखुन कतरवाना बर्स यानी कोढ़ पैदा करता है, एक बुज़ुर्ग आलिम, (अल्लामा अमीर इब्ने अलहाज मक्की साहब) ने ज़ईफ़ हदीस का ख़याल करके बुध को नाखुन कतरवा लिये तो उन को बर्स यानी कोढ़ का मर्ज़ हो गया, रात को सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई, सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम ने न सुना था कि हम ने बुध के दिन नाखुन काटने से मना फ़रमाया है। उस बुज़ुर्ग ने अर्ज़

नियत के साथ मशगूल मुजाहदा हो तो इमदादे इलाही खुद कार फ़रमा होती है। अर्ज़ किया गया कि दुनियवी ज़राए मआश और दीनी ख़िदमात सबको छोड़ना पड़ेगा, फ़रमाया : इस के लिये यही ख़िदमात मुजाहदात हैं बल्कि अगर निय्यते सालेह है तो उन मुजाहदों से आला है।

हज़रत इमाम अबू इस्हाक़ असफ़राईनी जब उन्हें बद मज़हबों की गुमराही की ख़बर हुई तो उन उलमा के पास तशरीफ़ ले गए जो दुनिया छोड़ कर पहाड़ों में मुजाहदा कर रहे थे, उन से फ़रमाया ऐ सूखी घास खाने वालो ! तुम यहाँ हो और उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़ितनों में है। तो उन उलमा ने जवाब दिया कि इमाम यह आप ही का काम है, हम से हो नहीं सकता। इमाम वहाँ से वापस आए और बद मज़हबों के रद में दरया बहा दिये

(अल मलफ़ूज़, जि. 1, स. 8)

इमाम इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने लिखा है कि एक आलिम साहब की वफ़ात हो गई, उन को किसी ने ख़्वाब में देखा, पूछा आप के साथ किया मुआमला हुआ ? उन आलिम साहब ने जवाब दिया कि मुझ को जन्नत अता की गई न इल्म के सबब बल्कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ इस निस्बत के सबब जो एक कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक़्त कुत्ता भौंक भौंक कर बकरियों और भेड़ियों को भेड़िये से होशियार करता रहता है। मानें, न मानें यह उन का काम। फ़रमाया कि भौंके जाओ बस इस क़दर निस्बत काफ़ी है। लाख रियाज़तें, लाख मुजाहिदे इस निस्बत पर कुरबान जिस को यह निस्बत हासिल हो गई उस को किसी मुजाहिदा की ज़रूरत नहीं।

(अल मलफ़ूज़, जि. 3, स. 38) (अल मलफ़ूज़, स. जि. 3, स. 38)

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गोया बताना और समझाना चाहते हैं कि इस ज़माने में सब से बड़ा मुजाहदा दीन की ख़िदमत करना है और मोमिनों के ईमान की हिफ़ाज़त करना है। हमारा काम है ईमान के चोरों, डाकुओं को देख कर भौंकते रहें और उम्मत को जगाते रहें।

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वाले जागते रहियो चोरों की रखवाली है

हज़रात ! कहा जाता है कि (1) बग़ैर पीर के फ़लाहो कामयाबी नहीं और (2) जिस का कोई पीर नहीं उस का पीर शैतान है।

हाँ औलियाए किराम के इरशाद से दोनों बातें साबित हैं। तफ़सीली मालूमात के लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफ़ फ़तावा अफ़रीक़ा का मुतालआ ज़रूरी है। (मुलख़्ख़सन, इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 107)

तालिब और मुरीद होने में फ़र्क़ है : तालिब होने में सिर्फ़ तलबे फ़ैज़ है और बैअत यानी मुरीद होने का मअ़ना पूरे तौर से बिकना।

पीर के लिये चार शर्तों का होना ज़रूरी है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

(1) सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमान हो (देवबन्दी, वहाबी, राफ़ज़ी वग़ैरह बद मज़हब न हो)।

(2) पीर के लिये कम से कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बग़ैर किसी की मदद के अपने ज़रूरियात के मसाइल किताब से ख़ुद निकाल सके।

(3) उस का सिलसिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुनक़तअ़ न हो।

(4) फ़ासिक़े मोअ़लिन न हो। (अल मलफ़ूज़, जि. 2, स. 41, सवानेह आला हज़रत, स. 337)

हज़रात ! यह चारों शर्तें उस शख़्स में होना लाज़िम हैं जिस को पीरो मुर्शिद बनाया जाए फिर इसी सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि लोग बैअत होना, मुरीद होना एक रस्म समझ कर हो जाते हैं, हक़ीक़त में बैअत का मअ़ना नहीं जानते।

आला हज़रत सच्चे मुरीद की पहचान बताते हैं

बैअत उसे कहते हैं कि हज़रत यहया मुनीरी अलैहिर्रहमा के एक मुरीद दरया में डूब रहे थे, हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और फ़रमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल दूँ उन के मुरीद ने अर्ज़ की यह हाथ हज़रत यहया मुनीरी के हाथ में दे चुका हूँ, अब दूसरे के हाथ में न दूँगा, हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ग़ाइब हो गए और हज़रत यहया मुनीरी ज़ाहिर हुए और उन को निकाल लिया। (अल मलफ़ूज़, जि. 2, स. 41, सवानेह आला हज़रत, स. 337)

फ़ना फ़िश्शैख़ का मरतबा किस तरह हासिल होता है ?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुरीद को चाहिये कि यह ख़याल रखे कि मेरा शैख़ मेरे सामने है और अपने क़ल्ब को पीर व मुर्शिद के क़ल्ब के नीचे तसव्वुर करके इस तरह समझे कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़्यूज़ो अनवार क़ल्बे शैख़ पर फ़ाइज़ होते हैं और उस से छलक कर मेरे दिल में आ रहे हैं। फिर कुछ अर्सा के बाद यह हालत हो जाएगी कि हर जगह शैख़ की सूरत साफ़ नज़र आएगी और फिर हर हाल में अपने पीर व मुर्शिद को अपने साथ पाओगे। (मुलख़्ख़सन, अल मलफ़ूज़, जि. 2, स. 46)

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद पर यक़ीन

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादे मुबारक और तालीम फ़रमाई हुई दुआओं पर किस क़दर यक़ीन और इत्मीनान हासिल था।

एक मरतबा बरैली शरीफ़ में मर्ज़े ताऊन शिद्दत के साथ फैला। उन दिनों आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शिद्दत से बुख़ार हुआ। और कान के पीछे गलटियाँ निकल

आई। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छोटे भाई एक तबीब को लाए, तबीब ने यह कैफ़ियत देख कर बार बार कहा कि यह ताऊन का मर्ज़ है। आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, मैं ख़ूब जानता हूँ कि यह बात गलत है न मुझे ताऊन है न इन्शाअल्लाह कभी ताऊन होगा। इस लिये कि मैं ने ताऊन ज़दा को देख कर बारहा वह दुआ पढ़ ली है जिसे हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बला रसीदा को देख कर यह दुआ पढ़ लेगा, उस बला से महफ़ूज़ रहेगा, वह दुआ यह है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا ٥

जिन, जिन अमराज़ के मरीज़ों और जिन, जिन बलाओं के मुब्तलाओं को देख कर मैं ने उस दुआ को पढ़ा बिहम्दिही तआला आज तक उन सब से महफ़ूज़ व मामूनन और बिऔनिही तआला हमेशा महफ़ूज़ रहूँगा।

चुनाँचे आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद पर यक़ीने कामिल की बदौलत उस मरज़ से महफ़ूज़ रहे और शिफ़ायाब हो गए। (मुलख़्ख़सन, अल मलफ़ूज़, जि. 1, स. 15)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का र इरशाद हक़ है, ना मुमकिन है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान ग़लत हो जाए और पूरा न हो। हर मोमिन व मुसलमान को महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हर इरशाद व फ़रमान पर यक़ीने कामिल रखना चाहिये और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही रसल्लम की बताई हुई दुआओं को अमल में लाना चाहिये।

नज़राना कुबूल करना सुन्नत है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक साहब मुरीद हुए और नज़राना पेश किया। फरमाया इस की क्यों तकलीफ़ की ? उन्होंने अर्ज़ किया, हुज़ूर ! मेरी ख़ुशी इसी में है कि हुज़ूर इसे कुबूल फ़रमा लें।

अलहम्दु लिल्लाह ! कि हुज़ूर ने हदिया मुख़्तसर कुबूल फ़रमा लिया और इरशाद फ़रमाया कि मैं पहले नज़र नहीं लिया करता था मगर जब से यह हदीस शरीफ़ मेरी नज़र से गुज़री कि कोई शख़्स दे तो ले ले वर्ना एक दिन ऐसा आएगा कि मांगेगा और न मिलेगा बाद में। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स 84)

पांव चूमने पर नाराज़गी

एक साहब ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पांव चूम लिये आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बहुत रन्ज हुआ और चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया। फ़रमाया इस से बेहतर था कि मेरे सीने में तलवार की नोक

पेवस्त कर के पीठ की तरफ़ निकाल लेते, मुझे सख़्त अज़ियत इस से हुई। ख़ूब याद रखो, अब कभी ऐसा न करना वर्ना नुक़सान उठाओगे। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 84)

अशरए मुहर्रम में सब्ज़, सुर्ख़, स्याह रंग का लिबास पहनना मना है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुहर्रम की पहली तारीख़ से दस मुहर्रम तक सब्ज़, सुर्ख़, स्याह लिबास पहनने से मना फ़रमाते।

(हयाते, आला हज़रत, जि. 3, स. 84)

मस्जिद का एहतिराम : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़र्शे मस्जिद पर ऐड़ी और अंगूठे के बल चला करते थे कि धमक पैदा न हो।

(हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 86)

मस्जिद में आकर फ़ौरन निय्यत बाँधना सुन्नत है

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अकसर लोगों को देखा गया है कि मस्जिद में आकर सुन्नतों की निय्यत उस वक़्त बाँधते हैं जब थोड़ी देर बैठ लेते हैं। हालां कि मस्जिद में आते ही बिला ताख़ीर निय्यत बाँधना चाहिये। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 86)

नमाज़ में चादर ओढ़ने का तरीक़ा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नमाज़ पढ़ने के वक़्त अगर चादर जिस्म पर है तो सर से ओढ़े शानों (कन्धों) से नहीं।

(हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 87)

दफ़्ए वसवास की तदबीर

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सो कर उठते ही तीन मरतबा कलमए तैय्यिबा पढ़ने से तमाम वसवसों से बचा रहेगा और दिन भर उस की बरकत उस के ख़यालात पर हावी रहेगी। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 88)

हज़रात! हदीस शरीफ़ में आया है कि रात को दो मरतबा कलमा शरीफ़ पढ़ने से रात भर हर बला और मुसीबत से महफ़ूज़ रहे।

अमामा, मुसल्ला और पायजामा सर के नीचे नहीं रखना चाहिये

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सर के नीचे अमामा और मुसल्ला और पायजामा नहीं रखना चाहिये और अमामा के शिमला से नाक, मुंह साफ़ नहीं करना चाहिये। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 90)

मज़ार पर हाज़री के आदाब : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि

(1) साहिबे क़ब्र की पाएंती से मवाजह में बा अदब हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ करे लेकिन सलाम के वक़्त बक़दरे रुकूअ़ न झुक कि ग़ैरे ख़ुदा के लिये इतना ख़मीदा होना ममनूअ़ है।

(2) मज़ार शरीफ़ (क़ब्र शरीफ़) से चार हाथ के फ़ासले पर खड़ा हो।

(3) मज़ार को पुश्त न होने पाए।

(4) हुजरए ख़ास के अन्दर बे बाका ना किसी से कलाम न हो, कम से कम इतना पास व लिहाज़ रखे जितना हयाते ज़ाहिरी में रखता था कि बादे विसाल कहीं ज़्यादा इदराक हो जाता है। (हयाते आला हज़रत, जि. 3, स. 92)

आला हज़रत ग़ैरों की नज़र में

मौलाना कौसर नियाज़ी देवबन्दी साबिक़ वज़ीर मज़हबी उमूर हुकूमते पाकिस्तान मस्अला तकफ़ीर पर इज़हारे ख़याल करते हुए कहते हैं।

मेरे उस्ताज़ शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद इदरीस कांधलवी देवबन्दी कभी कभी आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया करते कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ की बख़्शिश तो उन्हीं फ़तवों के सबब हो जाएगी। अल्लाह तआला फ़रमाएगा अहमद रज़ा ख़ाँ तुम्हें हमारे रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) से इतनी महब्बत थी कि इतने बड़े बड़े आलिमों को भी तुम ने मुआफ़ नहीं किया। तुम ने समझा कि उन्होंने तौहीने रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) की है तो उन पर भी कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया। जाओ उसी एक अमल पर हम ने तुम्हारी बख़्शिश कर दी।

और मौलाना कौसर निाज़ी देवबन्दी फिर लिखते हैं क़मो बेश इसी तरह का एक वाक़िआ मुफ़्तिये आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ देवबन्दी से मैंने सुना, वह फ़रमाते हैं :

जब मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब की वफ़ात हुई तो हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी को किसी ने आकर इत्तिलाअ़ दी। मौलाना थानवी ने बे इख़्तियार दुआ के लिये हाथ उठा दिये। जब दुआ कर चुके तो हाज़िरीने मजलिस में से किसी ने पूछा, वह यानी आला हज़रत तो उम्र भर आप को काफ़िर कहते रहे और आप उन के लिये दुआए मग़फ़िरत कर रहे हैं तो मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब ने फ़रमाया (और यही बात समझने की है) कि मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ ने हम पर कुफ़्र के फ़तवे इस लिये लगाए हैं कि उन्हें यक़ीन था कि हम ने तौहीने रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की है अगर वह यक़ीन रखते हुए भी हम पर कुफ़्र का फ़तवा न लगाते तो ख़ुद काफ़िर हो जाते।

(रोज़नामा जंग लाहौर, 1/3 अक्तूबर 1990 ई.)

मौलाना अशरफ़ अली थानवी

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी फ़रमाया करते थे कि अगर मुझ को मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरैलवी के पीछे नमाज़ पढ़ने का मौक़ा मिलता तो मैं पढ़ लेता।

(उसवए अकाबिर, स. 18, बहवाला इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र में ,स. 108)

हज़रते वाला अशरफ़ अली थानवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब बरैलवी को बुरा भला कहने वालों के जवाब में देर तक हिमायत फ़रमाया करते और शद्दो मद के साथ फ़रमाया करते कि उन (मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरैलवी) की मुख़ालिफ़त का सबब वाक़ई हुब्बे रसूल ही हो और हम लोगों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ समझते हों। (अशरफ़ुस्सवानेह, जि. 1, स. 129)

मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में (मौलाना) अहमद रज़ा ख़ाँ साहब का बे हद एहतिराम है वह हमें क़ाफ़िर कहता है लेकिन इश्क़े रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की बिना पर कहता है, किसी और ग़रज़ से तो नहीं कहता।

(ब हवाला इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्मो दानिश की नज़र में, 108)

मौलाना मुर्तज़ा हसन दर भंगी

मौलाना मुरतज़ा हसन दर भंगी नाज़िमे तालीमात देवबन्द लिखते हैं : अगर मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब के नज़दीक बाज़ उलमा देवबन्द ऐसे ही (गुस्ताख़ व बे अदब) थे जैसा कि उन्होंने समझा तो (मौलाना अहमद रज़ा) ख़ाँ साहब पर इन उलमाए देवबन्द की तकफ़ीर फ़र्ज़ थी, अगर वह उन को काफ़िर न कहते तो ख़ुद काफ़िर हो जाते।

(अशद्दुल अज़ाब, स. 12)

मौलाना कौसर नियाज़ी देवबन्दी

मौलाना कौसर नियाज़ी देवबन्दी साबिक़ वज़ीर मज़हबी उमूर हुकूमते पाकिस्तान लिखते हैं : बरैली में एक शख़्स पैदा हुआ जो नअ़त गोई का इमाम था और अहमद रज़ा ख़ाँ बरैलवी जिस का नाम था, उन से मुमकिन है बाज़ पहलूओं में लोगों को इख़्तिलाफ़ हो, अक़ीदों में इख़्तिलाफ़ हो, लेकिन इस में कोई शक नहीं कि इश्क़े रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन की नअ़तों में कूट कूट कर भरा है। (मग़ाने नअ़त,, स. 29, कराची 1975 ब हवाला इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्मो दानिश की नज़र में, स. 110)

फिर मौलवी कौसर नियाज़ी देवबन्दी लिखते हैं : उन (मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरैलवी) की इम्तियाज़ी शान उन का इश्क़े रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) है जिस में वह सर तापा डुबे हुए हैं। चुनाँचे उन का नअ़तिया कलाम भी सूज़ो गदाज़ की कैफ़ियतों का आईना दार है और मज़हबी तक़रीबात में बड़े ज़ौक़ व शौक़ से और एहतिराम से पढ़ा जाता है। (अन्दाज़े बयान, स. 89 ब हवाला आशिक़े रसूल, स. 9, व हवाला इमाम अहमद रज़ा अरबाबे इल्मो दानिश की नज़र में , स. 111)

हज़रात ! आप हज़रात ने देख लिया कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी और दूसरे वहाबी, देवबन्दी मौलवी हमारे आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आशिक़ेरसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) कह रहे हैं और वहाबियों और देवबन्दियों के ब ड़े मौलाना मौलवी अशरफ़ अली थानवी साहब तो यहाँ तक कहते नज़र आते हैं कि अगर मौक़ा मिलता तो मैं उन के पीछे नमाज़ अदा करता। तो गोया देवबन्दी हज़रात भी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुसलमान और मोमिन समझते हैं जभी तो आला हज़रत के पीछे नमाज़ पढ़ने की ख़्वाहिश और तमन्ना करते नज़र आते हैं।

اَلْفَضْلُ مَا شَهِدَتْ بِهِ الْاَعْدَاءُ

यानी फ़ज़्ल व हक़ वही है कि दुश्मन भी गवाही दे।

आला हज़रत की आख़री मजलिस

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सख़्त अलालत (बीमार) के ज़माने में नक़ाहत व कमज़ोरी के बावजूद भी आप की हर मजलिस, वअ़ज़ व नसीहत का ज़ख़ीरा हुआ करती। अलालत के ज़माने में आप कसरत से अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र फ़रमाया करते और ख़ुसूसियत के साथ अपने और तमाम मुसलमानों के लिये हुसने ख़ातिमा की दुआ करते। आप की ख़शियत और गिरया व ज़ारी की यह हालत थी कि अकसर अहादीस बयान फ़रमाते तो ख़ुद आप की और हाज़िरीने मजलिस की रोते रोते हिचकियाँ बन्ध जातीं। अकसर फ़रमाया करते कि जिस का ईमान पर ख़ातिमा हो गया उस ने सब कुछ पा लिया। कभी फ़रमाते कि अगर अल्लाह तआला बख़्श दे तो यह उस का फ़ज़्ल है और न बख़्शे तो उस का अद्ल है। एक दिन लोगों को काशानए अक़दस (अपने मकान) पर तलब फ़रमाया और दीन व ईमान को बचाने के सिलसिले में उन को सख़्त ताकीद और नसीहत फ़रमाई, वअ़ज़ व नसीहत की उस आख़री मजलिस में आप ने जो ईमान अफ़रोज़ तक़रीर फ़रमाई उस का ख़ुलासा नक़्ल किया जाता है।

प्यारे भाइयो ! मुझे मालूम नहीं कि मैं कितने दिन तुम्हारे अन्दर ठहरूँगा , तीन ही वक़्त होते हैं बचपन, जवानी, बुढ़ापा, बचपन गया, जवानी आई, जवानी गई, बुढापा आया अब कौन सा चौथा वक़्त आने वाला है जिस का इन्तिज़ार किया जाए। एक मौत ही बाक़ी है। अल्लाह तआला क़ादिर है कि ऐसी हज़ार मजलिसें अता फ़रमाए और आप सब लोग हों और मैं आप लोगों को सुनाता रहूँ मगर बज़ाहिर अब उस की उम्मीद नहीं।

ऐ लोगो ! तुम प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की भोली भेड़ें हो और भेड़िये तुम्हारे चारों तरफ़ हैं, वह चाहते हैं कि तुम्हें बहकाएं और फ़ितना में डाल दें, तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जाएं, उन सब से बचो और दूर भागो, देवबन्दी, राफ़ज़ी,

नेचरी, क़ादयानी, चकड़ालवी यह सब फ़िर्के भेड़िये हैं, तुम्हारे ईमान की ताक में हैं, इन के हमलों से ईमान को बचाओ।

हुज़ूरे अक़दस सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जला लुहू के नूर हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सहाबए किराम रौशन हुए, सहाबए किराम से ताबेईन रौशन हुए, उन से अइम्मा मुजतहेदीन रौशन हुए, उन से हम रौशन हुए, अब हम तुम से कहते हैं यह नूर हम से ले लो हमें इस की ज़रूरत है कि तुम हम से रौशन हो, वह नूर यह है कि अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सच्ची महब्बत, उन की ताज़ीम और उन के दोस्तों की ख़िदमत और उनकी तकरीम और उन के दुश्मनों की सच्ची अदावत, जिन से अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों न हो फ़ौरन उस से जुदा हो जाओ। जिस को बारगाहे रिसालत में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो फिर वह तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों न हो अपने अन्दर से उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो। मैं पौने चौदह बरस की उम्र से ही बताता रहा और इस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ, अल्लाह तआला ज़रूर अपने दीन की हिमायत के लिये किसी बन्दे को खड़ा कर देगा। मगर नहीं मालूम मेरे बाद जो आए कैसा हो और तुम्हें क्या बताए इस लिये इन बातों को ख़ूब सुन लो हुज्जतुल्लाह क़ायम हो चुकी, अब मैं क़ब्र से उठ कर तुम्हारे पास बताने न आऊँगा, जिस ने इसे सुना और माना क़ियामत के दिन उस के लिये नूर व नजात है और जिस ने न माना उस के लिये ज़ुलमत व हलाकत है। (मुलख़्ख़स, वसाया शरीफ, व हवाला सवानेह आला हज़रत, स. 378)

आला हज़रत की वसियत कि मेरी क़ब्र को कुशादा रखना

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किस शान के आशिक़े रसूल थे कि आप ने विसाल शरीफ़ से पहले दफ़न के बारे में यह वसियत फ़रमाई कि मेरी क़ब्र को इतना कुशादा रखना कि जब मेरे मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरी क़ब्र में तशरीफ़ लाएं तो मैं क़ब्र में अपने प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व अदब के लिये खड़ा हो सकूँ। (ज़िक्रे रज़ा, स. 43)

हज़रात! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गोया दुनिया वालों को यह बताना चाहते हैं कि जब दुनिया में महफ़िले मीलाद वग़ैरह में हम अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व ताज़ीम में खड़े हो कर सलातो सलाम पढ़ते हैं तो जब क़ब्र में प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा होंगे तो मैं किस तरह क़ब्र में लेटा रहूँगा इस लिये मेरी क़ब्र को इस क़दर गेहरी और कुशादा रखना कि हम वहाँ भी खड़े हो कर पढ़ें।

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों के सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत का विसाल

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 25 सफ़र सन् 1340 हि. मुताबिक 28 अक्तूबर सन् 1921 ई को जुमा मुबारका के दिन 2 बजकर 38 मिनट पर ऐन अज़ाने जुमा में इधर हय्या अलल फ़लाह की पुकार सुनी उधर रूह पुर फ़ुतूह ने दाई इलल्लाह को लब्बैक कहा।

हज़रत मौलाना हस्नैन रज़ा ख़ां साहब जो विसाल के वक़्त आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में मौजूद थे वह तहरीर फ़रमाते हैं कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वसियत नामा तहरीर कराया फिर उस पर ख़ुद अमल कराया।

विसाल शरीफ़ के तमाम काम घड़ी देख कर ठीक वक़्त पर इरशाद होते रहे जब दो बजने में चार मिनट बाकी थे तो इरशाद फ़रमाया कि तसावीर हटा दो (हाज़रीन के दिल में ख़याल गुज़रा कि) यहाँ तसावीर का क्या काम, यह ख़याल आना था कि ख़ुद इरशाद फ़रमाया : यही कारड, लिफ़ाफ़ा रुपया, पैसा फिर थोड़ी देर के बाद हज़रत मौलाना हामिद रज़ा साहब से इरशाद फ़रमाया वुज़ू करके कुरआन लाओ और हज़रत मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा से फिर इरशाद फ़रमाया सूरह यासीन और सूरह रअद शरीफ़ की तिलावत करो।

अब आप की उम्र शरीफ़ के चन्द मिनट रह गए हैं कुछ लोग उस वक़्त हाज़िरे बारगाह हुए, आप ने सब के सलाम का जवाब दिया और सय्यद महमूद अली साहब ने दोनों हाथ बढ़ा कर मुसाफ़हा फ़रमाया और हाल दरयाफ्त किया गया मगर आप उस वक़्त हाकिमे मुतलक़, महबूबे हक़ीक़ी जल्ला मजदुहू की तरफ़ मुतवज्जा थे, कुछ न इरशाद फ़रमाया, सफ़र की दुआएं जिन का चलते वक़्त पढ़ना मस्नून हैं, तमाम व कमाल बल्कि मामूल शरीफ़ से ज़ाइद पढ़ें फिर कलमए तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) पूरा पढ़ा, फिर उस के बाद ताक़त न रही और सीना पर दम आया इधर होंटों की हरकत व ज़िक्र पास, अनफ़ास का ख़त्म होना था कि चेहरए मुबारक पर एक लमआ नूर का चमका जिसमें जुम्बिश थी जिस तरह आईना में लुमआने ख़ुरशीद जुम्बिश करता है। इस के गाइब होते ही वह जाने नूर जिस्मे अतहरे हुज़ूर से परवाज़ कर गई।

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद इसी ज़माने में आप ने इरशाद फ़रमाया था

कि जिन्हें (सरकार मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) एक झलक दिखा देते हैं वह शौक़े दीदार में ऐसे जाते हैं कि जाना मालूम भी नहीं होता।

(मुलख़्ख़सन सवानेह आला हज़रत, स. 381, 382)

और आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नअ़त शरीफ़ में यूँ बयान फ़रमाते हैं

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुसलमान गया

आला हज़रत बारगाहे रसूल में

मशहूर आशिक़े रज़ा, वलिये कामिल हज़रत मौलाना शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी मक़बूल तस्नीफ़ सवानेह आला हज़रत में तहरीर फ़रमाते हैं कि :

इधर 25 सफ़र 1340 हि. जुमा के दिन 2 बजकर 38 मिनट पर बरैली शरीफ़ में आला हज़रत क़िब्ला दुनियाए फ़ानी से रवाना हो रहे हैं और उधर बैतुल मुक़द्दस से एक शामी बुज़ुर्ग ठीक 25 सफ़र 1340 हि. को ख़्वाब में क्या देख रहे हैं कि हुज़ूरे अक़दस मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं, हज़राते सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हाज़िरे दरबार हैं लेकिन मजलिस पर सुकूत तारी है। ऐसा मालूम हो रहा है कि किसी आने वाले का इन्तिज़ार है, वह शामी बुज़ुर्ग बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं :

فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّیْ

मेरे मां, बाप हुज़ूर पर कुरबान ! किस का इन्तिज़ार है। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अहमद रज़ा का इन्तिज़ार है, उन्होंने अर्ज़ की अहमद रज़ा कौन हैं ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, हिन्दूस्तान के बड़े ही जलीलुल क़द्र आलिम हैं और अब तक बक़ैदे हयात हैं फिर तो वह शौक़े मुलाक़ात में हिन्दूस्तान की तरफ़ चल पड़े। जब बरैली पहुँचे तो उन्हें बताया गया कि आप जिस आशिक़े रसूल की मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए हैं वह 25 सफ़र 1340 हि. को इस दुनिया से रवाना हो चुका है और वही 25 सफ़र उन की तारीख़े विसाल थी मैं ने यह तवील सफ़र सिर्फ़ उन की मुलाक़ात के लिये ही किया लेकिन अफ़सोस कि मुलाक़ात न हो सकी।

इस से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मक़बूलियत बारगाहे रसूल में मालूम होती है क्यूँ न हो आशिक़े रसूल यूँ ही नवाज़े जाते हैं।

(सवानेह आला हज़रत, स. 385, 386)

क्यूँ रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अबक़रीए अस्र और नाबिग़ाए रोज़गार शख़्सियत थे

हज़रत साहबज़ादे सय्यद ख़ुरशीद अहमद गीलानी, पाकिस्तान लिखते हैं कि आज कल अबक़री और नाबिग़ा का लफ़्ज़ बहुत सस्ता हो गया है और हर तीसरा चौथा पढ़ा लिखा आदमी ख़ुद को अबक़री और नाबिग़ा कहलवाने पर मुसिर है और अल्लामा होना तो हर एक के बाएं हाथ का खेल बन गया है जिस की बाज़ार में ज़रा सी बिकरी हो वह अबक़री बन जाता है और जिस क मामूली सी कुव्वते नातिक़ा (बोलने, तक़रीर करने की महारत) मिल जाए वह नाबिग़ा हो जाता है, हालां कि (1) सर मुन्डाने से कोई क़लन्दर और यूनान में पैदा होने से कोई सिकन्दर नहीं बन जाता

(2) आदाबे क़लन्दरी से हर शख़्स आगाह नहीं होता और शाने सिकन्दरी का हर फ़र्द हामिल नहीं होता।

इस लिये अबक़री और नाबिग़ा, सदी भर में दो चार ही होते हैं अगर उन की क़तारें लगनी शुरू हो जाएं तो हर ढेले के नीचे से अरसित्तू और अफ़लातून ही बर आमद होंगे। सूरते हाल अगर इस तरह हो तो किसान खेतों में गाजर मूली लगाने के बजाए सुक़रात और बुक़रात लगाना शुरू कर दें।

बिला शुबह आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अबक़रिये अस्र और नाबिग़ा रोज़गार शख़्सियत थे जिन की इल्मी तख़लीक़ात से इस्तिफ़ादा करने के लिये बज़ाते ख़ुद तख़लीक़ी ज़हन दरकार है। रिवायती ज़हन तो चार क़दम चल कर हांप जाता है, मेरी बात पर एतिबार न आए तो उन की तस्नीफ़ात की फ़ेहरिस्त मुलाहज़ा कर लीजिये, मतन तो दूर की बात है फ़क़त किताबों के नाम समझने के लिये अलमुन्जद जैसी लग़ुत की हमा वक़्त ज़रूरत लाहिक़ रहती है। मसलन इल्म लोगर सम, इल्मे तकसीर, इल्मे ज़ीजात, इल्मे.........तैक़ी, इल्मे तौक़ियत और ट्रैमने मेटरी पर उन की तख़लीक़ात पढ़ने और समझने वाले लोग इस ख़ित्ते में कितने होंगे ? शायद बड़ी आसानी के साथ उंगिलयों पर गिने जा सकेंगे। (इमाम अहमद रज़ा नम्बर जूलाई 1996)

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

आला हज़रत की बारगाह में मुतालआ हैरान है और ज़बान व क़लम क़ासिर

अल्लामा मौलाना मुहम्मद अहमद रज़वी मिस्बाही लिखते हैं : इमाम अहमद रज़ा की ज़िन्दगी को जिस क़दर गेहरी नज़र से देखा जाएगा इस तरह के आबदार मोतियों की जलवा रेज़ियाँ आम होती नज़र आएंगी, उन जलवों को कोई कहाँ तक

समेटे ? मुतालआ हैरान है और ज़बान व क़लम क़ासिर, मुख़्तसर यह कि इख़्लास और लिल्लाहियत ने उन के क़ल्ब व ज़हन को पूरी तरह मुअत्तर कर रखा था।

(इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 76)

किसी भी शख़्सियत को उस के मुआसिरीन ज़्यादा पहचान सकते हैं और उन लोगों का बयान ज़्यादा मोअ़तबर होगा जो इल्मो फ़न में ख़ुद बलन्द रुतबा हों और जिन्हें उस शख़्सियत से मुलाक़ात और उसे जांचने परखने का मौक़ा मिला हो।

इमाम अहमद रज़ा कुद्दिसा सिर्रहू ने सफ़रे हज में अकाबिर उलमाए हरमैन से मुलाक़ातें कीं, उन के साथ इल्मी मजलिसें भी रहतीं। उन्होंने इमाम अहमद रज़ा की बातें भी सुनीं, ज़बानी बहसें भी देखीं, रुश्हाते क़लम भी मुलाहज़ा फ़रमाए, किरदार व अमल, अफ़कार व ख़यालात का भी जाएज़ा लिया, उन सब के बाद इमाम अहमद रज़ा की मदह में उन्होंने जो इरशादात तहरीर किये इन्साफ़ की आँखें रौशन करने के लिये काफ़ी हैं।

वह हज़रात ऐसे ग़बी और कम इल्म न थे जो एक हिन्दी के इल्म व फ़ज़्ल से बिला वजह मुतास्सिर हो जाएं और मअ़रिफ़त व हक़ीक़त में उस के पायए बलन्द का तहरीरी एतिराफ़ करने लगें, उन का क़लम ऐसा बे एहतियात और बे लगाम न था कि तहक़ीक़ व तफ़्तीश के बग़ैर एक शख़्स के लिये मदाएह का दफ़्तर तैय्यार कर दे। हरम की सर ज़मीन पर तो दुनिया भर के उलमा व मशाइख़ पहुँचते रहते थे लेकिन वह अकाबिर किस से मुतास्सिर हुए ? और किस के इल्मो फ़ज़्ल का ख़ुतबा पढ़े, इस सिलसिले में एक बयान पर इक्तिफ़ा करता हूँ।

मदीना मुनव्वरा में उलमा ने इमाम अहमद रज़ा का जो एज़ाज़ो इकराम किया उस का ज़िक्र करते हुए शैख़े इकरामुल्लाह मुहाजिर मदनी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं।

मैं सालहा साल से मदीना मुनव्वरा में क़याम पज़ीर हूँ हिन्दूस्तान से हज़ार हा हज़ार इन्सान आते हैं जिन में उलमा, सुलहा, अतक़िया, सभी होते हैं लेकिन मेरी आँखों ने यही देखा कि वह शहर मुबारक की गलियों में फिरते रहते हैं और कोई तवज्जोह देने वाला नहीं होता

लेकिन आप के एज़ाज़ का यह हाल है कि अवाम तो अवाम बड़े बड़े उलमा और अरबाबे इल्मो फ़न अस्हाबे इज़्ज़ो अज़मत आप की तरफ़ चले आ रहे हैं और आप के इकराम व ताज़ीम में सबक़त करते हैं। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अता फ़रमाए और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (अल इजाज़तुल मतीना, स. 7)

फ़ाज़िले बरैलवी उलमाए हिजाज़ की नज़र में

मज़ीद तहक़ीक़ के लिये वह किताबें (यानी सवानेह आला हज़रत अज़ क़लम मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी) हयाते आला हज़रत अज़ क़लम मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी) भी देखी जाए जिन से इन शहादतों को जमा किया गया है।

मैं फिर कहूँगा कि यह एज़ाज व एतिराफ़ उन अकाबिर उलमा और जलीलुश्शान औलिया का है जिन का ज़ाहिर व बातिन शरीअत व तरीक़त की मीज़ान पर तुला हुआ था, जिन की विलायत व बुज़ुर्गी में न कल किसी को कलाम था और न आज हो सकता है।

(इमाम अहमद रज़ा और तसव्वुफ़, स. 121,122)

मुबल्लिगे इस्लाम हज़रत अल्लामा अब्दुल अलीम सिद्दीक़ी रज़वी मेरठी खलीफ़ए आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं :

तुम्हारी शान में जो कुछ कहूँ उस से सिवा तुम हो
क़सीमे जामे इरफ़ां ऐ शहे अहमद रज़ा तुम हो

जो मरकज़ है शरीअत का मदार, अहले तरीक़त का
जो महूर है हक़ीक़त का वह कुतुबुल औलिया तुम हो

यहाँ आकर मिलें नहरें शरीअत व तरीक़त की
है सीना मजमउल बहरैन ऐसे रहनुमा तुम हो

हरम वालों ने नामा तुम को अपना क़िब्ला व कअ़बा
जो क़िब्ला अहले क़िब्ला का है वह क़िब्ला नुमा तुम हो

अरब में जा के उन आँखों ने देखा जिस की सोलत को
अजम के वास्ते लारैब वह क़िब्ला नुमा तुम हो

अयां है शाने सिद्दीक़ी तुम्हारी शाने तक़वा से
कहूँ इतक़ा न क्यों कर जब कि ख़ैरुल अतक़िया तुम हो

ख़ुलूसे मुरतज़ा, ख़ुल्क़े हसन, अज़्मे हुसैनी में
अदीमुल मिस्ल यक्ताए ज़मन ऐ बा ख़ुदा तुम हो

तुम्हीं फैला रहे हो इल्मे हक़ इकनाफ़े आलम में
इमामे अहले सुन्नत नाइबे ग़ौसुल वरा तुम हो

अलीमे ख़स्ता इक अदना गदा है आस्ताने का
करम फ़रमाने वाले हाल पर उस के शहा तुम हो

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे कराँ के लिये

शजरए आलिया क़ादरिया बरकातिया रज़विया

रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन इला यौमिद्दीन

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह ! करम कीजिये खुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
करबलाएं रद शहीदे करबला के वास्ते

सय्यदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वास्ते
सिद्क़ सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब रीज़ हो काज़िम और रज़ा के वास्ते

बहरे मअरूफ़ो सरी मअरूफ़ दे वे ख़ुद सरी
जुन्दे हक़ में गिन जुनैद वा सफ़ा के वास्ते
बहरे शिवली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अब्दे वाहिद बे रिया के वास्ते

बुल फ़रह का सदक़ा कर ग़म को फ़रह दे हुस्नो सअद
बुल हसन और बू सईद सअद ज़ा के वास्ते
क़ादरी कर क़ादरी रख क़ादरियों में उठा
क़द्रे अब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते

नसराबी सालेह का सदक़ा सालेह व मन्सूर रख
दे हयाते दीं मोहिय्ये जां फ़ज़ा के वास्ते
तूरे इरफ़ां उलू व हम्द व हुसना व बहा
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते

बहरे इब्राहीम हम पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शहे ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते

दे मुहम्मद के लिये रोज़ी कर अहमद के लिये
ख़्वाने फ़ज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

दीनो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़ी इश्क़ इन्तिमा के वास्ते

हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिये
कर शहीदे इश्क़े हमज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उला के वास्ते

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़तदा के वास्ते

कर अता अहमद रज़ाए अहमदे मुरसल मुझे
मेरे मौला हज़रत अहमद रज़ा के वास्ते

सदक़ा इन अअ़्यां का दे छः ऐन इज़्ज़ो इल्मो अमल
अफ़्वो इरफ़ां आफ़ियत इस बे नवा के वास्ते

(3)

रबीउल अव्वल शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

हमारे हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

नूर हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَ عَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ
وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيِّ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ
خواجه غريب نواز الْاَجْمِيْرِيْ اَجْمَعِيْنَ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ○

तर्जमा : बे शक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।

(पारा 6, रुकूअ् 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! यह मुबारक मीहना रबीउन्नूर का, नूर वाला महीना है।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

बाग़े तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कलमा नूर का

तू है साया नूर का हर उज़्व टुकड़ा नूर का
साया का साया न होता है न साया नूर का

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का

दुरूद शरीफ़ :

दस मुफ़स्सिरीन के अक़वाल कि आयते नूर में, नूर से मुराद हुज़ूर हैं

हज़रात ! यह आयए मुबारका जो मैंने तिलावत करने की सआदत हासलि की है। इस में अल्लाह तआला ने साफ़ तोर पर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को नूर फ़रमाया है और जमहूर मुफ़स्सिरीन और अइम्मए किराम व मुहद्देसीने इज़ाम ने तसरीह फ़रमाई है कि नूर से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और किताबे मुबीन से मुराद कुरआने मजीद है।

(1) सहाबिये रसूल मुफ़स्सिरे कुरआन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं :

قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ يعنى مُحَمَّدًا

तर्जमा : बेशक आया तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। (तफ़सीरे इब्ने अब्बास, स. 72)

(2) इमामुल कबीर अल्लामा इमाम जअफ़र मुहम्मद बिन जरीर अत्तबरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ يعنى بِالنُّوْرِ مُحَمَّدًا

तर्जमा : तहक़ीक़ आया तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम (तफ़सीर इब्ने जरीर, तफ़सीर बेज़ावी, जि. 1, स. 418)

(3) अल्लामा अली बिन मुहम्मद ख़ाज़िन रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ يعنى مُحَمَّدًا

तर्जमा : तहक़ीक़ आया तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, जि. 1, स. 418)

(4) इमाम अल्लामा अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस आयए करीमा के तहत फ़रमाते हैं :

وَالنُّوْرُ مُحَمَّدٌ عَلَيْهِ السَّلَامُ

और नूर से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। (तफ़सीरे मदारिक, जि. 1, स. 417)

(5) इमाम अल्लामा फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस आयए करीमा के तहत फ़रमाते हैं :

اِنَّ الْمُرَادَ بِالنُّوْرِ مُحَمَّدٌ وَبِالْكِتٰبِ الْقُرْاٰنُ

तर्जमा : बे शक नूर से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और किताब से मुराद कुरआने मजीद है। (तफ़सीरे कबीर, जि. 3, स. 395)

(6) हज़रत अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं :

قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ هُوَ نُوْرُ النَّبِيِّ

तर्जमा : तहक़ीक़ कि आया तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से नूर वह नूर, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं। (तफ़सीरे जलालैन शरीफ़, स. 111)

(7) और इसी तरह अल्लामा महमूद आलूसी बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने रूहुल मआनी, जि. 6, स. 87 पर और।

(8) अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तफ़सीर रूहुल बयान शरीफ़, जि. 1, स. 548 पर।

(9) और इमाम अबू मुहम्मद बग़वी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तफ़सीर मुआलिमुत्तन्ज़ील, जि. 2, स. 23 पर।

(10) और इमाम क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने शिफ़ा शरीफ़ में तहरीर फ़रमाया कि नूर से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और किताबे मुबीन से मुराद कुरआने मजीद है।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में और तक़वा व तहारत और विलायत व रूहानियत वाले अइम्मए किराम और मुहद्देसीने इज़ाम ने अपने अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित किया कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नूर हैं।

ख़ल्क़े अव्वल नूरे मुस्तफ़ा हैं : अल्लाह तआला ने सब से पहले हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर को अपने नूर से पैदा फ़रमाया :

फ़रिश्ता था न आदम थे न ज़ाहिर था ख़ुदा पहले
बने सारी ख़ुदाई से मुहम्मद मुस्तफ़ा पहले

और आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह जो न थे तो कुछ न था वह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वह जहान की जान है तो जहान है

हदीसे नूर ! मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में मुहद्दिसे मदीना मुनव्वरा हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्दे रशीद और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अस्ताज़ और इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम के दादा उस्ताज़ मुहद्दिसे जलील हज़रत इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अबू बक्र बिन हमाम हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस रिवायत करते हैं कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :

मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे मां, बाप आप पर कुरबान हों, मुझ को ख़बर दीजिये कि अल्लाह तआला ने सब अशया (चीज़ों) से पहले किस चीज़ को पैदा फ़रमाया तो हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يَاجَابِرُ إِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ خَلَقَ قَبْلَ الْأَشْيَاءِ نُوْرَ نَبِيِّكَ مِنْ نُوْرِهٖ فَجَعَلَ ذَالِكَ النُّوْرُ يَدُوْرُ بِالْقُدْرَةِ حَيْثُ شَاءَ اللّٰهُ وَلَمْ يَكُنْ فِيْ ذَالِكَ الْوَقْتِ لَوْحٌ وَّلَا قَلَمٌ وَلَا جَنَّةٌ وَّلَا نَارٌ وَّلَا مَلَكٌ وَّلَا سَمَاءٌ وَّلَا أَرْضٌ وَّلَا شَمْسٌ وَّلَا قَمَرٌ وَّلَا جِنِّيٌّ وَّلَا إِنْسِيٌّ

तर्जमा : ऐ जाबिर ! बे शक अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों से पहले तेरे नबी के नूर को अपने नूर से पैदा फ़रमाया फिर वह नूर अल्लाह तआला की कुदरत से जहाँ अल्लाह तआला ने चाहा दौर करता रहा उस वक़्त लौह, क़लम, जन्नत, दोज़ख़, फ़रिश्ते, आसमान, ज़मीन, सूरज, चाँद, जिन्न, इन्सान कुछ न था। (मवाहिबुल लदुन्निया, जि. 1, स. 9, शरह ज़ुरक़ानी, जि. 1, स. 46, सीरते हलबिया, जि. 1, स. 50, फ़तावा हदीसिया इब्ने हजर मक्की, स. 51 मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 309, अनवारे मुहम्मदी, स. 13)

और वहाबियों, देवबन्दियों के मशहूर पेशवा मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने इस हदीसे नूर को अपनी किताब नशरुत्तय्यब के सफ़ा 6 पर लिखा है :

और ! शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِيْ أَنَا مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ وَكُلُّ الْخَلَائِقِ مِنْ نُوْرِيْ ۝

यानी अल्लाह तआला ने सब से पहले मेरे नूर को पैदा फ़रमाया, मैं अल्लाह के नूर से हूँ और सारी मख़लूक़ात मेरे नूर से है। (मतालिउल मुसर्रात फ़ी शरह दलाइलुल ख़ैरात, स. 72, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 1)

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने वालिदे गिरामी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि :

إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ كُنْتُ نُوْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَبِّيْ قَبْلَ خَلْقِ آدَمَ بِأَرْبَعَةَ عَشَرَ أَلْفَ مِائَةِ عَامٍ

यानी नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से चौदह हज़ार साल पहले अपने रब के हुज़ूर एक नूर था। (ज़ुरक़ानी, जि. 1, स. 49 थानवी की नशरुत्तय्यिब, स. 6)

हज़रात ! बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने अपनी मुस्तनद किताबों में जो अहादीसे करीमा नक़्ल की हैं उस से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित है कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के नूर हैं।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

كُنْتُ نَبِيًّا وَّآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ

यानी मैं उस वक़्त भी नबी था जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जिस्म और रूह के दरमियान थे। (बुख़ारी शरीफ़, तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 513, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 6)

जिब्रईल अलैहिस्लाम की उम्र : अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने रूहुल बयान शरीफ़ में, इमाम अल्लामा अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी रहमतुल्लाहि

तआला अलैह ने सीरते हलबिया में और अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी ने जवाहिरुल बिहार फ़ी फ़ज़लुन्नबियुल मुख़्तार में नक़ल किया कि हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिब्रईल अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी उम्र कितनी है ? हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम मैं इस के सिवा नहीं जानता। यानी मुझे इतना मालूम है कि चौथे हिजाब में एक सितारा सत्तर हज़ार साल के बाद चमकता था।

رَأَيْتُهُ اِثْنَيْنِ وَسَبْعِيْنَ اَلْفَ مَرَّةٍ

मैंने उस सितारे को बहत्तर हज़ार मरतबा देखा है।

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يَا جِبْرِيْلُ وَعِزَّةِ رَبِّيْ اَنَا ذَالِكَ الْكَوْكَبُ

ऐ जिब्रईल ! मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम वह सितारा मैं ही था।

(रूहुल बयान, जि. 3, स. 543, सीरते हलबिया, जि. 1, स. 49, जवाहिरुल बिहार, स. 776)

नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आदम की पेशानी में

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आशिक़े रसूल इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में रखा और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने जो सज्दा किया था वह नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वजह था।

اِنَّ نُوْرَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِيْ جَبْهَةِ اٰدَمَ

यानी बे शक नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में जलवा गर था।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 2, स. 318, जवाहिरुल बिहार, स. 153)

मुहद्दिस इब्ने जोज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِىْ وَمِنْ نُّوْرِىْ خَلَقَ جَمِيْعَ الْكَائِنَاتِ

तर्जमा : सब से पहले अल्लाह ने मेरे नूर को पैदा किया और फिर मेरे नूर से सारी कायनात को पैदा किया। (बयानुल मीलादुन्नबवी, स. 24)

इमामुल मुहद्देसीन अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत इमाम इब्ने सबअ का क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं :

قَالَ اِبْنُ سَبْعٍ مِنْ خَصَائِصِهٖ اِنَّ ظِلَّهٗ كَانَ لَا يَقَعُ عَلَى الْاَرْضِ وَاَنَّهٗ كَانَ نُوْرًا

तर्जमा : इब्ने सबअ़ ने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के

ख़साइस में से था कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था और बे शक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नूर थे।

(ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 169)

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

اَنْتَ الَّذِیْ مِنْ نُّوْرِکَ الْبَدْرُ اکْتَسٰی
وَالشَّمْسُ مُشْرِقَةٌ بِنُوْرِ بَہَاکَ

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप वह नूर हैं कि चाँद आप ही के नूर से रौशन है और सूरज की चमक भी आप ही के नूर से है।

(क़सीदतुन्नोअमान, स. 23)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि आरिफ़ बिल्लाह सय्यदी अब्दुल ग़नी नाबलसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

قَدْ خَلَقَ کُلَّ شَیْئٍ مِّنْ نُّوْرِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ کَمَا وَرَدَ بِہِ الْحَدِیْثُ الصَّحِیْحُ ○

यानी बे शक हर चीज़ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर से पैदा की गई जैसा कि हदीसे सहीह में आया है।

(सलातुस्सफ़ा, फ़ी नूरुल मुस्तफ़ा, स. 9 : अल हदीक़तुन्नदिया, जि. 2, स. 375)

हुज़ूर के मुस्कुराने से घर रौशन हो गया

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि (रात के वक़्त) मैं कपड़ा सिल रही थी कि मेरे हाथ से सुई गिर गई, मैं ने बहुत तलाश किया मगर सुई न मिली।

فَدَخَلَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَتَبَیَّنَتِ الْاِبْرَۃُ بِشُعَاعِ نُوْرِ وَجْہِہٖ ○

यानी इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले आए और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए नूर से इस क़दर उजाला फैला कि गुमशुदा सुई ज़ाहिर हो गई, मिल गई।

(ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 156, नफ़ी अलफ़ी, स. 65)

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सूज़ने गुम शुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
शाम को सुबह बनाता है उजाला तेरा

लकड़ी से रोशनी ज़ाहिर हुई

दो सहाबी रात के वक़्त हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे नूर में हाज़िर थे, बात लम्बी हो गई वक़्त ज़्यादा गुज़र गया, रात बहुत तारीक थी हर तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा था और मूज़ी जानवरों का ख़तरा भी था और रौशनी का कोई

इन्तिज़ाम न था तो हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक लकड़ी को अपने दस्ते नूर में लेकर सहाबी को अता की तो उस लकड़ी से रौशनी ज़ाहिर होने लगी और उसी रौशनी में दोनों सहाबी अपने अपने घर पहुँच गए।

(मिश्कात शरीफ़, स. 536, मुलख्ख़सन जामेअ़ करामाते औलिया, स. 419)

हज़रात ! हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के ऐसे नूर हैं कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते नूर लकड़ी को लग जाए तो लकड़ी से भी रोशनी और चमक ज़ाहिर होने लगती है।

खूब फ़रमाया आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उसैद का चेहरा रौशन हो गया

यानी हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दस्ते नूर हज़रत उसैद बिन अबी इयाज़ के चेहरे और सीना पर फैरा तो उन का चेहरा इस क़दर रौशन हो गया कि अन्धेरे घर में दाख़िल होते तो वह घर भी रौशन हो जाता था।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 7, स. 9)

ऐ ईमान वालो ! हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लमक़ा दस्ते नूर है कि काले चेहरे पर लग जाए तो चेहरा हमेशा के लिये रौशन हो जाए। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ऐसे नूर हैं जो अपने गुलामों को नूर की खैरात देकर नूर वाला बना देते हैं।

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का

हुज़ूर के जिस्मे नूर का साया न था

हदीस शरीफ़ :

فَقَدْ اَخْرَجَ الْحَكِيْمُ التِّرْمِذِيُّ عَنْ ذَكْوَانَ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ يُرٰى لَهٗ ظِلٌّ فِيْ شَمْسٍ وَّلَا قَمَرٍ

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया नज़र न आता था धूप में न चाँदनी में। (नफ़ी अलफ़ी, 52)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हो रिवायत फ़रमाते हैं :

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये साया न था सूरज के सामने और न चिराग़ की रौशनी में। (किताबुल वफ़ा, जि. 2, स. 407 व हवाला नफ़ी अलफ़ी, स. 52)

हदीस शरीफ़ : हजरत इमाम जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अन्नुमूज़जुल लबीब फ़ी ख़साइसुल हबीब में रक़म तराज़ हैं।

यानी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया ज़मीन पर न पड़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया नज़र न आया, न धूप में न चाँदनी में। इब्ने सबअ़ ने फ़रमाया इस लिये कि हुज़ूर नूर हैं। (अन्नुमूजजुल लबीब, स. 53, स. 53)

और आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तू है साया नूर का हर उज़्व टुकड़ा नूर का
साया का साया न होता है न साया नूर का

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर का साया न था इस का सुबूत अहादीसे करीमा और अइम्मए किराम व मुहद्दसीने इज़ाम के अक़वाल व बयानात से साबित हो चुका और

(1) हाफ़िज़ रज़ीन मुहद्दिस व अल्लामा इब्ने सबअ़ ने शिफ़ाउस्सुदूर में (2) और अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ ने शिफ़ा शरीफ़ में (3) और अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने ख़साइसे कुबरा में (4) और अल्लामा शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी ने नसीमुर्रियाज़ में (5) अल्लामा क़स्तलानी ने मवाहिबुल लदुन्निया में (6) और अल्लामा ज़ुरक़ानी ने शरह मवाहिबुल लदुन्निया में (7) और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी ने (8) और शैख़ मुजद्दिद अल्फ़े सानी फ़ारूक़ी सरहिन्दी ने (9) और बहरुल उलूम मौलाना अब्दुल हयि लखनवी ने (10) और मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिसे देहलवी वग़ैरहुम ने भी लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे पाक का साया न था इस लिये कि हुज़ूर नूर थे। (नफ़ल फई, स. 52)

हुज़ूर का साया तमाम जहान पर है

अल्लामा शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नसीमुर्रियाज में तहरीर फ़रमाते हैं।

यानी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे पाक का साया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हुरमत व बुज़ुर्गी के सबब ज़मीन पर न पड़ने दिया गया, बावजूद उस के कि तमाम आदमी (और तमाम

जहां) हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साया में आराम करते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बशर होना नूर के मुनाफ़ी नहीं। (नफ़ल फई, स. 54)

इमाम नस्फ़ी तफ़सीरे मदारिक शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

قَالَ عُثْمَانُ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ اِنَّ اللهَ مَا اَوْقَعَ ظِلَّكَ عَلَى الْاَرْضِ لِئَلَّا يَضَعَ اِنْسَانٌ قَدَمَهٗ عَلٰى ذَالِكَ الظِّلِّ

यानी हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया कि बेशक अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया कि कोई शख़्स इस पर पाऊं न रख दे।

(तफ़सीरे मदारिक, जि. 3, स. 35, व हवाला नफ़ल फ़ई, स. 58)

मलायका का साया नहीं : इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि इमामे अहले सुन्नत सय्यदना इमाम अबुल हसन अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुतालिउल मुसरात शरीफ़ में तहरीर फ़रमाया जिस का ख़ुलासा यह है कि :

اَنَا مِنْ نُوْرِ اللهِ ۝ यानी मैं अल्लाह के नूर से बना हूँ और फ़रिश्ते मेरे नूर से पैदा किये गए।

और फ़रिश्तों का साया नहीं होता है जो महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर से बने हैं और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह के नूर से बने तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर का साया कैसे मुमकिन हो सकता है।

(तलख़ीस क़मरुत्तमाम फी नफ़िज़्ज़ल अन सैयिदुल अनाम, स. 46)

ऐ ईमान वालो ! मुख़ालिफ़ कह सकता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इन्सान हैं आप के आँख, कान, हाथ, पैर जिस्म व जिस्मानियत है और फ़रिश्ता तो सिर्फ़ नूर है ब ज़ाहिर हाथ, पैर, आँख, कान जिस्म व जिस्मानियत नहीं है इस लिये इस का साया नहीं है।

तो हम अहले सुन्नत का जवाब यह है कि फ़रिश्ते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर से पैदा किये गए हैं तो जब उन का साया नहीं है तो अल्लाह के नूर से बनने वाले हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साया भी नहीं है।

और दूसरा जवाब यह है कि मुतअद्दिद मरतबा हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बशर की शक्ल में इन्सान के लिबास में ब ज़ाहिर कान, नाक, हाथ, पैर जिस्म व जिस्मानियत के साथ हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार, नाइबे परवरदिगार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबार गुहर बार में हाज़िर होते तो क्या कोई बद अक़ीदा शख़्स हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साया का सुबूत दे सकता है, नहीं दे सकता। हर गिज़ नहीं दे सकता। तो अब मानना पड़ेगा कि नूर का साया नहीं होता है, चाहे नूर लिबासे बशरी में हो या लिबासे बशरी में न हो।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश के वक़्त मैं ने देखा।

وَضَعَتْهُ نُوْرًا اَضَاءَتْ مِنْهُ قُصُوْرُ الشَّامِ ○

यानी कि एक ऐसा नूर ज़ाहिर हुआ जिस से शाम के महल्लात रोशन हो गए।
(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 4, स. 127, दलाइलुन्नुबुव्यत, जि. 1, स. 83)

और एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश के वक़्त

اَضَاءَ لَهُ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ○

यानी मशरिक़ से मग़रिब तक रौशन हो गया। (अनवारे मुहम्मदिया, इमाम नबहानी, स. 240)

और बाज़ रिवायत में है :

اِمْتَلَاءَتِ الدُّنْيَا كُلُّهَا نُوْرًا ○

यानी तमाम दुनिया नूर से भर गई। (ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 118,.......आला हज़रत, स. 65)

हज़रात ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश के वक़्त ऐसा नूर ज़ाहिर हुआ जिस से सारी दुनिया रौशन हो गई, पूरा आलम मुनव्वर हो गया।

नूर अन्दर, नूर बाहर, कूचा कूचा नूर है
बल्कि यूँ कहिये कि सारी दुनिया की दुनिया नूर है

दुरूद शरीफ़ :

वर्क तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(3)

रबीउल अव्वल शरीफ़

पहला जुमा .... दूसरा बयान

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के माँ, बाप मोमिन और जन्नती हैं

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ وَعَلٰى اُصُوْلِهٖ وَفُرُوْعِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ!
قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَمْ يَزَلِ اللّٰهُ يَنْقُلُنِيْ مِنَ الْاَصْلَابِ الطَّيِّبَةِ وَالْاَرْحَامِ
الطَّاهِرَةِ حَتّٰى اَخْرَجَنِيْ مِنْ بَيْنِ اَبَوَيَّ

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी में रखा तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पेशानी चमकने लगी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जो मस्जूदे मलायका बने वह भी नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत थी।

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

اِنَّ الْمَلٰٓئِكَةَ اُمِرُوْا بِالسُّجُوْدِ لِاٰدَمَ لِاَجْلِ اَنَّ نُوْرَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِيْ جَبْهَةِ اٰدَمَ ○

यानी आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने का हुक्म जो फ़रिश्तों को दिया गया था वह इस वजह से था कि उन की पेशानी में मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरे पाक था। (तफ़सीरे कबीर, जि. 2, स. 318, मीलादुन्नबी, स. 19)

सरकार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे आगे ख़ाक पे झुकता है माथा नूर का
नूर ने पाया तेरे सज्दे से माथा नूर का

नुकता : यहाँ पर एक बात निहायत क़ाबिले ग़ौर है कि शैतान ने हज़ारों बरस अल्लाह तआला की इबादत की, मगर नबी की ताज़ीम करने से इनकार कर दिया तो अल्लाह तआला ने हजारों बरस की इबादत को नहीं देखा बल्कि अपने नबी की ताज़ीम व अदब को देखा और ताज़ीम न करने वाले को मलऊन व मरदूद क़रार दे दिया और फ़रिश्तों ने ताज़ीम व अदब किया तो महबूब ठेहरे।

तो मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की बारगाह में महबूब और मुक़र्रब बनने के लिये इबादत के साथ नबी की ताज़ीम व तौकीर भी ज़रूरी है।

हज़रत इमाम अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और हज़रत इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़्ज़ुरक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

لَوْ اَبْصَرَ الشَّيْطَانُ طَلْعَةَ نُوْرِهٖ فِيْ وَجْهِ آدَمَ كَانَ اَوَّلَ مَنْ سَجَدَ

यानी अगर शैतान नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की चमक आदम अलैहिस्सलाम के चेहरे में देखता तो फ़रिश्तों से पहले सज्दा करता।

(मवाहिबुल लदुन्नियह, ज़ुरक़ानी, जि. 1, स. 63)

ऐ ईमान वालो ! मालूम हुआ कि जो लोग नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नहीं देखते या उसके क़ाइल नहीं होते वही लोग बे अदब और गुस्ताख़ होते हैं। फिर वह नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पेशानी में जलवा गर हुआ जिस की बरकत से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नारे नमरूद गुलज़ार हो गई। और अल्लाह का ख़लील, नमरूद, मरदूद के शर से महफ़ूज़ व मामून रहे।

फिर वह नूरे पाक हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के पुश्ते पाक में ठहरा जिस की बरकत से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पर छुरी कुछ भी असर न कर सकी और हज़रत ज़बीहुल्लाह अलैहिस्सलाम छुरी के नीचे भी महफ़ूज़ व मामून रहे।

हज़रात ! इसी तरह अल्लाह तआला ने जहाँ जहाँ चाहा वह नूरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गरदिश करता रहा और पाक सलबों से पाक रहमों तक मुन्तक़िल होता रहा फिर वह नूरे पाक हज़रत अब्दुल मुत्तलिब से हज़रत अब्दुल्लाह के सल्बे पाक में मुन्तक़िल होकर हज़रत अब्दुल्लाह की पेशानी को चमकाता हुआ हज़रत आमना तय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के रहम में क़रार पाया।

हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरे पाक जहाँ से गुज़रा उस जहाँ को चमकाता और रोशन करता गुज़रा।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैशानी हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़ुल्लत और क़ुरबानी हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का ईसार व क़ुरबानी हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की सतवत व हुकूमत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न व जमाल हमारे हुज़ूर के नूर से चमका। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का कलाम हमारे हुज़ूर के नूर से चमका, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रूहानियत का कमाल व जमाल हमारे हुज़ूर के नूर से चमका। हत्ता कि तमाम अम्बियाए किराम और रसूलाने इज़ाम की नुबुव्वत व रिसालत का कमाल हमारे हुज़ूर के नूर से चमका।

हज़रात ! हज़रत अबू बक्र की सदाक़त हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत उमर फ़ारूक़

की अदालत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत उस्माने ग़नी की सख़ावत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत मौला अली की विलायत व शुजाअत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत सय्यदा फ़ातिमा की तहारत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन की शहादत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हज़रत इमामे आज़म की इमामत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की करामत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। हिन्द के राजा प्यारे ख़्वाजा की विलायत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। मख़दूम किछोछवी की अशरफ़ियत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। शाहे बरकतुल्लाह की बरकत हमारे हुज़ूर के नूर से चमकी। इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत की मुजद्दिदियत हमारे हुज़ूर के नूर से चमक रही है और चाँद व सूरज और सितारे हमारे हुज़ूर के नूर से चमक रहे हैं।

कुदरत के नक़ीब ने पुकारा, यूँ ऐलान कर दो कि आज तक जितने चमके हैं तो हमारे हुज़ूर के नूर से चमके हैं और क़ियामत तक जितने चमकेंगे तो हमारे हुज़ूर के नूर से चमकेंगे।

तो बरैली शरीफ़ से आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम!

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़:

नूरे मुस्तफ़ा शिकमे मादर में

जिस रात हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरे पाक हज़रत आमना तय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के रहम में क़रार पाया। माहे रजब में वह रात जुमा मुबारका की रात थी। (ज़ुरक़ानी शरीफ़, जि. 1, स. 105, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 17)

शबे जुमा शबे क़दर से अफ़ज़ल है

हमारे पीर, पीराने पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इमाम हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि क्या शान वाली रात थी शबे जुमा कि हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इसी रात अपनी मादरे महरबानी के शिकम में तशरीफ़ लाए, इसी वजह से जुमा मुबारका की रात शबे क़द्र से अफ़ज़ल है। क्यों कि जो बरकात व हसनात और इकराम व सआदत इस रात नाज़िल हुए शबे क़द्र को न मिले हैं न क़ियामत तक मिलेंगे।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 20, बयाने इस्तिक़रारे हमल)

शिकमे मादर में आने के बरकात

हमारे हुज़ूर महबूबे ख़ुदा, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शिकमे मादर में जब जलवा गर हुए तो दुनिया में अजीबो ग़रीब वाक़ेआत ज़हूर पज़ीर हुए।

(1) जन्नत के तमाम दरवाज़ों को खोल दिया गया।
(2) तमाम आलम को खुश्बू से मुअत्तर कर दिया गया।
(3) और मशरिक़ से मग़रिब तक तमाम जहाँ में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आमद आमद की खुश ख़बरी दी गई।

(अनवारे मुहम्मदिया, स. 21, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 18)

हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत आमना तैय्यिबा मोमिन और जन्नती हैं

अज़ीम व जलील इमाम हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़्ज़ुरक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और जलीलुल क़द्र आशिक़े रसूल हज़रत अल्लामा हाफ़िज़ जलालुद्दीन अस्सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग हज़रत हाफ़िज़ इमाम अबू नईम अहमद बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि तआला अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया।

لَمْ يَزَلِ اللّٰهُ يَنْقُلُنِيْ مِنَ الْاَصْلَابِ الطَّيِّبَةِ وَالْاَرْحَامِ الطَّاهِرَةِ حَتّٰى اَخْرَجَنِيْ مِنْ بَيْنِ اَبَوَيَّ

यानी अल्लाह तआला मुझे पाक सलबों से पाक रहमों में मुन्तक़िल करता रहा यहाँ तक कि मुझे मेरे मां बाप के ज़रीए पैदा फ़रमाया। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 174, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 39 दलाइलुन्नुबुव्वत, स. 24 शुमूलिल इस्लाम, स. 6)

हज़रात ! हदीसे पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि हमारे हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जितने आबा व इजदाद और माएं और दादियां गुज़री हैं सब पाक थे। अगर कुफ़्रो शिर्क वाले होते तो उन को पाक न कहा जाता इस लिये कि अल्लाह तआला का इरशादे पाक है।

وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ

तर्जमा : और बे शक मुसलमान गुलाम, मुश्रिक से अच्छा है।

(पारा 2, रुकू 11, तर्जमा कन्जुल ईमान)

وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ

तर्जमा : और बे शक मुसलमान लोन्डी, मुश्रिका से अच्छी है (पारा 2, रुकू 11, तर्जमा कन्जुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने कुरआने पाक में साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि काफ़िर व काफ़िरा से मोमिन और मोमिना बेहतर हैं।

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ

तर्जमा : मुश्रिक निरे नापाक हैं। (पारा 10, रुकू 10, तर्जमा कन्जुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह तआला के इरशादे पाक से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि कुफ़्र व शिर्क वाले नापाक हैं चाहे मर्द हों या औरतें हों।

तो साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने जिन मर्दों की सलबों और औरतों की रहमों में अपना नूर रखा वह मर्द और औरतें कुफ़्र व शिर्क से पाक थीं वर्ना क्या अल्लाह तआला ने

अपने नूर को नापाक व नजिस जगह रख दिया, हरगिज़ नहीं यह ना मुमकिन और मुहाल है। लारैब, बे शक व शुबा अल्लाह तआला ने जिस सल्ब और जिस रहम में अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नूर को रखा वह सब तैय्यिबा व ताहिरा थे, मोमिन और जन्नती थे।

तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का

हज़रात ! वहाबियों देवबन्दियों के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मां, बाप काफ़िर व मुशरिक थे।
(फ़तावा रशीदिया कामिल, स. 218, मकतबा महमूदिया, सहारनपूर)

सद बार मआज़ल्लाहि तआला। हज़ार बार अल्लाह तआला की पनाह

ऐ ईमान वालो ! सीने पर हाथ रख कर ठन्डे दिल से सोचो कि क्या वह पुश्ते पाक और वह शिकमे पाक जिस में हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरे पाक अल्लाह तआला ने रखा था, वह कुफ्र व शिर्क वाले थे, गन्दे और नजिस थे, और दोजख़ी थे ? तो मोमिन व मुसलमान और जन्नती तो यही कहेगा कि अल्लाह तआला अपना नूरे पाक, गुन्दी जगह में रखे यह ना मुमकिन है। बल्कि नूर के लिये नूर वाली जगह का इन्तिख़ाब फ़रमाता है।

और हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां बाप मोमिन और जन्नती थे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ

तर्जमा : और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को। (पारा 19, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अज़ीमुश्शान आशिक़े रसूल हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि अलैह इस आयते करीमा की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि बयान किया गया है कि उस का मअ़ना यह है।

كَانَ يَنْقُلُ نُوْرُهٗ مِنْ سَاجِدٍ اِلٰى سَاجِدٍ وَبِهٰذَا التَّقْدِيْرِ فَالْاٰيَةُ وَاِنَّهٗ عَلٰى اَنَّ جَمِيْعَ

اٰبَاءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ○

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरे पाक एक साजिद (मुसलमान) दूसरे साजिद (मुसलमान) की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहा। इस तक़दीर पर यह आयते करीमा इस पर दलील है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तमाम आबाए किराम मुसलमान थे। (अल हावी लिल फ़तावा, जि. 2, स. 413)

और इस आयते करीमा यानी

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ

के तहत हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि (1) हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि रूए ज़मीन में

कम से कम सात मुसलमान ज़रूर रहते हैं। वर्ना ज़मीन और अहले ज़मीन सब हलाक हो जाएं
(अल हावी लिल फ़तावा, जि. 2, स. 416, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 204)

(2) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद कभी भी ज़मीन सात अल्लाह वालों से ख़ाली नहीं हुई। जिस के सबब से ज़मीन वाले अज़ाब से महफ़ूज़ रहते हैं।
(अल हावी लिलफ़तावा, जि. 2, स. 416 ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 204)

हज़रात ! हज़रत इमाम सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह साबित करना और बताना चाहते हैं कि उस ज़माने के मुसलमान और अल्लाह वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप थे।

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सरापानूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया।

إِنَّ اللهَ يُقْرِئُكَ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ إِنِّيْ حَرَّمْتُ النَّارَ عَلٰى صُلْبٍ اَنْزَلَكَ وَبَطْنٍ حَمَلَكَ وَحِجْرٍ كَفَلَكَ

यानी अल्लाह तआला, ऐ महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप को सलाम फ़रमाता है और फ़रमाता है कि मैं ने इस सल्ब पर जिस में तुम रहे हो और उस पेट पर जिस ने तुम्हें उठाया और उस गोद पर जिस ने तुम्हें खिलाया उन पर दोज़ख़ को हराम कर दिया। (अल हावी लिल फ़तावा, जि. 1, स. 432)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि :

यानी मैं हूँ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम............यूँ ही इक्कीस पुश्त तक नसब नामए मुबारक बयान कर के फ़रमाया कि मैं अपने मां बाप से ऐसा पैदा हुआ कि ज़मानए जाहिलियत की कोई बात मुझ तक न पहुँची और मैं ख़ालिस निकाहे सहीह से पैदा हुआ, आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अपने वालिदैन तक तो मेरी ज़ाते करीम तुम सब से अफ़ज़ल है ।

فَاَنَا خَيْرُكُمْ نَسَبًا وَخَيْرُكُمْ اَبًا यानी मेरे बाप तुम सब के आबा से बेहतर।
(दलाइलुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 174, व हवाला शुमूलिल इस्लाम, स. 18, 19)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं जिस का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला की बारगाह में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तमाम आबा इज्ज़त व बुज़ुर्गी वाले और तमाम माएं पाकीज़ा और ताहिरा हैं।

और आयते करीमा : وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ की भी एक तफ़सीर यही है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूर एक साजिद से दूसरे साजिद की तरफ़ मुन्तक़िल होता आया तोअब इस से साफ़ साबित है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप हज़रत आमना तैय्यिबा और हज़रत अब्दुल्लाह

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जन्नती हैं। यह दोनों ऐसे हैं जिन को अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये चुना था।

हदीस शरीफ़ की तसरीह है कि अल्लाह तआला ने वालिदैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये ज़िन्दा फ़रमाया यहाँ तक कि वह हुज़ूर पर ईमान लाए। (शुमूलिल इस्लाम, स. 23,24)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि: हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझ को साथ लेकर मक़ामे हुजून में तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रो रहे थे और बहुत ही ज़्यादा ग़मगीन थे। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इस हालत को देख कर मैं भी रो पड़ी, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझ को ऊंट पर छोड़ कर तशरीफ़ ले गए बहुत देर तक वहाँ ठेहरे रहे। जब वापस आए तो ख़ुश थे और मुस्कुरा रहे थे, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे मां, बाप आप पर कुरबान हों, जब आप गए थे तो बहुत ग़मगीन और रोते हुए गए थे और अब आप ख़ुश हैं और मुस्कुरा रहे हैं, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपनी वालिदा की क़ब्र पर गया और अपने रब से सवाल किया कि वह उन को ज़िन्दा कर दे, अल्लाह ने उन को ज़िन्दा किया तो वह मुझ पर ईमान लाई फिर अल्लाह ने उन को मौत की तरफ़ लौटा दिया।

और दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रब से मां, बाप दोनों के ज़िन्दा होने का सवाल किया तो अल्लाह तआला ने उन दोनों को ज़िन्दा कर दिया तो वह दोनों आप पर ईमान ले आए फिर अल्लाह तआला ने उन को मौत दे दी। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 168, अल हावी लिल फ़तावा, जि. 2, स. 440)

हज़रात! हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप मुवह्हिद और जन्नती थे।

और जो महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कलमा पढे और ईमान लाए वह ख़ैर उम्मत से है। इसी गरज़ से हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने एजाज से अपने जन्नती मां, बाप को ज़िन्दा किया और अपना कलमा पढा कर अपने मोमिन उम्मत में शामिल फ़रमाकर ख़ैरे उम्मत बेहतरीन जन्नती होने का हक़दार बना दिया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के वालिदैन करीमैन व अस्हाबे कहफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरह ज़िन्दा किया ताकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर ईमान ला कर शरफ़े सहाबियत से सर फ़राज़ हो जाएं। (शुमूलिल इस्लाम, स. 22)

हज़रात ! कोई मुख़ालिफ़ सवाल कर सकता है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप मोमिन और जन्नती थे तो उनकी क़ब्र पर जाने के बाद ग़मगीन क्यों हो गए और रोए क्यों ?

तो उस का जवाब यह है कि हर नेक और वफ़ादार औलाद जब अपने मां बाप की क़ब्र पर जाती है तो मां, बाप के एहसानात और उन के प्यार और उल्फ़त को याद कर के उन के क़ुलूब ग़मगीन होते हैं और आँखें अश्कबार हो जाती हैं।

बस इसी तरह हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी अपने मां बाप की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए तो उन की याद आई और उन के प्यार व महब्बत में ग़मगीन हो गए और रोने लगे और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत आमना तैय्यिबा और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के ऐसे नेक बेटे थे कि उन से पहले ऐसा नेक न कोई पैदा हुआ और न अब क़ियामत तक पैदा होगा।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सारे अच्छों से अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी
सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

रईसुल फ़ुक़हा वल मुहद्देसीन हज़रत अल्लामा इब्ने आबिद बिन शामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बिला शुबह हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कि अल्लाह तआला ने उन के लिये उन के मां, बाप को ज़िन्दा करके उन का इकराम किया। यहाँ तक कि वह आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ईमान लाए जैसा कि हदीस शरीफ़ में है और अल्लामा क़रतबी और इब्ने नासिरुद्दीन हाफ़िज़ अश्शाम वग़ैरहुमा ने इस हदीस की तसहीह की है पस आप के मां, बाप का वफ़ात के बाद ख़िलाफ़े क़ायदा ज़िन्दा होना और ईमान से मालामाल होना सिर्फ़ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एजाज़ व इकराम है। (रद्दुल मोहतार अला अद्दर्रुल मुख़्तार, जि. 4, स. 400)

हज़रात ! हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी मां हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं जिन के शिकमे पाक में हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नौ महीना जलवा गर रहे और हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रज़ाई मां हैं यानी हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आप ने दूध पिलाया है।

जंगे हुनैन के मौक़े पर हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम अपने सहाबा के हमराह मैदाने हुनैन में तशरीफ़ फ़रमा हैं कि एक खातून आती हुई नज़र आई, हमारे सरकार दो आलम के सरदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के लिये खड़े हुए और अपनी चादरे नूर उन के लिये बिछाई और उस चादरे रहमत पर हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बिठाया।

(अल इस्तीआब, व हवाला शुमूलिल इस्लाम, स. 30)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से हम आप हज़रात को यह बताना चाहते हैं कि जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गोद में लेने वाली और दूध पिलाने वाली मां हज़रत हलीमा सअदिया जिन का इस क़द्र ऊंचा मक़ाम है तो हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने तो हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को नौ महीना अपने शिकम में रखा तो उन के मक़ाम व मरतबा का क्या आलम होगा। जब दूध पिलाने वाली मां हलीमा सअदिया के अदब व ताज़ीम का यह आलम है तो हक़ीक़ी मां हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ताज़ीम व तौक़ीर का आलम क्या होगा।

ऐ ईमान वालो ! क़ब्रे अनवर का वह हिस्सा जो हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर से मस है, लगा हुआ है, कअबा मुअज़्ज़मा से अफ़ज़ल, बैतुल मुक़द्दस से अफ़ज़ल, बैतुल मअमूर से अफ़ज़ल , यहाँ तक कि अर्शे आज़म से भी अफ़ज़ल है। क़ब्रे अनवर के अन्दर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं तो क़ब्र शरीफ़ कअबा मुअज़्ज़मा, बैतुल मुक़द्दस, बैतुल मअमूर और अर्शे मुअल्ला से अफ़ज़ल हो जाए और जिस बाप की पुश्त में और जिस मां के शिकम में जलवागर रहे हों और जिस मां का दूध पिया हो वह मां, बाप किस क़द्र अफ़ज़ल और बुज़ुर्ग होंगे।

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! हमारे हुज़ूर, महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेअसत से क़ब्ल यानी ऐलाने नुबुव्वत से पहले जो ख़ुश नसीब हजरात तौहीद पर थे यानी ला इलाहा इल्लल्लाह वाले थे, तौहीद पर थे इस लिये उस ज़माने के मोमिन व मुसलमान और जन्नती थे। इस के बावजूद अल्लाह तआला ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े में अस्हाबे कहफ़ की तरह उन को ज़िन्दा किया कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ईमान लाकर सहाबियत के अज़ीम मन्सब व मक़ाम पर फाइज़ हो जाएं।

(ख़ुलासा शुमूलिल इस्लाम, स. 22)

हुज़ूर हर कलमा पढ़ने वाले को दोज़ख से निकाल लेंगे

يَارَبِّ ائْذَنْ لِي فِيمَنْ قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ

यानी ऐ मेरे रब मुझे उन को भी (दोज़ख से निकालने की) इजाजत अता फ़रमा दे जिन्होंने सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है। (बुखारी शरीफ़, जि. 2, रा. 18, व हवाला शुगूलिल इस्लाम, स. 21)

हज़रात ! सहीह बुख़ारी की इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हुआ कि हमारे हुज़ूर शाफ़ेए मेहशर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर तौहीद वाले और कलमा पढ़ने वाले शख़्स को दोज़ख से बचा लेंगे।

तो हमारे प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप किस तरह दोज़ख में ज़ा सकते हैं तो मानना पड़ेगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपने मुवह्हिद व मोमिन मां, बाप को आला जन्नत से सरफ़राज़ फ़रमाएंगे।

ऐ ईमान वालो ! वहाबियों का यह कहना कि नबी के मां, बाप काफ़िर व मुश्रिक थे बिल्कुल लग्व और बेकार और नादानी के भंवर में डूबी हुई बात है। अस्ल में वहाबी कहना और बताना यह चाहता है कि जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां बाप काफ़िर व मुश्रिक थे तो काफ़िर व मुश्रिक दोज़ख में जाएंगे यानी जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने मां बाप को दोज़ख की आग से नहीं बचा सकते तो अपनी उम्मत को यानी हम को और आप को क्या बचा पाएँ गे मआज़ल्लाहि तआला सद बार मआज़ल्लाह तआला।

हज़रात ! सही बुख़ारी की हदीस आप हज़रात ने सुन ली कि अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से हमारे सरकार, दो आलम के मालिको मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर मुवह्हिद मोमिन व मुसलमान को दोज़ख की आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे।

ला रैब ! बे शक व शुबा, हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप मुवह्हिद मोमिन व मुसलमान थे तो साबित हुआ कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप जन्नती थे।

आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

हज़रत उबाद बिन अब्दुस्समद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर गए, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खाने के लिये दस्तर ख़्वान बिछाया और एक रूमाल भी तलब किया। रूमाल बहुत मेला था उस कपड़े को आग के तनूर में डाल दिया। थोड़ी देर के बाद जब

उस रूमाल को आग के तनूर में से निकाला गया तो वह कपड़े का रूमाल इस क़दर सफ़ेद था जैसे दूध। हम ने हैरान हो कर कहा कि ऐ अनस यह क्या राज़ है ? हज़रत अनस ने फ़रमाया:

هٰذَا مِنْدِيْلٌ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ بِهٖ وَجْهَهٗ فَاِذَا وَسِخَ صَنَعْنَا بِهٖ

هٰكَذَا لِاَنَّ النَّارَ لَا تَاْكُلُ شَيْئًا مَرَّ عَلٰى وُجُوْهِ الْاَنْبِيَاءِ ○

यह वह रूमाल है कि जिस से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने मुंह मुबारक को साफ़ किया करते थे जब भी यह मैला हो जाता है तो हम उस कपड़े को इसी तरह आग में धो लेते हैं क्योंकि जो चीज़ अम्बियाए किराम के चेहरों पर गुज़र जाए आग उसे नहीं जलाती।

हज़रात ! जब एक कपड़ा हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए नूर और जिस्मे पाक से मस हो जाए तो आग उस कपड़े को नहीं जला सकता।

तो हज़हरत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वह पाक बाप हैं जिन की पुश्त में और हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा वह पाक मां हैं जिन के शिकम में हमारे हुज़ूर अल्लाह के नूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा रहे तो क्या मजाल कि दोज़ख की आग हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां बाप को जला सके।

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का ईमान किस क़दर प्यारा और मज़बूत था कि बग़ैर किसी हीला और हुज्जत के तस्लीम कर लेते थे कि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर की बरकत यक़ीनन बड़ी शान वाली है।

मगर आज कल कुछ मुसलमान कहलाने वाले ऐसे लोग भी पाए जाते हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के तबर्रुकात, मूए मुबारक, नअलैन शरीफ़, जिस्म से मस होने वाले पैरहन मुबारक की वक़अत व अहमियत तो बहुत दूर की बात है।

खुद महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने जैसा बशर कहते हैं और अपनी किताबों में लिखते भी हैं अल्लाह तआलो से बे ईमान लोगों से हम को दूर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वहाबियों का अक़ीदा : वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों के शहीद कहलाने वाले मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं कि औलिया, अम्बिया, व इमाम जादे पीर व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वह सब इन्सान ही हैं और बन्दए आजिज़ और हमारे भाई हैं। मगर उन को अल्लाह ने बड़ाई दी वह बड़े भाई हुए। (तक़वीयतुल ईमान, स. 60)

हज़रात ! आप हज़रात ने देख लिया कि बद अक़ीदों ने कैसे अन्दाज़ से महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और तमाम अम्बियाए किराम

को आजिज़ व मजबूर साबित किया और उन को अपना जैसा और अपना भाई और अपना बड़ा भाई कह दिया। अल्लाह तआला बे ईमान को अदब व एहतिराम से महरूम रखता है।

हज़रात ! बड़े भाई की बुराई और बे अदबी से आदमी काफ़िर नहीं होता मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बुराई और बे अदबी से आदमी काफ़िर हो जाता है। फिर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बड़े भाई कैसे हो सकते हैं ?

आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक्ल फ़रमाते हैं कि हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अहयाउल उलूम शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि किसी मुसलमान की तरफ़ गुनाहे कबीरा की निस्बत करना जाइज़ नहीं। जब तक तवातुर से साबित न हो तो प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत की जानिब बुरा ख़याल करना यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप की तरफ़ बुराई की निस्बत करना कोई मोमिन गवारा नहीं कर सकता कि शाहे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अदना गुलामों के दरबान तो जन्नत में आराम करें और जिन के नअलैने पाक के तस्दुक़ में ज़न्नत बनी, उस शहंशाह के मां बाप जन्नत से दूर व महरूम रह कर दोज़ख़ में अज़ाबऔर मुसीबत उठाएं ऐसी कोई हदीस व रिवायत हर गिज़ नहीं और हो भी कैसे सकती है। (मुलख़्ख़सन शुमूलिल इस्लाम, स. 26)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नक्ल का ख़ुलासा यह है कि हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां बाप जिसे पसन्द हों तो बहतर है वर्ना कम से कम अपनी ज़बान को उन की बुराई से रोके और अपने दिल को उन के बारे में ग़लत ख़याल और बुरी बातों से पाक व साफ़ रखे। إِنَّ ذَالِكُمْ كَانَ يُؤْذِى النَّبِىَّ से डरे यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप के बारे में बुरी बात करने और उन के बारे में बुरा ख़याल लाने से यक़ीनन महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ईज़ा देना हुआ।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है।

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

तर्जमा : और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है।

(पारा 10, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا تُؤْذُوا الْاَحْيَاءَ بِسَبِّ الْاَمْوَاتِ ○

मुर्दों को बुरा कह कर ज़िन्दों को ईज़ा न दो (शरह इब्ने हजर मक्की ब हवाला शुमूलिल इस्लाम, स. 25)

इमाम मालिकिया हज़रत इमाम क़ाज़ी अबू बक्र रहमतुल्लाहि तआला अलैह से पूछा गया

कि आप उस शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं जो यह कहता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वालिदैन दोज़ख़ में हैं तो आपने फ़रमाया :

बिला शुबह वह शख़्स मलऊन है इस लिये कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

कि बे शक वह लोग जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को, उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की लअ़नत है और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।

وَلَا اَذٰى اَعْظَمُ مِنْ اَنْ يُّقَالَ اَبَوَيْهِ فِى النَّارِ ○

तर्जमा : और इस से बढ़ कर और क्या ईज़ा होगी कि कहा जाए कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप दोज़ख़ में हैं।

(अल हावी लिल फ़तावा, जि. 2, स. 442, मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 1, स. 186)

हज़रात ! अलहम्दु लिल्लाह हदीस शरीफ़ और बुज़ुर्गों के अक़वाल से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मां, बाप मोमिन व मुसलमान और जन्नती हैं। यह चन्द इरशादात अहले महब्बत और अहले ईमान के लिये काफ़ी और शाफ़ी हैं। बाक़ी रहा बे अदबों गुस्ताख़ों का मज़हब व मस्लक, जब उन की निगाह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कोई मक़ाम नहीं है तो वालिदैन करीमैन के मक़ाम व मन्सब को क्या जानेंगे और क्या पहचानेंगे।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(3)
रबीउल अव्वल शरीफ़

दूसरा जुमा .... पहला बयान

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ٥

अरबी.....................

तर्जमा : बे शक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वह रसूल जिन पर तुम्हारा मुशक़्क़त में पड़ना गिरां है। तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसलमानों पर कमाल महरबान, महरबान। (पारा 11, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों के सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

तम्हीद : हज़रात ! साल के बारह महीनों में एक सच्चे मुसलमान के नज़दीक माह रबीउल अव्वल की बारहवीं तारीख़ वह ईमान अफ़रोज़ और रूह परवर तारीख़ है जो इस्लामी और ईमानी ख़ुशियों के हज़ारों गुलशन अपने दामन में लिये हुए है। दर हक़ीक़त यह तारीख़ एक मोमिन के लिये वह ईदे सईद है कि ईदुल फ़ित्र हो या ईदुल अज़्हा, शबे बराअत हो या शबे क़द्र, हर इस्लामी ख़ुशी का दिन और हर ईमानी ख़ुशी की रात इसी बारहवीं शरीफ़ का तुफ़ैल और सदक़ा है।

वल्लाह ! यह मुकद्दस तारीख अगर अपने दामन में मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मसर्रत व शादमानी लिये हुए आलमे वुजूद में न आती तो न कअबा किब्ला अहले ईमान होता न नुजूले क़ुरआन होता न दीने इस्लाम होता न कोई मोमिन व मुसलमान होता।

आशिके रसूल, प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

होते कहाँ खलील व बिना कअबा व मिना?
लौलाक वाले ! साहिबी सब तेरे घर की है

हुज़ूर शिकमे मादर में थे कि वालिद का इन्तिक़ाल हो गया

हमारे हुज़ूर, सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अभी शिकमे मादर में थे कि आप के वालिदे माजिद हज़रत अब्दुल्लाह रज़िल्लाहु तआला अन्हु तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम गए, वापसी के वक़्त मदीना तैय्यिबा में उतरे वहीं बीमार हो गए और पचीस साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

मशहूर क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा में दारे नाबिग़ा में दफ़्न हुए।

और एक क़ौल के मुताबिक़ मक़ाम अबवा में मदफ़ून हुए। (ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 123)

जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आग़ोशे मादर में दो माह के थे कि आप के वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इन्तिक़ाल हो गया तो फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, या अल्लाह तआला तेरा हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो यतीम हो गया, तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

اَنَا لَہٗ حَافِظٌ وَّنَصِیْرٌ 0

यानी मैं खुद अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हाफ़िज़ो नासिर हूँ। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 19, अनवारे मुहम्मदिया, स. 22)

और अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फरमाया ऐ फरिश्तो ! तुम मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़ो और आप के नाम से बरकत हासिल करो।

हज़रत इमाम जअफर सादिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के यतीम होने की क्या हिकमत है कि वालिदा माजिदा के शिकमे पाक में थे कि वालिदे माजिद इन्तिकाल फ़रमा गए, फिर छः साल के हुए तो वालिदए माजिदा विसाल फरमा गई फिर दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब दाग़े मुफ़ारिक़त दे गए, आप ने फ़रमाया इस लिये ताकि आप पर किसी मख़लूक़ का एहसान न रहे, सिर्फ़ अल्लाह तआला का एहसान आप पर रहे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एहसान सारी कायनात पर रहे। (सीरते नबवी, स. 36)

दौराने हमल कोई तकलीफ़ न हुई : हमारे हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमना तैय्यिबा, ताहिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि शुरूहमल से आख़िर तक मुझे कोई गिरानिये हमल जो औरतों को अय्याम हमल में मालूम होती है महसूस न हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया : لَقَدْ عَلِقْتُ بِهٖ فَمَا وَجَدْتُ لَهٗ مَشَقَّةً حَتّٰى وَضَعْتُهٗ ۝

मैं बारदार हो गई थी लेकिन अव्वल से आख़िर तक मैं ने कोई दिक़्क़त और मशक़्क़त महसूस न की। (तबक़ाते कुबरा, जि. 1, स. 98, अल बिदाया वन्निहाया, जि, 2 स.364, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 72, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 18, अनवारे मुहम्मदिया, स. 22)

आमदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बशारत

हज़रत आमना तैय्यिबा ताहिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे शिकम में थे तो किसी कहने वाले ने कहा कि : اِنَّكِ قَدْ حَمَلْتِ بِسَيِّدِ هٰذِهِ الْاُمَّةِ وَنَبِيِّهَا ۝

यानी आप इस वक़्त के सरदार और नबी की मां बनने वाली हैं।

(ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 81, मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 1, स. 122, अनवारे मुहम्मदिया, स. 23)

हूराने बहिश्त की हज़रत आमना को बशारत

हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने वक़्ते विलादत चन्द औरतों को देखा जो क़द व क़ामत और हुस्न व जमाल में बे मिसाल थीं उन्होंने मुझे चारों तरफ़ से घेर लिया और मैं हैरान थी कि यह कौन हैं और इन को किस ने मेरे हाल पर मुत्तलअ किया कि मेरे पास आई हैं। फिर उन में से एक ने कहा कि मैं फ़िरऔन की बीवी आसिया हूँ और दूसरी ने बताया कि मैं। (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मां) मरयम हूँ और तीसरी ने कहा कि मैं (हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की मां) हाजरा हूँ और यह हमारे साथ जन्नत की हूरें हैं। (सीरतुन्नबविय्यह जि. 1, स. 47)

मीलादुन्नबी पर रौशनी का एहतिमाम

हज़रात! जब हम ख़ुशी का इज़हार करते हैं और जश्न मनाते हैं चाहे वह ख़ुशी और जश्ने मुल्क की आज़ादी के मौक़े पर हो या बच्चे की पैदाइश पर हो या किसी भी नेअमत व दौलत के मिलने पर हो, हम अपनी हैसियत के मुताबिक़ रौशनी करते हैं, कुमकुमे लगाते हैं और इस तरह से अपनी ख़ुशी और जश्न का इज़हार करते हैं और गली कूचों, मुहल्लों और मकानों को सजा कर बुक़अए नूर बना देते हैं।

लेकिन वह अल्लाह तआला जिस की शान बहुत बन्लद वाला बाला है, उस ने सितारों को कुमकुमे बना कर ज़मीन के क़रीब कर दिया।

हज़रत उस्मान बिन अबी अल आस की वालिदा फ़ातिमा बिन्ते अब्दुल्लाह सक़फ़िया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जिस रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत हुई तो मैं हुज़ूर नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा के पास थी मैं ने देखा कि ख़ानए कअ़बा नूर से मुनव्वर हो गया है।

وَاِنِّىْ لَاَنْظُرُ اِلَى النُّجُوْمِ تَدْنُوْا حَتّٰى اِنِّىْ لَاَقُوْلُ لَتَقَعَنَّ عَلَىَّ

और सितारे ज़मीन के इतने क़रीब आ गए कि मुझे कहना पड़ा कि कहीं वह मुझ पर गिर न पड़ें। (ऐलानुबुव्वह, जि. 1, स. 273, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 2, स. 264)

हज़रात ! अल्लाह तआला की जानिब से मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशी में आसमान के तारों को महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मकान के इतने क़रीब कर दिया गया था कि देखने वाले यह समझने लगे थे कि कहीं यह तारे मुझ पर गिर न पड़ें और वह तारे मकान की जानिब झुके हुए थे और ख़ूब रौशन थे।

मद्दाहे मीलादे मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

और मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

तारे ढलक कर आए कासे कटोरे लाए
यानी बटेगा सदक़ा सुबहे शबे विलादत

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! साफ़ तौर पर ज़ाहिर हो गया कि ईदे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मौक़े पर ख़ूब ख़ूब चिराग़ां करना, मकानों पर और मोहल्लों में लाइटिंग करना, रोशनी करना, कुम कुमे लगा बिदअत व नाजाइज़ नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला की सुन्नत और उस की ख़ुशी का ज़रीआ हैं।

कअ़बा के छत पर झन्डा नसब किया गया

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साबित हो गया कि मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशी और मसर्रत का इज़हार अलल ऐलान होना चाहिये जैसा कि अल्लाह तआला की जानिब से मशरिक़ व मग़रिब में झन्डा नसब करके महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ की ख़ुशी व मसर्रत का इज़हार व ऐलान किया गया और कअ़बए मुअज़्ज़मा के ऊपर अलम (झण्डा) बलन्द कर के गोया बन्दों को जताया गया कि कअ़बए मुअज़्ज़मा जिस को बैतुल्लाह होने का शरफ़ हासिल है, उस पर ख़ुद ख़ुदाए तआला के हुक्म से हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने महबूब नबी, मक़बूल रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश और

तशरीफ़ आवरी के मौक़े पर खुशी और मसर्रत के इज़हार व बयान के लिये झन्डा नसब किया
खूब फ़रमाया आला हज़रत के छोटे भाई उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी अलैहिर्रहमा ने

रूहुल अमीं ने गाड़ा कअ़बा की छत पर झन्डा
ता अर्श उड़ा फरेरा सुबहे शबे विलादत

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने कअ़बा मुअज़्ज़मा को अपना घर फ़रमाया है, कअ़बा मुअज़्ज़मा को बैतुल्लाह, ख़ानए ख़ुदा होने का शरफ़ हासिल है और कअ़बा मुअज़्ज़मा पर इल्मे नसब करने का मतलब यह हुआ जो ख़ूब ज़ाहिर है कि ख़ुदाए तआला अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को पैदा फ़रमा कर इस क़द्र ख़ुशी और मसर्रत का इज़हार फ़रमाता है कि मशरिक़ व मग़रिब में और कअ़बा मुअज़्ज़मा पर झन्डा नसब किया गया ताकि बन्दों को मालूम हो जाए कि मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ख़ूद ख़ालिक़ो मालिक अल्लाह तआला इस क़दर ख़ुश है कि अपने घर कअ़बा मुअज़्ज़मा पर अलम (झन्डे) को नसब फ़रमाया।

हज़रात! हम लोग तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उम्मती और ग़ुलाम हैं। तो हम पर भी लाज़िम है कि मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मौक़े पर ख़ुशी और मसर्रत के इज़हार व बयान के लिये और ख़ुदाए तआला की ख़ुशी जान कर अपने घरों और मुहल्लों में झन्डे लगाएं और अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में कसीर इनआम और ढेरों इकराम के मुस्तहिक़ बन जाएं।

मीलादुन्नबी पर झन्डे लगाए गए

हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा माजिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह तआला ने मेरी निगाहों से तमाम परदे हटा दिये थे तो मैं ने देखा मशरिक़ से मग़रिब तक तमाम आलम को

وَرَأَيْتُ ثَلَاثَةَ أَعْلَامٍ مَضْرُوبَاتٍ عَلَمًا بِالْمَشْرِقِ وَعَلَمًا بِالْمَغْرِبِ وَعَلَمًا عَلَى ظَهْرِ الْكَعْبَةِ ۝

यानी और मैं ने तीन झन्डे देखे एक मशरिक़ में ग़ाड़ा गया और दूसरा मग़रिब में और तीसरा झन्डा कअ़बतुल्लाह की छत पर नसब किया गया। (खसाइसे कुबरा, जि. 1, स. 81, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 6, स. 298, अनवारे मुहम्मदिया, स. 22)

पूरा साल लड़के पैदा हुए : अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशी में तमाम औरतों को लड़के ही अता फ़रमाए।

وَاَذِنَ اللّٰهُ تِلْكَ السَّنَةَ لِنِسَاءِ الدُّنْيَا اَنْ يَحْمِلْنَ ذُكُوْرًا كَرَامَةً لِرَسُوْلِ اللّٰهِ

यानी अल्लाह तआला ने इस साल यह हुक्म फ़रमा दिया कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तकरीम में तमाम दुनिया की औरतें लड़कों को जन्म दें। (खसाइसे कुबरा, जि. 1, स. 80 मवाहिबुल्लुदुन्नियह, जि. 1, स. 124, अनवारे मुहम्मदिया, स. 22)

हज़रात ! गोया ख़ुद अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पैदा कर के ख़ुश है और बन्दों को इनआम दे रहा है। हम तो उम्मती हैं ग़ुलाम हैं हमें किस क़दर महबूबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलादे पाक पर ख़ुश हो कर ख़ूब ख़ूब इनआमो इकराम और तोहफ़ा बांटना चाहिये।

हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश 12 रबीउल अव्वल दो शम्बा (पीर) के दिन सुबह सादिक़ के वक़्त रात जा रही थी और दिन आ रा था।

उस्ताज़े ज़मन फ़रमाते हैं :

महरूम न रह जाएं दिन रात बरकतों से
इस वास्ते वह आया सुबहे शबे विलादत

قَالَ ذَاكَ يَوْمٌ وُلِدْتُ فِيهِ وَيَوْمٌ بُعِثْتُ أَوْ أُنْزِلَ عَلَيَّ فِيهِ ۝

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया इसी दिन (पीर के दिन) मैं पैदा हुआ और इसी दिन मेरी बेअ़सत हुई और इसी दिन मुझ पर क़ुरआन नाज़िल हुआ। (सहीह मुस्लिम, जि. 2, स. 819, सुनने कुबरा, जि. 4, स. 286)

मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पहली महफ़िल मजलिसे अम्बिया है

हज़रात ! रोज़े मीसाक़ मजलिसे अम्बिया में ख़ुद अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र बयान फ़रमाया मुलाहज़ा हो।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ

तर्जमा : और याद करो, जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उन का अहद लिया, जो मैं तुम को किताब और हिकमत दूँ, फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वह रसूल कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना। फ़रमाया क्योंकि तुम ने इक़रार किया ? और उस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया। सब ने अर्ज़ की हम ने इक़रार किया। फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में शामिल हूँगा। (पारा 3, रुकू 17 तर्जमा कन्ज़ुल ईमान, मीलादे नबविया, स. 18)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अम्बिया की मजलिस में अपने हबीब, हम बीमारों के तबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद का ज़िक्र तमाम आलम से पहले बयान फ़रमाया।

गोया ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ इस क़दर पाकीज़ा है कि बयान करने वाला अल्लाह तआला है और जिस मजलिस में ज़िक्रे पाक का बयान हुआ वह मजलिसे अम्बिया है।

और आक़ाए कायनात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ को बयान करना सुन्नते इलाहिया है और ज़िक्रे मीलादे पाक को सुनना सुन्नते अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम है। बड़े ख़ुश नसीब हैं सुन्नी मुसलमान जो मजलिसे मीलाद शरीफ़ का इनइक़ाद करके ज़िक्रे महबूबे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कर के सुन्नते ख़ुदा पर अमल करते हैं और ज़िक्रे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुन कर सुन्नते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर अमल पैरा नज़र आते हैं।

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

अल ग़रज़ इसी तरह हर ज़माने में हमारे हुज़ूर आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे मीलाद व तशरीफ़ आवरी होता रहा, हर क़र्न में अम्बिया व मुरसलीन आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से ले कर इब्राहीम व मूसा व दाऊद व सुलैमान व ज़करिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम तक तमाम नबी व रसूल अपने अपने ज़माने में मजलिसे हुज़ूर तरतीब देते रहे और मीलाद शरीफ़ की पाक महफ़िल कायम करते रहे यहाँ तक कि सारे नबियों और रसूलों में पिछला ज़िक्रे मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुनाने वाला, कुंवारी सुथरी, पाक बतूल हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का प्यारा बेटा जिसे अल्लाह ने बे बाप के पैदा किया यानी सय्यदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए फ़रमाते हुए:

مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ط

तर्जमा: और उन रसूल की बशारत सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लाऐंगे उन का नाम अहमद है। (पारा 28, रुकू 9, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यह है मजलिसे मीलाद शरीफ़

जब हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश, मीलाद शरीफ़ का वक़्त क़रीब आया तो तमाम आलम में महफ़िले मीलाद काइम थी यानी हर आलम वाले हमारे प्यारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश शरीफ़, मीलादे पाक का ज़िक्र कर रहे थे, अर्श पर महफ़िले मीलाद, फ़र्श पर महफ़िले मीलाद, फ़रिश्तों में महफ़िले मीलाद हो रही थी और सब के सब ख़ुशियाँ मनाते नज़र आ रहे हैं। (मीलादुन्नबविया, स. 19)

क्या ही ख़ूब फ़रमाया हम शबीहे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने:

रसूल उन्हीं का तो मुज़्दा सुनाने आए हैं
उन्हीं के आने की ख़ुशियाँ मनाने आए हैं

दुरूद शरीफ़:

जिब्राईल व मीकाई खुशियाँ मनाने हाज़िर आए हैं,. सर झुकाए दरे दौलत पर खड़े हैं, उस दूल्हा का इन्तिज़ार हो रहा है जिस के सदक़े में यह सारी बारात बनाई गई है, सातों आसमान में अर्श व फ़र्श पर धूम मची है।

हज़रात ! मिजाज़ी कुदरत व महब्बत वाला अपने महबूब की आदम पर बहुत कुछ खुशी व इंबिसात के सामान मुहय्या करता नज़र आता है तो मुहिब्बे हक़ीक़ी, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह तआल जो छः हज़ार साल पहले बल्कि लाखों बरस पहले से मुरादुल मुरादीन महबूब की विलादत पर क्या कुछ खुशी के सामान मुहय्या न फ़रमाएगा।

शैतानों को उस वक़्त जलन हुई थी और अ भी जो शैतान हैं ज़िक्रे मीलाद के वक़्त जलते नज़र आते हैं और हमेशा जलते रहेंगे। (मीलादुन्नबविया, स. 19)

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

खाक हो जाएं अदू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का सुनाते जाऐंगे

हज़रात ! गुलाम तो मीलाद शरीफ़ के ज़िक्र के वक़्त खुश हो रहे हैं
खूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

बाग़े तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बूहें बुलबुलें पढ़ती हैं कलमा नूर का

हज़रात ! गुलाम तो इस क़द्र खुश हैं जिस की कोई इन्तिहा नहीं। न ईदे रमज़ां में इस क़द्र खुश हुए न ईदे कुरबां में। जिस क़दर ईदे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में खुश हैं इस लिये कि उन गुलामों के हाथ ऐसा रहमत का दामन आया है कि यह सब गिर रहे थे उस ने बचा लिया, ऐसा संभालने वाला मिला कि उन की नज़ीर नहीं, मिसाल नहीं।

हज़रात ! एक आदमी एक को बचा सकता है, दो को बचा सकता है और अगर कोई शख़्स ज़्यादा ताक़त वर है तो ज़्यादा से ज़्यादा दस बीस को बचा लेगा। यहाँ करोड़ों, अरबों फिसलने वाले, गिरने वाले और बचाने वाले वही एक महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं :

اَنَا اٰخِذٌ بِحُجَزِكُمْ النَّارَ هَلُمَّ اِلَیَّ ط

यानी मैं तुम्हारा कमर बन्द पकड़े खींच रहा हूँ अरे मेरी तरफ़ आओ।

(मीलादुन्नबविया, स. 20)

आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अपनी बनी हम आप बिगाड़ें, कौन बनाए बनाते यह हैं
लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन, कौन बचाए बचाते यह हैं

शहज़ादए आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो गिर रहे थे उन्हें बांहों ने थाम लिया
जो गिर चुके यह उन को उठाने आए हैं
नसीब तेरा चमक उठा देख तू नूरी
अरब के चाँद लहद के सरहाने आए हैं

आला हज़रत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर, आकाए कायनात, रहमते आलम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश की ख़ुशी में फ़रिश्ते सातों आसमान में धूम मचा रहे थे और अर्शे आज़म ज़ौको शौक़ में हिलता था। एक झन्डा मशरिक़ और दूसरा मग़रिब और तीसरा कअ़बा की छत पर नसब किया गया और बताया गया (ऐलान हुआ) कि उन का दारुस्सलतनत कअ़बा है और उनकी सलतनत मशरिक़ से मग़रिब तक है और तमाम जहां उन्हीं की सलतनत और उन्हीं के ताबए फ़रमान है। (मीलादुन्नबवियह, स. 20)

अल्लाह, अल्लाह शहे कौनैन जलालत तेरी
फ़र्श क्या अर्श तक जारी है हुकूमत तेरी

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं:

फ़रिश्ते ख़्वाह नबी या रसूल हों सब को जो नेअ़मत मिली है हमारे हुज़ूर महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही के दस्ते अता से मिली है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह की नेअमत हैं

कुरआने अज़ीम ने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाम नेअ़मतुल्लाह ख़्वा, हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللَّهِ كُفْرًا (نِعْمَةَ اللهِ مُحَمَّدٌ ﷺ)

की तफ़सीर में हज़रत सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं य़ानी नेअ़मतुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं।
(बुख़ारी, जि. 2, स 565)

लिहाज़ा शाहे तैबा रहीमो करीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ का तज़किरा करना गोया हुक्मे इलाही है।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब चर्चा करो। (पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्जुल ईमान)

अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम की तशरीफ़ आवरी सब नेअ़मतों से आला नेअ़मत है।

(मुलख़्ख़सन मीलादुन्नबवियह, स. 16)

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

रब्बे आला की नेअ़मत पे आला दुरूद
हक़ तआला की मिन्नत पे लाखों सलाम

महफ़िले मीलाद में फ़रिश्ते भी बुलाते हैं

हज़रात ! एक हम और तुम ही नहीं बल्कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ के लिये फ़रिश्ते भी दावत देते हैं। फ़रिश्तों ने जहाँ भी महफ़िले मीलाद शरीफ़ होते देखी, एक दूसरे को बुलाते हैं कि आओ यहाँ हम सब का मतलबू है। फिर फ़रिश्ते उस जगह से आसमान तक छा जाते हैं और ज़िक्रे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में मशग़ूल रहते हैं। मुलख़्ख़सन (मीलादुन्नबवियह, स. 16)

ख़ूब फ़रमाया मुरीदे आला हज़रत जमील रज़वी अलैहिर्रहमा ने

है ज़िक्र मेरे लब पर हर सुबहो शाम तेरा
मैं क्या हूँ सारी ख़लक़त लेती है नाम तेरा

फ़रिश्ते रहमत की शीरीनी बांटते हैं

ऐ आशिक़ो ! तुम दुनिया की मिठाई बांटते हो और फ़रिश्ते मीलादे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशी में रहमत की शीरीनी तक़सीम करते हैं वह भी आम कि हर कस व नाकस को भी हिस्सा देते हैं : هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ ط
यानी लोगों के पास बैठने वाला भी बद बख़्त नहीं रहता। ख़ुलासा (मीलादुन्नबवियह, स. 17)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने मजलिसे मीलाद क़ाइम की

हज़रात ! मजलिसे मीलाद शरीफ़ आज से नहीं ब़ल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने ख़ुद क़ाइम की और बराबर क़ाइम करते रहे और उन की औलाद में बराबर महफ़िले मीलाद होती रही और कोई दिन ऐसा न था कि हजरत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ज़िक्रे हुज़ूर न करते हों, अव्वल रोज़ से ही अल्लाह तआला की तालीम थी हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के लिये कि ऐ आदम ! मेरे ज़िक्र के साथ मेरे हबीब व महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र किया करो।

(तलख़ीसे मीलादुन्नबवियह, स. 17)

ऐ ईमान वालो ! रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर और साबित हो गया कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ वही लोग क़ाइम करते हैं और ज़िक्रे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सुनते और सुनाते हैं जो बहुत ही ख़ुश नसीब होते हैं। जैसा कि ऊपर बयान हुआ कि फ़रिश्ते महफ़िल में दावत देते हैं और रहमत की शीरीनी तक़सीम करते हैं और हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने भी मजलिसे मीलाद शरीफ़ क़ाइम और अपनी नेक औलाद को महफ़िले मीलाद क़ाइम करने का हुक्म दिया।

हज़रात ! ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत बढ़ती है और क़ल्ब को सुकून हासिल होता है। जिस जगह पर मीलाद हो उस जगह पर रहमत की बरसात होती है। मीलाद की बरकत से दुखों के दिख दूर होते हैं , बीमारों को शिफ़ा मुफ़लिसों को रोज़ी की नेअ़मत मिलती है। बे औलादोंक़ो औलाद, बे मुरादों को मुराद हासिल होती है और मीलाद शरीफ़ की सब से बड़ी बरकत यह है कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार नसीब होता है।

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

वह लोग ख़ुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

ऐ ईमान वालो ! कलेजा थाम कर बहुत ही ग़ौर फ़िक्र के साथ वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी का अक़ीदा मुलाहज़ा हो।

वहाबियों के नज़दीक महफ़िले मीलाद हर हाल में नाजाइज़ व हराम है

वहाबियों, देवबन्दियों और तब्लीग़ियों के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि :

(1) मजलिसे मीलाद हर हाल में नाजाइज़ व हराम है। (फ़तावा रशीदिया, जि. 2, स. 83)

मशहूर देवबन्दी मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी लिखते हैं कि :

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद (कृष्ण) कन्हैया के जन्म की तरह है। (बराहीने क़ातिआ, स. 148, मतबुआ देवबन्द)

अहले हदीस कहलाने वालों के मुहद्दिस मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी के शागिर्द मौलवी अबू यहया मुहम्मद शाह जहाँ पूरी लिखते हैं कि :

(3) मजलिसे मीलाद शरीफ़, क़याम वग़ैरह बिदअत व शिर्क है।

(अल इरशद इला सबीलिर्रिशाद, स. 48)

अहले हदीस कहलाने वालों के हाफ़िज़ मुहम्मद जूना गढ़ी लिखते हैं कि :

(4) मीलादे मुहम्मदी के वाक़ेआत जो बयान किये जाते हैं सरासर झूटे हैं और किसी ख़्याल के गढ़े हुए हैं। (अख़बारे मुहम्मदी, देहली, स. 3, 15 जनवरी 1940)

हज़रात ! वहाबियों के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा आप हज़रात को मालूम हो गया है कि महबूबे ख़ुदा हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ हर हाल में नाजाइज़ व हराम है मगर यही वहाबियों के पीर मौलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा है कि बच्चों का जन्म दिन, सालगिरह मनाना जाइज़ व दुरुस्त है। मुलाहज़ा कीजिये।

(5) बच्चों की सालगिरह मनाना और उस की ख़ुशी में ख़ाना खिलाना जाइज़ व दुरुस्त है (फ़तावा रशीदिया, जि. 1, स. 74)

हज़रात ! वहाबियों, देवबन्दियों के ईमान के साथ साथ अक़्ल भी बरबाद हो चुकी है कि बच्चों का जन्म दिन मनाना जाइज़ और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पैदाइश व मीलाद मनाना, नाजाइज़ व हराम।

ख़ुदा जब दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है

ऐ ईमान वालो ! मुनाफ़िक़ों गुस्ताख़ों ने मीलादे पाक के बारे में किस क़दर दरीदा दहनी और बे अदबी का मुज़ाहरा किया है कि इस क़दर बे बाक और निडर तो यहूदो नसारा और मुश्रेकीन भी नहीं हैं, लिहाज़ा इन बे अदबों को पहचानिये और उन से दूर रहिये और अपने ईमान की हिफ़ाज़त कीजिये और यक़ीन रखिये कि हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र करना, नाजाइज़, बिदअत व शिर्क नहीं बल्कि कुरआन व सुन्नत और सहाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन के अक़वाल व अहवाल से ज़ाहिर और साबित है कि ज़िक्रे मीलादे पाक कारे ख़ैर और मुबारक व महबूब अमल है।

मीलाद शरीफ़ का बयान सुन्नते मुस्तफ़ा है

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़बर मिली कि आप के ख़ानदान को किसी ने बुरा भला कहा है।

हदीस शरीफ़ (1) : तो नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मैं कौन हूँ ? तो सहाबए किराम ने अर्ज़ किया कि आप अल्लाह तआला के रसूल हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैं अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ अल्लाह तआला ने मख़लूक़ पैदा की उन में सबसे बेहतर मुझे बनाया फिर मख़लूक़ के दो गिरोह किये, उन में मुझे बेहतर बनाया फिर उन के क़बीले किये और मुझे बेहतर क़बीला में बनाया फिर उन के घराने बनाए, मुझे उन में बेहतर बनाया।

فَاَنَا خَيْرُهُمْ نَفْسًا وَّخَيْرُهُمْ بَيْتًا तो मैं उन सब में अपनी ज़ात के एतिबार और घराने के एतिबार से बेहतर हूँ। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, 513)

हदीस शरीफ़ (2) : हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पीर के दिन रोज़ा रखने के बारे में पूछा गया।

فَقَالَ فِيْهِ وُلِدْتُ وَفِيْهِ اُنْزِلَ عَلَيَّ ط तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं उसी दिन पैदा हुआ और उसी रोज़ मुझ पर कुरआन नाज़िल हुआ (मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 179)

हदीस शरीफ़ (3) كُنْتُ نَبِيًّا وَّاٰدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ ط यानी मैं उस वक़्त भी नबी था जब आदम अलैहिस्सलाम रूह और जिस्म के दरमियान थे। (तिर्मिज़ी , जि. 5, स. 575)

और मैं तुम्हें अपने इब्तिदा की ख़बर देता हूँ मैं दुआए इब्राहीम का नतीजा हूँ और मैं बशारते ईसा हूँ और मैं अपनी वालिदा का ख़्वाब हूँ जो मेरी वालिदा ने मेरी विलादत के वक़्त देखा था।

وَوَضَعَتْهُ نُوْرًا اَضَاءَتْ مِنْهُ قُصُوْرُ الشَّامِ ه

और वालिदा माजिदा से मेरी विलादत के वक़्त एसा नूर ज़ाहिर हुआ था जिस की रौशनी से मुल्के शाम के मेहल्लात रौशन हो गए थे। (मुस्नद इमाम अहमद, जि. 4, स. 127, दलाइलुन्नबुव्वह, जि. 1, स. 83, मिश्कात शरीफ़, स. 505)

ऐ ईमान वालो ! अहादीसे करीमा से साबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी मीलाद का ज़िक्र फ़रमाया और हदीस शरीफ़ में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी विलादत के वक़्त रूनुमा होने वाले वाक़ेआत और ज़ाहिर होने वाले नूर का तज़किरा भी फ़रमा दिया। तो साफ़ तौर पर पता चला कि महफ़िले मीलाद को कन्हैया के जन्म की तरह कहने वाला काफ़िर व मुर्तद और मीलाद शरीफ़ के नूरानी वाक़ेआत को झूटा साबित करना और दज्जाल का गढ़ा हुआ कहना अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को झूटा और दज्जाल कहना हुआ और इस तरह की बात बद बख़्त मुनाफ़िक़ और मुर्तद जहन्नमी ही कह सकता है।

अइम्मा व मुहद्देसीन की नज़र में मीलाद शरीफ़ की अस्ल

मशहूर मुफ़स्सिर हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि शैख़ुल इस्लाम अल्लामा इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मीलाद शरीफ़ के बारे में फ़रमाते हैं कि ज़िक्र मीलाद शरीफ़ की अस्ल सही बुख़ारी, सहीह मुस्लिम से साबित है कि हुज़ूर आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ लाए तो आप ने यहूद को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यहूदियों से

पूछा कि तुम रोज़ा क्यों रखते हो ? तो यहूदियों ने जवाब दिया कि उस दिन अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को ग़र्क किया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कामयाबी दी, हम अल्लाह तआला की बारगाह में शुक्र बजा लाने के लिये उस का रोज़ा रखते हैं तो उस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि किसी खास दिन में अल्लाह तआला की जानिब से एहसान व इकराम के अता होने से या किसी मुसीबत केटल जाने पर अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाना चाहिये और हर साल उस दिन की याद ताज़ा करना ज़्यादा मुनासिब है। अल्लाह तआला का शुक्र नमाज़ व सज्दा, रोज़ा, सदक़ा और तिलावते क़ुरआने करीम और दूसरी इबादतों के ज़रीए बजा लाया जा सकता है।

وَاَیُّ نِعْمَةٍ اَعْظَمُ مِنَ النِّعْمَةِ بِبُرُوْزِ هٰذَا النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ الَّذِیْ هُوَ نَبِیُّ الرَّحْمَةِ فِیْ ذٰلِكَ الْیَوْمِ

यानी हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत से पढ़ कर अल्लाह तआला की नेअमतों में से कौन सी नेअमत है ? उस दिन (खुश हो कर) ज़रूर सज्दा बजा लाना चाहिये। (हसनुल मक़सद फ़ी अमलिल मुवल्लद, स. 63)

मशहूर मुहद्दिस इमाम नववी के उस्ताज़ इमाम अबू शाह का क़ौल

कि हमारे ज़माने के अच्छे कामों में एक अच्छा काम यह है कि जो मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दिन किये जाते हैं यानी सदक़ा व ख़ैरात व भलाई के काम करना और ख़ुशी का इज़हार करना और उस में इस बात का सुबूत है कि ज़िक्रे मीलाद करने वाले के दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व ताज़ीम है और अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करता है कि :

اَلَّذِیْ اَرْسَلَهٗ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ

यानी अल्लाह तआला ने रहमतुल लिल आलमी को देकर हम पर एहसान फ़रमाया। (सीरते हलबी, स. 100, सीरते नबवी, स. 45)

इमाम ज़हबी और इमाम इब्ने कसीर का क़ौल

इमाम ज़हबी और इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि नेक व सालेह बादशाह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के बहनोई अबू सईद मुज़फ़्फ़र हर साल बड़े तुज़्को एहतिशाम से महफ़िले मीलाद शरीफ़ मुनअक़िद करते थे।

وَكَانَ يَصْرِفُ عَلَى الْمَوْلِدِ فِيْ كُلِّ سَنَةٍ ثَلٰثَةَ مِئَةِ اَلْفِ دِيْنَارٍ

(अल बिदाया वन्निहाया, जि. 9, स. 18 सियरे आलामुन्नब्ला, जि. 16, स. 275)

और हर साल महफ़िले मीलाद शरीफ़ पर तीन लाख दीनार ख़र्च करते थे।

हज़रात ! जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम और मुहद्देसीने इज़ाम के अक़वाल व बयानात से साफ़ ज़ाहिर और साबित हुआ कि ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कारे ख़ैर महबूब अमल है।

बरकाते मीलाद शरीफ़

ऐ ईमान वालो ! ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ से रहमत व बरकत का नुज़ूल होता है और जिस मकान और जगह में महफ़िले मीलाद शरीफ़ मुनअक़िद होती है, वह मकान और जगह अनवारो बरकात का गहवारा बन जाते हैं।

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

वह लोग ख़ुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(३)

रबीउल अव्वल शरीफ़

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

बरकाते मीलादुन्नबी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ ۝ اَمَّا بَعۡدُ!

فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ۝

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

قَدۡ جَآءَکُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیۡنٌ ۝

तर्जमा : बे शक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।

(पारा 6, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ से रहमतो बरकत का नुज़ूल होता है और जिस मकान और जगह में महफ़िले मीलाद शरीफ़ होती है वह मकान और जगह अनवारो बरकात का गहवारा बन जाते हैं और मीलाद शरीफ़ पर ख़ुशी का इज़्हार करने से दुनिया व आख़िरत के ग़म व मुसीबत से आज़ादी मिलती है और जन्नते नईम का हक़दार भी बना दिया जाता है।

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

वह लोग ख़ुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

दुरूद शरीफ़ :

मुहद्दिस इमाम इब्ने जोज़ी का क़ौल

हमेशा मक्का मुअज़्ज़मा, मदीना मुनव्वरा, मिस्र, शाम, यमन, ग़रज़ मशरिक़ से मग़रिब तक अरब के तमाम बाशिन्दे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महफ़िलें क़ाइम करते आए हैं ज़ब रबीउल अव्वल का चाँद देखते हैं तो उन की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती।

وَيَهۡتَمُّوۡنَ اِهۡتِمَامًا بَلِيۡغًا عَلَى السَّمَاعِ وَالۡقِرَاءَةِ لِمَوۡلِدِ النَّبِيِّ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ)
وَيَنَالُوۡنَ بِذٰلِكَ اَجۡرًا جَزِيۡلًا وَّفَوۡزًا عَظِيۡمًا ۝

(अल मीलादुन्नबवी, स. 58)

और ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ पढ़ने और सुनने का ख़ुसूसी एहतिमाम करते हैं और बे पनाह अज्रो कामयाबी हासिल करते हैं।

मुहद्दिस हज़रत इब्ने जोज़ी का दूसरा क़ौल

مِنْ خَوَاصِّهٖ اَنَّهٗ اَمَانٌ فِیْ ذٰلِكَ الْعَامِ وَبُشْرٰی عَاجِلَةٌ بِنَیْلِ الْبُغْیَةِ وَالْمَرَامِ ۝

यानी मीलाद शरीफ़ की बरकतों में से यह है कि साल भर अमन रहेगा और मुरादें पूरी होने की ख़ुश ख़बरी है। (सीरते नबवी, स. 45)

इमाम शमसुद्दीन अस्सख़ावी का क़ौल

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि हमेशा अहले इस्लाम माहे मीलाद की रातों में तरह तरह के सदक़ात व ख़ैरात करते हैं और ख़ुशियों का इज़हार करते हैं और कसरत से नेकियाँ करते हैं जिस के सबब बे शुमार बरकतें अल्लाह तआला के अज़ीम फ़ज़्ल की शक्ल में ज़ाहिर होती हैं।

اَنَّهٗ اَمَانٌ تَامٌّ فِیْ ذٰلِكَ الْعَامِ وَبُشْرٰی تُعَجَّلُ بِنَیْلِ مَا یَنْبَغِیْ وَیُرَامُ ۝

यानी बे शक इस पूरे साल अमन ही अमन रहेगा और मुरादें पूरी होने की बशारत बहुत जल्द हासिल होगी। (अल मौलदुर्रवी फ़ी मौलदुन्नबी, स. 12, सबलुल हुदा वरिंशाद, जि. 1, स.362)

यानी बे शक उस पूरे साल अमन ही अमन रहेगा और मुरादें पूरी होने की बशारत बहुत जल्द हासिल होगी।

हज़रात! जलीलुल क़द्र अइम्मए किराम और मुहद्देसीने इज़ाम के अक़वाल व बयानात से रोज़े रौशन से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हुआ कि ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कारे ख़ैर और महबूब अमल है।

मीलाद शरीफ़ की बरकत से सुवैबा की आज़ादी

आक़ाए कायनात रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत हुई तो आप के चचा अबू लहब को उस की कनीज़ सुवैबा ने आकर बताया, मेरे आक़ा आप के मरहूम भाई अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के घर बहुत ही हसीन व जमील फ़रज़न्द पैदा हुआ है। अबू लहब इस ख़बर को सुन कर इस क़दर ख़ुश हुआ कि सुवैबा को आज़ाद कर दिया।

हज़रात ! सब मुसलमान जानते हैं कि अबू लहब ने आक़ाए कायनात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नुबुव्वत को तस्लीम नहीं किया था बल्कि उस लईन ने अपनी सारी ज़िन्दगी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुश्मनी में सर्फ़ कर दी थी। ऐसा सख़्त काफ़िर कि क़ुरआने मजीद में पूरी सूरह तब्बत यदा अबी लहब उस की मज़म्मत में उतरी बावजूद इस के हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ की ख़ुशी करने का जो फ़ायदा उस को हासिल हुआ मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हदीस शरीफ़ नक़्ल फ़रमाते हैं :

فَلَمَّا مَاتَ اَبُوْلَهَبٍ اُرِيَهٗ بَعْضُ اَهْلِهٖ بِشَرِّ حِيْبَةٍ قَالَ لَهٗ مَاذَا لَقِيْتَ، قَالَ اَبُوْلَهَبٍ

لَمْ اَلْقَ بَعْدَكُمْ خَيْرًا غَيْرَ اَنِّیْ سُقِيْتُ فِیْ هٰذِهٖ بِعَتَاقَتِیْ ثُوَيْبَةَ ۝

यानी जब अबू लहब मरा तो उस के बाज़ घर वालों ने उस को ख़्वाब में बहुत बुरे हाल में देखा, पूछा : क्या गुज़री? अबू लहब ने कहा : तुम से अलैहदा हो कर मुझे कोई भलाई नहीं मिली हाँ मुझे इस (कलमे की उंगली) से पानी मिलता है जिस से मेरे अज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो जाती है इस लिये कि मैं ने (इस उंगली के इशारे से) सुवैबा को आज़ाद किया था।

ऐ ईमान वालो ! ग़ौर फ़रमाइये अबू लहब काफ़िर था, हम मोमिन। वह दुश्मन, हम गुलाम। उस ने भतीजे के पैदा होने की ख़ुशी की थी न कि रसूलुल्लाह होने की। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत की ख़ुशी करते हैं।

हज़रात ! जब दुश्मन और काफ़िर को विलादत की ख़ुशी करने का इतना फ़ायदा पहुँच रहा है तो हम गुलामों को किस क़दर फ़ायदा पहुँचेगा।

दोस्तां रा कुजा कहनी महरूम
तो कि बा दुश्मनां नज़र दानी

मीलाद शरीफ़ से ख़ुश होने वाला जन्नत में दाख़िल किया जाएगा

हाफ़िज़ुल हदीस अबुल ख़ैर शमसुद्दीन जज़री रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं जब काफ़िर अबू लहब विलादत की ख़ुशी करने से इनआम दिया गया तो उस मुवह्हिद मुसलमान का क्या हाल होगा ? जो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ से ख़ुश हो कर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत में अपनी हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करता है। फ़रमाते हैं।

لَعَمْرِیْ اِنَّمَا يَكُوْنُ جَزَآءُهٗ مِنَ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ اَنْ يُّدْخِلَهٗ بِفَضْلِهِ الْعَمِيْمِ جَنَّاتِ نَعِيْمٍ ۝

यानी मेरी जान की क़सम अल्लाह की तरफ़ से उस की जज़ा यही होगी कि अल्लाह अपने फ़ज़्ले अमीम से उस को जन्नते नईम में दाख़िल फ़रमाएगा। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 139)

मशहूर आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी का क़ौल

यानी अबू लहब जो काफ़िर था और जिस की मज़म्मत में क़ुरआने पाक नाज़िल हुआ, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत की ख़ुशी और कनीज़ के दूध पिलाने की वजह से इनआम दिया गया।

फ़ारसी

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 19)

तो उस मुसलमान का क्या हाल होगा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत की ख़ुशी में महब्बत से माल ख़र्च करता और मीलाद शरीफ़ करता है।

मुसलमान हमेशा से महफ़िले मीलाद मुनअक़िद करते आए हैं

इमामुल मुहद्देसीन हज़रत अल्लामा क़स्तलानी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि हमेशा से अहले इस्लाम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत के महीना में महाफ़िले मीलाद शरीफ़ का एहतिमाम करते आए हैं,, खाना खिलाते हैं उस की रातों में सदक़ा व ख़ैरात करते हैं और इज़हारे मसर्रत और नेकियों में कसरत करते हैं, मीलाद शरीफ़ के चर्चे किये जाते हैं, हर मुसलमान मीलाद शरीफ़ के बरकात से फ़ैज़ियाब होता है।

وَمِمَّا جُرِّبَ مِنْ خَوَاصِّهٖ اَنَّهٗ اَمَانٌ فِيْ ذٰلِكَ الْعَامِ وَبُشْرٰى بِنَيْلِ الْبُغْيَةِ وَالْمَرَامِ ٥

यानी मीलाद शरीफ़ की मुजर्रब चीज़ों में से यह भी है कि जिस साल मीलाद मनाया जाए वह साल अमन से गुज़रता है और नेक मक़ासिद और दिली ख़्वाहिशात की फ़ोरी तकमील के लिये बशारत है। (अल मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 1, स. 147)

मीलाद शरीफ़ की बरकत से साल भर अमान रहेगा

आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रबीउल अव्वल शरीफ़ की बारह तारीख़ को ख़ुशी का इज़हार करना, मसाकीन को खाना खिलाना, महफ़िले मीलाद मुनअक़िद करना और कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना बड़ा सवाब है मीलाद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह तआला साल भर हिफ़्ज़ो अमान अता फ़रमाएगा और उस शख़्स के तमाम जाइज़ मक़ासिद पूरा फ़रमाएगा। (मुलख़्ख़सन मा सबत मिनस्सुन्नह, स. 59)

मीलाद शरीफ़ मनाने वाला हज़रत सिद्दीक़े अकबर के साथ जन्नत में होगा

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन यारे ग़ार व मज़ार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते थे कि जिस शख़्स ने हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ पढ़ने पर एक दिरहम भी ख़र्च किया वह शख़्स जन्नत में मेरे साथ होगा। (अन्नेअ़मतुल कुबरा, स. 7 मतबुआ तुर्की)

हज़रात ! सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह ! कितनी बरकतें और रहमतें हैं मीलाद शरीफ़ मनाने में दिरहम व दीनार ख़र्च करने और खिलाने, पिलाने पर कि उस शख़्स को जन्नत में अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का साथ नसीब होगा।

अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ और मीलाद शरीफ़ की ताज़ीम

अमीरुल मोमिनीन मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने हमारे रहीम व करीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ की ताज़ीम की उस शख़्स ने गोया इस्लाम को ज़िन्दा कर दिया। (अन्नेअ़मतुल कुबरा, स. 7 मतबुआ तुर्की)

हज़रत हसन बसरी और मीलाद शरीफ़ पर ख़र्च

अमीरुल औलिया हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : काश ! मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोनरा हो और मैं उसे हमारे हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ पढ़ने पर ख़र्च कर दूँ।

(अन्नेअ़मतुल कुब्रा, 8, मतबुआ तुर्की)

मीलाद शरीफ़ की बरकत से ईमान पर ख़ातिमा होगा

सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हमारे सरकार, उम्मत के ग़म ख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महफ़िले मीलाद शरीफ़ में हाज़िर हो और उस की ताज़ीम व तौक़ीर करे तो वह शख़्स ईमान के साथ कामयाब होगा। (यानी उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा)

(अन्नेअ़मतुल कुब्रा, स. 8 मतबुआ तुर्की)

अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी का क़ौल कि मीलाद शरीफ़ करना नबी की ताज़ीम है

मशहूर आलिमे रब्बानी हज़रत अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि मीलाद शरीफ़ करना भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम है :

وَقَالَ الْإِمَامُ السُّيُوْطِیْ يَسْتَحِبُّ لَنَا اِظْهَارُ الشُّكْرِ لِمَوْلِدِهٖ عَلَيْهِ السَّلَامُ ٥

और इमाम सियूती (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) ने फ़रमाया कि हमारे लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत पर शुक्र का इज़्हार करना मुस्तहब है। (रूहुल बयान शरीफ़, जि. 5, स. 661)

ऐ ईमान वालो ! सिद्दीक़ो उमर और अइम्मा व मुहद्देसीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के अक़्वाल व अहवाल से रोज़े रौशन से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हो गया कि शाहे तैबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लललाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र शरीफ़ करना बिदअत व गुनाह नहीं बल्कि सहाबा और बुज़ुर्गों की सुन्नत है और महबूबे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ जन्नत में रहने का ज़रीआ है और मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रमान की रोशनी में इस्लाम को ज़िन्दा करना है औरआशिक़े आले मुस्तफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशाद के मुताबिक़ ईमान पर ख़ातिमा का सबब है।

हज़रात ! इस लिये हम सुन्नी मुसलमान मीलाद शरीफ़ मनाते हैं और सुबहे क़ियामत तक मनाते रहेंगे। इन्शाअल्लाह तआला ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मिस्ले फ़ारस ज़लज़ले हों नज्द में
ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिये
कीजिये चर्चा उन्हीं का सुबहो शाम
जाने काफ़िर पर क़ियामत कीजिये
ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

हज़रात ! अब मैं उस अल्लामा और मुहद्दिस का क़ौल व बयान पेश करने जा रहा हूँ जिन को वहाबी, देवबन्दी और तब्लीग़ी भी अपना बुज़ुर्ग और पेशवा कहते हैं और अपनी किताबों में लिखते हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मीलादे मुस्तफ़ा मनाने से नबी ख़ुश होते हैं

हज़रत अल्लामा शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि आला अलैह अपने वालिद शाह अब्दुर्रहीम का वाक़िआ तहरीर फ़रमाते हैं कि :

मेरे वालिदे मोहतरम बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ के मौक़े पर हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का यौमे विलादत मनाते थे और खाना पका कर ग़ुरबा व मसाकीन में तक़सीम करते थे।

ऐसा वक़्त आया कि आप के पास खाना खिलाने का इन्तिज़ाम नहीं था और आप के पास सिर्फ़ दो पैसे थे, आप ने उन्हीं दो पैसे से भूने हुए चने मंगवाए और उन को मीलाद शरीफ़ की बरकात हासिल करने के लिये महफ़िल में तक़सीम कर दिये। जब रात को सोए तो हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार का शरफ़ हासिल हुआ और ख़्वाब में देखा कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने वही भूने हुए चने रखे हुए हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन की तरफ़ देख कर फ़रमाते हैं : نِعْمَ مَا فَعَلْتَ يَا عَبْدَ الرَّحِيْمِ ط

यानी ऐ अब्दुर्रहीम तूने बहुत ही अच्छा काम किया। (अद्दर्रुसमीन, स. 40)

हज़रात ! मीलाद शरीफ़ मनाने पर एतिराज़ करना बद दीनी और जहालत है और मुख़ालिफ़ को हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के बयान कर्दा वाक़िआ से सबक़ हासिल करना चाहिये कि मीलाद शरीफ़ में खाना खिलाना और तबर्रुक तक़सीम करना चाहे भुना हुआ चना क्यों न हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में बहुत ही महबूब व मक़बूल अमल है।

क्या खूब फ़रमाते हैं इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :

सुबह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का
मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का

मशहूर आशिक़े रसूल
अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी का क़ौल

لَازَالَ اَهْلُ الْاِسْلَامِ يَحْتَفِلُوْنَ بِشَهْرِ مَوْلِدِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ
وَيَعْمَلُوْنَ الْوِلَائِمَ وَيَتَصَدَّقُوْنَ فِيْ لَيَالِيْهِ بِاَنْوَاعِ الصَّدَقَاتِ وَيُظْهِرُوْنَ السُّرُوْرَ
وَيَزِيْدُوْنَ فِي الْمَبَرَّاتِ وَيَعْتَنُوْنَ بِقِرَاءَةِ مَوْلِدِهِ الْكَرِيْمِ ط

(अनवारे मुहम्मदिया, स. 29)

यानी हमेशा मुसलमान विलादते पाक के महीना में महफ़िले मीलाद मुनअक़िद करते आए हैं और दावतें करते हैं और उस माह की रातों में हर क़िस्म का सदक़ा करते हैं और ख़ुशी मनाते हैं नेकी ज़्यादा करते हैं और मीलाद शरीफ़ पढ़ने का बहुत एहतिमाम करते हैं।

हज़रत सय्यद अहमद ज़ेनी शाफ़ई
रहमतुल्लाहि तआला अलैह का क़ौल

عَمَلُ الْمَوْلِدِ وَاجْتِمَاعُ النَّاسِ لَهٗ كَذٰلِكَ مُسْتَحْسَنٌ ط

मीलाद शरीफ़ करना और लोगों का उस में जमा होना बहुत अच्छा है। (सीरते नबवी, स. 45)

हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

हज़रात ! देवबन्दियों के पीरो मुर्शिद हैं हाजी साहब वह मीलाद शरीफ़ के बारे में क्या कहते हैं मुलाहज़ा कीजिये।

फ़रमाया कि मौलिदा शरीफ़ तमाम अहले हरमैन (यानी मक्का व मदीना वाले) करते हैं इस क़दर हमारे लिये हुज्जत (दलील) काफ़ी है और हज़रत रिसालत पनाह का ज़िक्र कैसे मज़मूम हो सकता है। (शमाइमे इमदादिया, स. 94)

और हाजी साहब फ़रमाते हैं कि :

फ़क़ीर का मशरब यह है कि महफ़िले मौलूद में शरीक होता है बल्कि बरकात का ज़रीआ समझ कर हर साल मुनअक़िद करता हूँ और क़याम में लुत्फ़ और लज़्ज़त पाता हूँ। (फ़ैसला हफ़्त मस्अला, स. 9)

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमान की क़िस्मत पे लाखों सलाम
वह लोग खुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

मुख़ालिफ़ का एतराज़

हज़रात ! हमारा मुख़ालिफ़ कहता है कि इस्लाम में सिर्फ़ दो ईदें हैं मगर सुन्नी बरैलवी हज़रात ने तीसरी ईद भी गढ़ ली और बना ली यह बिदअत सुन्नी बरैलवी मौलवियों ने अपनी रोटी के लिये ईजाद किया है वर्ना शरीअत में सिर्फ़ दो ईदें ही हैं।

मुख़ालिफ़ से गुज़ारिश : वहाबी देवबन्दी, तब्लीग़ी हज़रात के लिये दर्से इब्रत है कि उन के पीरो मुर्शिद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह हर साल महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इनइक़ाद करते थे और बरकात हासिल करते और क़याम भी करते जिस में लुत्फ़ो लज़्ज़त हासिल करते, तो उन मुख़ालिफ़ों को कम से कम अपने पीरो मुर्शिद ही की मान कर तौबह कर लेना चाहिये।

हज़रात ! मुख़ालिफ़ के सवालों के जवाब के लिये यह आयते करीमा काफ़ी है, मुलाहज़ा फ़रमाइये कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने कलमा पढ़ने वाले हवारियों के लिये जन्नती खाना ख़्वाने नेअमत उतरने के लिये दुआ की।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ج

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! ऐ रब हमारे हम पर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वह हमारे लिये ईद हो, हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी। (पारा 7, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत ! ग़ौर व फ़िक्र का मक़ाम है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वालों पर जिस दिन जन्नत से ख़्वान उतरा यानी जन्नती खाना उतरा तो क़ुरआने करीम कहता है कि वह दिन उन के अगलों, पिछलों के लिये ईद बन गया और जिस रोज़ महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अमद शरीफ़ हुई, क्यों न वह दिन ईदों की ईद और ईदों की जान बन जाए जिस पर सब ईदें क़ुरबान हों।

उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

कुरबान ऐ दो शम्बे तुझ पर हज़ार जुमए
वह फ़ज़्ल तूने पाया सुबहे शबे विलादत
प्यारे रबीउल अव्वल तेरी झलक के सदक़े
चमका दिया नसीबा सुबहे शबे विलादत

दुरूद शरीफ़ :

मालूम हुआ कि यह कहना कि इस्लाम व शरीअत में सिर्फ़ दो ईदें ही हैं बिल्कुल ग़लत है बल्कि जुमा मुबारका के दिन को भी इस्लाम ने मुसलमानों के लिये ईद का दिन फ़रमाया है,

मुनाफ़िक़ों के लिये नहीं। मुलाहज़ा फ़रमाइये

जुमा का दिन भी ईद है : हमारे ग़म ख़्वार नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जुमओं में से एक जुमा में इरशाद फ़रमाया कि :

يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ إِنَّ هٰذَا يَوْمٌ جَعَلَهُ اللّٰهُ عِيْدًا ط ऐ मुसलमानों के गिरोह बे शक यह दिन वह है जिस को अल्लाह ने ईद बनाया। (मिश्कात शरीफ़, स. 123)

हज़रात ! मोमिनों के लिये मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि मुसलमानों के लिये जुमा का दिन ईद है।

जुमा और अरफ़ा का दिन ईद है : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने : اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ ط पढ़ा आप के पास एक यहूदी मौजूद था तो उस ने कहा कि अगर यह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम उस दिन को ईद बनाते।

فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَاِنَّمَا نَزَلَتْ فِيْ يَوْمِ عِيْدَيْنِ فِيْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَيَوْمِ عَرَفَةَ ○

यानी इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत जिस दिन उतरी उस दिन दो ईदें जमा थीं, एक जुमा और एक अरफ़ा का दिन। (तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 121)

हज़रात ! इन मुबार हदीसों से मालूम हुआ कि इस्लाम में सिर्फ़ दो ईदें ही नहीं हैं बल्कि जुमा का और अरफ़ा का दिन भी मुसलमानों के लिये ईद है। मगर सिर्फ़ मुसलमानों के लिये, मुनाफ़िक़ों के लिये नहीं।

ऐ ईमान वालो ! रमज़ान शरीफ़ में एक बा बरकत रात है जिस को शबे क़द्र कहते हैं, वह रात नुज़ूले क़ुरआन की रात है, अल्लाह तआला ने उस रात की अज़मत बयान की है।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ لا خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ○

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। (पारा 30, सूरह क़द्र, रुकू 22)

हज़रात ! रमज़ान शरीफ़ में एक बरकत वाली रात शबे क़द्र है जिस में क़ुरआने मजीद नाज़िल हुआ तो अल्लाह तआला ने शबे क़द्र की अज़मत व बुज़ुर्गी को हज़ार महीनों से अफ़ज़ल बयान फ़रमाया।

हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शबे क़द्र की बरकत व रहमत को बयान फ़रमाया :

مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ اِيْمَانًا وَّاِحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ ○

यानी जिस शख़्स ने शब्रे क़द्र में ईमान के साथ और सवाब की नियत से खड़े हो कर इबादत की तो उस के पहले के गुनाह बख़्श दिये गए। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 270)

हज़रात ! मुख़ालिफ़ लोग, नुज़ूले क़ुरआन का दिन तो मनाते हैं मगर साहिबे क़ुरआन, महबूबे रहमान मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दिन मनाने को बिदअत व गुमराही और फ़ुज़ूल ख़र्ची कहते नज़र आते हैं।

सच और हक़ बात तो यह है कि साहिबे क़ुरआन, महबूबे रहमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अगर तशरीफ़ न लाते तो न रमज़ान मिलता और न ही

क़ुरआन नसीब होता। आज हम को रमज़ान शरीफ़ जैसा मुबारक महीना मिला और क़ुरआने मजीद जैसी मुक़द्दस किताब नसीब हुई तो यह सब सदक़ा है साहिबे क़ुरआन, महबूबे रहमान, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लमकी आमदे पाक का, मीलादे पाक का।

वह जो न थे तो कुछ न था, वह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वह जहान की, जान है तो जहान है

शबे मीलाद, शबे क़द्र से अफ़ज़ल है

इमामुल मुहद्देसीन हज़रत अल्लामा क़स्तलानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं:

إِنَّ لَيْلَةَ مَوْلِدِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ اَفْضَلُ مِنْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ مِنْ وُجُوْهٍ ثَلَاثَةٍ

यानी बेशक मीलादे मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की रात तीन वुजूह की बुनियाद पर शब्रे क़द्र से अफ़ज़ल है। (अल मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 1, स. 145)

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ की रात वह मुबारक रात है जिस में महबूबे ख़ुदा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आमद हुई जब कि शबे क़द्र आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अता की गई, लिहाज़ा वह रात जिस को आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आमद का शरफ़ मिला उस रात से ज़्यादा अफ़ज़ल होगी जिस को आप के सदक़े से फ़ज़ीलत दी गई। पस उस में क़ोई नज़ाअ नहीं की।

(2) अगर शबे क़द्र की फ़ज़ीलत उस सबब से है कि उस में फ़रिश्तों का नुज़ूल होता है तो शबे मीलाद शरीफ़ को यह शरफ़ हासिल है कि उस में साहिबे क़ुरआन महबूबे रहमान, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुनिया में जलवा फ़रमा हुए जिस की वजह से शबे मीलाद शरीफ़ को वह शरफ़ व बुज़ुर्गी हासिल हुई जो शब्रे क़द्र की फ़ज़ीलत से कहीं ज़्यादा अफ़ज़ल वाला है।

लिहाज़ा शबे मीलाद शरीफ़ शबे क़द्र से अफ़ज़ल है।

(3) शबे क़द्र के सबब उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़ज़ीलत बख़्शी गई और शबे मीलाद से तमाम मौजूदात को फ़ज़ीलत से नवाज़ा गया, हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही हैं जिन को अल्लाह तआला ने रहमतुल लिल आलमीन बना कर भेजा तो उस रहमत को तमाम कायनात के लिये आम कर दिया गया।

पस साबित हुआ कि नफ़अ देने में शबे विलादत शबे क़द्र से बहुत ज़्यादा है।

लिहाज़ा शबे मीलाद शरीफ़ शबे क़द्र से अफ़ज़ल है।

मुहद्दिस, इमाम हज़रत अल्लामा ज़ुरक़ानी और हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल

नबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा ने भी इसी तरह लिखा है कि :

اِنَّ لَیْلَۃَ مَوْلِدِہٖ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ اَفْضَلُ مِنْ لَیْلَۃِ الْقَدْرِ مِنْ وُجُوْہٍ ثَلَاثَۃٍ ط

यानी बे शक मीलादे मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की रात तीन वुजूह की बुनियाद पर शबे क़द्र से अफ़ज़ल है। (ज़ुरक़ानी शरह मवाहिबुल्लदुन्नियह, जि. 1, स. 255, जवाहिरुल बिहार, जि. 3, स. 424)

हज़रत इमाम तहावी नक़्ल फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र अफ़ज़ल है फिर शबे मेअ़राज फिर शबे अरफ़ा फिर शबे जुमा फिर शबे बराअत फिर शबे ईद है और

اِنَّ اَفْضَلَ اللَّیَالِیْ لَیْلَۃُ مَوْلِدِہٖ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ط

यानी बे शक उन तमाम रातों में सब से ज़्यादा अफ़ज़ल शबे मीलाद शरीफ़ है।

(जवाहिरुल बिहार, जि. 3, स. 426)

मशहूर आशिक़े रसूल हज़रत इमाम यूसुफ़ इब्ने इस्माईल नबहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि : وَلَیْلَۃُ مَوْلِدِہٖ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ اَفْضَلُ مِنْ لَیْلَۃِ الْقَدْرِ ۝

(अनवारे मुहम्मदिया, स. 28)

और शबे मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शबे क़द्र से अफ़ज़ल है।

हज़रात ! शबे क़द्र की फ़ज़ीलत की वजह यह है कि उस रात में फ़रिश्ते उतरते हैं और रहमत नाज़िल होती है जिस की वजह से शबे क़द्र हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है।

हज़रात ! शबे क़द्र की फ़ज़ीलत की वजह यह है कि उस रात में फ़रिश्ते उतरते हैं और रहमत नाज़िल होती है जिस की वजह से शबे क़द्र हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है।

और हमारे प्यारे हुज़ूर नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी का यह आलम है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस की ज़ियारत के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शाम को उतरते हैं। और मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िरी देते हैं और बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करते रहते हैं।

तो मालूम हुआ कि फ़रिश्ते दरबारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़ादिम हैं तो ख़ादिम फ़रिश्ते जिस रात में उतरें तो वह रात हज़ार महीनों से अफ़ज़ल हो जाए और आक़ाए कायनात रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिस रात में तशरीफ़ लाए उस रात को कुछ फ़ज़ीलत न हो ?

हज़रात ! हक़ व सच तो यह है कि हमारे हुज़ूर, आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ की रात और महीना पर करोड़ों अरबों महीनों की अज़मत व बुज़ुर्गी कुरबान।

और एक ख़ास बात यह है कि शबे क़द्र की बरकत व रहमत फ़क़त अहले ईमान के लिये है और बाक़ी इन्सान उस से महरूम रहते हैं। मगर मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत व रहमत ईमान वाले भी हासिल करते हैं और सारी कायनात

हासिल करती नज़र आती है। उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं।

अर्श अज़ीम झूमे कअ़बा ज़मीन चूमे
आता है अर्श वाला सुबहे शबे विलादत
जिब्रील सर झुकाएं क़ुदसी परे जमाएं
हैं सरो क़द सितादा सुबहे शबे विलादत
किस दाब किस अदब से किस जोश किस तरब से
पढ़ते हैं उन का कलमा सुब्हे शबे विलादत

दुरूद शरीफ़ :

यौमे मीलाद, यौमे ईद है

आशिक़े रसूल, हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं :

وَرَحِمَ اللهُ اِمْرَأً اتَّخَذَ لَيَالِيَ شَهْرِ مَوْلِدِهِ الْمُبَارَكِ اَعْيَادًا لِيَكُوْنَ اَشَدَّ عِلَّةً عَلٰى مَنْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَعِنَادٌ

(मा सबत मिनस्सुन्नह, स. 60)

यानी अल्लाह तआला (खूब) रहमतों से उस शख़्स को नवाज़े जिस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मीलाद शरीफ़ के मुबारक महीना की रातों को ईद बनाया ताकि जिन लोगों के दिलों में बुग़्ज़ व इनाद की बीमारी है उन को सख़्त चोट लगे।

(2) फ़िदाए रसूल हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं : وَرَحِمَ اللهُ اِمْرَأً اتَّخَذَ لَيَالِيَ شَهْرِ مَوْلِدِهِ الْمُبَارَكِ اَعْيَادًا

यानी अल्लाह तआला उस शख़्स को रहमतों से मालामाल करे जिस शख़्स ने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मीलाद शरीफ़ के महीना की रातों को ईद बनाया। (अनवारे मुहम्मदिया, स. 29)

हज़रात! इन्साफ़, इन्साफ़ कि क्या सिर्फ़ दो ईदें हैं ? यह मुख़ालिफ़ का बहुत बड़ा धोका है अहादीसे तैय्यिबा और बुज़ुर्गों के अक़वाल व अहवाल से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि इस्लाम में सिर्फ़ दो ईदें ही नहीं हैं बल्कि जुमे का रोज़, अरफ़ा का दिन और मीलाद शरीफ़ के महीने की तमाम रातें और सारे दिन ईद के हैं।

ख़ूब फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन बरैलवी ने :

फूलों से बाग़ महके शाख़ों पे मुर्ग़ चेहके
अहदे बहार आया सुबहे शबे विलादत
आलम के दफ़्तरों में तरमीम हो रही है
बदला है रंगे दुनिया सुबहे शबे विलादत
आमद का शौर सुन कर घर आए हैं भिकारी
घेरे खड़े हैं रस्तह सुबहे शबे विलादत

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला ईद मनाने का हुक्म देता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ ! अल्लाह ही फ़ज़्ल और उसी की रहमत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें। (पारा 11, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत के मिलने पर ईद मनाना, ख़ुशी का इज़्हार करना हुक्मे इलाही है और शाहे तैबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी मोमिनों के लिये अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व रहमत है।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे क़रां के लिये

(3)
रबीउल अव्वल शरीफ़

तीसरा जुमा .... पहला बयान

अल्लाह की सबसे बड़ी नेअ्मत
मुहम्मदुर रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ○

तर्जमा : और अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब चर्चा करो। (पारा 30 रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है :

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ط

तर्जमा : और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर। (पारा 6, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! इन आयाते तैय्यिबा से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की नेअ़मतोंको याद करना और उन का ख़ूब चर्चा करना, अल्लाह तआला की ख़ुशी और रज़ा का ज़रीआ है। और नेअ़मते उज़मा (सबसे बड़ी नेअमत) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत जिस रोज़ हुई उस दिन ईद मनाना, ख़ुशी करना, इस आयए करीमा पर अमल हुआ।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है :

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ط

तर्जमा : और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला। (पारा 13, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! इस बात में कोई शक व शुबह नहीं कि सब दिनों और रातों को अल्लाह तआला ने ही पैदा फ़रमाया है और सब दिन अल्लाह तआला ही के हैं।

फिर वह कौन से दिन हैं जिन को ख़ास तौर पर याद करने और याद दिलाने का हुक्म दिया गया है। मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं कि अय्यामुल्लाह से वह दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर इनआमात फ़रमाए। अहले ईमान जानते हैं कि हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीमो करीम रसूल, अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की सब से ख़ास और बड़ी नेअ़मत हैं, बाक़ी तमाम नेअ़मत व दौलत उन्हीं का सदक़ा हैं, अगर वह न होते तो कुछ भी न होता।

आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह जो न थे तो कुछ न था, वह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वह जहान की, जान है तो जहान है

दुरूद शरीफ़ :

मुस्तफ़ा नेअ़मते ख़ुदा हैं : हज़रत इमाम बुख़ारी ने सही बुख़ारी, जि. 2, स. 566 और हज़रत अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती तफ़सीरे मज़हरी, जि. 6, स. 306 पर और हज़रत अल्लामा इमाम बदरुद्दीन ऐनी हन्फ़ी उमदतुल क़ारी, जि. 19, स. 6 पर और हज़रत अल्लामा इमाम फ़ासी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन मतालिउल मुसर्रात, स. 15 पर लिखते हैं कि अल्लाह तआला की नेअ़मत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं।

हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान अल जज़ोली रज़ियल्लाहु आला अन्हु लिखते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इस्म शरीफ़ नेअ़मतुल्लाह है। (दलाइलुल ख़ैरात, स. 35)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

तर्जमा : बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। (पारा 4, रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने हम पर ला तअ़दाद इनआम व इकराम फ़रमाए हैं और बे शुमार नेअ़मत व दौलत से हमको नवाज़ा है। ज़मीन को हमारे लिये बिछोना, आसमान को छत बनाया। बाराने रहमत नाज़िल फ़रमा कर ज़मीन में से तरह तरह के मेवाजात को उगाया। चाँद, सूरज, सितारे, जमादात, नबातात और हैवानात को हमारे लिये पैदा फ़रमाया। अल्लाह तआला रहमान व रहीम ने हम को इस क़दर नेअ़मत व दौलत से नवाज़ा है कि उन को शुमार नहीं कर सकते।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ط

तर्जमा : और अगर अल्लाह की नेअ़मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे।

(पारा 13, रुकू 17, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह तआला के इनआम व इकराम को, नेअ़मत व दौलत को, शुमार करना चाहें तो हर गिज़ शुमार नहीं कर सकते। यह उस रहमान व रहीम का ख़ास करम है कि उस ने हमें इन्सान बनाया फिर मुसलमान किया और सब से बड़ा एहसान व करम यह है कि उस ने अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहो वसल्लम का उम्मती और ग़ुलाम बनाया।

अल्लाह तआला का एहसाने अज़ीम

हज़रात ! रहमान व रहीम अल्लाह तआला ने बेशुमार नेअ़मतों से हम बन्दों को नवाज़ा मगर अल्लाह ने किसी नेअ़मत के अता करने के बाद यह नहीं फ़रमाया कि ऐ बन्दे ! मैं ने तुझ पर एहसान किया।

अल्लाह ने देखने के लिये आँख, सुनने के लिये कान, बोलने के लिये ज़बान और पकड़ने के लिये हाथ, चलने के लिये पैर और सोचने समझने के लिये अक़्ल व दिमाग़ अता फ़रमाए मगर किसी नेअ़मत पर एहसान नहीं जताया। मगर जब अपने महबूब नबी, प्यारे रसूल, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हम में मबऊस किया तो।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

तर्जमा : बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। (पारा 4, रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा, नबी रहमत, शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इस कायनात में जलवा गर होना रब तआला का सब से बड़ा इनआम और सब से बड़ा करम है कि उस ने हमें अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अता फ़रमा दिया और यह अल्लाह तआला का हम पर सब से बड़ा एहसान और सब से बड़ी महरबानी है।

एहसान मोमिनों पर

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तमाम आलम के लिये नबी बना कर भेजा। मगर एहसान सिर्फ़ मोमिनों पर फ़रमाया। यह इस लिये फ़रमाया कि आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आए तो कुल जहान के लिये हैं मगर क़ुर्बे ख़ास है सिर्फ़ मोमिमों के लिये।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि मैं ने मोमिनों पर एहसान फ़रमाया :

اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا ۝

यानी इनमें अपना रसूल भेजा। (पारा 4, रुकू 8)

हज़रात ! इस फ़रमाने रहमान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर हुआ कि जो लोग मोमिन हैं वह यह ईमान रखते हैं कि अल्लाह के हबीब हम बीमरों के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम में मौजूद हैं, वह हाज़िर व नाज़िर हैं, वह आक़ाए करीम हमारी जानों से भी ज़्यादा हम से क़रीब हैं।

महफ़िले मीलाद में रसूल की आमद !

यह महफ़िल है आक़ा के आने की महफ़िल
यह महफ़िल है क़िस्मत बनाने की महफ़िल

ऐ ईमान वालो ! खुब समझ लो कि तुम मदीने से दूर हो, मगर मदीने वाले तुम से दूर नहीं हैं इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ूब फ़रमाया कि

वह शरफ़ कि क़तअ़ हैं निसबतें, वह करम कि सब से क़रीब हैं
कोई कह दो यास व उम्मीद से, वह कहीं नहीं वह कहाँ नहीं

हज़रात ! ग़ौर करो कि तुम इस वक़्त ज़मीन पर बैठे हो, अगर मैं तुम से कहूँ कि तुम चाँद, तारों को देखो तो तुम नज़र उठा कर एक सेकन्ड से भी कम वक़्त में चाँद तारों तक पहुँच कर पलट भी आओगे तो जब तुम्हारी आँखों का नूर चाँद तारों तक जाना और पलट आना एक सेकन्ड से भी कम वक़्त में रोज़ाना लाखों बार हो सकता है तो वह ज़ाते अनवर जो नूरुन अला नूर, जो सारी ख़ुदाई का भी नूर है और ख़ुदा भी नूर हैं अगर वह मदीना से हमारी महफ़िले मीलाद में ज़लवा गर हो जाएं और फिर मदीना तशरीफ़ ले जाएं तो उस में क़ौन सा तअ़ज्जुब का मक़ाम है ? क्या हमारी आँखों के नूर से ख़ुदा का ख़ास नूर करोड़ों दर्जा अफ़ज़ल व आला नहीं है ? तो फिर एक पल भर में हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यिबा से महफ़िले मीलाद शरीफ़ में आ सकते और फिर जा सकते हैं।

हज़रत मौलाना आसी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

इश्क़ बाज़ो ! जो शहे हर दो सरा तक पहुँचा
वह ख़ुदा तक, वह ख़ुदा तक वह ख़ुदा तक पहुँचा
क्या न पहुँचेगा वह फ़रियाद को मेरी पल में
जो पलक मारने में अर्शे ख़ुदा तक पहुँचा

हज़रात ! इसी तरह यह भी ईमान रखो कि दरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह मुक़द्दस चौखट है कि यहाँ क़िस्मत बनती भी है और बिगड़ती भी है, जैसे कुरआने करीम से कुछ लोग गुमराह होते हैं और कुछ लोग हिदायत पाते हैं।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ط

तर्जमा : अल्लाह बोहतीरे को उस से गुमराह करता है और बोहतीरे को हिदायत फ़रमाता है। (पारा 1, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

बस यही हाल दरबारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का है।

हज़रात ! कौन नहीं जानता कि हज़रत बिलाल एक हबशी गुलाम थे, न कोई इज़्ज़त थी न कोई वक़ार, मगर जब यही बिलाल हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबार में पहुँच कर उन की मुक़द्दस चौखट से चिमट गए तो उन की

क़िस्मत बन गई कि यह जब मदीने की गलियों में चलते फिरते थे तो वह जन्नती सहाबा जिन की आँखों में नूरे बसारत के साथ साथ नूरे बसीरत भी था, जब वह हज़रते बिलाल के चेहरे को देखते थे तो ज़बाने हाल से पुकार उठते थे कि :

बद्र अच्छा है फ़लक पर न हिलाल अच्छा है
चश्मे बीना हो तो दोनों से बिलाल अच्छा है

दुरूद शरीफ़ :

और सअ़लबा बिन अबी हातिब दौरे सहाबा में इतने इबादत गुज़ार और मक़बूले ख़लाइक़ व बा वक़ार थे कि लोग महब्बत व प्यार में उन को हमामतुल मस्जिद यानी मस्जिद का कबूतर कहते थे। मगर जब उन्होंने ज़कात देने से इनकार कर दिया और रहमते आलम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन से रूठ कर उन को अपनी चौखट से ठुकरा दिया तो एक दम उन की क़िस्मत इस तरह बिगड़ गई कि ईमान की दौलत बरबाद हो गई और सअ़लबा सर पटक पटक कर मर गए मगर मरदूदियत का बद नुमा दाग़ उन की पेशानी से न धुल सका और सअ़लबा बिन हातिब दोनों आलम में ज़लील व ख़्वार हो गए।

अल्लाहु अकबर! सच कहा किसी आरिफ़ ने कि

ख़ुदा का क़हर है उन की निगाह का फिरना
गिरा जो उन की नज़र से संभल नहीं सकता

हज़रात! इन दोनों वाक़िआत से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व ग़ुलामी दोनों जहाँ की इज़्ज़त व सरदारी है।

डाक्टर इक़बाल ने क्या ही ख़ूब कहा है :

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ क्या चीज़ है लौहो क़लम तेरे हैं

और महबूबे ख़ुदा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अदावत और उन से दूरी, दोनों जहाँ की ज़िल्लत व रुसवाई है।

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो तेरे दर से यार फिरते हैं
दर बदर यूँ ख़्वार फिरते हैं

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे कराँ के लिये

(३)

रबीउल अव्वल शरीफ़

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

महफ़िले मीलाद में क़याम का सुबूत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ○

तर्जमा : और अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब चर्चा करो। (पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! आम बोल चाल में क़याम के मअ़ना खड़े हो कर सलातो सलाम पढ़ना है मगर कभी कभी क़याम की और भी हालतें होती हैं जो हदीस व सुन्नत से साबित हैं।

लिहाज़ा मुख़ालिफ़ का यह कहना कि अल्लाह के अलावा किसी के लिये क़याम करना बिदअत व शिर्क है। यह बिल्कुल ग़लत और गुमराही है। इस लिये कि इबादत में अस्ल चीज़ नियत है और नियत के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं।

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات

यानी आमाल का दारोमदार नियतों पर है। (सही बुख़ारी, जि. 1, पहली हदीस)

अगर क़याम इबादत है तो नमाज़ की बाक़ी हालतें क्या हैं ?

अगर हम नमाज़ की हालतों पर ग़ौर करें तो क़याम के बाद रुकूअ़, सज्दा, क़अ़दा भी नमाज़ का हिस्सा हैं, क़याम नमाज़ का हिस्सा है तो क़अ़दा भी नमाज़ का हिस्सा है, क़याम इबादत है तो क़ुऊद (नमाज़ में बैठना) भी इबादत है। क़याम अल्लाह तआला के लिये है तो क़अ़दह (बैठना) भी उसी के लिये है।

तो नमाज़ से अलग अल्लाह तआला के अलावा किसी और के लिये क़याम (खड़ा होना) अगर नाजाइज़ व हराम और बिदअत व शिर्क है तो अल्लाह के अलावा किसी और के लिये

क़अदह करना यानी किसी के सामने बैठना भी नाजाइज़ व हराम और बिदअत व शिर्क होना चाहिये। क्यों कि अगर क़याम अल्लाह के अलावा के लिये मना है तो क़अदह (बैठना) भी अल्लाह के अलावा के लिये मना होना चाहिये। मुख़ालिफ़ की इस मन्तिक़ पर अगर अमल कर लिया जाए तो दुनिया में क़ोई मुसलमान बच ही नहीं सकता, सब के स ब काफ़िर व मुश्रिक हो जाएंगे। इस लिये कि हर मुसलमान हर दिन किसी के लिये क़याम भी करता है और क़अदा (बैठना) भी करता नज़र आता है।

तो मालूम हुआ कि हमारे क़याम (खड़ा होना) और क़अदा (बैठने) म हमारी नियतों का दख़ल होता है।

नमाज़ में क़याम क़अदह अल्लाह तआला की बन्दगी और इबादत के लिये होता है।

और मीलाद शरीफ़ में क़याम व क़अदह अल्लाह तआला की बन्दगी और इबादत के लिये होता है।

और मीलाद शरीफ़ में क़याम व क़अदह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व महब्बत के लिये होता है।

क़याम का सुबूत सुन्नत से : हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बुलाने पर क़बीलए अवस के सरदार हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए और जब मस्जिद के क़रीब पहुँचे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अन्सार से फ़रमाया :

قُوْمُوْا اِلٰى سَيِّدِكُمْ اَوْ خَيْرِكُمْ ○

(सही बुख़ारी, जि. 4, स. 1511 सही मुस्लिम, जि. 3 1388)

यानी तुम लोग अपने सरदार या अपने से बेहतर के लिये (ताज़ीमन) खड़े हो जाओ।

हज़रात ! सही बुख़ारी की हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर साबित हुआ कि अपने से बड़े और अपने से बेहतर की ताज़ीम के लिये खड़ा होना अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ है और उन की ख़ुशी का ज़रीआ भी है।

(2) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि :

मैंने (हज़रत सय्यदा) फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ज़्यादा किसी का तौर तरीक़ा, रविश और नेक आदत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुशाबा (जैसा) नहीं देखा जिस वक़्त हज़रत फ़ातिमा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास हाज़िर होतीं तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के लिये खड़े हो जाते, उन की पेशानी चूमते और उन्हें अपनी जगह पर बिठाते।

وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا دَخَلَ عَلَيْهَا قَامَتْ مِنْ مَجْلِسِهَا فَقَبَّلَتْهُ وَاَجْلَسَتْهُ فِيْ مَجْلِسِهَا

यानी और जब हुज़ूर नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन

के यहाँ तशरीफ़ ले जाते तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये अपनी नशिस्त से खड़ी हो जातीं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हाथ चूमतीं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी जगह पर बिठातीं।

(तिर्मिज़ी, जि. 6 स. 175, अबू दाऊद जि. 4, स. 355)

ऐ ईमान वालो ! हदीस शरीफ़ से रोज़े रोशन से ज़्यादा ज़ाहिर और रोशन हुआ कि बेटी के लिये भी क़याम सुन्नत है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने करके बता दिया और इस नूरानी हदीस से एक ख़ास बात यह मालूम हुई कि :

فِعْلُ الْحَكِيْمِ لَا يَخْلُوْ عَنِ الْحِكْمَةِ

यानी हकीम का कोई फ़ेअल हिकमत से ख़ाली नहीं होता।

तो हमारे भी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नेक औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लिये क़याम फ़रमा कर क़ियामत तक के लिये नेकों की ताज़ीम करना, क़याम करना अपनी सुन्नत बना दिया। अब क़ियामत तक जो शख़्स किसी नेक जन्नती की ताज़ीम करेगा उस के लिये क़याम करेगा, उन की पेशानी को बोसा देगा तो सुन्नत पर अमल के सवाब का हक़दार होगा।

और हज़रत सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु आला अन्हा ने अपने बाबा जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते मुबारक को चूम कर हर बेटी के लिये बाप के हाथों को चूमना सुन्नत में दाख़िल कर दिया और हर उम्मती के लिये नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम के लिये क़याम करना भी सुन्नत में दाखिल फ़रमा दिया।

(3) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने (अन्सार) की औरतों और बच्चों को आते हुए देखा।

فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ط

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम (ख़ुशी से) खड़े हो गए।

(सही बुख़ारी, जि. 3, स. 1379, सही मुस्लिम. जि. 3, स. 1984)

जब हज़रत जअ़फ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हिजरते हबशा से मदीना तैय्यिबा आए।

تَلَقَّاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ فَعَانَقَهٗ وَقَبَّلَ مَا بَيْنَ عَيْنَيْهِ ط

तो नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आगे बढ़ कर उन से मुआनक़ा किया और उन की पेशानी को चूमा।

(तबरानी मुअ्जम कबीर, जि. 2, स. 108, तहतावी शरह मआनियुल आसार)

(5) इकरमा (इब्ने अबू जहल) जब मुसलमान हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बे कस नवाज़ बारगाह में हाज़िर हुए।

اِسْتَبْشَرَ وَوَثَبَ لَهٗ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمًا رِجْلَيْهِ فَرَحًا بِقُدُوْمِهٖ ○

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बहुत ख़ुश हुए और उन

के आने की ख़ुशी में ख़ड़े हो गए यानी खड़े हो कर उन का इस्तिक़बाल किया।

(हाकिम, अल मुस्तदरिक, जि. 3, 269 बेहक़ी, स 398)

(6) हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा आए।

فَقَامَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के लिये खड़े हो गए।

(तिर्मिज़ी, जि. 4, स. 450, अस्क़लानी, फ़तहुल बारी, जि. 11, स. 52)

हज़रात ! इन अहादीसे तैय्यिबात से खूब रौशन हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अन्सार की औरतों, बच्चों और हज़रत जाफ़अर व हज़रत इकरमा और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के लिये ख़ुश हो कर खड़े हुए और उन का इस्तिक़बाल फ़रमाया तो मालूम हुआ कि असागिर (छोटों) के लिये, ग़ुलामों के लिये भी ख़ुश हो कर उन के लिये क़याम करना और उन के इस्तिक़बाल के लिये खड़ा होना और उन से मुआनक़ा करना और उन की पेशानी को चूमना भी सुन्नत है।

हज़रात ! यह सारे क़याम जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने किये, बज़ाहिर अल्लाह तआला के अलावा अल्लाह तआला के बन्दों के लिये था। तो साबित हुआ कि अल्लाह के अलावा के लिये भी क़याम है जभी तो महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने किया।

तो हासिले कलाम यह हुआ कि जब नेकों और आम बन्दों के लिये क़याम करना और उन के इस्तिक़बाल में ख़ड़ा होना गुनाह व हराम नहीं है तो महबूबे ख़ुदा अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये क़याम करना गुनाह व हराम कैसे हो सकता है ? बल्कि मर्द मोमिन के लिये अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत में उन की मीलाद शरीफ़ की महफ़िल में क़याम करना बहुत बड़े अज्रो सवाब और अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी का ज़रीआ है।

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

वह लोग ख़ुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

दुरूद शरीफ़ :

सहाबए किराम से क़याम का सुबूत

हज़रात ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का मामूल था कि अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व अदब में क़याम फ़रमाते थे, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद में हमारे साथ बैठ कर गुफ़्तुगू फ़रमाते।
فَإِذَا قَامَ قُمْنَا قِيَامًا حَتَّى نَرَاهُ قَدْ دَخَلَ بَعْضَ بُيُوتِ أَزْوَاجِهِ

यानी फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम (जाने के लिये) क़याम फ़रमाते तो हम सब भी (अदब व ताज़ीम) के लिये खड़े हो जाते और उस वक़्त तक खड़े रहते जब तक कि हम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी अज़वाजे मुतहहरात में से किसी के घर में दाख़िल होता न देख लेते।

(अबू दाऊद, जि. 4, स. 247, असक़लानी, फ़तहुल बारी, जि. 11, स. 52)

ऐ ईमान वालो ! ख़ुश हो जाओ कि हम सुन्नी मुसलमान अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व अदब में क़याम करते हैं और सहाबए किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के गुलाम होने का सुबूत पेश करते हैं।

इस लिये कि सहाबए किराम मस्जिद शरीफ़ में अपने आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम महफ़िले पाक में बैठ कर गुफ़्तुगू करते लेकिन जब आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम घर जाने के लिये खड़े होते तो तमाम सहाबा अपने रहीमो करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व अदब के लिये खड़े हो जाते और उस वक़्त तक बा अदब खड़े रहते जब तक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने घर में दाख़िल न हो जाते तो मालूम हुआ कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम व अदब में क़याम करना, खड़ा होना सहाबए किराम का तरीक़ा और सुन्नत है और यही राह, राहे जन्नत है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, फ़िदाए सहाबा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने।

तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले

लहद में इश्क़े रूख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

हुज़ूर ने रज़ाई मां बाप और भाई बहन के लिये क़याम किया

एक रोज़ हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा फ़रमा थे कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रज़ाई बाप मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी चादरे नूर उन के लिये बिछाई, फिर रज़ाई मां आई तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने चादर शरीफ़ की दूसरी जानिब उन के लिये बिछा दी।

ثُمَّ أَقْبَلَ أَخُوهُ مِنَ الرَّضَاعَةِ فَقَامَ لَهُ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَأَجْلَسَهُ بَيْنَ يَدَيْهِ

यानी फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रज़ाई भाई आए तो

आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उन के लिये खड़े हो गए पस उन को अपने सामने बिठा दिया। (अबू दाऊद, सुनन, जि. 4, स. 337, असक़लानी, फ़तहुल बारी, जि. 11, स. 52)

बुज़ुर्गों का महफ़िले मीलाद में क़याम करना

(1) मुफ़्तिये मक्का मुअज़्ज़मा हज़रत अल्लामा सय्यद अहमद ज़ैनी देहलान शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

यानी हमेशा से लोगों की आदत जारी है कि जब विलादते पाक का ज़िक्र करते, सुनते हैं तो हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम के लिये क़याम करते हैं,, यह क़याम मुस्तहसन है क्यों कि इस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम है।

وَقَدْ فَعَلَ ذَالِكَ كَثِيْرٌ مِّنْ عُلَمَاءِ الْأُمَّةِ الَّذِيْنَ يُقْتَدٰى بِهِمْ

यानी और यह क़याम बहुत से उलमाए उम्मत ने किया है जो मुक़्तदा और पेशवा माने गए हैं।

(सीरते नबवी, स. 44)

(2) हज़रत इमाम अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआलां अलैहि व आलिही वसल्लम के इस्मे गिरामी के ज़िक्र के वक़्त ऐसे आलिमे उम्मत और इमामुल अइम्मा से क़याम साबित है जो दीन और तक़वा में मशहूर हैं जिन का नाम इमाम तक़ियुद्दीन सुबकी है।

وَتَابَعَهُ عَلٰى ذَالِكَ مَشَائِخُ الْإِسْلَامِ فِيْ عَصْرِهٖ

यानी और उस क़याम में बड़े बड़े मशाइख़े इस्लाम ने उन के ज़माने में इत्तिबाअ की।

(सीरते हलबी, जि. 1, स. 100)

बहुत बड़े बुज़ुर्ग हज़रत इमाम सुबकी का क़यामे ताज़ीम

बेशक हज़रत इमाम सुबकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास उन के ज़माने के बड़े बड़े उलमा हाज़िर थे, एक नअ़त ख़्वाँ ने हज़रत अबू ज़करिया सरसरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के वह अशआर पढ़े जो हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इश्क़ो महब्बत और तारीफ़ो तौसीफ़ से लबरेज़ थे जिस का कुछ खुलासा यह था कि :

मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तारीफ़ व तौसीफ़ के लिये अच्छे कातिब की तहरीर से सुनेहरी तहरीर चाँदी पर लिखवाया जाए तो भी कम है। अगर शरीफ़ इन्सान उन का ज़िक्र करते या सुनते ही खड़े हो जाएं हालते क़याम में सफ़ बस्ता या घुटनों के बल।

فَعِنْدَ ذَالِكَ قَامَ الْإِمَامُ السُّبْكِيُّ رَحِمَهُ اللّٰهُ وَجَمِيْعُ مَنْ كَانَ فِي الْمَجْلِسِ فَحَصَلَ أُنْسٌ كَبِيْرٌ بِذَالِكَ الْمَجْلِسِ وَيَكْفِيْ مِثْلُ ذَالِكَ فِي الْاِقْتِدَاءِ ۝

यानी तो उसी वक़्त (यह सुनते ही) हज़रत इमाम सुबकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े

हो गए और उन के साथ सब मजलिस वाले भी खड़े हो गए और मजलिस में एक वज्द तारी हो गया ऐसे इमाम और आलिम का क़याम करना हमारे लिये काफ़ी है।

हज़रात! अहादीसे तैय्यिबा और बुज़ुर्गों के अक़वाल व अहवाल से ख़ूब, ख़ूब वाज़ेह और साबित हो गया कि अल्लाह के अलावा के लिये भी क़याम किया जाता है जैसा कि पहले बयान किया जा चुका और मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महफ़िले मीलाद शरीफ़ में क़याम करना बहुत बड़े अज्रो सवाब का ज़रीआ और बहुत ही बड़े खुश नसीब शख़्स का अमल होता है।

हज़रात! नमाज़ में क़याम अल्लाह करीम की बन्दगी और इबादत कहलाती है।

और! महफ़िले मीलाद शरीफ़ में क़याम, नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम और महब्बत कहलाती है ख़ूब कहा है किसी आशिक़े सादिक़ ने

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

वह लोग ख़ुदा शाहिद क़िस्मत के सिकन्दर हैं
जो सरवरे आलम का मीलाद मनाते हैं

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(३)

रबीउल अव्वल शरीफ़

चौथा जुमा .... पहला बयान

बरकाते रज़ाअत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ○

तर्जमा : और अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब चर्चा करो। (पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े रसूल इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ज़रए शादाब व हर ज़रअ़ पर शीर से
बरकाते रज़ाअत पे लाखों सलाम

भाइयों के लिये तर्क पिस्तां करें
दूध पीतों की निस्फ़त पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बे हद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला की जानिब से हज़रते हलीमा चुन ली गईं

हमारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीम व करीम रसूल अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सात दिन अपनी वालिदा माजिदा हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का दूध नोश फ़रमाया और चन्द रोज़ हज़रत सुवैबा का दूध पिया और उस के बाद यह नेकी और बुज़ुर्गी हज़रत हलीमा

सअदिया को हासिल हुई कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दूध पिलाने के लिये चुन ली गईं थीं।

हज़रात ! अरब के दस्तूर के मुताबिक़ क़बीलए नबी सअद बिन ब्रक की चन्द औरतें जिन में एक हलीमा भी थीं मक्का में बच्चे लेने की ग़रज़ से आईं हलीमा के साथ उन के शोहर और उन के दूध पीते बेटे (अब्दुल्लाह) भी थे।

हज़रत हलीमा फ़रमाती हैं कि हम एक दराज़ गोश और एक लाग़िर ऊंटनी पर सवार होकर आए थे, ख़ुश्क साली की वजह से सवारी का चलना दुश्वार था और ख़ुद मेरा यह हाल था कि मुझ को इतना दूध भी नहीं आता था कि मेरे बच्चे का पेट भर सके।

चुनाँचे वह भूक की शिद्दत से हर वक़्त रोता और उस के रोने की वजह से न रात को चेन की नीन्द आती और न दिन को अवाम मिलता, मेरी सरारी लाग़िर और कमज़ोर थी जिस की वजह से मैं पीछे रह गई और दूसरी औरतें मुझ से पहले मक्का में पहुँच गई थी। इस लिये उन्होंने सब बच्चों को हासलि कर लिया और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किसी औरत ने नहीं लिया क्यों कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यतीम थे और जिस वक़्त मैं मक्का में पहुँची उस वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अलावा और कोई बच्चा न था और मैंने उस यतीम को ही ले लिया।

हज़रात ! ज़माना कहता है कि उन औरतों ने मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को नहीं लिया और मैं कहता हूँ कि मेरे मुस्तफ़ा करीम ने उन औरतों की ख़िदत को पसन्द नहीं फ़रमाया।

और दूसरी बात यह अर्ज़ करना चाहूँगा कि हज़रत हलीमा सअदिया ने मेरे मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत हलीमा सअदिया को अपनी ख़िदमत के लिये पसन्द फ़रमा लिया और उन का दूध नोश फ़रमा कर हमेशा के लिये इमामुल अम्बिया की रज़ाई मां होने का शरफ़ अता फ़रमाया।

चुनाँचे जब हलीमा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास गईं तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दूध से ज़्यादा सफ़ेद गर्म कपड़े में लिपटे हुए सब्ज़ हरीर पर सीधे सो रहे थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का रहमत वाला हाथ सीनए मुबारक पर था और आप से कस्तूरी की सी निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बू महक रही थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुस्नो जमाल का यह आलम था कि मैं देखते ही आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर फ़िदा और फ़रेफ़्ता हो गई। क़रीब होकर मैं ने अपना हाथ प्यार और नर्मी से आप के सीनए अनवर पर रख दिया तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया और अपनी मुबारक आँखें खोल दीं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँखों से एक नूर निकला जिस की शुआएं आसमान

तक पहुँचीं और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरी तरफ़ देखा। मैंने फ़र्ते महब्बत से मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुंह में दे दी तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से मेरी छाती में इस क़दर दूध उतर आया कि मैं तअज्जुब में पड़ गई। फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जितना चाहा पिया फिर मैं ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बाएं जानिब लिया तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बाएं छाती का दूध पीने से इनकार फ़रमा दिया और बराबर यही तरीक़ा मुबारक रहा कि हमेशा दाहिने छाती से पीते और बाएं छाती से नहीं पीते।

हज़रात! अल्लाह तआला ने बे शुमार उलूम के ख़ज़ानों को अता फ़रमा कर पैदा फ़रमाया था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जानते थे कि हज़रत हलीमा सअदिया का शीर ख़्वार बेटा अब्दुल्लाह भी है, इस लिये बाएं छाती का दूध आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस के लिये छोड़ देते थे गोया पैदा होते ही अद्लो इन्साफ़ की मिसाल क़ाइम फ़रमा दी और ज़माने को बता दिया कि मैं किसी का हक़ दबाने नहीं बल्कि अद्ल व इन्साफ़ के साथ हक़ वालों को उन का हक़ दिलाने आया हूँ।

हमारे हुज़ूर हज़रत हलीमा की गोद में

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि फिर मैं ने आप के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आप की वालिदा माजिदा हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से ले जाने की इजाज़त ली तो उन्होंने खुशी खुशी इजाज़त दे दी। हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने लख़्ते जिगर नूरे नज़र मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मेरे सुपुर्द किया और सेहत व सलामती के साथ वापस लौटने की दुआ की।

फिर हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप सल्लल्लाहुतआला अलैहि व आलिही वसल्लम को लेकर शोहर के पास आईं और शोहर को दिखलाया तो शोहर भी हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़्ता हो गए।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि हमारी वह ऊंटनी जो ख़ुश्क साली की वजह से एक क़तरह भी दूध न देती थी उस के थन दूध से भर गए और मेरे शोहर ने उस के दूध को ख़ुद भी पिया और मुझे भी पिलाया।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि ख़ुद मेरी छाती भी दूध से भर गई जिस को आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने और मेरे बेटे अब्दुल्लाह ने सैराब हो कर पिया और हम ने चैन व सुकून के साथ सो कर रात गुज़ारी।

यह बरकात देख कर मेरे शोहर ने कहा, हलीमा! ख़ुदा की क़सम यह सब बरकतें उस

मुबारक बच्चे के सबब से हैं और मैं उम्मीद करता हूँ कि बरकतों में और भी इज़ाफ़ा होगा।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि ऐसा ही हुआ कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल हमारा घर रहमतों व बरकतों का गहवारा बन गया।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरे शोहर ने मुझ को बताया कि हलीमा ख़ामोश रहो और इन बातों को छुपाओ क्यों कि मुझे मालूम हुआ है कि जिस दिन से यह बच्चा पैदा हुआ है उस दिन से उलमाए यहूद को खाना पीना, सोना और आराम करना हराम हो गया है। अगर उन को मालूम हो गया तो वह लोग उस बच्चे के साथ और तेरे साथ हसद करेंगे।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हम तीन दिन तक मक्का में ठेहरे रहे, फिर दूसरी औरतें जब वापस होने लगीं तो मैं भी हज़रत आमना तैय्यिबा के पास अल वदाई सलाम करने और वापस जाने की इजाज़त लेने गई तो मैं ने हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से कहा, ख़ुदा की क़सम तुम्हारे बच्चे से ज़्यादा बरकत वाला बच्चा कभी मैं ने देखा ही नहीं। हज़रत आमना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने नूरे नज़र को प्यार किया और मुझ को देते हुए ताकीद की कि इस बच्चे की तरफ़ से ख़बरदार रहना क्यों कि अनक़रीब उस की एक ख़ास शान होगी।

चुनाँचे हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपनी सवारी दराज़ गोश पर सवार हुई और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपनी गोद में बिठा लिया।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरी सवारी दराज़ गोश ने तीन सज्दे किये फिर अपना सर आसमान की जानिब उठाया और चली।

हज़रात! सवारी का सज्दा करना और आमसान की जानिब सर उठाना अल्लाह तआला की बारगाह में शुक्रिया अदा करना था कि उस ने मुझ को यह शरफ़ बख़्शा है कि दोनों जहाँ के सरदार महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आज मुझ पर सवार हैं।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से मेरी वही सवारी जो लाग़िर व कमज़ोर होने के सबब चल नहीं सकती थी, अब वह इस क़दर चुस्त और तवाना हो गई कि उन तमाम सवारियों को पीछे छोड़ कर आगे निकल गई जो मक्का से पहले की चली हुई थीं।

यह देख कर दूसरी औरतों ने तअज्जुब किया और मुझ से मालूम किया कि ऐ हलीमा! क्या यह वही सवारी है? वह सवारी तो इस क़दर लाग़िर व कमज़ोर थी कि उस से चला नहीं ज़ाता था और वह गिर गिर पड़ती थी, तो हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया कि सवारी तो वही है लेकिन सवार बदल गया है।

यह सब कुछ देख कर सारी औरतें तअज्जुब मैं पड़ गईं और बोलीं कि अब इस सवारी की अजीब शान है।

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मैं उन औरतों को जवाब दे चुकी और ख़ामोश हुई तो मैं ने सुना कि मेरी सवारी कुछ बोल रही है कि वाक़ई अब मेरी बड़ी और अजीब शान है कि अल्लाह तआला ने मुझ को मरने के बाद जिन्दा किया यानी मुझ को लाग़िर व कमज़ोर होने के बाद चुस्त और तवाना कर दिया है।

सवारी कह रही थी : ऐ बनी सअद की औरतो ! तुम ग़फ़लत में हो और तुम नहीं जानती कि :

مَنْ عَلٰى ظَهْرِىْ خِيَارُ النَّبِيِّيْنَ وَسَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنَ وَخَيْرُ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَحَبِيْبُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

यानी मेरे पीठ पर कौन सवार हैं, मेरी पीठ पर ख़ैरुल अम्बिया और रसूलों के सरदार और अव्वलीन व आख़िरीन में सब से बहतर हबीबे ख़ुदा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) सवार हैं। (तबकाते इब्ने सअद, स. 111, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, स. 145, मदारिजुन्नबुव्वत, जि. 2, स. 26, 27)

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं रास्ते में अपने दाएं बाएं से सुनती थी कि कोई कहने वाला कहता था कि

ऐ हलीमा ! तू (महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत से क़ब्ल) ग़रीब थी अब दौलत मन्द हो गई और तमाम औरतों से अफ़ज़ल व आला हो गई, उस के बाद मैं बकरियों के पास से गुज़री तो बकरियाँ दौड़ कर मेरे पास आ गईं और कहने लगीं ऐ हलीमा तू जानती है कि तो जिस को दूध पिला रही है वह अल्लाह के रसूल और औलादे आदम के सरदार हैं। (मदारिजुन्नबुव्वत, जि. 2, स. 26)

हुज़ूर की बरकत से सारा गांव मुअत्तर हो गया

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हम अपने घर पहुँचे तो बनी सअद का कोई घर ऐसा न था जो ख़ुश्बू से मुअत्तर न हुआ और मेरी बकरियाँ जो ख़ुश्क साली की वजह से इस क़दर दुबली और कमज़ोर हो गई थीं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से फ़रबा और मोटी हो गईं और सब के थन दूध से भर गए और हम सब उन का दूध निकाल कर ख़ूब सैराब होकर पीते।

हुज़ूर की बरकत से बीमार शिफ़ा पाते

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि हमारे क़बीलए बनी सअद के लोगों (और सारे गांव वालों) ने मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल बरकतों की बारिश देखी तो उन लोगों के दिलों में भी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व अज़मत पैदा हो गई और सारे गांव वालों को आप के मुबारक होने का यक़ीन हो गया यहाँ तक कि कोई आदमी या जानवर

बीमार होता तो उस बीमार को ले कर हमारे घर आ जाते और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते रहमत बीमार के जिस्म पे फेर देते तो वह बीमार तन्दुरुस्त हो जाता। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 145)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

शाफ़ी, नाफ़ी हो तुम, काफ़ी, वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोड़ों दुरूद

मुस्तफ़ा करीम सल्ललाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बचपन शरीफ़

अल्लाह अल्लाह वह बचपने की फबन
उस ख़ुदा भाती सूरत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हर हर अदा बे मिस्ल और ला जवाब है। हुज़ूर की विलादत शरीफ़ से क़ब्ल के अहवाल ला जवाब, हुज़ूर की मीलाद शरीफ़ ला जवाब, हुज़ूर का बचपन शरीफ़ ला जवाब, चुनाँचे मुहद्देसीने किराम बयान फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गहवारे को हिलाया करते थे यानी झूला झूलाया करते थे।

(ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 148, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 53)

हुज़ूर की उंगली जिधर जाती चाँद उधर ही झुक जाता

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैंने आप के बचपन शरीफ़ में ऐसे ऐसे वाक़ेआत देखे :

رَأَيْتُكَ فِي الْمَهْدِ تُنَاجِي الْقَمَرَ وَتُشِيْرُ اِلَيْهِ بِاِصْبَعِكَ فَحَيْثُ اَشَارْتَ اِلَيْهِ مَالَ قَالَ اِنِّيْ كُنْتُ اُحَدِّثُهُ وَيُحَدِّثُنِيْ ط

यानी मैंने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को झूले में चाँद से बात करते देखा और जिधर आप की उंगली का इशारा होता उधर चाँद को झुकते हुए देखा। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मैं चाँद से आर चाँद मुझ से बातें करता था। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 146, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 53)

अल्लाहु अकबर ! क्या शान है हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आप का बचन शरीफ़ है, आप महद में झूला झूल रहे हैं, आप की अंगुश्ते मुबारक जिधर जाती आसमान का चाँद भी उधर ही झुक जाया करता था गोया अल्लाह करीम ने मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये

चाँद को खिलौना बना दिया था कि महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस से खेला करें और महबूब नूर थे तो खिलौना भी नूर का था।

खूब फ़रमाया आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

चाँद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का

दुरूद शरीफ़ः

हुज़ूर चाँद के सज्दे करने की आवाज़ को महद में सुनते थे

(1) हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं महद में झूला झूलता था और जिस वक़्त चाँद अर्शे ख़ुदा के नीचे अल्लाह तआला की बारगाह में सज्दा करता था तो मैं उस के (सज्दा) में गिरने की आवाज़ को (महद) से सुनता था। (ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 53)

हुज़ूर, मां के शिकम से लौहे महफ़ूज़ पर चलने वाले क़लम की आवाज को सुनते थे

(2) एक मरतबा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैंने आप के बचपन शरीफ़ में आपको झूले में चाँद से बात करते देखा और जिधर आप की अंगली मुबारक का इशारा होता उधर चाँद को झुकते हुए देखा। उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ चालीस रोज़ की थी तो क्या इस वक़्त आप को वह सब वाक़ेआत मालूम हैं ? जो हालते बचपन में आप से ज़ाहिर हुए तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अब्बास मेरे चचा ! यह वाक़ेआत तो पैदाइश के बाद के हैं मैं तुम को उस वक़्त की बात बताता हूँ जब मैं अपनी मां के शिकम में था और रब तआला के हुक्म से फ़रिश्ता मेरी उम्मत के नामए आमाल को लिख रहा था तो लौहे महफ़ूज़ पर चलने वाले क़लम की आवाज़ को मैं अपने मां के शिकम में सुनता था और किस उम्मती का नामए आमाल लिखा जा रहा है उस उम्मती को भी मैं मादरे शिकम से देखता। (ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 53 मजमउल फ़तावा, जि. 2, स. 97)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किस क़दर बलन्द व बाला मक़ाम व मरतबा से नवाज़ा है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़मीन पर, मक्का शरीफ़ में, अपने घर में, झूला में तशरीफ़ फ़रमा हैं और हालते बचपन में शीर ख़्वारी के आलम में चाँद का आसमानों के ऊपर अर्शे ख़ुदा के नीचे अल्लाह तआला को जो सज्दा करता था तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चाँद के सज्दे में गिरने की आवाज़ को सुनते थे और लौहे महफ़ूज़ पर चलने वाले क़लम की चिर चिराहट की आवाज़ को भी मां के शिकम में सुनते थे। और उस उम्मती को भी देखते थे जिस की तक़दीर लिखी जा रही थी।

ऐ ईमान वालो ! अब अगर हम अपने घरों से अपनी महफ़िलों से अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पुकारते हैं या रसूलल्लाह ! कहते हैं तो यक़ीनन हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारी पुकार को, या रसूलल्लाह की सदा को सुनते हैं और पुकारने वाले गुलाम को भी देखते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर और साबित है।

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
कानि लअले करामत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

हुज़ूर का बचपन में चलना फिरना

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चलने फिरने लगे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दूसरे लड़कों के साथ नहीं खेलते बल्कि उन लड़कों को भी खेल कूद से मना फ़रमाते थे। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नश्वो नुमा हैरत अंगेज़ था। आप दो बरस की उम्र में चार बरस के मालूम होते थे और एक दिन में इतना पढ़ते थे जितना दूसरा बच्चा एक माह में बढ़ा करता है। और जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्र शरीफ़ दो बरस के क़रीब हुई तो एक दिन आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी रज़ाई बहन शीमा के साथ सख़्त दोपहर के वक़्त बाहर जानवरों की तरफ़ चले गए, चूँकि मैं आप का बहुत ख़याल रखती थी, जब मुझे मालूम हुआ तो मैं आप के पीछे गई तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शीमा के साथ वापस आ रहे थे, मैं ने शीमा को झिड़क कर कहा कि ऐसी धूप में इन को अपने साथ क्यों लाई है ? शीमा ने कहा अम्मी जान उन को धूप नहीं लगती है क्योंकि मैं ने देखा कि एक अब्र (बादल) पर बराबर साया किये रहा, जब यह चलते तो वह भी चलता और जब यह ठहर जाते तो वह भी ठहर जाता था और इस शान से हम यहाँ तक पहुँचे हैं। हज़रत हलीमा ने फ़रमाया बेटी क्या यह सच है ? शीमा ने कहा ख़ुदा की क़सम जो कुछ मैं ने बताया वह सच है। (खसाइसे कुबरा, जि. 1, स. 85 मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 26)

हज़रत हलीमा का इस्लाम और विसाल

इब्ने हजर ने बयान किया कि हज़रत हलीमा सअदिया अपने शोहर और बच्चों के साथ दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुईं और मदीना तैय्यिबा में विसाल हुआ और जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़ून हुईं उन की क़ब्र शरीफ़ मशहूर है जिस की ज़ियारत की जाती है। (सीरते नबवी, स. 55)

हज़रत आमिना तैय्यिबा का विसाल

हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अभी शिकमे मादर में थे कि आप के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह तिजारत की ग़रज़ से मक्का से शाम गए, वापसी पर मदीना तैय्यिबा में इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

और क़ौले मशहूर के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा में दारे नाबिग़ा में दफ़न हुए। (ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 123)

और जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्र शरीफ़ छः बरस को पहुँची तो आप की वालिदा माजिदा हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को और उम्मे ऐमन को साथ ले कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ननिहाल मदीना तैय्यिबा में क़बीला बनी नजार के पास तशरीफ़ लाई, एक महीना मदीना तैय्यिबा में इक़ामत फ़रमाई।

हदीस शरीफ़ में है कि जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मक्का शरीफ़ से हिजरत फ़रमा कर मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ लाए तो उन बातों और वाक़ेआत को याद फ़रमाते और बयान करते जो अपनी वालिदा माजिदा के हमराह मदीना मुनव्वरा में मुलाहज़ा फ़रमाए थे। जब उस घर को देखते जहाँ वालिदा माजिदा के साथ क़याम किया था तो बताते कि यह वह घर है जहाँ मेरी वालिदा रही थीं और यह भी बयान फ़रमाया कि उस वक़्त जब यहूदी मेरे पास आते और मुझ को देखते तो कहते कि यह आमिना का बेटा नबी है, मदीना तैय्यिबा हिजरत की जगह है।

एक माह के बाद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा माजिदा आप को हमराह ले कर मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो गईं लेकिन मक्का शरीफ़ और मदीना तैय्यिबा के दरमियान जब मक़ामे अबवा में पहुँचे तो वालिदा माजिदा का इन्तिक़ाल हो गया और उसी मक़ामे अबवा में क़ब्र बनी। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बचपन में छः साल की उम्र में अपनी प्यारी अम्मां जान को दफ़्न होते हुए देखा फिर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मे ऐमन के साथ मक्का वापस आए। (तबक़ाते इब्ने सअद, जि. 1, स. 164, सीरते नबवी, स. 56 मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 33)

हुज़ूर, दादा जान की किफ़ालत में

हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के विसाल के बाद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप की परवरिश के कफ़ील हुए, आप की बहुत ताज़ीम करते थे, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बग़ैर हरगिज़ खाना नहीं खाते थे और हर वक़्त अपने साथ रखते थे।

हुज़ूर, अबू तालिब की किफ़ालत में

प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्र शरीफ़ आठ बरस की थी कि आप के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक सो दस या एक सो चालीस साल की उम्र पाकर इन्तिक़ाल फ़रमाया।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसियत के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने चचा अबू तालिब की किफ़ालत में रहे और अबू तालिब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दिल व जान से चाहते थे और अपनी औलाद से ज़्यादा आप को अज़ीज़ रखते थे अपने पास सुलाते और हर वक़्त अपने साथ रखते थे।

अबू तालिब तंगदस्त थे माली हालत बहुत कमज़ोर थी।

हुज़ूर के बचपन के बरकात

(1) अबू तालिब और उन के घर वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बग़ैर खाना खाते तो सब भूके रहते और हुज़ूर के साथ मिल कर खाते तो सब खूब सेर हो कर खाते फिर भी खाना बच जाता।

(2) अबू तालिब दूध का प्याला सब से पहले हुज़ूर को पेश करते, हुज़ूर के पीने के बाद फिर वही प्याला तमाम घर वाले पीते और सब के सब सैराब हो जाते, जब कि वह प्याला सिर्फ़ एक आदमी के लिये होता था।

(3) हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बचपन में जबकि अभी आप की उम्र शरीफ़ आठ बरस की थी जब मक्का में क़हत पड़ा, तमाम क़ुरैश अबू तालिब के पास आए और बारिश तलब की। अबू तालिब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ले कर कअ़बा शरीफ़ में आए, अबू तालिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पुश्ते अनवर को कअबा की दीवार से लगा दिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी उंगली से आसमान की जानिब इशारा किया, उस वक़्त तक कोई बादल नहीं था, इशारा पाते ही चारों तरफ़ से बादल जमा हो गए और झमा झम बरसने लगे। (सीरते नववी, स. 79, मवाहिबुल्लदुन्नियह)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा रहमते आलमीन, शफ़ीए आसियां मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बचपन शरीफ़ में बरकत व रहमत का यह आलम था कि धूप में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर अब्र (बादल) साया करते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से सूखे दरख़्त हरे भरे हो गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से बकरियों के थन दूध से भर गए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से थोड़ा खाना सब घर वाले सैराब हो कर खाते और बच भी जाता।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत से एक छोटा सा प्याला जो एक आदमी को किफ़ायत करता मगर उस प्याले से सब घर वाले शिकम सेर हो कर पीते फिर भी दूध बच जाता और हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बचपन शरीफ़ में यह शान थी कि उंगली मुबारक का इशारा पाकर चाँद उधर झुक जाता जिधर उंगली मुबारक जाती।

अल्लाह, अल्लाह वह बचपने की फबन
उस ख़ुदा भाती सूरत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बे हद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(3)

रबीउल अव्वल शरीफ़

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

यादगारिये उम्मत और विसाल शरीफ़

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ○

तर्जमा : और अपने रब की नेअ़मत का ख़ूब चरचा करो। (पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम
जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं :

रब्बे हबली उम्मती कहते हुए पैदा हुए
हक़ ने फ़रमाया कि बख़्शा अस्सलातो वस्सलाम

तमहीद : अल्लाह तआला ने बन्दों की हिदायत व रहबरी के लिये अम्बियाए किराम व रसूलाने इज़ाम अलैहिमुस्सलाम की नूरानी जमाअत को मबऊस फ़रमाया। हर नबी और रसूल अलैहिमुस्सलाम अपनी अपनी उम्मत के दरमियान रुश्दो हिदायत का फ़रीज़ा बहुत ही हुस्नो ख़ूबी के साथ अन्जाम देते रहे। और उम्मत के साथ प्यार व महब्बत और शफ़क़त का बरताओ भी करते रहे। लेकिन एक लाख चौबीस हज़ार कम व बेश अम्बियबा व रुसुल में

एक भी नबी व रसूल ऐसे नहीं नज़र आते जो पैदा होते ही अपनी उम्मत की याद की हो और बख़्शिश की दुआ मांगी हो। हाँ हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शाने रहमत का यह आलम है कि

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें ग़रीबों की बर लाने वाला

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीम व करीम रसूल, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पैदा होते ही अल्लाह तआला की बारगाह में सज्दा किया और उम्मत की याद की और बख़्शिश की दुआ फ़रमाई। हयाते तैय्यिबा की शब व रोज़ उम्मत की याद में गुज़रते थे। ग़ारे सोर, ग़ारे हिरा में, शबे बराअत व शबे क़द्र, मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना तैय्यिबा में, मस्जिदे हराम व मस्जिदेनबवी में, सफ़र व हज़र में और बादे विसाल क़ब्र शरीफ़ में हम गुनाहगार उम्मत को याद किया और बख़्शिश की दुआ फ़रमाई और बरोज़ क़ियामत मीज़ान व पुल और हौज़े कौसर पर भी हमारी याद फ़रमाऐंगे और उस वक़्त तक क़रार न लेंगे जब तक उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए इसी को आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह ! की कसरत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हम ग़रीबों के आक़ा, हम फ़क़ीरों की सरवत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुआए ख़लील और नवैदे मसीहा बन कर बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ को सुबह सादिक़ के वक़्त तशरीफ़ ले आए।

इमामे अहले सुन्नत, सरकार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

पैदा होते ही सज्दा किया

हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पैदा हुए तो आप के साथ किसी क़िस्म की आलूदगी नहीं थी। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम निहायत ही पाक व साफ़, तैय्यिब व ताहिर थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से

ऐसी पाकीज़ा और तेज़ खुश्बू ज़ाहिर हुई कि सारा घर मुअत्तर हो गया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पैदा होते ही सज्दे में चले गए और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को चौदहवीं के चाँद की तरह चमकता पाया।

(मवाहिबुल लदुन्नियह, जि. 1, स. 26, ज़ुरक़ानी, जि. 1, स. 113, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 46)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पैदा होते ही अपने प्यारे रब तआला की बारगाह अहादयत व समदियत में सज्दा किया और शहादत की उंगली आसमान की जानिब उठा कर बाक़ी उंगलियों को बन्द करके यह ऐलान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआला की ज़ात एक है और अल्लाह तआला के अलावा कोई मअबूद नहीं और पैदा होते ही सज्दे करके यह भी बता दिया और समझा दिया कि सज्दा करने वाला किसी हाल में ख़ुदा नहीं हो सकता और यह भी पैग़ाम दिया कि अल्लाह तआला को जिस क़दर मैंने पहचाना न किसी नबी व रसूल ने पहचाना और न किसी फ़रिश्ते ने पहचाना और इसी तरह मेरे मक़ाम व मरतबा का हाल है कि मेरे मक़ाम व मरतबा को भी अल्लाह तआला के अलावा किसी ने नहीं पहचाना।

हदीस शरीफ़ : يَا اَبَابَكْرٍ لَمْ يَعْرِفْنِيْ حَقِيْقَةً سِوَا رَبِّيْ.

यानी ऐ अबू बक्र ! मेरी हक़ीक़त को मेरे रब के सिवा किसी ने नहीं पहचाना।

आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

और डाक्टर इक़बाल फ़रमाते हैं :

हज़ारों जिब्रईल उलझे हुए हैं गर्दे मन्ज़िल में
न जाने किस बलन्दी पे है काशाना मुहम्मद का

दुरूद शरीफ़ :

हमारे नबी को तमाम नबियों और रसूलों से ज़्यादा कमालात अता हुए

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान फ़रमाती हैं कि मैं ने सुना कि कोई मुनादी निदा कर रहा है जिस का ख़ुलासा यह है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाम को, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मक़ाम व मरतबा को, तमाम मख़लूक़ पहचान ले कि तमाम अम्बिया व रसूल को जो कमालात व मोअजिज़ात अलग अलग दिये गए थे वह सारे कमालात व मोअजिज़ात बल्कि उस से कहीं ज़्यादा अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व आलिही वसल्लम को अता फ़रमाए हैं।

हजरत आदम का खुल्क, हजरत शीस की मआरिफ़त, हजरत नूह की शुजाअत, हजरत इब्राहीम की खुल्लत, हजरत इस्माईल का ईसार, हजरत इस्हाक़ की रज़ा, हजरत सालेह की फ़साहत, हजरत लूत की हिकमत, हजरत याकूब की बशारत, हजरत अय्यूब का सब्र, हजरत यूनुस की ताअत, हजरत दाऊद की आवाज़, हजरत इलयास का वक़ार, हजरत यूसुफ़ का हुस्न, हजरत सुलैमान की सतवत, हजरत मूसा का जलाल, हजरत ईसा का जमाल। (ख़साइसे कुब्रा, जि. 1, स. 124, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि 2, स. 26)

हज़रात ! हत्ता कि तमाम अम्बिया व रुसुल अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम के कमालात व मोअजिज़ात को बल्कि उस से भी कहीं ज़्यादा एक ज़ात में जमा देखना हो तो सरकारे मदीना रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते नूर व रहमत में नज़ारा करो।

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यदे बेज़ा दारी
आंचे ख़ूबां हमह दारंद तू तन्हा दारी

खुदा ने एक मुहम्मद में दे दिया सब कुछ
करीम का करमे बे हिसाब क्या कहना

दुरूद शरीफ़ :

हमारे नबी ने पैदा होते ही لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ फ़रमाया : हज़रत सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब फ़रमाती हैं कि विलादत के वक़्त मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पैदा होते ही सज्दा किया और सज्दे से सर उठा कर ब ज़बाने फ़सीह फ़रमाया : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ और मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पुश्ते अनवर पर लिखा हुआ है لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
(शवाहिदुन्नबुव्वत, स. 25)

शबे विलादत अजीब व ग़रीब वाक़ेआत रूनुमा हुए

हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं शबे विलादत ख़ानए कअ़बा में था तो मैं ने देखा कि कअ़बा मक़ामे इब्राहीम की जानिब (और उसी जानिब मेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मकान शरीफ़ है जिस में सरकार की विलादत हुई। गोया कअ़बा मेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लमकी जानिब झुका और सज्दा किया) (शवाहिदुन्नबुव्वत, स. 25)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जिस के सज्दे को मेहराबे कअ़बा झुकी
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम

और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि कअ़बा के तमाम बुत ओन्धे गिर गए और सब से बड़ा बुत हुबले मुंह के बल गिरा, क़िसरा के महल में ज़लज़ला आ गया जिस से महल के चौदह मीनारे ज़मीन पर गिर गए, फ़ारस का आतिश कदा जो एक हज़ार साल से रौशन था बुझ गया। दरयाए सावा ख़ुश्क हो गया उस दरया के किनारे शिर्क व बुत परस्ती होती थी।

शयातीन का आसमानों पर आना जाना बन्द हो गया और बवक़्ते विलादत शैतान (इब्लीस) चीख़ा और रोया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, अल बिदाया वन्निहाया, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 1, स. 121, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 51)

ऐ ईमान वालो! वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों का अक़ीदा भी मुलाहज़ा कर लीजिये ताकि आप को अपने ईमान व अक़ीदा की हिफ़ाज़त के लिये उन से दूर रहने में आसानी रहे।

वहाबियों क अक़ीदा कि
मीलाद शरीफ़ के वाक़ेआत दज्जाल के गढ़े हुए हैं

वहाबियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों के हाफ़िज़ मुहम्मद जूना गढ़ी लिखते हैं कि क़िसरा के महल का वाक़िआ बे अस्ल है। बुतों का सर निगूं हो जाना, दरया का ख़ुश्क हो जाना, दरया का जारी हो जाना, रोशनी का देखना सब झूटे हैं और किसी दज्जाल के गढ़े हुए हैं।

(अख़बारे मुहम्मदी देहली, स. 3, 15 जनवरी सन् 1940)

हज़रात! हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसल्लम बुज़ुर्ग हैं, उन्होंने अपनी किताब मदारिजुन्नुबुव्वत में लिखा और हज़रत अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो कितने बड़े आशिक़े रसूल हैं कि आलमे बेदारी में 76 मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार किया। उन्होंने अपनी किताब ख़साइसे कुबरा, में लिखा कि मीलाद शरीफ़ के वक़्त अजीब व ग़रीब वाक़ेआत रूनुमा हुए। अगर यह वाक़ेआत झूटे और दज्जाल के गढ़े हुए होते तो यह अल्लाह वाले लोग अपनी किताबों में उन वाक़ेआत को हर गिज़ नहीं लिखते। अब उन वहाबियों के नज़दीक वह कौन लोग हैं ज़ो झूटे और दज्जाल हैं, जिन्होंने इन वाक़ेआत को गढ़ा और झूटा बयानकिया है, इन नूरानी वाक़ेआत को बयान करने वाले बरैली शरीफ़ के रहने वाले नहीं थे बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की फूफी हज़रत सफ़िया बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा थीं। हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी प्यारी मां हज़रत आमिना तैय्यिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने ख़ुद बहुत से वाक़ेआत बयान फ़रमाए जो विलादत के वक़्त ज़हूर पज़ीर हुए। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (सहाबी) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया और बहुत से अइम्मा व

मुहद्देसीन और औलिया व उलमा ने इन नूरानी वाक़ेआत को बयान फ़रमाया और अपनी किताबों में लिखा भी, मगर वहाबी देवबन्दी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ो इनाद है इस लिये मीलाद शरीफ़ को कन्हैया जन्म कहता है और मीलाद शरीफ़ के नूरानी वाक़ेआत को झूटा और दज्जाल के घड़े हुए बताता है।

हज़रात ! हक़ तो यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे हैं :

وَبِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ शाहिद है और मीलाद शरीफ़ की बहारें और बरकतें हम गुलामों के लिये हैं। वहाबी देवबन्दी को क्या लेना देना है।

आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

हज़रात ! हमारे सरकार, दोनों आलम के मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पैदा होते ही अल्लाह तआला की बारगाह में सज्दा किया और उम्मत को याद फ़रमाया और दुआ मांगी।

رَبِّ هَبْ لِي أُمَّتِي ۝ यानी ऐ मेरे रब मेरे उम्मत को बख़्श दे।

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

और मुरीदे आला हज़रत मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी फ़रमाते हैं :

रब्बे हबली उम्मती कहते हुए पैदा हुए
हक़ ने फ़रमाया कि बख़्शा अस्सलातो वसस्लाम

शबे मेअराज में यादे उम्मत

हज़रात ! इसी तरह हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शबे मेअराज में भी हम गुनाहगार को न भोले बल्कि इस मुबारक शब में भी उम्मत को याद किया और बख़्शिश की तमहीद बांधी।

वाक़िआ यूँ है कि जब हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के झुरमुट में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सवारी के लिये जन्नती बुराक़ पेशे ख़िदमत किया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब जन्नती सवारी बुराक़ पर सवार होने के लिये क़दमे नाज़ को उठाया और सवार होना चाहते थे कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को उम्मत की याद आ गई और उठे हुए क़दमे रहमत को रोक लिया और सवार नहीं हुए, तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया

और यादे उम्मत में मुबारक आँखें अश्कबार हो गईं तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बड़े अदब व एहतिराम के साथ शबे असरा के दूलहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया बुराक़ पर सवार होने से रुक गए। तो आक़ा करीम, मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जिब्राईल! (अलैहिस्सलाम) तुम्हारी महब्बत व ख़िदमत में कोई कमी नहीं है बल्कि मुआमला यह है कि मुझे मेरी उम्मत याद आ रही है।

ऐ जिब्राईल! (अलैहिस्सलाम) आज मेरे लिये मेरे रब तआला ने इस बाबे करम को वा फ़रमाया है, खोला है जो हर इस्तिक़बाल के लिये सफ़ बस्ता खड़े हैं मगर इस ख़ास नवाज़िश व इकराम के वक़्त मुझे मेरी उम्मत याद आ रही है। ऐ जिब्राईल अलैहिस्सलाम मेरी उम्मत गुनाहगार व कमज़ोर है और बरोज़े क़ियामत हर एक उम्मती को पुल सिरात से गुज़रना है। वह पुल सिरात जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है। गुनाहों का भारी बोझ सर पर लिये उस नाज़ुक पुल को मेरी उम्मत कैसे पार करेगी ?

मेरी उम्मत की बख़्शिश व नजात के मुआमले में जब तक मुझे ख़ुश ख़बरी नहीं सुनाई जाएगी उस वक़्त तक मैं बुराक़ पर सवार नहीं होउँगा। यह महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाज़ है अपने रहमान व रहीम रब तआला की बारगाह में :

रब तआला की रहमत ने आवाज़ दी ऐ ज़िब्राईल! मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पैग़ामे मसर्रत सुना दो कि उम्मत की फ़िक्र न करें कि आप के नाम लेवा गुलाम पुल सिरात से ऐसे गुज़र जाएंगे कि उन को ख़बर भी न होने पाएगी।

(मुलख़्ख़सन नुज़हतुल मजालिस, जि. 2 , स. 246)

आशिक़े सूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्राईल पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे हुज़ूर रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हर मौक़े पर उम्मत की याद फ़रमाई और रो रो कर बख़्शिश की दुआ मांगी

शबे मेअ़राज, रब तआला के क़ुर्ब में भी यादे उम्मत

हज़रात ! शबे मेअराज ला मकां में रब तआला के क़ुर्बे ख़ास में ज़ब हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हाज़िर हुए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे नबी ! (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) हम ने अपनी मर्ज़ी से आप (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) को नमाज़ का तोहफ़ा अता किया है, और मेरे प्यारे रसूल ! (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) आप की क्या मर्ज़ी है ? बोलिये। आप का रब तआला आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ आप को अता फ़रमाएगा।

तो हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने अपने रब तआला की बारगाहे समदियत में अर्ज किया :

الصَّالِحُوْنَ لِلّٰهِ وَالطَّالِحُوْنَ لِيْ

यानी ऐ अल्लाह तआला मेरे जितने नेक उम्मती हैं उन को तू लेले और मेरी उम्मत के गुनाहगारों को मेरे हवाले फ़रमादे। (मुलख्खसन नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, स. 306)

अल्लाहु अकबर ! इस शान की रहीमी करीमी और यादे उम्मत किसी और नबी में नज़र नहीं आती कि नेकों को अल्लाह तआला के हवाले और गुनाहगारों को अपने दामने करम में ले रहे हैं और उन को छुपा रहे हैं।

हज़रात ! मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐसा क्यों किया तो उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि :

ढूँढा ही करें सदरे क़ियामत के सिपाही
वह किस को मिले जो तेरे दामन में छुपा हो

हुज़ूर के ग़ार में जाकर उम्मती उम्मती पुकारना

हज़रात ! हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जब यह आयत उतरी :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ج

तर्जमा : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख पर न हो।

(पारा, 16, रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आप को मालूम है कि पुल सिरात की हक़ीक़त किया है ?

बाल से ज़्यादा बारीक, तलवार से ज़्यादा तेज़ और पाँच सौ बरस का रास्ता है। और पुल सिरात के नीचे दोज़ख है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हर एक को उस पुल से गुज़रना है।

जब यह आयत उतरी तो ग़म ख़्वारे उम्मत, फ़िक्रे उम्मत में बे क़रार हो गए और बहुत रोए कि मेरी उम्मत पुल सिरात से कैसे गुज़रेगी।

रहीमो करीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़मे उम्मत में इस क़दर रोए कि दामन तर हो गया और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उसी हालत में उठे मदीना तैय्यिबा के क़ीरब एक पहाड़ है जिस का नाम जबले तला है। उस के एक ग़ार में हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले गए और सर सज्दा में रख कर ग़मे उम्मत में ज़ार व कतार रो रहे हैं और उम्मत की बख़्शिश की दुआ फ़रमा रहे हैं।

और इधर मदीना तैय्यिबा में कोहराम मच गया, सहाबए किराम बे चैन व परेशान हैं कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहाँ तशरीफ़ ले गए ? ऐसा लगता

है कि मदीना तैय्यिबा में अन्धेरा छा गया हो, वह सहाबए किराम जिन को मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत के बग़ैर चैन नहीं आता था, जो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखे बग़ैर नहीं रह सकते थे वह सब बड़े बे क़रार और परेशान हैं कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहाँ तशरीफ़ ले गए ?

हज़रात ! तीन दिन गुज़र गए सहाबा बड़े परेशान थे, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरी हालत तो ऐसी हो गई जैसे कोई दीवाना होता है , मैं मदीना तैय्यिबा और उन के इर्द गिर्द हर एक से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पता पूछता था। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने मुझे बताया कि तीन दिन हो गए मैं ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहाड़ों क़ी तरफ़ जाते देखा था, उस के बाद मुझे मालूम नहीं हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मैं पहाड़ों कीत रफ़ चल पड़ा और हर मिलने वाले शख़्स से आप का पता पूछता था। फ़रमाते हैं,. एक चरवाहा मुझे मिला जो मदीना तैय्यिबा का रहने वाला था, मैं ने उस से पूछा, तो उस चरवाहे ने कहा, हाँ एक बात मैं जानता हूँ कि उस पहाड़ी में एक ग़ार है, उस में एक शख़्स शब व रोज़ रो रहा है और जब से उस के रोने की दर्द भरी आवाज़ को मेरी बकरियों ने सुना है तो खाना पीना छोड़ दिया है, मेरी यह भेड़, बकरियाँ न कुछ खाती हैं और न पीती हैं। यह भेड़, बकरियाँ इन्तिहाई परेशान और बे चैनी की हालतमें सरों को झुकाए उसी ग़ार की तरफ़ जाती हैं। मैं कई दिनों से परेशान हूँ आख़िर मुआमला क्या है ? मैं ने कई बार ग़ार में जाने की कोशिश की मगर जब ग़ार के क़रीब पहुँचता हूँ ख़ौफ़ व हैबत से मेरे क़दम पीछे हट जाते हैं और मैं वापस आ जाता हूँ। हाँ ग़ार में रोने वाला बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में रोता है और बार बार उम्मती उम्मती पुकारता है। चरवाहे की बातों को सुन कर हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु समझ गए कि इस क़दर ग़मे उम्मत में रोने वाले और उम्मती, उम्मती पुकारने वाले यक़ीनन हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी और रहीमो करीम रसूल,मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही होंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दौड़े और ग़ार के मुंह के पास पहुँच गए तो देखा कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जो सर सज्दा में रखे हुए ग़मे उम्मत में रो रहे हैं और उम्मत को याद कर के उम्मती, उम्मती पुकार रहे हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न पुकार कर और आप को न देख कर मदीना में क़ोहराम मचा हुआ है, सहाबा बे चैन व परेशान हैं। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम सर को सज्दे से उठाइये और मदीना तशरीफ़ ले चलिये। मगर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम सज्दे में रोते ही रहे। मदीना तैय्यिबा में सहाबा को भी ख़बर हो गई कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना मुनव्वरा के क़रीब एक पहाड़ी के ग़ार में सर सज्दे में रखे हुए और रो रो कर उम्मती, उम्मती पुकार रहे हैं।

अबू बक्र व उमर फ़ारूक़ और उस्मानो अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और बहुत से सहाबा ग़ार में हाज़िर हुए और सब ने मिन्नत व समाजत की लेकिन सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सर सज्दे में रखे हुए रो रहे हैं और उम्मती, उम्मती पुकार रहे हैं।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बुलाया जाए, उन को देख कर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सज्दे से सरे अनवर उठा लेंगे, इस लिये सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सारे रन्जो ग़म दूर हो जाते हैं।

सय्यिदा, ज़ाहिरा, तैय्यिबा, ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

चुनाँचे सहाबा के इसरार पर शहज़ादिये सुल्ताने कौनैन हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, मौला अली शेरे ख़ुदा और इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के साथ ग़ार में अपने बाबा जान की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ गुज़ार हुईं अर्ज़ करने लगीं ऐ बाबा जान! आप यहाँ तशरीफ़ ले आए और तीन दिन से हम आप की जुदाई और फ़िराक़ में परेशान हैं कि आप कहाँ चले गए। ऐ बाबा जान इन को देखो यह आप की आँख के नूर और दिल के चैन आप के नवासे हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) आप के लिये बेचैन हैं और आप को न देख पाकर खाना पीना भी छोड़ रखा है। ऐ बाबा जान! अपने हसन व हुसैन के लिये सर को सज्दे से उठाइये और मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ ले चलिये मगर फिर भी सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सज्दे से न उठे और बराबर गिरया व ज़ारी फ़रमाते रहे तो हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि ऐ बाबा जान! अगर आप ने सज्दा से सर न उठाया तो आप की बेटी फ़ातिमा भी सज्दा करने जा रही है और उस वक़्त तक सर को सज्दे से न उठाएगी जब तक क़ियामत न आ जाए। हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इतना अर्ज़ करना था कि ग़म ख़्वारे उम्मत, रसूले रहमत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सरे अनवर को सज्दे से उठा दिया और इरशाद फ़रमाया बेटी! फ़ातिमा अगर तू ज़िद न करती तो मैं अपने सर को सज्दे से उस वक़्त तक न उठाता जब तक कि रब तआला मेरी पूरी उम्मत की बख़्शिश व नजात न फ़रमा देता।

(तलख़ीस : नुजहतुल मजालिस, जि. 2, स. 447)

सरकार आला हज़रत फ़रमाते हैं :

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं

वक़्ते विसाल यादे उम्मत : हमारे आक़ा, महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ की घड़ी जब क़रीब आती है यानी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अलील हैं और नूरे नज़र, राहते जान हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप के पास मौजूद हैं। दरवाज़ा पर दस्तक की आवाज़ सुनाई देती है। हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने दरवाज़ा पर जाकर फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अलील हैं और आराम फ़रमा रहे हैं इस लिये आप फिर आइयेगा। उस तरह तीन मरतबा दरवाज़ा पर आवाज़ होती है और हर बार हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आकर यह बोल कर जाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बीमार हैं और आराम फ़रमा रहे हैं मगर तीसरी मरतबा दरवाज़ा पर आवाज़ होती है और हज़रत सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दरवाज़े पर जाने के लिये उठना ही चाहती थी कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी लख़्ते जिगर सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का हाथ पकड़ लिया और इरशाद फ़रमाया मेरी प्यारी बेटी फ़ातिमा जाओ और दरवाज़ा खोल दो यह आने वाले और कोई नहीं बल्कि मलकुल मौत अलैहिस्सलाम हैं। मगर बेटी यह तुम्हारे बाबा जान का घर है इस लिये क़ियामत तो आ सकती है मगर बग़ैर इजाज़त मलकुल मौत अलैहिस्सलाम घर के अन्दर दाख़िल नहीं हो सकते।

बे इजाज़त जिन के घर जिब्रील भी आते नहीं
क़दर वाले जानते हैं क़दरो शाने अहले बैत

अल मुख़्तसर : दरवाज़ा खोला गया हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलाम इजाज़त हासिल करते हैं। दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करते हुए बारगाहे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हाज़री के शरफ़ से बारयाब हुए और आने का मक़सद बयान किया कि अल्लाह तआला के हुक्म से हाज़िर हुआ हूँ और साथ में यह भी हुक्म है कि महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी होगी तो रूह क़ब्ज़ करना वर्ना नहीं। तो मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मर्ज़ी के मुताबिक़ अमल पर कार बन्द हों। जैसा हुक्म हो उस पर अमल किया जाए तो हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत यह तो बताओ कि मरने वाले को रूह के निकलते वक़्त इस क़दर तकलीफ़ होती है कि सत्तर हज़ार तलवारों का झटका एक तरफ़ इतनी ज़्यादा तकलीफ़ होती है तो ग़मख़्वार, उम्मत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत ! तो क्या ऐसी ही तकलीफ़ मेरी उम्मत को भी मौत के वक़्त होगी ? हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की हाँ ! या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम । तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़मगीन व बे क़रार हो गए और उम्मत के ग़म में रोते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत ! मैं तुम को उस वक़्त तक अपनी रूह को क़ब्ज़ करने की इजाज़त नहीं दूँगा जब तक तुम अल्लाह तआला की बारगाह से इस बात की ज़मानत न दिलवा दो कि क़ियामत तक मेरी उम्मत को मौत के वक़्त जो तकलीफ़ होने वाली है उन सारी तकलीफ़ों को मेरी रूह के क़ब्ज़ करने के वक़्त मुझ पर डाल दिया जाए मैं उन सारी तकलीफ़ों को बरदाश्त कर लूँगा मगर मेरी उम्मत को तकलीफ़ हो मैं किसी हाल में गवारा नहीं कर सकता । अल्लाह तआला का हुक्म होता है कि ऐ मलकुल मौत ! मेरे हबीब, उम्मत के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़ुश ख़बरी सुना दो कि आप की उम्मत की रूह ऐसे निकाल ली जाएगी जैसे गुन्धे हुए आटे से बाल निकाल लिया जाता है और उम्मती को ख़बर भी न होने पाएगी।

हज़रात ! रसूले रहमत, शफ़ीए उम्मत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ग़मख़्वारी, रहीमी, करीमी और महरबानी पर सो जान से फ़िदा और क़ुरबान हो जाओ कि अल्लाह तआला ने ऐसा मुशफ़िक़ व महरबान नबी और सरापा रहम व करम रसूल हम गुनाहगारे उम्मत को अता किया।

ख़ूब फ़रमाया : आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

क्यों कहूँ बे कस हूँ मैं क्यूँ कहूँ बेबस हूँ मैं
तुम हो और मैं तुम पे फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

करके तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ, तुम पे करोरों दुरूद

क़ब्रे अनवर में भी यादे उम्मत : मशहूर मुहक़्क़िक़ आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रक़म तराज़ हैं कि हज़रत अली, हज़रत अब्बास, हज़रत फ़ज़ल और हज़रत क़ुसुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम क़ब्रे अनवर व अक़दस में दाख़िल हुए थे और क़ब्रे मुबारक में सब से पीछे निकलने वाले हज़रत क़ुसुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, फ़रमाते हैं कि क़ब्रे अनवर व अक़दस में मैंने देखा कि रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लबहाए मुबारक हिल रहे हैं, मैं ने कान लगा कर सुना तो फ़रमा रहे थे : رَبِّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ

यानी बादे विसाल क़ब्र शरीफ़ में भी अपनी उम्मत को याद फ़रमा रहे थे और रब तआला की बारगाह में उम्मत की बख़्शिश की दुआ फ़रमा रहे थे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 751)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत से इस क़दर प्यार व महब्बत फ़रमाते थे कि पैदा

होते ही उम्मत की याद फ़रमाई और ज़ाहिरी हयाते तैय्यिबा में याद फ़रमाते रहे और बादे विसाल भी क़ब्रे अनवर में उम्मत को न भूले बल्कि उम्मती, उम्मती की सदा ज़बाने नुबुव्वत पर जारी रही।

इस लिये मोमिन व वफ़ादार उम्मती पर वाजिब है कि दिन हो कि रात हर वक़्त उठते बैठते सोते जागते या नबी या नबी का तराना गाता रहे और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम की सदा लगाता रहे।

खूब फ़रमाया आशिक़े रसूल प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

क़ियामत के दिन यादे उम्मत के लिये तीन मख़सूस मक़ाम

हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बरोज़े क़ियामत मुलाक़ात के लिये अर्ज़ किया यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अगर मुझे क़ियामत के दिन आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुलाक़ात करना हो तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम से किस जगह मुलाक़ात होगी ?

तो हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बरोज़े क़ियामत मेरी मुलाक़ात के लिये तीन मक़ाम होंगे।

हदीस शरीफ़ का ख़ुलासा यह है कि क़यामत के दिन मेरी मुलाक़ात के तीन मख़सूस मक़ाम होंगे जहाँ मैं मिल सकूँगा।

एक मक़ाम मीज़ान है जहाँ मेरी उम्मत के आमाल तोले जा रहे होंगे और मैं मीज़ान के पास इस लिये खड़ा रहूँगा कि अगर किसी उम्मती की नेकी कम होगी तो मैं अपनी नेकी दे कर उस कमी को पूरा कर दूँगा। (तिर्मिज़ी जामेअ सहीह, जि. 4, स. 621, मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जि. 3 : ,स. 178, फ़तहुल बारी, जि. 8, स. 644, मिश्कात शरीफ़, स. 413)

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

क्या ही ज़ौक़ अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह, वाह
क़र्ज़ लेती है गुनह परहेज़गारी वाह, वाह

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह बेकस पनाह में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अगर हम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मीज़ान पर न पाएं तो फिर कहाँ तलाश करें ? तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हौज़े कौसर पर होउँगा। मेरी उम्मत प्यासी होगी और मैं जामे कौसर पिलाता रहूँगा।

सरकार आला हज़रत प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा
पीते हम हैं पिलाते यह हैं

रब है मोअती यह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का है खिलाते यह हैं

हौज़े कौसर क्या है : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं एक दिन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने : اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ पूरी सूरत तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि कौसर क्या है ?

तो हमने अर्ज़ किया अल्लाह और उस का रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेहतर जानते हैं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया यह जन्नत में एक नहर है जिस में बहुत ज़्यादा ख़ैर है और वह एक हौज़े है जिस पर बरोज़े क़ियामत मेरी उम्मत (अपनी प्यास बुझाने के लिये) आएगी।

اٰنِيَتُهٗ عَدَدُ الْكَوَاكِبِ ط उसके बरतन सितारों की तादाद के बराबर हैं।

(सहीह मुस्लिम, जि. 1, स. 300, अबू दाऊद सुनन, जि. 1, स. 208)

हौज़े कौसर के बरतनों की तादाद

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! हौज़े कौसर के बरतनों की तादाद क्या है ?

तो हमारे प्यारे आक़ा मालिके हौज़े कौसर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَاٰنِيَتُهٗ اَكْثَرُ مِنْ عَدَدِ نُجُوْمِ السَّمَاءِ وَكَوَاكِبِهَا

यक़ीनन हौज़े कौसर के बरतनों की तादाद आसमान के सितारों और सय्यारों की तादाद से ज़्यादा। (सहीह मुस्लिम, जि. 4, स. 1798, इब्ने माजह सुनन, जि. 2, स. 1438)

और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स होज़े कौसर से पानी पी लेगा वह कभी प्यासा न होगा।

مَاؤُهٗ اَشَدُّ بَيَاضًا مِّنَ اللَّبَنِ وَاَحْلٰى مِنَ الْعَسَلِ ط

(सहीह मुस्लिम जि. 4, स. 1798, इब्ने माजह सुनन, जि. 2, स. 1438)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अगर हम हौज़ पर भी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न पाएं ? तो रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया पुल सिरात पर मिलूँगा, जिब्रईल के पर बिछे होंगे और मैं अपनी उम्मत के लिये दुआ कर रहा हूंगा।

رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ، رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ यानी ऐ मेरे रब मेरी उम्मत को सलामती के साथ गुज़ार दे।

हज़रात ! जब हम गुनाहगारों के हक़ में दुआ करने वाले हबीबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम होंगे तो फ़िक्र किस बात की ?

इसी लिये तो आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये
कि है रब्बे सल्लिम सदाए मुहम्मद

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! पुल सिरात बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है और हर एक को उस पर से गुज़रना है। पुल सिरात के ऊपर जहन्नम है और उसके पार जन्नत है।

(बुख़ारी किताबुल अज़ान, स. 278)

रसूलुल्लाह, उम्मत के हमराह पुल सिरात से सब से पहले गुज़रेंगे

فَاَكُوْنُ اَوَّلَ مَنْ يَّجُوْزُ مِنَ الرُّسُلِ بِاُمَّتِهٖ

(सही बुख़ारी, जि. 1, स.278, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, जि.4, स.220)

ऐ ईमान वालो ! सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से साफ़ तौर पर साबित हुआ कि तमाम रसूलों और उन की उम्मतों से पहले हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत के हमराह पुल सिरात से गुज़रेंगे और उस को उबूर करेंगे।

यानी पता चला कि सारे रसूलों से पहले हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जन्नत में दाख़िल होंगे और तमाम उम्मतों में सब से पहले आप सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी।

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा साहिब शफ़ाअत, मालिके जन्नत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنَّ الْجَنَّةَ حُرِّمَتْ عَلَى الْاَنْبِيَاءِ كُلِّهِمْ حَتّٰى اَدْخُلَهَا وَحُرِّمَتْ عَلَى الْاُمَمِ حَتّٰى تَدْخُلَهَا اُمَّتِیْ ط

यानी बे शक जन्नत तमाम अम्बिया पर हराम कर दी गई है जब तक मैं जन्नत में दाख़िल न हो जाऊँ और जन्नत तमाम उम्मतों पर हराम है जब तक मेरी उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए। (तबरानी मुअज्जम औसत, जि. 1, स. 289, मजमउज़्ज़वाइद, जि. 10, स. 69)

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जाएं न जब तक ग़ुलाम ख़ुल्द है सब पर हराम
मिल्क तो है आप का तुम पर करोड़ों दुरूद

एक मख़सूस दुआ उम्मती के लिये

हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि हमारे प्यारे आक़ा महबूबे दावर, शाफ़ेए मेहशर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने ख़ास करम से तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम को एक मक़बूल दुआ अता की है, चाहे दुनिया में मांग लें या आख़िरत में। हर नबी ने वह मक़बूल दुआ दुनिया ही में मांग ली और हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि :

وَاِنِّیْ اَخْتَبَأْتُ دَعْوَتِیْ شَفَاعَةً لِّاُمَّتِیْ فِی الْاٰخِرَةِ

यानी मैं ने उस मक़बूल दुआ को क़ियामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत व बख़्शिश के लिये महफ़ूज़ कर रखा है। (सही बुख़ारी, जि. 5, स. 2323: सहीह मुस्लिम, जि. 1, स. 188)

ऐ ईमान वालो ! मुस्तफ़ा जाने रहमत, शफ़ीए उम्मत सरापा करम ही करम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर तन, मन, धन और जानो दिल के साथ फ़िदा और क़ुरबान हो जाओ कि ऐसा मुशफ़िक़ व महरबान नबी और रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम किसी और उम्मत को न मिला। अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़्ल से हम गुनाहगारों को नसीब हुए हैं।

आशिक़े रसूल, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका ही सही भारी भरोसा तेरा

एक मैं क्या मेरे इसियाँ की हक़ीक़त कितनी
मुझ से सो लाख को काफ़ी है इशारा तेरा

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

सारे नबी मिंबर पर बैठेंगे और मैं खड़ा रहूँगा

शाहे तैबा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि

बरोज़े क़ियामत तमाम अम्बिया के लिये सोने के मिम्बर होंगे और वह सब उस पर बैठे होंगे और मैं मिम्बर पर नहीं बैठूँगा बल्कि मैं अपने रब तआला की बारगाह में खड़ा रहूँगा इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत में भेज दिया जाए और मेरे बाद मेरी उम्मत (बे यारो मददगार) रह जाए चुनाँचे मैं रब तआला की बारगाह में अर्ज़ करूँगा।

يَارَبِّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ

यानी ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरी उम्मत को बख़्शिश दे मेरी उम्मत को मेरे हवाले फ़रमा दे।

चुनाँचे हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत के कुछ लोग يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بِرَحْمَةِ اللهِ وَمِنْهُمْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بِشَفَاعَتِيْ ط अल्लाह तआला की रहमत से जन्नत में दाख़िल होंगे और कुछ मेरी शफ़ाअत से जन्नत में जाऐंगे।

और आक़ाए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :
हत्ता कि उन उम्मतियों की भी शफ़ाअत करूँगा।
قَدْ بُعِثَ بِهِمْ اِلَى النَّارِ जिन को दोज़ख़ में भेजा जा चुका है।

और जहन्नम का दारोग़ा अर्ज़ करेगा या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम।

مَا تَرَكْتَ لِلنَّارِ بِغَضَبِ رَبِّكَ فِيْ اُمَّتِكَ مِنْ بَقِيَّةٍ.

यानी आप ने अपनी उम्मत के किसी फ़र्द को जहन्नम में रहने नहीं दिया जिस पर आप का रब तआला अज़ाब करे।

यानी आप ने अपनी उम्मत के एक एक फ़र्द को जहन्नम से निकाल कर जन्नत का हक़दार बना दिया।

ख़ूब फ़रमाया नाइबे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

मेरे आमाल का बदला तो जहन्नम ही था
मैं तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया

हज़रात ! ग़म ख़्वार उम्मत, सरापा करम व इनायत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम किस शान से अपनी उम्मत के साथ प्यार व महब्बत फ़रमा रहे हैं और किस क़दर उम्मत के लिये रहम व करम का दरया बहा रहे हैं , मुलाहज़ा फ़रमाइये।

مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ شَعِيْرَةٍ مِّنْ اِيْمَانٍ اَوْ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ اَوْ خَرْدَلَةٍ مِّنْ اِيْمَانٍ ○

यानी उस को भी जहन्नम से निकाल लेंगे जिस के दिल में जो बराबर भी ईमान है और उस को भी जहन्नम से निकाल लेंगे जिस के दिल में ज़र्रे के बराबर, या राई के बराबर भी ईमान होगा। (सहीह बुख़ारी, जि. 6, स. 2727, मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 183)

हज़रात ! ईमान की हिफ़ाज़त फ़र्ज़े ऐन है जो नमाज़ व रोज़ा वग़ैरह से भी अहम है। तो ऐसे क़ीमती ईमान को महफ़ूज़ रखने के लिये ज़रूरी है कि बद अक़ीदों, मुख़ालिफ़ों से हर हाल में

दूर रहा जाए, उन का अक़ीदा मुलाहज़ा कीजिये।

वहाबियों देवबन्दियों, के मुसल्लम बुज़ुर्ग मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

(1) नबी ख़ुद अपना बचाओ नहीं जानते तो दूसरे को क्या बचाएंगे। (तक़्वीयतुल ईमान, स. 64)

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी बेटी फ़ातिमा को क़ियाम के दिन नहीं बचा सकते। (तक़्वीयतुल ईमान, जि. 79)

ऐ ईमान वालो ! मुख़ालिफ़ का अक़ीदा आप हज़रात को मालूम हो गया कि उन लोगों को किस हद तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ो इनाद है जो यहूदियत और ईसाइयत से भी दो क़दम आगे है।

और सही बुख़ारी शरीफ़ और सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस शरीफ़ जो बयान की गई कि :

अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब साहिबे शफ़ाअत नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस शख़्स को भी जहन्नम से बचा लेंगे जिस के दिल में जौ के बराबर या एक ज़र्रे के बराबर या राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा और शाफ़ेए मेहशर महबूबे दावर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया। لَاُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ यानी मैं उन लोगों को ज़रूर ब ज़रूर जहन्नम से निकाल लूँगा जिन्होंने कलमए तैय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) पढ़ा था। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 110)

हुज़ूर की शफ़ाअत कबीरा गुनाह वालों के लिये है

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हमारे प्यारे हुज़ूर, नूरुन अला नूर, रहमते आलम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

شَفَاعَتِیْ لِاَھْلِ الْکَبَائِرِ مِنْ اُمَّتِیْ ○

यानी मेरी शफ़ाअत कबीरा गुनाह करने वालों (यानी बड़े से बड़े गुनाहगार) के लिये है

(तिर्मिज़ी जामेअ सहीह, जि. 4, स. 625, इब्ने माजह सुनन, जि. 2, स. 9441)

हज़रात ! हदीसे तैय्यिबा की रोशनी में ख़ूब अच्छी तरह पता चला और मालूम हो गया कि अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी शफ़ाअत से उस शख़्स को जहन्नम से बचा लेंगे जिस के दिल में ज़र्रे के बराबर भी ईमान होगा और अगर कोई ईमान वाला गुनाहगारे उम्मत जहन्नम में डाल दिया गया है तो उस शख़्स को भी जहन्नम से निकालेंगे और जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे।

हज़रात ! मुख़ालिफ़ का यह कहना कि नबी ख़ुद अपना बचाओ नहीं जानते तो दूसरे को क्या बचाऐंगे।

या मुख़ालिफ़ का यह कहना कि नबी अप्नी बेटी फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) को क़ियामत के दिन नहीं बचा सकते।

सरासर ग़लत और धोका है और इस तरह की बोली मोमिन की नहीं बल्कि मुनाफ़िक़

जहन्नमी की होती है। बेशक व शुबह हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने वफ़ादार मोमिन उम्मती को दुनिया में हर ग़म और मुसीबत से बचाते हैं और क़ियामत के दिन अपने गुलामों को मीज़ान व पुल सिरात पर बचाएँगे और हौज़े कौसर का जाम अपने हाथों से पिलाएँगे।

और मुख़ालिफ़ का यह कहना कि दूसरे को क्या बचाएंगे। अगर दूसरे से मुराद वहाबी, देवबन्दी हैं तो यक़ीनन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुनाफ़िक़ों को नहीं बचाएँगे।

और बिन्ते मुस्तफ़ा सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की शान तो बहुत ही बलन्द व बाला है उन की एक नज़रे इनायत से हज़ारों ब़ल्कि लाखों गुनाहगारों के क़ैद व बन्द की ज़न्जीरें टूटती नज़र आएँगी और शहज़ादिये सुल्तान कौनैन की अबरू के इशारा से बेशुमार उम्मत जन्नत की हक़दार ठहरेगी।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने:

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

ख़ुदा, मुस्तफ़ा की रज़ा चाहता है

अल्लाह तआला का इरशाद:

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝

तर्जमा: और बेशक अन क़रीब तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

(पारा 30, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गुलामों की बख़्शिश व नजात की ख़ातिर, ग़मे उम्मत में इस क़दर गिरया व ज़ारी फ़रमाऐंगे कि अल्लाह तआला, महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा और ख़ुश्नोदी के लिये उम्मत को बख़्श कर जन्नत का हक़दार बनादेगा।

हुज़ूर का ग़मे उम्मत में रोना

ऐ ईमान वालो ! एक दिन की बात है कि हमारे प्यारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गिरया व ज़ारी कर रहे थे कि अल्लाह तआला ने जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम से इरशाद फ़रमाया कि जाओ और मालूम करो कि मेरे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क्यों रो रहे हैं। (मोहिब व महबूब के दरमियान राज़े महब्बत है वर्ना अल्लाह तआला को सब ख़बर है)

मुस्तफ़ा जाने रहमत, शफ़ीए उम्मत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने

फ़रमाया ऐ जिब्रईल ! मेरी उम्मत गुनाहगार है और मैं अपनी उम्मत के ग़म में रो रहा हूँ। मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस जवाब पर रहमान व रहीम अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ जिब्रईल ! मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कह दो।

अल्लाह तआला महबूब को उम्मत के हक़ में राज़ी कर देगा।

إِنَّا سَنُرْضِيكَ فِي أُمَّتِكَ وَلَا نَسُوءُكَ

अल्लाह तआला फ़रमाता है बे शक हम अनक़रीब आप को आप की उम्मत के हक़ में राज़ी कर देंगे और आप को रंजीदा न होने देंगे।

(सहीह मुस्लिम, जि. 1, स. 191, नसाई सुनने कुबरा, जि. 6, स. 373)

जब हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रब तआला का यह फ़रमान सुना तो फ़रमाया : وَاللهِ! لَا أَرْضَى وَوَاحِدٌ مِنْ أُمَّتِي فِي النَّارِ ط

यानी अल्लाह की क़सम मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूँगा जब तक मेरा एक उम्मती भी जहन्नम में होगा। (तफ़सीरे जलालैन, जि. 1, स. 812)

उम्मत की बख़्शिश हो गई तो महबूब राज़ी हो गए

हज़रात ! बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआला अपने हबीब हम बीमारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इज़्ने शफ़ाअत अता फ़रमाएगा और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी शफ़ाअत से उम्मत को बख़्शवाएँगे हत्ता कि जिन के दिल में जौ कि बराबर या राई के दाने के बराबर या एक ज़र्रा के बराबर भी ईमान होगा उस को बख़्शवा लेंगे, यहाँ तक कि अगर वह शख़्स दोज़ख़ में डाल दिया गया है तो उस को भी जहन्नम से निकाल लेंगे और जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे तो अल्लाह तआला का इरशाद होगा, ऐ महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ! क्या आप राज़ी हो गए तो महबूबे दावर शफ़ीए मेहशर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रहमान व रहीम रब तआला की बारगाह में जवाब अर्ज़ करेंगे।

हाँ (ऐ मेरे रब तआला) मैं राज़ी हो गया।

نَعَمْ رَضِيتُ (तबरानी, मोअ्जम औसत, जि.2, स.307, कंज़ुल उम्माल, स.637)

हज़रात ! हमारे मुशफ़िक़ व महराबन नबी, रहीम व करीम रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पैदा हुए तो ज़बाने रहमत से उम्मती उम्मती की सदा आ रही थी और हम ग़ुलामों को याद फ़रमाते रहे। शबे मेअराज क़ुर्बे रब तआला में पहुँच कर उम्मती उम्मती फ़रमा कर अपने रहमान व रहीम रब तआला की बारगाहे ख़ास में हमारी याद फ़रमाई। हयाते तैय्यिबा के आख़िरी लम्हात तक उम्मती उम्मती फ़रमाते रहे और हमारे ग़म में रोते रहे और हमारी बख़्शिश की दुआ फ़रमाते रहे। बादे विसाल क़ब्र शरीफ़ में उम्मती उम्मती कह कर हम ग़ुलामों को याद फ़रमाया और बरोज़े क़ियामत मीज़ान व पुल सिरात और हौज़े कौसर पर उम्मती उम्मती पुकारेंगे और हमारे लिये हर तरह

की आसानियाँ पैदा फ़रमाएंगे। हक़ तो यह है कि हर नबी की ज़बान पर क़ियामत के रोज नफ़सी नफ़सी की सदा होगी और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने रहमत पर उम्मती, उम्मती की सदा होगी।

खुदा की क़सम ! सब मेहशर वाले नबी की तलाश में होंगे और हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत को ढूंढ रहे होंगे।

मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

यह बे क़रार करेगी सदा ग़रीबों की
मुक़द्दस आँखों से तार अशकों का बंधा होगा
अज़ीज़ बच्चे को मां जिस तरह तलाश करे
ख़ुदा गवाह यही हाल आप का होगा

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! सौ जान से कुरबान हो ज़ाओ अपने प्यारे नबी और अच्छों में अच्छे रसूल, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कि उस वक़्त तक सुकून व क़रार आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न आएगा जब तक ईमान वाले उम्मत के एक एक फ़र्द को बख़्शावाकर जन्नत में दाख़िल न फ़रमा देंगे।

और क़ियामत के दिन उम्मत के ग़म में रो रो कर गुनाहगार उम्मत की नजात व बख़्शिश की तम्हीद उठाते रहेंगे और उस वक़्त तक राज़ी और ख़ुश नहीं होंगे जब तक उम्मत का एक एक फ़र्द जन्नत में दाख़िल न हो जाए।

आशिक़े रसूल, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल शरीफ़

आक़ाए कायनात ने सिद्दीक़े अकबर को इमाम बनाया : ज़मानए अलालत में हमारे हुज़ूर, नूरुन अला नूर, हबीबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सहाबा के इमाम बने और तीन रोज तक मुसलसल सहाबए किराम की नमाज़ों की इमामत फ़रमाते रहे।

मशहूर मुहद्दिस हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़मानए अलालत में हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ के लिये अज़ान दी और अज़ान के बाद हुजरा शरीफ़ के दरवाज़े पर खड़े होकर अर्ज़ किया :

गोया हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अज़ान देने के बाद अपने करीम, व रहीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मकाने [illegible] रहमत पर खड़े होकर सलातो सलाम पढ़ा। तो मकान शरीफ़ के अन्दर से आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं और उन की इमामत करें। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 715)

हज़रात ! गोया इमामुल अम्बिया हबीबे किब्रिया, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सामने ही हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुसलमानों का इमाम और अपना ख़लीफ़ा बना दिया था।

ख़ूब फ़रमाया आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने :

सायए मुस्तफ़ा मायए मुस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखो सलाम

अज़ान के बाद नमाज़ से पहले सलातो सलाम पढ़ना सुन्नत है

हज़रात ! मशहूर आशिक़े रसूल, हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी मअरूफ़ ज़माना किताब मदारिजुन्नुबुव्वत शरीफ़ में हदीस शरीफ़ को तहरीर फ़रमाया कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अज़ान देने के बाद मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे नूर पर खड़े हो कर सलातो सलाम पढा। तो साबित हो गया कि अज़ान के बाद नमाज़ से पहले सलातो सलाम पढ़ना बिदअत व नाजाइज़ नहीं है बल्कि सहाबए किराम की सुन्नत है।

अज़ान के बाद सलातो सलाम का सुबूत

हज़रत मुल्ला अली क़ारी हन्फ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के उस्ताज़, अज़ीमुश्शान मुहद्दिस, हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने फ़तावा कुबरा में सही मुस्लिम और इब्ने माजह के अलावा सुनने अरबआ की वह अहादीस नक़्ल फ़रमाई हैं जिन में अजान के बाद और दुआए वसीला से पहले, नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर सलात भेजने का हुक्म वारिद है। मसलन यह हदीस नक़्ल फ़रमाई।

عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُوْلُوْا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ ثُمَّ صَلُّوْا عَلَيَّ
فَاِنَّهٗ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلٰوةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا ثُمَّ سَلُوا اللهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ

(सही मुस्लिम, जि.1, स.166, फ़तावा कुबरा, मक़ालाते काज़्मी, जि.3, स.309)

यानी आक़ाए कायनात रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम मुअज़्ज़िन से अज़ान सुना तो उस की मिस्ल कहो (यानी अज़ान का जवाब

दो) फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो बे शक जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस मरतबा अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाता है फिर मेरे वसीले से अल्लाह की बारगाह में दुआ मांगो यानी अज़ान के बाद की दुआ पढ़े।

हज़रात ! इस हदीसे तैय्यिबा से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया कि अज़ान देने के बाद मुझ पर दुरूदो सलाम पढ़ो। तो अज़ान के बाद और नमाज़ से पहले सलातो सलाम पढ़ना नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि हदीस शरीफ़ से साबित और सुन्नत है।

दूसरी बात : यह मालूम हुई कि दुआ मांगने के वक़्त नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की बारगाह में वसीला बनाना हदीस शरीफ़ से साबित है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है : سَلُوا اللّٰهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ

यानी मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगो तो मुझ को वसीला बना लो यानी मेरे वसीला से दुआ मांगा करो। (सहीह मुस्लिम, जि. 1, स. 166)

तो ! दिन के उजाले से ज़्यादा रौशन और ज़ाहिर हुआ कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को वसीला बनाना नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि हदीस शरीफ़ से साबित और सुन्नत है।

ख़ूब फ़रमाया मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म, अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हर गिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

हज़रत बिलाल आशिक़े रसूल थे

ऐ ईमान वालो ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुजरा शरीफ़ से बाहर न निकलना और नमाज़ पढ़ाने के लिये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुक़र्रर करना, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आशिक़े सादिक़ थे सब कुछ समझ गए थे, फिर आशिक़े ज़ार हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर किया गुज़री मुलाहज़ा फ़रमाइये।

इसके बाद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपना सर पीटते (रोते और फ़रियाद करते बाहर आए चूँकि उम्मीद टूट चुकी थी और कमर शिकस्ता हो गई थी (हज़रत बिलाल) कहने लगे काश कि मेरी मां मुझे न जनती और अगर मुझे जन्ना था तो इस दिन के देखने से पहले मुझे मौत आ जाती और मैं (अपने मुशफ़िक़ व महरबान) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इस हाल में न देखता।

फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ में आए और कहा कि ऐ अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) आप के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हुक्म फ़रमाते हैं कि आगे बढ़िये (मुसल्ले पर जाइये) और लोगों को नमाज़ पढ़ाइये। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 716)

अबू बक्र सिद्दीक़ का तड़पना और रोना : आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब देखा कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ (और मुसल्लए इमामत) हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ख़ाली है तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस क़दर ग़मगीन हुए कि खुद को संभाल न सके और मुंह के बल गिर पड़े और बेहोश हो गए और तमाम सहाबा रोने लगे।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गोशे मुबारक में यह आवाज़ पहुँची तो अपनी प्यारी बेटी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हार रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया ऐ फ़ातिमा ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) यह रोने और फ़रियाद करने की कैसी आवाज़ें आ रही हैं ?

तो सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया यह आवाज़ें मुसलमानों के रोने और तड़पने की हैं कि सहाबा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मस्जिद में न देख कर रो रहे हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 716)

अबू बक्र सिद्दीक़ की इमामत व ख़िलाफ़त पर मौला अली की तस्दीक़ व ताईद

हज़रात ! महबूबे खुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से तमाम सहाबा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की मौजूदगी में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सहाबाए किराम की नमाज़ों की इमामत के लिये मख़सूस करना अहले सुन्नत व जमात के नज़दीक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ए अव्वल हैं इस पर वाज़ेह दलील है मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अबू बक्र सिद्दीक़ ख़लीफ़ए अव्वल हैं, मौला अली की तस्दीक़ व ताईद

सय्यिदुस्सादात, सय्यदुल औलिया, अबुल हसन वल हुसैन हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूब मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : قَدَّمَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ فَمَنْ ذَا الَّذِیْ یُؤَخِّرُكَ

यानी ऐ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप को आगे बढ़ाया और मुक़द्दम किया है तो कौन है ? जो आप को मुअख़्ख़र करे। और आप ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई, मैं मौजूद था ग़ाइब न था, तन्दुरुस्त था बीमार न था। अगर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चाहते तो मुझे आगे बढ़ा सकते थे (मगर मुझे नहीं ब़ल्कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आगे बढ़ाया)

लिहाज़ा हम अपनी दुनिया के लिये उस शख़्स यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु पर राज़ी हो गए जिस पर ख़ुदा और रसूल जल्ला जला लुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे दीन के लिये राज़ी हुए। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 718)

हुज़ूर का इरशाद कि मेरी क़ब्र को बुत न बनाना : शाहे तैबा, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने विसाल शरीफ़ से पाँच दिन पहले फ़रमाया :

ऐ लोगो ! जान लो ! और आगाह हो जाओ ! कि तुम से पहले ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन्होंने अपने नबियों और नेकों की क़ब्रों को मसाजिद यानी सज्दह गाह बना लिया था, तुम्हें लाज़िम है कि ऐसा न करना और मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَعَنَ اللّٰهُ الْیَهُوْدَ وَالنَّصَارٰی اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ اَنْبِیَآئِهِمْ مَسَاجِدَ

यानी अल्लाह की लअ़नत हो। यहूदो नसारा पर कि उन्हों ने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद (सज्दा गाह बना लिया) बिला शुबह ऐ मुसलमानो ! मैं तुम को इस से मना करता हूँ।

(शैख़ इब्ने हजर, शरह मिश्कात, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 720)

हज़रात ! महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यहूदियों और नसरानियों पर लअ़नत की है। उस की वजह यह है कि यहूदी और नसरानी अपने नबी की क़ब्र के सामने सज्दा करते थे और नबी को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा बना लिया था तो लअ़नत की वजह साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गई कि जो भी शख़्स किसी की भी क़ब्र पर सज्दा करेगा वह शख़्स लअ़नत का मुस्तहिक़ ठहरेगा।

अलहम्दु लिल्लाह, सद बार अलहम्दु लिल्लाह ! हम अहले सुन्नत व जमाअत यानी सुन्नी मुसलमान मदीना तैय्यिबा में अपने रहीम व करीम नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र पर और बग़दाद शरीफ़ में अपने पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र पर और अजमेर शरीफ़ में अपने प्यारे ख़्वाजा हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र पर या किसी भी बुज़ुर्ग की क़ब्र पर सज्दा नहीं क़रते हैं। इस लिये कि सज्दा सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये है और क़ब्र को बोसा लेना भी ख़िलाफ़े अदब है। और बहुत से उश्शाक़ के नज़दीक क़ब्र शरीफ़ से लिपटना और लिपट कर रोना और फ़रियाद करना साबित है।

हज़रात ! ख़ूब ग़ौर से सुन लीजिये और याद रखिये कि क़ब्र को बुत बनाना और क़ब्र की इबादत करना कुफ़्र है मगर क़ब्र से महब्बत करना और क़ब्र पर हाज़िर होकर अल्लाह तआला की रहमत को तलब करना हदीस व सुन्नत से साबित है।

ख़ूब फ़रमाया मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हम शबीहे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

संगे दरे जानां पर करता हूँ जबीं साई
सज्दा न समझ नजदी सर देता हूँ नज़राना

और मुजद्दिदे आज़म, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बे ख़ुदी में सज्दए दर या तवाफ़
जो किया अच्छा क्या पर तुझ को क्या
सर सूए रोज़ा झुका फिर तुझ को क्या
दिल था साजिद नजदिया फिर तुझ को क्या
उन के नामे पाक पर दिल, जान व माल
नजदिया ! सब तज दिया फिर तुझ को क्या

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस शख़्स को मलऊन क़रार दिया जिस ने किसी क़ब्र को सज्दा गाह बनाया और उस की इबादत की मगर हमारे मुख़ालिफ़ ने महबूबे ख़ुदा रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर और मज़ारे अक़दस ही को बुत और शिर्क व इलहाद का बहुत बड़ा ज़रीआ लिखा।

हज़रात ! अद्लो इन्साफ़ की आँख से और ईमान की रोशनी में दिल को थाम कर बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमाइये कि वहाबियों नजदियों के नज़दीक महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर, मज़ारे अक़दस की हक़ीक़त व हैसियत क्या है।

वह क़िस्से और होंगे जिन को सुन कर नीन्द आती है
तड़प जाओगे कांप उठोगे सुन कर दास्तां उन की

मुलाहज़ा कीजिये :

वहाबियों का अक़ीदा

वहाबी मौलवी क़ाज़ी मुहम्मद बिन अली शोकानी लिखते हैं :

(1) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की क़ब्रे मुक़द्दस हर लिहाज़ से बुत है। (हाशिया शरहुस्सुदूर, स. 25 मतबुआ सऊदिया)

वहाबियों के इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी के पोते अब्दुर्रहमान नजदी ने अपने दादा की किताब, किताबुत्तजवीद की शरह फ़तहुल मजीद में लिखा कि :

(2) नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का रोज़ा शिर्क व इलहाद का बहुत बड़ा ज़रीआ है। (फतहुल मजीद शरह किताबुत्तौहीद, स. 209, मतबुआ मिस्र)

(3) वहाबियों के नवाब सिद्दीकुल हसन भोपाली के बेटे नूरुल हसन भोपाली ने लिखा कि : पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की क़ब्र को गिरा देना वाजिब है। (उर्फुल हावी, स. 61)

(4) वहाबियों के इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नजदी का अक़ीदा है कि : रसूलुल्लाह और अम्बियाए किराम की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाने वाला मुशरिक है। (फ़तहुल मजीद शरह किताबुत्तौहीद, स. 215)

ऐ ईमान वालो ! मुख़ालिफ़े अहले सुन्नत, वहाबियों का ईमान व अक़ीदा नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ और रोज़ए अनवर के तअल्लुक़ से कितना गन्दा और ख़राब है जो उन की किताबों के हवाला जात के साथ बयान कर दिया गया है। अल्लाह तआला अनपे अमान में रखे और बातिल फ़िरक़ों से महफ़ूज़ फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! अब अहादीसे तैय्यिबा की रौशनी में मुलाहज़ा कीजिये कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर ईमान और इख़्लास के साथ हाज़िरी देने वाला और रोज़ए पुर नूर की ज़ियारत करने वाला ला रैब जन्नती है बिला शक व शुबह जन्नती है।

क़ब्रे नूर की ज़ियारत करने वाला शफ़ाअत का हक़दार है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

(1) مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ ○

यानी जिस ने मेरी क़ब्रे अनवर की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।

(शिफ़ा, जि. 2, स. 83 अश्शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 3, दार क़ुतनी, जि. 2, स. 278)

सिर्फ़ मेरे लिये मदीना आओ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर जाने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

(2) हदीस शरीफ़ : مَنْ جَآءَنِیْ زَائِرًا لَا تَعْمَلُهٗ حَاجَةٌ اِلَّا زِیَارَتِیْ كَانَ حَقًّا عَلَیَّ اَنْ اَكُوْنَ شَفِیْعًا یَوْمَ الْقِیَامَةِ ○

यानी जो शख़्स मेरी ज़ियारत के लिये आया, मेरी ज़ियारत के अलावा उसे और कोई हाजत न थी तो मुझ पर उस का हक़ है कि मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँ।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला वह दिन नसीब करे कि हम मदीना तैय्यिबा अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बे कस पनाह में हाज़िर हूँ तो किसी और काम या हाजत की नियत न रहे सिर्फ़ हमारा इरादा अपने रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे पाक की हाज़री मक़सूद है।

आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

होते कहाँ खलील व बिना कअबा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है
साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़रोअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताज वर की है

(3) हदीस शरीफ़ : مَنْ زَارَنِيْ بِالْمَدِيْنَةِ مُحْتَسِبًا كُنْتُ لَهٗ شَفِيْعًا وَّشَهِيْدًا ط

यानी जिस ने सवाब की नियत से मदीना तैय्यिबा में मेरी ज़ियारत का मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। और उस का गवाह बनूँगा (शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 8, जज़बुल क़ुलूब, स. 206)

यानी जिस ने सवाब की नियत से मदीना तैय्यिबा में मेरी ज़ियारत की मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा और उस को गवाह बनूँगा।

(4) مَنْ زَارَنِيْ مُتَعَمِّدًا كَانَ فِيْ جِوَارِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط

(मिश्कात, स. 240, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 26, जज़बुल क़ुलूब, स. 206)

यानी जिस शख़्स ने क़सदन नियत कर के मेरी ज़ियारत की वह शख़्स क़ियामत के दिन मेरे पड़ोस में होगा।

हज़रात ! हदीस शरीफ़ में मुहतसिबन और मुतअम्मिदन का कलमा बड़ा मअना ख़ेज़ और क़ाबिले ग़ौर है जिस के ज़रीए वाज़ेह तौर पर बताया और समझाया गया है कि मेरी बारगाह में ज़ियारत केलिये आना सिर्फ़ क़ल्ब व रूह की तस्कीन का सामान ही नहीं बल्कि बाइसे अज्रो सवाब भी है और किसी साहिबे ईमान सचे उम्मती के लिये उस से बढ़ कर और कोई सआदत व नेकी नहीं।

अल्लाह तआला बार बार मदीनए तैय्यिबा की हाज़री नसीब फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

इलाही दिखा दे वह मदीना कैसी बसती है
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है

दुरूद शरीफ़ :

हुज़ूर ने अबू बक्र सिद्दीक़ के पीछे नमाज़ पढ़ी

एक मरतबा मेरे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक क़बीला के लोगों में सुलह कराने के लिये तशरीफ़ ले गए थे, जब नमाज़ का वक़्त हो गया तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि क्या राए है नमाज़ का वक़्त हो गया तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि क्या राए है नमाज़ का वक़्त हो गया है, अज़ान कह दूँ, शायद कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी तशरीफ़ ले आएं। जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आने में ताख़ीर हो गई तो तमाम सहाबा ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़

के लिये आगे बढ़ा दिया कि अचानक आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी तशरीफ़ ले आए तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चाहा कि मैं इमामत के मुसल्ले से पीछे आ जाऊँ और मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुसल्लए इमामत पर तशरीफ़ ले आएं और लोगों को नमाज़ पढ़ाएं, तो उस पर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इशारा फ़रमाया कि तुम अपनी जगह रहो। यानी तुम मुसल्लए इमामत पर नमाज़ पढ़ाते रहो। फिर महबूबे ख़ुदा, इमामुल अम्बिया मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुद भी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीछे नमाज़ पढ़ी इस से मालूम होता है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में सब से अफ़ज़ल और सब से मुक़द्दम थे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 718)

हुज़ूर ने सिर्फ़ दो सहाबी के पीछे नमाज़ पढ़ी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि वह फ़रमाते हैं कि इमामुल अम्बिया, रसूले ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीछे सिर्फ़ एक मरतबा नमाज़ पढ़ी और एक सफ़र में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीछे एक मरतबा ही और वह भी सिर्फ़ एक ही रकअत नमाज़ अदा की इस लिये कि सिर्फ़ एक ही रकअत बची थी तो आक़ा करीम शरीक हुए तो आक़ा रकअत में शरीक रहे और छुटी हुई रकअत को तन्हा अदा फ़रमाई। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 717)

विसाल की रात चिराग़ में तेल भी नहीं था

ज़मानए अलालत का वाक़िआ है कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में सोने के रुपये पेश किये गए, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तमाम रुपयों को गुरबा फ़कुरा में तक़सीम फ़रमाया। सिर्फ़ छः या सात रुपये घर में बाक़ी रहे उस के बाद सुल्ताने दारैन, क़ासिमे नेअमत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस वक़्त तक तशरीफ़ न ले गए जब तक कि उन सब रुपयों को (उम्मत के गुरबा में) ख़र्च न फ़रमा दिया। (बैहक़ी)

जब शबे विसाल दो शम्बा की रात हुई तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने एक अन्सारी औरत से तेल उधार लिया और चिराग़ रौशन किया।

सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह ! जवादो फय्याज़ आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बे मिसाल सख़ावत और ग़रीब नवाज़ी मुलाहज़ा फ़रमाइये कि अभी कुछ ही लम्हा पहले सोने के रुपये ग़रीबों में तक़सीम फ़रमाए हैं और ख़ुद के घर में चिराग़

रौशन करने के लिये तेल उधार लिया जा रहा है। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 721)

ख़ूब फ़रमाया प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेअ़मतें हैं उनके ख़ाली हाथ में

ज़मानए अलालत में अन्सार की महब्बत

जब अन्सार सहाबा ने देखा कि मेरे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रोज़ बरोज़ ज़्यादा अलील होते जा रहे हैं। तो वह बे चैन व बे क़रार और हैरान व परेशान हो कर अपने अपने घरों से बाहर निकल आए और मस्जिदे नबवी के गिर्द घूमते और चक्कर लगाने लगे और आपस में कहते कि हमें अन्देशा है कि मेरे मुशफ़िक़ व महरबान नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ न ले जाएं और हम नहीं जानते कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तशरीफ़ ले जाने के बाद (यानी विसाल के बाद) हमारा क्या हाल होगा।

जब अन्सार सहाबा की हालत और उन की कैफ़ियत आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश की गई तो महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के कन्धे पर हाथ रखकर मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ लाए मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए और सरे अनवर पर पट्टी बंधी हुई थी और जोक़ दर जोक़ सहाबा जमा होने लगे। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह की हम्दो सना के बाद इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो ! मुझे मालूम हुआ है कि तुम लोग मौत से डरते हो। जब कि मेरे विसाल और तुम को तुम्हारी मौत से ख़बरदार कर दिया गया है और अल्लाह तआला का इरशाद है : إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ यानी ऐ मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम्हें मेरे पास आना है और उन लोगों को भी मरना है और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, कोई नबी हमेशा अपनी क़ौम में नहीं रहा है तो मैं तुम्हारे बीच हमेशा कैसे रहूँगा ? (मुलख़्ख़सन, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 721)

विलादत व विसाल का महीना और दिन एक हैं : महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत शरीफ़ रबीउल अव्वल शरीफ़ की बारहवीं तारीख़ दो शम्बा (पीर) के दिन हुई और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल शरीफ़ भी रबीउल अव्वल शरीफ़ की बारहवीं तारीख़ दो शम्बा (पीर) के दिन हुआ। गोया हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत शरीफ़ और विसाल शरीफ़ का महीना और तारीख़ और दिन एक ही है

हज़रात ! आख़री हज के मौक़े पर हज्जतुल वदाअ के दिन जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई: اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ यानी ऐ महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आज के दिन मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया।

ऐ ईमान वालो ! जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो बहुत से सहाबए किराम खुश हो गए कि आज के दिन अल्लाह तआला ने हमारे दीन को मुकम्मल फ़रमा दिया है लेकिन राज़दार मुस्तफ़ा, अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद रोने लगे। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र ! सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद रोने लगे। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र ! तुम क्यों रो रहे हो तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम दीने इस्लाम को मुकम्मल करने तशरीफ़ लाए थे और आज के दिन दीने मुकम्मल हो गया। गोया यह आयते करीमा बता रही है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अब हमारे बीच तशरीफ़ नहीं रखेंगे यानी अब हमारे ग़मख़्वार आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हो जाएगा। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जहाँ तक किसी की नज़र नहीं पहुँची है वहाँ तक मेरे अबू बक्र सिद्दीक़ की नज़र पहुँच गई है ष। और अबू बक्र सिद्दीक़ ने सच समझा। (तबक़ात, जि. 3)

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ اِلٰى اٰخِرِهٖ

इस सूरत के नाज़िल होने के बाद सहाबए किराम समझ गए थे कि दीन मुकम्मल हो गया तो अब महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुनिया में ज़्यादा दिनों तक तशरीफ़ नहीं रखेंगे और मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस सूरत को सुन कर इस ख़याल से रोने लगे और इस सूरत के नाज़िल होने के बाद आक़ाए कायनात, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़ुतबा में इरशाद फ़रमाया कि ऐक बन्दा को अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया है (यानी मुझ को) चाहे वह दुनिया में रहे चाहे अल्लाह तआला की लिक़ा (मुलाक़ात) क़ुबूल फ़रमाए तो उस बन्दा यानी मैं ने अल्लाह तआला की मुलाक़ात को इख़्तियार कर लिया है यह सुन कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ''र हमारी जानें हमारे माल, हमारे बाप, दादा, हमारी औलादें सब क़ुरबान हों। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

बरोज़े विसाल नमाज़े फ़ज्र में गुलामों को मुलाहज़ा फ़रमाया

विसाल शरीफ़ के दिन का वाक़िआ है जिसे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुजरा शरीफ़ के दरवाज़ा से पर्दा हटा कर मस्जिद में नमाज़ियों की जानिब नज़रे करम फ़रमाया और देखा कि फ़ज्र की नमाज़ है और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ पढ़ा रहे हैं फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दरवाज़ा शरीफ़ पर खड़े रहे और निगाह मुबारक नमाज़ियों को देखती रही । सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान को पता चल गया था कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हुजरा शरीफ़ के दरवाज़े पर खड़े हो कर हम ग़लामों को देख रहे हैं। तो क़रीब के नमाज़ियों ने आँखें तिरछी करके यानी आँखों की कंघियों से और जो लोग कुछ दूर थे तो वह लोग सर उठा कर अपने आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखने लगे। और जो हज़रात और दूर थे तो वह हज़रात तो क़िब्ला से सीना हटा कर क़िब्ला के कअ़बा की जानिब मुंह और सीना कर लिया और दीदार में मशग़ूल हो गए और इमाम साहब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चाहा कि मैं अपनी जगह से पीछे आ जाऊँ मगर महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नमाज़ियों की जानिब इशारा किया और इरशाद फ़रमाया कि सब अपनी अपनी जगह पर रहो और अपनी नमाज़ें पूरी कर लो।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गोया अपने गुलामों की नमाज़ और उन की महब्बत और अपने अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इमामत को देख कर मुस्कुरा रहे थे और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का चेहरए अनवर ऐसा लग रहा था जैसे कुरआने मुक़द्दस के खुले हुए औराक़ हों। फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दरवाज़े का पर्दा छोड़ दिया और हुजरा शरीफ़ के अन्दर तशरीफ़ ले गए और इसी दिन विसाल फ़रमाया।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 727, तवारीख़े हबीबे इलाह, स. 146)

बाबे करम पर मलकुल मौत का इजाज़त तलब करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से मनकूल है कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के दिन और अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को हुक्म फ़रमाया कि ज़मीन पर मेरे हबीब, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबारे पुर अनवार, में हाज़िर हो, मगर ख़बरदार ! बग़ैर इजाज़त के काशानए महबूब में दाख़िल न होना और मेरे महबूब

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की इजाज़त के बग़ैर रूह पुर नूर को क़ब्ज़ न करना। तो हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलाम एक अअ़राबी की सूरत में खड़े हो कर अर्ज़ किया :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ اَهْلَ بَیْتِ النُّبُوَّةِ

यानी ऐ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप पर सलाम हो और आप के तमाम घर वालों को सलाम हो। उस वक़्त हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरहाने मौजूद थीं, हज़रत सय्यिदा ने जवाब दिया कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अलील हैं इस वक़्त मुलाक़ात नहीं हो सकती है। दूसरी और तीसरी मरतबा हज़रत मलकुल मौत अलैहिस्सलाम ने इजाज़त तलब की और हज़रत सय्यिदा वही जवाब देती रहीं फिर तीसरी मरतबा के बाद महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने चश्माने करम को खोला और फ़रमाया ऐ बेटी फ़ातिमा ! तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे दरवाज़े पर कौन है ? और बार, बार आने की इजाज़त मांग रहा है। ऐ बेटी फ़ातिमा यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाला, ख़्वाहिशों और तमन्नाओं को कुचलने वाला, बीवियों को बेवा बनाने वाला और बच्चों और बच्चियों को यतीम करने वाला है। यानी मलकुल मौत हैं। हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब यह सुना तो रोने लगीं, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया।

ऐ मेरी बेटी फ़ातिमा ! रोया न करो ! इस लिये कि तुम्हारे रोने से हामिलीने अर्श रोते हैं और अपने दस्ते मुबारक से हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के चेहरए अनवर से आंसुओं को साफ़ किया। और फ़रमाया अपने बच्चों को लाओ। हज़रत सय्यिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में लाती हैं आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने शहज़ादगान को बोसा दिया और उन की ताज़ीम व तौक़ीर और उन से महब्बत करने के लिये सहाबए किराम से और तमाम उम्मत को वसियत फ़रमाई और फ़रमाया ऐ बेटी फ़ातिमा ! जाओ दरवाज़ा खोल दो मलकुल मौत को आने दो। हज़रत मलकुल मौत हाज़िर हुए और हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ऐलान कर रहे थे कि ऐ फ़रिश्तो ! उठो और सफ़ दर सफ़ खड़े हो कर इस्तिक़बाल करो कि रूहे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ला रही है। इस के बाद आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मलकुल मौत ! आओ और जो तुम्हें हुक्म दिया गया है उस पर अमल करो। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 732)

हज़रत मलकुल मौत जब क़रीब हुए तो मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ मलकुल मौत ! यह तो बताओ कि मौत के वक़्त मरने वाले को किस क़दर सख़्ती और तकलीफ़ होती है तो हज़रत मलकुल मौत ने अर्ज़ किया

कि या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मौत की सख़्ती और तकलीफ़ का यह आलम होता है कि हज़ार तलवारों का झटका एक तरफ़ और मौत का झटका एक तरफ़ इतनी ज़्यादा सख़्ती और तकलीफ़ होती है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ मलकुल मौत क्या तू मेरी उम्मत को भी मौत के वक़्त इसी क़दर सख़्ती और तकलीफ़ होती होगी तो मलकुल मौत ने अर्ज़ किया कि हाँ। हर मरने वाले को इसी क़दर सख़्ती और तकलीफ़ पहुँचती है तो रहीम व करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ मलकुल मौत ! मैं उस वक़्त तक तुम को अपनी रूह के क़ब्ज़ करने की इजाज़त नहीं दूँगा जब तक यह फ़ैसला न हो जाए कि क़ियामत तक मेरी तमाम उम्मत को मौत के वक़्त जो सख़्ती और तकलीफ़ होने वाली हो उन तमाम सख़्तियों और तकलीफ़ों को इकट्ठा कर के मेरे विसाल के वक़्त मुझ पर डाल दिया जाए, मैं गवारा कर लूँगा मगर मेरी उम्मत को तकलीफ़ हो मैं गवारा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला का इरशादे पाक होता है कि ऐ महबूब ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप उम्मत की फ़िक्र न करें आप के गुलामों की रूह ऐसी निकाल ली जाएगी जैसे गुन्धे हुए आटे से बाल निकाल लिया जाता है और उस को पता तक न चलेगा।

रूह फिर जिस्मे अक़दस में रखी गई

हज़रत मलकुल मौत को आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अब ऐ मलकुल मौत ! जो तुम को हुक्म दिया गया है उस पर अमल करो ! हज़रत मलकुल मौत महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रूह पुर नूर को जिस्मे अनवर से क़ब्ज़ किया और आला अलिय्यीन ले गए मगर यहाँ तो गुलामों की रूहें थीं, फिर वहाँ से अर्श पर ले कर गए, अर्शे इलाही कांप उठा कि मुझ में इतनी कुव्वत नहीं कि मैं रूहे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत को बरदाश्त कर सकूँ फिर वहाँ से फ़रिश्ते बे शुमार आला मक़ामात पर ले गए मगर किसी में भी यह कुव्वत व ताक़त न थी कि रूहे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हैबत व अज़मत को बरदाश्त कर सकता, तो अल्लाह तआला का हुक्म होता है ऐ मलकुल मौत ! कोई जगह ऐसी नहीं जो रूहे महबूब की अज़मत व बुज़ुर्गी का बोझ उठा सके। इस लिये उसी जिस्मे नूर में रूहे नूर को रख दो जहाँ से निकाला था।

क्या ही ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बाद उन की हयात
मिस्ले साबिक़ वही जिस्मानी है

दुरूद शरीफ़ :

विसाल के बाद मौला अली का इरशाद : मौलाए कायनात सय्यदना मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद मैं आसमान की जानिब से फ़रिश्तों की सदा وَا مُحَمَّدَاهُ सुनता था।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रूहे अनवर जिस्मे अक़दस से जुदा हुई तो ऐसी उमदा ख़ुश्बू ज़ाहिर हुई कि उस से पहले हम ने कभी ऐसी खुश्बू नहीं सूंघी थी। उस के बाद मैं ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर पर चादर डाल दी। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 732)

बादे विसाल सय्यिदा फ़ातिमा कभी हंसी नहीं

महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ से हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को इस क़दर सदमा और ग़म पहुँचा कि हमेशा रोती रहती थीं और फिर कभी किसी ने आप को हंसते हुए नहीं देखा। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 733)

बादे विसाल हज़रत आएशा सिद्दीक़ा की हालत

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रोते हुए कहती हैं कि हाए अफ़सोस ! इस नबिये मोहतरम ने फ़क्र को तवंगरी पर और दुरवेशी को मालदारी पर पसन्द फ़रमाया। हाए अफ़सोस ! कि मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मत की बख़्शिश व नजात की ख़ातिर रात रात भर जाग कर गुनाह गारों के लिये दुआ फ़रमाते रहे और कभी भी बे फ़िक्र और बे नयाज़ हो कर बिस्तरे इस्तिराहत पर न सोए और कभी भी फ़क़ीरों और हाजत मन्दों पर दरवाज़ा को बन्द न फ़रमाया बल्कि ग़रीबों और साइलों पर एहसान करते रहे और उन की मुरादों को पूरी फ़रमाते रहे। दुश्मनों ने पत्थर मार कर दन्दाने मुबारक और रुख़सारे अनवर को ज़ख़्मी कर दिया उस के बाद भी रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के हक़ में हिदायत की दुआ देते हैं और उन पर भी रहमतों के फूल बरसाते नज़र आते हैं। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 733)

आक़ा के विसाल के बाद सहाबा की कैफ़ियत : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद सहाबए किराम इस क़दर ग़म गीन और परेशान हुए कि जैसे उन की अक़लें सल्ब कर ली गई हों और उन के हवस मुअत्तल हो गए हों। बाज़ सहाबा की ज़बानें बन्द हो गईं और उनके होश व हवास और कुव्वते गोयाई जाती रही। हज़रत उस्मान ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की भी इसी तरह की हालत हो गई थी। चुनाँचे जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला यअन्हु उन

के पास से गुज़रे और उन को सलाम किया तो हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन का सलाम को सुना मगर सलाम के जवाब न दे सके। बाज़ सहाबए किराम बैठे रहे तो ऐसा लगता था कि जम गए हों, उन में हिलने की ताक़त न थी। चुनाँचे हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यही हाल था और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ के इर्द गिर्द दीवाना की तरह चलते और कहते जाते थे कि अगर मैं ने किसी शख़्स से सुन लिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वफ़ात हो गई है तो मैं उस शख़्स को क़त्ल कर दूँगा।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 737)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर की इस्तिक़ामत

तमाम सहाबा में सब से ज़्यादा साबित और शुजाअ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी थी। विसाले महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वक़्त आप अपने मकान पर थे। जब विसाल शरीफ़ की इत्तिलाअ मिली तो वह फ़ौरन सवार हो कर तेज़ी के साथ हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुजरे की जानिब रवाना हो गए और रास्ता भर रोते रहे और मुम्मदाहू पुकारते रहे यहाँ तक कि मस्जिद शरीफ़ में आए, देखा कि लोग परेशान हाल हैं किसी तरफ़ तवज्जोह न दी और न किसी से बात की सीधे हुजरए आएशा में दाख़िल हो गए और महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए अनवर से चादरे नूर उठाई और जबीने नूर का बोसा लिया और अपने मुंह को आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुंह पर रख दिया और फ़रियाद की और व मुहम्मदाहु की सदा लगाई और उस के बाद सर उठाया और रोने लगे। इस तरह तीन मरतबा किया और कहा :

بِاَبِیْ وَاُمِّیْ طِبْتَ حَیًّا وَّمَیِّتًا یَارَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْکَ وَاٰلِکَ وَسَلَّمْ

आप पर मेरे मां, बाप कुरबान हों, आप हर हाल में ख़ुश और पाकीज़ा रहे ज़िन्दगी में भी और विसाल के बाद भी और फिर हुजरा शरीफ़ से बाहर निकले और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन के क़ौल से उन को रोका और मिम्बरे रसूल पर तशरीफ़ लाए और लोगों से ख़िताब फ़रमाया।

ऐ लोगो ! जान लो कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम विसाल फ़रमा चुके हैं :

مَنْ کَانَ یَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ کَانَ یَعْبُدُ اللّٰہَ فَاِنَّ اللّٰہَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ ط

यानी जो कोई मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व आलिही वसल्लम की इबादत करता हो तो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तो विसाल हो गया है और जो कोई अल्लाह तआला की इबादत करता है तो अल्लाह तआला ज़िन्दा है उस को कभी मौत न आएगी।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तक़रीर ने सारे सहाबा पर ऐसा असर किया कि सब को यक़ीन हो गया कि हमारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम विसाल फ़रमा चुके हैं। मुलख़्ख़सन

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 166, मदारिजुन्नुबुव्वत जि. 2, स. 737)

आक़ा करीम को मौला अली और हज़रत अब्बास ने गुस्ल दिया

महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को विसाल शरीफ़ के बाद अहले बैते अतहार ने और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने गुस्ल दिया और मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर से गुस्ल के वक़्त कोई चीज़ बर आमद नहीं हुई, जिस तरह कि दूसरे लोगों के शिकम वग़ैरह से निकलती है उस पर हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे मां, बाप आप पर क़ुरबान हों कि कितनी पाकीज़गी और ख़ुश्बू है आप की हयात में भी और आप की ममात में भी।

और महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तीन मरतबा पाक व साफ़ पानी, बेरी के पत्ते और काफ़ूर के पानी से गुस्ल दिया गया और हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि बेर गुर्स के सात मशकीज़े पानी से गुस्ल दिया गया। (बीरे गुर्स यह एक कुंवा है जो मदीना तैय्यिबा से शुमाल की जानिब निस्फ़ मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है) इस कुंए का पानी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पिया था और उस के पानी से वुज़ू भी किया था और वुज़ू के बाक़ी पानी को उसी कुंए में डाला गया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस कुंए यानी बीरे गुर्स में अपना लुआबे दहन भी डाला था और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की वसियत थी की मुझे बीरे गुर्स के सात मशकीज़ा पानी से गुस्ल दिया जाए। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 745)

आक़ा करीम के गुस्ल के पानी की बरकत

जब गुस्ल दिया गया तो हमारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पलकों के नीचे और नाफ़ शरीफ़ के गोशा में कुछ पानी जमा हो गया था हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस पानी को अनपी ज़बान से चूस लिया और पी गए। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उस पानी की बरकत से मेरा सीना इल्म व आगही का ख़ज़ीना और मेरा हाफ़िज़ा बहुत मज़बूत हो गया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 745)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम का ईमान और अक़ीदा मुलाहज़ा फ़रमाइये कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़ायदा देने वाला, फ़ैज़ व बरकत पहुँचाने वाला तो जानते ही थे उन का ईमान व अक़ीदा तो यह भी था कि मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे पाक से जो पानी लग गया है वह भी फ़ैज़ बख़्श और फ़ायदा देने वाला है।

आक़ा करीम की नमाज़े जनाज़ा की कैफ़ियत

महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी हयात के ज़मानए अलालत में फ़रमाया था कि अव्वल जो कोई मुझ पर नमाज़ पढ़ेगा वह मेरा परवरदिगार है । उस के बाद जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम, फिर मीकाई अलैहिस्सलाम, फिर इसराफ़ील अलैहिस्सलाम , फिर मलकुल मौत अलैहिस्सलाम ने दीगर फ़रिश्तों के साथ फिर मेरे अहले बैत, फिर बाक़ी सहाबए किराम। चुनाँचे इसी तरह मेरे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नमाज़ पढ़ी गई इसी तरह से सहाबा की एक जमाअत आती और बग़ैर इमाम के नमाज़ पढ़ कर चली जाती।

हज़रात ! मनक़ूल है कि सब से पहले अहले बैत ने नमाज़ पढ़ी और जब अहले बैत यानी हज़रत मौला अली हज़रत अब्बास हज़रत कुसुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम वग़ैरह ने नमाज़ पढ ली तो दूसरे लोगों को मालूम न हो सका कि अहले बैत ने किस तरह नमाज़ पढ़ी और क्या दुआ की ? लोगों ने हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि आप ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कैसे नमाज़ पढ़ी और क्या दुआ मांगी तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा में किसी ने इमामत नहीं की। और जिस तरह लोगों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाती है उस तरह नमाज़ नहीं पढ़ी गई और वह दुआएं भी नहीं पढ़ी गई जो दुआएं हम नमाज़े जनाज़ा में पढ़ते हैं और फ़रमाया कि हम अहले बैत ने यह दुआ पढ़ी।

हुज़ूर की नमाज़े जनाज़ा की दुआ

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ط

(पारा 22, रुकू 4)

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ صَلَوٰتُ اللّٰهِ الْبَرِّ الرَّحِيْمِ وَالْمَلٰئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَالنَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَمَا سَبَّحَ لَكَ مِنْ شَيْءٍ يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَسَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الشَّاهِدِ الْبَشِيْرِ الدَّاعِيْ بِاِذْنِكَ السِّرَاجِ الْمُنِيْرِ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ ○

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जनाज़े की जानिब खड़े हुए और अर्ज़ किया ऐ नबिये रहमत! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप पर अल्लाह तआला की जानिब से (दुरूदो सलाम) रहमत व बरकत नाज़िल हो।

या अल्लाह तआला! हम गवाही देते हैं कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर जो कुछ नाज़िल हुआ वह सब हम तक पहुँचा दिया और उम्मत के साथ नसीहत (हिदायत) के तमाम हुक़ूक़ अदा फ़रमाए और राहे ख़ुदा में जिहाद किया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने अपने दीन को ग़ालिब फ़रमा दिया। ऐ अल्लाह तआला! हमें उन लोगों में बना कि हम उस अम्र की पैरवी करें जो आप पर नाज़िल हुआ और हम को और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क़ियामत के दिन (एक जगह) जमा फ़रमा, लोगों ने आमीन कही। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 749)

ऐ ईमान वालो! अहले बैते अतहार और सहबाए किराम और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रूबरू जनाज़े के सामने दुरूदो सलाम पढ़ा और अल्लाह तआला की बारगाह में अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी और रहीमो करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्र किया और तारीफ़ बयान की। गोया अहले बैते अतहार, सहाबए किराम और हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने इस तरह से मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

आक़ा करीम क़ब्र शरीफ़ में मदफ़ून हुए

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं ने सुना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

قَالَ مَا قَبَضَ اللّٰهُ نَبِيًّا اِلَّا فِي الْمَوْضَعِ الَّذِيْ يُحِبُّ اَنْ يُّدْفَنَ فِيْهِ اُدْفُنُوْهُ فِيْ مَوْضَعِ فِرَاشِهٖ ط

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला किसी नबी की रूह को उस जगह क़ब्ज़ करता है जहाँ उस का दफ़्न महबूब हो इस लिये उन को मक़ामे फ़राश में ही दफ़्न किया जाए।

मनक़ूल है : हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अब्बास, हज़रत फ़ज़्ल, हज़रत कुसुम रज़ियल्लाहुत तआला अन्हुम अजमईन क़ब्र में दाख़िल हुए थे और क़ब्रे अनवर से सब से बाद में निकलने वाले हज़रत कुसुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे वह फ़रमाते हैं कि क़ब्रे अनवर में मैंने देखा कि रहमते आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही रसल्लम के लबहाए मुबारक हिल रहे हैं, मैं ने कान लगा कर सुना तो ज़बाने करम से यह आवाज़ आ रही थी :

رَبِّ اُمَّتِی، اُمَّتِی

यानी ऐ रब तआला ! मेरी उम्मत को बख्श दे। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 751)

खूब फ़रमाया आला हज़रत प्यारे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आदत कीजिये
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये
(सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)
रबीउल आख़िर शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

हुज़ूर ग़ौसे पाक और राहे सुलूक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ

وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِىِّ الْبَغْدَادِىِّ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ

خواجه غريب نواز اَلْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِىِّ اَجْمَعِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(पारा 11, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबिये मुकर्रम, रसूले मुअज़्ज़म, सरकारे आज़म, रहमते आलम, सरकारे मदीना, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अख़्लाक़ो आदात के मज़हरे कामिल हैं इसी लिये औलियाए किराम और उलमाए इज़ाम ने आप की बारगाहे ग़ौसियत में नज़रे अक़ीदत पेश किया और आप की अज़ीम शानो अज़मत को यूँ बयान किया है कि मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर ग़म ज़दा और परेशान हाल की दस्तगीरी फ़रमाते, ज़ईफ़ों में बैठते, फ़क़ीरों के साथ तवाज़ोअ से पेश आते, बड़ों की इज़्ज़त और छोटों पर शफ़क़त फ़रमाते, सलाम में पहल करते, लोगों की ख़ताओं और कोताहियों को दर गुज़र फ़रमाते, जो कोई भी आप की ज़रा भी ख़िदमत करता नज़रो नियाज़, हदिया, तोहफ़ा, पेश करता उस की क़दर करते और उसी वक़्त राहे ख़ुदा में ख़र्च कर देते। जूदो सख़ा का यह आलम था कि एक ही मजलिस में बाज़ औक़ात चार सो हाज़िरीन को विलायत के मक़ाम तक पहुँचा देते, आप इन्तिहाई रहीम और करीमुन्नफ़स थे। शुजाअत ऐसी कि ख़लीफ़ए वक़्त को मिम्बर पर बैठे ललकार कर

ख़िलाफ़े शरअ उमूर (शरीअत के ख़िलाफ़ कामों) से रोकते, सिद्क़ो सफ़ा में क़माल दरजा रखते थे। अमानत के पासबां, इन्साफ़ व अद्ल के पैकर, अफ़ुवो अता फ़रमाने वाले, हिलमो हया में बे मिस्ल व बे मिसाल, मुरव्वत व मुलाहज़ा में बे नज़ीर, अपनी ज़ात के लिये कभी बदला न लेते बल्कि आप की शान में कोई बे अदबी करता तो अल्लाह तआला उस शख़्स को सज़ा देता। भूकों को खाना खिलाना और मोहताज, यतीम और बेवा की हाजत रवाई करना आप के करम में शामिल था। प्यारे रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत की बख़्शिश की दुआ करते और कोई बीमार होता तो अयादत फ़रमाते, दावत क़ुबूल फ़रमाते, असर अंगेज़ व नसीहत आमेज़ वअ्ज़ फ़रमाते, वअ्ज़ में बहुत से यहूदी, ईसाई वग़ैरह इस्लाम क़ुबूल करते और गुनाहगार ताइब होते। इन तमाम से ज़ाइद औसाफ़ और अख़्लाक़ की हामिल ज़ाते मुबारका है मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की।

ऐ ईमान वालो ! औलियाए किराम तो बहुत हुए और क़ियामत तक औलियाए किराम की तशरीफ़ आवरी का नूरानी सिलसिला जारी रहेगा लेकिन, जमाअते औलिया में जो मक़ाम हमारे बड़े पीर सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हासिल है हर वली को यह शान मसयस्सर नहीं।

फ़ारसी.....................

नसबी शराफ़त और ख़ानदानी वजाहत के अलावा इल्मी जलालत, इल्मी अज़मत, कमाले विलायत, कसरते करामत, यह सब आप की वह ख़ास ख़ास ख़ुसूसियतें हैं जो बहुत कम औलिया को हासिल हुई। इसी सबब से बहुत से वली अपने अपने दौर में चाँद व सूरज की तरह चमके और चन्द दिनों उन की विलायत का डंका वजता रहा, मगर धीरे धीरे उनके ज़िक्र व शोहरत की रौशनी घटती और कम होती चली गई यहाँ तक कि दुनिया उन के नामों को भूल गई मगर हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को तक़रीबन नौ सौ बरस से ज़ाइद का तवील अर्सा गुज़र जाने के बावजूद आप की शोहरत व मक़बूलियत के आफ़ताब व माहताब (सूरज व चाँद) को कभी गहन नहीं लगा, हमेशा आप की विलायत व करामत का डंका मशरिक़ व मग़रिब, शुमाल व जुनूब (पूरब पश्चिम, उत्तर दक्षिण) हर चार दांगे आलम में बजता ही रहा और आज भी आप की अज़मतों और करामतों का सूरज अपनी पूरी आबो ताब के साथ चमक रहा है और इन्शाअल्लाहु तआला क़ियामत तक चमकता ही रहेगा। क्या ही ख़ूब फ़रमाया इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कि :

तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा

सूरज अगलों के चमकते थे चमक कर डूबे
उफ़क़े नूर पे है महर हमेशा तेरा

गीलान के पीराने पीर

नामे मुबारक	:	सय्यद अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
कुन्नियत	:	अबू मुहम्मद
लक़ब	:	मोहियुद्दीन, ग़ौसे आज़म, महबूबे सुबहानी, पीराने पीर दस्तगीर
मक़ामे विलादत	:	ईरान के एक शहर, गीलान (जीलान) नाम का।
तारीख़े विलादत	:	यकुम रमज़ानुल मुबारक 470 हि.
तारीख़े विसाल	:	11 रबीउल आख़िर 561 हि.
मज़ारे अनवर	:	बग़दाद शरीफ़
उम्र शरीफ़	:	91 इक्यानवे साल
वालिदे माजिद	:	हज़रत अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त
वालिदा माजिदा	:	उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा सानी

नसबे मुबारक

ऐ ईमान वालो ! हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यकुम रमज़ान 470 हि. को ईरान के एक शहर गीलान (जीलान) में पैदा हुए। आप के वालिदे माजिद का इस्मे गिरामी सय्यद अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त और वालिदा का नामे मुबारक उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा सानी है। वालिदा माजिदा की तरफ़ से आप का शजरए नसब हज़रत सय्यदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मिलता है और वालिदा माजिदा की तरफ़ से आप का सिलसिलाए नसब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वाबस्ता है, इस लिये आप ख़ानदानी शराफ़त और नसबी वजाहत के एतिबार से हसनी सय्यद भी हैं और हुसैनी सय्यद भी। इसी मज़मून को सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यूँ बयान फ़रमाया है :

तू हुसैनी हसनी क्यूँ न मोहियुद्दीन हो
ऐ ख़िज़र मजमए बहरैन है चश्मा तेरा

आप के मुक़द्दस मां, बाप

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे गिरामी हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वलिये कामिल बुज़ुर्ग थे। एक दिन रमज़ान शरीफ़ के महीना में आप कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में दरयाए दजला पार करना पड़ा, उस में से एक सेब बहता हुआ जब आप के क़रीब आया तो आप ने उस सैब को उठा लिया और उसी से रोज़ा इफ़्तार किया। ख़ाने के बाद खयाल आया ख़ुदा जाने यह सेब किस का था और कैसे नदी में बह गया और हम ने मालिक की इजाज़त के बग़ैर कैसे खा

लिया। बग़ैर इजाज़त के खा लेना आप को तक़्वा के ख़िलाफ़ महसूस हुआ और ख़याल आया कि कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन यह सैब अज़ाब का सबब बन जाए और हम ख़ुदा की बारगाह में गिरफ़्तार हो जाएं। यह सोच कर आप वहाँ से उठे और अपना क़ुसूर मुआफ़ कराने के लिये सैब के मालिक की तलाश में दरया के किनारे किनारे चल दिये काफ़ी देर तक चलने के बाद एक अज़ीमुश्शान बाग़ नज़र आया जिस की कुछ शाखें फलों से लदी हुई पानी की सतह पर झुकी हुई थीं, और हवा के झोंकों से पके हुए फल टूट टूट कर पानी में गिर रहे थे, आप को यक़ीन हो गया कि जो फल मैंने खाया है वह इसी बाग़ का था।

फिर आप ने उस बाग़ के मालिक की जुस्तुजू की तो मालूम हुआ कि उस बाग़ के मालिक एक ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमई हैं, आप उन की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त, रूहानी कश्फ़ से जान लिया कि यह जवान बच्चा जवाने सालेह है। फ़रमाया ऐ जवाने सालेह इस ग़लती को मुआफ़ जब करूँगा कि तुझे दस साल तक मेरे बाग़ की देख भाल करना होगी। हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुक्म पाते ही बाग़ की ख़िदमत में मशग़ूल हो गए, जब दस साल का तवील अर्सा गुज़र गया तो एक दिन हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर फ़रमाया कि अभी एक शर्त और बाक़ी है, उसे भी अन्जाम देना होगा। फिर मुआफ़ी होगी। वह शर्त यह है कि मेरी एक लड़की है जिस में पाँच ऐब हैं। पहला ऐब वह अन्धी है। दूसरा ऐब वह बहरी है। तीसरा ऐब वह गूंगी है। चौथा ऐब वह लुंजी है। पांचवां ऐब वह लंगड़ी है। उससे आप को निकाह करना होगा। हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह सुन कर सोच में पड़ गए, एक तरफ़ सैब की मुआफ़ी का सवाल था और दूसरी तरफ़ ऐसी औरत से निकाह करना जो अपाहिज है, सारी ज़िन्दगी का मस्अला था। आख़िर ऐसी औरत के साथ सारी ज़िन्दगी कैसे कटेगी। इस तसव्वुर ने अज़ हद परेशान कर दिया, उन के ज़हन में ख़यालात हुजूम बन कर आए आख़िर फ़ैसला किया कि ज़िन्दगी फ़ानी है, जवानी भी चन्द दिन की मेहमान है। हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा मुझे मन्ज़ूर है, मैं आप की अपाहिज बेटी के साथ निकाह करने को तैयार हूँ।

यह सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सैब की ग़लती को मुआफ़ कर दिया। निकाह हो गया। जब हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बीवी के पास गए तो देखा उस के तमाम आज़ा दुरुस्त हैं, एक निहायत ख़ूबसूरत तन्दुरुस्त लड़की बेठी है, इस हुस्नो जमाल के पैकर को देख कर ख़याल किया शायद कोई और लड़की है, जलदी से बाहर निकल आए। हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात हुई और कहा, यह तो कोई और औरत है उस में तो कोई ऐब ही नहीं और अपने हुस्नो जमाल में बे मिसाल है। हज़रत अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ जवाने सालेह यही तेरी बीवी है। मैं ने अपनी बच्ची के जो औसाफ़ बयान

किये थे उस का मतलब यह था। वह अन्धी है यानी उस ने कभी ना महरम (जिससे परदा फ़र्ज हो) को नहीं देखा। वह गूंगी है यानी कभी उस ने बद कलामी नहीं की। वह बहरी है यानी उस ने आज तक किसी ग़ैर मर्द की आवाज़ नहीं सुनी। वह लुन्जी है यानी कभी उस ने बुरी चीज़ों को हाथ नहीं लगाया। वह लंगड़ी है यानी कभी उस ने अपने क़दम को बुरे रास्ते पर नहीं रखा। यह हज़रत अब्दुल्लाह सोमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की साहब ज़ादी थीं, जिन का निकाह हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ जो वलिये कामिल की बेटी थी और वलिये कामिल की बीवी बनीं और फिर उन्हीं पाक तीनत ख़ातून हज़रत उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के शिकमे पाक से हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए और उस मुक़द्दस मां को सरदारे औलिया बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दूध पिलाने और गोद में लेने का शरफ़ हासिल हुआ। (बहजतुल असरार, स. 262, हयाते तैय्यिबा, .7)

आप के भाई

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के एक हक़ीक़ी भाई भी थे जिन का इस्मे गिरामी अबू अहमद अब्दुल्लाह था, यह आप से उम्र में छोटे थे। और वालिदा मोहतरमा की ख़िदमते रहमत ही में रहे और जीलान के उलमा से इल्म हासिल किया और जवानी के अय्याम में ही अपने वतन जीलान में विसाल फ़रमाया। (बहजतुल असरार, स. 262, हयाते तैय्यिबा, स. 11)

आपका बचपन

तमाम बुज़ुर्गाने दीन का इत्तिफ़ाक़ है कि आप मादर ज़ाद वली हैं। चुनाँचे विलादत के बाद ही आप की यह करामत ज़ाहिर हुई कि आप रमज़ान में तुलूअ फ़ज्र से गुरूब आफ़ताब तक कभी दूध नहीं पीते थे यानी रमज़ान शरीफ़ के पूरे महीने आप रोज़ा रखते थे और जब इफ़्तार का वक़्त होता मग़रिब की अज़ान होती तो आप दूध पीने लगते, यह करामत इस क़दर मशहूर हुई कि जीलान के हर तरफ़ यह शोहरा और चर्चा था कि सादात के घराने में एक ऐसा बच्चा हैदा हुआ है जो रमज़ानुल मुबारक में दिन भर दूध नहीं पीता। (क़लाइदुल जवाहर, स. 3)

रहे पाबन्द अहकामे शरीअत इब्तिदा ही से
न छूटा शीर ख्वारी मैं भी रोज़ा ग़ौसे आज़म का

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हम अपने बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपने मुबारक से सबक़ हासिल करें कि हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए और रमज़ान शरीफ़ का बरकत वाला महीना आया तो रोज़ा रखा यानी शीर ख़्वारगी की ज़माने में भी रोज़ा न छोड़ा और हम गुलामों को सबक़ दे गए कि हमारा सच्चा गुलाम वही है जो रमज़ान शरीफ़ का एहतिराम करे और रोज़े का पाबन्द बने।

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह यह शाने इबादत व बन्दगी है हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे

आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपन शरीफ़ की तो जिस का बचपन इतना बे मिसाल है उस की मुकम्मल हयाते तैय्यिबा की शाने बे मिसाली का क्या आलम होगा।

ख़ूब फ़रमाया इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रदिज़यल्लाहु तआला अन्हु ने :

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

ग़ैबी आवाज़

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बचपन ही से लह्व व लअब (खेल कूद) से मुतनफ़्फ़िर और दूर रहे। आप ने ख़ुद अपने बचपन के हालात बयान फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि जब कभी मैं बच्चों के साथ खेलने का इरादा करता तो एक ग़ैबी आवाज़ सुनता था कि कोई कहने वाला मुझ से कह रहा है कि ऐ बरकत वाले बच्चे ! मेरी तरफ़ आजा। (बहजतुल असरार, स. 50)

अलय्या या मुबारक आती थी आवाज़ ख़लवत में
यह दरबारे इलाही में है रुतबा ग़ौसे आज़म का

सुब्हानल्लाह ! सुब्हानल्लाह !! किस क़दर ऊंचा मक़ाम है बारगाहे परवरदिगारे आलम में। ऐ अल्लाह तआला हमें अपने प्यारे वली, महबूबे सुब्हानी, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सच्ची गुलामी नसीब फ़रमा और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

विलायत का इल्म

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि आप को अपनी विलायत का इल्म कब हुआ ? तो आप ने फ़रमाया कि दस बरस की उम्र में जब मैं मकतब में पढ़ने के लिये जाता था, तो रास्ते में मेरे पीछे पीछे फ़रिश्ते चलते नज़र आते थे फिर जब मैं मकतब में पहुँचता तो उन को यह कहते हुए सुनता कि اِفْسَحُوْا لِوَلِیِّ اللّٰهِ

यानी अल्लाह के वली के लिये बैठने की जगह दो और यह आवाज़ तमाम मकतब वाले सुनते थे। (बहजतुल असरार, स. 47, क़लाइदुल जवाहर, स. 9 ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर, शैख़ अब्दुल हक़, ज़ुबदतुल आसार, स. 79)

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा

बेल की आवाज़

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन शहर के बाहर सैर व तफ़रीह के लिये जा रहा था रास्ते में एक बेल मिला उस ने मेरी तरफ़ मुड़ कर देखा और बज़ुबाने फ़सीह कलाम किया। ऐ अब्दुल क़ादिर ! न तो तुम इस घूमने फिरने के

लिये पैदा किये गए और न इस बात का तुम्हें हुक्म दिया गया है। आप फ़रमाते हैं कि एक बे ज़बान जानवर बेल से यह नसीहत सुन कर मेरे क़ल्ब (दिल) में महब्बते इलाही का जज़्बा मोजज़न हो गया और मैं घर वापस आ गया। (बहजतुल असरार, स. 255, खुलासतुल मफ़ाख़िर)

ऐ ईमान वालो ! हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अल्लाह तआला किस क़दर प्यार फ़रमाता है और उन से महब्बत करता है कि जब आप खेलने का इरादा करते हैं तो इलय्या या मुबारक की प्यारी प्यारी सदा से रोक देता है और जब आप मदरसा में पढ़ने के लिये जाते हैं तो फ़रिश्ते साथ चलते हैं, मदरसा तक आप को पहुँचाने के लिये जाते हैं और बैठने की जगह कुशादा कराते हैं और आप से बे ज़बान जानवर बेल बात चीत करते हैं। यह सब कुछ हालात बचपन शरीफ़ में थे इस लिये कि आप को आगे चल कर कुतबियत व ग़ौसियत के अज़ीम मस्नद पर जलवा अफ़रोज़ होना था। एक ज़माना ऐसा भी आया कि जहाँ औलियाए किराम की गरदनें हैं, वहाँ हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़दम मुबारक है। इसी लिये इमामे अहले सुन्नत, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किया ख़ूब फ़रमाया है :

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

मां से इजाज़त

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 18 साल की उम्र तक गीलान ही के मदरसों में इल्म हासिल करते रहे, सात साल की उम्र में कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया। एक दिन हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी वालिदा माजिदा की ख़िदमते रहमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि अगर आप इजाज़त दें तो मैं इल्मे दीन हासिल करने के लिये बग़दाद चला जाऊँ तो वालिदा ने मुराक़बा किया और फ़रमाया कि प्यारे बेटे मैं देखती हूँ कि तुम्हारी कामयाबी बग़दाद में रहने पर मौक़ूफ़ है, इस लिये मुझे तुम्हारी जुदाई तो गवारा है मगर इल्मे दीन से जुदाई हर गिज़ गवारा नहीं कर सकती, ख़ुशी ख़ुशी मैं तुम्हें बग़दाद जाने की इजाज़त देती हूँ, मेरे पास तुम्हारे वालिदे मोहतरम के हिस्से के अस्सी दीनार मौजूद हैं। चालीस दीनार तुम्हारे भाई के हैं और चालीस दीनार तुम्हारे हैं फिर वालिदा माजिदा ने वह चालीस दीनार मेरी गुदड़ी के बग़ल में सी दिये और मुझे वसियत फ़रमाई कि मेरे प्यारे बेटे ! तुम किसी भी हालत में रहो मगर कभी झूट न बोलना, हर हालत में सच बोलना और मुझे रुख़सत करने के लिये दरवाजे तक तशरीफ़ लाई और फ़रमाया मैं तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये सफ़र करने की इजाज़त देती हूँ और वही मुहाफ़िज़ है और हसरत व महब्बत भरी नज़रों से मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाया :

هٰذَا وَجْهٌ لَّا اَرَاهُ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

यानी यह वह चेहरा है जिसे क़ियामत के दिन तक न देख सकूँगी। (हुज्जतुल असरार, स. 255)

ऐ ईमान वालो ! हम सबक़ हासिल करें अपने बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु की वालिदा माजिदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से कि उन की निगाह में कुरआन की तालीम, दीन का इल्म कितना अहम था कितना ज़रूरी था कि अपने लख्ते जिगर, नूरे नज़र को अपने से जुदा किया और बग़दाद शरीफ़ रवाना फ़रमाया।

अल्लाह तआला हम को भी इल्मे दीन से अपने बच्चों को आरास्ता करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

बग़दाद का सफ़र

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 18 साल की उम्र में वालिदा माजिदा से इजाज़त ले कर इल्मे दीन के हुसूल के लिये जीलान से एक क़ाफ़ला के साथ बग़दाद शरीफ़ का सफ़र फ़रमाया जो तक़रीबन चार सो मील का सफ़र है। जब क़ाफ़ला हम्माद से आगे बढ़ा तो डाकुओं नेहमला कर के सारा माल व अस्बाब लूट लिया। हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक तरफ़ खड़े हैं और सारा माजरा देख रहे हैं, एक डाकू आप के पास आया और दरयाफ़्त किया कि ऐ लड़के! बताओ तुम्हारे पास क्या है? आप ने फ़रमाया मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकू आप की बात को मज़ाक़ मसझ कर चला गया। फिर दूसरा डाकू आया उस ने भी वही सवाल किया और आप ने उसे भी वही जवाब दिया। उस ने भी आप की बात को मज़ाक़ समझा और चला गया। जब यह दोनों डाकू सरदार से मिले और सारा वाक़िआ बयान किया तो सरदार ने कहा कि उस लड़के को हमारे पास लाओ।

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु डाकुओं के सरदार के पास लाए गए, डाकुओं के सरदार ने दरयाफ़्त किया, साहेबज़ादे! सच बताओ कि तुम्हारे पास क्या है? आप ने फ़रमाया मेरे पास चालीस दीनार हैं। सरदार ने पूछा : कहाँ हैं। आप ने फ़रमाया मेरी गुदड़ी के बग़ल में सिले हुए हैं। सरदार ने हुक्म दिया गुदड़ी चाक की जाए। आप की गुदड़ी मुबारक चाक की गई तो उस में से चालीस दीनार निकले। डाकू और उन का सरदार आप की सदाक़त को देख कर हैरान रह गए। सरदार बोला कि लड़के तुम अच्छी तरह जानते हो कि हम लोग रहज़न (डाकू) हैं, तुम्हारे पास यह दीनार तो बहुत अच्छी तरह पोशीदा और महफ़ूज़ थे लेकिन तुम ने क्यों बता दिया और उसे ज़ाहिर कर दिया। आप ने मुस्कुरा कर फ़रमाया, क्या मैं झूट बोलता, तुम ने पूछा और मैं ने सच सच बता दिया। मेरी वालिदा माजिदा ने चलते वक़्त मुझ से यह अहद लिया था कि बेटा कैसा भी वक़्त आए, कैसी भी हालत आए मगर कभी झूट न बोलना, हर हालत में सच बोलना, अब क्या मैं आप लोगों से डर कर और चालीस दीनार के लिये अपनी मां से किये हुए अहद व पैमान को तोड़ दूँ। अपनी मां की नसीहत को भूल जाऊँ और अपनी प्यारी मां को नाराज़ करूँ। ऐ सरदार सुन लो दीनार तो दे सकता हूँ मगर मां की बात नहीं। ख़ुद तो लुट सकता हूँ मगर मां की वसियत व नसीहत को नहीं लुटा सकता, मां का हुक्म था हर हाल मैं सच बोलना इस लिये मैं ने सच सच सब कुछ बता दिया।

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस प्यारी और सच्ची बात का सरदार पर ऐसा असर हुआ कि आँखों से आंसू जारी हो गए और बोला आह! तुम अपनी मां का अहद व पैमान नहीं तोड़ सकते और हम हर दम खुदाए तआला का अहद तोड़ रहे हैं। यह कहते हुए डाकुओं का सरदार आप के क़दमे मुबारक पर गिर गया, सिद्क़ दिल से तौबह कर ली, डाकुओं ने अपने सरदार को तोबह करते हुए देखा तो कहने लगे कि जब तुम रहज़नी में हमारे सरदार थे तो अब तौबह में भी तुम हमारे सरदार हो। तमाम डाकुओं ने भी तौबह करके क़ाफ़ले वालों का लूटा हुआ माल वापस कर दिया और अब इबादत व रियाज़त में मशग़ूल हो गए और अपने दौर के बहतरीन सालेहीन बन गए। हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाया करते थे:

هُمْ اَوَّلُ مَنْ تَابَ عَلٰی يَدِیْ

यानी सब से पहले मेरे हाथ पर तौबह करने वाले वही लोग थे।

(बहजतुल असरार,. 256, क़लाइदुल जवाहर, स. 9)

ऐ ईमान वालो! हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बचपन शरीफ़ से हम सब सबक़ हासिल करें और सच का दामन किसी हाल में भी न छोड़ें और सच के साथ ही रहें और सच बोलना, सच के साथ ही रहना हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तरीक़ा है। या अल्लाह तआला हमें भी हज़रत महबूबे सुब्हानी हुज़ूर ग़ौसे आज़म जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तुफ़ैल सच बोलने और सच के साथ रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

हुसूले इल्म

मदीनतुल इल्म बग़दाद शरीफ़ पहुँच कर वहाँ की मशहूरो मअरूफ़ दर्सगाह जामिआ निज़ामिया में बहैसियत एक तालिबे इल्म के दाख़िल हुए और बड़े बड़े मशहूर उलमा के हलक़ए दर्स में शामिल हो कर उलूम (इल्मे दीन) की तकमील फ़रमाई। अल्लामा अबू ज़करिया यहया बिन अली से इल्मे अदब पढ़ा और अबुल वफ़ा अली बिन अक़ील और मुहम्मद बिन क़ाज़ी अबू यअला और हज़रत क़ाज़ी अबू सईद मुखज़ूमी वग़ैरह बा कमाल हज़रात से फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह की तालीम हासिल की और अबू ग़ालिब मुहम्मद बिन अल हसन बा कलानी वग़ैरह तक़रीबन सतरह मुहद्देसीने किराम की दर्सगाहों में इल्मे हदीस पढ़ कर महारते ताम्मा हासिल फ़रमाई इस तरह तमाम उलूमे अरबिया में मुकम्मल महारत हासिल कर ली। चुनाँचे क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़ में आप ने फ़रमाया कि:

دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا   وَنِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَّوْلَی الْمَوَالِیْ

तर्जमा: यानी मैं इल्म पढ़ता रहा यहाँ तक कि क़ुतुब हो गया और तमाम मौलाओं के मौला अल्लाह तआला की तरफ़ से मुझे तमाम सआदत के खज़ाने मिल गए। (क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़)

आप का सब्र

हज़रात ! हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तालिबे इल्मी के ज़माने में जिन मसाइब व तकालीफ़ से दो चार हुए हैं उस से साफ़ ज़ाहिर है कि बग़दाद शरीफ़ में ब ज़ाहिर आप का कोई मदद गार ग़म ख़्वार न था। वालिदए मोहतरमा कभी कभी कुछ मुख़्तसर दिरहम व दीनार भेज दिया करती थीं। उसी से ख़ुर्दो नोश (खाने पीने) का काम चलता था। इस वक़्त आप को बहुत ही ज़्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ा।

ऐ ईमान वालो ! इस प्यारे वाक़िए से हमें दर्स लेना चाहिये कि तकलीफ़ व दुश्वारी के रास्तों से गुज़रे बग़ैर मन्ज़िले मक़सूद का मिलना मुश्किल है और इल्मे ज़ाहिर के बाद इल्मे बातिन यानी तरीक़त व तसव्वुफ़ का इल्म भी हासिल करना चाहिये अगर इल्मे ज़ाहिर मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचाने के लिये काफ़ी व शाफ़ी होता तो हमारे बड़े पीर आक़ा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत शैख़ हम्माद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते बा रहमत में एक लम्बी मुद्दत तक रह कर इल्मे तरीक़त और तसव्वुफ़ का इल्म न हासिल करते।

या अल्लाह तआला हम को इल्मे ज़ाहिर के साथ इल्मे बातिन की दौलत भी इनायत फ़रमा। आमीन।

आप का मुजाहदा

मेरे आक़ा, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी से फ़राग़त के बाद आप रियाज़त व मुजाहदा में मशग़ूल हो गए और बड़े बड़े मुजाहदे किये, सालहा साल मदाइन और एवाने किसरा के खन्डरात में चिल्ले और मुराक़बे करते रहे, कई महीनों तक सिर्फ़ गिरी पड़ी मुबाह चीज़ें खा लेते और पानी नहीं पीते, कभी तो सिर्फ़ पानी पी कर महीनों तक कुछ नहीं खाते, वीरानों और जंगलों में भूके प्यासे गश्त करते रहते और कभी कभी चालीस चालीस दिनों तक बे आबो दाना मुसलसल इबादत व रियाज़त में मशग़ूल रह कर ख़्वाहिशाते नफ़सानिया से जिहाद फ़रमाते रहते।

हज़रत अहमद बिन यहया नाक़िल हैं कि मैं ने ख़ुद हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना कि आप ने यह फ़रमाया कि मैं फिरता रहा उस वक़्त न मैं लोगों को पहचानता था न लोग मुझे पहचानते थे और मैं बराबर चालीस साल तक इशा के बाद से सुबह तक हर रोज़ बिला नाग़ा एक ख़त्मे क़ुरआन मजीद की तिलावत करता रहा और इन्हीं रियाज़त व मुजाहिदात के दौरान कुछ दिनों के लिये हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर जज़्ब व सुक्र की कैफ़ियत भी तारी हो गई थी, चुनाँचे बाज़ वक़्त आप जंगलों और वीरानों में दौड़ते फिरते और आप को यह ख़बर नहीं होती थी कि कहाँ जा रहे हैं जब सह्व ख़त्म होता और होशियारी की कैफ़ियत नमूदार होती तो आप अपने को किसी दूर दराज़ मक़ाम पर पाते और कभी कभी तो आप पर ऐसी कैफ़ियत तारी हो जाती थी कि बयाबानों और वीरानों में ज़ोर

ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर ज़िक्र करते और नअरा मारते फिरते थे यहाँ तक कि लोग आप को दीवाना समझने लगते थे। (बहजतुल असरार, स. 249, क़लाइदुल जवाहर, स. 259)

शैतान का फ़रेब

हज़रत शैख़ उस्मान यफ़ीनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस ज़माने में इराक़ के जंगलों और वीरानों में इबादत व रियाज़त में मशग़ूल थे तो बसा औक़ात जंगलों की भयानक और अन्धेरी रातों में शयातीन मुसल्लह (हथियार बन्द) हो कर ख़ौफ़नाक सूरतें बना कर आप के पास आते और डराते, आप पर आग फेंकते और लड़ा करते थे और हातिफ़े ग़बी की यह आवाज़ सुनते थे यानी ऐ अब्दुल क़ादिर उन शैतानों के मुक़ाबले के लिये उठो क्यों कि हम ने तुम्हें साबित क़दम रखा है और हमारी ताईद तुम्हारे साथ है। (बहजतुल असरार, स. 252)

मेरे आक़ा, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्द शैख़ मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि आप अपनी सियाहत के दौरान एक मरतबा आप किसी ऐसे जंगल में चले गए जहाँ पानी का नाम व निशान तक न था, कई दिन आप पर प्यास का सख़्त ग़लबा हुआ और अचानक आप के सरे मुबारक पर बादल का टुकड़ा आ गया और बारिश होने लगी जिस से आप ख़ूब सैराब हो गए फिर उस बादल से एक रोशनी ज़ाहिर हुई जो हद्दे नज़र तक फैल गई और उस रौशनी में एक सूरत ज़ाहिर हुई उस ने पुकार कर कहा ऐ अब्दुल क़ादिर ! मैं तुम्हारा रब हूँ मैं ने तुम पर तमाम हराम चीज़ों को हलाल कर दिया। यह आवाज़ सुन कर मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ा और फ़रमाया ऐ मरदूद तू दूर हो जा वह रोशनी ग़ायब हो गई और वह सूरत धुएं की तरह हो कर फैल गई फिर उस से आवाज़ आई ऐ अब्दुल क़ादिर ! आज तुम अपने इल्म की बदौलत मेरे फ़रेब से बच गए वर्ना उस के पहले इसी मैदान में सत्तर औलियाए तरीक़त को मैं गुमराह करके उन की विलायत को ग़ारत व बरबाद कर चुका हूँ। मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ शैतान ! मेरा इल्म भला किया बचा सकता है, जब तेरा इल्म तुझ को नहीं बचा सका। ऐ शैतान मरदूद ख़ूब ग़ौर से सुन ले, मेरे इल्म ने नहीं बल्कि मेरे रब के फ़ज़्लो करम ने मुझे तेरे शर से बचा लिया।

मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया गया कि हुज़ूर ! आप ने यह कैसे पहचान लिया कि यह शैतान ही है। तो आपने फ़रमाया कि उस के गुमराह कुन क़ौल से कि तमाम हराम चीज़ों को तेरे लिये हलाल कर दिया है। फ़ौरन मैंने पहचान लिया कि यह शैतान ही है क्यों कि अल्लाह तआला कभी नापाक और हराम चीज़ों को किसी के लिये हलाल नहीं फ़रमाता। (क़लाइदुल जवाहर, स. 20)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

पहला जुमा .... दूसरा बयान

वाह ! क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।
(पारा 11, रुकूअ 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सालहा साल के मुजाहिदा के बाद मैंने एक मरतबा ख़ुदाए तआला से अहद कर लिया कि मैं कुछ न खाऊँगा जब तक ख़ुदाए तआला मुझे न खिलाए और कुछ न पियूँगा जब तक अल्लाह तआला न पिलाए, फिर चालीस दिनों तक बग़ैर कुछ खाए पिये रह गया यहाँ तक कि हज़रत ख़्वाजा शैख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मेरे पास से गुज़रे फिर मुझे अपने घर बुलाया और अपने दस्ते करम से मुझे खिलाया पिलाया और फ़रमाया कि अब्दुल क़ादिर ! तुम नहीं खा पी रहे हो, बल्कि मैं ख़ुदाए तआला के हुक्म से तुम्हें खिला पिला रहा हूँ। तुम्हारा अहद पूरा हो गया। फिर हज़रत शैख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत किया और अपनी ख़िलाफ़त से सर फ़राज़ फ़रमाया। (बहजतुल असरार, स. 174)

आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

क़स्में दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

दुरूद शरीफ़ :

एअ़लाए कलिमतुल हक़

अअ़लाए कलिमतुल हक़ यानी हक़ बोलना मद व मोमिन के लिये बहुत ही आला ईमान और क़ीमती जोहर है। हुज़ूर सरापा नूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे गिरामी है। सब से अफ़ज़ल जिहाद यह है कि ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कह दी जाए। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हक़ बात कहने में बहुत जरी और निडर थे। बड़े बड़े बादशाहों और अमीरों को हक़ के मुआमले में आप झिंझोड़ कर रख देते। ख़लीफ़ए बग़दाद ने जब अबुल वफ़ा यहया जैसे ज़ालिम को क़ाज़ी का ओहदा सुपुर्द किया तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बर सरे मिम्बर ख़लीफ़ए वक़्त को अपने वअ़ज़ में ललकारा और साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐ ख़लीफ़ा! तूने एक जाबिर व ज़ालिम को ख़ुदा के बन्दों पर हाकिम बना दिया है, तू होश रख कि कल ख़ुदाए तआला क़ह्हार व जब्बार के दरबार में तुझ को नादिम व शर्मिन्दा हो कर उस का जवाब देना पड़ेगा। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पुर जलाल हक़ गोई से ख़लीफ़ए बग़दाद के जिस्म का रोंगटा रोंगटा और बदन का बाल बाल लरज़ा बरन्दाम हो गया और ख़लीफ़ए बग़दाद ने अपनी ग़लती का एतिराफ़ करके अबुल वफ़ा यहया को फ़ौरन कुज़्ज़ात के ओहदे से माज़ूल कर दिया। (हयाते तैय्यिबा, स. 46)

डाक्टर इक़बाल कहते हैं :

आईने जवां मरदां हक़ गोई व बे बाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही

क़दमे मुबारक की अज़मत

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने बरसरे मिम्बर व अज़ में फ़रमाया :

قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ

यानी मेरा क़दम हर वली के गरदन पर है आप की ज़बाने मुबारक से यह ऐलान सुन कर उस वक़्त तीन सो तेरा औलियाए किराम जो वअ़ज़ की मजलिस में हाज़िर थे सब ने अपना अपना सर झुका कर अर्ज़ किया कि ऐ सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप का क़दमे मुबारक हमारी गरदनों पर ही नहीं बल्कि आप का क़दम शरीफ़ तो हमारे सरों और हमारी आँखों पर है। और उन तमाम बुज़ुर्गों ने देखा कि तमाम रूए ज़मीन के औलियाए किराम आप के हुक्म पर अपनी अपनी गरदनें झुकाए खड़े हैं और सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्बे मुबारक पर अल्लाह तआला के अनवार व तजल्लियात

की बारिश हो रही थी और मदीने वाले आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अता किया हुआ ख़िलअते करामत औलियाए किराम के अज़दहाम में फ़रिश्ते आप को पहना रहे हैं। (बहजतुल असरार, स. 17)

हज़रत शैख़ मकारिम अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि उस वक़्त औलियाए किराम ने देखा कि कुतबियत का झन्डा आप के सामने गाड़ा गया और ग़ौसियत का ताज आप के सरे मुबारक पर रखा गया जिस को सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया :

كَسَانِيْ خِلْعَةً بِطِرَازِ عَزْمٍ
وَتَوَّجَنِيْ بِتِيْجَانِ الْكَمَالِ

यानी मेरे रब ने मुझे ऊलुल अज़मी और बलन्द हिम्मती की ख़िलअत पहनाई और फ़ज़्लो कमाल का ताज मेरे सर पर रख दिया है :

طُبُوْلِيْ فِي السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ دُقَّتْ
وَشَاءُ وُسِ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَالِيْ

यानी ज़मीन व आसमान में मेरी शान के नक़्क़ारे बजते हैं और नेक बख़्ती के नक़ीब मेरे रूबरू हाज़िर होते हैं :

اَنَا الْجِيْلِيْ مُحِيُّ الدِّيْنِ اِسْمِيْ
وَاَعْلَامِيْ عَلٰى رَاْسِ الْجِبَالِ

यानी मैं जीलान का रहने वाला हूँ और मेरा नाम मोहियुद्दीन है और मेरे इक़बाल के झन्डे पहाड़ों की चोटियों पर लहरा रहे हैं।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह ऐलान ख़ुदाए तआला के हुक्म से था जैसा कि हज़रत अदी बिन मुसाफ़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ लगा देने से अन्धे और कोढ़ी शिफ़ा पाते थे फ़रमाया करते थे कि हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस ऐलान से मक़ामे फ़रदियत मुराद है। अगरचेह बाज़ दूसरे औलियाए किराम भी मक़ामे फ़रदियत से नवाज़े गए मगर इस के ऐलान की किसी को इजाज़त नहीं मिली जैसा कि आक़ा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इसी मक़ामे फ़रदियत की तरफ़ इशारा करते हुए अपने क़सीदा शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

اَنَا فِيْ حَضْرَةِ التَّقْرِيْبِ وَحْدِيْ
يُصَرِّفُنِيْ وَحَسْبِيْ ذُوالْجَلَالِ

यानी कुर्बे इलाही की मन्ज़िल में मुझे वह मक़ाम हासिल है जिस में तन्हा और अकेला मैं ही हूँ और मेरा रब मुझे एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम तक पहुँचाता रहता है और वह अज़मत व जलाल वाला मौला मेरे लिये काफ़ी है। (क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़)

शैख़ अबू बक्र बताइही की बशारत

हज़रत अबू बक्र बताइही रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वह बुज़ुर्ग हैं जिन को ख़्वाब में हज़रत सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना ख़िरक़ा पहनाया और जब यह बुज़ुर्ग ख़्वाब से बेदार हुए तो ख़िरक़ा मौजूद पाया। इन्हीं बुज़ुर्ग का यह इरशाद है कि जो शख़्स चालीस बुध को मुसलसल मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा वह जहन्नम से आज़ाद हो जाएगा और जो शख़्स मेरे रोज़े में दाख़िल हो गया उस को आग नहीं जला सकती। चुनाँचे अब भी आप की यह करामत है कि आप की क़ब्र के पास गोश्त और मछली न पक सकती है न भुन सकती है। यही बुज़ुर्ग हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बरसों पहले यह ग़ैब की ख़बर दी थी कि इराक़ में आठ औलियाए किराम दरजए औताद पर फ़ाइज़ होंगे जिन के मुबारक नाम यह हैं।

(1) हज़रत मअरूफ़ कर्ख़ी (2) हज़रत अहमद बिन हम्बल (3) हज़रत बशर हाफ़ी (4) हज़रत मन्सूर बिन अम्मार (5) हज़रत जुनैदे बग़दादी (6 हज़रत सिर्री सक़ती (7) हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तसतरी (8) हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

और जब लोगों ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर यह अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कौन हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि यह एक अजमी सय्यद हैं। जो गीलान में पैदा होंगे और बग़दाद उन का मसकन होगा और पांचवीं सदी में उन का ज़हूर होगा और वह विलायत के मक़ामे फ़रदियत की ऐसी अज़ीम मन्ज़िल पर फ़ाइज़ होंगे कि एक दिन वह मिम्बर पर ऐलान फ़रमाऐंगे कि:

قَدَمِىْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِيِّ اللّٰهِ

यानी मेरा क़दम हर वली की गरदन पर है उस ज़माने के तमाम औलियाए किराम अदब से अपनी अपनी गरदनें झुका कर अर्ज़ करेंगे कि ऐ ग़ौसे आज़म आप का क़दमे मुबारक हमारी गरदनों ही पर नहीं

بَلْ عَلَى الرَّأْسِ وَالْعَيْنِ

आपका क़दमे मुबारक हमारे सरों और आँखों पर है। (क़लाइदुल जवाहर, स. 78)

जो फ़रमाया कि दोशे औलिया पर है क़दम मेरा
लिया सर को झुका कर सब ने तलवा ग़ौसे आज़म का

आरिफ़ों के सरदार हज़रत मुहम्मद काकीस की बशारत

हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो इराक़ के सय्यदुल मशाइख़ और अमीरुल औलिया हैं जिन के मरीदों में सतरह बादशाह भी थे, और आप के झन्डे के नीचे बा अदब चिल्ला करते थे। हज़रत शैख़ इज़ाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान करते हैं कि मैं

ख़्वाब में हुज़ूर सरकारे मदीना मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदारे पुर बहार से मुशर्रफ़ हुआ तो मैं ने अपने प्यारे नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे रहमत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप हजरत मुहम्मद काकीस के बारे में किया इरशाद फ़रमाते हैं तो हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : उस शख़्स के बारे में मुझ से क्या पूछते हो, वह तो उन लोगों में से हैं जिन के सबब से मैं क़ियामत के दिन फ़ख्र करूँगा कि ऐसे ऐसे साहिबे कमाल मेरी उम्मत में हैं। हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 12 रजब 417 हि. में पैदा हुए और 20 रबीउल अव्वल 501 हि. को बग़दाद शरीफ़ के क़रीबी शहर क़लमीनियह में वफ़ात पाई। (क़लाइदुल जवाहर, स. 18)

हज़रात ! हज़रत मुहम्म काकीस अज़ीम बुज़ुर्ग हैं उन्होंने मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुतअल्लिक़ जो फ़रमाया ग़ौर से सुनें। हज़रत मुहम्मक काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो बग़दाद शरीफ़ में वअज फ़रमाया करते थे और यह वह दौर था कि अभी हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदरसा निज़ामिया में एक तालिबे इल्म थे और नौ जवानी का आलम था। एक दिन सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी वअ़ज सुनने के लिये गए और जैसे ही मजलिस में बैठे हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा और फ़रमाया कि उस लड़के को मजलिस से बाहर निकाल दो। हुक्म पाते ही लोगों ने मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हाथ पकड़ कर मजलिस से बाहर कर दिया मगर हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़फ़ा और नाराज़ न हुए बल्कि फिर मजलिस में आकर बैठगए। हज़रत मुहम्मक काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फिर हुक्म दिया कि इस लड़के को मजलिस से बाहर निकाल दो, लोगों ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को निकाला और तमाम हाज़िरीन हैरत से देखने लगे कि अजीब लड़का है, बार बार मजलिस से निकाला जाता है मगर फिर चला आता है। हमारे आक़ा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर भी रन्जीदा न हुए और तीसरी बार फिर मजलिस में तशरीफ़ ले आए। हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि लोगो ! इस लड़के को मेरे पास ले आओ। लोग सरकार ग़ोसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पकड़ कर हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास ले गए। हज़रत मुहम्मद काकेस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खड़े होकर मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पेशानी का बोसा दिया और इरशाद फ़रमाया कि

ऐ लोगो ! मैं ने इस लड़के को दो मरतबा अपनी मजलिस से इस लिये निकाला ताकि तुम लोग अच्छी तरह इन को देख लो और पहचान लो कि यह कौन हैं।

ऐ अहले बग़दाद ! तुम सब इस वली की ताज़ीम के लिये खड़े होजाओ इस लिये कि यह वह हैं जो मेरे बाद क़ुतबुल अक़्ताब होने वाले हैं । फिर अपना असा, तस्बीह, मुसल्ला वग़ैरह अता फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि बेटा अब्दुल क़ादिर ! अभी तुम्हारा बचपन है और हमारा बुढ़ापा है, बेटा हमारी आँखें देख रही हैं कि एक वक़्त ऐसा आने वाला है कि तुम क़ुतबियत की अज़ीम मन्ज़िल पर सर फ़राज़ होने के बाद ऐलान करोगे कि मेरा क़दम हर वली की गरदन पर है । तो तमाम रूए ज़मीन के औलिया अदब व एहतिराम से अपना अपना सर झुका कर अर्ज़ करेंगे कि ऐ सरकार ग़ौसे आज़म आप का क़दमे मुबारक तो हमारे सरों और आँखों पर भी है। फिर आप ने अपनी दाढ़ी पकड़ कर इरशाद फ़रमाया कि बेटा अब्दुल क़ादिर ! तुम्हारा यह वक़्त आए तो मेरी सफ़ेद दाढ़ी का ख़याल रखना और

हज़रत मुहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह भी फ़रमाया कि :

كُلُّ دِيْكٍ يَصِيْحُ وَيَسْكُتُ اِلَّا دِيْكُكَ فَاِنَّهٗ يَصِيْحُ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

यानी ऐ बेटा अब्दुल क़ादिर ! हर मुर्ग़ बोलेगा और चुप हो जाएगा मगर तुम्हारा मुर्ग़ क़ियामत तक बोलता रहेगा यानी तुम्हारा सिलसिला और तुम्हारी विलायत का तज़किरा क़ियामत तक जारी व सारी रहेगा। (बहजतुल असरार, स. 427)

सरकार आला हज़रत आशिक़े बारगाहे ग़ौसियत रज़ियल्लाहु अन्हु में अर्ज़ किया है :

मुर्ग़ सब बोलते हैं बोल के चुप रहते हैं
हाँ असील एक नवासंज रहेगा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

शैख़ अली बिन हेती की बशारत

हज़रत शैख़ अली बिन नसर हेती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़दाद के उन चार बुज़ुर्गों में से हैं जो मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमा देते थे, एक दिन मेरे आक़ा सरकार ग़ौसे आज़मरज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वअ़्ज़ की मजलिस में हज़रत अली बिन हेती हाज़िर थे नागहां उन पर नीन्द का ग़लबा हो गया, तो सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने वअ़्ज़ के मिम्बर से उतर कर उन के पास बा अदब खड़े हो गए जब हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बेदार हुए तो अर्ज़ किया कि ऐ सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुझ को अभी ख़्वाब में मोहतरम व मुकर्रम रसूले आज़म प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार नसीब हुआ है तो हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया इसी लिये तो मैं मिम्बर से उतर कर अदब व एहतिराम से आप के पास खड़ा हो गया था कि आप को ख़्वाब में दीदार नसीब हो और मैं सर की आँखों से प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार पर बहार से सरफ़राज़ हुआ। (बहजतुल असरार)

आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदए कौर को क्या आए नज़र आए क्या देखे

हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वह बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रमाने ज़ीशान को सुनते ही सब से पहले सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुबारक क़दम को उठा कर अपनी गरदन पर रख लिया था। अल्लाह। अल्लाह क्या ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

हज़रत उवैसे क़रनी की बशारत

इब्ने मोहियुद्दीन अरबली रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मनाज़िलुल औलिया फ़ी फ़ज़ाइलुल अस्फ़िया के हवाले से बयान किया है कि हुज़ूर सरापा नूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत उवैसे क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास जाने की वसियत फ़रमाई और फ़रमाया कि जब उवैसे क़रनी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से मुलाकात हो तो मेरा सलाम कहना और मेरी क़मीस उन को देना और कहना कि उवैसे क़रनी मेरी उम्मत की बख़्शिश की दुआ करें। चुनाँचे जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़मरज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उवैसे क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अहु की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गए और प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमाने ज़ीशान सुनाया तो हज़रत उवैस क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सज्दे में जाकर अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत की बख़्शिश की दुआ मांगी, ग़ैब से निदा आई कि ऐ उवैसे क़रनी अपना सर उठाइये" ने आप की शफ़ाअत से प्यारे महबूबे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) की निस्फ़ उम्मत को बख़्श दिया और निस्फ़ उम्मत को अपने महबूब वली ग़ौसे आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की शफ़ाअत से बख़्श दूँगा जो तेरे बाद पैदा होंगे।

हज़रत उवैसे क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ परवरदिगारे आलम तेरा वहमहबूब बन्दा ग़ौसे आज़म कौन है और कहा है, मैं उन की ज़ियारत करना चाहता हूँ।

तो निदा आई कि वह मेरा महबूब है और मेरे महबूब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का भी महबूब है, वह क़ियामत तक अहले ज़मीन के लिये हुज्जत होगा और तमाम अव्वलीन व आख़रीन औलिया की गरदनों पर उस का क़दम मुबारक होगा और जो उसे कुबूल करेगा मैं उस को दोस्त रखूँगा। हज़रत उवैसे क़रनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गरदन झुकाई और कहा मैं भी उसे कुबूल करता हूँ।

(तफ़रीहुल ख़वातिर फ़ी मनाक़िब शैख़ अब्दुल क़ादिर)

दीवानए बारगाहे ग़ौसियत इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊँचे ऊँचों के सरों से क़दम आला तेरा

हज़रत जुनैद बग़दादी की बशारत

हज़रत इब्ने मोहियुद्दीन अरबली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुकाशफ़ए जुनैदिया के हवाले से बयान किया है कि सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक रोज़ मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हो कर ख़ुतबा दे रहे थे कि आप के क़ल्बे मुबारक पर तजल्लियाते रब्बानी का विर्द हुआ और आप बहरे शुहूद मुकाशिफ़ा में मुस्तग़रक हो गए और फ़रमाया : मेरी गरदन पर उन का क़दम बग़ैर किसी इनकार के है। और मिम्बर की एक सीढ़ी उतर आए, नमाज़े जुमा से फ़ारिग़ होने के बाद लोगों ने उन कलेमात के मुतअल्लिक़ आप से दरयाफ़्त किया, आप ने फ़रमाया कि हालते कश्फ़ में मुझे मालूम हुआ कि पांचवीं सदी हिजरी के वस्त में हुज़ूर रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की औलादे पाक में से एक बुज़ुर्ग कुतुबे आलम होगा जिस का लक़ब मोहियुद्दीन और नाम अब्दुल क़ादिर होगा और वह अल्लाह तआला के हुक्म से कहेगा मेरा क़दम हर वली की गरदन पर है तो मेरे क़ल्ब में ख़याल आया कि हम उन के ज़माने में नहीं हैं इस लिये उन का क़दम हम्पनी गिरदन पर क्यों लीं। इस ख़याल का आना था कि अल्लाह तआला को नाराज़ और क़हरो ग़ज़ब में देखा तो फ़ौरन मैंने अपनी गरदन झुका दी और वह कहा जो तुम लोगों ने सुना।

(तफ़रीहुल ख़वातिर फ़ी मुनाक़िब शैख़ अब्दुल क़ादिर, तरग़ीबुन्नाज़िर, व हवाला हयाते तैय्यिबा, स. 15)

दीवानए बारगाहे ग़ौसियत इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो वली क़ब्ल थे या बाद हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

सुल्तानुल हिन्द हुज़ूर ग़रीब नवाज़ का क़ौल

सुल्तानुल हिन्द हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुरासान के पहाड़ों में मुजाहिदात और रियाज़ात में मशग़ूल थे जब सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बग़दाद शरीफ़ में म्बिर पर जलवा अफ़रोज़ होकर इरशाद फ़रमाया कि मेरा क़दम हर वली की गरदन पर है तो सुल्तानुल हिन्द सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशादे आली को सुना और गरदन झुका कर अर्ज़ किया कि ऐ सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप का क़दमे मुबारक सिर्फ़ मेरे गरदन पर ही नहीं :

بَلْ عَلٰى رَاْسِىْ وَعَيْنِىْ

बल्कि मेरे सर और आँखों पर भी है। (सिराजुल अवारिफ़, स. 41)

इसी प्यारे मज़मून को मौलाना हसन रज़ा बरैलवी अलैहिर्रहमा ने यूँ बयान किया है :

जब से तूने क़दमे ग़ौस लिया है सर पर
औलिया सर पर क़दम लेते हैं शाहा तेरा
ख़्वाजा· हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

मुरीदों के लिये बशारतें

दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका ही सही भारी है भरोसा तेरा
तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

हज़रत सुहैल इब्ने अब्दुल्लाह तसतरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मनक़ूल है कि एक दिन हुज़ूर सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़दाद वालों की नज़र से ग़ायब हो गए, लोगों ने तलाश किया दरयाए दजला के किनारे पाया तोक्या देखा कि मछलियाँ बकसरत आप की ख़िदमत में आती हैं और दस्ते मुबारक का बोसा देती हैं। इसी असना में ज़ोहर का वक़्त हो गया, एक मुसल्ला हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के तख़्त की तरह हवा में मुअल्लक़ हो कर बिछ गया और उस मुसल्ले के ऊपर दो सतरें लिखी थीं पहली सतर में

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ (पारा 11, रुकू 12)

और दूसरी में : بَرَكٰتُهٗ عَلَیْكُمْ اَهْلَ الْبَیْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (पारा 12, रुकू 7)

लिखा हुआ था और बहुत से नूरानी शक्ल के लोग आए और मुसल्ले पर सफ़ में खड़े हो गए और सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसल्ले पर आगे तशरीफ़ ले गए और नमाज़ पढ़ाई उस वक़्त अजीब व ग़रीब समां था जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तस्बीह पढ़ते तो सातों आसमान के फ़रिश्ते भी आप के साथ तस्बीह पढ़ते। सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दोनों हाथों को दुआ के लिये बारगाहे रब्बुल आलमीन में उठा कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह तआला ! मैं तेरी बारगाहे बे नियाज़ी में तेरा प्यारे महबूब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से तालिब हूँ और दुआ करता हूँ कि तू मेरे मुरीदों को और मुरीदों के मुरीदों को सुबह क़ियामत तक मौत न दे मगर ईमान पर। यानी मेरे मुरीदों का ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमा।

हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम ने आप की मुबारक दुआ पर फ़रिश्तों के एक बहुत बड़े गिरोह को आमीन कहते हुए सुना और जब सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दुआ पुरी कर चुके तो हमने ग़ैब से एक निदा सुनी कि ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी ! मेरे महबूबे सुब्हानी, तुम को बशारत हो, ख़ुश ख़बरी हो कि हम ने आप की दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। (तलख़ीस बहजतुल असरार, स. 291)

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

दूसरा जुमा .... पहला बयान

हुज़ूर ग़ौसे पाक के वअ़ज़ और दर्स की तासीर

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّي عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(पारा 11, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत शैख़ अबुल हसन बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में रहमते आलम, सरकारे दो आलम, शाहे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदारे पुर अनवार किया तो बारगाहे रहमत में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप मेरे लिये दुआ फ़रमाएंगे कि कुरआन व सुन्नत पर अमल करते हुए मौत आए। तो नबिये मुअज़्ज़म रसूले मोहतशम, सरापा करम ही करम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारा खातिमा कुरआन व सुन्नत पर अमल करते हुए होगा और खातिमा ईमान पर क्यों न होगा जब कि तुम्हारे पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हैं (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका ही सही भारी है भरोसा तेरा

एक मैं क्या मेरे इसयां की हक़ीक़त कितनी
मुझ से सौ लाख को काफ़ी है इशारा तेरा

हज़रत शैख़ अबुल हसन बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने तीन मरतबा अपने प्यारे नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में वही दरख़्वास्त की। तीनों मरतबा मेरे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वही जवाब दिया। यानी उस ख़ुश नसीब का ख़ातिमा ईमान पर ही होगा जिस के पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हों।

ख़्वाब से बेदार हो कर मैं ने यह प्यारा ख़्वाब अपने वालिदे गिरामी की ख़िदमत में बयान किया। फिर हम दोनों बाप बेटे हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के काशानए अक़दस में हाज़िर हुए तो आप वअ़ज़ फ़रमा रहे थे। हम बाप बेटे को देख कर सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि जिस को बशारत व ख़ुश ख़बरी हमारे प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दें और उस का पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हो तो उस का ख़ातिमा ईमान पर क्यों न होगा।

(गुलख़्वसन, बहजतुल असरार, स. 289)

क्या ही ख़ूब फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन हज़रत मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरैलवी अलैहिर्रहमा ने कि:

तेरे हाथ में हाथ, मैंने दिया है
तेरेहाथ है लाज या ग़ौसे आज़म

क़िस्म है क मुश्किल को मुश्किल न पाया
कहा हम ने जिस वक़्त या ग़ौसे आज़म

नेक मेरे लिये और मैं गुनाहगारों के लिये हूँ

हज़रत शैख़ अबू सईद केलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से निस्बते गुलामी क़ायम कर ले यक़ीनन वह नजात पा जाए। (बहजतुल असरार, स. 293)

शैख़ बका बिन बतू रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर आप के मुरीदों में परहेज़गार भी होंगे और गुनाहगार भी। तो सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि परहेज़गार नेको कार मेरे लिये हैं और मैं गुनाहगारों के लिये हूँ।

(तलख़ीस बहजतुल असरार, स. 294)

क़ादरी हूँ शुक्र है रब्बे क़दीर
दामन है मेरे हाथ में पीराने पीर का

हज़रत सुल्तान बाहू रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दो क़िस्म के मुरीद हैं एक नेक मुरीद दूसरे गुनाहगार मुरीद। नेक मुरीद हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आस्तीन में रहते हैं जब कोई आप के मुरीद को नुक़सान पहुँचाना चाहता है तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आलमे जलाल में आस्तीन झाड़ते हैं और नुक़सान पहुँचाने वाला तबाह व बरबाद हो जाता है

मुरीदी ला तख़फ़ कहकर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आज़म का

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मुझे एक किताब दी गई जिस में क़ियामत तक आनेवाले मेरे मुरीदों के नाम लिखे हुए थे और अल्लाह तआला ने मुझ से फ़रमाया कि तुम्हारे तमाम मुरीदों को मैं ने तुम्हारी निस्बत की वजह से बख़्श दिया है।

(बहजतुल असरार, स. 294)

और मौलाना हसन रज़ा बरैलवी ख़ूब फ़रमाते हैं :

कर दिया तू ने क़ादरी मुझ को
तेरी क़ुदरत के मैं फ़िदा या रब

मेरा हाथ मेरे मुरीदों पर हमेशा है

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहुतआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रब तबारक व तआला की इज़्ज़त व जलाल की क़सम !

يَدِىْ عَلٰى مُرِيْدِىْ كَالسَّمَاءِ عَلَى الْاَرْضِ

यानी मेरा दस्ते हिदायत मेरे तमाम मुरीदों पर ऐसा है जैसे आसमान का साया ज़मीन पर और ऐ दुनिया वालों सुन लो मेरा मुरीद अच्छा नहीं मगर मैं तो अच्छा हूँ, मेरा मुरीद ताक़त व कुव्वत वाला नहीं मगर मैं तो ताक़त व कुव्वत वाला हूँ और मैं क़ियामत तक अपने मुरीदों की दस्तगीरी करता रहूँगा। अल्लाह तआला की इज़्ज़त व जलाल की क़सम जब तक मेरे तमाम मुरीद जन्नत में नहीं जाऐंगे मैं बारगाहे ख़ुदावन्दी में नहीं जाऊँगा ।

(ख़ुलासा क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़, ख़ुलासा बहजतुल असरार, स. 294)

और आशिक़े बारगाहे ग़ौसियत इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हैं रज़ा यूँ न बिलक तू नहीं जय्यद तो न हो
सय्यदे जय्यद हर दहर है मौला तैरा

मुस्तफ़ा करीम और मुरतज़ा की ज़ियारत

हज़रत शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रज़ियल्लाहुत आला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं 16 शव्वाल 521 हि. को मंगल के दिन दोपहर के वक़्त हमारे नाना जान हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हुआ तो प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बेटे अब्दुल क़ादिर ! तुम वअज़ क्यों नहीं करते ? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं अजमी हूँ

फ़ुसहाए बग़दाद के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती। रसूले अकरम सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बेटा अब्दुल क़ादिर अपना मुंह खो लो ! जब मैं ने अपना मुंह खोला तो हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सात मरतबा लुआबे दहन शरीफ़ (मुबारक थूक) मेरे मुंह में डाला और फ़रमाया कि तुम हिकमत और बहतरीन नसीहत के साथ लोगों को ख़ुदाए तआला के रास्ते की तरफ़ दावत दो। फिर उस के बाद मेरे दादा जान हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहू की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुआ तो उन्हों ने छः मरतबा अपना लुआबे दहन मुझे अता फ़रमाया, मैं ने अर्ज़ किया छः ही मरतबा क्यों ? आप ने भी सात मरतबा क्यों नहीं अपना लुआबे दहन अता फ़रमाया ? तो इरशाद फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अदब के लिये छः ही मरतबा अपना लुआबे दहन अता फ़रमाया ? ताकि जाने आलम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ बराबरी का शुबा न पैदा हो सके, नाना जान और बाबा जान के करम व फ़ज़्ल की बरकत से मैं ख़ूब फ़सीह व बलीग़ वअज़ कहने लगा।

(क़लाइदुल जवाहर, स. 13 शैख़ अब्दुल हक़ ज़ुबदतुल आसार, स. 65, हयाते तैय्यिबा, स. 43)

जिस पे हैरां ज़बाने अरब
उस बलाग़त फ़साहत पे लाखों सलाम

ग़ौसे आज़म का दर्स देना

मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीरे कामिल हज़रत सय्यदना अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप की क़ाबलियत व ख़िदमते दीन का जज़्बा और रूहानी सलाहियत देखकर अपना मदरसा निज़ामिया जो बग़दाद शरीफ़ में बाबुल अज़वाज में वाक़ेअ था, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सुपुर्द फ़रमाया। मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मुस्नदे दर्स व तदरीस पर जलवा फ़रमा हुए और तालीम का आग़ाज़ फ़रमाया तो थोड़े से अर्सा में आप के इल्म व फ़ज़्ल का कमाल पूरे बग़दाद और क़ुर्बो जवार में मशहूर हो गया और शरीअत व तरीक़त के उलूम को हासिल करने के लिये सिर्फ़ बग़दाद ही नहीं बल्कि दूर दराज़ के तलबा का जम्मे ग़फ़ीर इकट्ठा हो गया हत्ता कि मदरसा निज़ामिया की जगह तलबा के बैठने के लिये ना काफ़ी हो गई। मेरे सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तलबा की भीड़ देख कर बग़दाद वालों को मदरसा की इमारत की तौसीअ के लिये मुतवज्जह किया, यानी मदरसा की बिलडिंग को बढ़ाने के लिये बग़दाद वालों को तवज्जोह दिलाई, सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आवाज़ पर इशारए अबरू पर बग़दाद वालों ने ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, यहाँ तक कि क़ुर्बो जवार के मकानात ख़रीद कर मदरसा में शामिल कर लिये

गए 528 हि. में मदरसा को ख़ूब वसीअ और आलीशान बिलडिंग की शक्ल में बना कर तैयार कर दिया गया और फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नामे नामी इस्मे गिरामी से मुन्सूब हो कर दुनियाए इस्लाम में जामिआ क़ादरिया केनाम से मशहूर व मअरूफ़ हो गया, जहाँ सिर्फ़ बग़दाद शरीफ़ के तलबा ही नहीं बल्कि दूर दूर शहरों और दिहातों के हज़ारों तलबा इल्मे दीन हासिल करते रहे और फ़ारिग़ुत्तहसील हो कर सनदे तकमील ले कर मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जाते और दीने मतीन की ख़िदमते अन्जाम देते, इस तरह हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला न्हु ने मुख़्तसर मुद्दत में उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम की एक अज़ीम जमाअत तैयार फ़रमा दी। (हयाते तैबा, स. 40)

वअ़ज़ में तक़रीबन सत्तर हज़ार सामेईन

शैख़ अब्दुल्लाह हयाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं : लोग घोड़ों, खच्चरों, ऊंटों और सवारी के गधों पर सवार होकर आते थे और खड़े रहते थे जब कि मजलिस हिसार की तरह गोल हो जाती थी और मजलिस में तक़रीबन सत्तर हज़ार सामईन हाज़िर रहते थे।
(बहजतुल असरार, स. 270, खुलासतुल मफ़ाख़िर, क़लाइदुल जवाहर, स. 13 शैख़ अब्दुल हक़, ज़ुबदतुल आसार,, स. 65)

मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वअ़ज़ की मजलिस में इराक़ के बड़े बड़े उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम और जिन्नात और रिजालुल ग़ैब भी दूर व दराज़ से हाज़िर होते थे और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तक़रीरें लिखने के लिये चार सौ दवातें इस्तिमाल की जाती थीं। (बहजतुल असरार, स. 80)

वअ़ज़ का असर

मेरे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वअ़ज़े मुबारक का यह असर था कि सैकड़ों गुनाहगार व बदकार आप के दस्ते मुबारक पर तौबह करते और फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार ताइब हो कर परहेज़गार व नेको कार बन जाते और तक़रीर की तासीर से मजलिस पर वज्द की कैफ़ियत तारी होती, कोई माहिये बे आब (बिन पानी की मछली) की तरह तड़पता तो कोई बे इख़्तियार हो कर कपड़े फाड़ता और चीख़ता चिल्लाता और किसी के दिल पर ऐसी चौट लगती कि शमशीरे महब्बत से घायल हो कर मौत की नीन्द सो जाता, जब वअ़ज़ ख़त्म होता तो कितने जनाज़े उठाए जाते। हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वअ़ज़ में मुसलमानों के अलावा दीगर मज़ाहिब के लोग भी हाज़िर होते, आप के वअ़ज़ का यह असर होता कि बहुत से यहूदी ईसाई और दूसरे कुफ़्फ़ार कलमा पढ़ कर मुसलमान हो जाते। (बहजतुल असरार, स. 281, क़लाइदुल जवाहर, स. 212)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का भेजना बारगाहे ग़ौस में

हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वअ़ज़ फ़रमा रहे हैं : एक राहिब आया और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नूरानी हाथ पर तौबह किया और

मुसलमान हो गया। फिर उस राहिब ने मजमए आम में बयान किया कि मैं यमन का रहने वाला हूँ, मुझे मुसलमान होने का शौक़ पैदा हुआ तो मैं ने यह मुसम्मम इरादा कर लिया कि यमन में जो शख़्स सब से ज़्यादा परहेज़गार होगा उसी के हाथ पर मुसलमान होउंगा। इसी ख़याल में था कि मुझे नीन्द आ गई, ख़्वाब में हज़रत सय्यदना ईसा अलैहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया ऐ सनाम बग़दाद चले जाओ और शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के हाथ पर मुसलमान हो जाओ। इस लिये कि इस ज़माने में रूए ज़मीन के लोगों में सब से बहतरीन हैं। (बहजतुल असरार)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के कश्फ़ो करामात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّي عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(पारा, 11 रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हमारे आक़ा, सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते बा बरकत सारापा करामत ही करामत थी। हज़रत शैख़ अली बिन नसर रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि मैं ने किसी वली को हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बढ़ कर करामत वाला नहीं देखा जिस वक़्त चाहते आप की कोई करामत देखना उसी वक़्त लोग देख लेते।

(तफ़रीहुल ख़वातिर)

मुर्दा ज़िन्दा हो गया

हमारे सरकार, सरदारे औलिया हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन अपने चन्द मुरीदीन और साथियों के साथ एक मुहल्ले से गुज़रे तो देखा कि एक मुसलमान और एक ईसाई आपस में झगड़ रहे हैं, पीराने पीर आक़ा दस्तगीर ने झगड़े का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो मुसलमान ने अर्ज़ किया कि यह ईसाई कहता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अफ़ज़ल हैं। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईसाई से फ़रमाया कि तुम किस वजह से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अफ़ज़ल कहते हो। ईसाई कहने लगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं नबी नहीं बल्कि रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की औलाद और उम्मती हूँ, अगर मैं मुर्दे को ज़िन्दा कर दूँ तो क्या तू हमारे प्यारे

नबी सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की फ़ज़ीलत व बरतरी को तस्लीम करेगा ? ईसाई ने कहा ज़रूर तस्लीम करूँगा। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईसाई से फ़रमाया कि क़ब्रिस्तान ले कर चल और कोई बहुत पुरानी क़ब्र जिस को तू जानता हो बता, मैं क़ब्र के मुर्दे को ज़िन्दा करूँगा। वह ईसाई हमारे आक़ा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ले कर क़ब्रिस्तान गया और एक पुरानी बोसीदा क़ब्र की तरफ़ इशारा किया। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ब्र की तरफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया उस क़ब्र का मुर्दा दुनिया में गाने बजाने का पेशा करता था। अगर तेरी मर्ज़ी हो तो यह मुर्दा गाता हुआ क़ब्र से बाहर आए। हैरत से ईसाई ने अर्ज किया : यह तो और अहम बात है, ऐसा ही कीजिये हमारे सरकार हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ब्र को देखा और फ़रमाया قُمْ بِإِذْنِ اللهِ तो क़ब्र शक़ हुई और मुर्दा ज़िन्दा होकर गाता हुआ क़ब्र से बाहर निकल आया। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह करामत देख कर ईसाई ने तौबह की और मुसलमान हो गया। (तफ़रीहुल ख़वातिर)

वह कह कर क़ुम बि इज़्निल्लाह जिला देते हैं मुर्दों को

बहुत मशहूर है अहयाए मौता ग़ौसे आज़म का

न मस्जिद, न बैतुल्लाह की दीवारों से पैदा

दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

ऐ ईमान वालो ! सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह। क्या शान है हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कि क़ब्र पर खड़े हैं और क़ब्र के अन्दर मुर्दे को देख रहे हैं और उस मुर्दे के पेशे को भी देख रहे हैं जो वह दुनिया में क्या करता था। अब हम महब्बत व अक़ीदत से सोचें कि हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब ज़ाहिरी हयात के साथ इस दुनिया में थे तो क़ब्र के अन्दर के मुर्दे और उस की हालत को देख लेते थे और आज मुज़ारे पाक में जलवा अफ़रोज़ हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लो अता से अपने मज़ारे मुबारक से दुनिया वालों को ख़ास कर ग़ुलामों को देख रहे हैं और उन के हालात से भी बा ख़बर हैं।

मुर्ग़ी ज़िन्दा हो गई

एक औरत अपने लड़के को ले कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुई और अर्ज किया कि हुज़ूर यह लड़का आप से बे हद महब्बत व अक़ीदत रखता है, अपनी गुलामी में क़ुबूल फ़रमाएं और शरीअत व तरीक़त की तालीम से आरास्ता फ़रमा दें। चुनाँचे वह लड़का इबादत व रियाज़त में मशग़ूल हो गया। एक दिन वह औरत अपने लड़के को देखने के लिये आई तो देखा कि उस का लड़का जौ की रोटी बग़ैर सालन के खा रहा है और कसरते इबादत व रियाज़त के असर से बहुत दुबला और लाग़िर हो गया है। फिर जब वह औरत बारगाहे हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में हाज़िर

हुई तो देखा कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुर्ग़ी का गोश्त तनावुल फ़रमा चुके हैं और हड्डियाँ बरतन में रखी हुई हैं। औरत ने अर्ज़ किया कि मेरे आक़ा आप ने मेरे बच्चे पर कोई शफ़क़त नहीं फ़रमाई, आप तो मुर्ग़ी खा रहे हैं और मेरे बच्चे को जौ कि रोटी सूखी बग़ैर सालनके खिला रहे हैं । यह सुन कर हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना दस्ते मुबारक उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया :

قُوۡمِیۡ بِاِذۡنِ اللّٰہِ الَّذِیۡ یُحۡیِ الۡعِظَامَ وَھِیَ رَمِیۡمٌ

यानी ऐ मुर्ग़ी तू उस ख़ुदा के हुक्म से ज़िन्दा हो कर खड़ी हो जा जो गली सड़ी हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाता है।

हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुक्म सुनते ही मुर्ग़ी ज़िन्दा हो कर खड़ी हो गई और बज़ुबाने फ़सीह यह पढ़ा

لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ۔ اَلشَّیۡخُ عَبۡدُ الۡقَادِرُ وَلِیُّ اللّٰہِ

तब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ बूढ़ी मां सुन जब तेरा बेटा इस दर्जा तक पहुँच जाएगा। तो जो चाहे खाए।

(बहजतुल असरार, स. 193, क़लाइदुल जवाहर, स. 38, शैख़ अब्दुल हक़, ज़ुबदतुल आसार, स. 89)

जिलाया इस्तख़्वाने मुर्ग़ को दस्ते करम रख कर
बयां क्या हो सके अहयाए मौता ग़ौसे आज़म का

चील को मारा और ज़िन्दा फ़रमा दिया

एक दिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वअ़ज़ फ़रमा रहे थे कि एक चील चिल्लाती हुई ऊपर से गुज़र गई जिस से सामईन की तवज्जोह परागन्दा हो गई तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आलमे जलाल में इरशाद फ़रमाया : ऐ हवा उस चील का सर उड़ा दे। हाज़िरीन मजलिस का बयान है कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़रमान होते ही चील का सर एक तरफ़ और उस का धड़ दूसरी तरफ़ जा गिरा, फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु वअ़ज़ की कुर्सी से नीचे तशरीफ़ लाए और चप्पल के सर और धड़ को मिला कर बिस्मिल्लाह पढ़ा और हाथ फेर दिया तो ज़िन्दा होकर उड़ गई और हम लोग देखते रह गए। (बहजतुल असरार, स. 193 शैख़ अब्दुल हक़, ज़ुबदतुल आसार, स. 89)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो ताक़त व तसर्रुफ़ात अता किये हैं उस को अपने क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़ में यूँ बयान फ़रमाया है कि

وَلَوۡ اَلۡقَیۡتُ سِرِّیۡ فَوۡقَ مَیِّتٍ
لَقَامَ بِقُدۡرَۃِ الۡمَوۡلیٰ تَعَالیٰ

यानी अगर मैं अपना राज़ किसी मरी हुई लाश पर डाल दूँ तो वह यक़ीनन अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़िन्दा हो कर खड़ी हो जाए। (क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ईसाई के लिये मुर्दे को ज़िन्दा फ़रमाया और चील पर करम फ़रमा कर ज़िन्दा फ़रमा दिया और मुर्ग़ी का गोश्त तनावुल फ़रमाया और फिर उसी खाई हुई मुर्ग़ी की हड्डियाँ को जमा फ़रमा कर मुर्ग़ी को ज़िन्दा फ़रमा दिया गोया हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम आलम को यह सबक़ दिया कि जब हम रसूलुल्लाह के गुलाम, नबिये पाक के उम्मती ख़ुदा की देन व अता से इस शान के मालिको मुख़्तार हैं कि मुर्दे को ज़िन्दा कर देते हैं तो हमारे प्यारे नबी सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो अल्लाह तआला के महबूब और सारी ख़ुदाई के पेशवा हैं उन की शान व शौकत का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

दुरूद शरीफ़ :

अन्धा और मफ़लूज सेहत पा गया

हज़रत शैख़ अबुल हसन क़र्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि मैं और हज़रत शैख़ अबुल हसन अली बिन हीती अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान हज़र शैख़ मोहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु आला अन्हु की ख़िदमत में बैठे थे कि हज़रत की ख़िदम में ताजिर अबू ग़ालिब बग़दादी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि ऐ मेरे सरकार आप के रहीम व करीम नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स की दावत की जाए उस को चाहिये कि वह दावत को क़ुबूल करे और मैं आप को अपने मकान पर दावत की ज़हमत के लिये हाज़िर हुआ हूँ। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया अगर मुझे इजाज़त मिली तो आऊँगा आप ने मुराक़बा किया और फ़रमाया कि मैं ज़रूर आऊँगा। मुक़र्ररह वक़्त पर मैं और शैख़ हीती आप के हमराह ताजिर अबू ग़ालिब बग़दादी के माकन पर पहुँचे वहाँ देखा तो बग़दाद के बहुत से उलमाए मशाइख़ और अआयान मौजूद थे। आप के सामने दस्तरख़्वान लगाया गया जिस पर रंगारंग के खाने चुने हुए थे और दो शख़्स एक बहुत बड़ा टोकरा लाए। जिस का मुंह ढका हुआ था यह टोकरा दस्तर ख़्वान के एक तरफ़ लाकर रख दिया गया। मेज़बान अबू ग़ालिब ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि इजाज़त है खाना शुरूअ किया जाए। आप ने कुछ नहीं फ़रमाया अपना सर झुकाए रहै, न ख़ुद खाया न दूसरों को इजाज़त दी। अहले मजलिस पर आप की हैबत इस तरह तारी थी गोया उन के सरों पर परिन्दे बैठे हैं फिर आप ने मुझे और शैख़ अली हीती को इशारा किया कि उस टोकरे को उठा कर यहाँ लाओ, वह टोकरा लाया गया जो बहुत वज़नी था फिर आप ने मुझे और शैख़ अली हीती को हुक्म दिया कि उस टोकरे को खोलो जब हम ने टोकरा खोला तो उस में अबू ग़ालिब

ताजिर का अन्धा और फ़ालिज ज़दा लड़का बेठा हुआ था। आप ने उस को देख कर फ़रमाया कुम बि इज़निल्लाह अल्लाह तआला के हुक्म से तू तन्दुरुस्त हो कर खड़ा हो जा आप के फ़रमाते ही वह लड़का तन्दुरुस्त शख़्स की तरह खड़ा हो गया और कोई बीमारी उस में मौजूद नहीं थी और वह दौड़ने लगा। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह करामत देख कर मजलिस में शोर बरपा हो गया और लोग नअरे लगाने लगे और क़ादरी दूल्हा बग़दाद के शहंशाह हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़ैर कुछ खाए पिये उस हुजूम में से उठ कर अपनी ख़ानक़ाह शरीफ़ में आ गए। हज़रत शैख़ अबू सईद केलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह तआला के हुक्म से मादर ज़ाद अन्धों और बर्स वालों को अच्छा करते और मुर्दों को जिलाते हैं।

(बहजतुल असरार, स. 184, शैख़ अब्दुल हक़, ज़ुबदतुल आसार, स. 90)

शिफ़ा पाते हैं सदहा जां बल्ब अमराज़े मोहलिक से
अजीब दारुश्शिफ़ा है आस्ताना ग़ौसे आज़म का
हमारी लाज किस के हाथ है बग़दाद वाले के
मुसीबत टाल देना काम किस का ग़ौसे आज़म का

दुरूद शरीफ़ :

आप की दुआ से तक़दीर बदल गई

शैख़ अबुल मस्ऊद बिन अबी बक्र हरीमी बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने बयान किया है कि अबुल मुज़फ़्फ़र हसन बिन तमीम ताजिर शैख़ हम्माद दब्बास रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या सय्यदी ! मैं तिजारत की ग़रज़ से सफ़र करना चाहता हूँ शैख़ हम्माद रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया अगर तुम ने इस साल सफ़र किया तो क़त्ल कर दिये जाओ गे, और तुम्हारा माल व अस्बाब लूट लिया जाएगा, अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर बड़ा हैरान व परेशान हो कर मजिलस से बाहर आ गया और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे करम में हाज़िर हो कर सफ़र में जाने की इजाज़त चाही। सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ अबुल मुज़फ़्फ़र तुम सफ़र करो। सहीह सलामत लौट आओगे और इस बात की ज़मानत देता हूँ। अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर सफ़रे तिजारत पर निकला और अपना सामान एक हज़ार दीनार में फ़रोख़्त कर दिया और वह एक हम्माम में नहाने की ग़रज़ से गया और ताक़ में एक हज़ार दीनार की थेली रख दी और उसे उठाना भूल गया और उस मकाम में आ गया जहाँ उस का क़याम था और गेहरी नीन्द में सो गया। आलमे ख़्वाब में क्या देखता है कि वह एक क़ाफ़ले के हमराह सफ़र कर रहा है और रास्ते में अरब के डाकुओं ने उस क़ाफ़ले पर हमला कर दिया और क़ाफ़ले के हर शख़्स को मौत की नीन्द सुला दिया और एक डाकू ने उस की गरदन पर तलवार मारी जिस से गरदन कट कर अलग हो गई वह इस परेशान कुन ख़्वाब से बेदार हुआ

और कांपने लगा और उसे अपनी गरदन पर ख़ून का असर महसूस हो रहा था और कारी ज़र्ब का दर्द महसूस हो रहा था, उसे अपना रुपया याद आया और हम्माम में दौड़ कर गया, उस का हज़ार दीनार ताक़ में रखा हुआ था।

बग़दाद शरीफ़ सफ़र से वापसी पर उस ने फ़ैसला किया कि दोनों बुज़ुर्गों से मुलाक़ात करूँगा और हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो ज़ईफ़ थे उन की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने देखते ही फ़रमाया : शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पास जाओ क्यों कि वह अल्लाह तआला के महबूब हैं और उन्होंने तुम को क़त्ल होने और तुम्हारे माल के नुक़सान से बचाने के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में सत्तर बार दुआ की है जब कि तुम्हारी तक़दीर में क़त्ल और माल का नुक़सान लिखा था लेकिन अल्लाह तआला ने शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ की बरकत से तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और सिर्फ़ ख़्वाब में उस का मन्ज़र दिखा कर क़त्ल और माल के नुक़सान से बचा लिया। फिर अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर सर चश्मए विलायत सरकार ग़ौसियत। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रहमत वाली सरकार में हाज़िर हुआ आप ने फ़रमाया तुम को शैख़ हम्माद रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मेरी सत्तर दुआ का वाक़िआ सुना दिया है। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम में ने तुम को क़त्ल से और तुम्हारे माल को नुक़सान से बचाने के लिये अपने अल्लाह तआला की बारगाहे फ़ज़्लो करम में सत्तर बार दुआ की जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और बेदारी की चीज़ को ख़्वाब में दिखा दिया।

(बहजतुल असरार, शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी, ज़ुबदतुल आसार, स. 85)

और इसी मज़मून को हमारे मुर्शिदे आज़म शबीहे ग़ौसे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क्या ख़ूब बयान किया है

ख़ुदा ने तुम्हें महवो इस्बात बख़्शा
हो सुल्ताने लौहो क़लम ग़ौसे आज़म

है क़िस्मत मेरी टेढ़ी तुम सीधी कर दो
निकल जाए सब पेच व ख़म ग़ौसे आज़म

ख़बर लो हमारी कि हम हैं तुम्हारे
करो हम पे फ़ज़्लो करम ग़ौसे आज़म

बुरी क़िस्मत अच्छी हो गई

हज़रत अबुल ख़िज़र हुसैनी बयान करते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ादिम को रात में कई मरतबा एहतिलाम हुआ और उसे हर मरतबा नई सूरत नज़र आई जिन में से बाज़ से तो वह वाक़िफ़ था और बाज़ औरतों को वह नहीं जानता था जब सुबह

हुई तो वह हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हो कर अपनी ख़्वाब की हालत बयान करना चाही तो उस के कुछ कहने से पहले ही सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : रात में तुम को कई बार एहतिलाम हुआ है और मैं ने अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से लौहे महफ़ूज़ में देखा तो उस में लिखा हुआ था कि तू फ़लां फ़लां औरत से ज़िना करेगा। तो मैं ने अल्लाह तआला की बारगाह बे नियाज़ी में तेरे लिये दुआ की तो अल्लाह तआला ने मेरी दुआ की बरकत से बेदारी के वाक़िआ को ख़्वाब में बदल दिया और तेरी बुरी क़िस्मत को अच्छी बना दी। (क़लाइदुल जवाहर, स. 130)

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद मुर्शिदे आज़म, नाइबे ग़ौसे आज़म, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म, अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किया ख़ूब फ़रमाया है :

जो क़िस्मत हो मेरी बुरी, अच्छी कर दे
जो आदत हो बद, कर भली ग़ौसे आज़म
हमारा भी बेड़ा लगा दो किनारे
तुम्हें ना ख़ुदाई मिली ग़ौसे आज़म

ऐ ईमान वालो ! ऊपर ज़िक्र किये गए वाक़िआ को हम बार बार पढ़ें और सरकार ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निस्बत और गुलामी पर फ़ख़्र व नाज़ करें और बारगाहे ग़ौसियत में फ़रियाद पेश करें कि आक़ा व मौला क़ादरी दूलहा हम मुरीदों के बड़े पीर, दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप बुरी क़िस्मत को अच्छी किया है, टेढ़ी तक़दीर को सुधारा है आज हम गुलाम इब्ने गुलाम परेशान हैं हम पर दया फ़रमाइये, रहम कीजिये अपने आस्ताना की भीक अता कीजिये और हम मुरीदों क़ी जो क़िस्मत बुरी हो उस को भी अच्छी बना दीजिये और टेढ़ी तक़दीर को सीधी फ़रमा दीजिये हम आप के हैं और इतनी सी भीक दीजिये कि हमेशा आप के दामने करम से वाबस्ता रहें दुश्मन बहुत ज़्यादा हैं सब से हिफ़ाज़त फ़रमाइये और हर मैदान में क़ामयाबी इनायत कीजिये।

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आज़म
मुरीदों को ख़तरा नहीं बहरे ग़म से
कि बेड़े के हैं ना ख़ुदा ग़ौसे आज़म

दुरूद शरीफ़ :

ऊंटनी तन्दुरुस्त हो गई

उमर बिन सालेह हद्दादी ने एक दिन हमारे प्यारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे करम में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! हज के लिये जाने का इरादा है और मेरी ऊंटनी बीमार है चलने फिरने से क़ासिर है और दूसरी ऊंटनी मेरे पास नहीं है मैं बहुत परेशान हूँ कि हज का सफ़र तै कैसे करूँगा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने उस बीमार ऊंटनी को ठोकर मारी और अपना दस्ते करम उस की पेशानी पर रखा तो बीमार ऊंटनी शिफ़ा पा गई और चलने फिरने लगी और उमर बिन सालेह ने बयान किया कि मेरी बीमार ऊंटनी हुज़ूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के करम से ऐसी तन्दुरुस्त हो गई कि हम उसी ऊंटनी पर बैठ कर हज के लिये क़ाफ़ले के साथ चले तो सारे क़ाफ़ले वालों की ऊंटनियाँ पीछे रहतीं और हमारी ऊंटनी सब से आगे आगे चलती।

(बहजतुल असरार शरीफ़, स. 231)

ऐ ईमान वालो ! हम ग़ौर करें कि जब अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्लो करम से हमारे सरकार हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस शान का मालिक बना दिया कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मादर ज़ाद अन्धों को आँख वाला बना दिया। मफ़लूजों को सही सालिम कर दिया, जुज़ामी और बर्स वालों (कोढ़ियों) को उस मोहलिक मर्ज़ से नजात अता की। बीमार व कमज़ोर ऊंटनी को तन्दुरुस्ती और ताक़त व कुव्वत अता फ़रमा दी तो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे हबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कितनी ताक़त व कुव्वत और इख़्तियार अता किया होगा।

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने प्यारे सरकार, मदनी ताजदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इख़्तियारात को यूँ बयान फ़रमाते हैं:

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

ग़ौसे पाक के ग्यारह नामे मुबारक की फ़ज़ीलतें

हमारे आक़ा पीराने पीर रौशन ज़मीर महबूबे सुब्हानी कुतुबे रब्बानी ग्यारहवीं वाले पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ग्यारह नामे मुबारक नमाज़ के बाद और रात को सोते वक़्त और सुबह में पढ़ना ज़्यादा सवाब है और उस के विर्द से दिल की नेक मुरादें पूरी होंगी और लाएं दूर होंगी और तमाम नेक कामों में कामयाबी हासिल होगी।

(किताब नाफ़िउल ख़लाइक़)

ऐ ईमान वालो ! हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुबारक नाम में बहुत ही फ़ैज़ व बरकत है। और जब हम या ग़ौस अल मदद पुकारते हैं तो वलियों के शहंशाह हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ग़ैबी मदद और ज़ाहिरी मदद हासिल होती है।

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हम शबीहे ग़ौसे आज़म, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म, मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं:

कहा जिस ने या ग़ौस अग़िस्नी तो दम में
हर आई मुसीबत टली ग़ौसे आज़म

सरकारे बग़दाद के ग्यारह नामे मुबारक

सय्यद मोहियुद्दीन
शैख़ मोहियुद्दीन
औलिया मोहियुद्दीन
मिस्कीन मोहियुद्दीन
ग़ौस मोहियुद्दीन
सुल्तान मोहियुद्दीन
ख़्वाजा मोहियुद्दीन
मख़दूम मोहियुद्दीन
दुरवेश मोहियुद्दीन
बादशाह मोहियुद्दीन
फ़क़ीर मोहियुद्दीन

अमरुल्लाह
फ़ज़लुल्लाह
अमानुल्लाह
नूरुल्लाह
क़ुतबुल्लाह
सैफ़ुल्लाह
फ़रमानुल्लाह
बुरहानुल्लाह
आयतुल्लाह
ग़ौसुल्लाह
मुशाहिदुल्लाह
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

सलाते ग़ौसिया

हज़रात ! मशहूर बुज़ुर्ग आलिमे रब्बानी हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी ने फ़रमाया :

रबीउल आख़िर की एक, तीन, बाँच, सात, नौ, ग्यारह तारीख़ों में से किसी भी रात में सलाते ग़ौसिया पढ़ें इन्शाअल्लाह तआला हाजतें पूरी होंगी। बाद नमाज़े मग़रिब दो रकअत नमाज़े नफ़्ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में बाद अलहम्दु लिल्लाह के ग्यारह बार सूरह इख़्लास पढ़ें फिर सलाम के बाद سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ الله ग्यारह मरतबा पढ़ें ! फिर ग्यारह मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में दुरूदो सलाम अर्ज़ करें और ग्यारह बार यह कहें

يَارَسُوْلَ اللهِ يَانَبِيَّ اللهِ اَغِثْنِيْ وَامْدُدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَاقَاضِيَ الْحَاجَاتِ

फिर इराक़ की तरफ़ ग्यारह क़दम चलें हर क़दम पर यह कहे

يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَاكَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِيْ وَامْدُدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَاقَاضِيَ الْحَاجَاتِ

फिर हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सय्यदना ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीलए मुबारक से अल्लाह पाक से दुआ मांगे।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)
रबीउल आख़िर शरीफ़

तीसरा जुमा .... पहला बयान

अनवारे क़ादरिया

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(पारा 11, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मरीदे ग़ौसियत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

और फ़रमाते हैं :

किस गुलिस्ताँ को नहीं फ़सले बिहारी से नियाज़
कौन से सिलसिले में फ़ैज़ न आया तेरा
राज किस शहर में करते हैं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नहर से लेता नहीं दरया तेरा

मिज़रए चिश्त व बुख़ारा व इराक़ व अजमेर
कौन सी कश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

और फ़रमाते हैं :

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

तम्हीद : शहज़ादए रसूल, हमारे बड़े पीर, पीराने पीर, दस्तगीर, अबुश्शैख़, अबू मुहम्मद सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी हसनी, हुसैनी, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी सिर्फ़ आम मखलूक़ ही नहीं ब्लिक औलियाए उलमा और अक़्ताब व अब्दाल के लिये भी मशअले राह रही है। औलियाए किराम तो बहुत हुए और क़ियामत तक होते रहेंगे लेकिन इस में कोई शक नहीं कि कश्फ़े व करामत और मुजाहिदा व इबादत में आप का कोई सानी नहीं और अल्लाह तआला ने आप को गिरोहे औलिया अक़्ताब व अफ़रादो औताद का इमाम व सुल्तान बनाया। यही वजह है कि औलियाए मुतक़द्देमीन में ब़हुत से बा कमाल बुज़ुर्गों ने आप की विलायत व करामत को तस्लीम किया है और आप के ज़हूर की बशारतें दी हैं।

जो वली क़ब्ल थे या बाद हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

और आप के ज़माने के व बाद के जुमला औलिया उलमा और तमाम बुज़ुर्गों ने आप की परहेज़गारी व नेकी और विलायत व करामत और बारगाहे ख़ुदा वन्दी में आप की महबूबियत व मक़बूलियत को तस्लीम किया और सब ने आप के हुक्म :

قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ

को सुन कर बरमला ऐलान किया कि या सय्यदी ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बे शक आप का मुबारक क़दम मेरी गरदन पर है और बाज़ ने तो आप का क़दम शरीफ़ अपने सर और आँखों पर भी लिया।

ख़ूब फ़रमाया मुरीदे क़ादरियत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

वाह क्याा मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे, ऊँचों के सरों से क़दम आला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

नबी का क़दम ग़ौसे आज़म के कान्धे पर

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लिखा है। जिस की तलख़ीस पेश है कि बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में बाज़ किताबों में लिखा है कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेअराज के लिये जब तशरीफ़ ले जारहे थे तो बुराक़ पर सवार होते वक़्त हमारे पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रूहे मुबारक हाज़िर हुई और

आप ने कान्धा शरीफ़ को आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में पेश किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस पर क़दम रखकर बुराक़ पर सवार हों। तो इस मौके पर आका करीम, गुरतफाजाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने शहज़ादे शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नवाजा कि आप के कान्धे पर अपने पाए मुबारक को रखा और बुराक़ पर सवार हुए और फ़रमाया कि मेरा पाऊँ तेरी गरदन पर है और तेरा पांव सारे वलियों की गरदन पर होगा। यह वाक़िआ मक्का मुअज़्ज़मा की सर ज़मीन पर हुआ।

(गुलख्खरान, फतावा रज़विया, जि. 12, स. 20)

ग़ौसे आज़म ने बारह बरस की डूबी कश्ती तिराई

हमारे बड़े पीर, महबूबे सुब्हानी, शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में यह करामत बहुत ही मशहूर है और महफ़िलों में उलमाए किराम बयान भी करते हैं कि एक बूढ़ी औरत लबे दरया बेठी रो रही थी इत्तिफ़ाक़न हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का उस तरफ़ गुज़र हुआ, हज़रत ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्यूँ रो रही हो ? बूढ़ी औरत ने अर्ज़ की हज़रत ! बारह बरस हो गए हैं इस दरया में मेरे लड़के की बारात मअ सामान डूब गई और मेरा लड़का भी डूब गया। उसी के ग़म में यहाँ आकर मैं रोज़ाना रोती हूँ। आप ने दुआ की तो अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फ़रमाई और बारह बरस की डूबी कश्ती बारात और साज़ो सामान के साथ सही व सालिम निकल आई और बूढ़ी औरत ख़ुश होकर अपने मकान को चली गई। (फतावा रज़विया शरीफ,जि. 12, स. 198)

हज़रात ! यह वह वाक़िआ है जिस का किताबों में ज़िक्र नहीं मिलता मगर मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बडा ही प्यारा और दिलनवाज़ जवाब दिया है। जिस से इस बात की निशानदही होती है और इस ज़ाब्ता का पता चलता है कि बुज़ुर्गों की तरफ़ मन्सूब अगर कोई वाक़िआ मशहूर ज़बान ज़द ख़वासो अवाम हो और उस में क़ोई शरई क़बाहत न हो तो अगरचेह किसी मुस्तनद किताब में न हो हर गिज़ उस का इनकार नहीं क़रना चाहिये, क्यों कि इल्म सिर्फ़ किताबों से ही हासिल नहीं होता बल्कि सीना ब सीना भीआता है।

आप फ़रमाते हैं : पहली रिवायत अगरचेह नज़र से किताब में न गुज़री मगर ज़बान पर मशहूर और उस में क़ोई अम्र ख़िलाफ़े शरअ नहीं तो उस का इनकार न किया जाए।

(फतावा रज़विया, जि. 11, स. 198)

हज़रात ! दूलहा और बारात कश्ती के साथ बारह बरस पहले डूब चुके थे बारह साल में क्या हुआ होगा, आप ख़ूब समझ सकते हैं न गोश्त बचा होगा न ही हड्डी। और कश्ती भी खुर्द बुर्द हो चुकी होगी। मगर हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ की बड़ी शान है। लब हिलते ही बाबे इजाबत खुल जाता है और साइल व भिकारी की मन्नत व मुराद पूरी हो जाती है बल्कि बुरी तक़दीर भी अच्छाई में तब्दील हो जाती है।

ख़ूब फ़रमाया मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

जो डूबी थी कश्ती वह दम में निकाली
तुझे ऐसी क़ुदरत मिली ग़ौसे आज़म
लिखे को मिटा कर तू लिखने पे क़ादिर
कि हैं तेरे लौहो क़लम ग़ौसे आज़म

एक मुरीद का दूसरे पीर से मुरीद होना जाइज़ नहीं

सय्यद क़ासिम अली साहब क़ादरी स्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सिलसिला क़ादरिया और क़ादरी ख़ानदान से मुरीद थे मगर नक़्शबन्दिया सिलसिला के कुछ मुरीदीन, सर हिन्द शरीफ़ के एक नक़्शबन्दी बुज़ुर्ग से मुरीद होने पर उन्हें वर ग़लाया जनाब मौसूफ़ ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ रुजूअ किया और अर्ज़ करना चाहा कि किया क़ादरी सिलसिला का मुरीद दूसरे सिलसिले में ज़ा सकता है और क्या एक पीर को छोड़ कर दूसरे से मुरीद हुआ जा सकता है ?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब से पहले बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आप के ख़ानदान व सिलसिला की बुज़ुर्गी व बरतरी को बयान किया कि क़ादरी सिलसिला व ख़ानदान उन सब सिलसिलों से अफ़ज़ल व आला है तो उस सिलसिले के मुरीद दूसरे सिलसिले से मुरीद क्यों कर हो सकता है ? फिर बयान फ़रमाया कि तब्दीले शैख़ यानी एक पीर को छोड़ कर दूसरे से मुरीद होना जाइज़ व दुरुस्त नहीं। इस लिये कोई क़ादी सिलसिले का मुरीद दूसरे सिलसिले के पीर से मुरीद नहीं हो सकता।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं : हमारे नज़दीक ख़ानदान आलीशान क़ादरी सब ख़ानदानों से आला व अफ़ज़ल है। तब्दीले शैख़ बिला ज़रूरते शरइय्या जाइज़ नहीं हदीस में इरशाद हुआ مَنْ رُزِقَ فِيْ شَيْءٍ فَلْيَلْزَمْهُ

यानी जिस को जिस चीज़ में रोज़ी मिली वह इसी को लाज़िम पकड़ ले यानी जो जिस से मुतअल्लिक़ और फ़ैज़ याफ़्ता है उसी से लगा रहे। (फ़तावा रज़विया, जि. 11, स. 116)

किसी के बहकाने से पीर नहीं बदलना चाहिये वर्ना सख़्त महरूमी होगी :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि

सवाल : शैख़ से बज़ाहिर कोई ऐसी बात मालूम हो जो ख़िलाफ़े सुन्नत है तो उस से फिर जाना (यानी उस पीर को छोड़ देना) कैसा है ?

जवाब : महरूमी और इन्तिहाई गुमराही है। (अल मलफ़ूज़, जि. 4, स. 57)

हज़रात ! मगर ख़िलाफ़े शरअ काम करने की वजह से जैसे नमाज़ नहीं पढ़ता या पढ़ता है तो छोड़ के, रोज़ा नहीं रखता, दाढ़ी कतरवाता है, दो चार अंगूठियाँ पहनता है वग़ैरह। तो ऐसे को पीर बनाना हराम है।

अग़र अपना पीर कमज़ोर है तो पीराने पीर मदद फ़रमाते हैं

हमारे बड़े पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

مُرِيْدِىْ لَا تَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّىْ
عَطَانِىْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَانِىْ

यानी ऐ मेरे मुरीद ख़ौफ़ न कर कि तू कमज़ोर है, अल्लाह तआला ने मुझे ताक़तवर बनाया है अगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सिलसिला में कोई मुरीद होता है और जिस को पीर बनाया वह सुन्नी सहीहुल अक़ीदा आलिमे बा अमल है और उस का सिलसिला सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तक मिलता है तो अगरचेह वह पीर कमज़ोर हैऔर विलायत व रूहानियत से ख़ाली है तो बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस मुरीद की मदद फ़रमाते हैं और अपने फ़्यूज़ो बरकात व अनवार की दौलतों से मालामाल करते हैं। ख़ूब फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :

मुरीदी ला तख़फ़ कह कर तसल्ली दी गुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आज़म का

तमाम क़ादरियों को बख़्शिश की बशारत

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मुझे एक काग़ज़ दिया गया जो इतना बड़ा था कि जहाँ तक निगाह पहुँचे, उस काग़ज़ में मेरे अस्हाब और मुरीदीन के नाम (लिखे) थे जो क़ियामत तक होने वाले थे और मुझ से कहा गया कि तुम्हारे उन सब मुरीदों को तुम्हारी वजह से बख़्श दिया गया और मैं ने दोज़ख़ के दारोग़ा से पूछा कि क्या तुम्हारे पास मेरा कोई मुरीद है ? तो दारोग़ा ने कहा (कि आप का एक मुरीद भी दोज़ख़ में) नहीं है। (बहजतुल असरार, स. 294)

क़ादरी हूँ शुक्र है रब्बे क़दीर का
दामन है हाथ में पीराने पीर का

ग़ौसे आज़म का हाथ मुरीदों के सर पर है

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआला की इज़्ज़त व जलाल की क़सम है कि

اِنَّ يَدِىْ عَلٰى مُرِيْدِىْ كَالسَّمَاءِ عَلَى الْاَرْضِ

मेरा हाथ मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आसमान (का साया) ज़मीन पर। अगर मेरा मुरीद उम्दा (अच्छा) नहीं तो मैं तो उम्दा (अच्छा) हूँ, मुझे अपने रब तआला की इज़्ज़त व जलाल की क़सम कि मेरे क़दम मेरे रब तआला के सामने बराबर रहें गे यहाँ तक कि मुझ को

और तुम को जन्नत की तरफ़ ले जाएगा। (बहजतुल असरार, स. 294)

क़ादरी कर, क़ादरी रख, क़ादरियों में उठा
क़द्रे अब्दुल क़ादिरे कुदरत नुमा के वास्ते

बैअत होना, मुरीद होना किसे कहते हैं

मुरीदे ग़ौसे आज़म आला हज़रत इमामअहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया कि बैअत, मुरीद होना के क्या मअना हैं ?

तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बैअत का मअना बिक जाना। यानी अपने जान व माल को अपने पीरो मुर्शिद के हाथ पर बेच देना। फिर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं:

सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में यह वाक़िआ है कि एक साहब को बादशाह ने मौत की सज़ा का हुक्म दे दिया। जल्लाद ने तलवार खींची और यह सज़ा पाने वाला शख़्स अपने पीरो मुर्शिद के मज़ार की जानिब चेहरा करके खड़ा हो गया। जल्लाद ने कहा कि उस वक़्त (यानी मरने के वक़्त ख़ानए कअ़बा) क़िब्ला की जानिब मुंह करते हैं (तो मुरीदे सादिक़) ने फ़रमाया (ऐ जल्लाद) तू अपना काम कर मैं ने क़िब्ला को मुंह कर लिया है (और हक़ीक़त में) यही बात है कि कअ़बा मुअज़्ज़मा जिस्म का क़िब्ला है और पीर व मुर्शिद रूह का क़िब्ला है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इरादत (यानी पीरी मुरीदी) उस का नाम है। अगर इसी तरह सची अक़ीदत के साथ मुरीद एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उस (मुरीद) को ज़रूर बज़रूर फ़ैज़ मिलेगा (अल मलफ़ूज़, जि. 2, स. 17)

क़ादरी कर, क़ादरी, रख, क़ादरियों में उठा
क़दरे अब्दुल क़ादिरे कुदरत नुमा के वास्ते

अगर पीर ख़ाली है तो पीर का पीर ख़ाली न होगा

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं: अगर पीर ख़ाली है तो पीर का पीर ख़ाली न होगा और अगर बिल फ़र्ज़ वह भी न सही तो (पीराने पीर) हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु तो फ़ैज़ व अनवार के मअदन व मंबअ हैं उन से फ़ैज़ आएगा, सिलसिला सही व मुत्तसिल होना चाहिये। (फिर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह वाक़िआ बयान फ़रमाया)

एक फ़क़ीर भीक मांगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था कि एक रुपया दे और दूकानदार नहीं देता था तो फ़क़ीर (जलाल में आ गया) और कहने लगा कि रुपया देता है तो ठीक वर्ना मैं तेरी दूकान उलट दूँगा। इस थोड़ी देर में बहुत लोग जमा हो गए। इत्तिफ़ाक़न एक साहिबे दिल (यानी एक अल्लाह वाले) का वहाँ से गुज़र हुआ जिन को सब लोग जानते थे)

और जिन के सब मोअतक़िद थे। उन्होंने दूकान दार से फ़रमाया कि जितनी जल्दी तुम से हो सके उस फ़क़ीर को रुपया दे दो वर्ना दूकान उलट जाएगी। तो लोगों ने अर्ज़ की हज़रत! यह बे शरअ, जाहिल क्या कर रसकता है तो (अल्लाह वाले ने) फ़रमाया मैंने इस फ़क़ीर के बातिन पर नज़र डाली कि कुछ है भी तो मालूम हुआ कि यह फ़क़ीर तो बिल्कुल ख़ाली है। फिर मैं ने उस के पीरो मुर्शिद को देखा तो उसे भी ख़ाली पाया, फिर उस के शैख़ के शैख़ को देखा तो उन को अल्लाह तआला का वली पाया और देखा कि वह इन्तिज़ार में ख़ड़े हैं कि कब (उन के मुरीद के मुरीद) यानी उस फ़क़ीर की ज़बान से निकले और मैं दूकान उलट दूँ। तो बात क्या थी कि पीर व मुर्शिद का दामन मज़बूती के साथ पकड़े हुए था।

(अल मलफ़ूज़, शरीफ़ जि. 2, स. 71)

ऐ ईमान वालो! साफ़ तौर से पता चला कि मुरीद अगर कमज़ोर है मगर अपने पीर व मुर्शिद का दामन मज़बूती के साथ पकड़ रखा है तो यक़ीनन फ़्यूज़ो बरकात से मालामाल होगा।

तेरे हाथ में हाथ मैंने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आज़म

मुरीदों को ख़तरा नहीं बहरे ग़म से
कि हैं बेड़े के ना खुदा ग़ौसे आज़म

पीर के शराइत : आक़ाए नेअ़मत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बैअत उस शख़्स से होना चाहिये जिस में यह चार बातें होना ज़रूरी हैं वर्ना बैअत जाइज़ न होगी।

(1) सुन्नी सहीहुल अक़ीदा (2) कम से कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बग़ैर किसी मदद के अपनी ज़रूरत के मसाइल किताब से ख़ुद निकाल सके (3) इस का सिलसिला हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुनक़तअ न हो (5) फ़ासिक़े मोअलिन न हो। (अल मलफ़ूज, जि. 2, स. 46)

मुरीद कैसा होना चाहिये : आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं बहुत से लोग बतौर रस्म बैअत हो जाते हैं। (मुरीद हो जाते हैं) मगर बैअत का मअ़ना नहीं ज़ानते बैअत यानी मुरीद होना उसे कहते हैं कि

हज़रत यहया मुनीरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक मुरीद दरया में डूब रहे थे, हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और फ़रमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूँ। तो हज़रत यहया मुनीरी के उस मुरीद ने अर्ज़ की, यह हाथ तो हज़रत यहया मुनीरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ में दे चुका हूँ, अब दूसरे के हाथ में न दूँगा। हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ग़ायब हो गए और हज़रत यहया मुनीरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ लाए और उस मुरीद को दरया से निकाल लिया। (अल मलफ़ूज, जि. 2, स. 47)

ऐ क़ादरियो! हम क़ादरियों के क़ब्र के उजाला, आख़िरत के सहारा, हमारे पीराने पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फ़रमान है कि

अगर मेरे मुरीद का पर्दा मशरिक़ में खुल जाए और मग़रिब में हों तो वहीं से मैं उसे ढांप देता हूँ। (बहजतुल असरार, स. 292)

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़बर लो हमारी कि हम हैं तुम्हारे
करो हम पे फ़ज़्लो करम ग़ौसे आज़म
ख़ुदा ने तुम्हें महवे इस्बात बख़्शा
हो सुल्ताने लौहो क़लम ग़ौसे आज़म

मुरीद की निगाह में पीरो मुर्शिद का मक़ाम

हमारे बड़े पीर, पीराने पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि मुरीद के लिये ज़रूरी है कि उस को अपने पीरो मुर्शिद पर मुकम्मल यक़ीन और पुख़्ता अक़ीदा हो कि इस वक़्त मेरे पीर व मुर्शिद से बुज़ुर्ग और नेक और कोई दूसरा शैख़ व पीर नहीं। इस यक़ीन और अक़ीदा से उस को अपने अस्ल मक़सद में कामयाबी हासिल होगी और अल्लाह तआला की बारगाह में उस मुरीद को क़ुबूलियत का दरजा हासिल हो जाएगा और वह मुरीद जो कुछ पीर व मुर्शिद की ख़िदमत अन्जाम दे रहा है उस की वजह से आफ़त व मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगा और सिलसिला की निस्बत की बरकत से वह तमाम ख़तरात से बचा रहेगा और पीर व मुर्शिद की ज़बान से भी वही बात निकलेगी जो उस के लिये मुनासिब होगी। और बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुरीद को चाहिये कि पीरो मुर्शिद की मुख़ालिफ़त किसी हाल में न करें कि पीर व मुर्शिद और मशाइख़ की मुख़ालिफ़त मुरीद के हक़ में ज़हरे क़ातिल है (यानी ऐसा ज़हर जिस से मरना ही है) इस लिये पीर व मुर्शिद की न खुल कर मुख़ालिफ़त करे और न किसी तावील के साथ, और मुरीद पर लाज़िम है कि कोशिश करे कि अपने पीरो मुर्शिद से अपना कोई राज़ और अपनी कोई हालत छुपा कर न रखे और पीरो मुर्शिद अगर कोई हुक्म दे तो उस को किसी को न बताए और उस को बजा लाए। (गुनयतुत तालिबीन, स. 617)

जिस शख़्स को मुझ से निस्बत हासिल है वह भी मेरा है

अबुश्शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : जिस शख़्स को मुझ से निस्बत हासिल है उस को कअ़बतुल्लाह से भी वाबस्गी हासिल हो जाएगी, ख़्वाह उस के आमाल पसन्दीदा हों या ना पसन्दीदा हों फिर भी वह मेरे ही सोहबत याफ़्तगाने व चाहने वालों में शुमार होगा। (बहजतुल असरार, स. 295, क़लाइदुल जवाहर, स. 52)

और फ़रमाया जो शख़्स मेरी तरफ़ मन्सूब हुआ और मेरा नाम ले, उस को अल्लाह

तआला कुबूल फ़रमाएगा और उस पर मेहरबानी करेगा अगर चेह वह बुरे अमल वाला है मगर वह मेरे मुरीदों में है। बे शक मेरे रब तआला ने मुझ से वअदा फ़रमाया है कि मुरीदों और मेरे हम मज़हबों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल करेगा। (बहजतुल असरार, स. 295)

हज़रत मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी फ़रमाते हैं :

मुरीदी ला तख़फ़ कह कर तसल्ली दी गुलामों को
क़ियामत तक बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आज़म का

मुरीदे सादिक़ की दुआ ने चोर को मुर्शिदे कामिल बना दिया

आशिक़े इमाम अहमद रज़ा, अलम बरदारे मस्लके आला हज़रत, रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा मौलाना अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा कीज़बानी मुलाहज़ा फ़रमाइये।

इराक़ का मशहूर डाकू अब्दुल्लाह गुनाहों से ताइब हो चुका था और अल्लाह तआला की बारगाह में कुर्ब का मक़ाम पाने के लिये पीरो मुर्शिद का होना लाज़मी हैं, इसी मक़सद से सरफ़राज़ी व कामयाबी के लिये अब्दुल्लाह भी पीरो मुर्शिद की तलाश में था मगर नेक व सच्चे लोग आसानी के साथ नहीं मिला करते मगर जिस पर खुदाए तआला का फ़ज़्लो करम हो जाए। आज पूरी रात अब्दुल्लाह ने रो रो कर गुज़ारी थी कि इलाही ! मुझे मेरे पीरो मुर्शिद से मिला दे। आख़िर सुबह होने वाली थी और अब्दुल्लाह ने भी फ़ैसला कर ही लिया था कि आज मुरीद हो जाना है और सुबह जो सब से पहले मिलेगा उसी को पीरो मुर्शिद बना लूँगा। अब्दुल्लाह रात भर जागा था, खूब दुआएं मांगी थीं, अब्दुल्लाह नमाज़े फ़ज्र के लिये घर से निकला, एक चौर जिस का नाम यहया था, चोरी करके रात के अन्धेरे में भागा जा रहा था कि अब्दुल्लाह ने दौड़ कर यहया चोर को पकड़ लिया और बड़ी मिन्नत व समाजत के साथ अर्ज़ करने लगा कि अल्लाह तआला ने मेरी रात भर की दुआ को कुबूल फ़रमा लिया है और आप को मेरा पीरो मुर्शिद बना कर भेज दिया है इस लिये जब तक आप मुरीद नहीं क़रते मैं आप को हर गिज़ नहीं छोडुँगा। और यहया हैरान व परेशान है कि मैं पीरो मुर्शिद कहाँ हूँ, मैं तो एक चोर हूँ और आज पकड़ा गया। यहया चोर ने कहा कि मैं पीरो मुर्शिद नहीं हूँ तुम मुझ को छोड़ दो मगर अब्दुल्लाह अपनी ज़िद पर हैं कि तुम जब तक मुझ को मुरीद नहीं कर लेते हो मैं आप को छोड़ूँगा नहीं। बादले नाख्वास्ता न चाहते हुए भी और जल्दी से रात के अन्धेरे में घर पहुँचने की ग़रज़ से ताकि लोग देख न लें,. मजबूर यहया चोर ने अब्दुल्लाह का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा कि मैं ने तुम को मुरीद किया और मैं जब तक वापस न आऊँ तुम इसी मकाम पर खड़े रहना। यहया तो चोर था, जान छुड़ा कर झूट मूट मुरीद कर के अपनी राह लिया, लेकिन अब्दुल्लाह वह अभी कुछ दिनों पहले ही डाका ज़नी से तौबह किया था उस की तलब तो सच्ची थी, वह तो यही समझ रहा है कि रात की मेरी दुआ कुबूल हुई और अल्लाह तआला ने मुझ को पीरो मुर्शिद अता फ़रमा दिया है।

अब अब्दुल्लाह उसी मक़ाम पर खड़ा है जहाँ यहया चोर ने मुरीद करके कहा था कि जब तक मैं वापस न आऊँ तुम इसी जगह खड़े रहना। पीरो मुर्शिद के इन्तिज़ार में महीना गुज़रा मगर पीरो मुर्शिद नहीं आए, साल गुज़रा मगर पीरो मुर्शिद का पता नहीं तक़रीबन तीन साल का अर्सा दराज़ गुज़र गया मगर पीरो मुर्शिद का कोई सुराग़ नहीं चला। हक़ीक़त तो यह थी कि वह पीरो मुर्शिद नहीं ब्लिक चोर था मगर एक सच्चे और पक्के मुरीद की दुआ किस तरह असर दिखाती है कि झूट मूट में मुरीद करके जान बचा कर भाग जाने वाला यहया चोर तीन साल के बाद चोरी करने के लिये बग़दादे मुअल्ला में महबूबे सुब्हानी, क़ुतुबे रब्बानी, पीराने पीर दस्तगीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में दाख़िल हुआ, तलाश बसियार के बाद जब कुछ हाथ न आया तो कहने लगा कि बड़ा नाम है मगर इस घर से कुछ न मिला। उस को क्या पता था कि अब वह नेअ़मत मिलने वाली है जो हज़ार कोशिशों के बाद भी नहीं मिला करती है घर से निकल कर भागना चाहा तो आँख अन्धीं हो गई, अब दरवाज़ा ही नहीं मिलता घर से निकले कैसे, मजबूरन घर के एक गोशे में बैठ गया।

इधर हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि फ़लां शहर के क़ुतुब का इन्तिक़ाल हो गया है, वहाँ के लिये क़ुतुब चाहिये। महबूबे सुब्हानी हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ! सुबह क़ुतुब का इन्तिज़ाम हो जाएगा। हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ! सुबह होने से पहले अगर कोई बला नाज़िल हो गई तो उस का ज़िम्मादार कौन होगा। महबूबे सुब्हानी, हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे घर में एक मेहमान आया है, उस चोर को बुलाओ उसी को क़ुतुब बना कर भेज देता हूँ। ख़ादिम उस यहया चोर को ले कर बारगाहे क़ादरियत व ग़ौसियत में हाज़िर हुए, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ैंची से उसके बाल को तराशा और अल्लाह तआला की अता की हुई ताक़त व क़ुव्वत से मस्नदे विलायत व क़ुतबियत पर बैठा दिया और उस का हाथ हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के हाथ में दे दिया और फ़रमाया कि उस जगह पर जाकर अब्दुल्लाह को मुरीद करो और फिर अपने मक़ाम पर जाओ।

हज़रात ! एक सच्चे मुरीद की दुआ ने यहया चोर को वली व क़ुतुब और मुर्शिदे कामिल बना दिया। (सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 17)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते, मिटते नाम हो ही जाएगा

साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

दुरूद शरीफ़ :

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के इरशादात

शहज़ादए रसूल, सुल्तानुल औलिया हमारे बड़े पीर, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादात व फ़रमूदात जो चाँद व सूरज से ज़्यादा रौशन और ज़रो जवाहरात से बढ़ कर बेश क़ीमत हैं और हर दौर के मुसलमानों के लिये और ख़ास कर हम क़ादरी मुरीदों के लिये हिदायत व रहनुमाई का सर चश्मा हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

नमाज़ के बारे में : बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नमाज़ रब तआला की ख़ुश्नोदी और अम्बियाए किराम की सुन्नत और ईमान की अस्ल और नमाज़, नमाज़ी के क़ब्र का चिराग़ और मुनकर नकीर के सवाल का जवाब और क़ियामत तक के लिये क़ब्र में एक ग़ुमगुसार दोस्त की तरह है। (ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 507)

और फ़रमाते हैं कि पांचों नमाज़ें दीन का सुतून हैं। अल्लाह तआला बग़ैर नमाज़ के दीन को (यानी कोई नेक अमल) क़ुबूल नहीं फ़रमाएगा। (ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 508)

और फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नमाज़ को हक़ीर समझेगा यानी नमाज़ को वक़्त पर अदा न करे और नमाज़ को सुन्नत के मुताबिक़ न अदा करे तो अल्लाह तआला उस बन्दे को पन्दरह सज़ाएं देगा। छः क़िस्म के अज़ाब मरने से पहले, तीन मरते वक़्त, तीन क़ब्र में, और तीन क़ब्र से उठते वक़्त।

मौत से पहले छः दुनियावी अज़ाब

(1) ग़ाफ़िल नमाज़ी को नेकों की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज कर दिया जाता है। (2) उस से ज़िन्दगी की बरकत दूर कर दी जाती है। (3) उस के रिज़्क़ से बरकत दूर हो जाती है। (4) उस का कोई नेक अमल क़ुबूल नहीं किया जाता। (5) उस की दुआ क़ुबूल नहीं होती। (6) वह नेकों की दुआ से महरूम कर दिया जाता है।

मरते वक़्त का अज़ाब

(1) ग़ाफ़िल नमाज़ी कि वह मौत के वक़्त प्यासा मरता है अगरचेह उस के हलक़ में सात दरया उलट दिये जाएं। (2) उस की मौत अचानक होगी यानी तौबह व इस्तिग़फ़ार की मोहलत नहीं मिलेगी। (3) उस के कांधों पर दुनियवी चीज़ों का बोझ इस क़दर होगा कि वह बोझल हो कर जाएगा।

क़ब्र के तीन अज़ाब

(1) क़ब्र उस पर तंग कर दी जाएगी। (2) क़ब्र में ज़बर दस्त अन्धेरा होगा। (3) मुनकर नकीर के सवालों का जवाब नहीं दे सकेगा।

क़ब्र से उठने पर तीन अज़ाब

(1) उस से अल्लाह तआला बहुत नाराज़ होगा। (2) उस से हिसाब बहुत सख़्त होगा। (3) अल्लाह के दरबार से उस की वापसी दोज़ख़ की तरफ़ होगी। (अगर अल्लाह तआला

मुआफ़ फ़रमाए तो ख़ैर)। (गुनयतुत तालिबीन, स. 513)

हज़रात! बड़े पीर, पीराने पीर दस्तगीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रमूदात से दिन के उजाले से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हो गया कि नमाज़ की नाक़दरी और उस को वक़्त पर न अदा करना और सुन्नत के मुताबिक़ न पढ़ना किस क़दर अज़ाब व मुसीबत का ज़रीआ है।

अल्लाह तआला हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीले से हम को सच्चा पक्का नमाज़ी बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

मस्जिद में दाख़िल होने के बारे में

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब बन्दा वुज़ू करके मस्जिद में जाता है तो उस के हर क़दम पर अल्लाह तआला एक नेकी लिखता है और एक गुनाह मिटाता है और उस का एक दरजा बलन्द फ़रमाता है और जिस तरह मुद्दते दराज़ के सफ़र से कोई मुसाफ़िर जब अपने घर वापस होता है तो उसके घर वाले ख़ुश होते हैं, इसी तरह उस शख़्स के मस्जिद में आने पर अल्लाह तआला ख़ुश होता है और मस्जिद में आए तो ख़ौफ़ खाता और डरता हुआ और अदब के साथ आए और तकब्बुर व घमण्ड और ख़ुद बीनी मौजूद न हो सिर्फ़ ख़ुदा के घर की तरफ़ तवज्जोह हो, यानी यह ख़याल रखे कि मैं अल्लाह तआला के घर में जा रहा हूँ, जो बादशाहों का बादशाह है। मालिकों का मालिक है और अहकमुल हाकिमीन है। (गुनयतुत तालिबीन, स. 509)

जुमा के दिन दुरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ना चाहिये

हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि :

जुमा के दिन मुझ पर दुरूद ज़्यादा पढ़ा करो क्यों कि उस रोज़ आमाल (का सवाब) दो गुना कर दिया जाता है। (गुनयतुत तालिबीन, स. 442)

हज़रात! पीराने पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु अन्हु की बयान की हुई हदीस शरीफ़ की रोशनी में मालूम हुआ कि जुमा के दिन तमाम आमाल के सवाब दो गुना कर दिये जाते हैं, इस तरह दुरूद शरीफ़ का सवाब भी दो गुना हो जाता है लिहाज़ा हमें हर नेकी को ख़ास कर दुरूद शरीफ़ को जुमा मुबारका के दिन दूसरे दिनों से ज़्यादा पढ़ना चाहिये।

भलाई का हुक्म देने वाला सच्चा दोस्त है

पीराने पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

आयते करीमा : وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ م يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

तर्जमा : और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के र फ़ीक़ हैं,. भलाई का हुक्म दें और बुराई से मना करें। (पारा 10, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम पर ज़रूरी है कि तुम भलाई का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको वर्ना अल्लाह तआला तुम्हारे नेकों पर तुम्हारे बुरों को ज़रूर मुसल्लत कर देगा फिर नेक लोग दुआ करेंगे मगर उन की दुआ क़ुबूल न होगी।

और ! फ़रमाया कि अगर मुमकिन हो तो अम्र व नही (नेकी का हुक्म और बुराई से मना), तन्हाई में करो क्योंकि तन्हाई में नसीहत का दिल पर ज़्यादा असर होता है और आदमी बुरी बातों से बच जाता है। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी को तन्हाई में नसीहत करता है वह उस को संवारता है और जो लोग के सामने नसीहत करता है वह गोया उस का ऐब बयान करता है और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अगर तन्हाई में नसीहत करने का असर न हो तो ऐसे शख़्स को अलल ऐलान नसीहत करना चाहिये और इस सिलसिले में दूसरे लोगों से भी मदद लेना चाहिये।

और ! फ़रमाया हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कि अल्लाह तआला ने हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई कि मैं तुम्हारी क़ौम के चालीस हज़ार नेकों और साठ हज़ार बुरों क़ो हलाक व बरबाद करूँगा तो अल्लाह के नबी हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि या रब तआला बुरे तो अपने आमाल बद की सज़ा पाएंगे लेकिन नेकों क़ो हलाक करने की क्या वजह है ?

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया (ऐ मेरे नबी अलैहिस्सलाम यह नेक लोग इस लिये हलाक किये जाऐंगे) कि मैं जिस से नाराज़ था यह लोग उस से नाराज़ नहीं हुए और बुरों के साथ खाने पीने में बराबर शरीक रहे।

और ! फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : सब से अफ़ज़ल जिहाद, ज़ालिम हाकिम (बादशाह, अमीर, दौलत मन्द) के सामने हक़ बात कह देना है। (ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 126)

अदब इल्म से अफ़ज़ल है : हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हर मोमिन पर वाजिब है कि अदंब को इख़्तियार करे और बयान फ़रमाते हैं कि मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : पहले बा अदब हो जाओ फिर इल्म हासिल करो। अबू अब्दुल्लाह बलख़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अदब पहले, इल्म बाद में। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब मुझ से बयान किया जाता है कि फ़लां आलिम को तमाम अगलों और पिछलों के बराबर इल्म है तो मुझे उस से मुलाक़ात न होने का अफ़सोस नहीं होता लेकिनअगर मुझे मालूम हो जाए कि फ़लां शख़्स को अदबे नफ़्स

हासिल है तो मुझे उस से मिलने की आरज़ू होती है और मुलाक़ात न होने का अफ़सोस होता है। (गुनयतुत तालिबीन, स. 127)

किसी आलिम की सोहबत में बैठना चाहिये

हमारे बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे आलिम की सोहबत में बैठो जो पाँच चीज़ों को छुड़ा कर पाँच चीज़ों की तरग़ीब देता हो।

(1) दुनिया की रग़बत से निकाल कर इबादत की तरग़ीब देता हो। (2) रिया, दिखावा से निकाल कर इख़्लास की तालीम दे। (3) तकब्बुर व घमण्ड से छुड़ा कर तवाज़ोअ़ व इन्किसारी की तरग़ीब दे। (4) काहिली और सुस्ती से बचा कर पन्दो नसीहत करने की तरग़ीब दे। (5) जिहालत से निकाल कर इल्म की तरग़ीब दे।

या शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअन लिल्लाह का वज़ीफ़ा : मक़सद को हासिल करने और दुश्मनों पर कामियाबी के लिये बहुत कामयाब वज़ीफ़ा है। उलमा व सूफ़िया ने लिखा है कि किसी भी मक़सद की तकमील के लिये रात को सोते वक़्त एक हज़ार मरतबा पढ़ कर दाहिने हाथ पर दम करके ज़ेरे गला दाहिने करवट पर सो जाए हर हाजत व मुराद पूरी होगी या ख़्वाब में उस के हल की तदबीर बता दी जाएगी। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस नाम की बरकत हर दौर में देखी गई है।

बादशाहे हिन्द हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर अलैहिर्रहमह वर्रिज़वान ने भी अपनी तलवार पर कन्दा कराया था, जिस से हज़ारों क़ाफ़िरों को मौत के घाट उतारा था। आज भी देहली के लाल क़िला में आप की वह तलवार महफ़ूज़ है जिस पर जली हुरूफ़ में लिखा है।

يَاسَيِّدَنَا الشَّيْخْ عَبْدُ الْقَادِرْ جِيلَانِي شَيْئًا لِلّٰهِ

यानी ऐ हमारे सरदार शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी आप अल्लाह तआला की रज़ा के लिये हमें कुछ अता कीजिये और मदद कीजिये।

हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपनी किताबुल इन्तिबाह में मुशकिलात हल के लिये लिखते हैं कि पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े उस के बाद एक सो ग्यारह मरतबा يَاشَيْخْ عَبْدُ الْقَادِرْ جِيلَانِي شَيْئًا لِلّٰهِ पढ़े। ख़ुलासा :

(फ़तावा रज़विया, जि. 12, स. 109)

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

नेकों की सोहबत की बरकात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ○

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो।

(पारा 11, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

अगरचेह ज़र भी जहाँ में है क़ाज़ियुल हाजात
जो फ़क्र से है मयस्सर तवंगरी से नहीं

सबब कुछ और है तू जिस को ख़ुद समझता है
ज़वाल बन्दए मोमिन का बे ज़री से नहीं

जहाँ में जोहर अगर मेरा आशकारा हुआ
क़लन्दरी से हुआ है, सिकन्दरी से नहीं

(डाक्टर इक़बाल साहब)

न तख़्तो ताज में न लश्कर व सिपाह में है
जो बात मर्दे क़लन्दर की इक निगाह में है

तमहीद : यह दुरुस्त है कि तख़्तो ताज की ताक़त, और मालो ज़र की कुव्वत और बादशाहों, अमीरों की शान व शौकत एक मुसल्लम हक़ीक़त है लेकिन सिर्फ़ चार दिनों के लिये, मगर औलिया अल्लाह की रूहानी ताक़त व कुव्वत अपनी अज़मत व बरकत के लिहाज़ से बहुत ही बलन्द तरीन मन्ज़िल है और बादशाहों अमीरों और मालदारों की सोहबत में जाने वाला आम आदमी ही नहीं बल्कि बहुत से आलिम व मौलाना कहलाने वालों को देखा गया कि वह भी सोहबत की वजह से दुनियादार और गुनाहगार हो गए।

हज़रात! यह है जैसों की सोहबत वैसी तासीर

मगर! अल्लाह वालों की सोहबत में आने वाला बुरा है तो नेक, गुनाहगार है तो पारसा। परहेज़गार और अल्लाह वाला बनता नज़र आता है उस वक़्त मैं आप को रूहानी तौर पर अजमेरे मुक़द्दस और बग़दादे मुअल्ला की सेर कराऊँ और बताऊं कि हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और हमारे पीर ख़्वाजा हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़रा सी सोहबत व नसीहत ने कितने चोरों को क़ुतुब और डाकुओं को अब्दाल और गुनाहगारों, ख़ताकारों को नेक व सालेह और परहेज़गार बना दिया था।

जहाँ में जौहर अगर मेरा आशकारा हुआ
क़लन्दरी से हुआ है सिकन्दरी से नहीं

न तख़्तो ताज में न लश्कर व सिपाह में है
जो बात मर्दे क़लन्दर की इक निगाह में है

दुरूद शरीफ़:

सच फ़रमाया हज़रत मौलाना रूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने:

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद
सोहबत तालेह तुरा तालेह कुनद

यानी नेकों की सोहबत तुझ को नेक व सालेह बना देगी और बुरों की सोहबत तुझ को बुरा बना देगी।

हज़रात! अल्लाह तआला ने इस आयए करीमा में ईमान वालों को हुक म दिया है कि सच्चों के साथ हो जाओ। सच्चों, नेकों की सोहबत और अल्लाह वालों के दामन से वाबस्तगी बहुत ही बड़ी नेअ़मत व दौलत है क़तरा हो तो दरया बन जाता है और अदना, आला हो जाता है और बद हो तो मुत्तक़ी व परहेज़गार हो जाता है और नेकों के दामन से लगे रहने की बरकत व रहमत दुनिया में भी है और आख़िरत में भी।

हज़रात! हवा जब तेज़ चलती है तो दरख़्तों से पत्ते ख़ूब झड़ते हैं और दरख़्त से जुदा हलके फुलके पत्ते को हवा अपने दोश पर उड़ाती है और जहाँ जी में आया वहाँ फेंक देती है कभी रोड़ पर तो कभी नाली में और कभी कूड़े कबाड़ के मक़ाम पर और पत्ता बे बस व लाचार नज़र आता है मगर एक पत्ता ऐसा भी नज़र आया जो अपने मक़ाम पर बड़ा महफ़ूज़ और सलामत है। हवा का झोंका आता है और गुज़र जाता है, आँधी आती है और चली जाती है, तूफ़ान का कोई ख़तरा नहीं। जब हम ने इस हलके फुलके कमज़ोर, ना तवां पत्ते से मालूम किया कि तुझे हवा क्यों नहीं उड़ाती। वह दूसरा पत्ता तो हवा में उड़ रहा है और इधर उधर गिर और पड़ रहा है और इधर, उधर गिरा, पड़ा नज़र आ रहा है। और तू अपनी जगह पर महफ़ूज़ व मामून है, तो महफ़ूज़ व मामून हलके फुलके पत्ते ने जवाब दिया कि मैं हलका फुलका, कमज़ोर ना तवां ज़रूर हूँ मगर एक भारी भर कम मज़बूत पत्थर के नीचे दबा हुआ हूँ, देखिये मुझ कमज़ोर ना तवां के हाथ में एक मज़बूत व ताक़तवर का दामन है, इस लिये हर

ग़म से बे नियाज़ और हर ख़तरे से महफ़ूज़ हूँ। गोया मुझ को एक मज़बूत वसीला मिल गया है और वह पत्ता जिस को हवा उड़ा रही है और इधर उधर गिरा रही है, उस को किसी मज़बूत का वसीला नहीं मिला है।

बिला तमसील जितने बद अक़ीदा हैं वह क़यामत के दिन तने तन्हा नज़र आएंगे और क़ियामत का होशरुबा तूफ़ान उन को उड़ाए फिरेगा और उन को हलाक व बरबाद कर के रख देगा और हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा, सुन्नी मुसलमान कमज़ोर व ना तवां और गुनाहगार ज़रूर हैं मगर हमारे हाथों में हमारे पीर व मुर्शिद का दामन है। हमारे हाथों में हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म का दामन है, हमारे हाथोंा में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का दामन है, हमारे हाथों में सरकार मख़दूम अशरफ़ का दामन है, हमारे हाथों में शाह बरकात का दामन है, हमारे हाथों में हिन्द के राजा प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ का दामन है, हमारे हाथों में पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर का दामन है, हमारे हाथों में हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन का दामन है, हमारे हाथों में सिद्दीक़ो उमर, उस्मानो हैदर रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का दामन है और हमारे हाथों में महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दामन है।

ख़ूब फ़रमाया इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

दिल अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका सही भारी है भरोसा तेरा
एक मैं क्या मेरे इसयां की हक़ीक़त कितनी
मुझ से सो लाख को काफ़ी है इशारा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَنْ يُّخَالِلُ

यानी आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तो हर एक को देखना चाहिये कि उस का दोस्त कौन है ?

हज़रत शैख़ सअदी शीराज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़ारसी..................

यानी क़ियामत के दिन अल्लाह करीम बुरे बन्दों को अपने नेक व महबूब बन्दों की वजह से बख़्श देगा।

नेक बन्दों की पहचान

हदीस शरीफ़ : एक मरतबा आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया : اَلَا اُنَبِّئُكُمْ بِخِيَارِكُمْ

क्या मैं तुम्हें नेक बन्दों की पहचान बताऊँ तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ हाँ ! या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम। पहचान बता दीजिये तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

خِيَارُكُمُ الَّذِيْنَ اِذَا رُئُوْا ذُكِرَ اللّٰهُ

यानी तुम में नेक (अल्लाह वाले) लोग वह हैं जिन के चे हरे को देखो तो ख़ुदा याद आए।

(मिश्कात शरीफ़, स. 419)

हज़रात ! मैं ने ख़ुद जिन की सोहबत से फ़ैज़ उठाया है जैसे मुर्शिदिल करीम आरिफ़े हक़, वलिये कामिल हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसन्निफ़ सवानेह आला हज़रत और मुर्शिदे आज़म मुजद्दिदे आज़म मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद, कुतबे आलम, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मर्दे हक़, कुतुबे ज़मां हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत रज़ियल्लाहु तअला अन्हुम इन बुज़ुर्गों का चेहरा ऐसा ही था जैसा हदीस शरीफ़ में बयान हुआ है कि चेहरा देखो तो ख़ुदा याद आए। मगर अफ़सोस कि अब ऐसे चेहरे कहाँ हैं।

उड़ती फिरती थीं हज़ारों बुलबुलें गुलज़ार में
जी मैं क्या आया कि पाबन्दे नशेमन हो गईं

अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता

हज़रात ! चन्द नेक लोग अल्लाह वाले दक़ियानूस बादशाह के ज़ुल्म व जब्र से तंग आकर अपने ईमान व अक़ीदा की हिफ़ाज़त के लिये शहर छोड़ने पर मजबूर हो गए जब रात ने अपनी स्याह ज़ुलफ़ों को दुनिया पर बिछा दिया। और जब दुनिया ख़ूब अन्धेरों में डूब गई तो यह अल्लाह वाले नेक लोग दबे पाओं, धड़कते दिल के साथ, बादशाह और उस के सिपाहियों से बचते बचाते निकले तो एक कुत्ता उन अल्लाह वालों के पीछे पीछे चला। तो आलमे महब्बत में नेकों ने उस कुत्ते से कहा कि हम लोग छुप कर तो जा रहे हैं और अगर तुम ने भोंक दिया तो हम पकड़े जाएंगे तो उस कुत्ते ने बज़ुबाने हाल अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह वालो ! वह कुत्ते और होते हैं जो अल्लाह वालों पर भोंकते हैं, हम तो अल्लाह वालों की ख़िदमत के लिये साथ चल रहे हैं

अल्लाह वाले शहर से निकल कर पहाड़ी के ग़ार में पहुँचे और इबादत व रियाज़त में मशग़ूल हो गए कुत्ता बा अदब ग़ार के मुंह पर बैठा रहा, अल्लाह तआ को इस कुत्ते का यह अदब और अपने नेक बन्दों की महब्बत व ख़िदमत इस क़दर पसन्द आई कि उस कुत्ते का ज़िक्र कुरआने करीम में फ़रमाया : وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ

तर्जमा : और उन का कुत्ता अपनी कलाइयाँ फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर।
(पारा, 15, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत शैख़ सअदी शीराज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़ारसी.....................
यानी अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता चन्द रोज़ नेकों की सोहबत इख़्तियार करनेकी वजह से आदमी बन गया और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा किनआन बुरों की सोहबत में बैठ कर कफ़िर हो गया, जिस के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है : اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ
यानी ऐ नूह अलैहिस्सलाम ! वह आप का अहले बैत ही नहीं क्यों कि : اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ
(पारा 12, रुकू3)

उस के अमल अच्छे नहीं। वह बुरों की सोहबत से काफ़िर हो गया है अस्हाबे कहफ़ की ख़िदमत व सोहबत से वह कुत्ता क़ियामत के दिन इन्सान की शक्ल में किनआन की जगह जन्नत में जाएगा। और किन आन, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा बुरों की सोहबत की वजह से काफ़िर हो गया और वह जहन्नम में डाला जाएगा।

ऐ ईमान वालो ! बुरों की सोहबत से दूर भागो, ख़ूब ग़ौर कर लो कि जब किनआन नूह अलैहिस्सलाम का बेटा हो कर बुरों की सोहबत से काफ़िर हो गया और जहन्नम में ड़ाला जाएगा तो हमारी औक़ात ही क्या है। लिहाज़ा हम को चाहिये कि हम बुरों की सोहबत से दूर रहें और कुत्ता नेकों, अच्छों की सोहबत व ख़िदमत की वजह से क़ियामत के दिन आदमी की शक्ल में किनआन की जगह जन्नत का दूल्हा बनाया जाएगा।

अल्लाहु अकबर : नेकों और अल्लाह वालों की ग़ुलामी और सोहबत का सिला कितना अज़ीम है। जब एक कुत्ता जन्नत का हक़दार हो सकता है तो हम क़ादरी, चिश्ती, रज़वी ग़ुलाम अपने ग़ौस व ख़्वाजा और रज़ा की ग़ुलामी की निस्बत से बे शक व शुबह जन्नत के हक़दार हैं।

ख़ूब फ़रमाया आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा

इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

सोहबत का असर ज़रूर होता है

हज़रात ! सोहबत का असर ज़रूर होता है और वह असर एक ऐसी चीज़ है जिस की बदौलत इन्सान में इन्क़िलाब आ जाता है। अगर अच्छे की सोहबत और निस्बत कुछ ही लम्हा के लिये मिल गई तो उस का असर नज़र आने लगता है और एक गुनाहगार व बदकार, मुत्तक़ी व परहेज़गार बनता दिखाई देता है।

मुलाहज़ा फ़रमाइये।

एक शराबी पर एक नेक की सोहबत व निस्बत का असर

बुज़ुर्गों ने बयान फ़रमाया है कि अल्लाह के वली हज़रत सिर्री सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने अस्हाब व मुरीदीन के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे कि एक शराबी को देखा कि लबे सड़क सरे राह नशे में धुत पड़ा हुआ है मगर उस की ज़बान पर अल्लाह अल्लाह की सदा जारी है। अल्लाह के दोस्त, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाइब हज़रत सिर्री सक़ती रज़ियल्लाहु अन्हु रुक गए और इरशाद फ़रमाया एक ग्लास पानी लाया जाए। पानी का ग्लास हाज़िरे ख़िदमत किया गया, आप ने अपने दस्ते मुबारक से उस शराबी के मुंह को पानी से धुल दिया, पाक व साफ़ करके फ़रमाया कि अब पाक मुंह से अल्लाह तआला का पाक नाम लेगा और तशरीफ़ ले गए। जब रात को सोए तो ख़्वाब में बशारत दी गई कि ऐ मेरे नेक बन्दे सिर्री सक़ती तूने मेरी ख़ातिर मेरे शराबी बन्दे के मुंह को पाक व साफ़ किया और अब उस के मुंह पर तेरा हाथ लग गया है और मुख़्तसर सोहबत तेरी उस बन्दे को नसीब हो गई है तेरी सोहबत और निस्बत की बरकत से मैं ने उस के दिल को धुल कर पाक व साफ़ कर दिया है। हज़रत सिर्री सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़्वाब से बेदार हुए, नमाज़े तहज्जुद के लिये मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो क्या देखा कि कल जो शराब के नशे में धुत होकर पड़ा हुआ था मस्जिद में तहज्जुद की नमाज़ अदा कर रहा है। हज़रत सिर्री सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैरत व इस्तिअ़जाब में उस शख़्स को देखने लगे तो वह शख़्स हज़रत सकती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहता है कि हज़रत आप हैरान व परेशान क्यों हैं, अल्लाह तआला ने आप को सब कुछ तो बता दिया है। (ख़ैरुल मजालिस)

दिलों की बात निगाहों के दरमियान पहुँची
कहाँ चिराग़ जला, रोशनी कहाँ पहुँची

दुरूद शरीफ़ः

हज़रात ! आप लोगों ने देख लिया कि अल्लाह वाले की थोड़ी सी सोहबत और उन की निस्बत की वजह से अल्लाह तआला ने एक शराबी बन्दे को थोड़ी ही देर में गुनाहों, ख़ताओं से पाक व साफ़ फ़रमा कर सिर्फ़ नेक मोमिन ही नहीं बल्कि वली बना दिया।

हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं

फ़ारसी...................

यानी जो शख़्स यह चाहता है कि वह अल्लाह का क़रीबी बन जाए तो उसे चाहिये कि वह अल्लाह वालों की सोहबत में बैठे।

यक ज़माना सोहबते बा औलिया
बहतर अज़ सद साला ताअते बे रिया

एक लम्हा यानी थोड़ी देर औलिया अल्लाह के पास बैठना, सो साल की बे रिया इबादत से बेहतर है।

सौ आदमियों का क़ातिल जन्नती हो गया

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बयान फ़रमाया कि बनी इसराईल में एक शख़्स था जिस ने 99 क़त्ल किये थे, फिर तौबह का इरादा किया और यहूदी आलिम एक साहिब के पास गया और उस से कहा कि क्या मेरी तौबह क़ुबूल हो सकती है ? मैं ने 99 क़त्ल किये हैं तो उस यहूदी आलिम, साहिब ने कहा कि तुम्हारी तौबह हर गिज़ क़ुबूल नहीं हो सकती। उस क़ातिल ने उस साहिब को भी क़त्ल कर डाला। अब पूरे सो हो गए। फिर किसी से पूछा कि क्या मेरी तौबह क़ुबूल हो सकती है तो उस ने कहा : اِنْطَلِقْ اِلٰى اَرْضِ كَذَا فَاِنَّ بِهَا اُنَاسًا يَّعْبُدُوْنَ اللّٰهَ

यानी फ़लां बस्ती में चले जाओ वहाँ कुछ लोग रहते हैं जो अल्लाह तआला की इबादत करते हैं (यानी औलिया अल्लाह)

इस गुनाहगार शख़्स ने उस बस्ती की जानिब सफ़र शुरूअ किया कि अल्लाह वालों के पास पहुँच कर अल्लाह तआला की बारगाह में तौबह करे मगर अभी रास्ते ही में था कि उस का इन्तिक़ाल हो गया। उस शख़्स की रूह को लेने के लिये रहमत के फ़रिश्ते भी आ गए और अज़ाब के फ़रिश्ते भी आ गए। रहमत के फ़रिश्ते कहने लगे कि उस की रूह ले कर हम जाएंगे, बे शक यह गुनाहगार है और क़ातिल है मगर यह अल्लाह वालों के पास तौबह की नियत से जा रहा था और अज़ाब के फ़रिश्ते कहने लगे कि उस को हम ले जाएंगे क्यों कि यह सो आदमियों का क़ातिल है। जब फ़रिश्तों की बहस हुई तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ज़मीन को नाप लो, अगर अपनी आबादी से क़रीब है तोअज़ाब के फ़रिश्तो तुम ले जाओ और अगर अल्लाह वालों की आबादी से क़रीब है तो रहमत के फ़रिश्तो तुम ले जाओ और इधर ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन अपनी वुसअत को समेट ले। जब फ़रिश्तो ने ज़मीन को नापा तो अपने घर से दूर था और अल्लाह वालों से क़रीब था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ फ़रिश्तो ! यह बन्दा मेरे औलिया से क़रीब था गोया मेरे क़रीब था इस लिये मैं ने उस के सारे गुनाहों को बख़्श कर जन्नत का हक़दार ठहरा दिया है और तुम उस को जन्नत में दाख़िल कर दो (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 359)

हज़रात ! आज इस दुनिया में ये गुनाह और गुनाहगार, ज़ालिम व जाबिर और मज़लूम दोनों एक साथ नज़र आते हैं लेकिन क़ियामत के दिन दोनों अलग अलग होंगे और सारे ऐब बरोज़ क़ियामत ज़ाहिर हो जाएंगे। मुलाहज़ा फ़रमाइये :

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ

तर्जमा : और आज अलग छट जाओ ऐ मुजरिमो। (पारा, 23, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा करीम, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब जन्नती, जन्नत की तरफ़जा रहे होंगे तो एक शख़्स जो जहन्नमियों की सफ़ में खड़ा होगा। एक अल्लाह वाले को पहचान कर उस से अर्ज़ करेगा।

اَمَا تَعْرِفُنِيْ اَنَا الَّذِيْ سَقَيْتُكَ شَرْبَةً

(मिश्कात शरीफ़, स. 494)

यानी क्या आप ने मुझे पहचाना नहीं मैं वह हूँ जिस ने आप को एक मरतबा पानी पिलाया था इसी तरह एक और शख़्स आएगा और अल्लाह तआला के वली से अर्ज़ करेगा।

وَقَالَ بَعْضُهُمْ اَنَا الَّذِیْ وَهَبْتُ لَكَ وَضُوْءً (मिश्कात शरीफ, स. 494)

यानी उन में से एक कहेगा कि मैं वह हूँ जिस ने आप को एक मरतबा वुज़ू कराया था।

गोया दोनों जो जहन्नम में जा रहे थे अल्लाह के वली के दामन को थाम कर मचल जाएंगे और अर्ज़ करेंगे कि हम ने दुनिया में थोड़ी ही देर आप की सोहबत पाई और आप की ख़िदमत की थी तो आप अकेले जन्नत में न जाएं बल्कि हम को भी साथ ले कर जन्नत में जाए तो अल्लाह के वली अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करेंगे। فَيَشْفَعُ لَهُ فَيُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ

(मिश्कात शरीफ़, स. 494)

यानी वह जन्नती अल्लाह वाले उस की शफ़ाअत कर के जन्नत में ले जाऐंगे।

हज़रात! अल्लाह वालों से, पीरों, फ़क़ीरों से महब्बत और उन की ख़िदमत व गुलामी उस ख़ुश नसीब को हासिल होती है जिस से अल्लाह तआला ख़ुश होता है। अल्लाह वालों की गुलामी और निस्बत से दुनिया की नेअमत व दौलत भी महफ़ूज़ व सलामत रहती है और ईमान व अमल का ख़ज़ाना भी शैतान के शर व मक्र से महफ़ूज़ रहता है। मुलाहज़ा कीजिये। और كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ का जलवा देखिये (पारा 12, रुकू 4)

पीरो मुर्शिद ने मुरीद को शैतान के शर से बचा लिया

आशिक़े रसूल, इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब इन्सान की नज़अ का वक़्त क़रीब आता है, तो शैतान जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह मरने वाले का ईमान सल्ब हो जाए, क्यों कि उस वक़्त ईमान से फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा। चुनाँचे हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु अन्हु के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो उस वक़्त शैतान आ गया और कहने लगा ऐ इमाम राज़ी तुम ने उम्र भर मुनाज़िरे किये, क्या तूने ख़ुदा को पहचाना ? इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया बे शक ख़ुदा एक है। इब्लीस ने कहा कि ख़ुदा एक है तो उस पर क्या दलील ? हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दलील पेश की तो शैतान जो मुअल्लेमुल मलकूत रह चुका था, उस ने वह दलील रद कर दी। हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरी दलील क़ाइम की इब्लीसे लईन ने वह भी काट दी। यहाँ तक कि हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीन सो साठ दलील क़ाइम कीं और इब्लीस ने सारी दलीलों को काट दिया। अब इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह सख़्त परेशान व हैरान और निहायत मायूस थे कि अब कैसे उस शैतान मरदूद से बचा जाए कि आप के पीरो मुर्शिद हज़रत नजमुद्दीन कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (सैकड़ों मील) दूर दराज़ किसी मक़ाम पर वुज़ू फ़रमा रहे थे कि वहाँ से पीर व मुर्शिद ने (अपने मुरीद की परेशानी और बेचारगी और शैतान की शरारत को देख कर) आवाज़ दी कि क्यों नहीं कह देता कि मैं ख़ुदाए तआला को बे दलील एक मानता हूँ। (अल मलफ़ूज़, शरीफ़, स. 53)

हज़रात ! यह है सच्चों के साथ होने का फ़ायदा और फल। इसी लिये मुरीद भी हुआ जाता है कि पीरो मुर्शिद की निस्बते गुलामी से अल्लाह तआला शैतान और शैतान वालों के शर से बचाए और हमारे दीन व ईमान को महफ़ूज़ रखे।

मुरीदे आला हज़रत मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी फ़रमाते हैं :

मुरीदी ला तख़्रत कहकर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आज़म का
जो अपने को कहे मेरा, मुरीदों में वह दाख़िल है
यह फ़रमाया हुआ है मेरे आक़ा ग़ौसे आज़म का

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! अल्लाह तआला ने सच्चों, नेकों के साथ होने का हुक्म क्यों दिया है, मुलाहज़ा कीजिये :

चौर वली हो गया : हमारे पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की चादरे मुबारक बड़ी क़ीमती थी, उस में बेश बहा हीरे, जवाहरात लगे हुए थे। एक चौर काफ़ी दिनों से इसी ताक में था कि मौक़ा मिले और चादर को चुराऊँ, एक दिन हमारे बड़े पीर, महबूबे सुब्हानी, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जंगल की तरफ़ चले, वह चोर भी पीछे पीछे चला जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक झाड़ी की आड़ में पहुँचे तो चोर ने मौक़े को ग़नीमत जानते हुए पीछे से क़ीमती चादर को पकड़ा और ले कर भागने वाला ही था कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अनहु ने आसमान की जानिब मुंह कर के दुआ की या अल्लाह तआला ! ख़ूब जानता है कि यह चोर है, मगर उस ने मेरे दामन को पकड़ा है, अब अगर चोर ही रहा तो कहा जाएगा कि महबूबे सुब्हानी अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दामन पकड़ने वाला भी चोर होता है। ग़ैबी निदा आई, तुम्हारे दामन की बरकत से उस चोर को, नेक व वारसा ही नहीं बल्कि वलिये कामिल बना दिया।

मौलाना जमील रज़वी फ़रमाते हैं :

चला जाए बिला ख़ौफ़ व ख़तर फ़िरदौसे आला में
फ़क़त इक शर्त है, हो नाम लेवा ग़ौसे आज़म का
फ़रिश्तो ! रोकते क्यों हो मुझे जन्नत में जाने से
यह देखो हाथ में दामन है किस का ग़ौसे आज़म का

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! हमारे पीराने पीर, दस्तगीर, रौशन ज़मीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह से कोई भी ख़ाली नहीं जाता।

चोरी करने वाला, बुरी नियत से आने वाला, नवाज़ दिया गया और मालामाल कर दिया गया तो हम क़ादरियों का कहना ही क्या है। हम तो उस बारगाह के मुरीद और क़ादरी आस्ताना के गुलाम हैं कैसे महरूम रह सकते हैं।

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़बर लो हमारी कि हम हैं तुम्हारे
करो हम पे फ़ज़्लो करम ग़ौसे आज़म

ऐ ईमान वालो ! देर न करो, दामने ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मज़बूती से पकड़ लो उन की निस्बत व गुलामी का सहारा बहुत बड़ा सहारा है, दुनिया में तो बरकात व अनवार मिलते ही हैं क़ब्र व हश्र में जब निस्बते क़ादरी के जलवों का नज़ारा होगा तो मचल जाओगे और फूले न समाओगे।

क़ादरी निस्बत से धोबी बख़्शा गया

शहज़ादए रसूल, हसनी, हुसैनी फूल हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक धोबी था जो आप के कपड़े धोया करता था, उस का इन्तिक़ाल हो गया तो क़ब्र में मुनकर नकीर ने सवालात किये तो उस धोबी ने जवाब दिया कि मैं महबूबे सुबहानी, हुज़ूर ग़ौसे आज़म जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धोबी हूँ, फ़रिश्तों ने रब तआला की बारगाह में अर्ज़ की, या अल्लाह तआला हमारे सवालात पर कहता है कि मैं महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का धोबी हूँ। तो रब तआला ने फ़रमाया जब मेरे महबूब अब्दुल क़ादिर जीलानी का नाम लेता है तो मैं ने उस नाम व निस्बत के तुफ़ैल उस को बख़्श दिया। (अल इफ़ाज़ातुल यौमिया, जि. 2, स. 29)

ख़ूब फ़रमाया जमील रज़वी ने :

अज़ीज़ो कर चुको तैय्यार जब मेरे जनाज़े को
तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आज़म का
लहद में जब फ़रिश्ते मुझ से पूछेंगे तो कह दूँगा
तरीक़ा क़ादरी हूँ नाम लेवा ग़ौसे आज़म का

हज़रात ! क़ादरी निस्बत व गुलामी, किस क़दर अज़ीम और बलन्द है कि गली का कुत्ता है तो शेर पर भारी है और उस दर का मुरीद व गुलाम हलका, पतला है मगर अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में महबूबे नज़र है।

क़ादरी हूँ शुक्र है रब्बे क़दीर का
दामन है हाथ में पीराने पीर का
क़ादरी सिलसिला है मुक़द्दर मेरा
निस्बत यह मुझ को अहमद रज़ा से मिली

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

पहला बयान

चौथा जुमा

बदगुमानी और ग़ुस्से की मज़म्मत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا۔

तर्जमा : बहुत गुमानों से बचो, बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐब न ढूंढो।

(पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : आज का दौर फ़ितना व फ़साद और तरह तरह की तबाही और बरबादी का दौर है। आज के इन्सानों में कौन सी बुराई है जो नज़र नहीं आती है। आज का मुसलमान क़िस्म, क़िस्म के गुनाहों में मुब्तला नज़र आ रहा है। गुनाहे कबीरा हो या सग़ीरा, बहर हाल गुनाह है और यह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि सिर्फ़ शराब व कबाब, कत्ल व ज़िना और तर्के सोम व सलात ही सिर्फ़ गुनाह नहीं हैं बल्कि बाज़ गुनाह तो ऐसे भी हैं कि बहुत से लोग तो उस को गुनाह ही नहीं जानते, और अगर समझते भी हैं तो कसरत के साथ लोग उस में मशग़ूल नज़र आते हैं। वह गुनाह बद गुमानी वह बला है और ऐसी ख़तरनाक आग है जिस में घर का घर, ख़ान्दान का ख़ानदान जल रहा है।

हज़रात ! बद गुमानी बहुत ही बद तरीन बीमारी है जो दिल व दिमाग़ को बीमार बना देती है फिर इन्सान हर किसी के लिये बुरा ही बुरा सोचता रहता है जिस से आपस के तअल्लुक़ात ख़राब होते नज़र आते हैं और ऐसा शख़्स अल्लाह तआला की बारगाह का मुजरिम व गुनाहगार भी हो जाता है।

बद गुमानी कैसी ख़राब होती है

हज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह तआला के बहुत ही नेक व परहेज़गार बन्दों में से थे। एक दिन की बात है कि आप दरयाए दजला के किनारे ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल थे कि आप की नज़र एक ऐसे नौजवान पर पड़ी जो दरया के किनारे एक औरत को कुछ खिला और पिला रहा था। हज़रत फ़ुज़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गुमान किया और समझा कि यह नौजवान किसी ग़ैर औरत के साथ साहिले दरया गुनाह कर रहा है और शराब

व कबाब में मशगूल है। इतने में क्या देखता है कि दरया में एक कश्ती है जो आ रही है। साहिल से पहले ही कश्ती ग़रक़े आब होती हुई नज़र आई। इस कश्ती में पाँच लोग सवार थे सब डूबने लगे वह नौजवान जो औरत के साथ था जलदी से दरया में कूद कर तीन लोगों की जान बचा ली और अभी दो लोग पानी में ग़ोता खा रहे थे कि वह जवान हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुख़ातब हो कर कहने लगा ऐ फुज़ैल ! तुम तो नेक और पारसा हो और मैं तो एक गुनाहगार और ख़ता कार हूँ। मैं ने तीन बन्दों की जान बचाई और तुम दो की जान बचा लो। फिर जल्दी से वह नौजवान दरया में जाकर उन दो लोगों को भी बचा कर बाहर निकाल लाया। अब हज़रत फुज़ैल समझे कि जिस को मैं ने शराबी और गुनाहगार गुमान क्या था वह तो अल्लाह तआला का नेक व मक़बूल बन्दा है। इस मक़बूल शख़्स ने हज़रत फुज़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुख़ातब हो कर रहा :

ऐ फुज़ैल ! मेरे लिये आप के दिल में जो बद गुमानी हुई है उस से तौबह कर लीजिये मैं मुआफ़ करता हूँ अल्लाह तआला भी आप को मुआफ़ फ़रमाए। ऐ फुज़ैल ! मैं हज्जे बैतुल्लाह के लिये अपनी वालिदा माजिदा को अपने कन्धे पर बिठा कर ले गया था। मेरी वालिदा माजिदा को भूक और प्यास महसूस हुई तो मैं अपनी मां को अपने गोद में बिठा कर खिला और पिला रहा था। यह मेरी मां हैं कोई ग़ैर औरत नहीं। (ख़ैरुल मजालिस)

हज़रात ! बद गुमानी बहुत ही बड़ी बदी और सख़्त तरीन गुनाह है और शैतान का बहुत बड़ा फन्दा है जिस से शैतान दो दिलों में नफ़रत पैदा करके दोनों को महब्बत से दूर और एक दूसरे का दुश्मन बना देता है।

सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की हदीस है कि हर बला व मुसीबत से बचाने वाले, हमारे मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीमो करीम रसूल, मुस्तफ़ा, जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अपने आप को बद गुमानी से बचाओ क्यों कि रहीमो करीम रसूल, मुस्तफ़ा, जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अपने आप को बद गुमानी से बचाओ क्यों कि बद गुमानी करना झूट है।

ऐ ईमान वालो ! बग़ैर सोचे, समझे किसी को भी दुश्मन समझ लेना और शक की नज़र से उस को देखने लग जाना और ख़्वामख़्वाह इस तरह की सोच बना लेना कि हम पर जादू कर दिया गया है। हम को कोई जिन, भूत लग गया है और झूटे बाबा हज़रात तो और दो क़दम बढ़ कर ऐसे वहमी बातों को और ज़्यादा मज़बूत बना देते हैं। अल्लाह तआला अमान में रखे और बद गुमानी से महफ़ूज़ फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हैरत अंगेज़ हिकायत

सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक साइल को देखा जो तन्दुरुस्त और मोटा तगड़ा था। आप ने दिल में उस के मुतअल्लिक़ यह ख़याल किया कि यह शख़्स तन्दुरुस्त और मोटा और तगड़ा है फिर भी भीक मांग रहा है और सवाल कर रहा है। यह शख़्स कैसा बुरा आमदी है। रात को जब आप सोए तो ख़्वाब में कोई शख़्स उन के लिये

मुरदार का गोश्त लाया। फ़रमाया। यह तो मुरदार का गोश्त है तो उस शख़्स ने जवाब दिया कि आज दिन में आप ने एक अल्लाह वाले को हक़ीर व ज़लील जान कर मुरदार का गोश्त खाया है। हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़्वाब से बेदार हुए और उस अल्लाह वाले की तलाश में निकल पड़े। मालूम हुआ कि वह शख़्स फ़लां मुहल्ले में रहते हैं। चुनाँचे आप उन के पास पहुँचे और जब सामने हुए तो उस अल्लाह वाले ने हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखते ही यह आयते करीमा पढ़ी।

هُوَالَّذِیْ یَتَقَبَّلُ مِنْ عِبَادِہٖ

यानी वह अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबह क़ुबूल फ़रमा लेता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अब पता चला कि यह शख़्स कोई मामूली नहीं बल्कि मर्दे ख़ुदा यानी अल्लाह वाला है। (तजकिरतुल औलिया, स. 440)

हज़रात! यह अल्लाह तआला के वली हज़रत सय्यदना जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो मुआफ़ी के लिये उस शख़्स का मकान तलाश करते हुए उस अल्लाह वाले के पास पहुँच कर मुआफ़ी के तलबगार हुए और अल्लाह वाले की दुआ लेकर वापस लौटे और एक हम हैं जो दिन भर में न जाने कितने लोगों को हिक़ारत व ज़िल्लत की निगाह से देखते हैं और उन के हवाले से बद गुमानी में मुब्तला होते नज़र आते हैं। मगर तोबह की तौफ़ीक़ नहीं होती बल्कि हाल यह है कि उस बुरी आदत को हम गुनाह ही नहीं समझते। अल अमान वल हफ़ीज़।

अल्लाह तआला का फ़रमान : وَلَا تَجَسَّسُوْا

तर्जमा : ऐब न तलाश करो। (पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात! किसी मुसलमान भाई में ऐब और कमज़ोरी तलाश करना इस्लाम ने मना फ़रमाया है बल्कि इस्लाम पर्दा पोशी और भाई के ऐब को छुपाने का हुक्म देता है।

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कि मुसलमान के छुपे हुए ऐब को तलाश न करो। और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के पोशीदा ऐब को तलाश करता है तो अल्लाह तआला उस आदमी के ऐबों को ज़ाहिर कर के उस शख़्स को ज़लील व रुसवा कर देता है। (तिर्मिज़ी, मिश्कात शरीफ़, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 6, स. 440)

नसीहत से लबरेज़ वाक़िआ

आरिफ़े हक़ हज़रत शैख़ सअदी शीराज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बचपन में बहुत इबादत करता था और तहज्जुद गुज़ार था। एक रात अपने वालिदे माजिद के पास बैठा हुआ कुरआने करीम की तिलावत कर रहा था, और पूरी रात न सोया, लोगों की एक जमाअत हमारे क़रीब सो रही थी। मैंने वालिद साहब से अर्ज़ किया कि यह लोग कैसे हैं जो उठ कर दो रकअत नफ़्ल नहीं अदा कर सकते। ग़फ़लत की नीन्द सो रहे हैं। गोया मर गए हैं। वालिद साहब ने फ़रमाया। ऐ बेटा सअदी अगर तू रात भर जाग कर इबादत न करता और रात भर सोया रहता तो इस ऐबजोई से बहतर था। (गुलिस्ताने सअदी)

आज तुम पर्दा पोशी करो, कल तुम्हारी पर्दा पोशी होगी

हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ यानी जो शख़्स किसी मुसलमान के ऐब को छुपाएगा तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस के ऐब छुपा देगा। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 330 सही मुस्लिम, जि. 2, स. 320)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ

तर्जमा : न मर्द मर्दों से हंसें, अजब नहीं कि वह उन हंसने वालों से बहतर हों।

(पारा 26, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दूसरे की हंसी उड़ाने वाले पर जन्नत का दरवाज़ा बन्द है

हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग दूसरों की हंसी उड़ाते हैं उन के लिये बरोज़े क़ियामत जन्नत का दरवाजा खोला जाएगा और वह लोग उस में दाख़िल होना चाहेंगे मगर उन पर जन्नत का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। फिर जन्नत का दूसरा दरवाज़ा खोला जाएगा मगर वह लोग जब उस के करीब पहुँचेंगे तो वह दरवाज़ा भी बन्द हो जाएगा। इसी तरह उन को बार बार बुलाया जाएगा और हर बार उन के लिये जन्नत का दरवाज़ा बन्द मिलेगा। गोया उन को दूसरों की हंसी उड़ाने की सज़ा दी जाएगी जो वह दुनिया में दूसरों के साथ करते थे। (कीमियाए सआदत, स. 376)

हज़रात ! जाहिलियत के ज़माने में लोग ग़ुरूर तकब्बुर की बुराई में बुरी तरह मुब्तला थे मालो दौलत सीमो ज़र, रंग व नस्ल, बरतरी और बड़ाई का मेअ़यार था। इन्सानी शराफ़त, अख़्लाक़ की बरतरी की कोई क़दर व क़ीमत न थी लेकिन हमारे आक़ा करीम, आफ़ताबे नुबुव्वत माहताबे रिसालत, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया और लोगों को दर्स दिया कि तुम सब आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हो। तुम में से इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला वह है जिस के आमाल अच्छे और नेक हैं।

इन्तिबाह : इस बात को ख़ूब ग़ौर से सुन लीजिये और याद रखिये कि बद अक़ीदा मुनाफ़िक़ों की बद अक़ीदगी और उन की मुनाफ़िक़त वाली गुमराही से लोगों को आगाह करना और उन से होशियार रखना बद गुमानी नहीं और न ही चुग़ल ख़ोरी और ग़ीबत है बल्कि उन के शर व मक्र से लोगों को आगाह करना वाजिब है।

ग़ुस्से की मज़म्मत

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

तर्जमा : राह नहीं देखते मगर एक चीख की कि उन्हें आ लेगी। जब वह दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे तो न वसियत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं।

(पारा 23, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

गुस्सा आग का एक शोअ़ला है

हजरात ! हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद गज़ाली रजियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि बे शक गुस्सा आग का एक शोअ़ला है जो अल्लाह तआला की जलाने वाली आग से बनाया गया है। ([illegible], जि. 3, स. 366)

हजरत इमाम बुखारी रजियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक शख्स ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुझे एक मुख्तसर अमल बताइये तो महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया : गुस्सा न करो, उस शख्स ने दोबारह यही सवाल किया तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया गुस्सा न करो। (सही बुखारी, जि. 2, स. 903)

अल्लाह के ग़ज़ब से बचना है तो गुस्सा न करो

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज किया कि अल्लाह तआला के गजब से मुझे कौन सी चीज़ बचा सकती है ? तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया गुस्सा न करो। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 135)

बड़ा पहलवान गुस्सा न करने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आफताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत, मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सवाल फरमाया कि तुम पहलवान किसे समझते हो ? हम ने अर्ज किया जिसे लोग पछाड़ न सकें। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : वह पहलवान नहीं है बल्कि (पहलवान) वह शख्स है जो गुस्से की हालत में अपने आप को क़ाबू में रखे। (सही मुस्लिम, जि. 2, स. 326)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَيْسَ الشَّدِيْدُ بِالصُّرَعَةِ اِنَّمَا الشَّدِيْدُ الَّذِيْ يَمْلِكُ نَفْسَهٗ عِنْدَ الْغَضَبِ

यानी पहलवान वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे बल्कि पहलवान वह शख्स है जो गुस्से के वक़्त अपने आप को क़ाबू में रखे। (सही मुस्लिम, जि. 2, स. 326)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि महबूबे परवरदिगार, रसूले मुख्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ كَفَّ غَضَبَهٗ سَتَرَ اللّٰهُ عَوْرَتَهٗ जो शख्स अपने गुस्से को रोके अल्लाह तआला उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा। (मजमउज़्ज़वाइद, जि. 8, स. [illegible])

हज़रात ! आज हमारा मुआमला यह हो चुका है कि हम किसी पर भी गुस्सा करना और उस को नीचा दिखाना अपनी शान और कमाल समझते हैं ज़ब कि गुस्सा न करने वाले को अल्लाह तआला पसन्द फ़रमाता है और उस के तमाम ऐबों की पर्दा पोशी फ़रमा देता है।

लिहाज़ा अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमारे तमाम जुर्मों और ऐबों पर अपनी रहीमी, करीमी का पर्दा डाल दे और उन सब को अपने करम से छुपा ले तो गुस्सा के वक़्त हम संभल जाएं और गुस्सा को पी जाएं। अल्लाह तआला हम को गुस्सा के वक़्त संभलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा। आमीन सुम्मा आमीन।

जन्नत में ले जाने वाला अमल

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! मुझे कोई ऐसा अमल बताइये जो मुझे जन्नत में ले जाए, तो मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया गुस्सा न करो। (मजमउज़्ज़वाइद, जि. 8, स. 70)

गुस्सा ईमान को ख़राब कर देता है : अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْغَضَبُ يُفْسِدُ الْاِيْمَانَ كَمَا يُفْسِدُ الصَّبِرُ الْعَسَلَ

यानी गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जैसे एलवा (एक कड़वा फल) शहद को ख़राब कर देता है। (अद्दर्रुलमन्सूर, जि. 4, स. 99)

शैतान का बड़ा फन्दा गुस्सा है

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत ज़ुल क़रनैन अलैहिस्सलाम ने एक फ़रिश्ते से कहा कि मुझे कोई ऐसा अमल बताएं कि जिस से मेरा ईमान और यक़ीन ज़्यादा मज़बूत हो जाए तो फ़रिश्ते ने कहा कि गुस्सा न करें, क्यों कि शैतान उस वक़्त इन्सान पर क़ाबू पा लेता है जब वह गुस्सा की हालत में होता है। लिहाज़ा गुस्सा पी जाया करें। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 370)

आलमे रब्बानी हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि एक राहिब शख़्स पूछा कि इन्सानों की कौनसी आदत तेरी ज़्यादा मदद करती है (और तुझे पसन्द है) तो शैतान ने कहा कि तेज़ी यानी गुस्सा इन्सान जब गुस्से में होता है तो हम उस को पलट देते हैं (यानी उस पर क़ाबू पा लेते हैं) जिस तरह बच्चा गेन्द को पलट देता है।

(अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 370)

गुस्सा हर बुराई की चाबी है : नाइबे मुस्तफ़ा, हज़रत इमा मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत जअ़फ़र बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला हुमा ने फ़रमाया कि (1) गुस्सा हर बुराई की चाबी है (2) और बेवक़ूफ़ को जवाब न देना ही उस का जवाब है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 370)

हज़रात ! अल्लाह वाले नेक लोगों ने तो हम को यह दर्स दिया और सिखा या है कि बे वक़ूफ़ों से उलझना कम अक़ली है और अक़्ल मन्द वह शख़्स है जो बेवक़ूफ़ को जवाब नहीं देता बल्कि उन से दूर भागने की कोशिश करता है मगर आज कल के अक़्ल मन्दों की होशियारी यह हो गई है कि जब तक हम जवाब नहीं देंगे होशियार नहीं कहलाएंगे। अल्लाह तआला जाहिलों से बचाए और अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आदमी की बुर्द बारी यानी ख़ूबी को गुस्से के वक़्त, और उस की अमानतदार की ख़ूबी को तमअ (लालच) के वक़्त जांचना चाहिये। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 371)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का हुक्म नामा

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने एक आमिल को लिखा कि गुस्से के वक़्त किसी को सज़ा न देना बल्कि मुजरिम को क़ैद करके रखना और जब तुम्हारा गुस्सा थम जाए तो उस को उस के जुर्म के मुताबिक़ सज़ा दो और पन्द्रह कोड़ों से ज़्यादा न मारना।

और ! बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि गुस्से के वक़्त अक़्ल ठिकाने नहीं रहती। जिस तरह जलते तनूर के आग में ज़िन्दा जानवर का जिस्म ठिकाने नहीं रहता।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 371)

आलिमे क़ुरआन, वारिसे नबी, हुज्जतुल इस्लाम, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं :

गुस्सा अक़्ल का दुश्मन है और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स लालच और गुस्से से महफ़ूज़ रहा वह (दीनो दुनिया दोनों में) कामयाब हो गया।

और ! हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : यह बातें मुसलमानों की अलामात में से हैं (1) दीन में मज़बूत रहना (2) नर्मी करने में एहतियात बरतना (3) यक़ीन के साथ ईमान (4) इल्म ख़ाकसारी के साथ (5) रिफ़ाक़त (किसी का बनना) बहुत सोच समझ के बाद (6) हक़ को अदा करना (7) मालदारी में दरमियाना अन्दाज़ अपनाना (8) फ़ाक़ा (तंग दस्ती में) सब्र करना (9) ताक़त होते हुए (बदला न लेकर) एहसान यानी भलाई करना (10) रफ़ाक़त में बरदाश्त (यानी साथी बना लिया है तो निभाना) (11) गुस्से से मग़लूब न होना (12) निय्यत ख़राब न करना (13) मज़लूम की मदद और कमज़ोर पर रहम करना (14) न कन्जूसी करे न हद से ज़्यादा बढ़े (15) ज़ुल्म से दूर रहे (16) ख़ुद मशक़्क़त उठाए लेकिन दूसरों को आसानी पहुँचाए।

और ! हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया गया कि एक जुमले में अच्छे अख़्लाक़ बयान फ़रमा दें तो आप ने फ़रमाया गुस्से को छोड़ देना। और एक नबी अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों से पूछा कि कौन शख़्स है जो मुझे इस बात की

ज़मानत देता है कि वह गुस्सा नहीं करेगा तो वह शख़्स (क़ियामत के दिन) मेरे साथ होगा और मेरे बाद मेरा ख़लीफ़ा होगा (यह सुन कर) एक नो जवान ने कहा कि मैं ज़मानत देता हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने दूसरी मरतबा फिर यही बात फ़रमाई तो उस नौजवान ने कहा मैं इस बात को पूरा करूँगा। जब उस नबी अलैहिस्सलाम का विसाल हो गया तो वह नो जवान उन के मक़ाम पर फ़ाइज़ हुए और वह हज़रत जुल किफ़्ल अलैहिस्सलाम थे और उन का यह नाम इस लिये मुक़र्रर हुआ कि उन्होंने गुस्सा न करने की ज़िम्मेदारी उठाई (किफ़ालत की) और उसे पूरा किया। (अह्या उलूम, जि. 3, स. 372)

हज़रात ! जो लोग अल्लाह वाले थे अगर किसी जाहिल शख़्स ने उन की ज़ात को बुरा भला कहा और उन को गाली भी दे दी तो भी अल्लाह वाले गुस्सा नहीं क़रते थे।

मुलाहज़ा कीजिये।

मैं उन का ज़िक्र करने जा रहा हूँ जिन की शान व अज़मत, अफ़ज़लुल बशर बअ़दल अम्बिया यानी अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तिफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

एक शख़्स ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुरा भला कहा तो आप ने फ़रमाया जो कुछ अल्लाह तआला ने तुझ से छुपा रखा है वह उस से भी ज़्यादा है जिस को तू जानता है गोया जो कुछ आप की ऐब जोई की गई उस की तरफ़ आप की तवज्जोह न हुई बल्कि आप अपने अन्दर कमी ही ख़याल फ़रमाते रहे और यह आप की बहुत बड़ी ख़ूबी और शान थी हक़ तो यह है कि अल्लाह वाले ऐसे ही अच्छे होते हैं।

और ! हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को किसी शख़्स ने गाली दी तो उन्होंने फ़रमाया कि (बरोज़े क़ियामत) अगर मीज़ान पर मेरी नेकियाँ कम हुईं तो जो कुछ तू कहता है तो मैं उस से भी ज़्यादा बुरा हूँ और अगर मेरी नेकियों का पल्ला भारी हुआ तो तेरी गाली से मुझे कुछ भी नुक़सान न पहुँचेगा।

और ! एक औरत ने अल्लाह के वली हज़रत मालिक बिन दीनार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा ! ऐ रिया कार ! आप ने फ़रमाया तेरे सिवा किसी ने मुझे नहीं पहचाना और आप को गुस्सा नहीं आया।

और ! एक शख़्स ने अल्लांसह के दोस्त, हज़रत शअ़बी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गाली दी (बुरा कहा) तो उन्होंने फ़रमाया अगर तुम (अपनी बात में) सच्चे हो तो अल्लाह तआला मुझे मुआफ़ फ़रमा दे और अगर तुम झूट बोलते हो तो अल्लाह तआला तुझे बख़्श दे।

(अह्याउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 382)

हज़रात ! गुस्सा पी जाना और लोगों को मुआफ़ कर देना अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है

हज़रत मालिक बिन अवस बिन हदसान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक आदमी पर गुस्सा आया तो आप ने उसे मारने का हुक्म दिया तो मैं ने बारगाहे अदालत में अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन (अल्लाह तआला का इरशाद है)

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ

तर्जमा : ऐ महबूब ! मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर ले। (पारा 9, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी यही आयत पढ़ी ग़ौर व फ़िक्र के बाद उस शख़्स को छोड़ दिया और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक शख़्स को मारने का हुक्म दिया फिर यह आयते करीमा पढ़ी।

وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ तर्जमा : और गुस्सा पीने वाले। (पारा 4, रुकू 5, कन्ज़ुल ईमान)

और अपने गुलाम से फ़रमाया उसे छोड़ दो।

और हज़रत इमाम ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने अपनी पहली बाज़ किताबों में फ़रमाया।

ऐ इन्सान ! जब तुझे गुस्सा आए तो तू मुझे याद कर ले और जब मेरी नाराज़गी का वक़्त आएगा तो मैं तुझे याद करूँगा और तुझे हलाक नहीं करूँगा और जो शख़्स गुस्से को छोड़ देता है वह अम्बियाए किराम, औलियाए इज़ाम और उलमा व हुकमा के मुशाबह होता है।

(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 386)

ऐ ईमान वालो ! ज़रा ग़ौर करो और सोचो तो सही कि हम गुस्सा कर के किस क़दर नुक़सान करते हैं और दूसरों की निगाह में गिर जाते हैं और जो गुस्सा को पी जाता है और दूसरों को मुआफ़ कर देता है उस को अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुआफ़ कर देते हैं और वह शख़्स अम्बिया का क़ुर्ब और औलिया का दरजा हासिल करता नज़र आता है। सच है कि

जो झुका वह बलन्द हुआ और जो अकड़ा वह उखड़ गया

अल्लाह तआला अपना अमान अता फ़रमाए और झुकने वाला बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! जब गुस्सा आए तो उस को ठन्डा कैसे किया जाए तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : فَإِنْ كَانَ قَائِمًا فَلْيَجْلِسْ وَإِنْ كَانَ جَالِسًا فَلْيَنَمْ

यानी अगर खड़ा हो तो बैठ जाए और अगर बैठा हुआ है तो सो जाए।

(शअबिन ईमान, जि. 6, स. 310)

और अगर इस तरह करने से भी गुस्सा ख़त्म नहीं होता है तो ठन्डे पानी से वुज़ू या गुस्ल करे क्यों कि आग को पानी ही बुझाता है।

हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ

यानी जब तुम को गुस्सा आए तो वुज़ू करना चाहिये। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 304)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

فَإِذَا غَضِبْتَ فَاسْكُتْ

यानी जब तुम को गुस्सा आए तो ख़ामोश हो जाओ। (तबरानी मोअजम कबीर, जि. 1, स. 33)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक दिन गुस्सा आ गया तो आप ने पानी से कुल्ली की और फ़रमाया पानी गुस्से की आग को बुझा देता है और أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ने से भी गुस्सा कम हो जाता है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 389)

हज़रात ! गुस्सा करना हराम भी है और गुस्सा करना ईमान की अलामत में भी है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस को गुस्सा दिलाया जाए और उसे गुस्सा न आए वह गधा है और जिस में ग़ुस्सा और ग़ैरत की कुव्वत बिल्कुल न हो वह बिल्कुल नाक़िस है। अल्लाह तआला ने सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की शिद्दत व सख़्ती की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया :

أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ

यानी (वह सहाबा) कुफ़्फ़ार पर सख़्त और आपस में नर्म दिल हैं। (पारा 6, रुकू 12)

ऐ ईमान वालो ! आयते करीमा से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि हज़रात सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन गुस्सा और सख़्ती करते थे मगर उन पर जो अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुख़ालिफ़ और दुश्मन थे। और हज़रात सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आपस में अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वफ़ादारों और दोस्तों के साथ महरबानी और महब्बत का मुज़ाहरा किया करते थे।

और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से फ़रमाया :

جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط

तर्जमा : जिहाद फ़रमाओ ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर, और उन पर सख़्ती करो। (पारा 10 रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! ग़ैरत मन्द शख़्स को बुरी बात पर गुस्सा आना लाज़मी है। इस लिये कि ग़ैरत ईमान का हिस्सा है और ग़ैरत अल्लाह व रसूल जल्ला जला लुहू व शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और मन्दों के लिये है।

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ سَعْدًا لَغَيُوْرٌ وَأَنَا أَغْيَرُ مِنْ سَعْدٍ وَاللهُ أَغْيَرُ مِنِّيْ ○

बे शक सअद ग़ैरत मन्द हैं और मैं उन से ज़्यादा ग़ैरत मन्द हूँ और अल्लाह तआला मुझ से भी ज़्यादा ग़ैरत मन्द है। (सही मुस्लिम, जि. 1, स. 491)

हज़रात ! हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ग़ैरत

इसी लिये रखी गई है कि निस्बत महफ़ूज रहे अगर लोग उस में चश्म पोशी से काम लें तो निस्बत खल्त मल्त हो जाए इस लिये कहा गया है कि जिस खानदान के मर्दों में गैरत रखी गई है उन की औरतें महफ़ूज रहती हैं। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 376)

नाइबे रसूल हजरत इमाम मुहम्मद गजाली रजियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि बुरी बात देख कर खामोश रहना दीन की कमजोरी है।

मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

خیر امتی احداؤها

यानी मेरी उम्मत में बहतरीन लोग वह हैं जो दीन में सख्त हैं। (मजमउज्जवाइद, जि. 8, स. 26)

हजरात ! हदीस शरीफ़ और हजरत इमाम मुहम्मद गजाली रजियल्लाहु अन्हु के इरशादात की रोशनी में पता चला कि बुरी बात को देख कर चुप चाप रहना दीन की कमजोरी और गुनाह है। आज का माहौल कुछ इस तरह है कि घर में उरयानियत फेली हुई है। बे हूदा नाच, गाने आ रहे हैं और नमाज़ों को बे खोफ़ी से तर्क किया जा रहा है। ग़ैर लोगों का औरतों, बच्चों के साथ खल्त मल्त हो रहा है और इस तरह के बे शुमार गुनाह हमारे माहौल में जन्म ले रहे हैं और पनप रहे हैं लेकिन घर का जवाबदार अपनी आँखों पर पट्टी बांधे हुए अन्धा बना हुआ है। अब ऐसे बे दीन माहौल में भी गुस्सा न आए तो यक़ीनन ईमान की कमजोरी की निशानी है।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

خیرهم البطئ الغضب السریع الفیئ وشرهم السریع الغضب البطئ الفیئ ○

यानी बहतर वह लोग हैं जिन को गुस्सा देर से आए और जल्दी खत्म हो जाए और बुरे वह लोग हैं जिन को गुस्सा जल्दी आए और देर से खत्म हो। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 19)

हज़रत उमर फ़ारूक़ ने बुरा कहने वाले को मुआफ़ कर दिया

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रजियल्लाहु तआलाअन्हु ने एक नशे वाले को देखा तो आप ने उसे पकड़ कर सज़ा देने का इरादा किया तो उस शख्स ने आप को बुरा कहा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रजियल्लाहु तआला अन्हु ने उस को छोड़ दिया। बारगाहे अदालत में अर्ज किया गया।

ऐ अमीरुल मोमिनीन ! जब उस ने आप को गाली दी तो आप ने उसे छोड़ दिया तो आप ने ऐसा क्यों किया ? हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया इस लिये कि उस ने मुझे गाली दे कर गुस्सा दिलाया। अब अगर मैं उसे सज़ा देता तो यह अपनी ज़ात के लिये गुस्सा होता और मैं नही चाहता कि किसी मुसलमान को अपनी ज़ात के लिये सज़ा दूँ। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 405)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक शख़्स ने गुस्सा दिलाया तो आप ने फ़रमाया ! अगर तुम मुझे गुस्सा न दिलाते तो मैं तुम्हें सज़ा देता। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 405)

ऐ ईमान वालो ! हमारे बुज़ुर्गों की शान ला जवाब है। ख़ुद को किसी ने बुरा भला कहा तो मुआफ़ फ़रमा देते और बदला नहीं लेते थे लेकिन अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वालों को, इस्लाम के मुख़ालिफ़ों को, मुनाफ़िक़ों और बद अक़ीदों पर गुस्सा करते और उन को सज़ा देते, क़त्ल करते और किसी भी हाल में उन को मुआफ़ नहीं फ़रमाते थे। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत उमर ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल किया

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे अदालत में एक मुनाफ़िक़ और ईसाई का मुक़दमा पेश हुआ जब कि यह मुक़दमा महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे नुबुव्वत में पेश हो चुका था और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़ैसला ईसाई के हक़ में फ़रमा दिया था लेकिन मुनाफ़िक़ मुसलमान न माना और अपने हरीफ़ ईसाई से कहने लगा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़ैसला किया मुझ को समझ में नहीं आता है। इस लिये यह मुक़दमा लेकर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चलते हैं और मुनाफ़िक़ मुसलमान और ईसाई दोनों मुक़दमा लेकर बारगाहे अदालत में हाज़िर हुए। मुख़्तसर वाक़िआ यह है कि ईसाई ने कहा कि ऐ उमर ! यह मुक़दमा जो आप के पास आया है यह पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास जा चुका है और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरे हक़ में फ़ैसला भी फ़रमा दिया मगर यह (बज़ाहिर) मुसलमान हो कर कहता है कि हमें नबी का फ़ैसला मन्ज़ूर नहीं इस लिये आप के पास फ़ैसला के लिये आए हैं तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं अभी फ़ैसला कर देता हूँ और घर में तशरीफ़ ले गए और मियान से तलवार निकाली और मुनाफ़िक़ की गरदन पर ऐसी तलवार मारी कि सर जिस्म से जुदा हो गया और मुनाफ़िक़ को क़त्ल फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया जो हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला न माने उसका फ़ैसला मेरी तलवार करती है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े रसूल, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने:

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये

ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

हज़रात ! हमने सब कुछ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ही से सीखा है। गुस्सा नहीं करना चाहिये और ख़ुद को बुरा भला कहने वाले को मुआफ़ कर देना चाहिये यह आदत व सुन्नत सहाबए किराम की है लेकिन मुनाफ़िक़, बद अक़ीदा पर गुस्सा करना और उसके साथ सख़्ती से पेश आना यह भी सहाबए किराम की सुन्नत है इस लिये मुख़लिस मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि गुस्सा कहाँ करना है और गुस्सा कहाँ नहीं करना है। दोनों सुन्नतों को मलहूज़े ख़ातिर रखते हुए इसी पर अमल पेरा रहे और इसी में भलाई और कामयाबी है। वर्ना बहुत बड़ा ख़सारा और नुक़सान है।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(4)

रबीउल आख़िर शरीफ़

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

हसद और उसकी तबाहकारियाँ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۔ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۔

اَمْ یَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰی مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

तर्जमा : लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

[illegible]

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : हसद वह अज़ाब और गुनाह है कि हासिद दूसरों की नेअमत व दौलत, इज़्ज़त व अज़मत को देख देख कर हसद की आग में जलता रहता है और अपनी तमाम नेकियों को भी जला कर ख़ाक व बरबाद कर लेता है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हसद नेकियों को खा जाती है

आक़ा करीम, अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلْحَسَدُ یَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ النَّارُ الْحَطَبَ

यानी हसद नेकियों को ऐसा खा जाता है जैसे आग लकड़ियों को खा जाती है।

इब्ने माजह [illegible] मिश्कात, स. [illegible]

हसद से बचने वाला जन्नती है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दिन हम मुशफ़िक व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास बैठे हुए थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अभी इस पहाड़ी से तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा, फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी नमूदार हुए और उन की दाढ़ी से

वुज़ू का पानी टपक रहा था। और उन की जूतियाँ उन के बाएं हाथ में थीं और उनसे सलाम किया। दूसरे दिन रहीम करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वही बात फ़रमाई तो वही शख़्स आया। तीसरे दिन फिर वही बात फ़रमाई तो वही शख़्स आया। जब महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा उस शख़्स के पीछे पीछे चले और फ़रमाया कि मैं तीन दिन तक घर नहीं जाऊँगा, अगर आप मुझे अपने पास ठहराएं तो आप की महरबानी होगी। उस शख़्स ने कहा ठीक है। चुनाँचे आप ने उस के पास तीन रातें गुज़ारीं तो आप ने देखा कि वह रात को नहीं उठते लेकिन हर करवट पर अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं और वह सिर्फ़ सुबह की नमाज़ के लिये उठे और उन से ज़िक्र की आवाज़ ही आती रही, जब तीन रातें गुज़र गईं तो क़रीब था मैं उनके इस अमल को मामूली समझता तो मैं ने उन से कहा ऐ अल्लाह के बन्दे मैं ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से इस तरह की बात सुनी है तो मैं आप के अमल को मालूम करना चाहता था लेकिन मैं ने आप का कोई ज़्यादा अमल नहीं देखा तो आप इस मक़ाम तक किस तरह पहुँचे ? तो उन्होंने फ़रमाया कि वही सब कुछ है जो आप ने देख लिया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब मैं वापस जाने लगा तो उन्होंने मुझे बुलाया और फ़रमाया : वही है जो आप ने देखा)और एक ख़ास बात मुझ में यह है कि) किसी मुसलमान को अल्लाह तआला ने जो कुछ (नेअ़मत व दौलत, इज़्ज़त व अज़मत) अता फ़रमाई है मैं उस से हसद नहीं करता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उससे कहा कि इसी अमल (यानी हसद न करने) की वजह से आप इस मक़ाम तक पहुँचे हैं।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 166, अहयाउल उलूम शरीफ, जि. 3, स. 120)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ की रौशनी में इस नूरानी वाक़िआ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि हसद करने वाला बहुत बड़ा गुनाहगार है और हसद से बचने वाला बहुत बड़ा नेकोकार और जन्नत का हक़दार होता है।

पहली उम्मतों की बीमारी

शाहे बतहा नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अनक़रीब मेरी उम्मत तक पहली उम्मतों की बीमारी पहुँचेगी तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया या सूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! पहली उम्मतों की बीमारी क्या है ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (1) तकब्बुर घमण्ड (2) कसरते माल की ख़्वाहिश (3) एक दूसरे से दूरी (4) हसद करना।

(अल मुस्तदरिक हाकिम, जि. 4, स. 168, अहयाउल उलूम शरीफ़, जि3, स. 422)

हमारे हुज़ूर, नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया:

لَا تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِأَخِيْكَ فَيُعَافِيَهُ اللّٰهُ وَيَبْتَلِيْكَ

यानी अपने (मुसलमान) भाई की बुराई न चाहो वर्ना अल्लाह तआला उस को उस से बचा लेगा और तुम को उस में मुब्तला कर देगा। (मिश्कात शरीफ़ जि. 1, स. 11?)

हज़रात! अल्लाह तआला बड़ा बे नियाज़ है उस से पनाह मांगते रहो। अल्लाह तआला के दिये से बन्दा को मिलता है इस लिये किसी से हसद करना गोया अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से जलना है और दूसरों का बुरा चाहने से, बुरा चाहने वाले ही का बुरा होता है। और जिस का तुम बुरा चाहते हो अल्लाह तआला उस को महफूज रखता है।

हसद से बचने वाला अर्शे इलाही के साए में

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद गज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने एक शख़्स को अर्शे आज़म के साए में देखा तो आप ने उस के मरतबा पर शक किया और फ़रमाया यह शख़्स रब की बारगाह में मुकर्रम व मुअज़्ज़म है। फिर अल्लाह तआला से सवाल किया कि उस का नाम किया है और यह नेक कौन है? तो अल्लाह तआला ने उस के नेक कामों में से तीन नेक काम को ज़ाहिर फरमा दिया। एक यह कि ख़ुदा किसी को नवाज़ता है तो यह शख़्स हसद नहीं करता। दूसरा यह कि यह शख़्स अपने मां बाप की ना फ़रमानी नहीं करता। तीसरा यह कि इस शख़्स ने कभी चुगल ख़ोरी नहीं की। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 422)

हज़रात! हसद करना, मां, बाप की ना फरमानी और चुगल ख़ोरी यह तीनों अमल जहन्नम में ले जाने वाले हैं और अगर इन में से एक अमल भी किसी शख़्स में मौजूद है तो वह एक अमल ही जहन्नम तक पहुँचाने के लिये काफी है।

अफ़सोस सद अफ़सोस! आज मुसलमानों में यह तीनों बुरे अमल कसरत से पाए जाते हैं अल्लाह तआला उन तीनों बुरे कामों से हम को महफूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि हासिद मेरी नेअमत का दुश्मन है। मेरे फ़ैसले से नाराज़ होता है और मैं ने अपने बन्दों के दरमियान जो तक़सीम की है वह (हासिद) उस तक़सीम पर राज़ी नहीं होता। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 422)

आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़्यादा इस बात का डर है कि:

اَنْ يَكْثُرَ فِيْهِمُ الْمَالُ فَيَتَحَاسَدُوْنَ وَيَقْتَتِلُوْنَ

यानी उन में माल की कसरत हो जाएगी तो फिर एक दूसरे से हसद करेंगे और एक दूसरे को क़त्ल करेंगे। (लिसानुल मीज़ान, जि. 2, स. 75)

हर नेअ़मत वाले से हसद किया जाता है

हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : हाजत मन्दों की ज़रूरत छुपा कर पूरी करो, वर्ना كُلُّ ذِيْ نِعْمَةٍ مَحْسُوْدٌ यानी हर नेअ़मत वाले से हसद किया जाता है। (मजमउज़्ज़वाइद, जि. 8, स. 195)

हज़रात ! जब नेअ़मत व दौलत, इज़्ज़त व अज़मत नसीब हो जाए तो नेअ़मत व दौलत देने वाले रब तआला की बारगाह में ख़ूब से ख़ूब झुक जाना चाहिये इस लिये कि अल्लाह तआला की बारगाह में झुकने वाले को कोई ताक़त व कुव्वत भी ज़लील व रुसवा नहीं कर सकती। वर्ना हर नेअमत वाले के साथ हसद किया गया है और किया जाएगा और यह इरशाद अल्लाह के महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का है जो हक़ और सच है और बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि बच्चे उसी दरख़्त पर पत्थर फेंकते हैं जिस दरख़्त में फल लगा होता है। अल्लाह तआला हासिदों से बचाए। आमीन सुम्मा आमीन।

छः क़िस्म के लोग सब से पहले जहन्नम में जाऐंगे

छः क़िस्म के लोग हिसाब व किताब से एक साल पहले जहन्नम में जाऐंगे, अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम वह लोग कौन हैं ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

(1) मालदार, ज़ुल्म की वजह से (2) अरब तअस्सुब की वजह से (3) देहाती तकब्बुर की वजह से (4) ताजिर ख़यानत की वजह से (5) गंवार जहालत की वजह से (6) और उलमा हसद की वजह से। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 423)

सब से पहला हसद इब्लीस ने हज़रत आदम से किया

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआलाअन्हु लिखते हैं कि बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि सब से पहला गुनाह हसद है कि इब्लीस मलऊन ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के मुक़ाम व मरतबा की वजह से उन से हसद किया और सज्दा करने से इनकार कर दिया। (अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 423)

ऐ ईमान वालो ! दाएमी नेअ़मत व दौलत पाने वाले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं और इस दुनिया में सब से पहले हसद का गुनाह जिन के साथ किया गया वह भी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं और सब से पहले हसद का गुनाह करने वाला इब्लीस मरदूद है।

मोमिन हसद करता है : हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया, क्या मोमिन हसद करता है ? आप ने फ़रमाया हज़रत यअ़कूब अलैहिस्सलाम के बेटों का वाक़िआ भूल गए हो ? हाँ मोमिन हसद करता है।

और ! हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आदमी जिस क़दर ज़्यादा मौत को याद करता है उसी क़दर उस की ख़ुशी और हसद कम होती है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 425)

हसद अदावत कभी ख़त्म नहीं होती

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हर आदमी को राज़ी करने पर क़ादिर हूँ मगर नेअ़मत का हासिद ज़वाले नेअ़मत (नेअमत के ख़त्म होने) पर ही राज़ी होता है। इसी लिये कहा गया है :

كُلُّ الْعَدَاوَاتِ قَدْ تُرْجٰى اِمَاتَتُهَا
اِلَّا عَدَاوَةَ مَنْ عَادَاكَ مِنْ حَسَدٍ

यानी तमाम दुश्मनों को ख़त्म करने की उम्मीद की जा सकती है लेकिन जो शख़्स हसद की वजह से तुम से दुश्मनी करता है। उस की दुश्मनी ख़त्म नहीं होती है।

और ! बाज़ दाना (अक़्ल मन्द) फ़रमाते हैं : हसद ऐसा ज़ख़म है जो ठीक नहीं होता और हसद करने वाले को यही सज़ा काफ़ी है और एक अअ़राबी ने कहा मैं ने हासिद से बढ़ कर किसी को मज़लूम की तरहनहीं देखा, वह तुम्हारे पास नेअमत देखता है तो गोया उसे सज़ा मिल रही है।

और बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : हसद करने वाले को मजलिसों में ज़िल्लत और बुराई मिलती है और फ़रिश्तों क़ी जानिब से लअ़नत और क़ियामत के दिन अज़ाब और रुसवाई हासिल होगी। (अहयाउल उलूम, शरीफ़ जि. 3, स. 425)

भाई का भाई, रिश्तेदार का रिश्तेदार से हसद ज़्यादा होता है

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बेटे क़ाबील ने अपने भाई हज़रत हाबील को हसद की वजह से क़त्ल किया
(अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 525)

कुरआने मजीद सूरए यूसुफ़ में मुकम्मल बयान है जिस का खुलासा पेश है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयो ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से हसद किया और उस हसद की वजह यह बयान की गई कि वालिदे गिरामी हज़रत यअ़क़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़्यादा पसन्द थे तो दूसरे भाइयों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बाप की निगाहों से ओझल कर दिया और कुंए में डाला और भाइयो ने हसद की वजह से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़त्ल करना चाहा।
(गुलखखसन, अहयाउल उलूम, जि. 3, स. 527)

हज़रात ! हसद वह मोहलिक मर्ज़ है कि आदमी हसद की वजह से क़त्ल जैसे गुनाह पर भी आमादह हो जाया करता है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

यहूदियों ने हसद की वजह से नबी का इनकार किया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आमद से पहले यहूदी जब किसी क़ौम से लड़ते तो कहते या अल्लाह ! उस नबी के वसीले से जिस के भेजने का तूने

वादा किया और उस किताब के तुफ़ैल जिस को तू नाज़िल फ़रमाएगा, हमारी मदद फ़रमा। तो अल्लाह तआला उन की मदद फ़रमाता, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में तशरीफ़ ले आए तो यहूदियों ने आप को पहचानने के बावजूद इनकार किया।

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि यहूदियों ने हसद की वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और कुरआने मजीद का इनकार किया।

और ! फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا حَسَدَ اِلَّا فِی اثْنَیْنِ رَجُلٌ اٰتَاہُ اللّٰہُ مَالًا فَسَلَّطَ عَلٰی هَلَکَتِهٖ فِی الْحَقِّ وَرَجُلٌ اٰتَاہُ اللّٰہُ عِلْمًا فَهُوَ یَعْمَلُ بِهٖ وَیُعَلِّمُهُ النَّاسَ

यानी सिर्फ़ दो क़िस्म के लोग क़ाबिले रशक हैं, एक वह शख़्स जिस को अल्लाह तआला ने माल दे कर राहे हक़ में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दी और दूसरा वह जिसे अल्लाह तआला ने इल्म दिया और वह उस परअमल भी करता है और लोगों को सिखाता भी है।

(मुस्नद इमाम अहमद, बिन हम्बल, जि. 1, स. 385)

और ! फ़रमाते हैं कि उन लोगों से हसद ज़्यादा होता है जिन को अल्लाह तआला ने मालो दौलत, इज़्ज़त व अज़मत ज़्यादा दिया है।

और ! फ़रमाते हैं कि दो आदमी जो अलग अलग शहरों में रहते हैं उन के दरमियन हसद नहीं होता, इसी तरह दो आदमी जो किसी मकान या मदरसा या मस्जिद में एक दूसरे के पड़ोसी बनते हैं तो एक दूसरे से नफ़रत, बुग़्ज़ और हसद जैसे मर्ज़ पैदा हो जाते हैं।

और ! फ़रमाते हैं कि (एक ही गिरोह के लोग आपस में एक दूसरे के साथ ज़्यादा हसद करते हैं) जैसे एक आलिम दूसरे आलिम से हसद करता है, एक आबिद दूसरे आबिद से हसद करता है। एक ताजिर दूसरे ताजिर से हसद करता है, एक मोची दूसरे मोची से हसद करता है, भाई दूसरे भाई से हसद करता है , रिश्तेदार, रिश्तेदर से हसद करता है।

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं इन तमाम बातों की बुनियाद महब्बते दुनिया है। (जिस से हसद पैदा होता है)

और ! फ़रमाते हैं जब उलमा इल्म से माल और मरतबा हासिल करना चाहें तो एक आलिम दूसरे आलिम से हसद करने लगता है। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 440)

हसद की दवा : आलिमे रब्बानी, नाइबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जान लो ! कि हसद दिल की बड़ी बीमारियों में से एक है और दिल की बीमारियों का इलाज इल्म और अमल के बग़ैर नहीं हो सकता और हसदकी बीमारी के लिये इल्मे नाफ़ेअ यानी बहतर इलाज यह है कि तुम तहक़ीक़ के साथ जान लो कि हसद दुनिया और आख़िरत में नुक़सान देता है। यानी हसद करने वाला दुनिया और आख़िरत में नुक़सान उठाएगा) और जिस से हसद किया जाता है उस का कोई दीनी और दुनियवी नुक़सान नहीं होता बल्कि उस का दोनों जहान में फ़ायदा ही फ़ायदा होता है।

और जब बसीरत के साथ यह बात जान लोगे (यानी हसद करने वाला दीन व दुनिया दोनों में नुक़सान उठाता है और जिस से हसद किया गया वह दीन व दुनिया दोनों में फ़ायदा ही फ़ायदा हासिल करता है। (तो तुम खुद अपने नफ़्स के दुश्मन और जिस को दुश्मन समझते हो उस के दोस्त हो जाओगे तो यक़ीनन हसद जैसी बीमारी से दूर हो जाओगे और जहाँ तक हसद से दीनी नुक़सान है तो उस की वजह यह है कि तुम ने हसद के ज़रीए अल्लाह तआला के फ़ैसले से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया बल्कि नाराज़गी को ज़ाहिर किया और उस ने जो नेअ़मत अपने बन्दे को दी है उस को तूने ना पसन्द किया। लिहाज़ा दीनी नुक़सान के लिये इतना जुर्म ही काफ़ी है और जब तुम जानते हो कि हसद की वजह से आख़िरत में सख्त अज़ाब होगा तो फिर कैसे हसद करते हो। और यक़ीन जान लो कि तुम्हारे हसद की वजह से जिससे हसद करते हो वह शख्स मुसीबत व मशक़्क़त में नहीं पड़ता और न ही उस की नेअ़मत व दौलत ख़त्म होती है बल्कि तुम्हारे हसद की वजह से उस की इज़्ज़त व अज़मत और नेअ़मत व दौलत में इज़ाफ़ा ही होता है। इस लिये ईमान के साथ अक़्ल का भी तक़ाज़ाहै कि आदमी हसद से बचे क्यों कि उस में दिल की परेशानी और अपने आप को रन्जो बला में डालना है और फ़ायदा कुछ भी नहीं। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 3, स. 442)

जो जिस के साथ महब्बत करता है क़ियामत में उसी के साथ होगा

हज़रत इमाम मुहम्द ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक अअ़राबी ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम एक आदमी किसी से महब्बत करता है लेकिन अभी तक वह उन से नहीं मिला तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ

यानी आदमी उसी के साथ है जिस से महब्बत करता है। (बुखारी, जि. 2, स. 911)

अअ़राबी का सवाल, क़ियामत कब होगी

इमामुल अम्बिया मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तअला अलैहिव आलिही वसल्लम ख़ुतबा दे रहे थे कि एक अअ़राबी ने उठकर सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! क़ियामत कब होगी ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अअ़राबी ! तुम ने उसके लिये (यानी क़ियामत के दिन के लिये) क्या तैयारी की है ? तो उस अअ़राबी ने जवाब दिया, मैं ने कुछ ज़्यादा नमाज़ें और रोज़े तैय्यार नहीं किये हैं मगर मैं अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता हूँ। तो महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम (क़ियामत के दिन) उसी के साथ रहोगे जिस से महब्बत करते हो। (बुखारी शरीफ़, जि. 2, स. 911)

हज़रात ! हम अहले सुन्नत व जमाअत बुरे हैं कि भले, मगर हैं महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के वफ़ादार उम्मती और ग़ुलाम। ख़ूब फ़रमाया, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने

बद सही चोर सही मुजरिम व नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा

सहाबा को सब से ज़्यादा ख़ुशी हुई

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को इस्लाम लाने के बाद जिस क़दर आज ख़ुशी हुई इतनी ख़ुशी कभी नहीं हुई। यह उस बात की जानिब इशारा है कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की सब से बड़ी आरज़ू और तमन्ना अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत थी।

और ! हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम तमाम सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से महब्बत करते थे। अगरचेह हमारे आमाल उन के आमाल के बराबर न थे लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि (क़ियामत के दिन) उन के साथ होंगे।

और हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम एक शख़्स नमाज़ियों से महब्बत करता है लेकिन ख़ुद नमाज़ नहीं पढ़ता, रोज़ा दारों से महब्बत करता है लेकिन ख़ुद रोज़ा नहीं रखता, हत्ता कि उन्होंने और कई आमाल का ज़िक्र किया तो मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया वह शख़्स लोगों के साथ होगा जिन से महब्बत करता है। (सही बुख़ारी, जि. 2, स. 911)

हज़रात ! सही बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है ज़र्रा बराबर भी वहम व शक की गुन्जाइश नहीं, बे शक व शुबा हमारे आक़ा करीम, ग़ैब दां रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद हक़ और सच है, ज़मीन फट सकती है, आसमान टूट सकता है, चाँद व सूरज का निकलना, डूबना बन्द हो सकता है, निज़ामे आलम बदल सकता है, लेकिन महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान न बदला है न ही बदल सकता है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

वह दहन जिस की हर बात वहिये ख़ुदा
चश्मए इल्मो हिकमत पे लाखों सलाम

लिहाज़ा ! नतीजा बहुत ही अच्छा है। हम सुन्नी मुसलमान, ग़ौसो ख़्वाजा और रज़ा के चाहने वाले, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और महबूबे आज़म, रसूले आज़म, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत व उल्फ़त करते हैं। और हमारे इस दावा की दलील यह है कि हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के नाम की मजलिसें क़ाइम करते हैं, उन के नाम की सबीलें लगाते हैं, और उन के नाम पर नियाज़ करते हैं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दुश्मन राफ़िज़ी, शीआ को दुश्मन समझते हैं और उन के और सहाबा के रास्ते पर चलते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जब भी नामे पाक सुनते हैं तो अपने अंगूठे को चूम कर दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आदत व सुन्नत को ज़िन्दा करते हैं और हम अहले सुन्नत, मुनाफ़िक़ों पर सख़्त हैं और उन से हर हाल में दूर रहते हैं और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रूहे पाक को ख़ुश करते हैं और हर नमाज़ के बाद सलातो सलाम पढ़ते हैं और इस अमल को क़ुबूलियते नमाज़ की निशानी और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दलील समझते हैं।

तो नतीजा यह निकला कि बरोज़े क़ियामत हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा और रज़ा हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन और रहीम व करीम रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ होंगे। इन्शाअल्लाहु तआला।

ऐ ईमान वालो ! मेरी गुफ़्तुगू का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह वालों क़ी सोहबत की बरकत से अल्लाह वालों के मज़ारात की हाज़िरी की नेकी से हसद की लअ़नत दूर हो सकती है और गुनाहों से छुटकारा नसीब हो सकता है और आक़ा करीम रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक हक़ है। हक़ है। हक़ है : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ

यानी आदमी क़ियामत के दिन उसी के साथ होगा (आज जिस से महब्बत करता है)

(सही बुख़ारी, जि. 2, स. 911)

अल्लाह तआला हर गुनाह से ख़ास कर हसद की लअ़नत और अज़ाब से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और बरोज़े क़ियामत ग़ौसो ख़्वाजा और रज़ा के सदक़े हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत सिद्दीक़ो उमर और उस्माने ग़नी और मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन और रसूलुल्लाह, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ुर्ब में जगह इनायत फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये